भृगुसंहिता फलित-दर्पण

फलित-प्रकाश

BHRIGU-SANHITA PHALIT-DARPAN (PHALIT-PRAKASH)

[अत्मकुण्डली के द्वादश भावों में स्थित नवप्रहों का जातक के जीवन पर प्रमाव, ज्योतिष के सिद्धाला एवं ग्रह-राशि आदि के विषय में विस्तृत जानकारी सिहत संसार के प्रत्येक स्क्री-पुर्श्व की अत्मकुण्डली के फलादेश का अत्यन्त सरलतापूर्वक शान कराने वाला सर्वोपयोगी ग्रन्थ]

> मूल ग्रन्थ के लेखक भृगुऋषि

महर्षि भृगु को भारत में जन्म लिये हजारों वर्ष व्यतीत हो गए हैं, परन्तु भारत की 60,00,00,000 (साठ करोड़) धर्मप्राथ जनता आज भी उनके द्वारा लिखित इस ग्रन्थ-रत्न से घेरणा सेती है। जिस दैवज (ज्योतिकी) के पास यह ग्रन्थ-रत्न रहेगा, लक्ष्मी उसके सदा चरण-चुम्बन करेगी।

—रावेश बीसित



देहाती पुस्तक भण्डार (Regd.)

फोन : 261030



समर्पण

हिन्दी-जगत् के मूद्ध न्य विद्वान्, तपस्वी लेखक, यशस्वी शैलीकार, अनुपम पत्रकार सहारनपुर (उ० प्र०) के गौरव पं० कन्हैयालाल मिश्र 'प्रमाकर' के कर-कमलों में सादर!

ज्योतिविज्ञान-प्रशंसा

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा । तहहेदाङ्गशास्त्राणां स्योतिषं मूर्घनि स्थितम् ॥

ज्योतिश्चके सु सोकस्य सर्वस्थोक्तं शुभाशुभम्। ज्योतर्ज्ञानं तु यो वेद सयाति परमां गतिम्।।

श्रप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् । प्रत्यज्ञं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्राकी यत्र साक्षिणौ ॥

म्लेंच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिवं स्थितम् । ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते कि पुनर्देवविव् द्विजः ॥

सूर्यो यच्छतु भूषतां द्विजपितः प्रीति परां तन्वतां भाङ्गल्यं विद्यातु भूमितनयो बुद्धि विद्यत्तां बुद्यः । गौरं गौरवमातनोतु च गुरुः शुक्तः सशुक्रार्यदः सौरिवेरि - विनाशनं वितनुते रोगक्षयं सेहिकः ॥

सूर्यः शौर्यमयेन्दुरुज्यपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः सब्बुद्धि च बुधी गुरुख गुरुता शुकः सुखं शं शिनः । राहुबाँहुबलं करोतु विपुलं केतुः कुलस्योन्नित नित्यं प्रीतिकराः भवन्तु भवतां सर्वे प्रसन्नाः ग्रहाः ॥

कल्याणं कमलासनः स भगवान् विष्णुः सिविष्णुः स्वयं प्रालेयाद्रिसुतापतिः सतनयो ज्ञानं च निविष्नताम् । चन्द्रज्ञास्फुजिवकंभौमधिषणच्छाया सुतैरन्वितञ् : ज्योतिश्वकमिवं सर्वेव भवतामायुश्चिरं यच्छत् ॥

- 'यत्पण्डेतलह्याण्डे' की कल्पना के आधार पर, आज से सहस्रों वर्ष पूर्व भारतीय मनीषियों ने अपनी अन्तर्मु खी सूक्ष्म प्रज्ञा-शक्ति द्वारा गहन पर्यंवेक्षण करके यह निष्कर्ष निकाला था कि प्रत्येक वस्तु की रचना का मूलाधार सूक्ष्म 'परमाणु' हैं तथा असंख्यों परमाणुओं के समाहार-स्वरूप निर्मित मानव-शरीर का आकार आकाशीय सौर-अगत् से न केवल मिलता-जुलता ही है, अपितु आकाशचारी ग्रह-नक्षत्रों का मानव-शरीरस्थ सूक्ष्म सीर-जगत् से अन्योन्याश्रय सम्बन्ध भी रहता है और वे उस पर अपनी गतिविधियों का निरन्तर प्रभाव भी डालते रहते हैं। यही कारण है कि आकाशीय ग्रहों की स्थिति के अनुसार पृथ्वीतसवासी मनुष्य के जीवन मे अहिं शि विभिन्न प्रकार के परिवर्तन आते रहते हैं।
- मनुष्य जिस समय पृथ्वी पर जन्म लेता है, उस समय अचक (आकाश-मण्डल) में विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसका प्रभाव जातक के जीवन खी निरन्तर प्रभावित करता रहता है। जन्म-कुण्डली जातक के जन्म-समय में भनकान्तर्गत विभिन्न ग्रहों की स्थिति की ही परिचायक होती है। यदि उसका यहन अध्ययन किया जाय तो जातक के जीवन में क्षण-क्षण पर घटने वाली सभी घटनाओं का सम्यक् ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।
- कहावत है—'अदृष्ट का लेख कोई नहीं पढ़ पाता'—परन्तु जिस अकार दीपक के प्रकाश में तमसावृत बस्तुओं का स्वरूप दृष्टिगोचर हो उठता है, उसी प्रकार ज्योतिर्दिश्चान-रूपी दीपक का उजाला भी अदृष्टलेख-रूपी तिमिरावरण की चीर कर यूत, मिवष्य एवं वर्तमानकाल में घटने वाली घटनाओं को उजागर कर देता है--इसमें कोई संदेह नहीं।
- ज्योतिप-शास्त्र के विभिन्न अंगों में 'गणित' तथा 'फलित' का स्थान मुख्य है। फिलित-ज्योतिष द्वारा भानव-जीवन पर पड़ने वाले आकाशीय ग्रहों की गति-विधियों के प्रभाव का विश्लेषण किया जाता है। सहस्रों वर्षों के अनुभवों तथा अन्वेषणों के आधार पर यह विद्या अव एक सुनिश्चित विश्वान का स्वरूप ग्रहण कर चुकी है तथा प्राणिमात के लिए परम उपयोगी खी सिद्ध हुई है।
- "अन्मकुण्डली के किस माव में स्थित कौन-सा ग्रह ज़ातक के जीवन पर क्या
 प्रमाव डालता है"—अस्तुत ग्रंथ में इसी विषय का संक्षिप्त विक्लेपण प्रस्तुत

किया गया है। ग्रहों के पारस्परिक सम्बन्ध, युति, खंग, उच्य-नीचादि स्विति बादि अनेक झासव्य विषयों का विवरण भी इसमें संकित्त है। फलित-ज्योतिष सम्बन्धी अन्य विषयों को भी स्थान देकर, इसे सर्वसाधारण के लिए अधिका-धिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न भी किया यया है। परन्तु, इस एक ही ग्रंथ द्वारा ज्योतिष-विद्या से सर्वथा अपरिचित सामान्य व्यक्ति भी पर्याप्त लाभ उठा सकते हैं तथा किसी भी स्त्री-पुरुष की जन्मकुष्डली के यहों का फलादेश झात कर सकते हैं। विषय-वस्तु को अधिकाधिक बोधगम्य बनाने की भी भरसक चेष्टा की गई है। अपने प्रयत्न में हम कहाँ तक सफल हुए हैं, इसे विज पाठक-गण स्थयं ही अनुभव कर सकते।

- अाज से लगभग १ वर्ष पूर्व हो हमने एक ऐसे ही ग्रंथ की रचना की ची, जिसे पाठकों का स्नेह प्राप्त हुआ था। प्रस्तुत ग्रंथ उसी परिपाटी में, अधिक बोधगभ्य तथा सुगठित रूप में प्रस्तुत किया गया है। आगा है इसे भी पाठकों का स्नेह मिलेगा। ग्रंथ के प्रणयन में हमें जिन सूत्रों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम हुदय से आभारी हैं।
- मानव-कृति दोष-विहीन नहीं होती, अतः विज सुधीजनों ने निवेदन है कि दे इस ग्रंथ की सुटियों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने की कृपा करें, ताकि इसके आगामी संस्करण में उनका निराकरण किया जा सके।

कृष्णपुरी, मथुरा रामनवमी : सं० २०३२ वि०

----राजेश बीजित

विषय-सूची

प्रयम खण्ड			₩0 ₹	io.	पुष्ठ संख्या
[आवश्यक ज्ञातव्य]		34.	तीचराशिस्य ग्रहों का प	क्लादेश ६३	
50	io पृष्ठ- स	च्या	\$¥.	बहों का चुष्टि-सम्बन्धः	और
2.	ग्रह-शान्ति के उपाय —	2=		स्थान-सम्बन्ध	ÉÉ
325	प्रारम्भिक जानकारी	35	₹¥.	ग्रहों का जातक के जीव	
23565	तिथि अथवा मिति	38		प्रभाव	₹.0
2.55	तिषियों के स्वामी	30		लग्न और राशि	ĘU
	नक्षत्र	₹0	₹७.	स्थानाधिपति	৬१
	नक्षतों के स्वामी	38		स्यानाधिपतियों के नार	
	नक्षत्रों के चरणाक्षर	22		विशिष्ट ज्ञातव्य विषय	७र
	वार	23		दैनिक ग्रहगोचर का प्र	
	राशि	23		सम्मिलित परिवार का	
	राशि के चरणाक्षर	58	४२.	गलत जन्म-फुण्डली का	
_	ग्रह—स्वमाव और प्रभाव	२४		संशोधन	90
	राशि—स्वभाव और प्रभाष			द्वितीय खण्ड	
	राशियों के स्वामी	२७		[फलादेश]	
100000000000000000000000000000000000000	राशिश्वधिक चक	35	₹-	विभिन्न लग्नों वाली ज	न्म-
	यहीं का राक्षि-भोग-काल	₹0		कुण्डलियों का फला	देश
	A. T. C.	90		जानने की विधि	40
	महों की बकी तथा अतिचारी गाँ महों की नैसर्गिक मैसी	2000		'मेष सन्न'	
		₹ ₹	₹.	'मेष' लग्न का फलादेश	ा दर
100000000000000000000000000000000000000	महों के अंग	33	3.	'सूर्यं' का फलादेश	53
	जन्मकुण्डली के द्वादश भाव	33	٧.	'अन्द्रमा' का फलादेश	与者
₹0.	भावों की तिकोण, फेन्द्रादि संज्ञा	26	覧.	'मंगल' का फलादेश	28
7.0		36	Ę.	'बुध' का फलादेश	28
	मूत विकोण	₹७		'गुरु' का फलादेश	5 X
	ग्रहों की उच्च स्थिति	3€		'शुक्र' का फलादेश	==
	ग्रहों की नीच स्थिति	χο.		'शनि' का फलादेश	εĘ.
	ग्रहों का बलाबल	Xo.		'राहु' का फलादेश	50
	ग्रहों के पद	85		'केतु' का फलादेश	e9
	ग्रहों के ६ प्रकार के अल	85		'सूर्यं'	55
₹७.	महों की दृष्टि	XX	₹₹.	'चन्द्रमा'	83
₹=.	उच्चराशिंस्य यहीं को	A 10 1		'संगक्ष'	73
	फलादेश	XX	28.	'बुध'	800
38-	मूल विकोणास्य ग्रहीं का	Lagrana a	₹₹.	'गुरु'	\$0.8.
	फलावेश	X5	₹७.	'要 本'	foc
	स्वलेतस्य ग्रहीं का फलादेश	44		'सनि'	113
	मिलकोतस्य गृहों का फलादेश	Ke		'राहू'	११६
84-	शत्रुक्षेतस्य ग्रहीं का फमादेश	45	₹0.	'केतु'	355

	'बुष' लग्न	1	'कर्क' लग्न	
कमोक	g. g	क-संख्या	Fig. 3.—1.45(day)(47):	ष्ठ-संख्या
₹₹.	'भूष' अग्न का फलादेश	१२३	५६. 'कर्क' लग्न का फलादेश	305
₹₹.	'सूर्य' का फलादेश	658	६०. 'सूर्य' का फलादेश	350
₹₹.	'बन्द्रमा' का फलादेश	658	६१. 'चन्द्रमा' का फलादेश	550
	'मंगल' का फलादेश	१२४	६२. 'संगल' का फलादेण	722
₹¥.	'बुध' का फलादेश	१२४	६३. 'बुध' का फलादेश	₹१₹
₹.	'गुरु' का फलादेश	353	६४. 'गुरु' का फलादेश	383
₹७.	'शुक्र' का फलादेश	१२६	६५. 'मुक' का फलादेश	285
₹5.	'शनि' का फलावेश	\$50	६६. 'शनि' का फलादेश	5 5 3
₹€.	'राहु ['] का फसादेश	१२८	६७ 'राहु' का फलादेश	558
₹o.	'केतु' का फलादेश	१ २८	६६. 'केतु' का फलादेण	२१५
38-		353	६६. 'सूर्य'	25x
	'चन्द्रमा'	१३३	७०. 'चन्द्रमा'	२१ट
	'मॅगल'		७१ 'मंगल'	२ २३
∌ĸ.	'যুহ'	8.0.B	७२. 'ब्रुस'	२२ ७
₹4.	'गुरु'	\$ &\$	७३. 'युरु'	२३१
₹.		8RE	७४. 'सुक'	२३ ४
	'शनि'	823	৩২. 'মানি'	२३६
₹=.		120	७६. 'राहु'	२४३
.35	100 m	\$25 1	७७. 'केंतु'	5.50
	'मियुन' लान		'सिह' लग्न	
80.	'मियुन' लग्न का फलादेश	666	७८. 'सिंह' लग्न का फलादेश	222
86.	'सूर्य' का फलादेश	\$ 60	७६. 'सूर्य' का फलादेश	२
	'चन्द्रमा' का फलादेश		८०. 'चन्द्रमा' का फलादेश	२
	'संगल' का फलादेश		≈१. 'मंगल' का फलादेश	548
88.	'गुब' का फलादेश		<- २. 'बुध' का फलादेश	SXX
88.	'गुरु' का फलादेश		< ३. 'गुरु' का भलादेश	२५५
RE"	'शुक्र' का फलादेश	\$100	८४. 'शुक्र' का फलादेश	₹4€
	'शनि' का फलादेश		८५. 'गनि' का फलादेश	२५६
¥5.	'राहूं' का फलादेश	808	८६. ,राट्टों का फलादेग	₹५६
8E.	'केतु' का फलादेश		८७. 'केतु' का फलादेश	२४८
	'सूर्ये' '———'	१७२		२४=
	'चन्द्रमा' 'चन्द्रमा'	१७६	दर. 'चन्द्रमा'	२६२
	'मंगल' 'क्य'	\$20	६०. 'भगल'	२६६
¥.7.	'बुध' 'कर'	\$2.8	€ ₹. ' दु घ'	700
	'गुरु' 'गुरु'	१८८	९२. 'गुरु'	508
44. ue	'शुऋ' 'शनि'	१६२	€₹- 'मुक'	700
	'राहु'	338	€V. 'सनि'	रदर
40.	'के <u>तु'</u>	200	६५. 'राहु'	२८६
44.	-A-B	Sox	E. 'केतु'	₹€•

'कन्या' लग्न	i	ऋमांक	पृ०सं०
कुलांक	पृ०सं०	१३३. 'राहु'	300
१७. 'कन्या' लग्न का फसादेश	5ER	१३४. 'केंचु'	368
e=. 'सूयें' का फसादेश	28%	बुदिचक लग्न	
२१. 'यन्द्रमा' का फलादेश	X35	र्३५. 'वृश्चिक' लग्न का फलादेश	३७⊏
१००. 'मगल' का फलादे मा	₹8€	१३६. 'सूर्ये' का फलादेश	305
१०१. 'बुष' का फलादेश	२६७	१३७. 'चन्द्रमा' का फलादेश	340
१०२. 'गुरु' का फलादेण	280	१३८. 'संगल' का फलादेश	इंद०
१०३. 'शुक्र' का फलादेश	२१६	१३६. 'बुध' का फलादेश	३ ⊏ १
१०४ 'शनि' का फलादेश	38€	१४०. 'गुरु' का फलादेश	३८१
१०५. 'राहु' का फलादेश	338	१४१. 'शुक' का फलादेश	3=5
१०६. 'केतु' का फलादेश	३००	१४२. 'शनि' का फलादेश	इन्द
१०७. 'सूर्य'	३००	१४३. 'राष्ट्र' का फलादेश	३६३
१००. 'चन्द्रमा'	308	१४४. 'केतु' का भलादेश	3=8
१०६. 'मंगल'	३०८	१४५. 'सूर्ये'	358
११०. 'बुघ'	785	१४६ 'चन्द्रमा'	\$==
१११. 'गुरु'	₹8€	१४७. मंगल'	₹₹₹
११२. 'शुक्र'	₹ ₹0	१४८. 'बुध'	₹3€
११३- 'शनि'	358	\$ x € . A £ ,	800
११४. 'राहु'	३२म	१५०. 'शुक्र'	ROR
११५. 'केतु'	3 \$ 3	१५१. 'शनि'	Rod
(449)		१४२. 'राहु'	255
तुला सम्न		११३- 'केतु'	X\$#
११६. 'सुला' लग्न का फलादेश	336	'चतु' सम्ब	
११७. 'सूर्य' का फलादेश	ききゅ		
११८. 'चन्द्रमा' का फलादेश	390	१५४. 'धनु' लग्न का फलादेश	8.55
११६. 'मंगल' का फलादेश	३३८	१५५. 'सूर्ये' का फलावेक	252
१२०. 'बुघ' का फलादेश	334	१५६. 'चन्द्रमा' का फलादेश	४२२
१२१. 'गुरु' का फलादेश	3 # #	१५७. 'मंगल' का फलादेश	855
१२२. 'शुक्र' का फलादेश	\$X0	१५व. 'बुध' का फलादेश	*52
१२३. 'सनि' का फसादेश		१५६. 'गुव' का फलादेश	R4R
१२४. 'राहु' का फलादेश	388	१६०. 'शुक' का फलादेश	854
१२४. 'केतु' का फलादेश	325	१६१- 'मनि' का फलादेश	RSK
१२६ 'सूर्य'	385	१६२. 'राहु' का फलादेश	A56
१२७. 'चन्द्रमा'	3R6	१६३. 'केंतु' का फलादेश	850
१२⊏- 'मंगल'	₹40.	१६४. 'स्वं'	£50
१२६. 'बुघ'		१६५. 'बन्द्रमा'	*\$\$
१३ ०. 'गुरु'	\$ % =	१६६. 'मंगल'	*\$*
१३१. 'शुक्र'		१६७. 'बुष'	Aśś
ह ३२. 'स नि'	544	१६८ 'बुर'	AAS

क्रमांक	पृ०स०	कुमाक	वृ०स०
१६६ 'मुक'	880	२०६. 'गुरु'	४२७
१७०. 'सनि'	XXS	২০৬. 'যুক্ষ'	* \$ \$
१७१. 'राहु'	XXX	२०८. 'शनि'	XXX
१७२. 'केवु'	378	२०६. 'राहुं'	35%
मकर सन्त		२१० 'केतु'	XX3
१७३, 'मकर' संग्न का फलादेश	R£\$	'सीन' लग्न	
१७४. 'सूर्य' का फलादेश	RER	२११. 'मीन' लग्न का फलादेश	XX=
१७५. 'बन्द्रमा' का फलादेश	RÉR	२१२. 'सूर्य' का फलादेग	ARE
१७६ 'संगल' का फलादेश	REX	२१३. 'चन्त्रमा' का फलादेश	XRE
१७७. 'बुध' का फलादेश		२१४. ,भंगल' का फलादेग	XXO
१७८. गुरु का फलादेश	RÉÉ	२१५. 'बुघ' का फलादेश	** *
१७६. 'शुक्र' का फलादेश	8£0	२१६. 'बुरु' का फलादेश	પ્રમુશ
१८०. 'सनि का फसादेश	४६७	२१७. 'शुक्र' का फलादेश	***
१८१ 'शहु' का फलादेश	प्रहेब	२१६. 'शनि' का फलादेश	४४२
१८२. 'केतु' का फलादेश	R & &	२१६. 'राहु' का फलादेश	KK\$
१८३. 'सूर्ये'	YEE	२२०. 'केतु' का फलादेश	*XX
१८४. 'बन्द्रमा'	Kø₹	२२१. 'सूर्व'	KKR
१५४. 'संगल'	800	२२२. 'चन्द्रमा'	KKE
१८६. 'बुक्ष'	R= \$	२२३. 'मंगल'	* 65
१ =७. 'गुरु'	Ker	२२४ 'बुघ'	X C C
१८८. 'सुक'	8=8	२२४. 'गुरु'	£100
१≒€. 'शिमि'	x6 \$	२२६. 'शुक'	KOR
१६०. ' <u>राह</u> ु'	λ £α	२२७. 'शनि'	<u> খুড়েল</u>
१६१. 'केतु'	X . 5	२२८. 'राहु'	४= २
कुम्भ संग्न		२२६ 'केतु'	भ्द€
१६२. 'कुम्भ' लग्न का फलादेश	XOX		
१६३. 'सूर्य' का फलादेश	X06	तृतीय सम्ब	NO.
१६४. 'चन्द्रमा' का फलादेश	Kok	[महों की युति का कलावेत	1
१६५. 'बंगल' का फलादेश	Kon	१. बहाँ का यु ति	488
१६६. 'बुध' का फलादेश	Xoz.	२. दो ग्रहों का युति फलावेस	XEB
१६७. 'गुर' का फ्लादेश	¥04	३. तीन ग्रहों का युति "	XEE
१६ ≒- 'बुक' का फलादेश	308	४. चार ग्रहों का युति "	₹013
१६६. 'शनि' का फलादेश	X0€	५. पाँच ग्रहों का श्रुति 🔐	484
२००- 'राहु' का फसावेश	220	६. छः सहरें का युति "	455
२०१. 'केतु' का फलादेश	222	७. सात ग्रहों का युति "	474
२०२. 'सूर्ये'	866	द. स्त्री-बातक ",	477
२०३. 'बन्द्रमा'	XXX.	६. विशिष्ट दोग	198
२०४. 'संगस'	446	१०. विविध	
२०५. 'बुध'	धरव	190 (1900)(1900)(1900)	
	1		





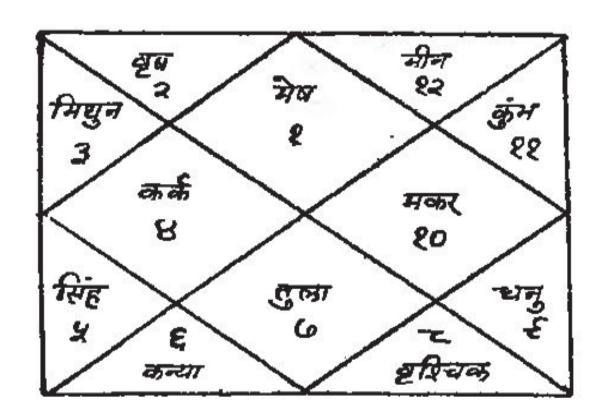
हम भारतवासी उन ऋषियों,
मुनियों तथा श्राक्षायों के
चिर-ऋणी हैं, जिन्होंने अपने
तप, त्याग से दीर्घायु प्राप्त
करके सैकड़ों क्वों से श्रीधस्वरूप ऐसे ग्रन्थों की रचना
की जिन्हें बाज तक विश्व का
कोई भी मानव (वैज्ञानिक)
असत्य सिद्ध नहीं कर पाया।



गौबों तथा नगरों से दूर, घोर जंगलों के मध्य, नपश्चर्या में लीन, साधु-सहात्माओं के आगे वन्य हिसक जन्तु भी नत हो जाते हैं, उन्हीं ने आहिनक प्रेरणास्वेरूप सर्वेजन - हिताब ऐसे सहाग्रन्थों की रचना की है।



हस्ति खित, असली, प्राचीन भृगुसंहिता फलित प्रकाश



1 प्रथम खण्ड [आवस्यक कातव्य]

ग्रह-शान्ति के उपाय

यदि कोई ग्रह किसी जातक के लिए अग्रुभ हो तो उसकी शान्ति के लिए निम्नलिखित बस्तुओं का दान करके, उस ग्रह के मन्त्र का अप करना चाहिए—

- (१) सूर्य-माणिक्य, ताबा, लाल चन्दन, लाल वस्त्र, गेहूँ, गुड़, लाल कमल, गाय।
- (२) सन्द्र-मोती, चौदी, कपूर, श्वेतवस्त्र, चावलों से भरी बाँस की पिटारी, जल-पूर्ण घट, गाय, शंख।
- (३) भंगल—प्रवाल, लास रंग का वस्त्र, स्वर्ण, लास रंग का बैल, असूर, नौबा, शेहूं तथा कनेर के फूल।
- (४) ब्राय-पन्ना, स्वर्ण, घृत, पीतवस्त्र, नीलवस्त्र, कांसी, मूंगा, हाची दौत ।
- (५) गुद-पुखराज, स्वर्ण, पीतवस्त्र, इत्दी, पीले रंग का अन्त, नमक, घोड़ा।
- (६) शुक्र-हीरा, स्वर्ण, चित्र-विचित्र रम का वस्त्र, चावल, गाय, घृत, मुगन्धित वस्तुएँ तथा स्वेत रंग का घोड़ा।
- (७) शनि—नीलम, लोहा, काले तिल, बैल, कृष्णवस्त्र, स्वणं, नीले रग का कम्बल, काले रंग की गाय, उड़द तथा भैंस।
- (८) **राहु**—गोमेद, स्वर्ण, कृष्णवस्त्र, कम्बल, तलबार, तिल का तेल तथा थोड़ा।
- (९) केतु वेदूर्य, कस्तूरी, स्वणं, कम्बल, विल का तैल, णस्त्र तथा बकरा।

प्रारंभिक जानकारी

जन्मकुण्डलीस्य ग्रहों का फलादेश जानने से पूर्व ज्योतिष-विषयक प्रारम्भिक जानकारी, यथा—तिथि, बार, नक्षत, राशि, ग्रहों का पारस्परिक सम्बन्ध आदि की ज्ञान होना अत्यावस्थक है। अस्तु, इस प्रथम-खण्ड में उन्ही सब प्रारम्भिक, परन्तु अत्यावस्थक ज्ञातब्य विषयों का उल्लेख किया जा रहा है, जिन्हें जाने बिनश क्योतिष विद्या के क्षेत्र में प्रवेश ही नहीं मिल सकता।

तिथि अथवा मिती

भारतीय ज्योतिष में चन्द्रमा की एक 'कला' की 'तिथि' कहते हैं। सामान्य बोलचाल की भाषा में तिथि की ही 'मिती' के नाम से पुकारा आता है।

विक्रम-सम्बद्धार का प्रारम्भ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से होता है तथा अन्त चैत्र कृष्णपद्ध की अमावस्था को होता है। जिस राति में चन्द्रमा विल्कुल दिखाई यहों देता, वह तिथि कृष्णपद्ध की 'अमावस्था' कही जाती है। कृष्णपद्ध की अमावस्था के दूसरे दिन से खुक्लपद्ध की प्रतिपदा आरम्भ होती है।

जिन पन्द्रह दिनों में चन्द्रमा प्रतिदिन आकाश में घोड़ा-घोड़ा बढ़ना आरंभ होता है तथा पन्द्रहवें दिन अपने पूर्णरूप में दिखाई देता है, उसे 'झुक्लपक्ष' कहते हैं तथा बाद के जिन पन्द्रह दिनों में चन्द्रमा आकाश में प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा करके घटने लगता है तथा पन्द्रवें दिन बिस्कुल दिखाई नहीं देता, उसे 'कुष्णपक्ष' कहते हैं । इस प्रकार प्रत्येक महीने में पन्द्रह-पन्द्रह दिन के दो पक्ष हुआ करते हैं—-(१) शुक्ल-पक्ष और (२) कृष्णपक्ष । पक्ष को आम बोलचाल की भाषा में 'पखवाड़ा' कहा जाता है।

यद्यपि नवीन संवत्सर का प्रारम्भ चैन मास के मुक्लपक्ष की प्रतिपदा से होता है, परन्तु प्रत्येक मास (महीने) का प्रारम्भ कृष्णपक्ष से ही माना जाता है अर्थात् प्रत्येक महीने का पहला आधा भाग शुष्णपक्ष का और दूसरा आधा भाग मुक्लपक्ष का होता है। शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से ओ पन्द्रह दिन की पन्द्रह तिथियों होती हैं. उन्हें क्षमशः (१) प्रतिपदा, (२) द्वितीया, (३) तृतीया, (४) चतुर्थी, (४) पचमी. (६) षच्ठी, (७) सप्तमी, (८) अष्टमी, (१) नवमी, (१०) दशमी. (११) एकादकी, (१२) द्वादकी, (१३) त्रयोदकी, (१४) चतुर्दकी, तथा (१५) पृणिमा के नाम से अभिहित किया जाता है। इसके द्वाद कृष्णपद्म की तिथियों को भी प्रतिपदा से चतुर्दकी तक इन्हीं नामों से पुकारा जाता है परन्तु कृष्णपद्म की किन्तम अर्थात् पन्द्रहवीं तिथि को 'अमावस्या' कहा जाता है। दोनों पक्षों को प्रतिपदा से चतुर्दकी तक की तिथियों को क्षमशः १, २, ३, ४ आदि अंकों के जिला जाता है, परन्तु पूर्णिमा को १५ तथा अमावस्या तिथि को ३०, अंक के रूप में लिखा जाता है।

तिथियों के स्वामी

विभिन्न देवताओं को विभिन्न तिथियों का स्वामी माना गया है। किस तिथि का स्वामी कौन-सा देवता होता है, इसे नीचे वताया गया है। जिस तिथि के स्वामी का जैसा स्वभाव है, वही स्वभाव उस तिथि का तथा उस तिथि में जन्म सेने वासे व्यक्ति का भी समझना चाहिए—

तिथि	स्वामी	तिथि	स्वामी	
प्रतिपदा	अम्ब	नुवसी	सुर्वा	
दिताया	भहरा	दमसी	काल	
तृतीया	गौरी	एकादती	विस्वेदेश	
प तुर्थी पंचमी	वणेश	द्वादशी	बिदम्	
	केवनाग	त्रयोदशी	कामदेव	
षष्ठी	कार्तिकेय	षदुर्दशी	शिव	
सप्तमी	सूर्ये पिव	पूर्णिमः	चन्द्रमा	
अष्टमी	पिव	अमावस्या	पितर	

नक्षत्र

ज्योतिषयों ने सम्पूर्ण खाकाम-मण्डल को २७ धावों में विचकत कर, प्रायेक भाग को एक-एक 'नवाह' को संसा दी है। अर्थात् जिस प्रकार पृथ्वी पर स्थान की दूरी को किलोमीटर खादि में नापर खातर है, उसी प्रकार खाकाम में एक स्थान में दूसरे स्थान की दूरी को मधावों के माध्यम से नापा खातर है। जिस प्रशार पृथ्वी पर नापने की दूरी में किलोमीटर के अन्तर्गत मीटर, सेम्टीमीटर आदि होने हैं, अभी प्रकार प्रायेक नक्षण की भी ४ चरण तथा ६० अंकों में विभाजित किया बना है। नक्षणों के 'बंब' को 'बटी' नाम से भी सम्बोधित किया खातर है।

नक्षतों के नाम कमशः निम्नानुसार हैं-

१ अभिवनी २ भरणी ३ कृत्तिका ४ रोहिणी ४ मृगणिरा ६ अद्रां	न पुष्य ६ अस्लेषा १० मधा ११ पूर्वाफाल्युनी १२ उत्तराफाल्युनी १३ हस्त १४ षित्ना	१५ स्वाति १६ विशाखा १७ अनुराधा १८ ज्येष्ठा १६ मूस २० पूर्वाषाड़ा २१ उत्तराषाड़ा	२२ खवण २३ धनिष्ठा २४ शतिभवा २४ पूर्वाभाद्रपद २६ उत्तराभाद्रपद २७ रेवती
--	--	---	---

उत्तराषाढ़ा की अन्तिम १५ घटी तथा श्रवण नकात की पहली ४ घड़ी— इस प्रकार कुल १६ घड़ी का एक नकात 'अभिजित्' भी माना जाता है। 'अभिजित्' सहित नक्षतों की कुल संख्या २८ हो जाती है। २८ नक्षतों के कम में अभिजित २२वाँ नकात माना जाता है उसके बाद श्रवण से रेवती पर्यन्त कम्माः २३ से २८ तक की संख्या वाले नक्षत वाले जाते हैं।

नक्षत्रों के स्वामी

पूर्वोक्त २८ नक्षतों के स्वामी २८ विभिन्न देवता माने गये हैं। जिस देवता का जो स्वभाव है, उसी के अनुरूप नक्षत्र तथा उस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक का स्वभाव भी माना जाता है। विभिन्न नक्षतों के स्वामी निम्नानुसार हैं---

नक्षस	स्थामी	नक्षस	स्यामी
१ अभ्विनी	अस्विनीकुमार	१५ स्वाति	पवन
२ भरणी	काल	१६ विशाखा	शुकारित मित्र
३ कृत्तिका	अग्नि	१७ अनुराधा	मित्र
४ रोहिणी	ब्रह्मा	१८ ज्येष्ठा	इ न्द्र
५ मृगक्तिरा	चन्द्रमा	१६ भूल	निऋं ति
६ आही	रुद्र	२० पूर्वीषादा	ব্য ন্
७ पुनर्वसु	बदिति	२१ उत्तराबाढा	विभ्वेदेवा
न पुष्य	बृहस्पति	२२ अभिजित्	ब्रह्मा
६ अस्लेषा	बृह्स्पति सर्पे	२३ श्रवण	বিভগু
१० मचा	पितर	२४ धनिष्ठा	वसु
११ पूर्वाफाल्गुनी	मग	२५ शतभिषा	बरुण
१२ उत्तराफाल्युनी	अर्यमा	२६ पूर्वाभाद्रपद	अजैकपाद
१३ हस्त	सूर्य	२७ उत्तराभाद्रपद	अहिबुं ध्रम्य
१४ पिता	विश्वकर्मा	२८ रेवती	यूषा

नक्षत्रों के चरणाक्षर

अपर बताया था चुका है कि प्रत्येक नक्षत्र को ४ चरण तथा ६० अंशों में विभाजित किया गया है। ज्योतिषियों के प्रत्येक नक्षत्र के प्रत्येक खरण का एक-एक 'खलर' भी निर्धारित किया है। जिस नक्षत्र के जिस चरण के लिए जो अक्षर निश्चित है, उसका उल्लेख नीचे किया गया है। जो मनुष्य जिस मक्षत्र के जिम चरण के ओग-कान में जन्म लेता है, उसका नाम उसी चरणाक्षर के आधार पर ग्या जाना है। उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति का जन्म अध्विनी नक्षत्र के तीमरे खरण में हुआ हो तो उसका नाम का आदि अक्षर 'चो' होगा और उसी के आधार पर उनका नाम 'चोवसिह', 'चोइयराम' आदि रखा जाएगा।

किस नक्षत्र के किस चरण के लिए कीनसा अक्षर नियत है, इसे निरनानुमार समझ लें।

नक्षव नाम	प्रथम ।		गाक्षर गृतीय	र चतुर्थ		नक्षव नाम	प्रयम		गक्षर 1 तृतीय	चतुः
१- अश्विनी २- अरणी ३- कृत्तिका ४- कृत्तिका ४- गृहिणी ४- गृगशिश ६- आर्ट्री ७- पुनर्वेसु ६- अश्लेषा १०- मधा ११- पू-फाल्युनी १३- हस्त १४- चिता	कर्ती संजित कर्न करके स्वीत करे प्रति	के लंक के के कि के में में टोर्टिक पी	安存的语言 等 医多色素 医白色 医红	部市で ac 衛 30 を 10 名 10 名 10 分	そうがん ひかかかか そうちゅう	स्वाति विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वीषादा उत्तराषादा अभिजित् श्रवण धनिष्ठा श्रतभिषा पू. भाद्रपर उ. साद्रपर रेवती	罗门可有名 安華 可看市 東京	र क्रिन सका स्ति क्रिके स्टिस क	रोतं न्यी स का जी के प्रश्नित का	的方式 學術 医疗 医自 年 學者 四十

वार

भारतीय ज्योतिव के अनुसार आकाश-भव्यल में मुख्य यहाँ की संख्या ७ है। वे यह हैं---(१) सनि, (२) वृहस्पति, (३) अंगल, (४) रिव, (४) कुक, (६) कुब वौर (७) चन्द्रमा। इन ग्रहों की अवस्थिति कमतः एक दूसरे से तीचे है। अर्चात् किन की कका सबके रूपर तथा चन्द्रमा की कक्षा सबसे तीचे है।

एक दिन-रात २४ चंटे का होता है। ज्योतिय में एक चंटे के समय से निश् 'होरा' जब्ब प्रचलित है। यह 'होरा' जब्ब 'अहोरात' सब्द का संस्थित रूप है अर्थात् 'अहोरात' शब्द में ते 'अहो' का अन्तिम अक्षर 'हो' तथा 'रात' का आदि अक्षर 'रा' लेकर 'होरा' शब्द का निर्माण हुआ है। इस तरह 'होरा' जब्द को घण्टे का पर्याय-बाची की कहा या सकता है।

सृष्टि के प्रारंभ में सर्वप्रथम सूर्य दिखाई दिया, अतः पहली 'होरा' का स्थामी 'सूर्य' की माना ग्या तथा सुष्टि के पहले दिन का नामकरण किया गया—'रविदार' अर्थात् सूर्येवार । तत्पश्चात् अगली प्रत्येक होरा पर अन्य एक-एक ग्रह का अधिकार माना गया। फातः एक दूसरे के समीपी कम में दूसरी होरा का स्थामी कुक, तीसरी का बुझ, भीथी का चन्द्रमा, पाँचवीं का शनि, छठी का बृहस्पति तथा सातवीं का मंगल हुआ। इसी कम के पुनरावर्तन के फलस्वरूप पहले दिन की चौबीसवीं अर्थात् अन्तिम होरा बुध के स्वामित्व पर समाप्त हुई, तब दूसरे दिन की पहली होरा का स्थामी चन्द्रमा हुआ, अतः उस दिन का नाम रखा यया--सोमवार अर्थात् चन्द्रवार। इसी कमानुसार तीसरे दिन की पहली होरा का स्थामी 'मंगल', चौथे दिन का कुन, पाँचवें दिन का बृहस्पति, छठे दिन का शुक्र तथा सातवें दिन की पहली होरा का स्थामी भानि हुआ। फलतः सृष्टि के पहले दारों का ऋम हुआ--(१) रविवार, (२) सोमवार, (३) मंगलवार, (४) बुधवार, (१) गुरुवार, (६) शुक्रवार और (७) शनिवार। आठवें दिन फिर पहली होरा का स्थामी सूर्य हुआ। इसी ऋम से अगले दिनों की पहली होरा के स्थामी पूर्ववत् ग्रह होते चले आ रहे हैं। अस्तु उन सात दारों का भक्र निरन्तर चल रहा है। सात दिनों के इस समूह की ही 'सप्ताह' कहा जाता है।

प्रत्येक बार का स्वामी उसी का अधिपति ग्रह होता है। गुरु, सीम, शुन तथा शुक्र—इन चार दारों की 'सौम्य' तथा मंगल, रवि एवं शनि—इन तीन वारों की 'कूर' संक्षक माना गया है। जिस बार के स्थामी का जैसा स्वभाव है, वही स्वभाव उस बार का तथा उस बार में जन्म लेने वाले जातक का भी माना जाता है।

राशि

जिस प्रकार सम्पूर्ण खमण्डल को २७ या २८ नक्ततों में बांटा शया है, उसी प्रकार उसे १२ राशि, १०८ धाग यथा ३६० अंशों में भी बाँटा गया है। बारह राशियों के नाम इस प्रकार हैं---

१ -	मेच	¥.	कर्क	9-	<u>तु</u> सा	80.	मकर
₹-	वृष	X -	सिंह	4.	वृश्चिक	28.	कुरुम

२. मिथुन ६. कन्या ६. घनु १२. मीन

वस्तु, समण्डल अर्थात् भ-चक के ३० अंग्र अथवा ६ मानों की एक राचि होती है। पहले बढाया आ चुका है कि एक-एक क्सन्त की चार-चार मानों में बीटा गया है और प्रत्येक भाग के लिए एक-एक चरणाझर भी निश्चित किया गया है अस्तु २७ नक्षत्रों के कुल १०८ भाग अर्थात् 'सरण' हुए और एक राणि के अन्तर्गत आये १ भाग अर्थात् नक्षत्रों के १ सरण। इस प्रकार तथा दो नक्षत्रों की हुई एक राणि।

किस राश्चिक अन्तर्गत कीन-कीन सा नश्चव समाहित है. इसे नश्चवों के चरणाक्षरों के आधार पर निम्नानुसार समझ लेना चाहिए—-

राज्ञिका नाम				राशि	के चर	णाक्षर			
१. मेच	٩	चे	ची	ता	तो	लू	ने	জী	मा
२. वृष	*	æ	Ų	जो	वा	भी	₹	वे	दो
३. मिथुन	आ	की	暫	घ	ङ	ন্ত	के	को	हा
४. कर्क	हो	£	है	हो	ढा	डी	ă.	हे	तो
५. सिंह	या	भी	मू	वे	भी	दा	ন্ত্রী	ç	ş
६- कन्या	टो	पा	पी	पू	य	घ	5	q	नो
৬. বুলা	रा	री	毎	₹	रो	सा	तो	র	ते
वृश्चिक	तो	या	नी	नू	ने	नो	या	नी	¥
६. घनु	ये	भी	या	तो	पू	ता	का	ढा	ù
१०. सकर	मो	आ	भी	खी	ৰু	*	खी	गु	गी
११- कुम्म	पू	ने	नो	सा	सी	मू	से	तो	दा
१२. मीम	गी	द	य	झ	কা	वे	सो	भा	भी

प्रह: उनका स्वभाव और प्रभाव

अकाशमण्डलस्य असंख्य ज्योतिष्पण्डों में से जो पिण्ड पृथ्वी स्थित सभी जड़-चेतन पदार्थों की अपने प्रभाव के प्रमावित करने की क्षमता रखते हैं, उनकी गणना ग्रहों में की जातो है। प्राचीन भारतीय-ज्योतिष में ऐसे बहों की कुल संख्या ७ बताई गई है। वे हैं---१. सूर्य, २. चन्द्र, ३. मंगल, ४. बुब, ४. बुहस्पति, ६. शुक और ७. शनि।

परवर्ती ज्योतिषियों वे अपने अनुसन्धानों के बस पर यह सिद्ध किया कि भूमण्डल की दोनों और पड़ने वाली छाया भी यहों जैसी हो प्रभावशालिनी है, अतः उन्होंने 'राहु', 'केतु' नामक तो अन्य छायायहों की कल्पना करके यहों की कुल संख्या ह कर दी।

अधिनिक काल के पाध्चात्य ज्योतिषयों ने आकाशमण्डल में ३ अन्य ग्रहों की भी खोज की है। बे हैं—(१) हवेंल, (२) नेपच्यून और (३) प्लूटो। ने सभी ग्रह पूर्वोक्त ७ ग्रहों से भी अत्यधिक ऊँचाई पर स्थित हैं। इस प्रकार कुल ग्रहों की संख्या १२ हो जाती है। परन्तु भारतीय-ज्योतिष में अभी तक पाश्चात्य ज्योतिषों कारा नवीन-आविष्कृत तीन ग्रहों को स्थान नहीं दिया ग्या है। अतः उसमें छायाग्रह यह-केंतु सहित केवल १ ग्रहों का हो उत्लेख मिलता है।

चन्द्र, बृहस्पति तथा शुक इन तीन ग्रहों की शुभ ग्रह माना जाता है। भुक्ष की नपुंसक ग्रह माना गया है, यह जिस ग्रह के साथ बैठता है, उस जैसा ही प्रभाव देता है। सूर्य, मंगल तथा शनि कूर ग्रह कहे गये हैं। राहु-केंद्रु की गणना भी कूर यहों में की जाती है। परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार 'केतु' की भी शुभ ग्रह माना जाता है।

उक्त ६ यहों में कीनसा ग्रह किस स्वभाव, बल तथा प्रभाव चाला है तथा उसके द्वारा किन विधयों का'विशेष रूप से विचार करना चाहिए, इसे निम्नानुसार समझ खें—

(१) सूर्ये—यह ग्रह 'पाप' संतक, पूर्व दिया का स्थामी, पुरुष जाति, रक्त-वर्ण एवं पित प्रकृति का है। स्नायु, मेस्दण्ड, नेल, हृदय आदि अवयर्थों पर इसका विशेष प्रभाव होता है। इसके द्वारा आत्मा आरोग्य, स्वमाव, पिता, राज्य, देवालय, कोक, अपमान, कलह तथा रोग—अतिसार, क्षय, मंदागिन, मानसिक रोग, नेल विकार आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए।

यह सम्म से सप्तम स्थान में बनी एवं मकर से ६ राजियों तक चेप्टा-बसी होता है। (२) चन्द्र--- यह यह 'शुभ' संक्षक, पश्चिमोत्तर दिशा का स्थामी, स्त्री जाति, श्वेत वर्ण एवं जलीय प्रकृति का है। यह रक्त का स्थामी तथा वातग्लेष्मा घातु वाला है। इसके द्वारा मन, चित्त वृत्ति, सम्पत्ति, माता, पिता, निर्धकश्चमण, राजकीय अनुग्रह, उदर, मस्तिष्क एवं शारीरिक स्वास्थ्य तथा कफज एवं जलीय रोग, स्त्रीजन्य रोग, मानसिक रोग तथा पीनस रोग आदि के विषय में विचार करना चाहिए।

यह लग्न से चतुर्थं स्थान में बली तथा भकर से ६ राशियों तक चेप्टा बली होता है।

कृष्णपक्ष की थण्ठी से शुक्लपक्ष की दशमीतक बहु क्षीण रहता है। इस अवधि में इसे पाप ग्रह तथा क्षीण माना जाता है। शुक्ल पक्ष की दशमी ने कृष्ण पक्ष की पंचमीतक ग्रह पूर्ण ज्योतिर्मान्, बलीतथा शुभ ग्रह माना है।

चतुर्थभाव में बली चन्द्रमा हो पूर्व फलदायी होता है, श्रीण चन्द्रमा नही ।

(३) सङ्गल-यह ग्रह 'पाप' सज्ञक, श्रीक्षण दिशा का स्वामी, पुरुष जाति, रक्त वर्ण, पित प्रकृति तथा अग्नि तत्व वाला है। यह उत्तेजक, तृष्णाकारक तथा दु:खदायी है। इसके द्वारा धैर्य, पराक्रम, भाई-बहिन, शक्ति तथा रक्त सम्बन्धी विचार करना चाहिए।

यह तीसरे तथा छठे स्थान में बली, दशम स्थान में दिखली। खन्द्रमा केसाथ चेष्टा बली तथा द्वितीय भाग में बलहीन होता है।

(४) कुष-पह ग्रह 'नप्रेंसक', संज्ञक उत्तर दिया का स्थामी, ज्यामवर्ग, विदोष तथा पृथ्वी तस्य वासा है। यह व्यवसाय, चिकित्सा, ज्योतिष, ज्ञिल्प, कानून, चतुर्य एवं दशम स्थान का कारक है। इसके द्वारा बुद्धिप्रम, विवेक, लक्ति, जिल्ला एवं तालु से उच्चारण किये जाने वाले शब्द एवं अवयव तथा गुप्त रोग, श्वेतकुष्ठ, गूँगापन, वातरोग, संग्रहणी आदि का विचार किया जाता है।

मुझ चतुर्थ स्थान में 'निर्वेस' होता है। यह जैसे यह के साथ बैठा हो उसी के स्वभाव का बन कर, शुभ वयवा बशुभ फल देने बाला भुभप्रह अथवा पापप्रह बन जाता है। पूर्व चन्द्र, मुझ तथा शुक्र के साथ शुभ फलदायक तथा शुर्थ, मंगल, शिन, राहु, केतु के साथ बशुभ फलदाता होता है। यदि यह अकेला हो तो भुभ फल देता है।

(५) बृहस्पति—यह ग्रह 'शुभ' संज्ञक, पूर्वोत्तर दिशा का स्थामी, पीतवर्ण तथा आकाश तस्य बाला है। यह हृदय की शक्ति का कारक है। इसके द्वारा पारलीकिक सुख, आध्यात्मिक-सुख, घर, विद्या, पूल, पील तथा औष, गुल्म आदि रोगों का विद्यार किया जाता है।

खन्न में बैठा हुआ वृहस्पति अभी तथा चन्त्रमा के साथ कहीं की बैठा हुआ चेष्टा-बली होता है। (६) शुक्क--यह ग्रह 'मूभ' संक्षक, दक्षिण-पूर्व दिया का स्वामी, श्याम-गौर वर्ण तथा जलीय तस्य बाला है। यह कफ, बीयं आदि श्वातुओं तथा काव्य-संगीत, बाहन, शब्या, कामेच्छा, पत्नी (स्त्री), औख, बस्त्राभूषण आदि का कारक है। इसके द्वारा सांसारिक-मुख, व्यावहारिक-मुख, एवं चातुर्य का विचार किया जाता है। यदि जातक का जन्म दिन में हुआ हो तो इसके द्वारा उसकी माता के सम्बन्ध में भी विचार किया जाता है।

यह छठे स्थान में निष्फल तथा सासर्वे स्थान में अनिष्टकर होता है।

(७) शनि यह यह 'कूर' संज्ञक, नपु'सक जाति, पश्चिम दिशाका स्वामी कृष्णवर्ण, बातश्लेमिक प्रकृति का तथा वायुतत्त्व बाला है। इसके द्वारा आयु, कारीरिक बल, दृढ़ता, ऐश्वयं, यश, मोक्ष, योगान्यास, नौकरी, विदेशी आषा, विपत्ति एव सृष्ठि आदि रोगों का विचार किया जाता है। यदि जातक का जन्म, रावि में हुआ हो तो यह ग्रह माता-पिता का कारक होता है। पापग्रह होने पर भी इसका खन्तिम परिणाम सुखदायक होता है। यह जातक की दुर्भाग्य एवं संकटों का शिकार बनाने के बाद उसे शुद्ध एवं सात्विक बना देता है।

यह सप्तम स्थान में अली तथा चन्द्रमा अववा किसी अन्य वकी ग्रह के साथ रहने पर चेष्टा उसी होता है।

- (द) राहु--- यह यह 'कूर' संज्ञक, रक्षिण दिशा का स्थामी तथा कृष्णवर्ण है। यह गुप्त युक्ति-बल, कष्ट एवं सुटियों का कारक है। यह जिस स्थान में बैठता है यहाँ की उन्नित की रोक देता है।
- (९) के सु—यह ग्रह 'कूर' संज्ञक, उत्तर दिया का स्थामी तथा कृष्णवर्ष है।
 कुछ विद्वान इसे 'शुभ ग्रह' भी मानते हैं। यह गुप्त-शक्ति-अल, कठिन कमें, भय एवं
 सुटियों का कारक है। इसके द्वारा जातक के हाथ-पीय, खुधाजनित कष्ट, काताग्रह (नगना) एवं समें रोगों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

राशि: उनका स्वभाव और प्रभाव

कुल राशियाँ १२ हैं। किस राशि का क्या स्वमान, प्रभाव है तथा उसके द्वारा किन विवर्णों का विशेष रूप से विचार किया जाता है, निम्नामुखार समझ लें—

(१) मेख-यह राजि 'पुरुष' जाति, पूर्व दिया की स्वामिनी, लाल-पीले रंग वाली, कान्तिहीन, क्षतिय वर्ण, चर-संशक, अग्नि तस्त्व, समान अंग, अल्प-सन्तिति सवा पित प्रकृति जाती है। यह अहंकारी, साहसी तथा मिन्नों के यदि दयालु-स्वभाव रखने वाली है। इसके द्वारा जातक के मस्तक के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

- (२) शुष-यह रावि 'स्त्री' जाति, दक्षिण दिणा की स्वामिनी, श्वेत रंग बाली, कान्ति-हीन, वैक्य वर्ण, स्थिर संज्ञक, शिथिल शरीर, शुभकारक, महा कप्ट-कारी तथा भूमितस्व बाली है। यह स्वार्थी तथा सांसारिक कार्यों में दक्षना एवं बुद्धिमत्ता से काम लेने वाली है। इसके द्वारा जातक के मुँह तथा कगोलों के सम्पन्ध में विचार किया जाता है। इसे 'अर्द्ध जलराशि' भी कहते हैं।
- (३) मिथुन—यह रावि 'युर्थ' जाति, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, हरित रंग, चिकनी, उष्ण स्वधाव, भूदवर्ण, शिथिल शरीर, विषमोदयी तथा महाणब्दकारी है। यह शिल्पी तथा विद्या-व्यसनी स्वभाव की है। इसके द्वारा जातक के स्वन्ध तथा बाहुओं के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।
- (४) कर्क-यह राशि 'स्ती' जाति, उत्तर विणा नो स्वामिनी, रबत-धवल मिश्रित रंग वाली, जनचारी, सौम्य, कफ प्रकृति, बहु सन्तितवान्, बहुत पाँवों वाली. रातिवली एवं समोदयी है। यह लज्जालु स्वभाव की, समयानुसार चलने वाली तथा सांसारिक उन्तिक्ष के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहने वाली है। इसके द्वारा जातक के वक्षस्यल एवं गुदों के सम्बन्ध में विद्यार किया जाता है।
- (५) सिंह—यह राशि 'पुरुष' जाति, पूर्व दिशा की स्वामिनी, पीले रंग वाली, सिंवय वर्ण, उष्ण-स्वमाव, पुष्ट शरीर, पिल प्रकृति, अग्नि नस्य वाली, निजंल एवं अल्प सन्तिवान् है। इसका स्वभाव मेच राशि जैसा है, परन्तु इसमें स्वातन्त्य-प्रियता एवं उदारता अधिक है। इसके द्वारा जातक के हृदय के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।
- (६) क्रन्या—यह रावि 'स्ती' जाति, श्रक्षण दिशा की स्नामिनी, पिगल रंग जाती, वि-स्वभाव, पृथ्वीतत्व वाली, वायु एवं शीत-प्रकृति, अस्य सन्तरिवान् तथा राविवली है। इसका स्वभाव मियुन रावि जैसा है, परन्तु यह अपनी उन्नति एवं सम्मान पर अधिक ध्यान देती है। इसके द्वारा जातक के पेट के मम्बन्ध में विचार किया जाता है।
- (७) तुला—यह रावि 'पूर्व' जाति, पश्चिम दिया की स्वामिनी, वयाम रंग की, शूदवर्ण, ऋद-स्वधाव, वायुतस्व वासी, कीचोंदयी, बर-संज्ञक, विनवली, बल्प सन्ततिवान् एवं पादजलराणि है। यह स्वधाव से ज्ञानप्रिय, राजनीतिज्ञ, विचारणील तथा कार्य-सम्पादक है। इसके द्वारा जातक के नामि से बीचे के अंगों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।
- (८) वृश्चिक-पह राशि 'स्ती' जाति, उत्तर विकाकी स्वामिनी, शुध रंग भासी, बाह्यणवर्ण, कफ प्रकृति, राजि बसी, खड्ड अस तत्त्व दासी तथा बहु सम्ततिवाम्

है। इसका स्वभाव निर्मल, स्पष्टवादी, हठी, दम्भी तथा बृढ़-प्रतिज्ञ है। इसके द्वारा जातक की जननेन्द्रिय के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

- (९) धनु यह राशि 'पुरुष' जाति, पूर्व दिशा की स्वामिनी, सुनहरे रंग वाली, क्षतियवर्ण, अग्नि सस्य वाली, पित्त-प्रकृति, द्वि-स्वभाव, दिनवली, दूढ़-शरीर, अल्प सन्सितवान् सदा अर्द्ध जल राशि है। इसका स्वभाव करुणामय, अधिकार प्रिय तथा मर्यादा युक्त है। इसके द्वारा जातक के पाँवों की संधि एवं जांघों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।
- (१०) सकर—यह रावि 'स्ती' जाति, दक्षिण दिया की स्वामिनी, पिगल रंग की, बैस्य वर्ण, पृथ्वी तस्य वासी, शियित शरीर, वात प्रकृति तथा राविवली है। इसका स्वभाव उच्चस्थिति का अभिलाषी है। इसके द्वारा जातक के पांची के घूटनों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।
- (११) कुम्म यह राशि 'युष्य' जाति, पश्चिम दिया की स्वामिनी, विचित्र रंग वाली, शूद वर्ण, वापुतत्त्व एवं तिवीष प्रकृति वाली, उष्ण-स्वभाव, ऋर, मध्यम सन्तति वाली, दिनवली तथा शीवोंददी है। इसका स्वभाव नवीन वस्तुओं का आविष्कारक, विचारशील, धार्मिक तथा शान्त है। इसके द्वारा जातक के पेट के भीतरी भागों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।
- (१२) मीन-यह राशि 'स्ती' जाति, उत्तर दिशा की स्वामिनी, पिंगल रंग वाली, ब्राह्मणवर्ण, कफ प्रकृति, जल तत्त्ववाली तथा राज्ञिवली है। यह पूर्णतः जल-राशि है। इसका स्वभाव श्रेष्ठ, दयालु तथा दानशीलता का है। इसके द्वारा जातक के पाँवों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

राशियों के स्वामी

विभिन्न राभियों के विभिन्न ग्रहस्वामी भाने गये हैं। कौनसा ग्रह किस रावि का स्वामी है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए---

मेच एवं वृश्चिक—इन दोनों राशियों का स्वामी 'संगल' है। ? २

वृष एवं सुला---इन दोनों राशियों का स्थामी 'सुक' है। २ ७

मियुन एवं कन्या---इन दोनों रामियों का स्थामी 'बुघ' है।

करूँ-इस राशिकां स्वामी 'चन्द्रमा' है।

सिह—इस राशि कास्वामी 'सूर्ये' है।

¥

धनु एवं सीन—इन दोनों राशियों का स्वामी 'धृहस्पति' है। ६ १२ भकर एवं कुम्प—इन दोनों राशियों का स्वामी 'शनि' है। १० ११

हिष्यकी---राहु तथा केतु छाया-ग्रह होने के कारण किसी राशि के स्वामी नहीं माने जाते, परन्तु कुल ज्योतिर्विट बुध की राशि 'कन्या' पर 'राहु' तथा 'मियुन' पर 'केतु' का भी आधिपत्य स्वीकार करते हैं।

राशीश बोधक चक

राशि	स्वामी	रात्रि	स्वामी	
१- मेष	मंगल	৬. দুলা	शुक	
२. बूष	शुक	य ्वश्चिक	भंगल	
३. मियुन	बुध/केतु	६. धनु	बृहस्यति	
४. ककं	चन्द्रम१	१०. सकर	शनि	
५. सिंह	सूर्यं	११- कुम्भ	शनि	
६. कन्या	बुध/राह	१२- मीन	बृहस्पनि	

ग्रहों का राशि-भोग काल

भ-चक में सभी यह कमनः सभी राशियों में विचरण करते हैं। कौनमर यह एक राशि में कितने समय तक ठहरता है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए--

यह का नाम	एक राणि पर ठहरने की अवधि	ग्रहका नाव	एक रामि पर ठहरने की अवधि
१. सूर्यं	एक मास	६. युक	पौन माम
२. चन्द्र	सपा को दिन	৬. খনি	কাৰ্য বৰ্
३- मंगल	द्रेढ़ मास	८ सह	बेढ़ वर्ष
A. 24	पौन मास	€ . केतु	क्षेत्र वर्ष
५. बृहस्पति	तेरह मास		

ग्रहों की बक्री तथा अतिचारी गति

सूर्य, चन्द्र, राहुतया केतु—इन चार ग्रहों के अतिरिक्त शेष पाँचों ग्रह—अर्थात् संगल, बुध, बृहस्पति, खुक और शनि—कभी-कभी वकी अथवा अतिचारी हो जाते हैं।

ग्रह के राशियों में कमशः परिश्रमण को 'मार्गी', शीधतापूर्वक परिश्रमण को 'अतिचारी' तथा अगली राशि को ओर बढ़ने की बजाय पीछे की राशि में लौट पड़ने को 'बक्ती' गति कहा जाता है।

अतिचारी तथा बको ग्रह एक राशि पर अपने भ्रमण को निश्चित अवधि में पूरा करने की बजाय कुछ आगे पीछे भी हो जाते हैं। आकाश-मण्डल में किस समय कौनसा ग्रह मार्गी, बकी अथवा अतिचारी चल रहा है, इसका कान पंचांग देखकर हो सकता है। जातक के जन्म के समय जो ग्रह आकाश-मण्डल में जिस गति से भ्रमण कर रहा होता है उसका वैसा ही श्रभाय जातक के ऊपर जीवन भर पड़ता रहता है।

ग्रहों की नैसर्गिक-मैत्री

कौनसा ग्रष्ट किस ग्रह का जिस, सम अथवा शत्रु है, इसे नीचे प्रदर्शित 'निसर्ग मैती चक' में देख कर समझ लेना चाहिए—

निसर्गे भेवी चक

सम्बन्ध कास्थरूप	ग्रहीं के नाम								
	सूर्यं	चन्द्र	मंगल	बुघ	गुरु	शुक	शनि		
मिव	चन्द्र मंगल बुघ	सूर्यं बुघ	सूर्य चन्द्र गुरु	सूर्य मुक	सूर्य चन्द्र मंगल	बुध शनि	बुघ मुक		
सम	बुघ	मंगल बुध शुक शनि बुध	शुक शनि	मंगल गुरु स्रनि	शनि	मगल गुरु	बुघ		
मनु	शुक शनि		बुघ	चन्द्र	मुक बुघ	सूर्यं चन्द्र	सूर्य चन्द्र मंगल		

टिप्पणी (१)-कुछ विद्वानों के मतानुसार चन्द्रमा गुरु से शत्रुता मानते हैं।

(२) राहु केतु छायाग्रह हैं, अतः 'निसर्ग मैं वी चक्र' में इनका उल्लेख नहीं किया गया है। परन्तु ये दोनों ग्रह शुक्र तथा शनि से मिन्नता मानते हैं तथा सूर्य, चन्द्र, मंगल, एवं गुरु—इन चारों से शनुता रखते हैं। बुध इन दोनों के लिए सम है। इसी प्रकार सूर्य, चन्द्र, मंगल और गुरु—ये चारों ग्रह राहु तथा केतु से शनुता मानते हैं, बुध इन दोनों से समभाव रखता है तथा शुक्र और शनि इन दोनों से मिन्नता मानते हैं।

ग्रहों के अंश

प्रत्येक ग्रह के ३० अंग होते हैं। 'जातक के जन्म के समय कीनमा ग्रह कितने अंश पर था', इसका ज्ञान उस समय के पंचांग द्वारा ज्ञात हो मकता है। इस विषय में किसी ज्योतियों से जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

३ से ६ अंश तक का ग्रह किशोरावस्था का, १० से २२ अंश तक युवावस्था का, २३ से २८ अंश तक वृद्धावस्था का तथा २६ से २ अंश (२६, ३०, १ और २) तक मृतक अवस्था का माना जाता है।

किशोर एवं वृद्धावस्था वाले ग्रह वालक पर अपना प्रभाव अल्प परिमाण में तथा युवावस्था वाले ग्रह पूर्व परिमाण में प्रकट करते हैं। मृतक-अवस्था वाले ग्रहों का प्रमाव न के बरावर होता है।

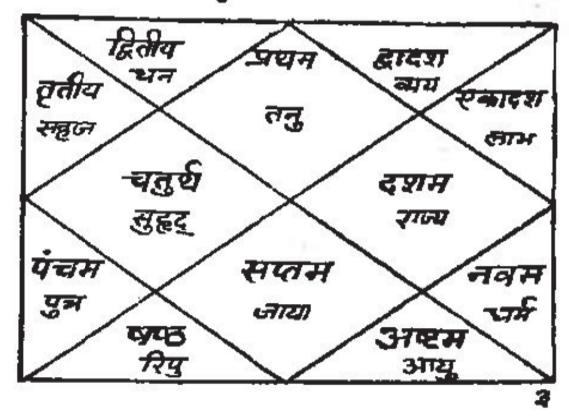
जन्म कुण्डली के द्वादशभाव

जन्म-कुण्डली इस बात को परिचायक है कि जातक के जन्म के समय आकाश-मण्डल में कौन-सा ग्रह, किस राशि में, कितने अंशों पर परिश्रमण कर रहा था। भारह राशियों के प्रतीक रूप जन्म-कुण्डली में भारह खाने होते हैं, जिन्हें 'घाव', 'स्यान' अथवा 'घर' आदि नामों से पुकारा जाता है।

जन्म-कुण्डली के द्वादशमायों के नाम निम्नलिखित हैं-

- (१) सनु, (२) धन, (३) सहज, (४) सुहद्, (५) पुत्र, (६) रिपु, (७) जाया (स्त्री), (=) बायु, (१) समें,
- (१०) कर्ने, (११) जाय (साम) जीर (१२) व्यय ।

जन्म-कुण्डली के द्वावशमाय



उन्त नामों को अन्य नामों के भी पुकारा जाता है। द्वादन भावों के विभिन्न नाम तथा किस भाव द्वारा किन-किन विषयों का विचार किया जाता है, इसे निम्नानुसार समझनः चाहिए—

(१) पहला भाव— इसे प्रथम, सनु, सम्म, केतु वादि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के स्वरूप, बाकुति, बायु, चिह्न, जाति, मस्तिक, विवेक, शील, सुख-दुःख वादि के विषय में विचार किया जाता है। लग्नेश भी स्थिति एवं बलाबस के आधार पर जातक को कार्युकुशलता एवं जातीय-उन्नति-अवनति का जान भी इसी भाव से प्राप्त होता है।

- (२) दूसरा शाव— इसे द्वितीय, धन, विस, पणफर वादि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के स्वर, सौन्दर्य, सत्यवादन, आंख, नाक, कान, कुन, कुटुम्ब मिस्र, सुखोपभोग, बन्धन, गायन, कय-विकय, रत्न, स्वर्ण-चाँदी, धन, संचित पूँजी वादि के विषय में विचार किया जाता है।
- (३) तीसरा भाव— इसे तृतीय, सहज पराक्रम, मातृ, आपोक्तिम आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के पराक्रम, शौर्य, धैर्य, साहस, कर्म, सहोदर, सेवक, आयुष्य, काम, योगाध्यास तथा क्षय-स्वास. दमा आदि रोगों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।
 - (४) चौचा भाव- इसे चतुर्व, सुद्ध्व, सुद्ध, केन्द्र आदि नामों हुते भी पुकारा

जाता है। इसके हारा जातक की जाता, पिता का सुख, अन्तः करण, घर, गांव, उपवन, चतुष्पद, सम्पत्ति, वाहन, निधि, दयालुता, उदारता, छल-कपट तथा यकृत् एवं उदर रोग आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। यह स्थान विशेष कर 'माता' का है।

इस भाव के कारक चन्द्रमा तथा बुध हैं।

(५) पाँचवाँ भाव--इसे पंचम, बुध, विद्या, पणफर, विकोण आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक की विद्या, बुद्धि, सन्तान, विनय, नीति, प्रवन्ध-कुशलता, देवभक्ति, धन प्राप्ति के उपाय, आकिस्मक-धन को प्राप्ति, नौकरी छूटना, मामा का सुख, हाय का यश तथा बस्ति, यश्रीशय, मूद्रपिण्ड आदि के विधय में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक बुध है।

(६) छठा भाव—दसे पष्ठ, रिपु, विक, उपचय, आपोक्लिम आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के शबू, जिन्ता, सन्देह, जागीर, यश, मामा को स्थिति, युदा तथा पीड़ा, वण, रोग आदि के विषय में विचार किया जाता है।

इस भाव के कारक शनि तथा मक्ल हैं।

(७) सातवी भाव — इसे सप्तम, जाया, केतुआदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक को स्त्री, कामेच्छा, काम चिता, रमणगक्ति, विवाह, स्वास्थ्य, मिल, दैनिक आय, व्यवसाय, झगड़े-अंझट, जननेन्द्रिय तथा बवासीर की बीमारी वादि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव में 'वृश्चिक' राशि को बलवान मानते हैं।

(८) आठवाँ भाव—इसे अष्टम, बायु, जीवन, मृत्यु, चतुरस्र, पणफर आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक को आयु, जीवन, मृत्यु, मृत्यु के कारण, मानसिक चिन्ताएँ, पुरातस्य, संकट, ऋण, समुद्र-ग्राह्मा, जननेन्द्रियों के रोग वादि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक 'शनि' है।

(९) नवाँ भाव—इसे नवम, अमं, भाग्य, विकोण खादि नामों से पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के पुष्प, अमं, तप, शील, तीर्य-याता, दान, प्रवास, विद्या, मानसिक वृत्ति, पिता का सुख एवं भाग्योदय आदि के सम्बन्ध में विद्यार किया जाता है।

इस भाव के कारक 'सूर्य' तथा 'गुरु' है।

(१०) वसवी आग—इसे दशम, कर्म, राज्य, केन्द्र आदि नामों में श्री पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के ऐश्वयं-भोग, यश, नेतृत्य, प्रभुत्व, भध्यान, गाउय-संत्रंध व्यवसाय, नौकरी, अधिकार सथा पिता के सम्बन्ध में विकार किया जाता है। इस भाव में शेष, वृष तथा सिंह राशियां, धनु राशि का उत्तराई तथा मकर राशि का पूर्वाई बलवान होता है।

इस भाव के कारक सूर्य, बुध, बुध सथा शनि हैं।

(११) स्याहर्तं भाव- इसे एकादम, लाम, आय, उपचय, पणकर आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक की आय, सम्पत्ति, ऐश्वर्यं, रत्न, वाहन, मांगलिक-कार्यं आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

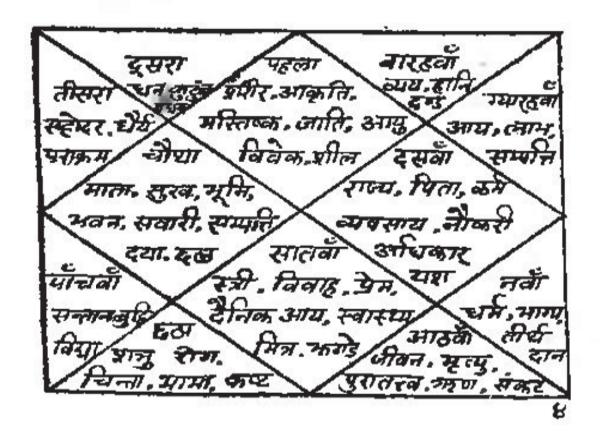
इस भाव का कारक 'गुरु' है।

(१२) बारहवीं भाव— इसे द्वादश, व्यय, जिक वादि नामों से श्री पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के व्यय, व्यसन, दान, शाहरी-सम्बन्ध, याता, रोग, दण्ड, हानि आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक 'शनि' है।

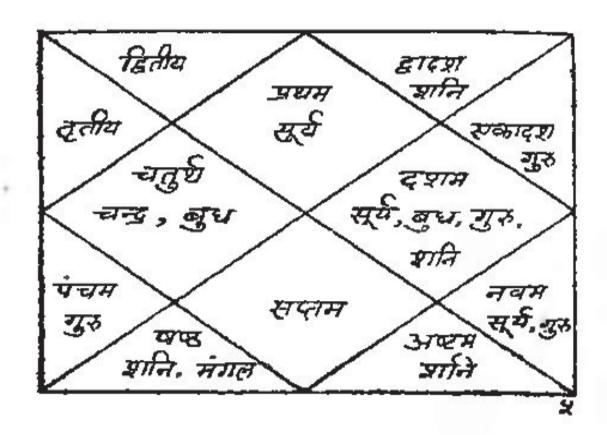
विभिन्न नामों से प्रमुख विचारणीय विषय निम्नोकित कुण्डली चन्न में प्रदेशित हैं:—

विभिन्न भावों 🖰 विचारणीय विषय



विभिन्न भाव के कारक ग्रहीं को आगे दिए गए कुण्डसीचक में प्रदर्शित किया गया है—

विभिन्न मावों के कारक



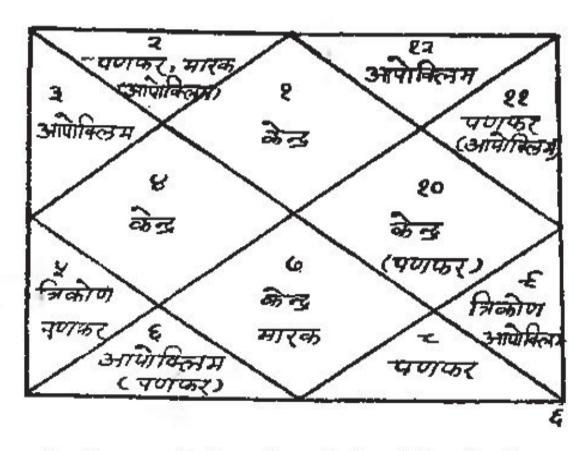
भावों की त्रिकोण, केन्द्रादि संज्ञा

नामों की (१) विकोण, (२) केन्द्र, (३) पणफर, (४) आपोक्सिम तथा (४) भारक—ये पांच विशिष्ट संज्ञाएँ भी हैं, इनके विषय में नीचे लिसे अनुसार समझना भाहिए—

- (१) तिकोण-पांचवें तथा नवें भाव को 'तिकोण' कहते हैं।
- (२) केन्द्र-पहले, चौथे, सातवें तथा दसवें-इन चारों भावों को 'केन्द्र' कहा जाता है।
- (३) यगफर--दूसरे, पौचवें, आठवें सथा न्यारहवें---इन चारों नामों के 'पणफर' कहा जाता है।
- (४) अपोक्लिम-तीसरे, छठे, यमें तथा बारहवें—हन चारों भावों को 'आपोक्लिम' कहा जाता है।
 - (५) मारक दूसरे तथा सातवें भाव को 'मारक' कहा जाता है।

विष्यणी—कुछ विद्वार्थ् दूसरे तथा दसवें भाव को 'यणफर' तथा तीसरे और ग्यारहवें भाव को 'आपोक्लिम्' मानते हैं। कुछ अन्य विद्वान् छठे तथा आठवें भाव को 'यणफर' तथा दूसरे ओर बारहवें भाव को 'आयोक्सिम' मानते हैं।

त्रिकोणादि बोधक चक



टिप्पणी--मतान्तरों को कुण्डली चक के कोष्ठकों में प्रदक्षित किया गया है।

मूल त्रिकोण

निम्नानुसार जो ग्रह जिस राशि से जितने अंश पर हो उसे सुख विकोण-स्थित समझना चाहिए—

- १. सूर्य-सिंह राशि में १ से २० अंश तक।
- २. चन्द्र--वृष राशि में ४ से ३० खंश तक।
- ३. मंगल-भेष राजि में १ से १८ वंश तक।
- ४. बुध-कन्या राशि में १ से १५ अंश तक।
- ५. गुरु-धनुराधि में १ से १३ अंश तक।
- ६. मुक-सुला राजि में १ से १० मंश तक ।
- ७. शनि-कुम्भ राशि में १ से २० वंश तक।

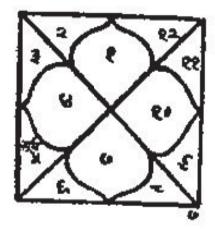
हिप्पणी—राहुको कर्क राश्विभे तथा केंद्र को भक्तर राश्विभे सूस विकोण सन स्थाना जाना है।

मूल त्रिकोण	की	राशि	एवं	ग्रह-बोधक	चक

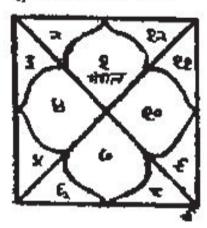
ग्रह	सूर्यं	चन्द्र	मंगल	बुघ	बुघ	भु क	श्रनि	राहु !	केनु
राशि	सिंह १ से २०	ながある	मेप से १८	कन्या १ से १४	घनु १ से १३	सुला १ से १०	कुम्भ १ से २०	कर्क	भुक्
	अंश तक	अंश तक	अंश सक	अंश तक	अंश तक	अंश तक	संश तक		

नीने को पहली ६ उदाहरण कुण्डलियों में विभिन्न ग्रहों को उनके मूल विकोण में स्थित खलग-अलग दिखाया गया है। अन्तिम उदाहरण कुण्डली में सभी ग्रहों को एक साथ अपनी-अपनी मूल विकोण राशियों में स्थित दिखाया गया है। ये सभी कुण्डलियों नेप सम्म को हैं। इन्हीं के आधार पर अन्य लग्न वाली कुण्डलियों के विषय में भी समझ सेना उचित है-—

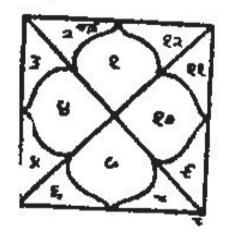
मूल विकोणस्य 'सूर्य'



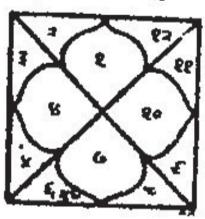
मूल विकोणस्य 'मंगल'



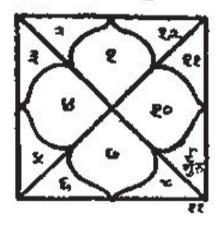
मूल विकोणस्य 'चन्द्र'



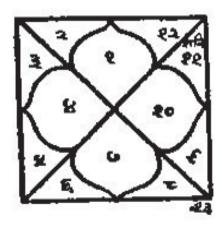
मूल जिकोणस्य 'बुस'



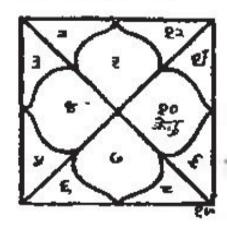
मूल जिकोणस्य 'गुरु'



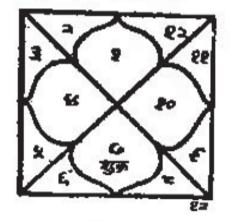
सुख दिकोणस्थ 'शनि'



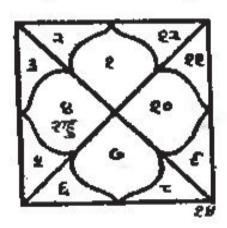
मूल विकोणस्य 'केतु'



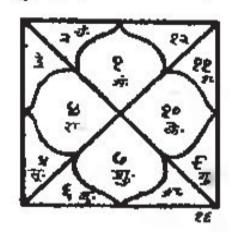
बुध विकोणस्य 'शुक्र'



भूल विकोणस्य 'राहु'



मूल विकोणस्य 'सभी ग्रह'



ग्रहों की उच्च स्थिति

कौनसा ग्रह किस राशि के कितने अंश बीत आने पर उच्च का माना आता है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए—

- १. सूर्य---'मेव' राशि के १० वंश पर।
- २. चन्द्र--'बूब' राशि के ३ अंश पर।
- ३. मंगल-- 'सकर' राशि के २८ अंश पर ।
- ४. बुध---'कन्यर' राशि के १५ वंश पर ।

- ४. बुरु---'कर्ब' रामि के ५ अंश पर।
- ६. शुक-'मीन' राशि के २७ अंश पर।
- अनि—'तुता' राशि के २० अंश पर।

टिप्पणी—कुछ विद्वान् मिथुन राज्ञि के १५ अंश पर तथा कुछ वृष राणि में 'राहु' को उच्च मानते हैं। इसी प्रकार, कुछ के मत में धनु राज्ञि के १५ अंश पर तथा कुछ वृश्चिक राज्ञि में 'केतु' को उच्च का मानते हैं।

ब्रहों की नीच स्थिति

जिस ग्रह को जिस राणि के जितने अंत्रों पर उच्च का माना जाता है, उससे सातवीं राणि पर उतने हो अंशों में वह नीच का माना जाता है। यथा—

- १. सूर्य-- 'तुला' राज्ञि के १० वंश पर।
- २. चन्द्र--'वृश्चिक' राशि के ३ अंश पर ।
- ३. मंगल-- 'कर्के' राज्ञि के २८ अंश पर ।
- ४. बुध—'मीन' राज्ञि के १५ अंश पर।
- ध्. बुरु---'मकर' राशि के ५ खंश पर।
- ६. शुक--'कन्या' राशि के २७ अंश पर।
- ७. श्वनि--'मेव' राज्ञि के २० अंश पर।
- दिव्यकी—कुछ विद्वानों से मतानुसार 'राहूं धनु राजि के १४ वंश पर तथा कुछ के सतानुसार वृश्चिक राजि में नीच का माना जाता है। इसी प्रकार, कुछ के मत में मिखुन राजि के १५ वंश तक तथा कुछ वृष राजि में 'केतु' को नीच का मानते हैं।

ग्रहों का बलाबल

बहों के बल चार प्रकार के कहे गये है-

- १. सर्वोज्यवली---उच्च का होने पर।
- २. उच्च बली--मूल विकोभ में होने पर ।
- ३. बली-स्वकंती (अपने घर) का होने पर।
- ¥. निर्वल—नीच का होने पर।

दिष्यणी—जो ग्रह जिस राशि का स्वामी होता है, यदि यह उसी राजि में बैठा हो ती उसे 'स्वग्रही' अपवा 'स्वक्षेत्री' कहा बाता है।

विभिन्न बहों के उच्च क्षेतीय, मुख विकोणस्य, स्वक्षेत्री तथा शीच का होते के सम्बन्ध में और अधिक स्पष्टता को शीचे निवे अशुसार समझ केना चाहिए---

- १. सूर्यं 'सिंह' राशि स्थित सूर्य स्वतेत्री होता है। सिंह राशि के १ से २० अंश तक उसका मूलितकोण, सथा २१ से ३० अंश तक स्वज्ञेत्र माना जाता है। सेष राशि के १० अंश तक उच्च का और मुला राशि के १० अंश तक नीच का होता है।
- २- अन्त्र--'ककें' रामि स्थित चन्द्र स्वक्षेत्री होता है। बृष रामि के ३ अंश तक उच्च का, एवं बृष रामि के ४ से ३० अंश तक मूलक्षिकोण स्थित माना आता है। वृश्चिक रामि के ३ अंश तक नीच का होता है।
- ३- अंगल-भिष' अथवा 'वृश्चिक' राशि में स्थित अंगल स्वक्षेत्री होता है, परन्तु मेष राशि के १ से १० अंग तक भूलतिकोणगत सथा १६ से ३० अंग तक स्वक्षेत्री माना जाता है। मकर राशि के २८ अंश तक उच्च का सथा कर्क राशि के २८ अंग तक नीच का होता है।
- ४. शुष-'कन्या' अथवा 'भियुन' राशि में स्थित बुध स्वलेंबी होता है, परन्तु कन्या राशि के १ से १० अंश तक भूलिंदकोणगत तथा १० से ३० अंश तक स्वलेंबी याना जाता है। कन्या राशि के १५ अंश तक उच्च का तथा मीन राशि के १५ अंश तक नीच का होता है। इसी प्रकार कन्या राशि स्थित बुध १ से १५ अंश तक उच्च का, साथ ही १ से १० अंश तक भूलिंदकोणगत तथा १० से ३० अंश तक स्वलेंबी माना जाता है।
- ५ गुर- 'अनु' अयवा 'मीन' राशि में स्थित स्ववेती होता है, परन्तु अनु राशि के १ से १३ अंश तक उसे भूलिकोणगत सथा १४ से ३० अंश तक स्ववेती माना जाता है। कके राशि के ५ अंश तक उच्च का तथा मकर राशि के ५ अंश तक नीच का होता है।
- ६. शुक्त—'वृष' वयवा 'तुला' राशि स्थित शुक्त स्वक्षेत्री होता है, परम्तु सुला राशि के १ से १० अंश तक उसका मूलतिकोण तथा ११ से ३० अंश तक स्वजेत माना जाता है। मीन राशि के २७ अंश तक उच्च का तथा कन्या राशि के २७ अंश तक नीच का होता है।
- ७. इन्नि—'मकर अथवा 'कुम्म' राशि स्थित मनि स्वसेवी होता है, परन्तु कुम्म राशि के १ से २० अंश तक उसका मूलविकोण सथा २१ के ३० अंश तक स्वझेन्न माना जाता है। सुला राशि के २० अंश तक उच्च का तथा मेच राशि के २० अंश तक नीच का होता है।
- द. राहु -- कन्या राशि में स्थित राहु स्वकेशी होता है। मिथुन राशि के १४ अंश तक उच्च का तथा धनु राशि के १४ अंश तक नीच का माना जाता है। इसके विपरीत कुछ विद्वानों की राय में राहु बृष राशि में उच्च का तथा वृश्विक राशि में नीच का होता है। कके राशि को राहु का मूल विकोण माना जाता है।
 - 🦫 केतु—मिथुन राशि में स्थित केतु स्वक्षेत्री होता है। धनु राशि के १४

अंश तक उच्च का, मियुन राशि के १५ अंश तक नीच का माना जाता है। इसके विपरीत कुछ विद्वानों की राय में केतु बृश्चिक राशि में उच्च का तथा वृष राशि में नीच का होता है। मकर राशि को केतु का मूलविकोण माना जाता है।

प्रहों के पद

नवप्रहों में सूर्य तथा चन्द्र को राजा, बुध की युवराज, मंगल को मेनापति, गुरू तथा शुक्र को मन्त्री एवं शनि को सेवक का पद दिया गया है। अश्नु, जिस जातक के ऊपर जिस प्रह का जितन। अधिक प्रमाव होता है, वह उसे अपने ही अनुरूप बनाने की चेष्टा करता है।

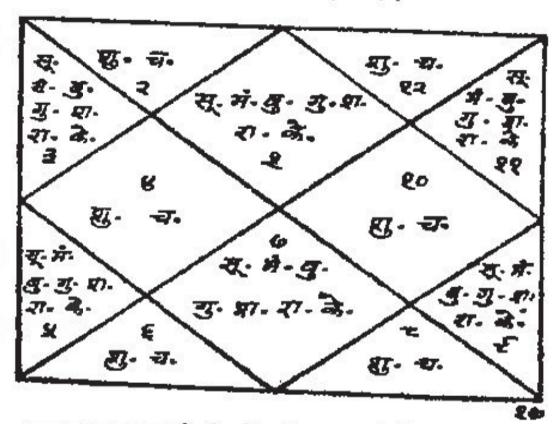
ग्रहों के ६ प्रकार के बल

ग्रहों के बल ६ प्रकार के कहे गये हैं, उन्हें निम्नानुसार समझ नेना चाहिए---

(१) स्थान बलं उच्च, स्वयही, मिलयही अथवा भूल क्रिकीणस्य ग्रह की स्थान बली' माना जाता है।

चन्द्र तथा शुक्र 'सम राणि' अर्थात् वृष, ककै, कन्या, वृष्टिक, मकर एव मीन राणि में स्थित होने पर तथा सूर्य, मंगल, गुरु, गुरु, शन्ति, राहु एवं केलु 'विषम राणि' अर्थात् मेप, मियुन, सिंह, तुला, धनु एवं कुम्भ में स्थित होने पर भी 'स्थान बली' कहे जाते हैं।

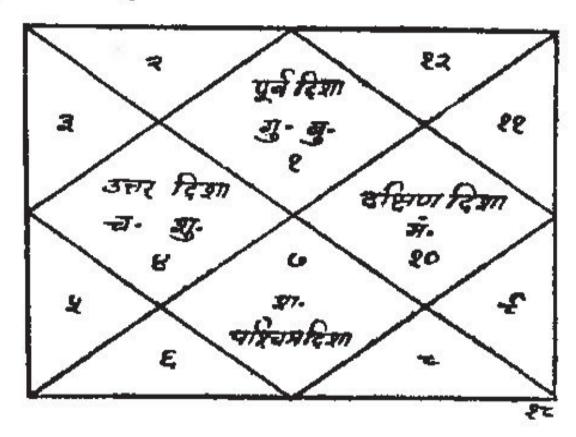
स्थान-बल निरूपण चक



उक्त उदाहरण कुण्डसी की भौति ही अन्य कुण्डसियों में भी बहों के स्थानकस के विषय में समक्ष केना चाहिए। (२) दिग्वल-जन्मकुण्डली में प्रयम मानकी पूर्व, चतुर्य की उत्तर, सप्तम की पश्चिम तथा दशमभाव को दक्षिण दिशा माना जाता है।

गुरु तथा गुरु प्रथमभाव अर्थात् लग्न (पूर्व दिशा) में, चन्द्रमा तथा मुक चतुर्थभाव (उत्तर दिशा) में, शन्ति सप्तमभाव (पश्चिम दिशा) में तथा मंगल दशम-माव (दक्षिण दिशा) में स्थित हों तो उन्हें 'दिग्वली' माना जाता है।

निम्नांकित उदाहरण कुण्डली में दिशाओं सथा दिखली शहों की स्थिति की प्रदर्शित किया गया है—



(३) कालबल—यदि जातक का जन्म राशि के समय हुआ हो तो उसकी जन्मकुण्डलों के ग्रहों में से (१) चन्द्रमा, (२) मंगल और (३) शक्-ये तीनों ग्रह कालबली होते हैं और यदि जातक का जन्म दिन में हुआ हो तो (१) सूर्य, (२) बुध और (३) ग्रुक—ये तीनों ग्रह कालबली होते हैं।

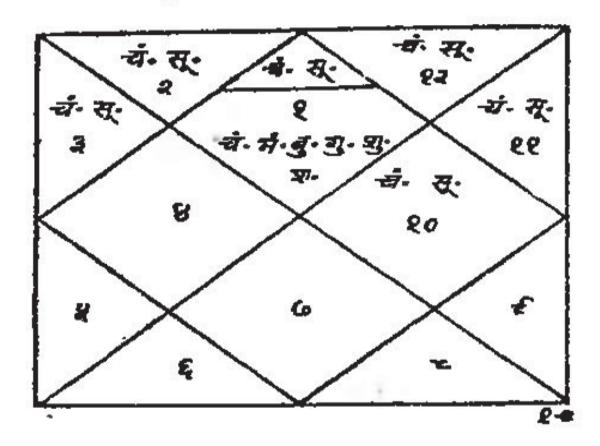
मतान्तर में, 'बुघ' को दिन-राति दोनों ही समय में कालबली माना जाता है।

(8) नैसर्गिक बल-शिन, मगन, बुध, गुढ, शुक, चन्द्र तथा सूरं-ये प्रह उत्तरोत्तर एक दूसरे से अधिक बली होते हैं। अर्थात् शनि से मंगल अधिक दलवान होता है, मंगल से बुध, बुध से गुढ, गुढ से शुक, शुक से चन्द्र सथा चन्द्र से सूर्य अधिक बलवान होता है। इसी क्रम की विपरीस स्थिति में यह एक दूसरे से उत्तरोत्तर कम बलवान होते हैं अर्थात् सूर्य से चन्द्रमा कम बलवान है सथा चन्द्र से शुक, शुक से शुढ, गुढ से बुध, बुध से मंगल सथा मंगल के शनि कम बली होता है।

(५) खेट्टाबल-सकर से मियुन तक (भकर, कुंभ, भीन, मेष, वृष और मियुन) किसी भी राशि में स्थित सूर्य तथा चन्द्रमा चेट्टावली होते हैं और मगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शिन-ये पाँचों ग्रह चन्द्रमा के साथ रहने पर चेट्टाबली होते हैं।

निम्नांकित उदाहरण कुण्डली में ग्रहों के 'चेष्टावल' की प्रदक्षित किया गया है इसी भौति अन्य कुण्डलियों में भी समझलें।

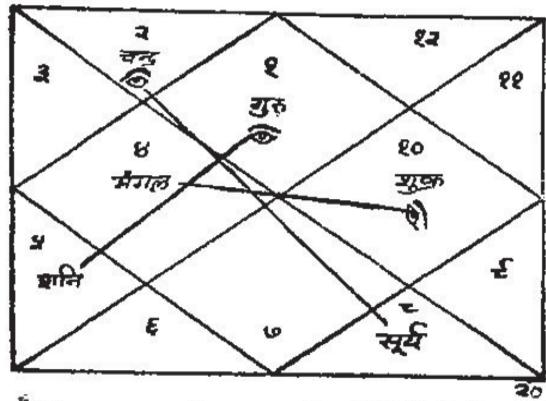
ग्रहों का चेष्टाबल निरूपण चन्न



(६) दुग्बल-जन्मकुण्डली में जिन कूर (दुष्ट या पाप) बहों के उत्पर मुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ती है, वे उनकी मुभ दृष्टि की पाकर 'द्ग्बली' ही जाते हैं। जैसे-किसी जातक की कुण्डली में मिन पंचम भाव में बैठा ही तथा बुध लग्न में बैठा ही तो कूर-ग्रह मिन के उत्पर मुभ ग्रह गुरु की पूर्ण दृष्टि पड़ने के कारण मिन मुखली ही जाएगा। किस ग्रह की दृष्टि किन-किन मावों पर पड़ती है इसका बर्णन आगे किया गया है।

नीचे का उदाहरण कुण्डली में कूर-प्रहों के ऊपर शुध प्रहों की दृष्टि की प्रदर्शित किया गया है। इसी के अनुसार अन्यत की समझ लेना चाहिए।

हों का ग्रवृग्वल निरूपण चक



आवश्यक आतव्य पूर्वोक्त ६ प्रकार के बलों में से किसी भी प्रकार के बल को प्राप्त बलवान ग्रह जिस मान में बैठा होता है जातक को उस भाव का विशेष फल अपने स्वभावानुसार देता है। किसी भाव स्थित किसी भी ग्रह के फलाफल को यथार्थ जानकारी के लिए उस भाव में स्थित राशि सथा ग्रह के स्वभाव एवं बल आदि का समन्वयन करके ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए।

प्रहों की दृष्टि

प्रहों की दृष्टियाँ चार प्रकार की मानी गई हैं---

- (१) एक पाद या एक चरण दृष्टि (चतुर्थोश दृष्टि)।
- (२) द्विपाद या दो चरण दृष्टि (अर्थांश दृष्टि)।
- (३) ब्रिपाद या सीन चरण दृष्टि (सीन खीबाई दृष्टि)।
- (४) पूर्णं दृष्टि (सम्पूर्ण दृष्टि) ।

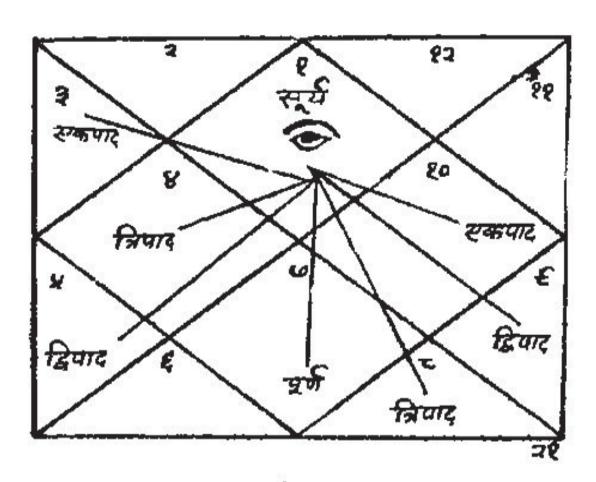
जन्मकुण्डली में को ग्रह जिस मार में बैठा होता है, उस भाव से तृतीय तथा दशम भाव को एकपाद दृष्टि से, पंचम तथा नथम मान की द्विपाद दृष्टि से, चतुर्य सथा बष्टम भाव को क्षिपाद दृष्टि से सथा सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। यह नियम सभी ग्रहों पर समान रूप से लागू होता है। परन्तु इन दृष्टियों के अतिरिक्त मंगल जिस भाव में बैठा होता है, वहाँ से सप्तम भाव के अतिरिक्त चतुर्य सथा अष्टम भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसी प्रकार गृह जिस मान में बैठा हो, वहाँ से सप्तम भाव को भी पूर्ण दृष्टि के देखता है। इसी प्रकार गृह जिस मान में बैठा हो, वहाँ से सप्तम भाव को भी पूर्ण दृष्टि के देखता है। एवं शनि जिस भाव में बैठा हो, वहाँ के सप्तम भाव के अतिरिक्त

तृतीय तथा दशम भाष को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है। अपूर्ण दृष्टि को 'खण्ड धृष्टि' भी कहते हैं।

राहु सथा केतु की दृष्टि अन्य ग्रहों के समान सीधी न पड़कर उत्टी पड़ती है। जैसे लग्न में बैठा हुआ मंगन तृतीय तथा दशम भाव को एक पाद दृष्टि से देखेगा तो लग्न में बैठे हुए राहु-केतु एकादम तथा चतुर्य भाव को एक पाद दृष्टि से देखेंगे।

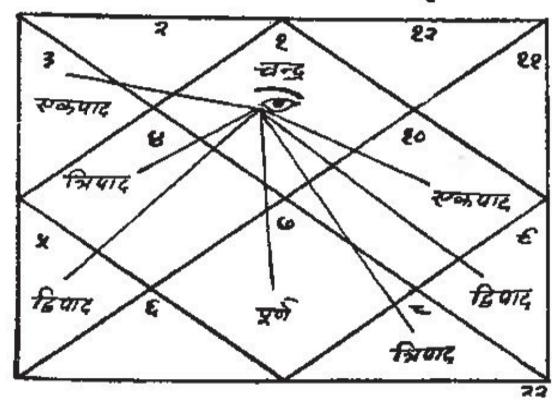
आगे दी गई सेव राशि की उदाहरण कुण्डलियों में लग्न (प्रथम भाव) स्थित विभिन्न ग्रहों की विभिन्न मावों पर पड़ने दाली एक पाद, द्विपाद, तिपाद तथा पूर्ण दृष्टि की अलग-अलग प्रदिश्ति किया गया है। इसी भौति अन्यव भी समझ लेना चाहिए।

'सूर्य' की विभिन्न भावों पर वृष्टि



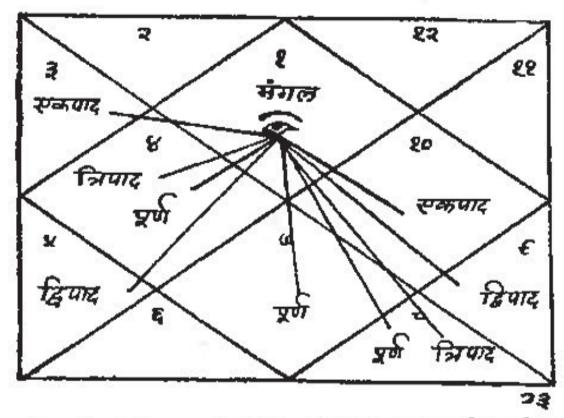
दिष्पणी—जिस भाव में भी 'सूर्य' बैठा हो, उस माव से उपयुंक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'चन्द्रमा' की विभिन्न भावों पर वृष्टि



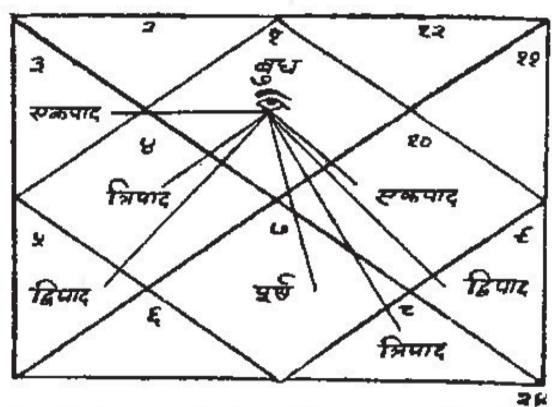
टिप्पणी—जिस भाव में भी 'चन्द्रमा' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'मंगल' की विभिन्न भावों पर दृष्टि



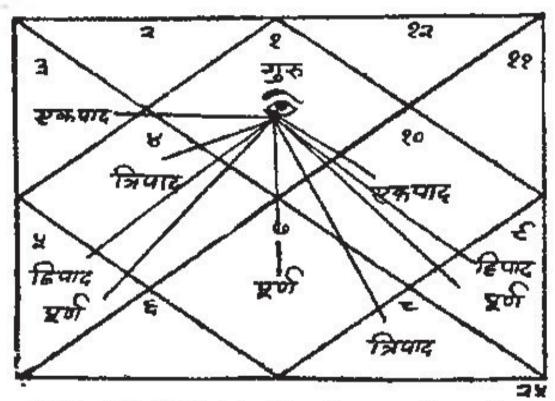
टिप्पणी--जिस मान में भी मंगल बैठा ही, उस मान से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के निपय में समझ लेका चाहिए।

'बुद्य' की विभिन्न भावों पर दृष्टि



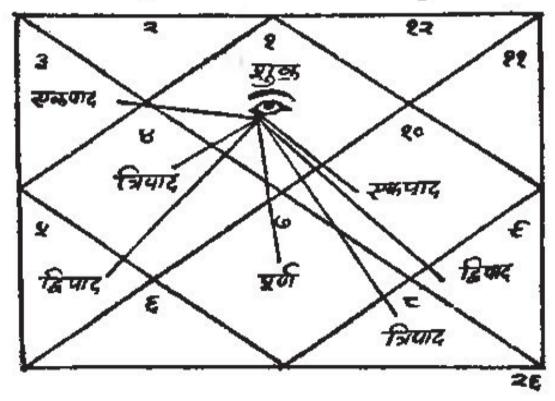
दिष्णनी---जिस मान में भी 'बुध' बैठा हो, उस भाव से उपयुंक्त आधार पर, उसकी खण्ड सथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'गुरु' की विभिन्न भावों पर दृष्टि



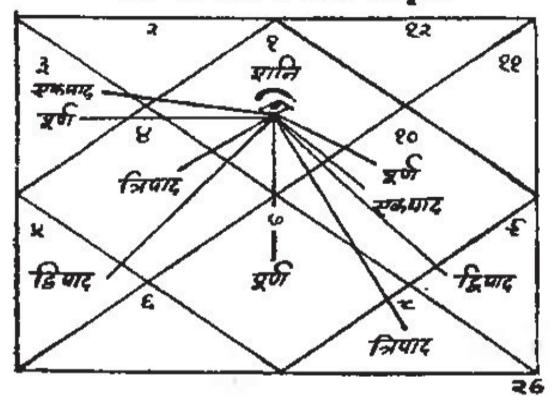
टिप्पणी—जिस मात्र में भी 'गुर' बैठा हो, उस भाव से उपनर्युत आधार पर उसका खण्ड सथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'शुक' की विभिन्त भावों पर बुद्धि



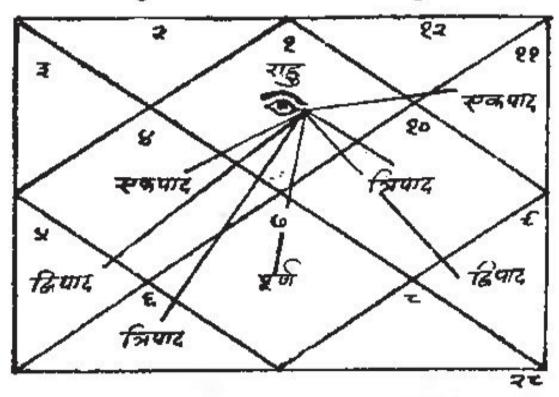
टिप्पणी—जिस मान में भी 'शुक्त बैठा हो, उस भाव से उपयुक्त बाहार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'शनि' की विभिन्त भावों पर दुष्टि



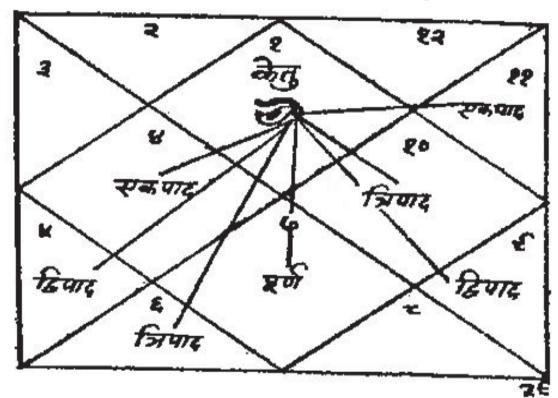
टिज्जी---जिस भाव में भी 'सनि' बैठा ही, जस माव से उपर्युक्त वासार पर, उसकी खण्ड सथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझं केना चाहिए।

'राहु' की विभिन्त भाषों पर वृष्टि



टिप्पणी—जिस मान में भो 'राहु' बैठा हो, उन भाव से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'केतु' की विभिन्न भावों पर वृष्टि



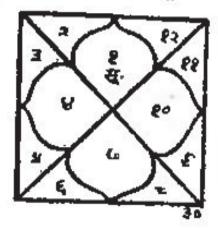
टिप्पकी—जिस भाव में भी 'केतु' बैठा हो, उम भाव से उपयुंक्त आधार पर, उसकी खण्ड सथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

विशेष टिप्पणी—कुछ क्रिहानों के मदानुसार राष्ट्र तथा केंद्र की अपर दृष्टियां एकपाद, द्विपाद तथा लिपाद होती ही नहीं हैं। प्राचीन भारतीय उयोतिय में राष्ट्र-केंद्र की न तो नहीं के अन्तर्गत गणना की गई है और न इनके दृष्टि-सम्बन्ध का ही

उच्चराशिस्थ ग्रहों का फलादेश

उच्चराशिस्थ ग्रहों का संक्षिप्त विशिष्ट फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए। यहाँ प्रदक्षित सभी उदाहरण कुण्डलियाँ भेष लग्न की हैं। अन्य खग्नों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हों के आधार पर जानकारी प्राप्त कर सेनी चाहिए।

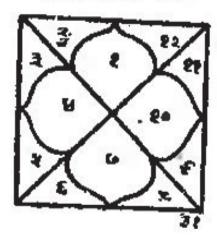
उच्चराशिस्थ 'सूर्य'



उच्चराशिस्य 'सूर्य'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सूर्य' उच्च (मेष) राशि का हो, वह गौरवर्ण, भाग्यवान, धर्मवान, धनी, सम्पन्न, यहास्वी, सुखी, विद्वान्, दण्डाधिकारी, सेनापति, शूरवीर तथा बलवानं होता है।

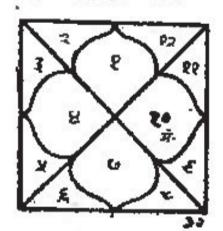
उच्चराशिस्थ 'चन्द्र'



उज्बरातिस्य 'बन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्र' उच्च (वृष) राशि का हो, वह सुखी, यशस्वी, सम्मानित, स्त्री-वियोगी, अलंकार-प्रिय, विलासी, मिष्ठान्त भोजी, चपल स्वभाव, सोकप्रिय तथा उदार हृदय बासा होता है ।

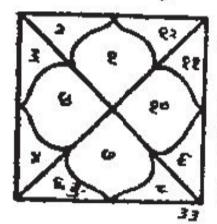
उच्चराशिस्य 'मंगल'



उच्चराशिस्य 'मंगस'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' उच्च (मकर) राशि का हो, वह उग्र स्वभाव, फस्तविद्याः में निष्णात, संग्रामजवी, साहसी, कर्तव्यनिष्ठ, शूर-बीर, बलिष्ठ, कोशी तथा राज्य द्वारा- सम्मान प्राप्त करने वासा होता है।

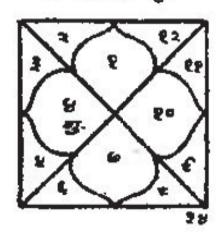
उच्चराशिस्थ 'बुध'



उच्चराशिस्य 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सुम्र' उच्च (कन्या) राशिका हो, यह यहा विद्वान्, अत्यन्त बुद्धिमान्, लेखक, सम्पादक, सुखी, राजा अथवा राजमान्य, ग्रहु-नाशक तथा अपने वंश की वृद्धि करने वाला, निष्माप्, मैंगवान, परन्तु आलसी स्वभाव का होता है।

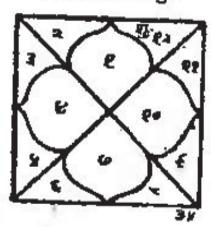
उच्चराशिस्थ 'बुध'



उच्चराशिस्य 'ग्रुह'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'गुरू' उच्च (कर्क) रागि का हो, वह सुन्दर, विद्वान, चतुर, मुगील, सद्गुणी, सुखी, राजिप्रय, मती, शामक, ऐश्वयं-शाली, सत्कर्म करने वाला, अनेक संवकों से युक्त तथा सदाचारी होता है।

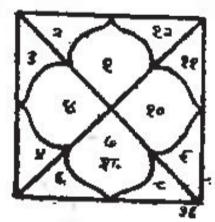
उच्चराशिस्थ 'बुक्र'



उच्चराशिस्य 'कुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'कुक' उच्च (मीन) राशि का हो, यह मुकी, घरम्यवान, संगीतिषय, कामी, विलासी, कला-प्रेमी, यन्त्र-पंत्र का जाता, उयोतिथी, कवि, संगीतज्ञ तथा यशस्थी होता है।

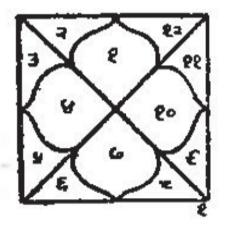
उच्चराशिस्य 'सनि'



उज्बरासिस्य 'सनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली वें 'गिन' उक्क (तुला) रामि का हो, यह सुखी, यमस्थी, ऐक्वयंत्राली, पृथ्वीपति, राजा, कृषक, सम्पन्न, मायाबी, काहनो से युक्त, साहसी, दुवसेकी करने बासा, बोक-प्रसिद्ध सम्मानित तथा धूर्त होता है।

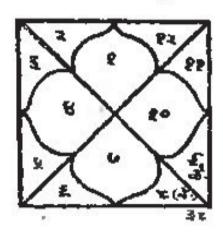
उच्चराणिस्थ 'राहु



उज्बराशिस्य 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'राहु' उच्च (मिथुन, मतान्तर से वृष) राशि का हो, वह धनी, साहसी, लम्पट, सरदार, श्रूर-बीर, गुप्त-स्थमाय वासा, दुष्ट, कूर, राजा द्वारा सम्मान प्राप्त करने वासा, प्रसापी तथा धैयंवान होता है।

उच्चराशिस्थ 'केतु'



उज्वरातिस्य 'केतु'

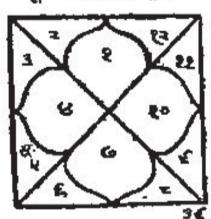
जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'केतुं' उच्च (धनु, मतान्तर से वृश्चिक) राशि का हो वह इप्रमण-प्रिय, सरदार, नीच प्रकृति बाला, सुखी, अधिकार सम्पन्त व मिथ्यावादी, नीच तथा वृद्धों जैसा आचरण करने दाला होता है।

टिप्पणी—किसी ग्रह का केवल उच्च होना ही पूर्ण फलदायक नहीं होता, उसके माथ ही अन्य विषयों पर भी विचार करके निष्कर्ष निकालना चाहिए।

मूलित्रकोणस्य ग्रहों का फलादेश

मून विकोणस्य ग्रहों का संक्षिप्त विशिष्ट फलादेश निम्नानुसार समझना वाहिए। यहाँ प्रदक्षित सभी उदाहरण कुण्डलियाँ मेघ सम्म की हैं। अन्य सम्मों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हों के आधार पर जानकारी प्राप्त कर सेनी चाहिए।

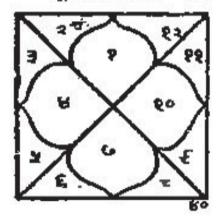
मूलविकोणस्य 'सूर्यं'



मूल ज्ञिकोणस्य 'सूर्यं'

जिस जातक की जन्मकुष्डली में 'सूर्य' भूल तिकोणस्थ (सिंह राणि के २० अंश तक) हो, वह सम्मानित, पूज्य, यशस्थी, सुखी, धनी तथा सब कार्यों में कुशल होता है।

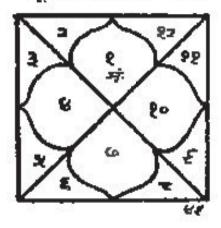
मूल विकोणस्य 'चन्द्र'



मूल विकोषस्य 'चन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्रमा'
मूल विकोणस्य (वृष राशि के ४ से ३० अश
तक)हो, यह सुन्दर, भाग्यवान, ऐश्वयंशाली छनयान, भोगी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला
होता है।

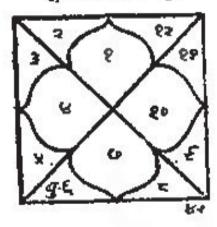
मूल विकोणस्य 'मंगल'



मूल विकोणस्य 'अंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में मगल' मूल विकोणस्य (मेप राणि के १८ अग तक) हो, वह सामान्य धनी, अपयशी, स्वार्थी, कोछी, दुाट, निदंय, लम्पट, खल, चरित्रहीन भूर, धमी सथा साहसी होता है।

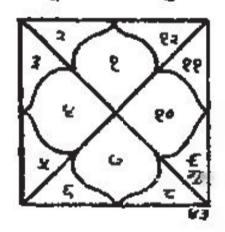
मूलविकोणस्य 'बुध'



मूल जिकोणस्य 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' मूल तिकीणस्थ (कन्या राशि के १६ से २० अम तक) हो, वह विद्वान्, राजमान्य, धनवान, शाध्यापक चिकित्सक, सैनिक, व्यवसायी, महत्वानोद्यो, विजयी, विनोदी सथा बुद्धिमान होता है।

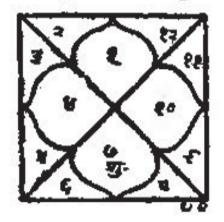
मूलविकोणस्य 'गुरु'



मूल विकोणस्य 'युरु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'गुरू' मूल विकोणस्य (सनु राशि के १३ सण तक) हो, वह तपस्वी, सुखी, यसस्वी, सम्भानित, गजप्रिय, भोगी, उच्च सिकारी, परम बुद्धिमान नदा नगर या मठ का स्वामी होता है।

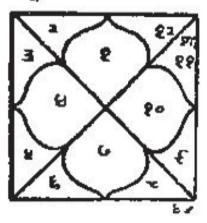
मूलविकोणस्थ 'शुक्र'



सूलविकोणस्य 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक'
मूस विकोणस्य (तुला राशि के १० अंग तक) हो,
वह अनेक पुरस्कारों का विजेता, स्वियों को प्रिय,
जागीरदार तथा वाहन, भूमि, मवन आदि के सुवों
से सम्पन्न, राजा के समान ऐश्वर्यवान्, प्रतापी तथा
यशस्वी होता है।

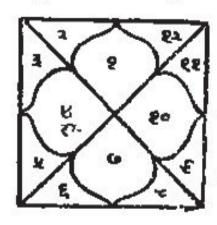
मूलविकोणस्थ 'सनि'



मूलव्रिकोणस्य 'शनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शनि' मूल-विकोणस्य कुम्म (रागि के २० वंग तक) हो, यह कर्तव्य-निष्ठ, वैशानिक, अस्त-मस्त्रों का निर्माता एवं शाता, यान-वालक, शूर-वीर, साहसी, सेनापति, कुल का पालन करने वाला, सुखी तथा धन-धान्य से पूर्ण होता है।

मूलतिकोणस्य 'राहु'

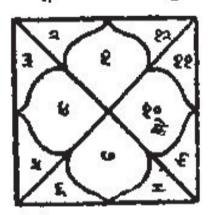


मूलविकोणस्य 'राह'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'राहु' मूल विकोणस्थ (कर्क राशि में) हो, वह धनी, सोभी तथा बाचाल होता है।

टिप्पणी--प्राचीन अयोतिथी 'राहु' का मूलविकोण नहीं मानते ।

मूलत्रिकोणस्य 'केतु'



मूलविकोणस्य 'केतु'

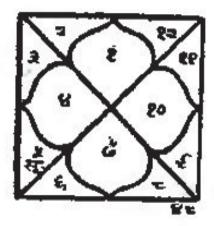
जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'केतु' मूल-विकोणस्थ (मकर राशि में) हो, वह सुखी, धनी, वाचाल, प्रवासी तथा गुप्त युक्तियों वाला होता है।

टियाणी--प्राचीन अयोतिथी 'केतु' का मूलविकोण नहीं मानते ।

स्वक्षेत्रस्य ग्रहों का फलादेश

स्वक्षेत्री अर्थात् अपनी राशि में स्थित विभिन्न ग्रहों का संक्षिप्त फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए। यहाँ प्रदक्षित सभी उदाहरण कुण्डलियों मेघ लग्न की हैं। अन्य लग्नों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हों के आधार पर जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

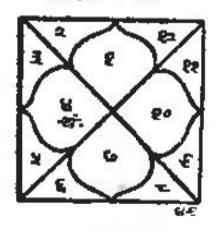
स्वक्षेत्रस्य 'सूर्य'



स्वक्षेत्रस्य 'सूर्य'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सूर्य' स्वक्षेत्री (सिंह राशि का) हो, वह सुन्दर, सुखी, एंश्वयंवान्, पराक्रमी, व्यक्षिचारी, निरन्तर उद्योग तथा परिश्रम करने बाला, धंयंवान, साहसी, तेजस्वी तथा अत्यन्त उग्रस्वभाव का होता है।

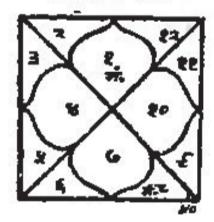
स्वक्षेत्रस्य 'नन्द्र'



स्वक्षेत्रस्य 'चन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्र' न्वक्षेद्री (कके राणि का) हो, वह मुन्दर, धनी, तेजस्वी, भाग्यवान् विनन्न, साधु चरित्र, परोपकारी, दयालु, भनस्वी, यगस्वी तथा सङ्दय होता है।

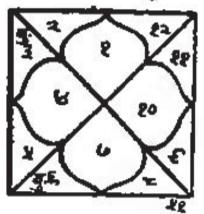
स्वक्षेत्रस्य 'मंगल'



स्वक्षेत्रस्य 'मगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'संगल' स्वसंत्री (मेष अथवा बृश्चिक राणि का) हो, वह माहुमी, बलवान, यशस्त्री, कृषक, भूस्थामी अथवा मैनिक, धनी तथा कंभल स्वमान वाला होता है।

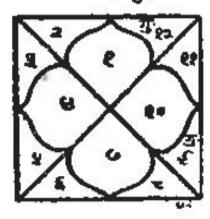
स्वक्षेत्रस्य 'बुध'



स्वक्षेत्रस्य 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'वुध' स्वक्षेती (कन्या अथवा मिथुन राशि का) हो, वह विद्वान्, बुद्धि-मान, सम्पादक, शास्त्रज्ञ, लेखक तथा अनेक कलाओं का जाता होता है।

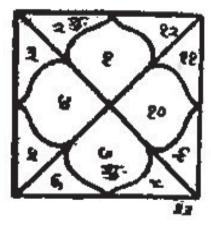
स्वक्षेत्रस्य 'ग्रुह'



स्वक्षेत्रस्य भूवं

जिस जीतक की जन्मकुण्डली में 'गुर्ड स्वक्षेत्री (धनु अथवा मीन राशि का) हो, वह सुखी, शास्त्रज्ञ, वैद्य, काव्य-प्रेमी, कवि, विद्वान्, आत्मवली तथा धनवान होता है।

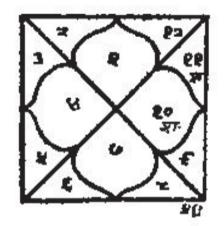
स्वक्षेत्रस्य 'शुक्र'



स्वक्षेत्रस्य 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक' स्वक्षेत्री (वृष अथवा सुला राशि का) हो, वह विद्वान्, गुणी, विचारक, धनवान, स्वतन्त् प्रकृति का, कृषि-सम्बन्धी व्यवसाय करने वाला तथा सुन्दर होता है।

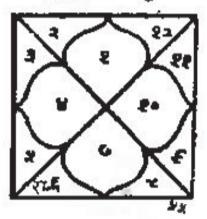
स्वक्षेत्रस्य 'शिनि'



स्वक्षेत्रस्य 'शनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सनि' स्वसंती (अकर व्यवा कुम्म राणि का) हो, वह पराक्रमी, कष्ट-सिंह्ण्यु, उम्र स्वभाववाला, सुन्दर नेत्रोंवाला, समस्वी तथा लोकप्रिय होता है।

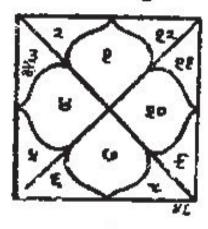
स्वक्षेत्रस्य 'राहुं'



स्वक्षेत्रस्य 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली से 'राहु' स्वक्षेत्री (कन्या राशिका) हो, वह सुन्दर, यणस्वी नया भाग्य-यान् होता है।

स्वक्षेत्रस्य 'केतु'



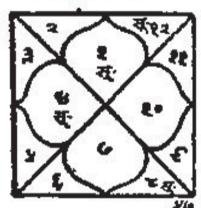
स्वजेतस्य 'केतु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'केतु' स्वक्षेत्री (मिथुन राणि का) हो, वह धंयेवान्, कप्ट-महिष्णु, कर्मठ. चिन्ताजीन तथा गुप्त-युक्तियों बाला होता है।

मित्र क्षेत्रस्थ ग्रहों का फलादेश

अपने सिलग्रह की राशि में स्थित विभिन्न ग्रहों का सक्षिप्त फलादेश निम्ना-नुसार समझना चाहिए। यहाँ प्रदक्षित सभी उदाहरण-कुण्डनियाँ मेप जन्म भी हैं। अन्य लग्नों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हीं के आधार पर जानकारी प्राप्त कर लेती चाहिए।

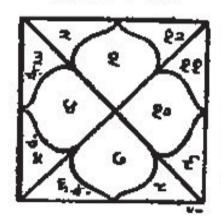
मिवक्षेवस्य 'सूर्य'



मित्रक्षेत्रस्थ 'सूर्यं'

जिस जातक को कुण्डली में 'सूर्य' अपने मिन्नप्रहों (चन्द्रमा, मंगल अथवा गुरु) की राशि (कर्स, मेंग, धनु, बृश्चिक अथवा मीन) में स्थित हो, वह व्यवहरम्बुशल, समस्यी, दानी, सीभाग्यवान्, शास्त्रक, मुप्रसिद्ध तथा दुइमैंब्रो करने वाला होता है।

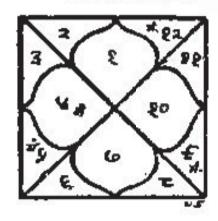
मित्रक्षेत्रस्थ 'चन्द्र'



मित्रशेवस्य 'चन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्रमा' अपने मिस्रवहों (सूर्य अथवा बुध) की राशि (सिंह, कन्या अथवा मिथुन) में बैठा हो, वह सुखी, धनी, गुणी, चतुर तथा भाग्यवान होता है।

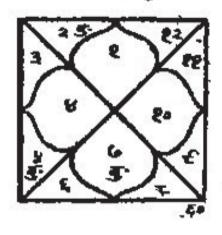
मिवक्षेवस्थ 'मगस'



मित्रक्षेत्रस्थ 'मंगस'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' अपने मित्र ग्रहों (सूर्य, चन्द्र अयवा गुरु) की राशि (सिंह, कर्क, धनु अयवा मीन) में बैठा हो, वह धनी, मित्र-प्रेमी, तेजस्वी, पराक्रमी, शक्तिशाली, शह्म हारा भीविकोपाजन करने बाला तथा उग्र स्वभाव वाला होता है।

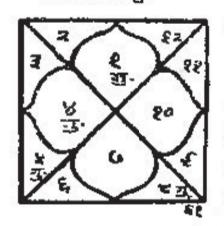
मिस्रक्षेत्रस्थ 'बुध'



मित्रक्षेत्रस्य 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' अपने मिलपहों (सूर्य अयवा शुक्र) की राशि (सिंह, वृष अयवा सुला) में बैठा हो, यह शास्त्रक, विनोदी-स्वभाव का, कार्यदक्ष, सुन्दरस्वरूप वाला, यशस्वी, जानी तथा धनवान होता है।

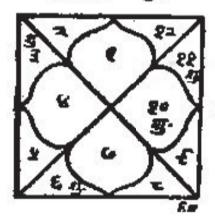
मिस्रक्षेत्रस्थ 'गुरु'



निस्रक्षेत्रस्य 'युव'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'गुर्य अपने जिस भ्रहों (सूर्य, चन्द्र अथवा मंगल) की राणि (सिंह, कर्क, मेच अथवा वृष्टिचक) में बैठा हो, वह सुखी, उन्नितिशोल, बुद्धिमान, प्रसिद्ध यशस्वी, सत्कर्म करने वाला तथा श्रेष्ठ लोगों द्वारा पूजित होता है।

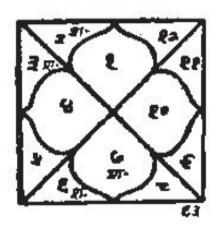
मिल्रक्षेत्रस्य 'शुक्र'



मित्रजेतस्य 'सुत्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मुक' अपने मित्र ग्रहों (बुध अथवा शनि) की राशि (कन्या, मिथुन, मकर अथवा कुम्म) में बैठा हो, वह सुखी, गुणी, सन्तिनिवान, धनवान नथा बन्धु-बान्धवों को प्रिय होता है।

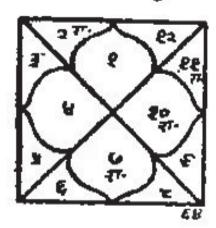
मिस्रक्षेत्रस्थ 'शनि'



मित्रकोतस्य 'शनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली से 'शनि' अपने मित्र ग्रहों (बुध अयवा शुक्र) की लिश (कन्या, सियुल, बृध अयवा बुला) से बैठा हो, वह सुखी, धनी, परान्त-भोजी, प्रेमी-स्वभाव का, कुकमें करने वाला तथा कभी-कसी दुःस्र पाने वाला होता है।

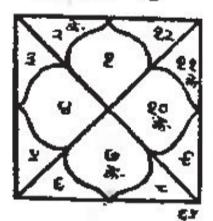
मिवक्षेत्रस्य 'राहु'



भित्रक्षेत्रस्य 'रा<u>ह</u>'

जिस जानक की जन्मकुष्ट में 'राह' अवने मिन ग्रहों (शुक्र अथवा शनि) की राणि (ब्य. तुना सकर अथवा कुम्भ) में बैठा हो, वह धती, गुष्न योजना-कर्ता, सुखी, मिथ्यावादी, बुद्धिमान, पराक्रमी, साहनी तथा कुकर्म-रत होता है।

मित्रक्षेत्रस्य 'केतु'



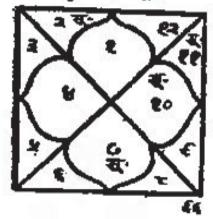
मित्रक्षेत्रस्थ 'केतु'

जिस जातक की जन्मकुण्डलों में केतुं अपने मित ग्रहों (शुक्त अथवा शिति) की राशि (वृष. तुला, मकर अथवा कुम्म) में वैठा हो, यह भ्रमणशील, दुःशी तथा परोपकारी होता है।

शतुक्षेत्रस्य प्रहों का फलादेश

अपने शल् की राशि में स्थित विभिन्न ग्रहों का संक्षिप्त फलादेश निम्नाजुसार समझना चाहिए। यहाँ प्रदर्शित सभी उदाहरण-कुण्डलियाँ मेष छन्न की हैं।
छन्न लग्नों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हीं के आधार पर जानकारी प्राप्त कर
सेनी चाहिए। जिस जातक की जन्मकुण्डली में जितने अधिक ग्रह शलुकेती होते
हैं, वह उतना ही दु:खी, दरिद्र, माम्महीन, चिन्तित तथा निराम रहता है। यदि
तीन या इससे अधिक ग्रह शलुकेती हों, सो वह जीवनभर दु:खी रहकर अन्तिम
भाग में सुख पाता है।

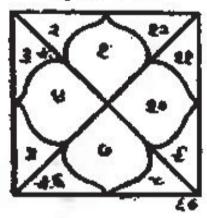
शतुक्षेतस्य 'सूर्यं'



शबुधेशस्य 'सूर्य'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सूबें' अपने शक्षु (शुक्र अथवा किन) की राजि (वृष, तुला, मकर अथवा कुम्भ) में बैठा ही, वह सर्वेव दुःख पाने वाला, नौकरी करने वाला, विषयों से पीड़ित तथा नीच स्थमाय का होता है।

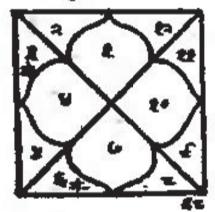
शतुक्षेतस्य 'चन्द्र'



राज्योजस्य 'बन्द्र'

जिस जातक की अन्यकुण्डली में 'चन्द्रमा' अपने शबु (राहु अथवा केतु) की राजि (कन्या अथवा मिथुन) में बैठा ही, वह हृदयरोगी सथा अपनी माता के कारण दु:ख पाने बाला होता है।

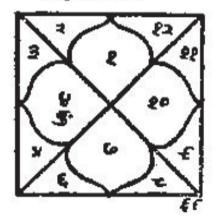
शतुक्षेतस्य 'मंगल'



राजुक्तेज्ञस्य 'मंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगस' अपने शतु (बुध) की राशि (मिथुन अथवा कन्या) में बैठा हो, वह विकलांब, क्याकुल, दीन-मलीन सचा स्त्रियों के बश में रहने बाला होता है।

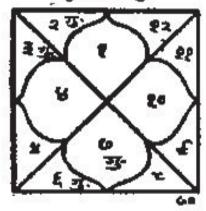
शत्रुक्षेत्रस्य 'बुघ'



शबुक्षेवस्थ 'बुर्घ'

जिस जातक सी जन्मकुण्डली में 'बुध' अपने अतु ग्रह (चन्द्रमा) की राणि (ककें) में बैठा हो. यह सामान्य मुख पाने वाला, वासनाणील, कर्त्तव्यहीन, दु.खी, मूर्त्र परन्तु अपनी बात का चनी होता है।

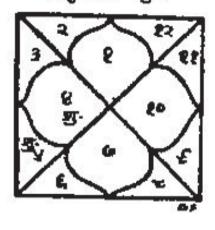
शतुक्षेतस्थ 'गुरु'



शबुक्षेबस्थ 'गुरु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'गुरुं अपने बानु (शुक्र अथवा बुध) की राशि (बृप, नुला, कन्या अथवा मिथुन) में बँठा हो, वह माग्यशाली, कोधी. अनुर, क्षुधातुर तथा अपनी आजीविका सी स्वयं ही नष्ट कर लेने वाला होता है।

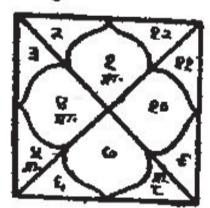
शबुक्षेबस्य 'शुक्र'



शबुक्षेबस्य 'शुऋ'

जिस जातक सी जन्मकृष्डली में 'मुक' अपने में जु (बुधं अथवा चन्द्रमा) सी राणि (सिंह अथवा कर्क) में वैठा हो, वह दास्य-वृत्ति (नौकरी) करके अपनी आजी-विका का उपाजन करने वाला, दु:को तथा दुईंदि होता है।

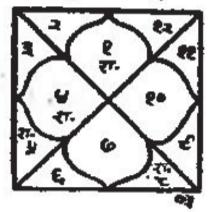
शतुकेतस्य 'शनि'



शतुषोतस्य 'सनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शिन' अपने राजु (सूर्य, चन्द्र अथवा मंगल) की राशि (सिंह, ककं, मेच अथवा बृश्चिक) में बैठा हो, वह किसी-न-किमी कारण से निरंहर चिन्तित एवं दु:खी बना रहने 'बामा, मिलन-हृदय वाला, रोगी तथा धनहीन होता है।

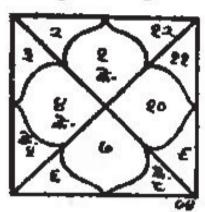
शबुक्षेबस्य 'राहु'



शतुक्षेत्रस्य 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'राहु' अपने शतु (सूर्य, चन्द्र, अथवा मंगल) की राशि (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक) में बैठा ही, वह शतुक्षेत्री शनि जैसा फल प्राप्त करता है। सूर्य अथवा चन्द्रमा की राणि पर बैठा हो तो उनके प्रभाव को अधिक हानि पहुँचाता है।

शतुक्षेस्त्रथ 'केतु'



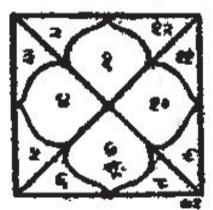
शत्रुक्षेतस्य 'केतु'

जिस जातक सो जन्मकुण्डसी में 'केतु' अपने शतु (सूर्य, चन्त्र अथवा मंगल) की राशि (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक) में वैठा ही, वह शतुक्षेत्री शनि जैसा फल प्राप्त करता है। सूर्य अथवा चन्द्रमा की राशि पर वैठा हो सो उनके प्रभाव में बहुत कमी ला देता है।

नीच राशिस्य ग्रहों का फलादेश

तीच राणिस्य विभिन्न ग्रहों का सक्षिप्त फलादेश निम्नानुसार समझना खाहिए। यहाँ प्रदक्षित सभी उदाहरण-कुण्डलियों मेष लग्न की हैं। अन्य लग्नों सी कुण्डलियों के विषय में भी इन्हीं के आधार पर जानकारी प्राप्त कर खेनी चाहिए। जिस जातक की जन्मकुण्डली में जितने अधिक ग्रह नीच राणिस्य होते हैं, यह उतना ही अश्रुभ फल प्राप्त करता है। यदि सीन या अधिक ग्रह नीच राणि के हों सी वह जातक मूर्ख होता है।

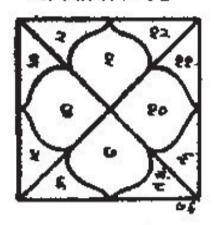
नीचराशिस्य 'सूर्य'



मीचराशिस्य 'सूर्यं'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सूर्य' नीच राजि (तुला) का हो, वह बन्धु-सेवी, पाप कर्य करने वाला, कटुपाबी, आत्म-अलहीन, किसी पर विश्वास न करने वाला, अल्पकेशी सथ विकृत दाँतों वासा होता है।

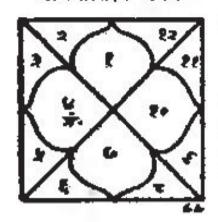
नीचराजिस्य 'चन्द्र'



नीपराशिस्य 'वन्त्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्रमा' नीच राशि (वृश्चिक) का ही, वह नीच प्रकृति वाला, रोगी, अल्पधनी, कुबुद्धि, वकवादी, संगयालु तथा धूतीं एवं भाचने तथा वाला जजाने वालों की संगति करने वाला होता है।

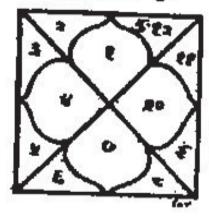
नीचराशिस्य 'मगल'



नीचरासिस्य 'मंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' नीच राज्ञि (कर्क) का हो, वह नीच स्वभाव का, कृतध्न, चोर, दुष्ट हृदय बाला, राजि में भ्रमण करने वाला, परन्तु बुदिमान, गुणवान तथा धनवान होता है।

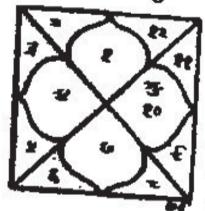
नीचराजिस्य 'बुधं'



नीधराशिस्य 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' नीकरासि (भीन) का हो, वह बन्धु-विरोधी, चंचल-स्थभाद दासा तथा उप प्रकृति वश्ला, शुद्ध बुद्धि एवं सन्तान-विहीन होता है। उसकी पत्नी सुणीला तथा पतिवता होती है।

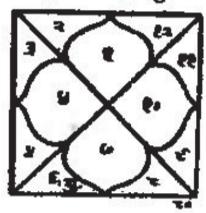
नीचराक्तिस्य 'गुरु'



नीचराजिस्य शुद्धं

जिस जातक की अन्यकुण्डली में 'गुरु नीचरासि (भकर) का हो, वह अपयण प्राप्त करने वाला, प्रप्यादी, दुष्ट होता है। परन्तु इसके माय हो मुख भोगने वाला, बहुत से लोगों का भरण-पोषण करने आला, परदेश में रहने बाता तथा फल-फूस एवं सुन्दर स्त्री से युक्त की होता है।

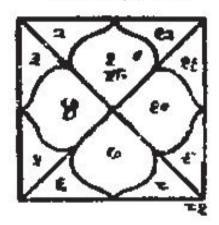
नीचराक्षिस्थ 'शुक'



नीचराशिल्य 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सुक' नीकरासि (कन्या) का हो, यह किसी-ज-किसी कारणवश निरन्तर दु:खी बना रहने वाला, विनोदी, कौतुकी, चतुर, पंडित तथा सब कलाओं में कुशल होता है।

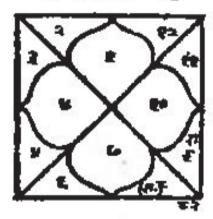
नीचराशिस्य 'शनि'



नीचराशिल्य 'शनि'

जिस जातक की अन्मकुण्डली में 'क्रानि' नीचरात्रि (मेष) का हो, यह स्वतन्त-विचारक, बन्धु-बान्धवों से युक्त, स्वेच्छाचारी, दृढ़ शरीर बासा, उच्च अधिकारी, ग्राम आदि का अधिपति, सुखी, सुन्दर तथा चंचल स्वचाद का होता है। मतान्तर से वह दुःख एवं दरिद्रता भी भोगता है।

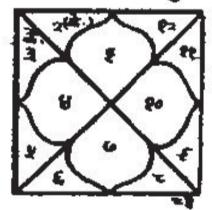
नीचराणिस्य 'राहु'



नीचराशिल्य 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'राहु' नीचराति (धनु, मतान्तर से बृश्चिक) का हो, दह कुक्ष्प, पापी, दुर्नु दि, वन्धु-जान्धकों से हीन, खल तथा दुण्ट ह्र्दय वाला होता है ।

नीचराशिस्य 'केशु'



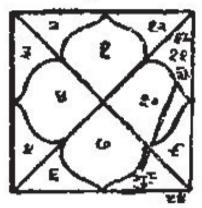
भीवराहिस्य केंद्रुं

जिस जातक की जन्मकुष्डली में 'केसु' नीचरासि (मियुन, मतान्तर से वृष) का हो तो वह सुशीस, दु:खी, काना, कामी, मसुजयी संया स्त्री-विहीन होता है।

ब्रहों का दुव्टि-सम्बन्ध और स्थान-सम्बन्ध

ग्रहों के दृष्टि सम्बन्ध दो प्रकार के होते हैं—(१) मामान्य दृष्टि मम्बन्ध और (२) पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध। इनके विषय में नीचे लिखे अनुनार सम्बन्ध चाहिए—

मामान्य दृष्टि-सम्बन्ध



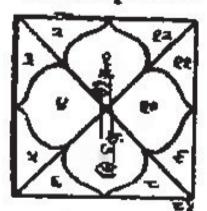
सामान्य वृष्टि-सम्बन्ध

अब कोई ग्रह अपन न्थान से किसी अन्य स्थान (भाव) को देखना है अथवा उस स्थान (भाव) में वेठे हुए किसी ग्रह को देखना है तो उसे 'नामान्य दृष्टि-सम्बन्ध' कहा जाता है।

उदाहरण कुण्डली में एकादण भाव में वैटा हुआ सनि अपने स्थान से दमने अस्टम भाव भे वैटे हुए गुरु

को देख रहा है, अतः इसे गुरु के साथ शनि का 'सामान्य दृष्टि-मम्बन्ध' कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के 'सामान्य दृष्टि-मम्बन्ध' के विषय में भी नमा सेना चाहिए। कीन-सा ग्रह अपने स्थान से किन-किन भागों को जिल दृष्टियों से देखता है, इस विषय का वर्षन पहले हो किया जा चुका है।

भारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध



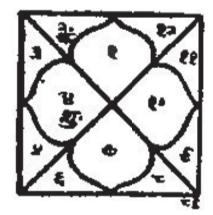
पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध

जब कोई दो ग्रह अलग-अलग आवों में बैठे हुए एक दूसरे के ऊप अपनी दृष्टि डालते हैं तो उसे उन ग्रहों का 'पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध' कहा काना है।

उदाहरण कुण्डली में नग्न में बैठा हुआ मंगल सप्तम भाव में बैठे हुए अनि पर अपनी पूर्ण दृष्टि झान रहाँगुँहै तथा सप्तम भाव में बैठा हुआ शनि लग्न में बैठे

हुए संगत की पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। अतः बहु दोनों ग्रहों का पारम्परिक दृष्टि-भम्बन्ध हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के दारे में भी समझ लेना चाहिए।

स्थान सम्बन्ध



स्यान-सम्बन्ध

वन कोई दो ग्रह असन-असन एक दूसरे के न्यान (भाव) में बैठे हों, तो उसे उन् ग्रहों का 'स्थान-मानक' कहा जाएगा।

उदाहरण कुण्डली में चन्द्रमा की कर्क गाँक में कुक बैठा है तथा मुक्र की बूप शाँग में चम्ह्रमा बैठा है। इस अकार ये दोनों बहु एक-दूसरे के स्थान में बैठे हैं। फलतः इनमें 'स्थान-सम्बन्ध' हो गया । इसी भौति अन्य ग्रहों के 'स्थान-सम्बन्ध' के बारे में भी समझ लेना चाहिए।

प्रहों का जातक के जीवन पर प्रभाव

उक्त 'सामान्य दृष्टि-सम्बन्ध', 'पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध' सथा 'स्यान-सम्बन्ध' के कारण यह अपने गुण-कर्म-स्वभाव आदि का एक दूसरे से मिलकर, जातक के जीवन पर प्रभाव डालते हैं। तात्पर्य वह कि ऐसे सम्बन्धों से एक ब्रह्न का स्वभाव दूसरे में सम्मिलित हो आता है। ऐसी स्थिति में, यदि दोनों ब्रह्न परस्पर 'मिल' हुए सो ये जातक के जीवन पर अपना विशेष प्रभाव प्रदर्शित करेंगे, यदि 'शक्षु' हुए सो एक-दूसरे के विपरीत प्रभाव डालेंगे, और यदि 'सम' हुए सो संयुक्त सामान्य-प्रभाव डालेंगे।

ग्रहों के उक्त पारस्परिक सम्बन्धों का विचार करते समय उनकी उच्च-नीच, स्वक्षेत्री, शक्नुक्षेत्री आदि स्थितियों पर भी विचार करना आवश्यक है। उन सबके समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलेगा, वही सच्चा फलादेश होगा।

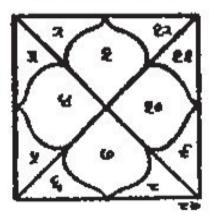
सग्न और राशि

जन्मकुण्डली में द्वादश भाव होते हैं। जातक के अन्य के समय जी राज्ञि आकाशमण्डल में दिखाई दे रही होती है, उसी को 'लग्न' मान कर कुण्डली के प्रथम भाव में स्थापित किया जाता है, शेष राजियों को कमशः उससे आगे के भावों में स्थापित किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि किसी जातक का जन्म आकाशमण्डल में सिह राणि के दिग्दर्शन के समय हुआ तो सिह राजि के सूचक अंक १ को जन्मकुण्डली के प्रथम भाव में लिखा जाएगा और वह कहा जाएगा कि जातक का जन्म सिह लग्न में हुआ है। उसी समय भचक में चन्द्रमा यदि सिह राजि में हो भ्रमण कर रहा होगा सो चन्द्रमा को भी कुंडली के पहले भाव अर्थात् लग्न वाले खाने में ही लिखा जाएगा और यह कहा जाएगा कि जातक का जन्म सिह लग्न तथा सिह राजि में भ्रमण कर रहा होगा हो। परन्तु यदि चन्द्रमा उस समय भचक की तुला राजि में भ्रमण कर रहा होगा हो। चन्द्रमा की कुंडली के तीसरे खाने अर्थात् बंक ७ बाली जगह में लिखा जायगा और यह कहा जायगा कि जातक का जन्म सिह लग्न में सथा तुला राजि में हुआ है।

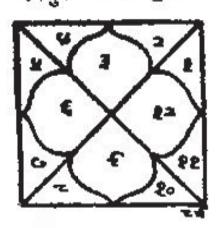
लग्न और राशि के इस अन्तर को खूब अच्छी तरह समझ सेना चाहिए। जातक की अन्मकुंडली के प्रयम भाव में जिस राशि का अंक होगा, उसे जातक सी 'लग्न' कहा आएगा सथा जिस भाव में अन्त्रमा की स्थिति होगी, उसे जातक की 'राशि' कहा आएगा। अरगे १२ उदाहरण कुण्डलियों के माध्यम से वह बताया बना है कि विभिन्न सन्नों की कुंडलियों का स्वरूप कैंमा होता है।

कुण्डली में कीन-सा ग्रह कहाँ बैठेगा, इसका निर्णय जातक के जन्म के मभय सथा उस समय भवक में विभिन्न ग्रहों की स्थिति के अनुमार पञ्चोंग के आधार पर किया जाता है। इस विषय के सम्यक्-ज्ञान के लिए या तो किमी ज्योतियों से सम्पर्क करना चाहिए अथवा हमारी लिखी पुस्तक 'ज्योतिष शास्त्र' का अध्ययम् करना चाहिए।

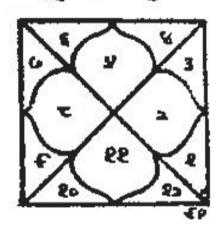
· 'मेप' लग्त की कुण्डली



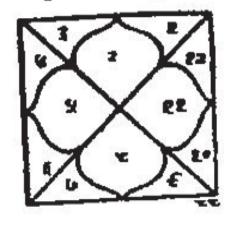
'मिथुन' लग्न की कुण्डली



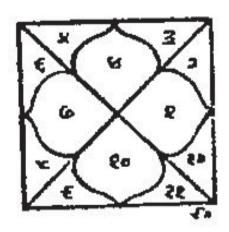
'मिह' लग्न की कुण्डली



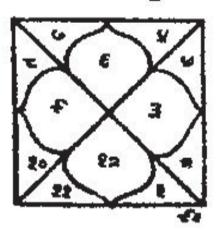
'बूप' लग्न की कुण्डली



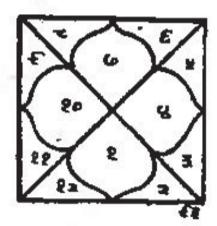
'कके' लग्न की कुण्डली



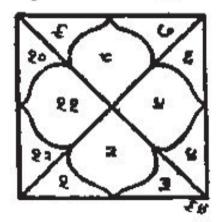
'कन्या' संग्त की कुण्डली



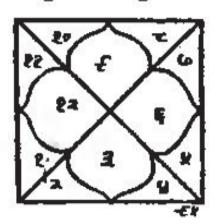
'तुला' लग्न की कुण्डली



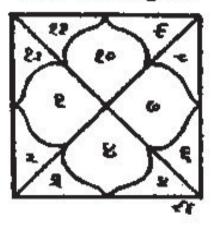
'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली



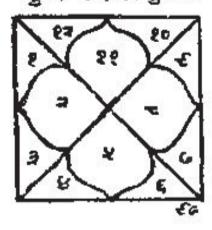
'धनु' लग्न सो कुण्डली



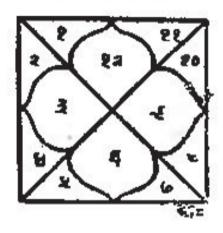
'मकर' लग्न की कुण्डली



'कुम्म' लग्न की कुण्डली

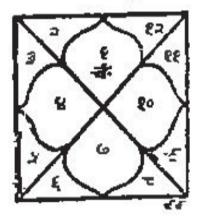


'मीर' लग्न की कुण्डली

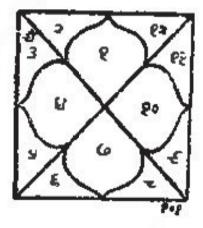


विभिन्न राशियों की कुण्डली के स्वरूप की नीचे प्रदर्शित उदाहरण कुण्डलियों के आधार पर समझ लेना चाहिए। ये सभी कुण्डलियों मेप नग्न की हैं, परन्तु इनमें 'चन्द्रमा' की स्थिति सी अलग-अलग भावों में दिखाया एया है। जिस कुण्डली के जिस भाव में चन्द्रमा बैठा है उस भाव में स्थित राशि ही जातक की जनमकालीन राशि मानो जागेगी। इन कुण्डलियों के आधार पर अन्य नग्न बाली कृण्डलियों से भी राशि का निश्चय किया जा सकता है।

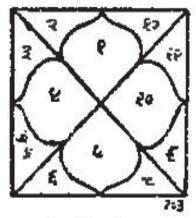
भिष' राशि की कुण्डली



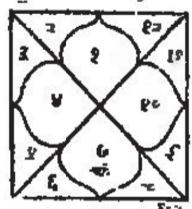
'मिधुन' गणि की कुण्डली



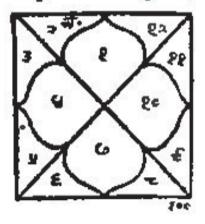
'सिंह' रामि की चुण्डली



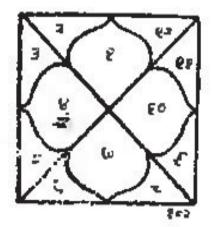
'मुखा' राजि की मुण्डपी



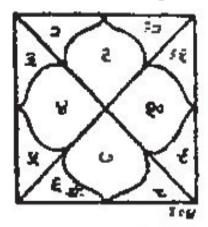
'बृप' राशि की कुण्डली,



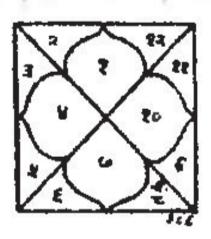
'कक' राणि की कुण्डली



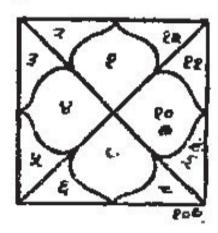
'कन्या' गणि की कण्डली



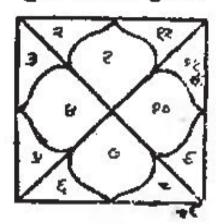
'वश्चिक' गणि यो भण्डली



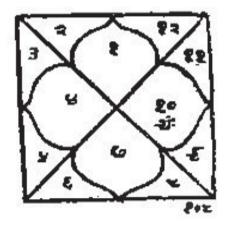
'धनु' राशिकी कुष्डली



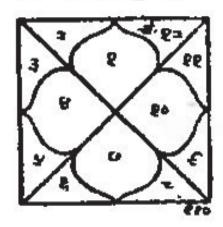
'कुम्भ' रामि की कुण्डली



'मकर' राशि की कुण्डली



'मीन' राशि की कुण्डली



स्थानाधिपति

जातक की जन्मकुण्डली में जो राशि जिस स्थान (भाव या खाने) में स्थित होती है, उस राणि का स्वामी ग्रह ही उस स्थान भाव का अधिपति अर्थात् स्थाना-धिपति' होता है। जैसे—फिसी कुण्डली के चतुर्थभाव में सिंह राशि (५) स्थित है तो सिंह राशि के स्वामी 'सूर्य' की ही उस स्थान अर्थात् मान का अधिपति अर्थात् 'सुखेश' माना जायेगा, फिर चाहे वह सूर्य कुण्डली के अन्य किसी भी भाव में स्थित ममों न ही। मान लीजिए कि वह चतुर्थभाव में न रह कर दशमभाव में बैठा है तो वह कहा जायेगा कि 'चतुर्थेश या मुखेश राज्य अर्थात् दशमभाव में चला गया है।' इसी प्रकार सब भावों, राशियों तथा ग्रहों के सम्बन्ध में समझ कर किस भाव का स्थानाधिपति कहाँ बैठा है, इसकी जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

स्थानाधिपतियों के नाम

विभिन्त आवों के स्वामियों तो निम्नलिखित नामों से पुकारा जाता है:

- प्रथम भाव के स्वामी को—प्रथमेश, लग्नेश, देहाधीण ।
- २. द्वितीयभाव के स्वामी की-द्वितीयेश, धनेश, द्रव्येश।
- ३. तृतीयमाव के स्वामी की-तृतीयम, सहजेश, पराक्रमेश !

- ४. चतुर्यभाव के स्वामी की-चतुर्येश, सुक्षेश, सुहृदेश।
- पंचमधाव के स्वामी की-पंचमेश, सन्तानेश, विदेश ।
- ६. चच्छ भाव के स्वामी को-पच्छेश, हेपेश, शत्रवेश ।
- ७. सप्तमभाव के स्वामी को -सप्तमेश, जायेश, मदनेश ।
- अष्टमगाव के स्वामी को—अष्टमेश, जीवनेश, कालेश ।
- नवमभाव के स्वामी की—नवमेश, भाग्येण, धर्मेण ।
- १०. दशमभाव के स्वामी को-दशमेश, राज्येश, कर्मेश ।
- ११. एकादश्रमाव के स्वामी को-एकादशेश, लाभेश, उत्तमेश ।
- १२. द्वादशमाव के स्वामी को-द्वादशेश, व्ययेश, दण्डेश ।

विशिष्ट ज्ञातव्य-विषय

- १. भावों की गणना लग्न से आरंभ को जानी है। नग्न को पहला भाव (घर) भान कर कपशः उसके बाई ओर को गिनते हुए द्वादश भावों की गणना करनी चाहिए। लग्न कोई भी क्यों न ही, इनसे कमिक-गणना में कोई अन्तर नहीं आता।
- २. जन्मकुण्डली के द्वादश भावों में स्थित विभिन्न राशियों के भावों की उनके लिए निश्चित अभों द्वारा प्रदर्शित किया आता है। जैसे---मेप के लिए १, वृष के लिए २, मियुन के लिए ३, कर्म के लिए ४, सिंह के लिए ४, कन्या के लिए ६, सुला के लिए ७, वृश्चिक के लिए ६, धनु के लिए ६, मकर के लिए १०, कुम्भ के लिए ११ और मीन के लिए १२।
- ३. उच्चस्थ, स्वक्षेती, मित्रक्षेती अथवा उच्चक्षेत एवं स्वक्षेत्र पर दृष्टि बालने वाले ग्रह जिस स्थान पर बैठे होते हैं अथवा जहाँ दृष्टि डानते हैं, उस स्थान के फल की बृद्धि करते हैं। यथा---

'सूर्व' सिंह, मेष, वृश्चिक, धनु अथवा मीन राशि पर वैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डासता हो।

'अन्त्रमा' कर्क, वृष, सिंह, मिधृन अथवा कन्या राशि पर देश हो अथवा इन पर दृष्टि डालता ही।

'संगल' मेप, वृश्चिक, सकर, सिंह, कर्क, धनु अथवा मीन राणि पर डेठा ही अथवा इन पर दृष्टि डालता हो।

'बुख' मियुन, कन्या, सिंह, बृध अथवा तुला गाशि पर बैटा हो अथवा इन पर दृष्टि डासता हो।

'युव' धनु, मीन, कर्क, सिंह, मेप अथवा बृण्यिक राजि पर बैटा हो अववा इन पर दृष्टि डालना ही

'शुक' वृष, सुला, मीन, कन्मा, मियून, मका अयवा कुंभ राशि पर बैठा हो अववा इन पर दृष्टि डालता ही। 'क्रिन' मकर, कुम्भ, सुला, कन्या, मियुन, वृष अथवा सुला राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो।

'राहु' मियुन (मतान्तर से वृष) राशि पर बैठा ही, अथवा लग्न से सीसरे, छठे अववा ग्यारहर्वे में से किसी भी ऐसे स्थान में बैठा ही, जहाँ धनु राशि न ही।

'केनु' धनु (मतान्तर से वृश्चिक) राशि पर बैठा ही अथवा लग्न से तीसरे, छठे अथवा ग्यारहवें में से किसी भी ऐसे स्थान में बैठा ही, जहाँ मियुन राशि न हो।

केन्द्र अर्थात् पहले, चौथे, सातवें एवं दसवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह विशेष सन्तिमाली होने के कारण अपना पूर्ण प्रभाव प्रदर्शित करते हैं।

- विकोण अर्थात् पाँचवें एवं नवें भाव में बैठे हुए सभी यह जातक के धन की वृद्धि करते हैं।
- ६. दूसरे तथा ग्यारहर्वे भाव में बैठे हुए सभी ग्रह जातक के धन की कृद्धि करते हैं। विशेषतः ग्यारहर्वे भाव में बैठा हुआ प्रत्येक ग्रह विशेष लामकारी होता है।
 - ७. तृतीय भाव में बैठे हुए ग्रह जातक के पराक्रम की बढाते हैं।
- यः प्रयम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम तथा एकादश भाव में मेंठे हुए ग्रह उत्तम फल देते हैं।
- एक, अष्टम तथा द्वादश भाव में बैठे हुए ग्रह आतक के लिए कठिनाइयो उपस्थित करते हैं।
- १०. लग्न से तीसरे, छठै तथा ग्यारहवें भाव में कूर ग्रहों—शनि, केंतु का बैठना शक्ति एवं मुभफल देने वाला होता है।
 - ११. ग्यारहवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह शुभफल देते हैं।
- १.२. बाठवें तथा बारहवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह जातक को थोड़ी-बहुत हानि बदश्य पहुँचाते हैं।
- १३. जिस भाव का जो ग्रह कारक याना यथा है, वह यदि वकेला उसी भाव में बैठा हो तो उस भाव को विगाड़ देता है।
- १४. जिस भाव का स्वामी उच्च राजित्य, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री वयवा मूल विकोण स्थित होता है, उस भाव का मुभ फल प्राप्त होता है।
- १५. जिस भाव में मुभ ग्रह बैठा हो, उसका फल उत्तम होता है तथा जिसमें पाप ग्रह बैटा हो, उसके मुभ फल की हानि पहुँचती है।
- १६. जो ग्रह सूर्य के अरावर अथवा उसके निकटवर्ती अंभों पर होता है, उसे 'यूर्ण अस्त' माना जाता है। जो ग्रह सूर्य से म अंश की दूरी पर होता है, उसे 'आधा अस्त' माना जाता है तथा जो ग्रह सूर्य के 15 अंश की दूरी पर होता है उसे 'यूर्ण उदय' माना जाता है।

पूर्ण उत्य ग्रह पूर्ण प्रभाव देता है, आधा अस्त ग्रह आता प्रभाव देता है तया पूर्ण अस्त ग्रह प्रभावहीन होता है।

१०. जिस माव का अधिपति किसी शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, अथवा जिस माव में शुभ ग्रह बैठा हो अथवा जिस भाव की शुभग्रह देख रहा हो, उसका कल शुभ होता है।

१८. जिस मावमें कोई पाप ग्रह बैठा हो अथवा उस भाव के अधिपति के माय कोई पाप ग्रह बैठा ही अथवा उस भाव या उस माव के अधिपति पर पाप ग्रह की दृष्टि पड़ रही हो तो उसका फल अशुभ होता है।

१६. किसी भाव का स्वामी पाप ग्रह हो और वह लग्न से नृतीय न्यान में वैठा ही तो शूभ फल देगा, परन्तु किसी भाव का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह उम भाव से तीसरे स्थान पर बैठे नो मध्यम फल देगा।

२०. जिस भाव में जनका अधिपति यह अधवा जुक, बुध मा गुरू में में नोई वैठा ही अथवा इन पर दृष्टि पड़ रही हो अथवा वह अपने भाव के स्वामी के अतिरिक्त कियी अन्य यह संयुक्त अथवा दृष्ट न हो तो वह शुभ फल देने वाला निद्ध होगा।

२१. शहबे भाव में जो राणि हो, उसका स्वामी जिस भाव में वैठा होता है, उसे विवाद देता है।

२२. राहु, केनु जिस भाव में रहते हैं, उसे बिमाड़ देते हैं।

२३. चन्द्रभा, बुध, भुक, केतु तथा गुक ये सब कमणः एक दूमरे से अधिक शुभ यह हैं। ये यह यदि अपनी राणियों में बैठे हों तो अधिक शुभ कत देने है और यदि पाप यहों (सूर्य, मंगल, शनि तथा राहु) को राणि में बैठे हों तो अल्प शुभ कल देते हैं। रभरणीय है कि कल का विचार करते समय केतु को प्राय. पापग्रह माना जाता है, परन्तु बैसे केनु की गणना शुभ यहीं में की जाती है।

२४. मूर्य, मंगण, शनि तथा राहु—ये सब कमणः एक दूसरे में अधिय पाप बहु हैं। ये बहु यदि अपनी राणि में बैठे हों तो अधिक शुभ कल देते है। यदि अपने मिल की राशि, अपनी उच्च राशि अथवा किसी शुभ बहु की राणि में बैठे हो तो न्यून माला में अशुभ फल देते हैं।

२४. राहु जिसे अधुभ फल देता है, केनु उसे शुभ फल देता है तथा केनु जिसे अधुभ फल देता है, राहु उसे शुभ फल देता है—यह इन दोनों कहीं की एक दिशिष्टता है।

२६. आठवें भाव का अधिपति अर्थात् अव्योग जिम भाव में बैठा होता है, उस भाव को निगाइता है।

२७. गहु-केतु जिस माव में बैठे होते हैं, उसे विशाह देते हैं।

दैतिक ग्रहगोचर का प्रभाव

जन्मकुण्डली जातक के जन्मकालीन ग्रहों की निथित की परिचायक होती है सथा उन ग्रहों को स्थित का जातक के भीदन पर स्थामी प्रभाव पड़ना रहना है, परन्तु आकाशमण्डल में विभिन्न ग्रह निरन्तर भ्रमण करते रहने है जिनका तात्कालिक-अस्थायी प्रभाव भी जातक के दैनिक-जीवन पर पड़ना रहता है। दस प्रकार प्रत्येक ग्रह प्रत्येक प्राणी के जीवन पर अपना दो प्रकार से प्रभाव डालना है। अस्तु, स्वामी प्रभाव के साथ ही ग्रहों के अन्थायी प्रभाव का विभार करना भी आवश्यक होता है। दैनिक ग्रह गोचर में किस समय कीवमा ग्रह किम न्थान पर चल रहा है, इसका जान 'पंचाय' द्वारा प्राप्त किया जाता है। दम विषय की जानकारी किसी ज्योतिषी से पूछ कर, अथवा एनद् निषयक हमानी अन्य पुरनकों का अध्ययन करके प्राप्त को जा सकती है।

इस पुस्तक के द्वितीय खण्ड में जन्मकुण्डली के जिस भाव नया गणि में स्थित स्थायी ग्रहों के जिस फलादेश का उल्लेख किया ग्रंग है, दैनिक ग्रहगोचर कुण्डली के विभिन्न भावों तथा राशियों में स्थित विभिन्न ग्रहों का फलादेश भी ठीक देना ही होता है। किस दिन, मास अथवा वर्ष में दैनिक ग्रह गोचरस्थ ग्रहों का फलादेश किस उदाहरण कुण्डली द्वारा जात करना चाहिए, इसका उल्लेख द्विमीय खण्ड में प्रत्येक लग्न की उदाहरण-कुण्डलियों का फलादेश आरभ करने से पूर्ण ही कर दिया गया है।

जन्म कुण्डलीस्थ ग्रह के स्वामी तथा दैनिक ग्रहगोचर के अस्वामी फनादेश के समन्द्रय स्वरूप भी भी निष्कर्ष निकले, उमी की मच्चर फनादेश मयजना चाहिए !

'वर्ष कुण्डली' स्थित ग्रहों के फलादेश का जान भी जन्मकुण्डली स्थित ग्रहों के फलादेश की भौति इसी पुस्तक की सहायता द्वारा प्राप्त किया या सकता है। वर्षेकुण्डली स्थित 'मुंखा' एवं 'वर्षेश' के विशिष्ट फलादेश के विषय में किसी ज्योतियी द्वारा जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। अथवा हमारी लिखी पुन्तक 'वर्षकुण्डली फल विचार' का अध्ययन करना चाहिए।

सम्मिलित परिवार का फलावेश

सम्भितित परिवार होने पर उस परिवार के सभी मदम्यों की जन्मकुण्डमी के ग्रहों का बोड़ा-बहुत प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता एहता है। अतः मस्मिन्ति-परिवार के किसी सदस्य के विषय में ग्रहों का फलादेश जात करने ममय यदि उम परिवार के बन्ध सदस्यों की जन्मकुण्डलियों का भी सम्मक् अध्ययन करने निरमणं निकाला जाय सो उचित रहेगा। इस पुस्तक की सहायता के किसी भी नती, पुरुष, बालक युवा अथवा वृद्ध मनुष्य की जन्मकुण्डलीस्य ग्रहों के शुभाशुम प्रभाव की जानकारी सरलताप्रंक प्राप्त की जा सकती है।

गलत जन्मकुण्डली का संशोधन

जन्मकुण्डलीस्य ग्रहों के फलादेश की यथार्थता शुद्ध लग्न पर निभंद करती है। यदि लग्न ठीक न होंगी तो जन्मकुण्डली के ग्रहों का फलादेश भी ठीक नहीं बैठेगा।

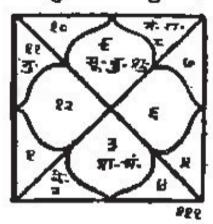
शुद्ध 'लग्न' का निर्णय जातक के ठीक जन्म समय के आधार पर किया जाता है। समय में थोड़ा-सा भी अन्तर पड़ जाने से लग्न के अशुद्ध हो जाने की सम्भावना रहती है, अतः लग्न की शुद्धता का विचार कर लेना आवश्यक है।

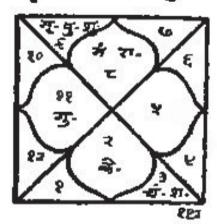
लग्न की शुद्धता का विचार करने की एक सरल विधि यहाँ दी जा रही है। इसके आधार हर गलत लग्न वाली कुण्डली का विना किसी विशेष परिश्रम के सुधार किया जा सकता है। विधि इस प्रकार है---

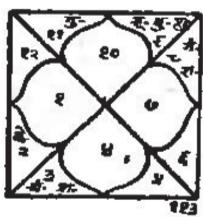
उपस्थित जन्मकुण्डली के ग्रहों के फलादेश से यदि जात ही कि यह जातक के जीवन से ठीक मिल रहा है, तब तो कोई जात ही नहीं, परन्तु यदि फलादेश ठीक न मिले तो लग्न की अशुद्ध समझ कर तो कुण्डलियां ऐसी तैयार करनी चाहिए, जिनमें से एक में लग्न जाने की तथा दूसरी में पीछे को हो, फिर उन दोनों कुण्डलियों के विभिन्न भावों में उपस्थित कुण्डली के आधार पर ग्रहों को लिखकर उनके फलादेश का अध्ययन करें तथा जिस कुण्डली का फलादेश ठीक बैठता हो, उसी लग्न की कुण्डली की शुद्ध समझें।

उदाहरण के लिए नीचे तीन कुण्डली-चित्र दिये जा रहे हैं.। उपस्थित कुण्डली 'बृश्चिक' लग्न की है, मिले बीच में प्रदर्शित किया गया है। पहली तथा तीसरी उसी के आधार पर धनु तथा मकर लग्न की कुण्डलियों दिखाई गई हैं। इन तीनों कुण्डलियों में से जिसका फलादेश जातक के जीवन पर 'ठीक-ठीक घटे, उसी की लग्न शुद्ध समझनी चाहिए।

'धनु' लग्न की कुण्डली 'दृष्टिभक' लग्न की कुण्डली 'सकर' लग्न की कुण्डली



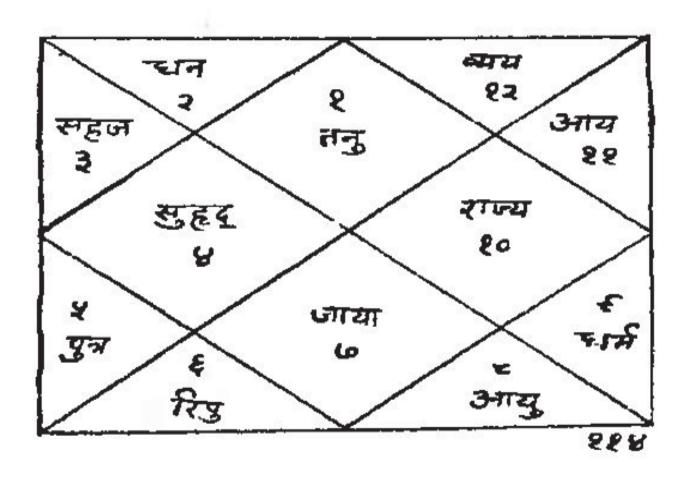




इन उदाहरण-कुण्डलियों में जिस प्रकार लग्न को बदल कर उसके आधार पर विभिन्न भावों में विभिन्न ग्रहों का बैठाया गया है, इसी आधार पर किसी भी गलत लग्न वाली कुण्डली की शुद्ध किया जा सकता है !

हस्तलिखित, असली, प्राचीन भृगुसंहिता फलित प्रकाश

फलादेश



2 द्वितीय खण्ड

[द्वादश लन्नों की कुण्डलियों का फलादेश]

विभिन्न सम्नों वाली जन्मकुण्डलियों का फलादेश जानने की विश्वि

इस दितीय खण्ड में विभिन्न सम्नो बाली कुण्डलियों के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न नहीं के फलादेश का वर्णन अलग-अलग उदाहरण-कुण्डलियों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक लग्न की उदाहरण कुण्डलियों को अलग-अलग अध्यायों में बाँट कर, विभिन्न ग्रहों के फलादेश को सूर्यादि के कम से अलग-अलग लिखा गया है। किस लग्न वाली कुण्डली का फलादेश किन संख्याओं वाली उदाहरण कुण्डलियों में देखना चाहिए, इसे निम्नानुसार समझ लें—

- १. 'मेथ लग्न'—उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६ से २२३ तक
- २. 'बृष' लग्न-उदाहरण-कृण्डली संख्या २२५ से ३३२ तक
- इ. 'मियुन' लग्न--उदाहरण-कुण्डली सख्या ३३४से ४४१ तक
- ४. 'कर्क' लान-उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४३ से ४४० तक
- ५. 'सिंह' लगन---उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४२ से ६४६ तक
- ६. 'कन्या' सनन-अदाहरण-कुण्डली संख्या ६६१ से ७६८ तक
- तुला' सन्त—उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७० से ८७७ तक
- द. 'वृश्चिक' सम्न उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७६ से ६६६ तक
- E. 'धनु' सम्न उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८८ से १०६५ तक
- १०. 'मकर' लग्न---उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६७ से ११०४ तक
- ११. 'कुम्म' सम्न-- उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०६ से १२१३ तक
- १र- 'मीन' लग्न- उदाहरण-कुण्डली सस्या १२१५ से १३२२ तक

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि जन्मकुण्डलों में नियन ग्रहों का जातक के जीवन पर स्वामी प्रमाद पड़ता है, परन्तु तात्कानिक गोचर कुण्डलों के ग्रह भी उसके जीवन पर अपने स्थितिकाल में अस्थायी प्रमाद डासते रहते हैं। अतः जिस समय जो ग्रह जिम राणि पर चल रहा ही, उसके बारे में पंचांग अथवा किसी व्योतियों द्वारा जानकारी प्राप्त करके तात्कानिक प्रभाव के विषय में भी अवस्थ जान लेता चाहिए।

उदाहरण के लिए 'सूर्य' किसी जातक की मेथ लम्स वासी अन्मकुष्यती के दितीय भाष में बैठा है तो वह उदाहरण-कुष्यती संक्या ११७ के अनुमार जातक के जीवृत पर अपना स्थामी प्रमाय बालता रहेगा। परन्तु जब वह तात्कातिक मोधर में मियुन राशि पर कल रहा होगा, तब जातक के ऊपर मेर लम्स वाली कुष्यती के, मिथुन राशि वाले हुतीय भाष में स्थित सूर्य के अनुसार उदाहरल-कुष्यती संक्या

११८ में वर्णित फलादेश रूपी प्रमाव भी सब तक डालता रहेगा, जब तक कि वह गोचर में उस राशि से हट कर आगे कर्क राशि में नहीं चला जाता। कर्क राशि में पहुँच कर उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६ के बनुसार प्रमाव डाल उठेगा। इसी प्रकार गोचर की सब राशियों तथा उनके ग्रहों के अस्थायी-फलादेश के विषय में समझ लेगा चाहिए।

उस्त विधि के प्रत्येक ग्रह के स्वामी तथा अस्थायी प्रमाव की जानकर, उसके समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी की अपने वर्तमान काल का यथार्थ फलादेश समझना चाहिए। योषर के आधार पर किस ग्रह का फलादेश किस उदा-हरण-कुण्डली में देखा जाय, इसका निर्देश प्रत्येक लग्न की उदाहरण-कुण्डलियों के आरम्भ में यथास्थान किया गया है।

स्मरणीय है कि इस ग्रथ में प्रविधात प्रत्येक लग्न की उदाहरण-कुण्डिसियों में विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन असग-असग किया गया है, अतः प्रत्येक जन्मकुण्डली का फलादेश झात करने के लिए १ उदाहरण-कुण्डिसियों के अध्ययन की आवश्यकता पड़ेगी। यही नियम शोधर कुण्डली के फलादेश पर भी लागू होगा।

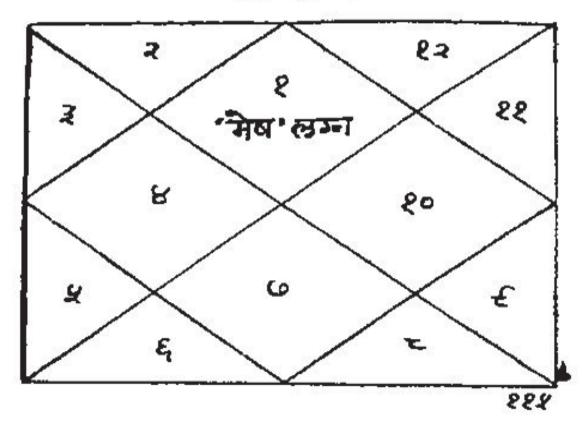
यदि लग्न कुण्डली के किसी भाव में तो या उससे अधिक ग्रह एक साथ बैठे हों तो उसके विशिष्ट प्रभाव को 'ग्रहों' की युति, सम्बन्धी बाले तृतीय खण्ड में देखना चाहिए।

स्मरणीय है कि जो यह जितने अंग्र का होता है, उसी के अनुरूप वह न्यूनाधिक फल प्रदान करता है। अतः ग्रहों के अंग्रों की जानकारी रखना भी आवश्यक है। यह जानकारी पंचांग अथवा किसी ज्योतिषी द्वारा प्राप्त की जा सकतो है।

उस्त विधि से इस पुस्तक द्वारा संसार के किसी भी स्त्री-पुरुष की जन्म कुण्डली का फलादेश ज्ञात किया जा सकता है। यदि ग्रंथ में यणित किसी विषय की समझने में कोई कठिनाई ही जयवा जन्मपत्र-निर्माण खादि ज्योतिष सम्बन्धी भी कोई जानकारी प्राप्त करनी ही तो जवाबी-पत्न लिख कर निम्न पते पर पूछताछ की जा सकती है। पता यह है—

पं० राजेश दीक्षित, कृष्णापुरी, मथुरा (उ० प्र०)

'मेष लग्न'



['मेष' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न मावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'मेष' लग्न का फलादेश

भिष' लग्न में जन्म लेने वाले जातक का शरीर दकहरा तथा कुछ उरालिमा लिए गौर वर्ण का होता है। वह'स्वभाव से रजोगुणी, पिन प्रकृति अत्ना, उप, अहंकारी, चंचल, अत्यन्त चतुर, बुद्धिमान, धर्मात्मा, उदार, कुल-दीपक सथा अत्य-संततिवान् होता है। स्तियों के प्रति उमका स्वार्यपूर्ण अल्प नगाव अथवा देव होता है।

इस शग्न वाले जातक को अपनी आयु के ६, ८, १४, २१, ३६, ४४, ४६ तथा ६३वें वर्ष में धन-हानि एवं शारीरिक कप्टों का सामना करना पड़ता है। आयु के १६, २०, २८, ३४, ४१, ४८ तथा ४१वें वर्ष में उमे धन, वाहन, मीभाग्य आदि का सुख शान्त होता है।

'मेष' सम्म वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विधितन धावों में स्थित विधितन ग्रहों का स्थायी-फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संद्या ११६ में २२३ के बीच देखना चाहिए।

योखर-कुण्डली ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखे. इसे आगे जिसे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'मेष' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१---'मेप' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न बावों में 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण कुण्डली-संख्या ११६ से १२७ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' शग्न वालों को शोशर-कुण्डली के विधिनन भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'--

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो सख्या ११६
- (ख) 'वृष' राणि पर हो तो संख्या ११७
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ११=
- (घ) 'कक" राशि पर हो तो संख्या ११६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२०
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२१
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२२
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२३
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १२४
- (ञा) 'सकर' राशि पर हो तो संख्या १२४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२७

'मेष' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'मेष' सग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८ से १३६ के बीच देखना चाहिए।

२---'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस दिन 'चन्द्रमा'---

- (क) 'मेप' राशि पर हो तो संख्या १२८
- (ख) 'वृष' राशि पर हो दो संख्या १२६
- (ग) 'मियुन' राशि पर हो तो संख्या १३०
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३१
- (ह) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३२

- (च) 'कन्या' राझि पर हो तो संख्या १३३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३४
- (अ) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३४
- (स) 'छनु' राशि पर हो तो संख्या १३६
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३७
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३०
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३६

'मेष' लग्न में 'मंगल' का फलावेश

१—'मेब' लग्न दालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४० से १५१ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेय' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न धावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मगल'---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १४०
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १४१
- (य) 'भिषुत' राशि पर हो तो संख्या १४२
- (घ) 'कर्के' राशि पर हो तो संख्या १४३
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १४४
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १४५
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १४६
- (ज) 'वृश्चिक' राक्षि पर हो तो संख्या १४७
- (अ) 'अनु' राशि पर हो तो संख्या १४८
- (ञा) 'अकर' राशि पर हो तो संख्या १४६
- (ट) 'क्रुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १५०
- (ठ) 'मीन' रामि पर हो सो संख्या १५१

'सेव' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१--- 'मेष' सम्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्त बावों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १५२ से १६३ के बीच देखना चाहिए।

२---'भेष' सम्न वालों को गोधर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'कुध' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना भाहिए---

जिस महीने में 'बुघ'---

- (क) 'मेव' राशि पर हो तो संख्या १४२
- (ख) 'बृष' राशि पर हो तो संख्या १५३
- (ग) 'मिथुन' राजि पर हो तो संख्या १५४
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १५५
- (क) 'सिंह' राशि पर-हो तो संख्या १५६
- (च) 'कन्या' राशि पर ही तो संख्या १५७
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १५८
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १५६
- (अर) 'अनु' राशि पर हो तो संख्या १६०
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १६१
- (ट) 'कुम्भ' राक्षि पर हो तो संख्या १६२
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १६३

'मेष' लग्न में 'गुर' का फलादेश

१—'मेष' सन्त वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुर' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १६४ से १७५ के बीच देखना चाहिए।

र---'मेष' लग्न वालों को ग्रीचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'नुध' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस वर्ष में 'गुरु'-

- (क) 'मेप' राशि पर हो तो संख्या १६४
- (ख) 'बूव' राशि पर हो तो संख्या १६%
- (य) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १६६
- (घ) 'ककें' राशि पर हो तो संख्या १६७
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १६=
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १६६
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १७०
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १७१
- (झ) 'धनुं राजि पर हो तो संख्या १७२
- (ङा) 'मकर' राजि पर हो तो संस्था १७३
- (ट) 'क्रुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १७४
- (क) 'भीन' राजि पर हो तो संख्या १७५

'मेष' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१---'मेब' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी-फ़लादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७६ से १८७ के बीच देखना चाहिए।

२--'मेथ' सम्म बालों को गोजर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए--

जिस महीने में 'शुक'---

- (क) 'मेव' रामि पर हो तो संख्या १७६
- (ख) 'बुव' राशि पर हो तो संख्या १७७
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १७८
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १७६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १८०
- (च) 'केन्या' राशि पर हो तो संख्या १८१
- (छ) 'तुला' रामि पर हो तो संख्या १=२
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १८३
- (झ) 'सनु' राशि पर हो तो संख्या १८४
- (ङा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १८**५**
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १८६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०७

'मेष' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१---'मेष' लग्न वालो को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में क्थित 'बनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १८६ के बीच देखना चाहिए।

२--'मेथ' सम्म वालों को गोजर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्यायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस वर्ष में 'शनि'---

- (क) 'मेव' राशि पर हो तो संख्या १८८
- (ख) 'बूव' राशि पर हो तो संख्या १८६
- (ग) 'मिथून' राजि पर हो तो संख्या १६०
- (व) 'कर्क' राजि पर हो तो संख्या १६१

- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १६२
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो सक्या १६३
- (छ) 'तुला' राज्ञि पर हो तो संख्या १६४
- (ज) 'बृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १६५
- (झ) 'धनु' राज्ञि पर हो तो संख्या १६६
- (का) 'मकर' राशि पर हो हो सक्या १६७
- (ट) 'कुम्भ' रामि पर हो तो संख्या १६८
- (ठ) 'मीन' राजि पर हो तो संख्या १६६

'मेव' लग्न में 'राहु' का फलावेश

१--- 'शेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विधिम्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २०० से २११ के बीच देखना चाहिए।

२--भिष' लग्न वालों को अपनी गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थामी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना धाहिए--

जिस वर्ष में 'राहु'---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २००
- (ख) 'बूष' राज्ञि पर हो तो संख्या २०१
- (ग) 'मियुन' राशि पर हो तो संख्या २०२
- (ध) 'कर्क' राज्ञि पर हो तो संख्या २०३
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २०४
- (च) 'कन्या' राज्ञि पर हो तो संख्या २०५
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो सख्या २०६
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २०७
- (अ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २०६
- (ञ्) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २०६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २१०
- (ठ) 'मीन' राजि पर हो तो संख्या २११

'मेष' लग्न में 'केतु' का फलावेश

१—मिष' सग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विधिन्त भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या २१२ से २२३ के बीच देखना चाहिए । २—'मेथ' लग्न वालों को गोजर-कुण्डली से विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में वेखना चाहिए----

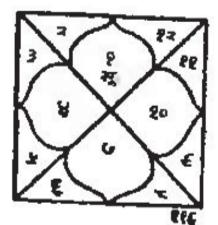
जिस वर्ष में 'केतु'---

- (क) 'मेव' राशि पर हो तो संख्या २१२
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २१३
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २१४
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २१४
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २१६
- (च) 'कन्या' राजि पर हो तो संख्या २१७
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २१८
- (अ) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २१६
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २२०
- (अ) 'मकर' राणि पर हो तो संख्या २२१
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २२२
- (ठ) 'मोन' राशि पर हो तो संख्या २२३

'मेष' लग्न में 'सूर्य'

भिवं सन्न बासी कुच्छली से 'प्रथममाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : सूर्य



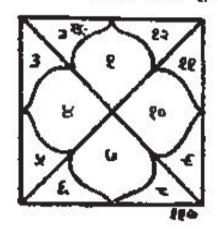
पहले भार में अपने मित्र मंगल को राशि में उच्चस्य सूर्य अपने मित्र मंगल की राशि पर है, अतः जातक तेअस्वी, विद्वान्, साहसी, स्थस्य, स्वाधिमानी तथा पराक्रमी होगा। महत्वाकांक्षा, व्यवहार-कुक्तसता, धैर्य आदि सद्गुण प्राप्त होगे तथा सन्तानें भी अधिक होंगी।

परन्तु सूर्य की सप्तमनाव पर नीच-वृद्धि पड़ने के कारण जातक से दाम्यस्य-सुख में कमी रहेशी। पत्नी

(यदि स्त्री की जन्मकुष्डली हो तो पति) अधिक सुन्दर नहीं होगी। पति-यत्नी में मन-मुटाव की रह सकता है। दैनिक जीविकोपार्जन के क्षेत्र में भी अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ आती रहेंगी।

'नेव' लप्न की कुम्बली से 'द्वितीयमाव' 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीय भाव : सूर्य

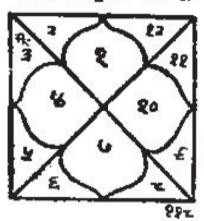


दूसरे याव में अपने शक्षु शुक्त को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अर्थिक कठि-नाइयों का सामना करना होगा। इस कुण्डली में सूर्य पंचमभाव का स्थायो होकर शक्षु की राशि पर बैठा है, अतः जातक के विद्याध्ययन एवं संतान पक्ष में भी कठिनाइयां आती रहेंगी। कुटुम्ब, रत्न तथा बन्धन-विषयक विवाद भी उठते रहेंगे। यहाँ से सूर्य अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है, अतः

जातक की आयु दीर्घ होगी तथा उसे गुदा अथवा आकस्मिक धनका साथ भी होगा।

'मेव' सम्ब हुण्डसी के 'तृतीयमाव' स्थित सूर्य का फलादेश

मेषलग्न : तृतीयभाव: सूर्य

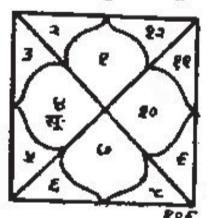


तीसरे भाव में अपने मित्र बुध की राज्ञि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के बुद्धिक एवं पराक्रम में वृद्धि होगी। सूर्य को सातवीं दृष्टि भाग्य-भवन पर होने से जातक भाग्यवान्, धर्मात्मा, दानी तथा तीर्थसेवी होगा। नवें भाव में सूर्य के मित्र तथा शुभग्रह गुरु की राशि होने से कारण जातक भुभ कार्य करने वाला तथा भगवव् भक्त होगा।

तृतीय भाव से भाई तया वाणी का तो विचार किया आता है, अतः यह जातक भाइयों का सुख प्राप्त करेगा तथा अध्यस्वी वाणी वाला होगा।

'सेव' सम्म की कुष्पली के 'धतुर्वभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

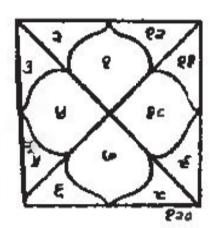
मेष लग्न: चतुर्यभाव: सूर्य



चौथे याव में अपने मित चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक भूमि, गृह, वाहन आदि अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करेगा। वह विद्वान् तथा विद्या द्वारा सुख प्राप्त करने वाला भी होगा। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपने मत्नु शनि की राशि वाले दशम माव को देखता है अतः जातक की अपने पिता से अनवन रहेगी तथा राजकीय मामलों में विफलताएँ आयेंगी। परंतु सूर्य से प्रभाव से कुछ-न-कुछ सम्मान अवस्य बना रहेगा।

भिष' लग्न की कुण्डली के 'यंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेप लग्न: एचमभाव: सूर्य



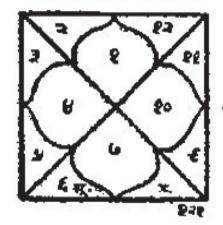
पौषवें भाव में स्वक्षेत्री सूर्य के प्रमाव से जातक वड़ा विद्वान्, बुद्धिमान्, यशस्वी तथा सन्तान-मुख से परि-पूर्ण रहेगा । यहाँ से सूर्य को सप्तम दृष्टि अपने शतु शनि की राश्चि वाले ग्यारहवें भाव पर पड़ती है, अतः भाव के साधनों में क्कावटें खाती रहेंगी तथा आधिक लाभ के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा।

इस ग्रह स्थिति का जातक कटुभाषी तथा आह-कारी होता है, जिसके कारण लोग परोक्ष में उसकी निन्दा भी करते हैं।

भिव' लग्न की कुच्डली के 'बध्ठमाव' स्थित 'सूर्य' का कलादेश

छठे भाव में अपने भित्न बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रमाव से जातक अपने शतुओं पर निरन्तर विजय प्राप्त करता रहेगा। पंचमभाव का स्वामी पण्टमाव

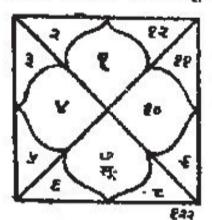
मेच लग्न : पप्ठभाव : सूर्य



में होने के कारण विद्याध्ययन में कुछ कठिनाइयाँ तो खायेंगी, परन्तु जातक परम विद्वान् सथा बुद्धिमान भी होगा। सूर्य की सप्तदृष्टि व्ययस्थान में पड़ने के कारण जातक शहरी संबंधों से लाभ एवं सफलता पाने बाला, विदेशों में सम्मानित तथा अधिक खचं करने वाला भी होगा। इसे सन्तानपका से कुछ चिन्ताएँ अवश्य बनी रहेंगी। शतुपक्ष कठिनाइयाँ खड़ो करता रहेगा, परन्तु यह हारेगा तो।

भिव' लग्न कुच्छली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

मेष लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

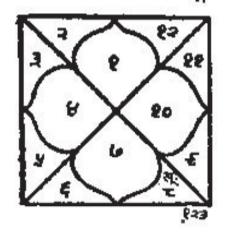


सातवें भाव में अपने समु गुक्त की गणि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की अपने स्वराज्य एवं स्त्री से विषय में निरन्तर कठिनाइयों का मामना करना पड़ेगा। सप्तम उच्चदृष्टि से जिस मंगल की राज्ञि वाले लग्नमाय को देखने के कारण जातक संबे कद का तेजस्थी तथा स्वाधिमानी होगा। वह युक्ति एवं बुद्धिवस से अपना काम निकासने में प्रवीण होगा। सूर्य के पंथमेश होने के कारण जातक का विद्या तथा सन्तानका पक्ष भी कमजोर रहेगा तथा जीवन-मापन के

संज में भी कठिनाइयाँ बाती रहेंगी।

'मेव' लप्न कुष्पली से 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

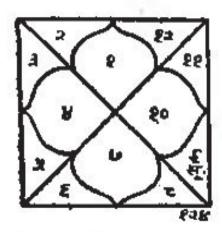
मेप सम्न : अष्टमभाव : सूर्य



आठवें भाव में मित्र मंगल को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातस्व एवं गुप्त धन सम्बन्धी साभ तो होगा परन्तु आठवाँ घर मृत्यु-भवन होने से विद्या एवं संतान पक्ष में कमजोरी रहेगी। दैनिक जीवन में भी कठिनाइयाँ आती रहेंगी। सातवीं दृष्टि से धलु के द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक को धन एवं कुटुम्ब विषयक असन्तोष भी निरन्तर धना रहेगा। कुल मिसकर जीवन संघर्षपूर्ण रहेगा।

किव' लग्न की कुक्सली के 'कबमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

मेष लग्न : नवमभाव : सूर्य



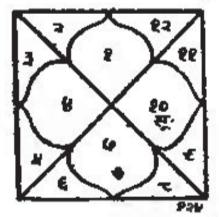
नवें भाय में अपने मित्र गुरु की राशि पर रियत सूर्य के प्रभाव से जातक खेष्ठ विद्या, खुदि एवं कान का स्वामी होगा। यह धर्म, धर्मंत्र शास्त्रों का जाता, ईप्टर भक्त, यशस्त्री, भाग्यवान, दवालु, दानी तथा तीर्थसेवी भी होगा। भाग्योन्नसि के सित्र में निरन्तर, सफलताएँ मिलसी रहेंगी।

सातवीं दृष्टि से अपने जिस बुध की राशि वाले सृतीय भाव को देखने के कारण जातक के परा-कम, भाई-बहन, साहस तथा योग्यताओं में जुद्धि

होगी । सूर्यं की बहु स्थिति बहुत श्रेष्ठ है।

भिवं सम्न की कुम्बली के 'दशमग्राव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्नः दशमभावः सूर्य



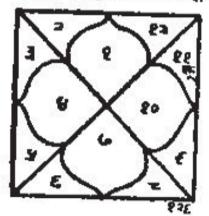
दसर्वे भाव में अपने सबु शनि को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने पिता, व्यव-साय, राज्य नौकरी तथा प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कुछ कमियों शिकार होना पड़ता है, परन्तु यह विदेशी भाषा एवं का राजभाषा का खेष्ठ जानकार होता है।

सातवीं दृष्टि से अपने मित्र चन्द्रमा की राशि से चौथे भाव को देखने से माता, भूमि, भवन का खेष्ठ सुख प्राप्त होता है। ऐसा जातक अपने बुद्धिवल से

राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्रों में सफलताएँ प्राप्त करता है।

'मेव' सम्म की कुष्यली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्व का फलावेश

मेष लग्न : एकादशभाव : सूर्य

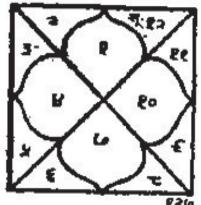


ग्यारहवें भाव में अपने शतु शनि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अर्थ-लाभ के लिए विशेष परिश्रम तो करना पडता है, परन्तु लाम भी अत्यधिक होता है। ग्यारहवें भाव में पापग्रह शक्तिशाली माना जाता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि याले प्रचमाव से देखने के कारण जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान का भी विशेष लाभ होता है। ऐसा जातक अपनी स्वावं पूर्ति के लिए कटुभाषी भी होना है तथा उसी से नाभ भी उठाता है।

'मेव' सम्म की कुष्यली के 'द्वादराभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : द्वादश्रभाव : सूर्य



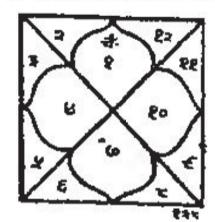
बारहवें मार्थ में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रमान से जातक का बाहरी स्थानों से श्रेष्ठ सम्बन्ध होता है, परन्तु क्यय को अधिकता भी बनी रहती है। उसे अपना खर्च चलाने के लिए बुद्धिबलका अधिक प्रयोग करना पड़ता है। सन्तान एवं विद्या पक्ष की हानि तथा चिन्ता के योग भी उपस्थित होते हैं।

हर्ने सातवीं दृष्टि से अपने मित्र बुध की गांधि वाले वष्ठमाव की देखने के कारण जातक को शत्रुपस पर विजय प्राप्त होती है, परन्तु वह मानसिक चिताओं का शिकार भी भना रहता है।

'मेष' लग्न में 'चन्त्रमा'

'बेब' लग्न की कुष्डली के 'प्रयमभाव' स्थित 'बन्दमा' का फलादेश

मेष लग्न : प्रयमभाव : चन्द्र

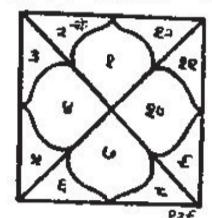


पहले मान में अपने मित्र मंगल की गाँश पर स्थित चन्द्रमा के प्रमान से जातक मानसिक तथा पारिकारिक सुख-मौति प्राप्त करता है।

सातवीं दृष्टि से मुक्त की राजि वासे सप्तम भाव की देखने के कारण स्त्री तवा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। ऐसे जातक का दाम्पत्य-बीचन सुधी तवा जारीरिक स्वास्त्य उत्तम रहता है।

'नेव' लब्द की कुष्यली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव: चन्द्र



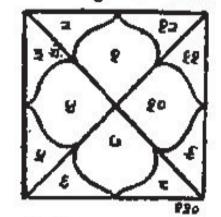
दूसरे भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक बड़ा धनी तथा ऐश्वयंभाली होता है। उसे कौटुम्बिक सुख भी यथेष्ट मिलता है, परन्तु भाता के पक्ष में स्थित सुटि का अनुभव भी होता है।

सातवीं नीच दृष्टि से मित्र मंगल की राशि वासे आठमें भाव की देखने के कारण जातक की आयु, स्वास्थ्य तथा पुरातत्त्व विषयक बुटियों का

सामना करना पड़ता है। उसका दैनिक जीवन भी कुछ अशौतिपूर्ण बना रहता है।

बिव' लम्न की कुष्पली के 'तृतीयचाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र



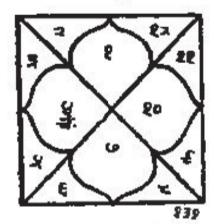
तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा उसे भाई-बहिनों का सुख मिसता है। चौये घर का स्वामी होने के कारण चन्द्रमा जातक को भूमि, भवन, बाहन बादि का सुख भी देता है।

सातवीं दृष्टि से मित्र गुरु की राशि से नवें भाव को देखने के कारण जातक धर्मात्मा, उदार,

दानी, विद्वान्, भाग्यवान तथा यशस्त्री भी होता है। कुल विद्या कर इस ग्रह स्थिति वाला जातक जीवन में अनेक प्रकार को सफलताएँ प्राप्त करता रहता है।

'नेव' सम्त की कुष्यली के 'चतुर्यनाव' स्थित 'चलार्या का फलावेन्न

मेष लग्न : चतुर्थभाव : मन्द्र



चौथे आव में स्वराक्षि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, श्रुमि, भवन, सम्पत्ति आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा मनोरंजन के साधन निरंतर उपलब्ध होते रहते हैं।

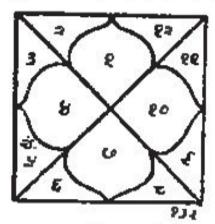
सातवीं दृष्टि से शतु शिन की राजि वाले दभम शाद की देखने के कारण जातक का अपने पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं सम्मान के क्षेत्र में कभी धनी रहती है। कुल विद्या कर---ऐसा जातक

सब प्रकार से सपन्न होते हुए भी यशस्त्री सम्मानित नहीं हो पाता।

बिष' सम्म की कुष्डली के 'पंचमधाद' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

पाँचवें भाव में अपने मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक बड़ा विद्वान्, बुद्धिमान एवं सन्ततिवान होता है।

मेष लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

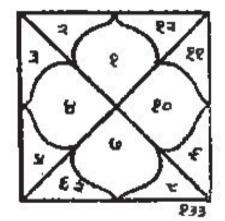


सातवीं दृष्टि से अपने शतु शनि की राशि वाले ग्यारहवें भाव को देखने के कारण उसे आय के माधनों में कठिनाइयों का मामना करना पड़ता है, परन्तु उन्हें वह अपने धैर्य एवं शाँन स्वभाव से महन कर लेता है। कुल मिला कर ऐसी यह स्थिति का व्यक्ति धीर, गंभीर, शांन, योग्य, विद्वान्, मन्तोगी, माता से सुखी, भू-सम्पत्ति का म्वामी, पग्नु व्यव-साय एवं लाभ के क्षेत्र में कठिनाइयां उठाने वाला होता है।

'मेव' लग्न की कुष्यली के 'बळशाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलादेश

छठे भाव में अपने मित्र बुध को राणि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव में जातक शतुपक्ष में शांति का अनुभव करता है तथा विपत्तियों पर अपने धैर्य एव विनम्रता

मेप लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र



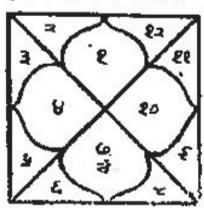
के बल पर विजय प्राप्त करता है। उसके घरेलू दाना-वरण में भी अगांति एवं कमियां बनी गहती हैं।

सातवीं दृष्टि से अपने मिन्न गुरु की राणि वाले बारहवें भाव को देखने के कारण जातक मुभ कार्यों में व्यय करता है तथा बाहरी स्थानों से नाभ एवं सुख भी प्राप्त करता है। कुल मिला कर ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक विनम्न, धैर्यवान, गुभकर्म करने वाला तथा धरेलू जीवन में वृद्धियों का णिकार बना रहने वाला होता है।

'बेब' लग्न की कुष्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'श्रन्त्रमा' का फलादेश

सातवें भाव से अपने सामान्य मित्र शुक्र की राणि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक स्त्री-सुख एवं भीग-विनास की प्राप्त करने वाला, सुन्दर, एवं भूमि तथा सम्पत्ति का सुख पाने वाला होता है।

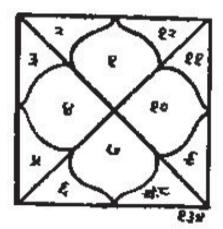
मेष भग्नः सप्तममावः चन्द्र



मातवीं दृष्टि से अपने मित्र मंगल को राणि वाले पहले धाव की देखने के कारण जातक णारीरिक, मीन्दर्म, सम्मान, मनीरंजन, सुख आदि को प्राप्त करता है। कुल मिना कर ऐसी ग्रह स्थित वाला जातक मुन्दर, विलासी, मगस्बी नथा व्यावसायिक एवं सुख के क्षेत्र में सफलना पाने वाला होता है।

'येव' सम्ब की कुष्यसी के 'अध्यमभाव' स्थित 'अन्त्रमा' का फतादेश

मेष लग्नः अष्टमभावः चन्द्र



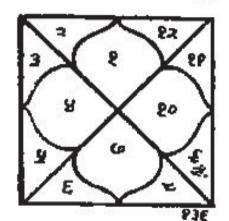
आठवे माद में अपने मिन्न मंगल की राणि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा अचल सम्पत्ति के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। उमे पुरातत्त्व तथा आयु संबंधी संकट भी उठाने पड़ते हैं तथा घरेलू-सुखशान्ति में भी कभी रहती है।

सातवीं उच्वदृष्टि से शुक्र की राशि वाले हितीय भाव को देखने के कारण जातक को धन प्राप्ति के योग निरन्तर मिलते रहते हैं तथा वह धन एवं सुख को अजित करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील भी बना

रहता है।

'भेष' सम्त की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बखमा' का फलावेश

मेष तग्नः नवमभावः धन्द्र



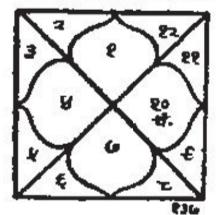
नवेंभाव से अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक धर्म-कर्म, दान, पुण्य, तीर्थ-याता सादि की ओर अधिक आकर्षित रहता है। उसे माता, भूमि तथा सम्पत्ति का सुख भी प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपने मिन्न सुख की राशि वाले तृतीयभाव को देखता है। अतः जातक के भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होगा तथा पराक्रम में भी वृद्धि बनी रहेगी। कुल मिलाकर इस ग्रह-स्थिति का

जातक सौभाग्यशाली, धन-सम्मित्तिवान, आई-बहिनों से युक्त तथा धार्मिक आचार-विचारों वाला होता है।

'मेख' लग्न की कुष्यली के 'दशममाब' स्थित 'अन्त्रमा' का फलादेश

'मेप' लग्नः दशमभावः चन्द्र



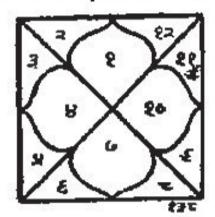
दसवें भाव में अपने सत् शनि की, राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का अपने पिता से बैमनस्य रहताहै, परन्तु उसे राज्य में सम्मान की प्राप्ति होती है और वह अपने परिश्रम एवं अध्यवसाय द्वारा व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त करता है।

सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपनी राशि वाले चतुर्थ भाद की देखता है, अतः उसे माता, भूमि, भवन, सम्पत्ति आदि का अच्छा सुख मिलना है। ऐमा व्यक्ति अपने

परिश्रम द्वारा अपना मकान बनवाता तथा सुख प्राप्त करना है।

'मेव' लान की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलादेश

मेव लग्न : एकादशभावे: अन्द्र



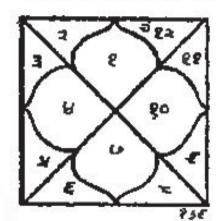
ग्यारहवें भाव में अपने शतु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने मनोवल के प्रभाव से अपनी आय के साधनों को बढ़ाता तथा सुखी जीवन विताता है। सामान्यतः उसे आप के साधनों में कुछ कठिनाइयाँ आती रहती है।

सानवीं दृष्टि से अन्द्रमा अपने मित्र की शामि वाले पंचम भाव की देखता है, अतः जातक विद्वान् बुद्धिमान् तथा मन्तितवान् होता है। कुल मिलाकर ऐसी

ग्रह स्थिति वाला व्यक्ति विद्या बुद्धि के द्वारा अपनी उन्नति करता है।

'मेव' सन्न की कुध्रसी के 'द्वादशमाव' स्थित 'धन्द्रमा का फलादेश

मेषस्मन :द्वादमभाव: चन्द्र



बाग्हवें भाव में अपने मित्र गुरु की राभि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शुभ कार्यों तथा शान-शीकत में अर्चे करने वाला तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

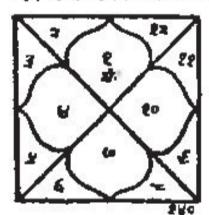
मातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपने मित्र बुध का राशि वाले पष्टभाव को देखता है, अतः जातक शर्रक पर शान्ति से विजय पापेगा तथा अपनी बुद्धिमत्ता से हर प्रकार के झगड़ों को निपटाने में सफल हुआ करेगा।

कुल मिला कर ऐसी प्रहस्थिति का व्यक्ति सुखी तथा सन्तुष्ट जीवन विनाने वाला एवं शतुपक्ष पर अपनी शालीनता से विजय पाने वाला होता है।

'सेव' लग्न में 'मंगल'

'बेब' सान की कुष्यली के 'प्रयमघाव' स्थित 'अंगल' का फलादेश

मेच लग्नः प्रयमभावः भगल

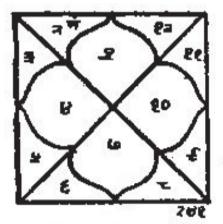


पहलेषाय में स्वराशि स्थित मंगल के प्रभाव से बातक पुष्प शरीर बाला आत्म-बली तथा साहसी होता है। बाठवें भाव का स्वाभी होने तथा उसे पूर्ण दृष्टि के कारण भंगल जातक की कभी-कभी रोगों का शिकार भी बना देता है परन्तु आयु सम्बी देता है।

सातवीं दृष्टि से शुक्र की राशि वाले अपमा भवन की भी देखता है। अतः जातक की अपमी पत्नी तथा व्यवसाय के मामसे में कुछ हानि भी उठानी पड़ती है।

'सेव' सम्म की कुण्डली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'संगल' का फलादेश

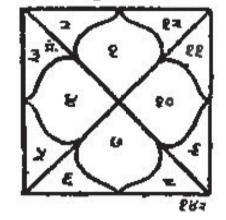
दूसरे भाव में अपने शत्रु शुक्र की राशि मेष लग्न: दितीयभाव: मंगल में स्थित मंगल के प्रभाव से जीतक की धन-संख्य



में कभी दबा घरीर में कब्द का सामना करना पड़ता है। खतुर्थ दृष्टि से पंचममान की देखने के कारण जातक मिला तथा संतान के पक्ष में कुछ कठिनाइयों का सामना करता है। सातवीं दृष्टि से अब्दमभाव को देखने के कारण दीर्घायु एवं पुरातस्य का लाभ देता है। आठवीं दृष्टि से नवमभाव की देखने के कारण भाग्योन्नसि में भी स्कावटें डालता रहता है।

'मेख' सम्म की कुछाली के 'तुलीयभाव' स्थित 'संगल' का फलावेश

मेच भान : तुतीयभाव : मंगल



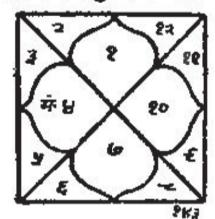
तीसरे आव में अपने मिल सुख की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से आतक पराक्रमी तथा साहसी होता है, परन्तु मंगल के खब्टमेखी होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कभी आ खाती है।

भीषी वृष्टि से षष्टभाव की देखने के कारण जातक शत्नुजयी होता है और हिम्मत से काम खेकर उन पर अपना प्रभाव जालता है। सरतयों वृष्टि के मित्र बुध की राशि वाले मनमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति करता है तथा आठमीं वृष्टि से शतु शनि

की राशि वाले दशमभाव को देखने के कारण राज्य, पिता तथा व्यवसाय के लेक में कठिनाइयाँ भी उपस्थित करता रहता है।

'नेव' सम्म की कुण्डली के 'धतुर्वभाव' स्थित 'यंगल' का फलादेश

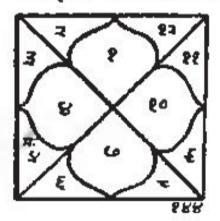
मेप लग्न: चतुर्वभाव: मंगस



नीये माव में अपने मित चन्द्रमा की राजि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को माता के सुख, भूमि, मवन तथा सुख के क्षेत्र में कभी रहती है। जीयी दृष्टि से मतु मुक्त की राजि वाले सन्तमभाव को देखने के कारण स्त्री के सुख में कभी रहती है। सातवीं उच्च दृष्टि से मतु मनि की राजि वाले दशमंभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य द्वारा लाभ होता है। खाठनीं दृष्टि के मतु मनि की राजि वाले ग्यारहवें भाव को देखने के कारण लाम प्राप्ति के लिए आतक की अस्पिक परिश्रम करना पहता है।

'मेख' सम्ब की कुण्डली के 'यंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

'सेष ल्ग्न: पंचमभाव: संगल

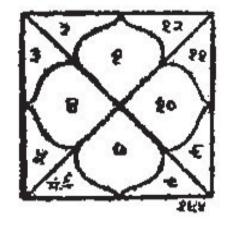


पांचवें भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित भंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में कठिनाइयां आती हैं। चौथी दृष्टि से स्वराणि के अष्टमभाव को देखने के कारण आतक की आयु तथा पुरातत्व का साथ देता है। सातवीं दृष्टि से सम-शनि की राशि के ग्यारहवें भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ के योग उपस्थित करता है तथा आठवीं दृष्टि से मित्र गुरु के दारहवें भाव की देखने के कारण खर्च अधिक कराता है तथा बाहरी

स्थानों से आजीविका के सम्बन्ध बनाता है।

भेव' सम्म की कुष्यती के 'पष्ठमाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

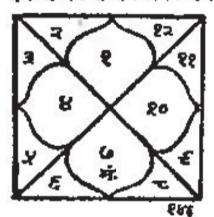
मेष तम्न : षष्ठभाव : मंगल



छठे भाव से मिन्न सुख की राणि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शबुजयी, साहमी तथा निर्मय होता है। चौथी दृष्टि से शनि की राशि के दसवें भाव को देखने के कारण भाग्यो-न्नित में कठिनाइयाँ देता है। मातवीं दृष्टि से मिल्ल गुरु की राशि के बारहवें भाव को देखने के कारण खर्च अधिक तथा बाहरी स्थानों से लाभ कराता है। आठवीं दृष्टि से स्वराणि वाले प्रथमभाव को देखने के कारण जातक की शरीर से स्वस्थ, स्वामिभनी तथा प्रवल प्रभाव वाला बनाये रखता है।

'मेव' सम्म की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

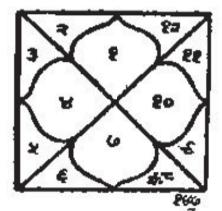
मेष लग्नः सप्तमभावः भंगल



सातवें भाव में मुक्त की राशि में स्थित भंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा अववसाय के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। चौथी उच्च दृष्टि से शति की राशि के दशममाय को देखने के कारण पिता एवं राज्य द्वारा उन्तति के साधन तथा यस देता है। सातवी दृष्टि में स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने से आतक के भरीर को स्वस्थ तथा प्रभावशाली बनाता है। आठवी दृष्टि से मुक्त को राशि वाले दितीयभाव को देखने के कारण आतक को धन तथा कुटुम्ब वृद्धि के लिए अधिक परिश्रम करने पर भी न्यून सफलना देता है।

'मेव' सम्म की कुष्यली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न: अष्टमभाव: गंगल

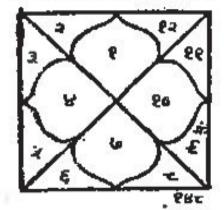


वाठवें भाव में स्वराशि स्थित मगल के प्रभाव से जातक दीर्घायु तथा पुरातत्व का लाभ प्राप्त करता है, परन्तु लग्न का स्वामी भी होने के कारण शारीरिक सौन्दर्य में कभी देता है। चतुर्थ दृष्टि से शनि की स्वशि वाले एकादश भाव की देखने के कारण आय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता देता है। सातवीं दृष्टि से खबू शुक्र की राशि वाले दितीयभाव की देखने से धन तथा कुटुम्ब के बारे में चिन्ता बनी

रहती है। बाठवीं मिलदृष्टि के तृतीयभाव के देखने के कारण जातक के पराक्रम की बढ़ाता है, परन्तु अष्टमेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी भी लाता है।

'मेव' लग्न की कुष्हली के 'नवममाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

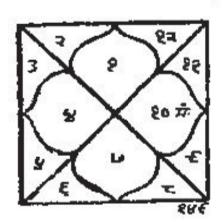
मेष लग्नः नवमभावः मंगल



नवें भाव में मित्र राशिस्य मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति होती है, परन्तु मंगल के अध्यमेश होने के कारण कुछ कठिनाइयों भी आती रहती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से बारहवें भाव को देखने से खर्च की अधिकता तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध रहता है। सातवी मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु मंगल के अध्यमेश भी होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी बाती है। आठवीं नीच दृष्टि से चतुर्थ

भाव को देखने के कारण याता, भूमि, भवन आदि के सुख में कमी बनी रहती है। भवन अपि लग्न की कुष्यली के 'दशमभाव' में स्थित 'मंगल' का फलादेश

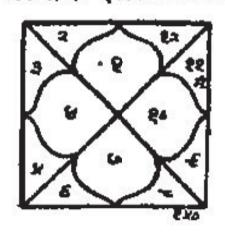
मेव लग्न: दशमभाव: मंगल्



दसवें भाव में शनि को राशि पर स्थित उच्च मंगल के प्रभाव के जातक अपने पिता से शतुता रखता है, परन्तु व्यवसाय एवं राज्य के क्षेत्र में उन्नति करता है। चौथी दृष्टि से स्वक्षेती प्रथम— भाव को देखने के कारण शारीरिक प्रभाव में उन्नति देता है। सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी बाती है। आठवीं मिस्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में जातक को विशेष सफलता प्राप्त होती है।

क्रिव' सम की कुष्यली के 'एकादसभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

'मेष' लान: एकादशभाव: मंगल

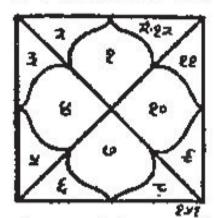


ग्यारहर्वे भाव में शित को राशिस्य मंगल के प्रभाव से जातक की काय में वृद्धि होती रहती है, परन्तु अष्टमेश दोष होने के कारण कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। चौथी दृष्टि से शतु की राशि वाले दितीयभाव में देखने के कारणधन तथा कुटुम्ब सम्बन्धी असन्तीय रहता है। सातवीं दृष्टि से मिलराशि के पचमभाव को देखने से मन्तान तथा विद्या के छोत में कमी बनी रहती है। आठवीं मिलदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शतूपक्ष पर

प्रभाव बढ़ता है तथा जातक बड़ा साहसी होता है।

'बेब' सम्म की कुच्छली के 'द्वादशसाव' स्थित् 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न: द्वादशभाव: मंगल



बारहवे आव में मिल गुरु की गशि पर स्थित संगल के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों में स्थाप करने बाला तथा अत्यधिक खर्च करने बाला होता है। उसके शारीरिक सोंदर्य में भी कमी रहती है।

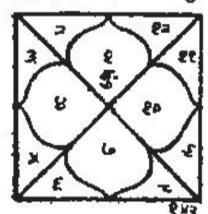
चौषी मित्र दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण जातक पराकमी होता है, परन्तु मंगल के अष्टमेश होने के कारण भाई-बहिनों के सुख से

कभी जा आती है। सातवीं शसुदृष्टि से छठे भाव को देखने के कारण जातक शतू पक्ष में प्रवल रहता है। आठवीं वृष्टि से जुक की राशि वाले सप्तम आव को देखने से स्त्री-सुख में कभी आती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'मेष' सन्त में 'बुध'

'मेव' लग्न की कुष्यली के 'प्रयमधाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लग्न : प्रयमभाव : बुध

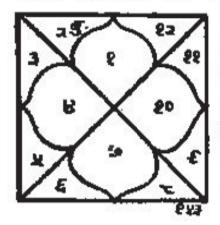


पहले भाव में भित्र राशिस्य सुख के प्रभाव से जातक पुरुषार्थी होता है, परन्तु मुख के बच्छेश दोष के कारण रोग-पोड़ित भी रहता है। इसी कारण भाई-बहिनों के सुख में भी कुछ कभी बा आती है।

सातवीं मिलद्धि से सातवे माय को देखने के कारण व्यवसाय के क्षेत्र में तो पित्रम द्वारा सफलता आप्त होती है, परन्तु स्ती-सूथ में कुछ कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिल पाती है।

'मेष' लग्न की कुच्छली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लग्न : दितीयभाव : बुध दूसरे भाव में मित्र राशिस्थ बुध के प्रमाव से

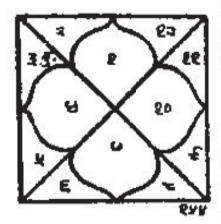


दूसर भाव मामज राशिस्थ बुध के प्रभाव स जातक के धन एवं पुरुषार्थ में वृद्धि तो होती है, परन्तु बुध के अष्टमेश होने के कारण धनप्राप्ति के क्षेत्र में कठिनाइयों तथा हानि का सामना भी करना पड़ता है। बुध के तृतीयेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में भी कमी जा जाती है।

सातवीं मिलदृष्टि से अष्टमभाव की देखने के कारण जातक की बायु में वृद्धि होती है तथा उसे पुरातस्य सम्बन्धी लाग भी होते हैं।

'मेव' सान की कुम्बसी के 'तृतीयमाव' स्थित 'बुम' का फसावेश

भेषसम्न : तृतीयभाव: बुध

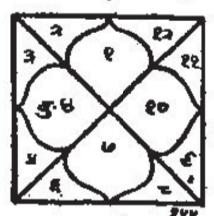


तीसरे भाव में स्वराशिस्थ दुध के प्रभाव से जातक अत्यन्त पराक्रमी तथा हिम्मती होता है, परन्तु क्टेंश होने के कारण जहाँ सञ्जुओं पर विजय दिलाता है, बहुरै भाई-बहिन के सुख में कभी भी के आता है !

सातवीं मिलवृष्टि से नवसभाक को देखने के कारण जातक अपने ही पराक्रम से भाग्य की वृद्धि करता है सया कुछ कभी के साथ धर्म-पालन की ओर भी प्रेरित करता रहेगा। ऐसी यह स्थिति वाला जातक विवेकी. परिश्रमी सथा पराक्रमी होता है।

'बेच' सम्त की कुच्डली के 'चतुर्वभाव' स्थित 'बुव' का फलादेश

मेषसग्न : चतुर्थमाव : ,बुध

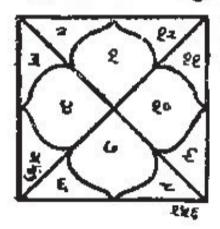


शीयेभाव में शतु चन्द्रमा की राजि पर स्थित सुख के प्रभाव से जातक की मातर, भूमि, अपन तथा सुख के पक्ष में कुछ कमियाँ बनी रहती हैं।

सातवीं मित्रवृष्टि से नवमभाव की देखने के कारण जातक की पिता एवं राज्य पक्ष द्वारा सम्मान दवा सफलतायें मिलती हैं। ऐसी खह स्थिति का जातक बगस्त्री होता है तथा प्रत्येक केंद्र में कुछ परेशानियों के बाद ही सफसता प्राप्त करता है।

'मेव' सम्त की कुण्डली के 'यंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलावेश

मेषलग्तः : पश्चनभावः बुध

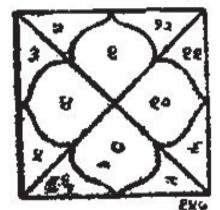


पौचवें भाव में मित्रराशिस्थ बुध के प्रभाव से जातक अपने विशेष परिश्रम् द्वारा विद्या, बुद्धि एनं सन्तान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है, क्योंकि बुध में स्थानाधिपति दोष है।

सातवी मिलदृष्टि से ग्यारहवें भाव की देखने के कारण जातक अपने बुद्धि-विवेश द्वारा भाग्य तथा आय की वृद्धि करता है। बुध के पष्ठण होने के कारण जातक की शतुपक्ष में भी सफलता मिलती रहनों है।

'मेख' लग्न की कुण्डली के 'यष्टमाय' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेप लग्न : एप्ठभाव : बुध



छडे भाव में स्वक्षेत्री तथा उच्च के बुध के प्रपाद से जातक अपने शतुओं पर अत्यधिक प्रभाव रखने बाला तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा बड़े-खड़े काम कर दिखाने बाला होता है।

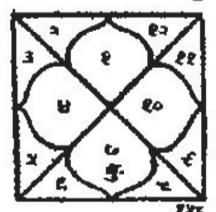
सुध के पराक्रमेश के माय पर्छेण भी होने के कारण भाई-बहिनों से कुछ विरोध रहना है तथा अपने पराक्रम के बारे में भी कुछ आन्तरिक कमी का अनुभव करता रहता है।

सातवीं नीच दृष्टि से द्वादणभाव की देखने के

कारण जातक को खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों में कुछ हानियाँ भी उठानी पड़ती है।

'मेव' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न । सप्तमभाव : सुध

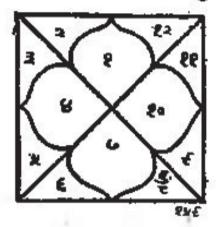


सातवें भाव में मित्र शुक्र की गाँग पर स्थित बुध के प्रमान में जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय में सफलता पाता है, परन्तु पष्टेंग होने के कारण स्त्री-पक्ष में कठिनाइयां आती रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से मिल मंगल की गाँण वाले प्रथमभाव की देखने के कारण जातक को मामान्य सारीरिक कष्ट तथा रोगों का णिकार भी जनाना है। साई-बहिन के द्वारा जातक को सहयोग मिलना गहना है। तथा विवेक-बुद्धि भी प्रवस रहती है।

'मेक' लग्न की कुष्मली के 'अव्हमन्नाब' स्थित 'बुख' का फलादेश

मेषलग्न : अष्टमभाव : बुध

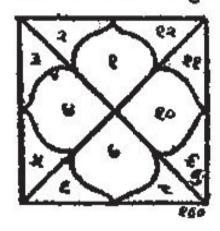


आठवें भाव में मित्र मंगल की राशि में स्थित तृतीयेश एवं षष्ठेश बुध के प्रभाव से जातक को पराक्रम, आयु तथा पुरातस्य के सम्बन्ध में कठिनाइयां आती हैं तथा सनुपक्ष से हानि पहुँचने की संभावना भी रहती है।

सातवीं मिन्नवृष्टि से बुध द्वितीयभाव से देखता है, अतः जातक को धन उपाजित करने के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है। कुल मिलाकर ऐसी ग्रह स्थिति के जातक का जीवन संघषेपूर्ण रहता है।

'मेव' लग्न की कुण्डली के 'नवमनाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : नवमभाव : बुध

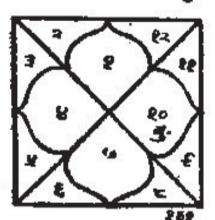


नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित पष्ठेश बुध के कारण जातक की भाग्य-पक्ष में कंठिनाइयों का अनुभव होता है, परन्तु सनुपक्ष के सम्बन्ध से भाग्यवृद्धि में सफलता भी मिलती है।

सातवीं दृष्टि से बुध स्वराशि में तृतीयमाव को देखता है, अतः जातक का पराक्रम बढ़ा रहता है और उसे स्व-विवेक तथा भाई-बहिनों द्वारा लाभ प्राप्त होता रहता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक कुछ परेशानियों के साथ ही उन्नति कर पाता है।

'भेव' लम्ब की कुष्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुख' का फलादेश

सेषलग्न : दशमभाव : बुध

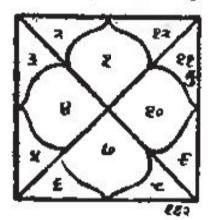


दसर्वे भाव में मिल शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने पराक्रम तथा पुरुषार्थ द्वारा अत्यधिक उन्नति करता है, परन्तु बुध के षष्ठेश होते के कारण पिता से कुछ वैमनस्य भी रहता है। राज्यपक्ष में सम्भान तथा सनुपक्ष में सफलता प्राप्त होती है।

सातवीं शतू दृष्टि से बुध चन्द्रमा की राशि के चीचे भाव की देखता है, अतः माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी ला देता है।

'मेव' सक की कुवली में 'एकादराभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लब्न : एकादशमाव : बुध

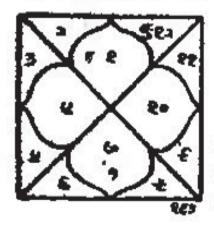


ग्यारहवें भाव में मिल राणि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम एवं बुद्धि-विवेक द्वारा आय के केंव में अत्यधिक मफलता प्राप्त करता है। उसे भाई-वहिन का लाभ भी मिलता है, परन्तु परठेश होने के कारण कुछ कठिनाइयां भी आती है।

सातवी मित्रदृष्टि में पंचमभावकी देखने के कारण विद्या के क्षेत्र में सफलता देता है तथा कुछ कठि-नाइयों के साथ सन्तान पक्ष में भी मुख दिलाता है।

'मेव' तम की कुष्डली के 'द्वादशमाव' स्थित 'कुक्ष' का फलादेश

मेष लग्न : द्वादशभाव : गुरु



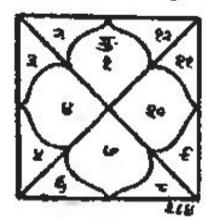
बारहवें भाव में मित्र गुरु को राशि पर स्थित पष्ठेश बुध के प्रभाव से जातक को खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों के विषय में कठिनाइयों का मामना करना पड़ता है एवं भाई-बहिन के सुख में भी न्यूनता आती है।

सातनीं उञ्चदृष्टि से बुध अपनी राणि वाले पष्ठ-भाव को देखता है बतः जातक स्व-विवेक द्वारा शतुपक्ष परसफ्तवता पाने में समये होता है तथा गुप्त बुक्तिमों एवं धैयं से काम सेने वाला भी होता है।

'सेष' लग्न में 'गुरु'

'मेव' सम्म की कुष्डली के 'प्रयमशाब' स्थित 'गुब' क्रा फ्रलादेश

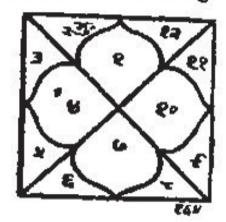
मेव लग्न : प्रथमभाव : गुरु



पहले याव में मिल मंगल की राजि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अत्यधिक यण, उन्नति एवं बाह्य-स्थानों से प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। पौचवीं मिलदृष्टि से गुरु पंचमभाव को देखता है नचा जातक शतु विद्वान्, बुद्धिमान सचा सन्ततिवान होता है। सातवीं शतुदृष्टि से मुन्तममान को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयीं आती है। तथीं दृष्टि से स्वराणि वासे नवमभाव की देखने के कारण जातक के भाग्य एवं धर्म में वृद्धि होती है।

'मेव' की कुष्टली के 'द्वितीयभाव' स्पित 'गुद' का फलादेश

मेव लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

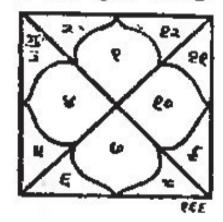


दूसरे भाव में शतू गुक की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातर वाह्य-स्थानों के सम्पर्क से घन एवं भाग्य की वृद्धि करता है, परन्तु कभी-कभी हानि भी उठानी पड़ती है। पौचवीं शतुद्धि के पष्ठमाव की देखता है, अतः शतुपक्ष में श्रुद्धिमानी से सफलता प्राप्त होती है। सातवीं मिलद्धि से अष्टमभाव की देखने के कारण जातक की पुरा-तस्य एवं आयु का लाभ होता है। दवीं दृष्टि से शनि की राशि वाले दशमभाव की देखने के कारण

पिता एवं राज्य के पक्ष में कठिनाइयाँ आती है।

'मेव' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुड' का फलादेश

भेष लग्नः सृतीयभावः गुरु

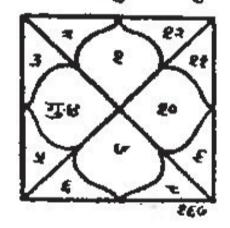


तीसरे भाव में अपने मिल बुध की राजि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की पराक्रम तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। पाँचवीं शतुं दृष्टि-से सप्तमभाव की देवने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र से कठिनाइयां जाती हैं। सातवीं दृष्टि से स्व-राजि बाले नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होतीं है। तवीं दृष्टि से शतु शनि की राजि बाले ग्यारहवें भाव को देखने के कारण जातक

की आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं।

'मेव' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थमाव' स्थित 'गुव' का फलादेश

मेष लग्न : चतुर्षभाव : गुरु

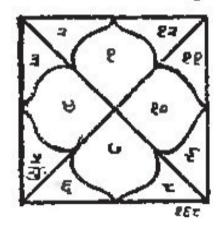


कीये भाव में मिल चन्द्रमा की रामि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की माता, भूमि, भवन आदि का पर्याप्त सुख मिलता है। पौचनीं मिल दृष्टि से अष्ट्रमभाव की देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। सातवीं नीच दृष्टि से दणमभाव को देखने से पिता एवं राज्य सुख में कभी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराणि वाले हादमभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों से अच्छा सम्बन्ध रहता है, परन्तु क्यय की अधिकता

रहती है। ऐसा जातक धनी, सम्पत्तिवान, दीर्घायु तथा खर्चीसा होता है।

मेव' लान की कुण्डली के 'पंचममाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेव लग्न : पंचमभाव : गुरु

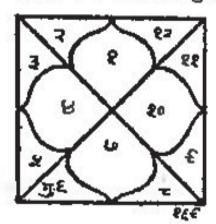


प्रविष्ठें भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित
गुरु के प्रभाव से जातक विद्वान्, बुद्धिमान तथा
सन्तिवान होता है। पांचवीं दृष्टि से स्वराशि वाले
नवें भाव को देखता है बतः जातक के धाग्य की
बृद्धि होती रहती है। सातवी अवुदृष्टि मे एकादमे
भाव को देखने के कारण जातक की आमदनी के क्षेत्र
में कभी-कभी कठिनाउया आती रहती हैं। नवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक का अरीर
नुन्दर तथा स्वस्थ बना- रहता है। ऐसी ग्रह स्थित

का जातक विद्वान्, बुद्धिमान, धर्मात्मा तथा आकर्षक व्यक्तित्व बाला होता है।

'मेव' सान को कुण्डसी के 'बण्डमाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

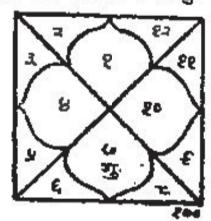
भेष लग्न: पष्ठभाव: गुरु



छठे भाव में अपने मिल गुरु की राणि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शतुपक्ष में सफलना मिलती है तथा कुछ रकावटों के साथ भाग्योन्निन भी होती है। पाँचवीं नीचदृष्टि से दणसभाव को देखने से पिता एवं राज्य-सम्बन्ध में कभी आती है। सानवी दृष्टि से द्वादण-भाव को स्वराणि में देखने के कारण व्यय को अधिकता रहती है तथा बाहरी सबधों से सफलता मिलती है। नवीं शतुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण कुटुम्ब से मतमेंद रहता है तथा धन-प्राप्त में कठिनाइयों आती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सन्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेव लग्न : मुप्तमभाव : गुरु

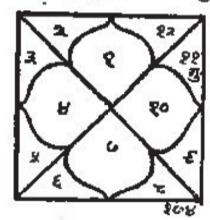


सातवें भाव में शबू गुक्त की राणि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवमाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। पाँचवीं शबुद्धित से एका-दशभाव की देखने के कारण आमदनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं। सातवीं मित्रदृध्दि से लग्न को देखने के कारण जातक का शरीर सुन्दर तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। उनीं मित्रदृष्टि से ठृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहुन तथा पराक्रम का यक्ष

अच्छा बना रहता है।

'मेव' लान की कुण्डली के 'एकादशमाव' स्थित 'गुर' का फलादेश

मेय लग्न । एकादशमाव : गुरु

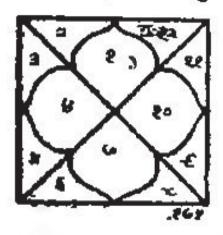


स्थारहवें साव से शतु शित को राणि पर स्थित भाग्येश गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्तित में कुछ कभी बनी रहती है। पांचवी मित्रदृष्टि से गुरु तृतीयभाव को देखता है, परन्तु व्यथेश होने के कारण भाई तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी बृटिपूर्ण सफलता देता है। मानवीं भिनदृष्टि में पचमभाव को देखने के कारण विश्वा, बुद्धि एवं संतान पक्ष का सहयोग मिलना है। नवीं शतुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्वी नथा व्यवमाय के

क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ ही सफलता मिलती है।

'मेव' सभ्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेव लग्नः द्वादशभावः गुरु



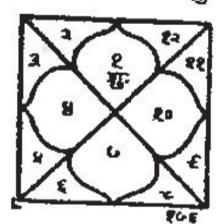
वारहवें भाव में स्वराणि स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी-स्थानों से लाभ भी होता है। पांचवीं मिलदृष्टि से गुरु चतुर्थ-भाव को देखता है, अतः जानक को माना, भूमि एव भवन का सुख प्राप्त होता है। मातवीं मिलदृष्टि से पष्टभाव को देखता है, अतः शतुरक्ष में जातक अपनी समझदारी से सफलता प्राप्त करता है। नदीं मिलदृष्ति से अप्टमभाव को देखने के कारण जातक के आयु नथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी सफलना मिलती है। ऐसी

स्थिति का भारक हुरक्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ ही सफलना पाता है।

'मेष' लग्न में 'शुक्र'

'भेव'- सभ्य की कुष्पक्षी के 'प्रथमश्राव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

भेष लग्नः प्रयममानः सुक

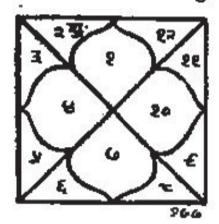


पहले भाव में मानु मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रमाथ से जातक सुन्दर शरीर वाला, सम्मानित, बलिष्ठ तथा चतुर होता है।

सातवीं दृष्टि के शुक्र स्वराणि वाले सप्तम भाव को देखता है, अतः आतकको स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में की सफसताएँ मिलती हैं परन्तु शुक्र के खनेश होने के कारण व्यवसाय तथा कुट्रम्य के पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

'नेव' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्पित 'शुक्र' का फलादेश

मेव लग्न : द्वितीयभाष : शुक्र

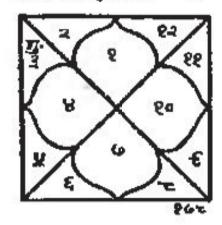


दूसरे भाव में स्वराणि स्थित गुक के प्रमान से जातक धनी, कुटुम्बवान तथा सीभाग्यशाली होता है, परन्तु गुक के बन्धनेश के साथ सप्तमेश भी होने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठि-नाइयाँ भी आती हैं।

सातवीं शतुद्धि से शुक्र अष्टममान को देखता है, अतः जातक को स्वयोग्यता के कारण ही आयु तया पुरातत्त्व का खाभ मिलता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी तथा ऐक्वर्यशाली होता है।

'मेव' लात की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेव लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

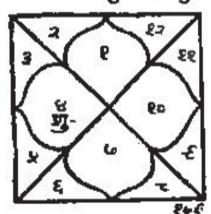


तीसरे भाव में मिल बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम, चातुर्य, साहस एवं माई-बहिनों की वृद्धि होती है, परम्तु सप्तमेश होने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं।

सातवीं समद्घिट से नवमभाव .को देखने के कारण जातक माग्यवान तथा धर्मात्मा भी होता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली, धार्मिक, पराक्रमी, धनी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने बाला होता है।

'येव' सम्म की कुण्डली के 'बतुर्यमाव' स्पित 'शुक्र' का फलादेश

मेथ लग्न : चतुर्यमाव:शुक्र

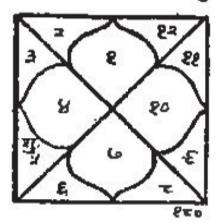


भीयभाव में शतु चन्द्रमा की राभि पर स्थित भुक के प्रभाव से आतक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कभी रहती है, परन्तु भुक के द्वितीयेश तथा केन्द्रस्थ होने के कारण धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता रहता है। इसी प्रकार स्त्री तथा व्यवसाय के सुख में भी कुछ न्यूनता बनी रहती है।

सातवीं मिल्नवृष्टि से दशमभाव की देखने के कारण जातक की राज्य तथा पिता के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उन्नित होती है।

'मेव' लान की कुण्डली के 'यंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेव लग्न : पंचमभाव : शुक्र

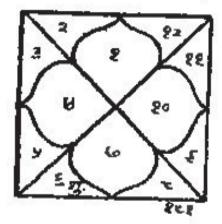


परिवर्षे भाव से शतू सूर्य की राशि में जिक्कोणस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के लाभ सफलना मिलती है।

सातवीं मित्र दृष्टि से एकारणभाव की देखने के कारण जातक की आमदनी अच्छी घनी रहती है। संक्षेप में इस ग्रह स्थिति का जातक विद्वान, भवतियान, सुखी, धनवान तथा भाग्यशाली होता है।

'मेव' सान की कुण्डली के 'बष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेध लग्न : पष्ठभाव : गुक

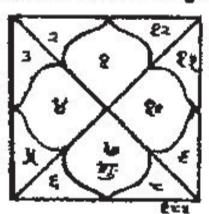


छठे भाव में मित्र गुरु को राशि पर नीचन्य शुक्र के प्रमान से जातक शत्रु क्षेत्र में गुप्त-चानुर्य में काम खेता है तथा कठिनाइयों का जिकार बनता है।

सातवीं शतुद्धि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक के खर्च में अधिकता खनी गहती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में सफलना मिलनी है। गृंसी ग्रह स्थिति से जातक को जीवन के प्रन्येक क्षेत्र में परेशानियाँ उठानी पडती हैं तथा सफलना पाने के दिए बुद्धि-बल का अधिक प्रयोग करना पड़ना है।

भिष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक' का फलादेश

भेप लग्न:सप्तमभाव:शुक

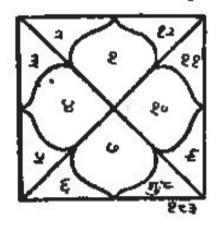


सातवें भाव में केन्द्रस्थ म्बक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से आतक को स्त्री तथा व्यवसाय के पश्च में विकेप सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से लग्न की देखने के कारण जानत सुन्दर, कार्यकुशल, आरीरिक दृष्टि से पुष्ट नथा प्रतिष्ठित भी होता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति दाला जातक सुखी, प्रतिष्ठित, हो नियार तथा स्त्री, धन कुटुस्व अदि के मुख से भरा-पूरा रहता है।

'मेच' सम्म की कुण्डली के 'अष्टमसाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्नः अष्टममावः शुक्र

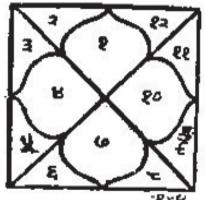


आठवें भाव में शतु मंगल की राशि पर स्थित दितीयेश तया सप्तमेश शतु के प्रभाव से जातक को धन, कुटुम्ब, स्त्री तया व्यथमाय के श्रेत में अत्यन्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक कठिन परिश्रम द्वारा छन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है तथा अपने चातुर्य द्वारा प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है।

भिष' लाग की कुष्डली के 'मयमभाव' स्थित 'शुक' का फलादेश

मेव सम्न : नवमभाव : शुक



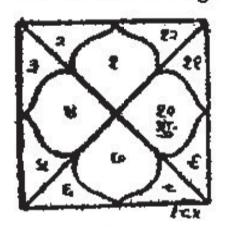
नवें भाव में शतु गुरु की राशि पर विकोणस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक भाग्यवान तथा चतुर होता है, साथ ही उसे स्त्री तथा कुटुम्ब का अञ्छा सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का अञ्छा सुख भी मिलता है।

श्टिं संक्षेप में, ऐसी ग्रह-स्थित बाला जातक सुखी, धनी, भाग्यवान, धर्मात्मा, पराक्रमी तथा भाई-बहिनों के सुख से युक्त होता है।

'मेख' सम्म की कुष्डली के 'दशमप्राव' स्पित 'शुक्र' का फलादेश

मेव लग्न : दशमभाव : शुक्र



दसर्वे भाव में मित्र शनिकी राक्षि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता एवं राज्य क्षेत्र से सुख प्राप्त होता है।

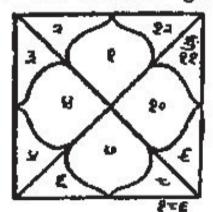
सातवीं शतुद्धि से केन्द्रस्य शुक्र द्वारा धतुर्थ-भाव की देखने से जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है।

संक्षेप में ऐसी ग्रह स्थिति बाला आतक धनी, सुखी, राज्य द्वारा सम्मानित, माता, पिता तथा स्त्री

के सुन्न की पाने वाका, यशस्वी तथा परम चतुर होता है।

'मेव' लग्न की कुण्डली के 'एकादशमाव' में स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष सन्तः एकादशभावः शुक्र

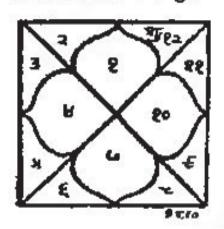


ग्यारहवें भाव में मिल शनि की राशि पर स्थित शब्दमेश तथा इतीयेश शुक्र के प्रभाव से जातक अपने चातुर्य द्वारा खूब लाभ कमाता है तथा सनी होता है। उसे स्त्री एवं व्यवसाय द्वारा भी सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं शतु दृष्टि से पचमभाव को देखने के कारण जातक को विचा, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में बड़ी चतुराई के साथ सफलना मिलती है।

संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक वती, सुखी, चतुर तथा स्वार्थी होता है। 'मेव' लग्न की कुण्डली के 'द्रादशमाव' में स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेथ लग्नः द्वादशभावः मुक



बारहवें भाव में अपने सामान्य शतु शुरु की राणि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक बाहरी संस्थनमें द्वारा बड़ी चतुराई से धन तथा यश प्राप्त करता है तथा बहुत खर्जीला भी होता है।

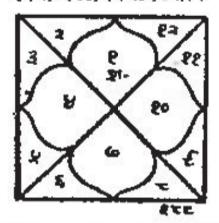
सातवीं नीच दृष्टि से मित्र राशि क पष्ठ-भाव को देखने के कारण जातक शतु पक्ष में छल-छिद्र एवं भेद युक्ति से खाभ निकालता है तथा शतुओं द्वारा कुछ हानि भी जठाता है। संक्षेप में

ऐसी ग्रह स्थिति का जातक समर्थ-पूर्ण सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

'मेष' लग्न में 'शनि'

"मेव' लात की कुण्डली के 'प्रयममाव' स्थित 'शनि' का फलावेश

मेव लग्न : प्रथमभाव : शनि



पहले भाव में शतू मंगल की राशि पर निवत शनि के प्रमान से जानक के भारीरिक सौन्दर्य तथा मान-प्रतिष्ठा में कभी रहती है तथा राज्य के क्षेत्र में भी कठिमाइयाँ उत्पन्न होती हैं। तीसरी मित्रदृष्टि तृतीयभाव पर पड़ने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों की वृद्धि होती है, सातवीं मित्रदृष्टि सप्तमभाव पर पड़ने से स्त्री यथा व्यवसाय प्रका में सफलता देता है तथा दसवीं युष्टि से स्वरािक

वाले दनमभाव को देवने के कारण राज्य तथा मित्र के शेव में प्रतिष्ठा की वृद्धि भी करता है।

'नेव' सप्त की कुथ्बली के 'ब्रितीयबाब' स्थित 'शनि' का फलादेश

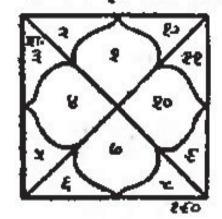
मेष लग्न : द्वितीयभाव : स्ति

दूसरे माद में मित्र मुक्त की राशि पर स्थित मित्र के प्रभाव से जातक अनी तथा कुटुम्बवान होता है। तीसरी मातुद्दि से चतुर्यमाय की देखने के कारण माता, भूमि एवं भवन से सुख में कुछ कमी आती है। सासवीं मातुद्दि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातस्व का लाभ होने पर भी जातक को खशान्तियों का सामना करना पड़ता है। दसवीं दृष्टि से स्वराणि वाले एकादम-भाव को देखने से जातक की आयु में वृद्धि होती है।

संक्षेप में ऐसी ग्रह स्थिति काथा जातक धनी तथा ऐस्वयंवान होता है।

'बेब' सत्त की कुण्डली के 'तृतीयभाष' स्थित 'शनि' का कलादेश

'मेत्त' सम्नः तृतीयभावः शनि

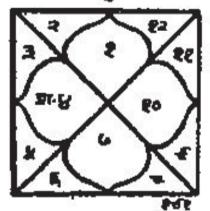


तीसरे माद में मित्र मुध की राशि पर स्थितं दशमेश तथा एकादसेश मनि के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ता है प्रमा भाई-बहिनों के सुख में बृद्धि होती है। साथ ही पिता, राज्य द्वारा सहयोग मिलता है। तीसरी मृत्र दृष्टि से पंत्रमभाव को देखने से बिखा तथा सन्तान पक्ष में कभी रहती है। सातवीं मृत्र पृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कठिनाइयाँ वाती हैं तथा दसनी भन्नदृष्टि से द्वादशमाव को देखने से कारण खर्म अधिक होता है

तथा बाहरी स्थान के सम्बन्ध भी असन्तोषजनक रहते हैं।

क्षेत्र' सन्त की कुण्डली के 'बतुर्यक्राव' स्थित 'शर्ति' का कलादेश

मेष सन्त: चतुर्यमाव: प्रति

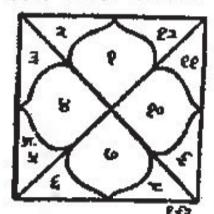


वीयेशव में शत् बन्द्रमा की राशि पर स्थित गति के प्रभाव से जातक को गाता तथा भूमि-अवन के सामनों में कुछ कभी रहती है, परन्तु सुख में बृद्धि होती है। तीसरी मित्रवृष्टि से घष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष से लाभ होता है तथा शतुओं पर प्रभाव बना रहता है। सातनीं पृष्टि स्वराधि वाले दश्यभाव में पड़ने से पिता राज्य व्यवसाय एवं सामान के क्षेत्र में बृद्धि होती रहती है। दसवीं नीचदृष्टि से सन्त करे

देखने के कारण जातक के जारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा वह जिन्ताओं का मी कुछ शिकार बना रहता है।

भीव' सरन की कुथ्हली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि का फलावेश

मेष लग्तः पंचमभावः शनि

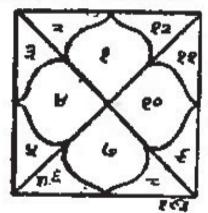


पाँचवें भाव में शवु सूर्य की राशि पर स्थित विकोणस्थ शनि के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान पक्ष से मतभेद रहता है। तीसरी उच्चदृष्टि से मित्रराशि से सप्तभाव की देखने के कारण व्यवसाय एवं स्त्री पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले एकादशभाव की देखने से आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है तथा राज्य एवं पिता से भी लाभ

होता है। इसवी मिलद्ष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब का भी खूब लाभ होता है।

भिव' सान की कुण्डली के 'बक्ठमाव' स्थित 'शर्नि' का फलादेश

मेष सम्न : षष्ठभाव : प्रनि

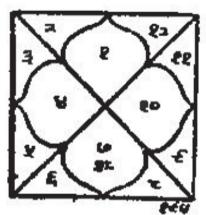


छठेशाव में मिल बुध की राशि पर स्थित दशमेश तथा एकादशेश शिन से प्रभाव से जातक की पिता के साथ बैमनस्य रहता है तथा राज्य पक्ष में कठिनाई से सफलता मिलती है। परन्तु आमदनी अच्छी रहती है तथा शतुओं पर विजय मी मिलती है। तीसरी शञ्चदृष्टि से अप्टमशाव को देवने में आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में- कठिनाइयों में मफलना मिलती है। सातवीं शजूदृष्टि से द्वादणभाव को देवने के कारण सम् अधिक होना है तथा बाहरी संबंधों

से असन्तोष रहता है। दसवीं मिलद्ष्टि से तृतीयभाव की देखने से कारण पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। ऐसा जातक वड़ा हिम्मती तथा प्रभावी होता है।

भव' सान की कुण्डसी के 'सप्तमभाव' स्थित 'सनि' का फलाडेक

मेप लग्न: सप्तममाव: शनि सातवें भाव में मिल्र शुक्त की राशि पर स्थित

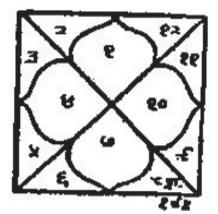


दशमेश तथा एकादमेश शनि के प्रभाव से जातक को व्यवसाय एवं स्त्रो-पक्ष में विशेष सफलता मिलतो है। पिता तथा राज्य से बहुत लाभ होता है। तीसरी शतु-वृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण याय्योत्निति में कुछ कठिनाइयां जाती हैं। सातवीं नीचदृष्टि से शतु मंगल की राशि वाले प्रथमभाव की देखने से जातक के सारीरिक सौन्दर्य में कभी जाती है। दसवीं शतुदृष्टि से चतुर्यमाव की देखने से माता, मूमि एवं भवन के क्षेत्र मे कुछ असन्तोप

रहता है तया बरेशू सुकों में भी कमी वाती है।

'मेव' संग्न करे कुक्बली के 'अव्हमभाव' स्थित 'शर्वि' का फलादेश

मेष लग्न : खष्टमभाव : शनि

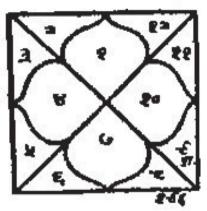


आठवें भाव में शतू मंगल की राशि पर स्थित एकादसेश शिन से प्रभाव से जातक को पुरातत्व एवं आयु का तो लाभ होता है, परन्तु आगवनी के क्षेत्र में कमी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि वासे दशम भाव की देखने के कारण राज्य तथा पिता-पद्म से अल्प लाभ होता है। सातवीं मिलवृष्टि से दितीयभाव की देखने से कठिम परिक्षम द्वारा धन एवं कुटुम्ब के किस में सफलता मिलती है। दसवीं शतूवृष्टि से पंचमभाव की

देखने के कारण विश्वा तथा सन्तान पक्ष में सुटि रहती है। ऐसा जासक खबान का तेज तथा कोशी भी होता है।

क्रिय' सम्भ की कुकाली के 'जवमधाव' स्थित 'शनि' का फलावेश

मेषसग्न : मवमभाव : शनि

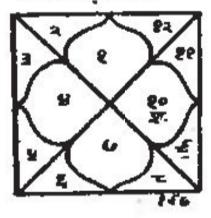


नवें भाव में शतु बुध की राजि में स्थित शनि के ध्रमाय से जातक के ध्रम्य की आरम्थ में कम तथा बाद में विशेष उन्नति होती है। धर्म का पालन भी कम ही होता है। पिता तथा राज्य द्वारा नाम मिलना है। तीसरी दृष्टि से स्वराधि बासे ग्यारहवें धाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है स्था ऐस्वयं की प्राप्ति भी होती है। सातवीं मिल्रवृष्टि से सुतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि के साथ भाई-बहिनों का सुख भी मिलना है तथा दसवीं मिल्रवृष्टि से चच्छमाव की देखने के

के कारण शतु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है। संक्षेप, ऐसी ग्रह स्थिति का जातक शतुज्यी, यशस्त्री तथा धनी होता है।

'सेथ' साम की कुण्डली के 'बसममाब' स्थित शनि का फलावेश

मेषलम्न : दशमभाव : शनि



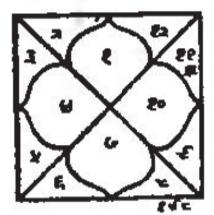
जातक पिता तथा राज्य हारा विशेष शान्ति तथा साम प्राप्त करता है। तीसरी शत्नुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी-स्वानों के संबंध असंतोषजनक रहते हैं। सातबीं सतुदृष्टि से चतुर्यभाव को देखने के कारण माता, भूमि, भवन के सुख में कमी रहती है सथायसवीं उच्चदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलती है। संक्षेप में ऐसा जादक ऐक्वर्यवान, विलासी तथा सुबी

दसर्वेमाव में स्वराशिस्य शनि के प्रभाव से

जीवन विदाने वाला होता है !

'बेब' साम को कुथ्हली के 'एकावशयाव' स्थित 'शर्नि' का फलादेश

चेषसम्म : एकादसभाव : शनि

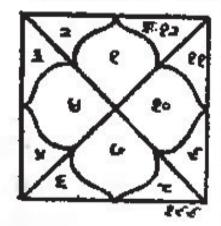


ग्यारहवें भाव में स्वराशि स्थित दशमेश शिन से प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है। उसे पिता तथा राज्य द्वारा भी यथेष्ट लाभ मिलता है। तीसरी नीचदृष्टि से शतु की राशि दाले प्रथमभाव को देखने से जातक से शारीरिक सौन्दर्य में कभी रहती है। सातवीं शतुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या तथा संतान पक्ष में भी खुटि धनी रहती है। दसवीं शतुदृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु की वृद्धि तो होती है, परन्तु प्रातस्य का सामान्य लाभ होता है एवं दैनिक

भीवन में कठिनाइयां भी वाती रहती हैं।

भियं स्तरन की कुण्डली के 'द्वादशमाद' स्थित 'शर्जि' का फलावेश

येषलम्नः द्वादशभावः शनि



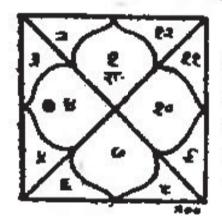
बारहवें भाव में शतु बुध की राणि पर स्थित मिन से प्रभाव से आतक का खर्च अत्यिक्षक होता है तथा बाहरी स्थानों, पिता एवं राज्य के पक्ष से भी हानि उठानी पड़ती है। तीसरी मिलद्ष्टि से द्वितीयभाव से देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। सातवीं मिलद्ष्टि से छठेभाव को देखने से जलुपक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा दसवीं शलुद्षिट से नवमभाव की देखने के कारण भाग्योन्नति में शी बड़ी कठिनाइयों खाती हैं तथा विशेष परिश्रम द्वारा

योड़ी ही सफलता मित्र पाती है।

'मेव' सग्न में 'राहु'

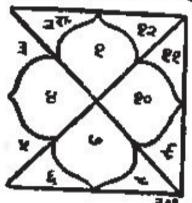
'बेब' साम को कुथ्बली के 'प्रवमकाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

मेच लग्न : प्रचमभाव : राह



यहले भाव में शतू अंगल करे राणि पर स्थित राष्ट्र के प्रभाव से जातक से शारी रिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। हृदय में विभिन्न प्रकार को चिन्तायें भी बनी रहती हैं। ऐसा जातक ब्रूठ, फरेब तथा गुप्त युक्तियों का वाक्षय नेने बाला तथा बड़ा हिम्मती होता है। 'मेव' सम्म की कुण्डली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'राष्ट्र' का कलादेश

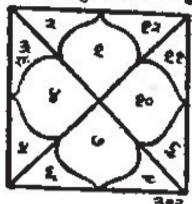
भेषलग्न : द्वितीयभाव : राहु



दूसरे भाव में मित्र शुक्त की राणि पर स्वित राष्ट्र के प्रभाव से जातक झन सम्बन्धी चिन्ताओं तथा अनेक प्रकार से संकटों से प्रस्त बना रहता है। कौटुम्बिक क्लेश भी भोगने पड़ते हैं। परन्तु बारम्बार हानि उठाकर भी जातक अन्त में अपने पुक्तिबल से झनी छातिपूर्ति करने में समर्थ हो जाता. है तथा समाज में झनी व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित भी होता है।

'मेव' सम्म की कुम्हली के 'तृतीयसाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

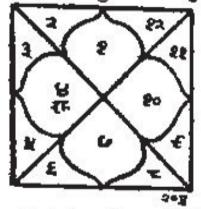
नेपलग्न : तृतीयभाव : राहु



तीसरे भाव में उच्चस्थ राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा उसे भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। ऐसी ग्रह स्थिति वासा जातक बड़ा हिम्मती, साहसी, ग्रुक्तिबल में प्रवीण तथा अपनी भीतरी कमजोरी की प्रकट ने करने वाला होता है और अपने इन्हीं गुणों के कारण संफलता भी प्राप्त करता है।

भिष' सान की कुण्डली के 'खतुर्वभाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

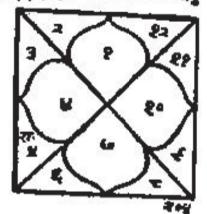
मेषलग्न : चतुर्यभाव : राहु



चौषेपाय में शतुराजिस्य राहु से प्रभाव से जातक को साता, भूमि तथा अवन के सुख में कमी का शिकार होना पड़ता है। घरेलू शान्ति भी नहीं रहती। वह मानसिक-अशान्तियों का शिकार बना रहता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय तेकर भी अधिक सफल नहीं ही पाता।

क्रिव' संग्न की कुण्डली से 'पंचनमाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

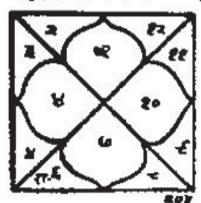
मेवसन्तः यंचमभावः राष्ट



पौचवेंभाव में शबू सूर्य को राणि पर स्थित राष्ट्र के प्रमाव से जातक की विद्या के केंब्र में बड़ी कठिनाइयों के बाद भी थोड़ी ही सफलता मित्र पाती है। उसे सन्तान पक्ष से भी कष्ट होता है। परन्तु अपनी गुप्त मुक्तियों से बल पर वह सामान्य सफलतायें प्राप्त करता रहता है। ऐसा जातक कम पढ़ा-लिखा तथा परेशानियों में फँसा रहने बाला होता है।

'शव' सान को कुष्यती के 'वष्ठमाथ' स्थित 'राहु' का फलादेश

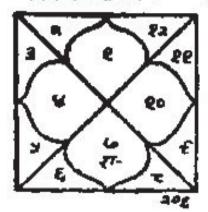
शेषस्यन : पष्ठभाव : राह



छठेभाव में भित्र बुध को राशि पर १ थत राहु के प्रभाव से जातक अपने शाबु-पक्ष में हिम्मत, बहादुरी तथा गुप्त युक्तियों से काम लेकर प्रभाव स्थापित करता है तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपने धैये को नहीं छोड़ता। ऐसा व्यक्ति बारम्बार मुसीबतो का शिकार बनता रहता है, परन्तु अपने साहस एवं धैयं के बन पर उन सब पर विश्वय भी पाता रहता है।

क्रिव' सम्ब की कुंडली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राह्न' का फलादेश

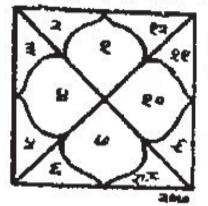
भेषलग्न : सप्तमभाव : राहु



सातवें भाव में अपने भित्न शुक्त की राशि पर स्थित राष्ट्र के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष मे चिन्ता एवं कप्टों का शिकार होता है, परन्तु अपनी गुप्त-पुक्तियों के बल पर उन कठिनाइयों का निराकरण करता है। व्यक्ति के पारिवारिक-जीवन में अनेर कठिनाइयां आती है तथा जैसे-रीसे ही निर्दाह हो पाना है।

भीव' साम की कुंडली के 'अव्हमभाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

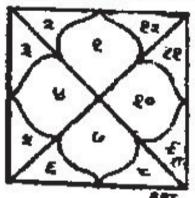
भेषलग्न : अष्टनभाव : राहु



आठवें भाव से भानु संगल की जाणि पर स्थित राहु के प्रभाव से आतक की जीवन में अनेक बार मृत्यु-नुत्य कप्टों का जिकार होना पड़ता है। एक के बाद दूसरी मुसीबते घेरे रहती है तथा पुरानन्य विषयक हानि भी उठानी पड़ती है। वह गुप्त-मुक्तियों का आध्य लेना है, फिर भी उसकी जिन्ताओं एवं परेमानियों का अन्त नहीं हो पाता।

'भेव' लग्न को कुंबली के 'जनममाब' स्थित 'राहु' का फलादेश

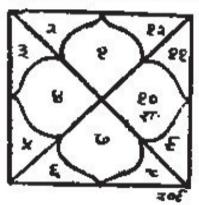
भेषलग्न : नवसभाव : गह



नवेंभाव में भव गुरु की गांग पर निधन नीच के राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योग्नित में अनेक इंडिनाइयां उपस्थित होती गहती हैं। धमें पालन में मी अक्षा नहीं गहती। उसे बाग्यवार अपयण, फल्ट, निरामा एवं असम्मान का सामना करना पहला है नचा आधिष्क दृष्ट उठाते गहने के बावजूद भी बहुत कम सफलनावें मिन पाती हैं।

'नव' साम की कुँडली के 'बशमधाब' स्थित 'राह्न' का फलादेश

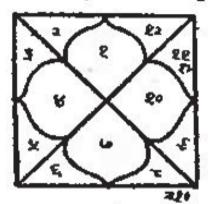
भेषलग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाव में भित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से वातक की पिता तथा राज्य के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा जीकरी, व्यवसाय एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी बहुत संकट आते हैं। ऐसे वातक की भाग्योन्नित में बहुत कम सफलता मिलती है तथा अनेक प्रकार के दु:ख भोगने पड़ते हैं।

क्षेत्र' सान को कुँडली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

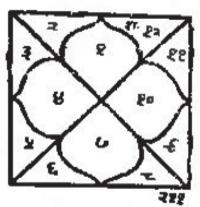
मेषलग्न : एकादशमान : राह्



ग्यारहवें भाव में भित्न शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की खामदनी बहुत अच्छी रहती है, परन्तु उसके लिए उसे कठोर परिश्रम भी करना पड़ता है। कभी-कभी लाभ के स्थान पर हानि के योग भी उपस्थित होते हैं। ऐसी ग्रह स्थिति दाला जातक मित्रव्ययी, परिश्रमी, सनी तथा स्वार्थी होता है।

'मेव' लग्न की कुंडली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेपलग्न । द्वादशभाव : राहु

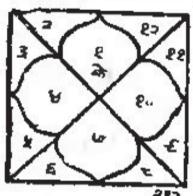


वारहवें आव में शबू गुरु की राणि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की खर्च की अं अकता के कारण बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी कप्ट मिलता है। बीच-बीच में कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करना तथा ठाठ-बाट से रहना—ये दोनों दानें भा साथ-साथ चलती हैं, परन्तु ऋण एवं व्यय के बोझ में मुक्ति नहीं मिल पाती।

'सेष' लग्न में 'केतु'

'मेव' लय्न को कुंडली के 'अथमनाव' स्थित 'केतु' का फल

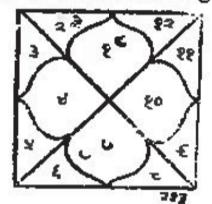
मेपलग्न : प्रथमभाव : केतू



पहलेशात्र में शतु मगल की राशि मर स्थित केलु के प्रभाव से जातक आरोरिक-कब्द, मानस्तक-विस्तायें तथा अन्य प्रकार की परेशानियों का शिकार बना रहता है। उसके शरीर में कहीं चीट भी लगती है तथा सीन्दर्य में भी कभी आ आती है। ऐसा व्यक्ति हिम्मती, परिश्रनी तथा शुप्त युक्तियों का आश्रय सेने वाला होता है, परन्तु फिर भी अनेक बुटियों का शिकार बना रहता है।

क्रिय' साम की कुम्बली के 'डितीयमाव' स्थित 'केंत्र' का फलादेश

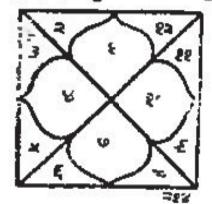
मेच लग्न : द्वितीयभाव : केत्र



दूसरे भाव में मिल शुक्त की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शारीरिक-कप्ट, चिन्ता, धन, की कमी, कौटुम्बिक परेशानी एवं अगड़ी कर शिकार बना रहता है, परन्तु अपने मुक्ति-बल के आर्थिक स्थित में थोड़ा-बहुत सुधार कर लेता है। भोतर से चिन्तिन, निर्धन नथा दुःखी रहने पर भी वह अपनी असलियत को प्रकट नहीं होने देना, फलनः लोग उसे धनवान ही समझते रहते हैं।

श्रीव' संग्न की कुण्डली के 'तृतीयमाव' स्थित 'केंतु' का फलावेश

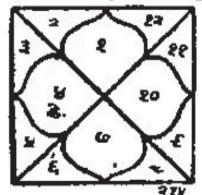
मेष लन्न : तृतीयभाव : केतु



तीसरे भाव में मित बुध की राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक के पराक्षम तथा भाई-बहिन के पक्ष में कमज़ीरी आती है सथा वह भीक स्वभाव का होता है। गुप्त-युक्तियों के आश्रम से स्वार्थ साधन करना ही जसका उद्देश्य होता है, परन्तु अत्यधिक परिश्रम करने पर भी उसे सफलता बहुत कम ही मिल पाती है।

'मेव' साम की कुण्डली के 'बहुर्यभाव' स्थित 'केंतु' का फलावेश

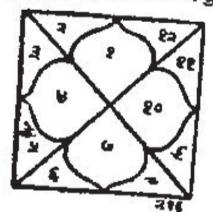
मेप लन्न : चतुर्यभाव: केतु



कौथे भाव में शबू चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में बहुत कभी रहती है तथा कुटुम्ब के विषय में भी अशस्तिश्वनी रहती है। चन्द्रमा की राशि पर केतु के होने कारण जातक का मनोबल धना रहता है, अतः उभी के बल पर यह अपने संकट का समय निकालता है। ऐसा आतक अपना देश छोड़ कर विदेश में भी जा सकता है।

भिष' सम्म की कुम्बसी के 'यंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

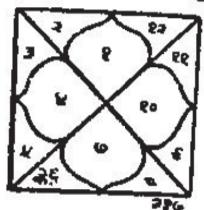
मेष लग्न : पंचमभाव : केत्



पौचर्षे भाव में शतु सूर्यं को राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की विद्याध्ययन में कठिनाइयां वाली हैं। स्मरणशक्ति निर्वत होने के कारण वह विद्या प्राप्त नहीं कर पाता तथा मन्तानपत्त से भी दु:बी रहता है। इस ग्रह स्थिति का जातक स्वभाव से उस तथा कठोर वथन बोसने बाला होता है। अत्थन्त परिथम करने पर भी उसे कम सफलता ही मिसती है।

'नेव' लग्न की कुक्बली के 'खब्ठमाव' स्थित 'केंतु' का फलावेश

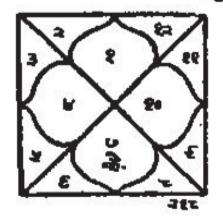
मेष लग्न : षष्ठभाव : केतु



छठे भाव में नित्त बुध की राशि पर स्थित फेतु के प्रभाव से जातक शल्लुपक्ष पर विजयी बना रहता है। वह बड़ा हिम्मती, बहादुर तथा विवेकी होता है, परन्तु मन के भीतर कुछ कमजोरी भी छिपी रहती है। उसे ननसाल के पक्ष से कुछ हानि उठानी पड़ती है। संक्षेप में ऐसा व्यक्ति विवेकी, हिम्मती तथा शल्लुजयी होता है।

भिष' सान को कुकाली के 'सप्तममाव' स्थित 'केंतु' का फलावेश

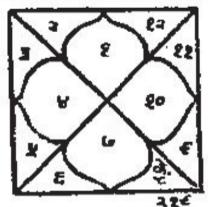
मेष लग्न : सप्तमभाव : केत्र



सातवें भाव में मिस शुक्त को राशि पर स्थित केंतु के प्रभाव से जातक की व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा पारि-यारिक-गुल्थियों की सुलझाने में अनेक युक्तियों से काम लेना पड़ता है। अपनी गुप्त-युक्तियों द्वारा उसे व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में कुछ कमियों से साथ सफलता मिलती रहती है।

क्षेत्र' साम को कुष्डली के 'अव्टममार्व' स्थित 'केंतु' का फलावेश

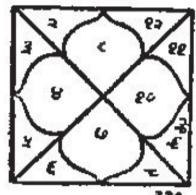
मेष स्वरतः अष्टमभावः केतु



अहिं भाव में सह मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की अपने जीवन में कई बार मृत्यु-सुल्य कब्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि भी उठानी पड़ती है। गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर जातक अपनी कठिनाइयों पर कुछ विजय भी पाता है, परन्तु कब्टों का अन्त नहीं होता। उसके शरीर में भी कोई-न-कोई रोग बना ही रहताहै।

भिव' लग्न को कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

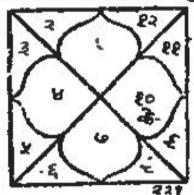
मेप लग्नः नवम भावः केंद्र



नवें भाव में शुभ यह गुरु की र्राक्ष मं स्थित उन्हें के प्रभाव से खातक भाग्यवान, धर्मात्मा तथा धनी होता है, परन्तु उसके जीवन में अनेक प्रकार के परिवर्तन भी आते रहते हैं तथा उसे अनेक प्रकार के संकटों एवं कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। कुल मिला कर एंशा जातक संघर्षपूर्ण मुखी एवं धार्मिक जीवन व्यतीत करता है।

क्रिव' लग्न की कुण्डली के 'दशमधाध' स्थित 'केतु' का फलावेश

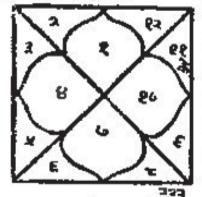
मेप लग्न : दणमभाव : केतु



दसदें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य सथा व्यवसाय के कि में अनेक कठिनाइयों से संघर्ष करना पड़ता है। उसे अपने व्यवसाव में अनेक बार परिवर्तन करने की आवश्यकता भी पड़ती है, परन्तु अपनी गुप्त-गुक्तियों एवं कठिन परिश्रम के बन पर बहु भान-श्रनिष्ठा तथा सफलताएँ प्राप्त करता है।

'मेव' सान को कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केंतु' का फलादेश

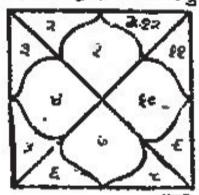
मेप सग्तः एकादशभावः केतु



ग्यारहवें भाव में मिल शिन की राशि पर नियत केतु के प्रभाव से जातक की आमदनी बहुत अच्छी रहती है। यह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर अधिक मुनाफा कमाता है। परन्तु उसे अपनी आय के माधनों में अनेक द्वार परिवर्तन करने के माथ ही फटिन परि-धम करने की आवश्यकता भी पड़ती है।

भिव' सम्म को कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केंतु' का फलादेश

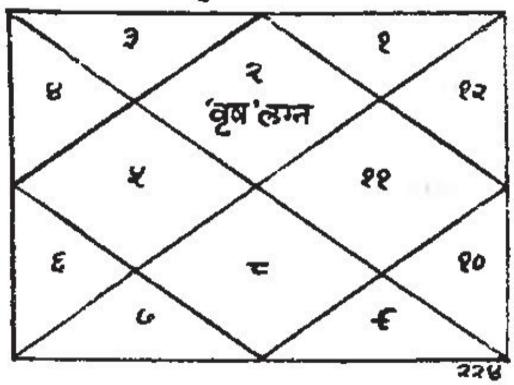
मेप नाम : द्वादशभाव : केलु



दारहवें भाव में अपने शतु गुरु की रर्शण पर स्थित केंनु के प्रभाव से जातक की बाहरी न्यान के सम्बन्धों में कप्ट प्राप्त होता है तथा खर्च सम्बन्धी परेशानियां भी जीवक उठानी पड़ती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के परिवर्तन भी आते रहते हैं। शुक्र के शुभ प्रह् होने के कारण कभी-कभी अल्प लाभ भी होता है तथा अच्छे कामों से ही व्यय होता है।

0

'वृष' लग्न



['थृष' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'वृष' लग्न का फलादेश

'वृष' लग्न में जन्म सेने वाले जातक के घरीर का रंग गोरा अथवा गेहुँका होता है। यह पुष्ट शरीर, लम्बे दाँत वाला, रजोगुणी, गुणवान, यशस्त्री, बुद्धिमान, परम धैर्यवान, शूरवीर, साहसी, मधुरभाषी, मणस्वी, ईम्बरभस्त, ऐस्वर्यशाली, उदार, अष्ठ संगति में बैठने वाला, कुंचित केशों वाला, दोधंजीवी, शौकीन-मिखाख तथा स्त्रियो जैसे नाज्क-मिखाख वाला भी होता है। यह प्रकृति से अत्यन्त भान्त होता है, परन्तु अवसर पड़ने पर युद्ध अथवा संघर्ष में अपना प्रवल पराक्रम भी प्रकट कर विखाता है।

'वृष' मन्न बाला जातक अपने परिवारीजनों से अनाहृत, मस्ताघात पाने वाला, धन-क्षय युक्त, मिल-वियोगी, कलह-युक्त, चिन्ताओं सेपीड़ित, मानमिक-रोगी, तथा मन-ही-मन दुःखी रहने वाला भी होता है।

कुछ विद्वानों के मतानुसार 'बूप' लग्न वाला जातक अपनी आयु के ३६वें दर्ष के बाद अनेक प्रकार के कण्टों को भी भोगता है।

'वृष' लानवालों को अपनी अन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी-फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डलियों में संख्या २०५ में ३३२ के वीच देखना चाहिए।

भोषर-कृष्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें। इसे अगि लिने अनुसार समझ लेना चाहिए।

'बुध' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'बृष' लग्न बालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेण सदाहरण-कुण्डली संख्या २२४ से २३६ के बीच देखना चाहिए।

र—'वृष' लग्न थालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए-—

जिस महीने में 'सूर्व'-

- (क) 'मेव' राशि पर हो तो संदया २२५
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो मंख्या २२६
- (ग) 'मिथुन' राणि पर हो तो सख्या २२७
- (घ) 'ककं' राशि पर हो तो सध्या २२ व
- (ङ) 'सिह' राशि पर हो तो संख्या २२**६**
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २३०
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो सख्या २३१
- (ज) 'वृश्चिक' राणि पर हो तो संख्या २३२
- (क्ष) 'झनु' राशि पर हो तो संख्या २३३
- (अ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २३४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २३४
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २३६

'बृष' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१---'वृष' लग्न बालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्त आवों में स्थित 'बन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३७ से २४६ के बीच देखना व्याहिए।

२---'वृष' लग्न बालों को गोचर-कुण्डली के विधिन्न धावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस दिन 'चन्द्रमा'---

- (क) 'मेष' रामि पर हो तो संख्या २३७
- (ख) 'यूव' राशि पर हो तो संख्या २३८
- (ग) 'मियुन' रामि पर हो तो सख्या २३६
- (म) 'कर्क' राशि पर हो तो सक्या २४०
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २४१
- (ज) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २४२

- (छ) 'तुला' रामि पर हो तो संख्या २४३
- (ज) 'बृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २४४
- (भ) 'सर्नु' रामि पर हो तो संख्या २४%
- (ठा) 'सकर' राक्षि पर हो तो संख्या २४६
- (ट) 'कुम्भ' रासि पर हो तो संख्या २४७
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २४८

'वृथ लग्न में 'मंगल' का फलावेश

१—'यूव' सन्न वालों को वपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न आयों में स्वित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश का उदाहरण-कुण्डली २४६ से २६० के बीच देखना चाहिए।

२---'वृष' सन्न दालों को गोचर-कृष्डली के विभिन्न भावों में स्वित 'मंगल' का बस्वायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कृष्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'मंगल'---

- (क) 'मेष' राप्ति पर हो तो संख्या २४६
- (ख) 'बूव' राशि पर हो तो संख्या २५०
- (ग) 'मियुन' राशि पर हो तो संख्या २५१
- (च) 'कर्क' रामि पर हो तो संख्या २५२
- (क) 'सिह' राशि पर हो तो संख्या २×३
- (च) 'कन्या' रासि पर हो तो संख्या २५४
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संस्था २४४
- (ज) 'वृश्यिक' राशि पर हो तो संख्या <u>२४६</u>
- (क्र) 'सनु' रामि पर हो तो संख्या २५७
- (ञा) 'सकर' राजि पर हो तो संख्या २**१**=
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या २५६
- (ठ) 'मोन' रामि पर हो तो संख्या २६०

'बूष' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'बृष' सग्न भावों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुष' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६१ के २७२ के बीच देखना भाहिए ।

२---'वृष' सग्न वालों को गोचर-कृष्डलो के विभिन्न धावों में स्वित 'मंगल' का अस्वायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कृष्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'बुध'---

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २६१

- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २६२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २६३
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २६४
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो सख्या २६%
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २६६
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो सख्या २६७
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २६०
- (अ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २६६
- (अ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २७०
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या २७१
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २७२

'बृष' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'बूष' सन्त बालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न आयों में स्थितः 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २७३ से २०४ के बीच देखना चाहिए।

२---'वृष' लग्न बालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्वाधी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस दर्ष में 'दूष'---

- (क) 'मेप' राशि पर हो तो संख्या २७३
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २७४
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो मुख्या २७४
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २७६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २७७
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २७६
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २७६
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २८०
- (क्ष) 'सर्नु' राक्षि पर हो तो संख्या २०१
- (का) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २**८२**
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संक्या २८३
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २८४

'बूव' लग्न में 'शुक्त' का फर्लादेश

१-- 'नृष' लग्न बासों को अपनी अन्यकुष्यली के विभिन्न आवीं में स्थित

'सुक' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २८५ से २६६ के बीच देखना चाहिए।

२---'बृष' सन्न थालों को गोचर-कृष्डली के विधिन्न भावों में स्थित 'सुक' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कृष्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'शुक्र'—

- (क) 'मेव' राशि पर हो तो संख्या २०४
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २८६
- (ग) 'मिथुन' राक्षि पर हो तो संख्या २०७
- (म) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २८८
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २८६
- (च) 'कन्या' राक्षि पर हो तो संख्या २६०
- (छ) 'तुला' राक्षि पर हो तो संख्या २६१
- (ज) 'वृश्चिक' रासि पर हो तो संख्या २६२
- (स) 'धरु' रासि पर हो तो संख्या २६३
- (अ) 'सकर' राशि पर हो तो संख्या २६४
- (ट) 'कूम्म' राशि पर हो तो संख्या २६५
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २६६

'वृष' लग्न में 'शनि' का फलावेश

- १. 'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विधिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६७ से ३०० के बीच देखना चाहिए।
- २. 'वृष' लग्त वालों को गोचर-कुण्डली के विधिन्न धावों में स्थित 'सिन' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए।

जिस वर्ष में 'सिन'---

- (क) 'मेप' राशि पर हो तो संख्या २६७
- (ख) 'कृप' रामि पर हो तो संस्था २६६
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २६६
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३००
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३०१
- (च) 'कन्या' राप्ति पर हो तो संख्या ३०२
- (छ) 'तुला' राक्षि पर हो तो संख्या ३०३
- (ख) 'बृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३०४

- (झ) 'खनु' राशि पर हो तो संख्या ३०४
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३०६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३०७
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३०८

'बुष' लग्न में 'राहु' का फमावेश

- १. 'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०६ से ३२० के बीच देखना चाहिए।
- २. 'बृष' सन्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहुं---

- (क) 'मेव' राशि पर हो तो संख्या ३०६
- (ख) वृष' राशि पर हो तो संख्या ३१०
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३११
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३१२
- (ङ) 'सिह' राशियर हो तो सच्या ३१३
- (च) 'कन्या' राशियर हो तो संख्या ३१४
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३१५व
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३१६
- (भ) 'धनु' रामि पर हो तो संस्था ३१७
- (अ) 'सकर' राशि पर हो तो संख्या ३१८
- (ट) 'कुम्म' राक्ति पर हो तो संख्या ३१६
- (ठ) भीन राकि पर हो तो संख्या ३२०

'बृष' लग्न में 'केतु' का फलावेश

- १. 'बूप' सग्न बालों तो अपनी जन्मकुष्डसी के विभिन्न भावों में स्वित 'कतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डसी संख्या ३२१ से ३३२ के बीच देखेंगा चाहिए।
- २. 'बूप' लग्न बालों को बोचर-कुण्डली के विभिन्न बालों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

बिस वर्ष में 'केतु'

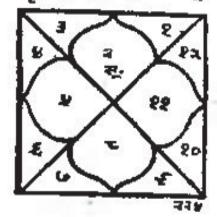
(क) अव' राजि पर हो तो संख्या ३२१

- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३२२
- (ग) 'मिपुन' राशिषर हो तो संख्या ३२३
- (घ) 'कर्क' राशियर हो तो संख्या ३२४
- (ङ) 'सिह' राशि पर हो तो संख्या ३२५
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३२३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३२७
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३२६
- (झ) 'धनु' राशिपर हो तो संख्या ३२६
- (ङा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३३०
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३३१
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३३२

'वृष' लग्न में 'सूर्य'

'बृष' लग्न को कुण्डसी के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष सन्न:प्रथमभाव:सूर्यं

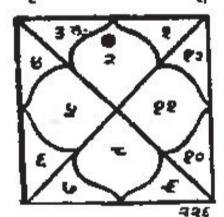


पहले याव में शतु गुक्त की राशि पर स्थित चतुर्येश सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख प्राप्त होता है तथा शारीरिक सौन्दर्य में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं भिन्नदृष्टि से सूर्य सप्तमभाव को देखता है अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय-पदा में सफलता एवं मनोनुक्षता प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह स्थिति का जातक प्रभावशासी तथा तेज मिजाज वाला भी होता है।

'बूब' लग्न को कुण्डसी के 'द्वितीयमाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

वृष सन्न : द्वितीयभाव : सूर्य

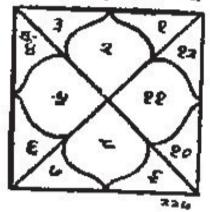


दूसरे भाव में मिल 'बुख' की राशि पर स्थित चतुर्येश सूर्य के प्रभाव से जातक की धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु भाता के सुख में कुछ कमी बनी रहती है। साब ही भूमि, भवन का सुख रहते हुए भी उसका पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता।

सातवीं मिसद्घिट से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को सायु में वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। यों, जातक का दैनिक जीवन सुखी रहता है।

'बुव' लग्न की कुण्डली के 'तुतीयभाव' स्थित 'सूवें' का फलावेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : सूर्यं

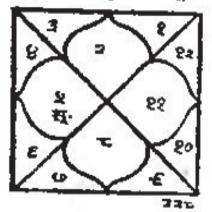


तीसरे भाव में मित 'चन्द्रमा' को राशि पर स्थित चतुर्येश सूर्य के प्रभाव से जातक को भूमि, भवन एवं भाता का सुख प्राप्त होता है। पराक्रम को वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख यी मिलता है।

सातवीं शतुद्धिः से नवसभावको देखने के कारण जातकको भाग्योन्नति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा धर्म-पालन में भी लापरवाही बनी रहती है।

'वृष' लग्न को कुण्डसी के 'चतुर्वभाव' स्थित 'सूर्व' का फलादेश

वृष लग्नः चतुर्यभावः सूर्य

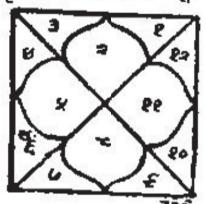


चीये भाव में स्वराशिस्य सूर्य के प्रभाव से जातक की माता, भूमि, भवन तथा परिवार का सुख यथेप्ट मावा में प्राप्त होता है। जातक बड़े ठाठ-बाट से रहता है तथा दिखावा खूब करने पर भी उसके मन में कुछ अशान्ति बनी रहती है।

सातवीं शतुद्धि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष रहता है तथा प्रतिष्ठा एवं सफलता पाने के लिए कठिन संबंध करना पड़ता है।

'बृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमधाब' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

वृष लग्न : पंचमभाव : सूर्य

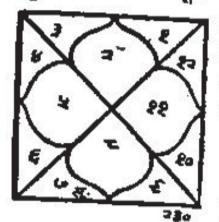


पाँचवें याव में मिल बुध की राशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जरतक को माता, भूमि, अवन सवा घरेलू सुख प्राप्त होता है तथा विद्या एवं सन्तान का पक्ष भी श्रेष्ठ रहता है। ऐसा जातक दूरदर्शी, गंभीर तथा बुद्धिमान होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकारममान को देखने के कारण आतक को बाय के साधन भी अच्छे रहते हैं और उसे समय-समय पर विशेष लाभ के अवसर भी मिलते हैं।

'बूप' लग्न की कुण्डली के 'बच्छमाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्नः धप्ठभावः सूर्य



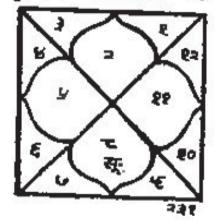
छठे माव में मह शुक्रको राशि पर स्थित नीथ के सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने शतुओं द्वारा कठिनाइयों का सामना तो करना पड़ता है, परन्तु वह उन पर अपना प्रभाव स्थापित कर शेता है, परन्तु फिर भी माता, भूमि ब भवन के सुख में कमी रहती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक के बाहरी स्थानों से अच्छे सम्बन्ध रहते हैं। यद्यपि खर्च अधिक रहता है, परन्तु सुख भी प्राप्त

होता है। ऐसे जातक को अपने सग्न स्थान से दूर जाकर भी रहना पड़ता है।

'बृष' लम्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृषसम्न : सप्तमभाव : सूर्यं

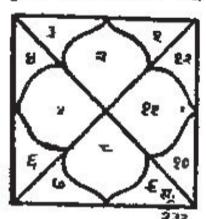


सातवें भाव में मिल मंगल को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को व्यवसाय तथा स्त्री पक्ष में सफलताएँ मिलती हैं तथा भूमि, भवन एवं माता के सुख का भी लाभ होता है।

सातवीं शतुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा पारिवारिक सुख में कुछ कमी आती है तथा हृदय में भी थोड़ी अशान्ति बनी रहती है।

'बुध' लग्न की कुष्डली के 'अध्टममाध' स्थित 'सूचें' का फलादेश

वृषलग्न : अष्टमभाव : सूर्य

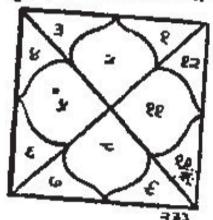


बाठवें भाव में बिस गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने जन्म स्थान से दूर रहना पड़ता. है तथा माता, भूमि, भवन एवं पारि-वारिक सुख में भी विघ्न उपस्थित होते रहते हैं, परन्तु पुरातस्व एवं सायु का विशेष लाभ होता है।

मातवीं मिलदृष्टि से दितीयभाव को देखने के कारण जातक को कुटुम्ब एवं धन का लाभ मिलता रहता है तथा यह धनी भी होता है।

'बुध' लग्न को कुष्डली के 'नवमग्राव' स्थित 'सूवें' का फलादेश

बुख लग्न: नवमभाव: सूर्य

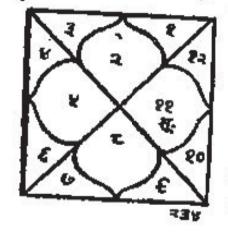


नवें जिसोण भाव में शनु शनि की राणि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धरेलू मुख तथा सीभाग्य की वृद्धि होती है, परन्तु माता, भूमि एवं भवन के सम्बन्ध में कुछ अस-तीप रहता है।

सतिवी मित्रदृष्टि से तृतीयघाव को क्षेत्रन के कारण जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के मुख में वृद्धि होती है। ऐसा जातक अपने पराक्षम एव बुद्धि बल के उपयोग द्वारा हो कुछ कमियों के साथ सफलता प्राप्त करता है।

'क्ष' लग्न की कुण्डली के 'वशमधाव' स्थित 'बुर्घ' का फलादेश

बृष लग्न : दशमभाव : सूर्य

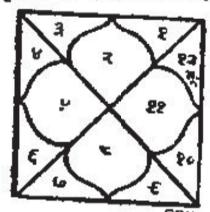


दसर्वे केन्द्र भाव में शतु शिन को राणि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता तथा व्यवसाय के केन्न में कठिनाइयों के साथ अपूर्ण सफ-लता मिलती है।

सातवीं मिलदृष्टि से स्वराशि वाले चतुर्यभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन आदि के सुख का जाम होता है तथा पारिवारिक सुख भी बढ़ता है।

'बृष' लग्न को कुण्डली के 'एकावशमाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

बृब लग्न : एकादशभाव : सूर्य

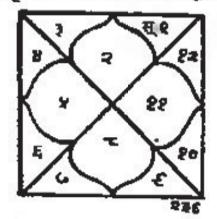


ग्यारहवें भाव में मित्र गुरु को राशि पर स्थित उष्णपह सूर्य के प्रभाव में जातक को आमदयी में अत्यधिक वृद्धि होती रहती है तथा माता. कुट्म्ब, भूमि एवं भवन का सुख भी पर्याप्त भिन्नता है।

मातवीं मिलदृष्टि से पंचनभाव की देवरे के कारण जातक के जिला एवं सनाभ पक्ष में भी वृद्धि होती है तथा उसका जीवन आनन्दपूर्ण व्यतीत होता है।

'बृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वावशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : सूर्यं



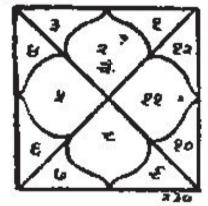
बारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर उच्चस्य सूर्य के प्रभाव से आतक का बाहरी स्थानों से श्रेष्ठ सम्बन्ध रहता है, परन्तु खर्च अधिक होता है स्था माता, परिवार एवं भूमि-भवन के सुख में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं नीचदृष्टि से शत्नु राशि के पष्ठभाव की देखने के करण शत्नु-पक्ष पर बड़ी कठिनाइयों के दाद प्रभाव स्थापित हो पाता है। ऐसा जातक यदि परदेश में जाकर रहे तो उसे अधिक लाभ होता है।

'बुष' लग्न में 'बन्द्रमा'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रयमभाव' स्थित 'बन्दमा' का फलादेश

वृष लग्ने : प्रथमभाव . चन्द्र

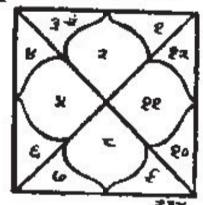


पहले भाव में सामान्य सित्न शुक्त की राशि पर स्थित चतुर्थेश उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव जातक का भनोवल बहुत बढ़ा रहता है। उसे अपने भाई-बहिनों का सुख यथेष्ट मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होकर सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से सप्तमभाव की देखने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में असन्तोष बना रहता है तथा परिवार की चलाने में भी कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'बुव' सम्न की कुण्डली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

बुष लग्नः द्वितीयभावः चन्द्र

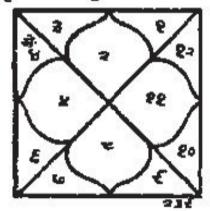


दूसरे भाव में मिल्ल खुष की राशि पर स्थित चतुर्थेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने पराकम द्वारा धनरेपार्जन करता है तथा कुटुम्ब का सुख जी पाता है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख एवं पराक्रम में कुछ कमी बनी रहसी है।

मातवीं मिलदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आतक की आयु तथा पुरातस्य का भी लाम होता है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत कारता है।

'बृष' लग्न की कुर्रहलों के 'तृतीयमाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

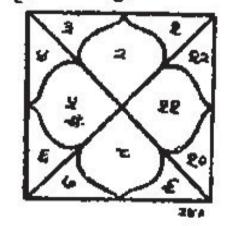


तीसरे भाव में स्वराशिस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-विहिन का सुख मिलता है तथा परा-कम में वृद्धि होती है। वह अत्यन्त हिम्मती, उद्योगी तथा प्रसन्तिचल बाला होता है, अतः सर्वेद्य यण तथा प्रतिब्हा भी प्राप्त करता है।

सातवीं शतुवृष्टि से नवमभाय को देखने के कारण धर्म-पालन में विशेष रुचि नहीं होती तथा भाग्य वृद्धि के लिए अधिक परिश्रम भी करना पड़ता है।

'बृष' सन्त की कुण्डली के 'चतुर्यमाव' स्थित 'चन्त्रमा' का फलादेश

बुष लग्न : चतुर्यभाव : चन्द्र

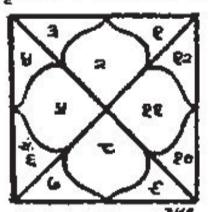


चौथे भाव में मित्र सूर्य को गाणि पर स्थित चतुर्येण चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के माना, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख में वृद्धि होती है। साथ ही भाई-बहिन का सुख भी मिलता है तथा पराकम बहता है।

सातवीं शबूदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण जातक को पिता तथा गाज्य के खेल में विशेष परिश्रम के भाव ही सफलता मिल पानी है। संक्षेप में, ऐसा जातक सुखी जीवन विताता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एंचममाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष स्नग्न : पंचमभाव : चन्द्र

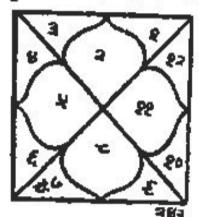


पाँचवें भाव में मिल बुध की राणि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा मंतान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। छोटे चाई-बहिनों से प्रेमपूर्ण सम्बन्ध बना रहता है।

सातवीं सामान्य-मिल दृष्टि से एकादण भाव की देखने के कारण जातक अपने बुद्धि-बल से आमदनी के साधनों को बढ़ता है तथा ऐक्वर्यणाली एवं धनी होता है।

'बूष' लग्न की कुण्डली के 'बच्छभाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलावेश

वृष लग्ने: एष्ठमाव: चन्द्र

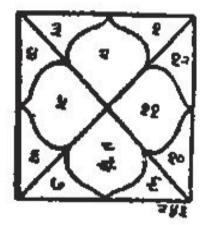


छठे भाव में अपने सामान्य मिल शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शतुपक्ष पर अपना प्रभाव बनाये रखता है तथा झगड़े मुकद्मों में सफलता प्राप्त करता है। अत्यन्त हिम्मती होते हुए भी जातक को कुछ भीतरी जिताएँ बेरे रहती हैं।

सातवीं मिलदृष्टि से द्वादशभाव की देखने के कारण जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु व्यय (खर्च) अधिक बना रहता है।

'वृद्ध' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलावेश

बूष लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

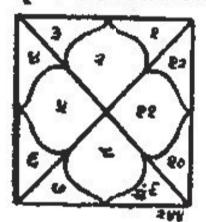


सातवें भाव में विद्य मंगल की राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में हानि, चिन्ता एवं कठिनाइयों का शिकार बनना पड़ता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से प्रथम भाव के देखने के कारण जातक सुन्दर शरीर वाला, प्रतिष्ठित सथा यशस्त्री होता है, साथ हो उसका हृदय भी बलवान बना रहता है। कुल मिला कर ऐसे जातक का जीवन संबर्ध पूर्ण होता है।

'खुव' लग्न की कुंडली के 'अष्टमसाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष सग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

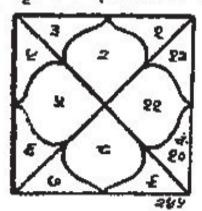


आठवें भाव में मिल गुरु की राशि पर स्थित चतुर्वेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाम होता है, परन्तु पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में कभी आ जाती है।

सातवीं सिन्नदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है; परन्तु इस लाभ के लिए उसे अत्यधिक परिश्रम भी करना पड़ता है।

'बुष' सस्त की कुँडलों के 'सवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : चन्द्र

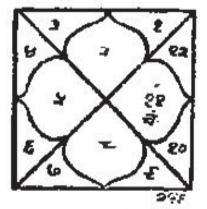


नवेंभाव में शतु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक धर्मात्मा तथा भाग्यणाली होना है, साथ ही उसे भाई-बहिनों का सहयोग भी मिलता है।

सातवी दृष्टि से स्वराणि वाले चतुर्णभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक हिम्मती, फुर्नीला तथा प्रसन्न स्वभाव वाला होता है।

'बूब' लग्न की कुंडली के 'बशममाव' स्थित 'चन्द्रमा,का फलादेश

वृष लग्नं : दश्रमभाव : चन्द्र



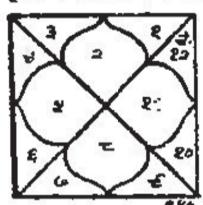
दमवें भाव में शतु शति को राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का अपने पिता के साथ योडा मतभेद रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी अत्यधिक परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होती है। भाई-बहिन का सुख अञ्छा मिनता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

सातवीं मिलदृष्टि से चतुर्यभाव की देखने के कारण जातक की माना, भूमि, भवन सथा पारिवारिक-

सुख भी यथेप्ट माला में उपलब्ध होता है।

'वृष' लग्न की कुंडली के 'एकाइसभाव' स्थित 'चन्त्रमा' का फलादेस

वृषलग्नः एकादशभावः चन्द्र

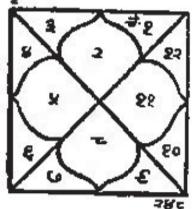


ग्याहरवें भाव में मिल गुरु की राशि पर स्थित चतुर्थेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है तथा भाई-कहिन के सुख एवं पराक्रम में बृद्धि होती है।

सातवी मिल्रदृष्टि से पंचमभाव की देखने के कारण जातक की विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का भी अच्छा साथ होता है। संसेप में ऐसा जानक बुद्धिमान, विद्वान, सन्ततिवान, धनी, मधुरभाषी सवा ऐक्वर्यकाभी होता है।

'बुच' सप्त की कुँडली के 'हादशमाव' स्थित 'चल्हमा' का फलादेश

क्ष लग्न:द्वादशभाव:चन्द्र



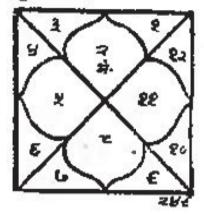
बारहवेंभाव में अपने मिल मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च भो अधिक रहता है। धाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी कभी था जाती है।

सातनी सामान्य मिन्नदृष्टि से पष्ठभाव को देखने के कारण जातक झगड़े-टंटे तथा शतुओं के क्षेत्र में वड़ी युक्तियों से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है।

'वूष' अपन में 'मंगल'

'बूच' सम्न की कुण्डली के 'प्रथममाव' स्थित 'संगल' का कलादेश

वृष लग्नः प्रथमभावः संगल

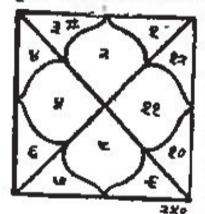


पहलेभाव में अपने मिल शुक्र की राशि पर स्थित सप्तमेश एवं व्यथेश मंगल के प्रभाव से जातक की रक्त-विकार, धातुक्षीणता, दुर्बलता आदि की शिकायत रहती है, परन्तु सारोरिक-शक्ति का भी लाभ होता है। बाहरी स्थानों से बच्छे संबंध रहते हैं। चौथी मिलदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के सुख में कभी रहती है। सातवीं दृष्टि से स्वक्षेतीय सप्तम-भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है। बाठवीं मिलदृष्टि से अव्यवसाय को

देखने से आयु एवं पुरातत्त्व संबंधी परेशानियाँ उपस्थित होती रहती हैं।

'बूब' सम्न की कुच्छली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'मंगल' का फलावेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : ग्रगल



दूसरेभाव में मिद्रदूध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब के विषय में चिन्तामें बनी रहती हैं, परन्तु बाहरी संबंधों से लाभ होता है। चौथी मिद्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं संतान का पक्ष भी कमओर रहता है। सातवीं मिद्रदृष्टि से अध्यमभाव को देखने के कारण आयु एवं प्रातत्त्व के क्षेत्र में भी हानि तथा चिन्तामें उपस्थित होती रहती हैं। खाठवीं उच्चदृष्टि से नवमभाव की देखने के कारण आयु एवं प्रातत्त्व के क्षेत्र में भी हानि तथा

की वृद्धि होती रहती है एवं जातक भाग्यशाली माना जाता है।

'वृष' तत्न की कुष्यली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बंगल' का फलादेश

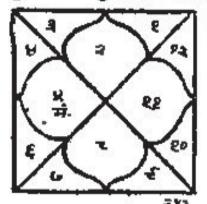
वृष लग्न : तृतीयभावः भंगल

 तीसरेभाव में मिल चन्द्रमा की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन तथा पराक्रम के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी ऐसा ही होता है। चौथी शबुद्ध्टि से पट्ठभाव की देखने के कारण जातक के शबु नष्ट होते हैं। सातवीं उच्चद्धित से जवसभाव के देखने के कारण धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। खाठवीं शबुद्ध्ति से दशमभाव की देखने के कारण जातक को पितृ एवं राज्य-पक्ष में

हानि एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी रुकावटें आती हैं।

'ब्ब' लग्न की कुण्डली के 'बतुर्यमान' स्थित 'बंगस' का फलावेश

वृष सन्न : चतुर्थभाव: संगल

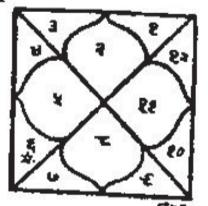


चीये शाव में विद्य सूर्य की राशि पर स्थित व्ययेश ग्रंगल के प्रभाव से जातक की भूमि, भवन एवं माता के सुख की हानि होती है तथा घरेलू सुख भी कम मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराणि के सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। बाहरी स्थानों से सफलता मिलती है तथा खर्च अधिक रहता है। सातवीं शज़ुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य पक्ष में हुर्गन उठानी पड़ती है।

आठवी मित्रदृष्टि से एकादश भाव की देखने के कारण आय के साधनों में वृद्धि होती है तथा वाहरी संबंधों द्वारों विलम्ब से लाभ होता है ।

'बृष' लग्न को कुण्डली के 'यंत्रमभाव' स्थित 'बंगल' का फलादेश

वृष लग्नः पंचमभावः ग्रगल



पौचनें भाव में मिल नुध की राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में जिन्ता एवं हानि उठानी पड़ती हैं। तथा स्त्री एवं व्यवसाय पक्ष में भी निताएँ गहती हैं। नौथी मिलदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की हानि के योग भी उपस्थित होते हैं। सातवीं मिलदृष्टि से एकादक भाव देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। आठवीं

वृष्टि के स्वराणि वाले द्वादश भाव की देखने के कारण खर्च अधिक होता है तथा व्यवसाय की उन्तरि के लिए अधिक परित्रम तथा खर्च करना पड़ता है।

'बूष' लग्न की कुष्वली के 'बच्छमाव' स्थित ग्रेंगल' का फलादेश

वृष लग्न : षप्ठभाव : गंगल

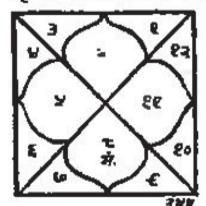
छठे भाव में शतु कुछ की राशि में स्थित ध्ययेश तथा सप्तमेश मंगल के प्रभाव से जातक अपने शतुओं पर प्रवल बना रहता है परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में हानियाँ उठाता है। चौथो उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण धर्म एवं भाग्य की वृद्धि करता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि वाले द्वादणभाव को देखने से खर्च अधिकतर रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। आठवीं शहदृष्टि से प्रथमभाव कोदेखने

के कारण आतक का शरीर कमजोर रहता है तथा रक्त-दीर्थ आदि के विकारों का भी शिकार बनना पड़ता है।

'बृष' लत्न की कुष्यली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्नः सध्तमभावः मंगस

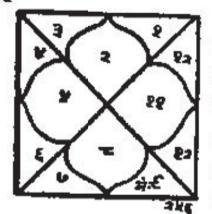


मातवें भाव में स्वराणि स्थित व्ययेश गंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में शक्ति प्राप्त होने पर भी कठिनाइयाँ आती हैं तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। चौथी शबुद्धि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयाँ जाती हैं। सातवीं शबुद्धि से प्रथमभाव को देखने के कारण आतक का शरीर दुवंल रहता है। बाठवीं मिल्रद्धि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा

कुटुम्ब के बारे में चिन्ताएँ तथा कठिनाइयां उपस्थित रहती हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अञ्चमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्नं : अष्टमभाव : ग्रंगल



आठवें लाभ में मिल गुरु की राशि पर स्थित सप्तमेश तथा मिल के प्रभाव से जातक की स्त्री, व्यय-साय, आयु तथा पुरातत्त्व विषयक हानियां उठानी पड़ती हैं तथा परदेस में दसना पड़ता है। बीधो मिल-दृष्टि से एक दशभाव को देखने के कारण विदेश द्वारा सन का लाभ होता है। सातवीं शलुदृष्टि से द्वितीय भाव की देखने के कारण धन सवा कुटुम्ब विषयक

परेसानियाँ रहती हैं। आठवीं नीचदृष्टि से तृतीयमाव की देखने के कारण धाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी कभी आ जाती है।

'यूष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मगल' का फलादेश

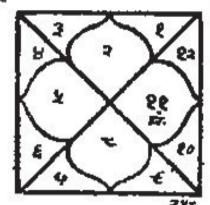
वृष लग्ने : नवमभावे : मगल

नवें भाव में शतु शनि की राशि पर स्थित भंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से लाभ होता है तथा भाग्यवल से व्यावसायिक उन्नति भी होती है। धर्म में आस्था रहती है। चौथी दृष्टि से स्वराणि वासे द्वादशभाव को देखने से खर्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है। आठवी

मिलदृष्टि से चतुर्पभाव को देखने के कारण माता, भूमि-भवन तथा धरेलू सुख में भी कमी आ बाती है।

'बूब' सरन को कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

बुष लग्नः दशमभावः संगल दसवें भाव मे शतूः

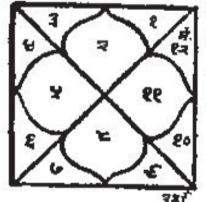


दसवें भाव में सबू शनि की राणि पर स्थित मंगल के प्रभाव में जातक की पिता तथा राज्य पक्ष में परेशानियों आती हैं। बाहरी स्थानों के मम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है। स्बी पर प्रभाव होने पर भो मनोमालिन्य बना रहता है। चौथी शबुद्धि से प्रथममाव की देखने के कारण शारीरिक कमजोरी तथा रक्त-विकार आदि रहते हैं। सानवीं मिलद्धि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि, भवन तथा

घरेलू सुख में भी कमी रहती है आठवीं मित्रदृष्टि से पंचममाय की देखने से सन्तान से अनवन रहती है। मित्रा का लाभ भी कम होता है, परन्तु सम्मान की दृद्धि होती रहती है।

'बृष' तान की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'अंगल' का फलादेश

वृष लग्नः एकादशमानः संगल ग्यारहवें भाव में मिल गुरु की राशि पर स्थित

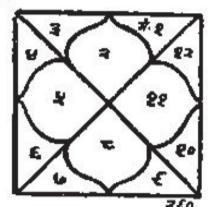


भंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है।
तथा स्ती-पक्ष एवं बाहरी सम्बन्धों से भी लाम होता है।
चौथी शबुदृष्टि से द्वितीय भाव की देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं। सातवीं शबु दृष्टि से पंचममाव को देखने से विद्या तथा संताय का पक्ष भी दुवेल रहता है। आठवीं समदृष्टि से बच्छमाव को देखने के कारण शबुपक में प्रभाव बना रहता है। ऐसी ग्रह

स्थिति वाला जातक थड़ा चतुर तथा स्वार्थी होता है।

'वृष' लग्न की कुध्वली के 'द्वादशभाव' स्पित 'संगल' का फलादेश

वृष लग्न:द्वादशभाव:भंगल



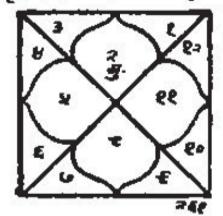
बारहवें भाव में स्वराणि स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है, मंगल के सप्तमेश होने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है। धौथी नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में कभी रहती है। सातवीं दृष्टि में षष्ठभाव की देखने से शत्रुओं पर विजय मिलती हैं सथा आठवीं दृष्टि से

स्वराणि वाले सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में हानि-लाभ के योग बनते बिगड़ते रहते हैं।

'बृष' लग्न में 'बुध'

'बुव' लम्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : प्रयमभाव : सुख

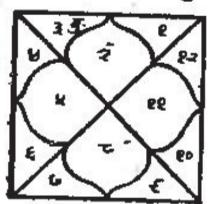


पहले भाव में मित्र शुक्त की राशि पर स्थित द्वितीयेश तथा पंचमेश बुध के प्रभाव से जातक सुन्दर, प्रतिष्ठित यशस्वी तथा कुटुम्ब एवं धन की शक्ति पाने बाला होता है। विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पक्ष भी अच्छा रहता है।

सातवीं समदृष्टि के सप्तमभाव की देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता एवं सहयोग की प्राप्ति होती है।

'वृष' सम्म की कुण्डली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

चुष लग्न : द्वितीयभाव : बुष

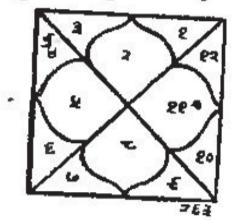


दूसरे भाव में स्वराणि स्थित बुध के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की उत्तम वृद्धि होती है, परन्तु सन्तान पक्ष में परेशानियाँ रहती है। विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मिन्नदृष्टि से अष्टमभाव की देखने के कारण आतक को आयु तथा पुरातस्व का लाम होता है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला आतक ऐस्वयंत्राली जीवन वितप्ता है।

'बुव' सम्म की कुण्डली के 'तृतीयज्ञाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न: तृतीयभाव: बुध

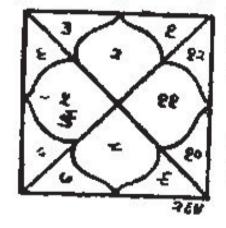


तीसरे भाव में चन्द्रमा की राणि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। वह अपने पराक्रम द्वारा धन उपाजित करता है।

सातवीं मिलदृष्टि से जनमभाव की देखने के कारण जातक की धर्म में एचि बनी रहती है तथा भाग्य में भी कृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति पराक्रमी, बुद्धिमान, विद्वान्, साहसी, धनी, धर्मीतमा एवं सज्जन स्वभाव का होता है।

'बृष' सम्म की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध का फलादेश

वृष लग्नः : चतुर्थभावः अष्ठ

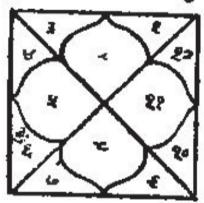


चौथे आय में मित्र सूर्य की राणि पर स्थित बुद्ध के प्रभाव से जातक माता, भूमि, भवन तथा परि-बार का यथेष्ट सुक्ष प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति गंभीर, विवेकी, विद्वान तथा बुद्धिमान भी होता है।

सातवी मिल्रदृष्टि से दशमधाय को देखने के कारण जातक की पिता तथा राज्य से भी यथप्ट लाम होता है तथा व्यासायिक क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

'बृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष तान : पंचमभाव : बुध

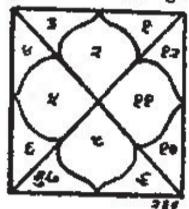


पीनवें भाव में स्वराणि स्थित उन्न के नुध के प्रभाव से जातक बहु सन्तितवाला, बुद्धिमान स्था विद्वान् होता है तथा बुद्धिवल से धनोपार्जन भी खूब करता है। कौट्राविक मुख उसे भरपूर मिलना है।

सातवीं नी चदुष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कभी का अनुभव होता है, परन्तु जातक अपनी मिला एवं भन्तान पक्ष की सहायता से धन की वृद्धि करता है तथा सम्मान भी पाना है।

'बृष' सम्म की कुष्डली के 'बष्ठभाव' स्थित 'ब्रुष्ठ का फलादेश

वृष सम्न : बष्ठभाव : बुध

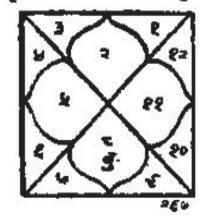


छठे भाव में मित्र शुक्त की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्नुपक्ष द्वारा अशान्ति का अनुभव करता है, परन्तु अपने बुद्धि-सक्त से जस पर कुछ सफलता भी या लेता है। सन्तान तथा कुटुम्ब से यतभेद एवं परेशानी के योग भी उपस्थित होते हैं।

सातवीं मिलदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च की अधिकता रहती है, परन्तु वाहरी स्थानीं के सम्बन्ध से सम्मान तथा धन मिलता रहता है।

'बृष' सन्न की कुण्डली के 'सप्तमधाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

बुध लग्न : सप्तमभाव : बुध

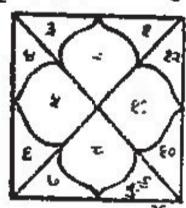


सातवें भाव में मिल मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को बुद्धिमान स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। विद्या, कुटुम्ब तथा सन्तान पक्ष से सुख एवं छन प्राप्ति के योग भी उपस्थित होते रहते हैं।

सातवीं दृष्टि मित्र से प्रथमभाव को देखने के कारण जातकको शारीरिक सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा, बुढि, विवेक, सन एवं सफलताओं को प्राप्ति भी होती है।

'बृष' सम्म की कुष्टली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बृध' का फलादेश

बुष सन्न : अष्टमभाव : बुध

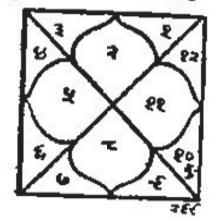


बाठवें भाव में मित्र गुरु को राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातस्य का साभ होता है तथा धन-संचय की शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब, विद्या एवं सन्तान पक्ष से परेशानियों का अनुभव होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दितीयभाव को देखने के कारण जातक कठिन परिश्रम द्वारा छनी-पार्जन करता है। ऐसे व्यक्ति का रहन-प्रहन ऐश्वर्यपूर्ण होता है। 7

'थुष' सम्म की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

बुष लग्न : नवमभाव : बुध

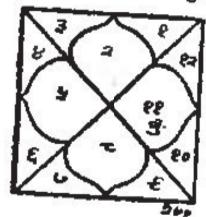


नवें भाव में मित्र शिनि को राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक बुद्धि-योग द्वारा अपने भाग्य एवं धन की वृद्धि करता है तथा धर्म, विद्या, सन्तान एवं कुटुम्ब विषयक सुखों को भी प्राप्त करता है।

सातवीं दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जानक को भाई-वहिनो का सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी विशेष वृद्धि होती है। ऐसा जातक मुखी, धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'बृष' लग्न की फुच्डलो के 'दसमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

बुष लग्न : ६शमभाव : बुध

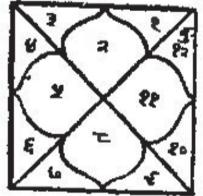


दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक पिता एवं राज्य पक्ष से विशेष साभ तथा सम्मान प्राप्त करना है। अपने बुद्धि-बल द्वारा व्यवसाय से पर्याप्त आर्थिक लाभ भी कमाता है। सन्तान पक्ष से भी सुखी रहता है।

सातनी मिलदृष्टि से चतुर्यभाव को देखने के कारण जातक को माता, भूमि, भवन तथा परिचार का यथेष्ठ सुख की प्राप्त होता है।

'थृष' सन्त की फ़ुच्डलों के 'एकादसवाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न । एकादम भाव : बुध ग्यारहवें माव में मित गुरु की राणि में स्थित बुध

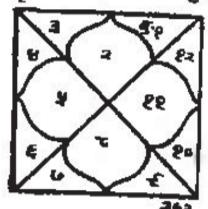


ग्यारह्व भाव मामत गुरु का राण मास्यत बुध के प्रभाव से जातक को आय केक्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धन-संचय में बाधा पडती है। कुटुम्ब, सन्तान एवं मिता पक्ष से भी अल्प लाभ मिलता है तथा विन्ताओं के कारण मस्तिष्क परेशान बना रहता है।

सातनीं दृष्टि से स्वराशि वासे पंचममाव को देखने के कारण जातक विद्वान् तथा मुद्धिमान होता है तथा उसका मन्तान पक्ष की प्रवत बना रहता है।

'बूब' सन्त की कुंच्छली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

बृष लग्न : द्वादशभाव : बुध



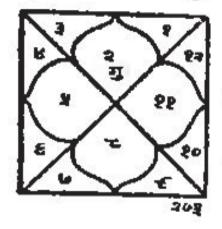
बारहवें भाव में मिल मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है। साथ ही विद्या, सन्तान, कुटुम्ब एवं धन के पक्ष से भी असन्तोष रहता है। सन्तान-पक्ष में हानि भी उठानी पड़ती है।

सातवीं मित्र दृष्टि में वष्ठमाय को देखने के कारण जातक अपने बुद्धि-वल द्वारा खतु-पद्म पर सफलता प्राप्त करता रहता है।

'वृष' सन्न में 'गुरु'

'बूब' सम्न की कुच्छली के 'प्रयममाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न:प्रथमभाव:गुरु

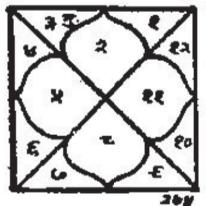


पहले भाव में खतु सुक्त की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शारीरिक परिश्रम द्वारा लाभ होता है तथा आयु एवं पुरातस्थ की उन्नित होती है। पौषवीं मित्रवृष्टि से पंचमभाव की देखने के कारण विद्या-बुद्धि का लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष सामान्य रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से सुटिपूर्ण सफलताएँ मिलती हैं। नवीं शतुदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक के भाग्य एवं धमें के क्षेत्र में कुछ कभी रहती है।

ऐसा जातक परिश्रम द्वारा उन्नति करता है।

'बूब' सम्न की कुष्यली के 'द्वितीयमध्य' स्थित 'गुरु' का फलावेग

बुष रूग्न:द्वितीयमाव:गुरु

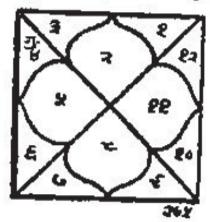


दूसरे भाव में अपने (मिट्टे) बुध की राशि पर स्थित
गुरु के प्रभाव से जातक की धन तथा कौटुम्बिक सुख
प्राप्त करने में कुछ कठिनाइयां वाती हैं। साववीं दूष्टि से
स्वराशि के अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि तथा
पुरातस्य का लाभ होता है। पौचवीं शतुद्धि से षष्ठभाव को देखने से सन्नु पक्ष पर विजय प्राप्त होती है तथा
नवीं समद्ष्टि से दशमभाव को देखने के कारण राज्य पक्ष
में सामान्य सफलता मिलती है, पिता से वैमनस्य रहता

है सथा व्यवसाय की उन्नति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

'बूब' सन्त को कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

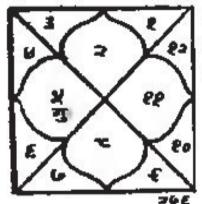
बृष लग्न : तृतीयभाव : गुरु



तीसरे भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्वित सूर्य के प्रमाय से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के बुध में वृद्धि होती है। पौचवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव की देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं नीचदृष्टि से खत्नु राशिस्थ नवमभाव को देखने के कारण धार्मिक विचारों तथा भाग्य में कुछ तृदि अनी रहती है तथा नवीं दृष्टि से स्वराधि के एकादश भवन को देखने के कारण आमदनी अच्छी होती रहती है।

'बूब' लग्न की कुष्डली के 'बतुर्बनाव' स्थित 'युव' का फलादेश

वृष लग्नः चतुर्यमावः बुध

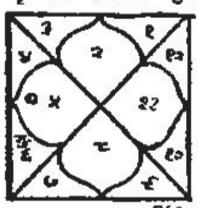


पहले भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कभी रहती है, परन्तु भूमि, भवन एवं सम्पत्ति लाभ होता है। पौचवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टम भाव को देखने से आयु में वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं शतुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं प्रतिष्ठा पक्ष में कुछ कभी आती है तथा नवीं शतु-दृष्टि से दादस भाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों से

सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु आमदनी से खर्च अधिक बना रहता है।

'बृष' लग्न की कुष्यली के 'यंत्रमनाव' स्थित 'गुरु' का फलावेश

बुध सम्मः पंचममादः गुरु

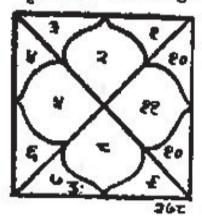


पौतर्वे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का विशेष लाभ होता है, साय ही बायु तथा पुरातस्य का लाभ भी होता है। पंत्रम नीयदृष्टि से सतुराणि के नवमभाव की देखने के कारण धर्मे एवं भाग्यपण में कभी रहती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादस माव की देखने से बुद्धियोग द्वारा बच्छी आमदनी होती है। नवीं शबुद्धि से प्रथमभाव की देखने के कारण जातक

की जीविकोपार्जन के लिए सारीरिक श्रम अधिक करना पड़ता है।

'बृष' सम्म की कुण्डली के 'बष्डमाब' स्थित 'गुरु' का फलावेश

वृष सन्न : षष्ठमाषः बुध

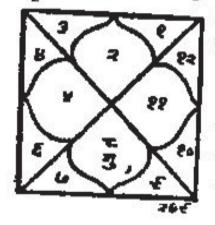


छठे भाव में सन्नु सुक की राशि पर स्थित अध्य-मेग बुध के प्रमाद से जातक शनुपक्ष में अपनी बुद्धिमत्ता से विजय प्राप्त करता है परन्तु आयु तथा पुरातस्त्र के लाभ में कमी रहती है। पौचवीं सन्नुष्टि से दशमभाव की देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां वाती हैं। सातवीं मिल्लदृष्टि से द्वादक्षभाव की देखने के कारण बाहरी सम्बन्धों के अच्छा लाभ होता है, परन्तु खबें अधिक एद्रता है। नवीं मिलदृष्टि से दितीय भाव की देखने के कारण विशेष परित्रम करके अन-संचय

में सफलता मिलती है, परन्तु कौंदुम्बिक सुख में कभी रहती है।

'बृष' सम्म की कुण्डली के 'सप्तमजाब' स्थित 'बुध' का फलादेश

बुध सम्म:सप्तमभावःगुरु

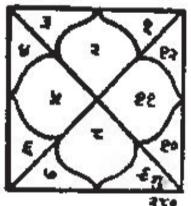


सातवें भाव में मित मंगल की राशि पर स्वित कष्टमेश तथा व्ययेण गुर के प्रमाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय पक्ष में कठिनाइयों वाती हैं, परन्तु आयुं एवं पुरातत्त्व का लाम होता है। पौचवीं दृष्टि से स्वराणि वाले एकादशभाव को देखने से आमदती अच्छी रहती है। सातवी शालुदृष्टि से प्रयमभाव को देखने से शरीर में दुवंलता रहती है। नवीं उच्चदृष्टि से तृतीय भावकी देखने से भाई-वहिन के सुख तथा परात्रम में वृद्धि होती है। ऐसा जातक स्वाचीं, बनी तथा ऊपरी दृष्टि से

सज्जन प्रतीत होता है।

'बृष' सम्म की कुण्डली के 'अध्यमनाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न अष्टमभावः गुरु

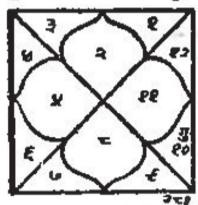


आठवें भाव में स्वराधि पर स्थित अध्योश गुर के
प्रभाव से आवक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का लाम होता है, परन्तु आय के साधनों में कुछ कठिनाइयों भी आती हैं। पौचवीं मिल्लदृष्टि से हादक्षभाव की देखने के कारण बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च की अधिकता रहती है। सातवीं मिल्लदृष्टि से दितीय भाव की देखने के परिश्रम द्वारा कुटुम्ब तथा धन की वृद्धि होती है। नवीं मिल्लदृष्टि से चतुर्वभाव की देखने से माता,

भूमि, भवन एव सुख के एस में कुछ असन्तोष रहता है।

'बृष' सम्त की कुण्डली के 'नवमश्राव' स्थित 'श्रुध' का फसाबेश

बृष सग्न : नवसभाव : गुरु



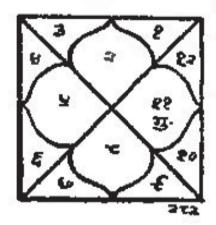
नवें भाव में शबु शनि की राशि पर स्थित अष्टमेस एवं व्ययेण गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म-पालन में कमजोरी रहती है। पाँचवी शबुद्धि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य में कमी रहती है तथा प्रभाव-वृद्धि के लिए विशेष यत्न करना पड़ता है। सातवीं उच्चद्दि से तृतीयभाव को देखने के कारण शाई-बह्नि के सुख तथा पराक्षम में वृद्धि होती है। नवीं शबु-दृष्टि से षष्ठभाव की देखने के कारण सन्तान तथा विद्या

के पक्ष में कमजोरी रहती है।

कुल मिलाकर इस ग्रह-स्थिति के कारण जातक की उन्नति, प्रतिष्ठा, प्रभाव तथा ऐस्वर्थ में कमियाँ बनी रहती हैं।

'बृष' लग्न की कुण्डली के 'बशममाव' स्थित 'गुव' का फलावेश

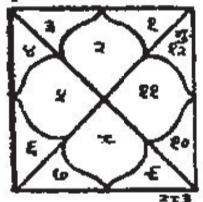
बुषसम्बः दशमभावः गुरु



दसवें मान में शतु शनि की राशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रमान से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है, लाभ-प्राप्ति के मार्ग में भी सफलता कम मिलती है। पौचनीं मित-दृष्टि से द्वितीयमान के देखने के कारण धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सहयोग मिलता है। सातनीं मिलदृष्टि से चतुर्यमान को देखने के कारण माता, मूमि एवं मनन आदि का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। सातनीं सलुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शतु-

यक्ष से परेशानी रहती है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। 'बुव' कान की कृष्यली के 'एकादशमाव' स्थित 'युव' का फलावेश

वृषलग्न: एकादशभाव: गुरु

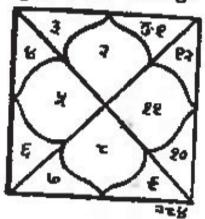


ग्यारहवें भाव में स्वराशिस्य हैं अप्टमेश कुत के
प्रभाव से जातक की अश्मदनी अच्छी रहती है, परन्तु
परिश्रम अधिक करना पड़ता है। आयु तथा पुरातस्य का
लाभ भी होता है। पंचमं उच्च दृष्टि से तृतीयभाव की
देखने के कारण पराक्रम तथा माई-बहिन के सुख का
लाभ होता है। सातवीं मिल्लदृष्टि से पंचम भाव को
देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में कम लाम
होता है। नवीं मिल्लदृष्टि से सप्तम्भाव की देखने से

व्यवसाय द्वारा पर्याप्त लाभ होता है परन्तु स्त्री-पक्त से कुछ कठिनाइयों के लाभ सुख मिलता है। ऐसा जातक ऐस्वयंगानी होता है।

'बुव' अम्त को कुञ्डली के 'द्वादशमान' स्थित 'गुरु' का फलादेश

बृषलग्न : द्वादणभाव : गुरु



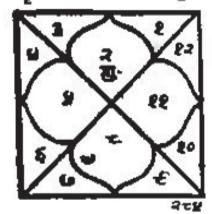
बारहमें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रमाव से जातक की बाहरी स्थान के सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च की अधिकता रहती है। पाँचवीं मिल्लदृष्टि से चतुर्यभाव को देखने के कारण कुछ कठि-नाइयों के साथ सुख के साधन प्राप्त होते हैं, परन्तु माता के सुख में कभी रहती है। साववीं शतु-दृष्टि से छठे भाव की देखने के कारण शतु-पक्ष पर बुद्धिमानी द्वारा प्रमाव स्थापित होता है। नवीं दृष्टि से स्वराणि के अष्टमभाव, की देखने से आयुपक्ष में कुछ कभी रहती है,

पुरातत्त्व की हानि होती है तथा आमदनी से खर्च अधिक बना रहता है।

'वृष' लग्न में 'शुक्र'

'कृष' सम्त को कुष्वसी के 'प्रयममाव' स्थित 'सुक्र' का फसादेश

बृषलग्नः प्रथमभावः शुक्र

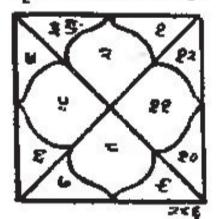


पहले मान में स्नराशि में स्थित शुक्त के मान से जातक केशारीरिक सौन्दर्य एवं आत्मिक बल में वृद्धि होती है तथा शत्नु-पक्त पर विजय प्राप्त होती रहती है। परन्तु कमी-कभी रोगों का शिकार भी बनना पड़ता है।

साववीं सामान्य मिल्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में बुद्धिमानी द्वारा सफलता मिलती है। कुल मिलाकर ऐसी ग्रह स्थिति का आतक सुखी जीवन व्यतीत करता है।

'बूब' लग्न की कुल्हली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

बुषलग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

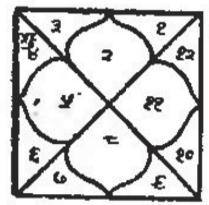


दूसरे आव में मित 'बुब' की राशि पर स्थित शुक्क के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है, परन्तु शारीरिक सुख में कुछ कठिनाइयाँ भी वाती रहती हैं।

सातवीं शतु-वृष्टि से अष्टमभाव की देखने के कारण जातक की बायु तथा पुरातस्य के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है, परन्तु शतु-पन्न से चातुर्य द्वारा लाभ मिसता है।

'बूब' सम्म की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सुक्र' का फलावेश

बृषलग्न: तृतीयभाव: शुक



तीसरे भाव में भन्न 'चन्द्रमा' की रामि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन का सुख कुछ वैमनस्य के साथ प्राप्त होता है।

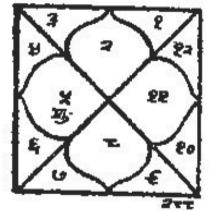
सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव की देखने के कारण जातक धर्मात्मा तथा भाग्यदान् होता है।

ऐसी ग्रह स्थिति का जातक पराक्रमी, चतुर तथा परिश्रमी होता है और इन्हीं गुणों के यश पर धन, यश,

भाव, प्रतिष्ठा आदि प्राप्त करता है।

'कृष' सम्त को कुण्डली के 'चतुर्यभाव' स्थित 'सुक्र' का फलावेश

बृषलग्न : चतुर्यभाव : भूक



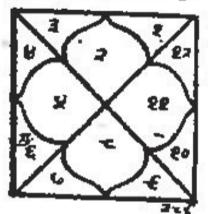
नौथे मान में शतु 'सूपं' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रमाद से जातक की माता के सुख में कभी वाती है तथा भूमि, भवन के सुख के बारे में भी कुछ असन्तोष रहता है, परन्तु इन सब कमियों के वावजूद सुख के साधन प्राप्त होते रहते हैं। शतु-पक्ष पर शान्ति तथा चातुर्य द्वारा सफलता मिसती है।

सातवीं मित्र दृष्टि से दशममान की देखने के कारण पिता, 'राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में मफसता

मिलती है तथा यस, मान, प्रतिष्ठा एवं उन्नति का लाभ होता रहता है।

'बूब' सम्म की कुण्डली के 'गंचमधाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृपलग्नः पत्रमभावः भूकः



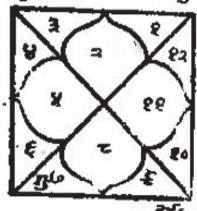
पीयवें मान में नीयराणिस्य भुक्त के प्रमाय से जातक का विद्या तथा मन्तान-पद्म कमजीर रहता है, परन्तु यह अपने बुद्धि-चातुर्य-द्वारा शक्षु-क्षेत्र में सफलता प्राप्त कन्ता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से एकादशमान की देखने के कारण कठिन परिश्रम एवं दिभाग की सूझ-बूझ से आमदनी के छेत में सफलता प्राप्त करता है। ऐसी ग्रहस्थित बाला जातक, चिन्ता, बसन्तीच, मस्तिपक में परेवानी एवं

शारीरिक मौन्दर्य में कभी प्राप्त करता है।

'बुच' साम की कुम्बली के 'बद्धमाब' स्थित 'बुक' का फलादेश

बृषलग्न : षष्ठमाव : शुक्र



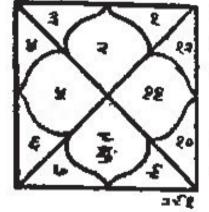
छठे मान में स्वक्षेती युक्त के प्रमान से जातक शारीरिक शक्ति एवं चातुर्य के द्वारा शतु-पक्त पर विजय प्राप्त करता है, परन्तु युक्त के लग्नेश होकर वष्ठभाव में बैठने के कारण शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कभी भी रहती है। माता द्वारा लाभ एवं परतन्त्रता का योग भी बनता है।

सातवीं समदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक की बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा

खर्च को अधिकता रहती है। ऐसी ग्रहस्थिति याला जातक किसी-न-किसी शगडे में फंसा ही रहता है, परन्तु बड़ा प्रतापी की होता है।

'कृष' सम्म को कुण्डली के 'सप्तमनाव' स्थित 'शुक' का फलादेग

बृषलग्न:सप्तमभाव: शुक्र

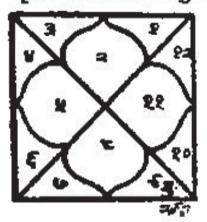


आठवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रमास से आतक की स्त्री-पक्ष से वैमनस्य तथा परेशानी के यौग अनते हैं तथा व्यवसाय के छेत में कठीर शारीरिक परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव की देखने के कारण जातक सांसारिक कार्यों में परम दक्ष होता है, परन्तु भरीर रोगी भी बना रहता है।

'बुच' सन्त को कुम्बसी के 'अध्यमभाव' स्थित 'बुच' का फसावेग

बुषलग्न: अष्टमभाव: शुक्र



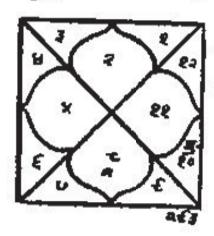
आठवें भाव में सन् गुरु की राशि पर स्थित सुक के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कभी आती है सथा रोगादि का कष्ट बना रहता है। बायु को शक्ति प्राप्त होती है तथा पुरातस्य का लाभ गुप्त चातृयें के बल पर होता है।

सातवीं मिल्रदृष्टि से दितीयभाव की देखने के कारण आतक कठिन परिश्रम से धन की वृद्धि करता है। मामा के पक्ष में कमजोरी, शतु-पक्ष से कष्ट एवं उदर-

विकारादि के योग भी बनते हैं।

'वृष' साम की कुम्बली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्ष' का फलावेश

द्वतन्तः नवसभावः गुक

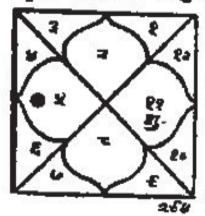


नवें भाव में मित शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शारीरिक श्रम द्वारा भाग्योग्नति करता है तथा शत्रुपक्ष में सफलता पाता है। शरीर मुन्दर होता है, परन्तु रोगादि के योग उपस्थित होते रहते हैं।

सातवीं मिल्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ माई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पर। कम में वृद्धि होती है। मनु एवं झगड़े के दोत में विजय मिलदी है।

'बूव' सम्म की कुण्डली के 'दशमधाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न: दशमभाव: शुक्र

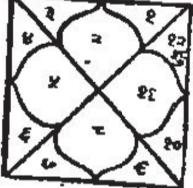


दसवें भाव में मित शनि की राणि पर स्थित शुक्त के प्रभाव से जातक का पिता के साथ सामान्य वीमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों तथा परिश्रम के साथ सफलता मिलती है। . शतुपक्ष पर प्रभाव बना रहता है।

साववीं शतुद्धि से चतुर्यभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति अहंकारी, सुन्नी तथा उन्नतिशीस होता है।

'बृष' सप्त की कुष्डली के 'एकावरामाव' स्थित 'शुक्ष' का फलावेश

वृषलम्नः एकादसभावः शुक्र व्यारहवें भाव में उच्च राशिस्य शुक्र से प्रभाव से

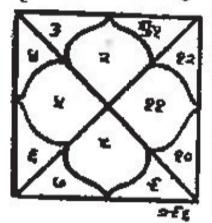


भारहन मान में उपने सामस्य शुक्र से प्रभाव स आतक परिश्रम द्वारा आमदनी की बढ़ाता है। यह सुन्दर होने के साथ ही रोगी भी रहता है तथा शतुपक्ष से लाभ मिलता है।

सातवीं नीचवृष्टि से प्यमधाद की देखने के कारण सन्तान पक्ष में कभी तथा विद्याध्ययन में सापरवाही रहती है। ऐसा व्यक्ति जनेक प्रयत्नों द्वारा अच्छा साम वठाता तथा उन्तति करता है।

'बृव' सम्न की कृष्टली के 'द्वावशभाव' स्थित 'बुक' का फलादेश

वृष लग्न : हादशभाव : शुक



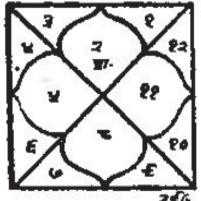
बाहरवें भाव में सामान्य मित्र मंगल की राशि में स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। वह सरीर से दुवेंल होने पर भी परिश्रमी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराज्ञि वाले वष्ठमाव को देखने के कारण शातुपक्ष से कुछ हानि भी उठाता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, रोगी सवा धन कमाने में कुशन परन्तु अनुओं द्वारा पीढ़ित होता है।

'बुष' सम्न में 'शनि'

'बृव' सान की कुम्हली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सर्वि' का फलादेश

वृष लग्नाः प्रयममावः शनि पहले भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि

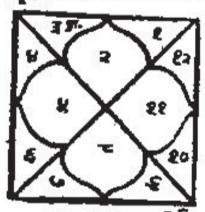


की प्राप्ति होती है।

तीसरी शतु-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने के कारण आई-बहिनों के सुख में कभी आती है, परन्तु पराकम की वृद्धि होती है। सातवीं शतु-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है। दसवीं दृष्टि से स्वराणि वासे दलम आव को देखने से पिता एवं राज्य द्वारा साम तथा सम्मान

'बृष' लान की कुष्टली के 'द्वितीयमाब' स्थित 'मनि' का कलादेश

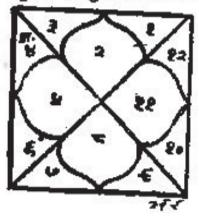
वृष सन्तः द्वितीयभावः शनि



दूसरे साथ में मिल्ल बुध की राशि पर स्थित शिंग के प्रभाव से जातक के धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु सुख में कुछ कमी आती है। तीसरी शतुद्धि से सतुर्वभाव की देखने से माता के सुख में कमी होती है। सातवीं शतु-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु बढ़ती है। दसवीं शतु दृष्टि से एकादसभाव की देखने के कारण आमदनी के अष्टि अवसर प्राप्त होते हैं। राज्य के श्रेस में श्री प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है।

'बृष्र' लग की कृष्टली के 'ठुतीयमाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

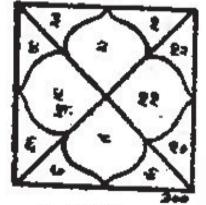
बुष लग्न : तृतीयभाव : शनि



तीसरे भाव में सबू चन्द्रमा की राशि पर स्थित सिन के प्रभाव के जातक का माई-बहिनों के साथ वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। तीसरी मिल-दृष्टि से पंचमधाव की देखने से विद्या सथा सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव की देखने से भाग्य की बच्छी वृद्धि होती है। दसवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव की देखने के कारण खर्षे में कभी रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों में भी लापरवाही बनी रहती है।

'क्व' सन्त की कृष्यली के 'बतुर्यमार्य रिकृत 'सन्ति' का फलादेश

बूष लग्नः चतुर्यभावः शनि

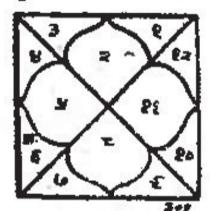


वृद्धि होती है।

भीषे धाव में सतु सूर्य की राशि पर स्थित केतुस्य सिन के प्रवाद से जातक का माता के साथ वैमनस्य रहता है तया मूमि-मनद के मुख में भी कभी रहती है। दीसरी उच्चदृष्टि से बच्छमाव की देखने से सतु-पद्ध पर प्रभाव रहता है तथा मामा से सक्ति मिनती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि बासे दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के केंद्र में सफलता मिनती है। दसवीं भित्र-दृष्टि से प्रथममान की देखने से खारीरिक प्रभाव एवं सम्मान में

'बूव' लग्न की कुच्छली के 'बंचमनाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

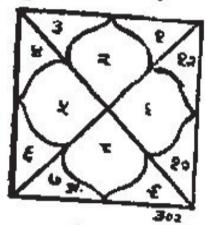
बुष लग्न : यंचमभाभ : शनि



पीचरें धाव में भित्र सुख की राशि पर स्वित सनिके त्रभाव से जातक की विद्या, शुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। तीसरी कतु-दृष्टि से सप्तमधाव की देखने से म्ही तथा व्यवसाय के पत्र में व्यवसाय रहता है। सातवीं सत्नु-वृष्टि से एकादक माव की देखने से आय के सावनों से मसन्तोष रहता है। एसवी मिल-वृष्टि से जितीयनाय की देखने के कारण अन तथा कुटुम्ब की सन्ति प्राप्त होती है। ऐसा जातक बनी, प्रतिष्ठित सथा भाग्यवान होता है।

'बूब' साम को कुपासी के 'बच्छभाव' स्पित 'हानि' का फलादेश

वृप लग्न : षष्ठमार्यः सनि

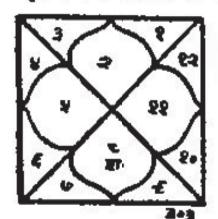


छठे धाव में मिल शुक्र की राणि पर उच्चस्य शनि के प्रभाव से जातक सन्नु-पन्न में विशेष प्रभावी रहता है सथा राज्य एवं व्यवसाय से छेद्र में भी अफलताएँ पाता है। तीसरी सन्नु-दृष्टि से अष्टमधाव की देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में चिन्ता-मुक्त लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वारणभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों से असन्तोषजनक सम्बन्ध रहता है तथा खर्च की भी परेशानी रहती है। दसवीं सन्नु-दृष्टि से तृतीयभाव की

देखने के कारण पराक्रम की बृद्धि होती है, पर भाई-बहिनों से सेल-मिलाप नहीं रहता।

'वृष' लग्न की कृष्यली के 'सप्तममाव' स्थित 'शनि', का फलावेश

बुध लग्न : सप्तमभाव: शनि

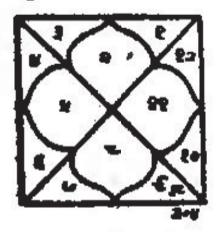


साववें धाव में धातु मंगल की राशि पर स्थित जुनि के प्रभाव से जातक की स्वी तथा व्यवसाय के केंद्र में सफलता एवं उन्नित प्राप्त होती है, परन्तु कुटुम्ब के संचालन में कुछ किनाइयाँ बनी रहती है। पिता तथा राज्य से भी स्वित प्राप्त होती है। तीसरी दृष्टि से नवमभाव की स्वराशि में देखने से आम्पानित बल-वान होती है तथा धमें में भी दिंच रहती है। धातवीं मित-दृष्टि के प्रथमभाव की देखने से शारीरिक सीन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। दसवी शतु-दृष्टि से खतुयें

भाव को देखने से माता, सूमि व भवन के सूख में कुछ कमी का अनुभव होता है।

'वृष लग्न की कृष्यती के 'अध्यमभाष' स्थित 'शनि' का फलावेश.

बूष सम्बः अष्टमभाव : शनि

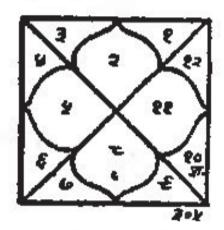


वाठवें भाव में अतु गुब की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जावक की कुछ कठिनाइयों के साथ दीर्घायु प्राप्त होती है। तीसरी दृष्टि से भाग्य, क्शमभाव की देवने से पिता, राज्य एवं सम्मान के पक्ष में कुछ कमी रहती है। भाग्योत्नित के लिए बहुत करूट उठामा पड़ता है। सातवीं मिक्ष-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण प्रयत्नपूर्वक छन का संख्य होता है। दसवीं मिक्र-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से भन्तान तथा विद्या के कीत में सफसता प्राप्त होती है। ऐसे जातक

की जायु तथा पुरातस्य का लाभ भी होता है।

'बृष्न' लक्त की कृष्टली के 'शवममाव' स्थित 'सर्नि' का फलादेश

बुष लग्न: नवसभाव: शनि

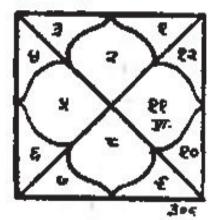


नवें भाव में स्वराणि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक धर्मात्मा तथा भाग्यवान होता है, साथ हो उसे पिता सथा राज्य से भी खेष्ठ लाम होता है। होसरी सलू-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से कुछ यलत रास्तों से आमदनी में वृद्धि होती है। सातवीं सलू-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से मनमुटाव रहता है। दसवीं उच्च दृष्टि से घष्ठभाव की देखने के कारण सलू-पक्ष पर अत्यन्त प्रभाव स्थापित होता है तथा

माता से भी लाभ होता है।

'बृव' लग्न की कुंध्डली से 'बशमसाव' स्थित 'शर्नि' का फलावेश

वृष सम्बद्ध दशमभाव : शनि

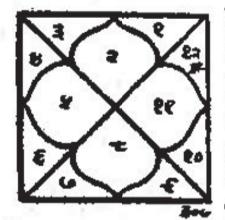


दसवें भाव में स्वराशिस्य शनि के प्रभाव से आतक को पिता, व्यवसाय एवं राज्य द्वारा पर्याप्त लाभ होता है तथा प्रतिष्ठा मिलती है। सीसरी नीच दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च की परेशानी एहती है तथा बाहरी सम्बन्धों में कुछ सुटि रहती है। सातवीं शतु-दृष्टि से चतुर्यभाव की देखने से माता, भूमि, भवन सथा घरेलू सुख में कभी आती है। दसवीं शतु-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्ती-पक्ष

भाग्यशाली होता है, परन्तु दैनिक जीवन में चिन्ताएँ रहती हैं। ऐसा जातक बढा भाग्यवान् तथा सफल व्यवसायी होता है।

'बृव' सम्त की कुब्बली के 'एकादशमाव' स्थित 'शर्बि' का फलादेश

वृष लग्न: एकादशभाव: श्रमि ।

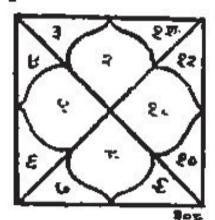


ग्यारहवें भाव में सत् गुरु की रामि पर स्वित हानि के प्रभाव से जातक की अपनी आमदनी के क्षेत में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलकाएँ मिलती हैं तथा पिता एवं राज्य-पक्ष से भी असन्तोषपूर्ण लाम होता है। यों, भाग्य की सक्ति प्रवल रहती है। तीसरी मिल दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से सारीरिक प्रभाव सथा आयु की सक्ति प्राप्त होती है। सात्वीं मिल-दृष्टि से पंषमभाव की देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के

क्षेत्र में सफलता मिनती है। इसवीं मनु-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु तका पुरातस्य के विषय में कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता है।

'बृव' साम की कुम्बसी के 'द्वादशमाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्नः द्वादशभावः शनि



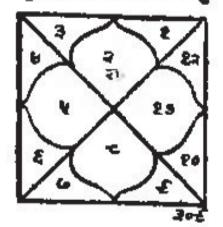
बारहवें भाव में नीच राशिस्य शनि के प्रभाव से जातक की खर्च एवं बाहरी सम्बन्धों में परेशानियों का अनुभव होता है। राज्य, पिता, व्यवसाय, भाग्य एवं धर्म के क्षेत्रमें भी कमियां रहती हैं। तीसरी मिल-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सामान्य साथ होता है। सातवीं उच्च दृष्टि से चट्ठ भाव की देखने से शतु-पक्ष पर प्रभाव रहता है सथा सगड़े-मुकदमे खादि में लाभ होता है। दसवीं दृष्टि

से स्वराशि के नवममान की देखने से भाग्य की थोड़ी-बहुत बृद्धि होती है, परन्तु सम्भान के क्षेत्र में कमी बनी रहती है।

'वृष' लग्न में 'राहु'

'बूव' लग्न की कृष्टली के 'प्रयमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

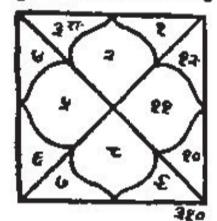
बुष लग्न : प्रयमभाव : राष्ट्र



पहले भाव में मित्र शुक्त की राशि पर स्थित राष्ट्र के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य सथा स्वास्थ्य में कुछ हानि होती है, परन्तु उसे गुप्त चतुराई एवं मनोवल द्वारा स्वार्थ-साधन में सफलता मिनती है। ऐसा जातक वड़ा साहसी सथा हिम्मती होता है। यह अनेक युक्तियों से अपने प्रभाव सथा व्यक्तित्व की बढ़ाने में सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे मूच्छी अथवा चोट का शिकार भी बनना पड़ता है।

'बृष्र' लग्न की कृष्टली के 'द्वितीयलाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

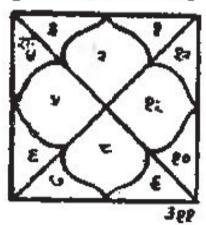
चृष लग्न: द्वितीयभाव: राष्ट्र



दूसरे भाव में स्थित उच्च के राष्ट्र के प्रभाव से जातक अनेक युक्तियों तथा चातुर्य के बल पर अपने धन सथा कुटुम्ब की वृद्धि करता है, परन्तु बीच-बीच में उसे कठिनाइयों सथा संघरों का सामना भी करना पड़ता है।

'बृब' सम्म की कृष्टली के 'तृतीयमाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

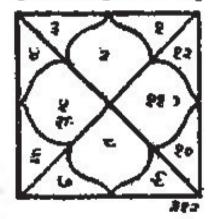
वृष अन्तः जुतीयभावः राहु



तीसरे भाव में सतु चन्द्रमा की राशि में स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाई-बहिन क्षया पराक्रम के सेत में कुछ कष्ट का अनुभव होता है, परन्तु बहु अपनी भीतरी कमजोरियों तथा चिन्ताओं की बड़ी चतुराई से छिपाकर हौसला बनाये रखता है और प्रकट रूप में बड़ा हिम्मती होता है।

'वृव' सम्म की कृष्टली-के 'बतुर्वभाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

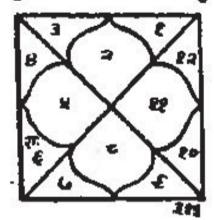
वृष लग्नःचतुर्वभावः राहु



चौथे धाव में सतु सूर्य की राप्ति पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की माता, सूमि, भवन क्षया सुख के क्षेत्र में कब्दों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। परदेश में जाकर रहना पड़ता है तथा अनेक दु:ख उठाने पड़ते हैं, अन्त में कठिन परित्रम क्षया सुप्त उपायों द्वारा सामान्यधन एवं सुख प्राप्त करता है।

'बृव' लग्न की कुम्बली के 'संबमकाब' स्थित 'राहु' का फलादेश

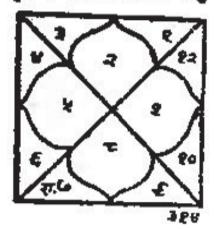
बुष सन्न : पंचमभाव : राहु



पाँचनें भाव में मिल गुर की राजि पर स्थित राहु के प्रभाव से, जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान का सुख मिलता है सथा मस्तिष्क-सम्बन्धी कुछ कमियों के साथ विद्या एवं बुद्धि की उन्नति होती है। ऐसा जातक अधिक बोलने बाला, गुंप्त युक्तियों से काम सेने बाला सथा नमेशाच होता है।

'बूब' लग्न की कुण्डली के 'बच्छमाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

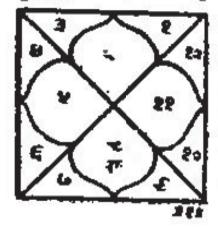
वृष लग्न : चष्ठमाव : राहु



छठे धाव में मिल मुक की नाशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक सतु-पक्ष का हिम्मत के साथ मुकाबला करता और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है। परन्तु माना के सुख में कुछ कभी रहती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों तथा गुप्त विद्याओं में कृशल होता है।

'बृब' लग्न की कुच्छली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

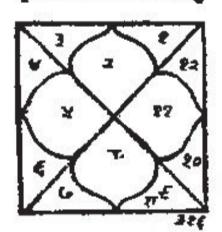
वृष लग्न:सप्तमभाव:राहु



सातवें भाव में सतू मंगल की राशि पर स्वित राहु के प्रभाव से जातक को स्की-पक्ष द्वारा कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती है। गुप्त युक्तिमों का आश्रव लेकर वह चोडी-बहुत सफलता भी प्राप्त कर लेता है। उसे इन्द्रिय-विकारों का भी सामना करना पढ़ता है।

'बृव' लान की कुच्छली के 'अव्ययकाव' स्थित 'राहु' का कलादेश

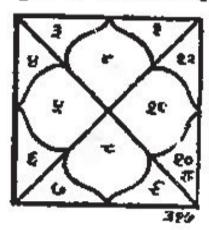
वृष लग्न : अप्टमभाव : राहु



बाठवें भाव में सत् गुरु की राजि पर स्थित बीच के राहु के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्व के क्षेत्र में बनेक कठिनाइयों तथा हानियों का सामना करना पड़ता है। परन्तु वह सौम्य तथा सज्जन बना रहता है। ऐसा जातक गुप्त जिन्ताओं से प्रस्त ही, गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है सथा बाहरी सम्बन्धों से जीवन-निर्वाह करता है।

'वृष' लग्न की कुच्छली के 'अवसमाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलादेश

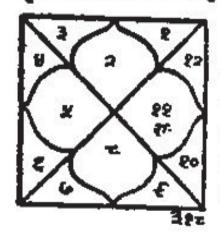
वृषलग्न : नवमभाव : राहु



नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राष्ट्र के प्रभाव से जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा धर्म, गुप्त शुक्तियों एवं कठिन परित्रम का आश्रय लेकर ही वह कुछ सफलताएँ प्राप्त करता है। उसके जीवन में सुख-दु:ख तथा गरीबी-अभीरी का कम निरन्तर खाता-जाता बना रहता है।

'बृब' लग्न की कुच्छली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

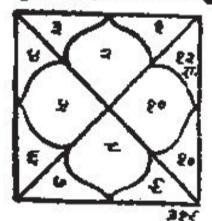
बुषलग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाव में भिन्न भनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की अपने पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है सथा सफलता पाने के लिए गुप्त युक्तियों, परिश्रम एवं धैर्य का आश्रय लेना पड़ता है। परन्तु ऊपरी दृष्टि से वह एक अमीर तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति जान पड़ता है।

'बृष' संग्न की कुच्छली के 'क्कारशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

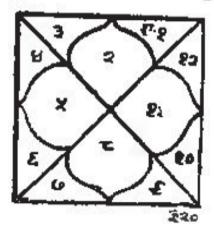
वृषलग्न: एकादशभाव: राहु



ग्यारहवें भाव में सत् गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से कुछ क्कावटों के लाम जातक की आयदनों के क्षेत्र में सफलताएँ प्राप्त होती रहती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त गुक्तियों तथा कठिन परिश्रम के द्वारा लाभ कमाता है। संकटों में भी यह अपना सैर्य नहीं खोता, अतः अन्त में उसे सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति स्वार्षी भी बहुत होता है।

'बृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वावराभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृषलग्न : द्वादशभाव : राह



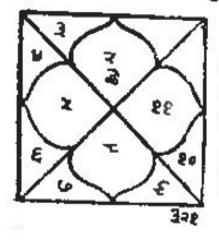
बारहवें भाव में सतु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को खर्च चलाने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और चातुर्य सथा गुप्त युक्तियों का आश्रय सेना पड़ता है।

कपरी दिखावे में ऐसा व्यक्ति सम्पन्न तथा प्रमावशाली प्रतीत होता है। कठिन परिश्रम के द्वारा उसे सफलताएँ भी मिलती हैं।

'वृष' लग्न में 'केतु'

'बृब' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमधाव' स्थित 'केतु' का कलादेश

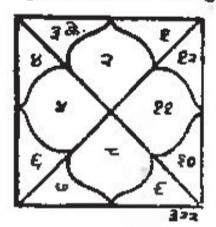
वृषलग्नः प्रथमभावः केतु



पहले भाव में मिछ शुक्त की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कभी आती है स्था मन में कुछ चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं। ऐसा व्यक्ति अपने शारीरिक अम एवं योग्यता के बलबूते पर अन्य लोगों को प्रभावित भी करता है। उसके शरीर पर किसी थाव अथवा चोट का चिह्न भी होता है।

'बूब' सरन को कुण्डली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

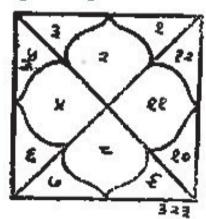
वृषलग्न : द्वितीयभाव : केतु



दूसरे भाव में शतु गुरु की राशि पर स्थित बीच के केतु के प्रभाव से जातक की धन एवं कुटुम्ब के मामले में बनेक चिन्ताओं तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए कठिन परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों का सहारा लेकर धन सथा कुटुम्ब के क्षेत्र में यित्किचित् सफलता ही प्राप्त कर पाता है।

'बृब' साम की कृष्टली के 'तृतीयसाब' स्थित 'केतु' का फलादेश

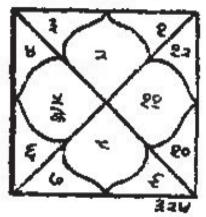
वृषलग्न : सृतीयभाव : केतु



हीसरे धाव में सतु चन्द्रमा की रामि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आती है स्था भाई-बहिनों के सम्बन्ध से भी कब्द एवं हानि का सामना करना पड़ता है। परन्तु ऐसा जातक अपनी आन्तरिक दुवंलता को छिपाये रखकर गुप्त युक्तियों एवं कठिन परित्रम के सहारे अभावों को दूर करने में थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है।

'वू-' लग्न की कुच्छली के 'बतुर्वभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

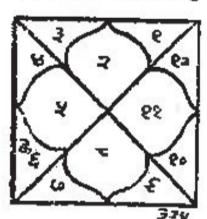
वृषलग्न : चतुर्यमाव : केतु



बौधे भाव में सतु सूर्य की राणि पर स्थित केतु के प्रभाव से आतक की माता, भूमि, भवन तथा पारिवारिक सुख के क्षेत्र में कठिनाइयों का मामना करना पड़ता है। वह गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के सहारे जीवित रहता है। ऐसे व्यक्ति को स्वदेश त्याग कर परदेश में भी रहना पड़ता है।

'बृष' लग्न की कृष्टली के 'यंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

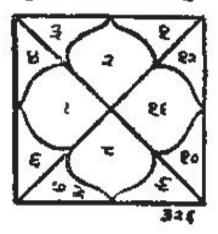
वृषलग्न*ःपंच*मभाव : केतु



पीचनें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को निद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, यरन्तु अपने साहस एवं गुप्त युक्तियों के बल पर सामान्य सफलता भी प्राप्त कर लेता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, धैयंवान् तथा अपने मन्तव्य को प्रकट न करने बाला होता है।

'बूव' सम्म की कुम्बली के 'बच्छनाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

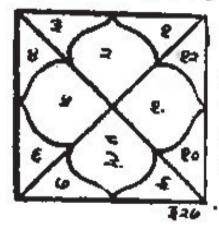
वृषलग्नः पष्ठमानः केतु



छठे भाव में मित्र शुक्त की राशि पर स्थित केतु के प्रमाव से जातक शतुपक्ष पर अपना विशेष प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होता है तथा धैर्य, परिश्रम, गुप्त गुन्ति, साहस खादि से बल पर समस्त विकन-बाधाओं पर विजय प्राप्त करता है। वह बड़ा परिश्रमी, चतुर तथा धैर्यवान् होता है। मामा के पक्ष से कुछ हानि भी होती है।

'बुव' सम्म की कुन्कसी के 'सप्तममाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

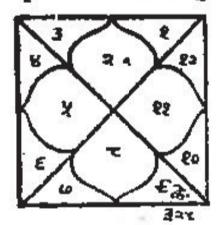
वृषलग्नः सप्तमभावः केतु



सातवें भाव में सबू मंगल की राशि पर स्थित केंद्र के प्रभाव से जातक की स्त्री के पक्ष में बहुत कच्ट तथा हानि का शिकार होना पड़ता है। वह मूलाभय के रोगों से पीड़ित होता है। व्यवसाय तथा घरेलू जीवन के क्षेत्र में भी उसे कभी-कभी बड़ी असफलताएँ मिलती हैं, परन्तु वह अपने श्रम द्वारा कुछ शक्ति भी प्राप्त करता है।

'वृष' लम्न की कुष्पती के 'अष्टममाव' स्थित 'केंतु' का फलावेश

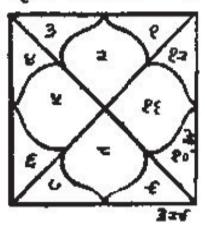
वृषलग्न:अष्टमभाव:केट्र



भाठवें भाव में शतु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व सम्बन्धी कोई विशेष लाभ होता है। वह जीवन-निर्वाह के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा बड़ा साहसी, धैयंवान् तथा गुप्त युक्तियों से सम्पन्न होता है। वह अपने जीवन को ऐश्वयंशाली हम से व्यतीत करता है।

'बुब' लाम की कुकाली के 'मदममाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

बुषलग्न : नवमभाव : केतु

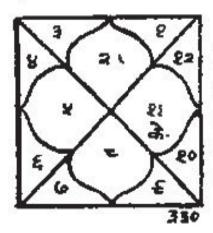


नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा अपने भाग्य की उन्नति करता है। धर्म में आस्था रखते हुए भी विशेष श्रद्धा नहीं दिखाता।

संक्षेप में, ऐसा जातक धर्म का दिखावा न करने बाला, साहसी, परिश्रमी तथा गुप्त शक्तियों द्वारा काम लेने वाला होता है।

'बुव' लाम की कुण्डली के 'दशममाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

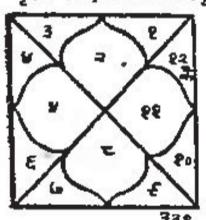
बृषलग्न : दशमभाव : केंतु



दसवें भाव में अपने मित्र शित की राणि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की पिता तथा राज्य के क्षेत्र में कुछ हानि उठानी पड़ती है। यह बड़े परिश्रम के साथ सामान्य सफलता प्राप्त करता है। यह अपरी दिखावें में अभीर, मुखी तथा सम्मानित प्रतीत होता है, परन्तु भीतर से कमजोरी बनी रहती है।

'वृथ' सम्म की कुण्डली के 'एकावशकाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

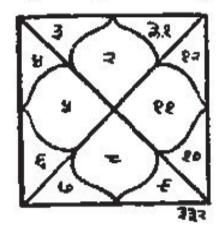
वृषलग्न : एकादशभाव : केतु



ग्याहरवें भाव में अपने शतु गुरु की गाणि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की अपनी आमदनी के श्रेल में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसके जीवन में कभी अच्छा लाभ होता है शो कभी विशेष संकट भी सामने आते हैं। ऐसा व्यक्ति माहसी तथा परिश्रमी होता है।

'वृष' सम्म की कुण्डसी के 'हावशमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

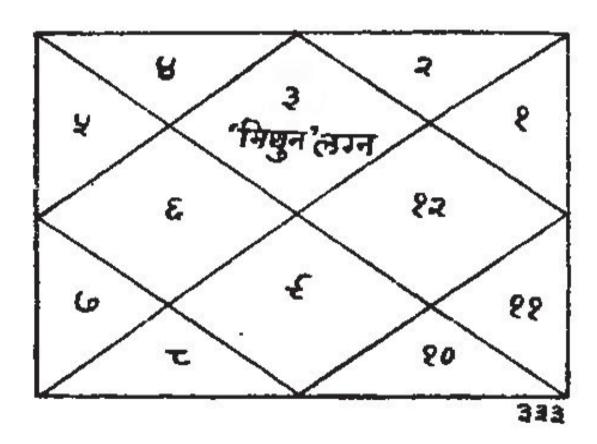
र्वृषलग्न : द्वादशभाव : केतु



बारहवें भाव में शतु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की अपना खर्च चलाने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी सम्बन्धों से की परेशानियां आती रहती हैं।

ऐसा जातक बड़ा परिश्रमी, उद्योगी, वैर्यवान् तथा साहसी होता है।

मिथुन लग्न



['मिबुन' सम्त की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'मिथुन' लग्न का फलादेश

'मिशुन' साम में जन्म लेने वाले जातक का चेहरा गोल सथा शरीर का रंग गेडूबां होता है। वह नृत्य-वाद्य खादि संगीत की कलाओं का प्रेमी, किंदि, हास्य-प्रवीण जिल्पज्ञ, विनम्न, परोपकारी, तीर्यप्रेमी, गणितम, दूत-कमं करने में कुशल, ऐक्वयं-शाली, धनी, मुखी, चतुर, मधुरभाषी, दानी, मुशील, विषयी, स्त्रियों में खासकत, बहुमित्रवान्, बहु सन्तिवान्, अनेक प्रकार के भोगों का उपभीग करने वाला, सुन्दर केशों वाला, राजा के समीप रहने वाला तथा राजा द्वारा ही पीड़ा प्राप्त करने वाला होता है।

'मिश्रुन' लग्न वाला जातक अपनी प्रारंभिक अवस्था में सुखी, मध्यमावस्था में दु:खी तथा अन्तिमावस्था में पुनः सुखोपभोग करने वाला होता है। उसका भाग्यो-दय ३२ से ३५ वर्ष की आयु के बीच होता है। इस लग्न वाला जातक मध्यम आयु प्राप्त करता है। 'मिथून' लग्न बालों की क्षपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थामी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डलियों में संख्या ३३४ से ४४१ के बीच देखना चाहिए।

गोचर कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'मिथुन' लग्न में 'सूर्य' का फलावेश

- १. 'मिथुन' लग्न बालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३४ से ३४५ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'मिथुन' लग्न बालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश, निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'-

- (क) 'मेष' राशि पर ही तो संख्या ३३४
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो सख्या ३३%
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३३६
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३३७
- (छ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३३८
- (च) 'कन्या' राजि पर हो तो संख्या ३३६
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो सख्या ३४०
- (अ) 'वृश्चिक' राक्षि पर ही तो संख्या ३४१
- (झ) 'धनु' रामि पर हो तो संख्या ३४२
- (ङा) 'सकर' राशित पर हो तो संख्या ३४३
- (ट) 'कूम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३४४
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३४६

'निथुन' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१. 'मिथुन' सम्म बालों की क्षपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४६ के ३५७ के बीच देखना चाहिए। २- 'मिथून' लग्न बालों की गोचरकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस दिन 'चन्द्रमा'---

- (क) भोष' रामि पर हो तो संख्या ३४६
- (ख) 'धृष' राशि पर हो तो संख्या ३४७
- (ग) 'मिथून' राजि पर हो तो संख्या ३४८
- (य) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३४६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो सख्या ३४०
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो सख्या ३५१
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३५२
- (अ) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३५३
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३५४
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो सख्या ३४४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो सख्या ३५६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३४७

'मिथुन' लग्न में 'भंगल' का फलादेश

- १. 'मिथुन' लग्न बालों की क्षपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४० से ३६६ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'मिथुन' लग्न बालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

मित्र महीने में 'संगल'-

- (क) 'सेष' राशि पर हो तो संख्या ३५ ज
- (ख) 'धृष' राशि पर हो तो संख्या ३५६
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३६०
- (थ) 'कर्क' राश्चिपर हो तो संख्या ३६१
- (ङ) 'सिंह' राणि पर हो तो संख्या ३६२
- (च) 'कन्या' राशिय पर हो तो संख्या ३६३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३६४
- (अ) वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३६५
- (इस) 'इन्तु' राक्षि पर हो तो संख्या ३६६
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३६७
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या ३६०
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३६६

'मिथुन' लग्न में 'बुध' का फलादेश

- १- 'मिथून' लग्न वालों की अपनी अंन्मकुण्डली के विभिन्ति बालों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७० से ३८१ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३७०
- (ख) 'बूष' रामि पर हो तो संख्या ३७१
- (ग) 'नियुन' राशि पर हो तो संख्या ३७२
- (व) 'ककं' राक्षि पर हो तो संख्या ३७३
- (ङ) 'सिंह' राश्चिषर हो तो संख्या ३७४
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३७५
- (छ) 'तुला' राक्षि पर हो तो सख्या ३७६
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३७७
- (झ) 'धनु' राश्चिपर हो तो संख्या ३७**८**
- (ट्या) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३७६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३८०
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३५१

'मिथुन' लग्न में 'गुर' का फलादेश

- १. 'मिथून' लग्न वाले को क्षपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३८२ से ३६३ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'मिथून' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'---

- (क) 'भेष' राशि पर हो तो संख्या ३<<
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३८३
- (म) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३५४
- (घ) 'कर्क' राजि पर हो तो संख्या ३८%
- (ङ) 'सिंह' राजि पर हो तो संख्या ३८६
- (च) 'कन्या' राश्चिषर हो तो संख्या ३६७

- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३८०
- (ज) 'वृश्चिक' राक्षि पर हो तो संख्या ३८६
- (झ) 'सर्नु' राशि पर हो तो सख्या ३६०
- (अर) 'मकर' राजि पर हो तो संख्या ३६१
- (ट) 'कुम्म' रामि पर हो तो संख्या ३६२
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३६३

'मिथुन' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

- १. 'मिधुन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का म्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३६४ से ४०५ के बीच देखना चाहिए।
 - २. 'मिथुन' लग्न बालों को गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक'---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो सख्या ३६४
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३६५
- (य) 'नियुन' राशि पर हो तो संख्या ३६६
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३६७
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३६c
- (च) 'कन्या' रामि पर ही तो संख्या ३६६
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४००
- (ज) 'वृश्चिक' राक्षि पर हो तो संख्या ४०१
- (अ) 'सनु' राणि पर हो तो संख्या ४०२
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४०३
 - (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या ४०४
 - (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४०५

'मिथुन' लग्न में 'शनि' का फलादेश

- १. 'मिथुन' लग्न बालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भाषों में स्थित 'गनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४०६ से ४१७ के बोच देखना चाहिए।
 - २- 'मियुन' सग्न बालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्पित 'शर्नि'

का अस्यायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरल-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

- (क) 'मेव' राशि पर हो तो संख्या ४०६
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४०७
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४०%
- (च) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४०६
- (ङ) सिंह' रामि पर हो तो संख्या ४१०
- (व) 'कन्या' राजि पर हो तो संख्या ४११
- (छ) 'तुला' राजि पर हो तो संख्या ४१२
- (थ) 'वृश्चिक' राशि पर ही तो संख्या ४१३
- (स) 'धनु' राजि पर हो तो संख्या ४१४
- (ठा) 'सकर' राक्षि पर ही तो संख्या ४१५
- (ट) 'कुम्भ' राजि पर हो तो संख्या ४१६
- (ठ) 'मोन' राशि पर हो तो संख्या ४१७

'मिथुन' लग्न में 'राहु' का फलादेश

- १- 'मिथून' लग्न बालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१% से ४२६ के बीच देखना चाहिए।
- २. मिथुन' लग्न बालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस वर्ष में 'राहु'--

- (क) 'मेव' राशि पर हो तो सख्या ४१=
- (ख) 'वृष' राश्चिपर हो तो संख्या ४१६
- (ग) 'मिधुन' र।शि पर हो तो संख्या ४२०
- (व) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४२१
- (इ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४२२
- (च) 'कन्या' राक्षि पर हो तो संख्या ४२३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४२४
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४२५
- (झ) 'धनु' राक्षि पर हो तो संख्या ४२६
- (ञा) 'सकर' राक्षि पर हो तो संख्या ४२७
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४२८
- (ठ) 'मोन' राशि पर हो तो संख्या ४२६

'मिथुन' लग्न में 'केतु' का फलादेश

- १. 'भियुन' लग्न बालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४३० से ४४१ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'मिथुम' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

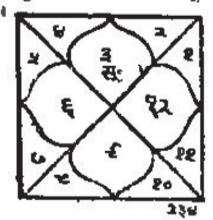
जिस वर्ष में 'केतु'---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४३०
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४३१
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४३२
- (घ) 'कर्क' राक्षि पर हो तो संख्या ४३३
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४३४
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ४३५
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४३६
- (ज) 'वृष्टिक' रामि पर हो तो संख्या ४३७
- (झ) 'चनु' राशि पर हो तो संख्या ४३=
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४३६
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या ४४०
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४४१

'मिथुन' लग्न में 'सूर्यं'

'मियून' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमशाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : प्रयमभाव : सूर्य



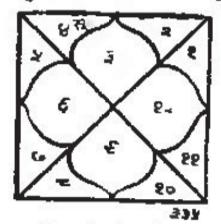
पहले भाव में अपने मित्र बुध की गाशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से आतक परम तेजस्वी, साहसी, परिथमी तथा उद्योगी होता है। वह वड़े-बड़े काम करता है। शरीर पुष्ट होता है। उसे माई-बहिनों का पर्याप्त सुख भी मिसता है।

यहाँ से सूर्य द्वारा सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव की देखने के कारण जातक को व्यवसाय एवं स्त्री-पक्ष में भी सफलता मिलती है सथा उसका गृहस्य जीवन सुखी एवं स्नेहपूर्ण होता है।

ऐसी यह स्थिति वाला जातक बड़ा हिम्मती, फुर्तीसा. कोधी शया प्रमावशाली व्यक्तिस्व का धनी होता है।

'मिथुन' लग्न को कुखली के 'द्वितीय भाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : दितीयभाव : सूर्य



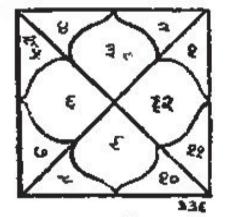
तथा हिम्मती होता है।

दूसरे भाव में मिल 'चन्द्रमा' की राशि पर सूर्व के प्रभाव से जातक व्यपने पराक्रम द्वारा धन तथा कुटुम्ब के सुख की बढ़ाता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ न्यूनता रहती है।

सातवीं शत्नुदृष्टि से अष्टमभाव के देखने से जातक को पुरातस्व के लाभ में कमी रहती है तथा दैनिक जीवन में भी कुछ अर्थाति बनी रहती है। ऐसी महस्थिति का जातक धनी

'मियुन' लग्न की कुञ्जली के 'तृतीयशाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : तृतीय भाव : सूर्य



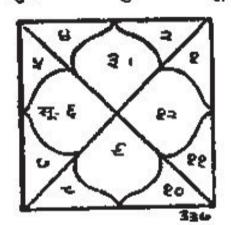
त्तथा सुखी होता है।

तीसरे भाव में स्वराशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की भाई-बहिनों की पूर्ण शक्ति मिलती है तथा वह अत्यन्त पराक्रमी भी होत है।

सातवीं शबुद्धि से नवमभाव की देखने के कारण जातक के भाग्य तथा धर्म के क्षंत्र में कुछ कमी आ जाती है। सामान्यतः ऐसी ग्रह-स्थिति वाला जातक बढ़ा पराक्रमी, प्रभावशाली

'मियून' लग्न को कुण्डली के 'बतुबंशाय' स्थित 'सूर्व' का फलादेश

मियुन लग्न: चतुर्य भाव: सूर्य



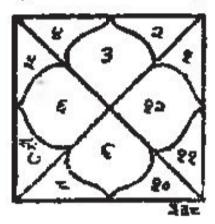
चौये भाव में मिल सुखकी राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-वहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है । साथ ही माता, भूमि, भवन, संपत्ति एव सुख का भी साभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा

च्यक्ति बनी, सुखी तथा प्रभावशाली होता है।

'मिनुन' साम की कुन्दसी के 'संबमभाष' स्थित 'सूर्व' का-कलावेश

मिथुन सन्तः पंचमभावः सूर्ये

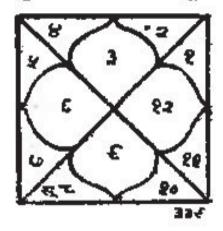


पौचर्ये भाग में स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक की विद्या-बुद्धि में कभी रहती है तथा सन्तान से कब्ट मिलता है। पराक्रम में भी कमजोरी रहती है।

साप्तवीं उच्चदृष्टि से मिलराशिस्य एका-दल भाव को देखने के कारण जातक गुप्त युक्तियों तथा असत्य-भाषण आदि का आश्रय लेकर धन कमाता है।

'मिनुन' लाम की कुछलो के 'बच्छकाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

मिधुन सम्त : वव्छभाव : सूर्ये

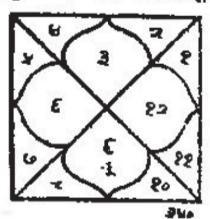


छठे भाव में मिल मंगल की राशि पर स्थित सूर्व के प्रभाव से जातक अपने शतुओं पर विजय पाता है। भाई-बहिनों के साथ कुछ वैमगस्य रहता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवी शतुद्धि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च को अधिकता रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कोई अधिक सुख नहीं मिलता। ऐसा व्यक्ति साहसी तथा कठिन परि-खमी होता है।

'मिबुन' तान की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

मिधुन लग्न : सप्तमभाव : सूर्ये

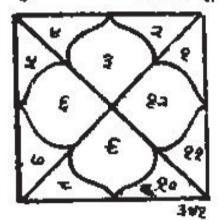


सातवें भाव में मिल गुरु की राशि धर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की स्ती से मुख, शक्ति एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा परिश्रम द्वारा व्यवसाय में भी अच्छा लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रयम भाव की देखने के कारण जातक की शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव का लाभ भी होता है। ऐसे व्यक्ति का गाईस्थ-जीवन सुखमय होता है।

'मियुन' सन्न की कुण्डली के 'अष्टमधाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

मिथून लग्न : अष्टमभाव : सूबै

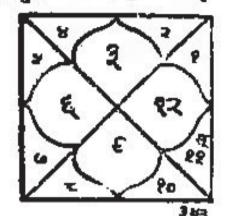


आठवें भाव में शत्नु 'शिन' की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व एवं आयु के क्षेत्र में कभी जाती है तथा भाई-वहिन का सुख एवं पराक्रम भी न्यून रहता है।

सातवीं मिलदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने के कारण व्याधिक क्षेत्र में परिश्रम से लाभ होता है तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है।

'वियुत' तरन की कुण्डकी के 'मबमनाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

मिधुन लग्न : नवसभाक : सूर्य



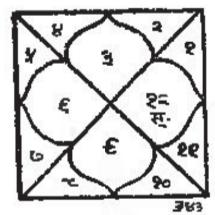
नवें भाव में शत्नु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा भाष्य की उन्नति करता है तथा धर्म-पालन में उदासीन-सा रहता है। भाई-बहिनों से सम्बन्ध भी सन्तीय-जनक नहीं रहता।

सातवीं मिलदृष्टि से स्वराणि वाले हुतीय भाग की देखने के कारण पराजम में वृद्धि होती है

तथा भाई के द्वारा थोड़ा सहयोग भी भाष्त होता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रमी, उद्योगी तथा तेजस्वी होता है।

'वियुत' लान की कुण्डली के 'दशमधाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

मिथुन लग्नः दशमभावः सूर्ये



दसर्वे भाव में मिल गुरु की राशि पर स्थित सूर्वे के प्रभाव से आतक की पिता की अच्छी शक्ति मिलती है तथा राज्य एवं व्यवसाय से भी लाभ तथा सम्मान प्राप्त होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्य भाव को देखने के कारण पराश्रम की वृद्धि होती है तथा श्रूमि, भवन, सुख एवं मातृ-पक्ष में सफलता मिलती है। ऐसा

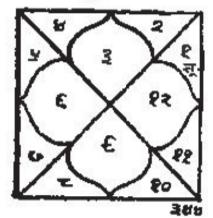
जातक सुखी एवं सन्तुष्ट रहता है।

'मियुन' सान को कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

यारहवें भाव में उच्च राशिस्थ सूर्य के प्रभाव मिथुन लग्नः एकादशभावः सूर्य

से जातक का पराक्रम बढ़ा रहता है और वह यथेप्ट लाभ प्राप्त करता है। भाई-बहिन के सुख में भी वृद्धि

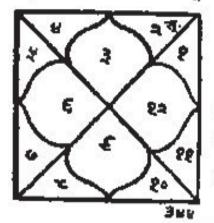
होती है।



सातवीं नी चदुष्टि से पचमभाव को देखने के कारण सन्तान-पक्ष में कुछ कमी आती है तथा विद्या-लाभ में भी रकावटें पड़ती हैं। ऐसा व्यक्ति रू वे स्वभाव का तथा अत्यन्त परिश्रमी और साहसी होता है।

'मियुन' लान की कुछली के 'द्वादसभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न: द्वादशभाव: सूर्य

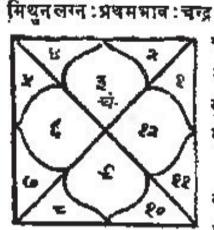


बारहवें भाव में शलु शुक्र की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मिलदृष्टि से पष्ठभाव को देखने के कारण शलुपक्ष मे प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी भीतरी कमजीरी को दवाकर, ऊपर से वडी हिम्मत दिखाता है तथा परिश्रमी होता है।

'मिथुन' लग्न में 'चन्द्रमा'

'मियुन' सान की कुच्छली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलावेश

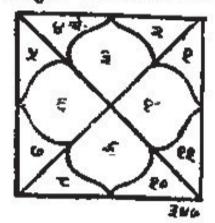


पहले भाव में .मित बुध की राणि पर स्थित पन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपनी शारीरिक गवित तथा मनोबल से धनोपार्जन करला है तथा पर्याप्त कौटुम्बक सुख की भोगता है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर, सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

मातवीं मिलद्ष्टि से मप्तमभाव की देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी पर्याप्त सफलता एव सुख की प्राप्ति होती है।

'वियुत' सान की कुष्डली के 'डितीयमाद' स्थित 'बन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

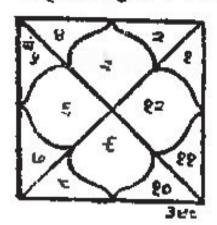


दूसरे भाव में स्वराशि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से आतक की घन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है।

सातवीं शबुद्धि से खब्टमभाव की देखने के कारण जातक की दैनिक जीवन में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा पुरासत्त्व की भी हानि होती है। मानसिक रूप से चिन्तित रहते हुए भी ऐसा जातक मुखी तथा यशस्वी होता है।

'मिनुन' सान की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चलामा' का फलादेश

मियुनलग्न: तृतीयभाव:चन्द्र

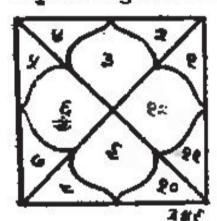


तीसरे भाव में मिल सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-वहिनों के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं श्वन्नुदृष्टि से नवस्थाव की देखने के कारण भाग्योन्नित में स्कावटें आती हैं तथा धर्म का पक्षा भी कम बोर रहता है। ऐसा जातक धनी, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है। यह धर्म की विशेष महत्त्व नहीं देता।

'सियुन' साम की कुछली के 'बहुर्यमार्व स्थित 'बन्द्रमा' का फलादेश

मियुनलग्न : चतुर्वभाव : चन्द्र

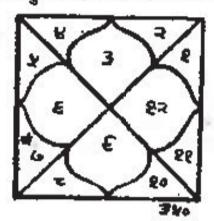


भीये भाव में मिल बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की माता के सुख में कबी आती है परन्तु सूमि, भवन, सम्पत्ति एवं कुटुम्ब का सुख खूब मिलता है।

सातवीं मिलवृष्टि से ह्रश्मभाव की देखने के कारण पिता एवं राज्य के द्वारा भी सुख तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक धनी, सुखी, प्रभावशासी तथा व्यवसाय में सफलता पाने वाला होता है।

'मिथुन' साम की कुण्डली के 'यंजनमाव' स्थित 'चलामा' का फलावेश

मिथुन लग्न: पंचमभाव: चन्द्र

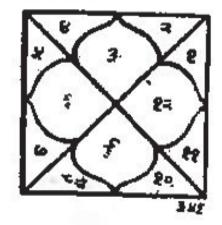


पौन में भाव में सामान्य मित शुभ की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष में कुछ स्कावटें आती हैं, परन्तु विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है।

सातवी मिलवृष्टि से एकावणभाव की देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, चतुर तथा प्रतिष्ठित होता है।

'सियून' लान की कुष्यली के 'चळताब' स्थित 'चल्रमा' का फलावेल

मिथुन सरनः चष्ठभावः चन्द्र



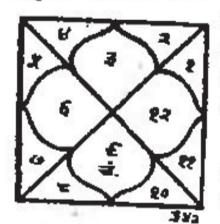
छठे आव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करता है तथा शत्रु-पक्ष द्वारा भी चोट खा सकता है।

सातवीं सामान्य मिलद्पिट से द्वादशमाय को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्वानों के सम्पर्क से साभ होता है।

ऐसा व्यक्ति छन कमाने के विषय में अपयशी होता है।

'मियुन' लान की कुच्छली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बन्धमा' का फलावेर.

मिथुन सन्त : सप्तमभाव : चन्द्र सातवें भाव में मिळ गुरु की राशि पर स्थित

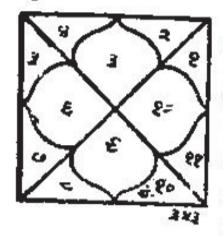


चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की स्ती-पक्ष में कुछ रकावटों के साथ सफलता मिनतो है तथा विवाह के बाद भाग्योन्नति होती है। व्यवसाय एवं भोगादि का पर्याप्त सुख भी सभी मिनता है।

सातवीं मित्रवृष्टि से प्रयमणाय की देखने के कारण जातक का शरीर सुन्दर होता है और प्रनिष्ठा भी प्राप्त करता है।

'मिनुन' सान को कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : बष्टमभाव : चन्द्र

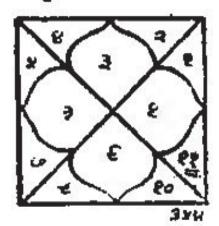


अठिवें भाव में शतु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में परेशानी रहती है तथा धन एवं कुटुम्ब के सुख में भी बाधा आती है। दैनिक जीवन में भी परेशानियां रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वितीयभाव की देखने के कारण नव तथा कुटुम्ब की उन्नति के साधन प्राप्त होते रहते हैं तथा उनकी प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम भी करना पड़ता है।

'मिनुन' सन्त की कुण्डली के 'जबमभाव' स्थित 'सन्द्रमा' का फलादेश

मियुनलग्न: नवमभाव: चन्द्र

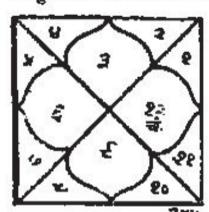


नवें भाव में शसू शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक धन की वृद्धि के लिए धर्म का पासन करता है तथा भाग्य-पक्ष में कुछ बसन्तीय के साय साम होता है।

सालवीं मिलदृष्टि से मृतीयभाव को देखने के कारण जातक की भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा उसके पराकम में भी वृद्धि होती है।

'मियून' लान की कुञ्डली के 'दशमचाव' स्थित 'बन्त्रमा' का फलादेश

मिथुन सन्तः दशमभावः चन्द्र

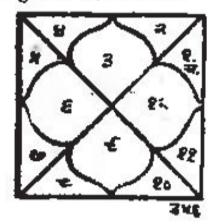


दसवें भाव में मित गुरु की शिश पर स्थित चन्द्रभा के प्रभाव ने आतक की पिता तथा राज्य द्वारा सहयोग, सुन्न, धन एवं प्रतिष्ठा आदि का साभ होता है तथा व्यवसाय की उन्नति होती है।

मातवीं मिलदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने के कारण जातक की माता, भूमि. भवन एवं घरेलू-सुखों का भी लाभ होता है, परन्तु धन की उन्नति में कुछ खटकाव सा अनुभव होता है।

'सिबुन' स्तरन की कुष्यली के 'श्कादशयाव' स्थित 'बलामा' का फलादेश

मिथुनसम्न: एकादशभाव: चन्द्र



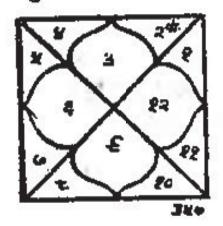
ग्यारहवें भाव में मिल मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा से आतक की धन का पर्याप्त लाभ होता है तथा कीष्टुम्बिक सुख भी विजया है।

सातवीं सामान्य मिसदृष्टि से एचमभाव को देखने के कारण विद्या, युद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति बिद्धान्, बुद्धिमान्, सन्ततिवान् धनी, सुबी तथा यशस्वी होता है।

'सियुन' स्नान की कुच्छली के 'हार्दशमाय' स्थित 'चन्द्रमा' का फलावेश

विषुत् सन्तः द्वादशभावः चन्द्र



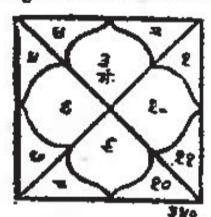
थारहवें भाव में उच्चस्थ चन्द्रमा के प्रमाव से आतक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहता है। कुटुम्ब की शक्ति में कुछ कमी जाती है।

सातवीं नीचदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक को शतुष्टा में स्वयं मुक कर अपना काम निकालना पड़ता है तथा रोग, झगड़े आदि के कारणमन में योड़ी-बहुत अमान्तिभी बनी रहती है।

'मिथुन' लन में 'मंगल'

'वियुत' तस्त को कुण्डली के 'प्रयममाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मियुनलम्नः प्रथमभावः संगल



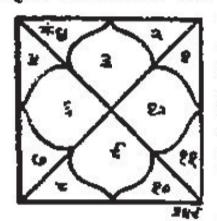
पहले भाव में मिल बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक अपने मारीरिक अम द्वारा यथेष्ट धन कमाता है तथा शत्रुपक्ष में भी विजयी होता है चौथी मिलद्ष्टि से चतुर्यमांव की देखने के कारण माता तथा घरेलू सुख का असन्तोषपूर्ण लाम होता है।

सातवीं मिल्लदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री की रोग तथा परेशानियां रहती हैं, परिश्रम

द्वारा व्यवसाय से साम होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से बामु तथा पुरातस्य का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति कोमी सवा सगड़ासू होता है।

'वियुत' लग्न की कुष्पली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शंगल' का खलावेश

मियुनलग्न : द्वितीयभाव : मंगल



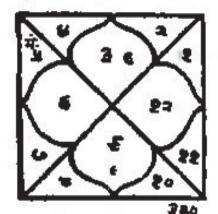
दूसरे भाव में मिल चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब की हानि उठानी पड़ती है। शत्रुपक्ष भी नुकसान पहुँचाता है। जुए-सट्टे में भी हानि होती है। चौथी दृष्टि से पंचमभाव की देखने से सन्तान पक्ष में कमी रहती है तथा विद्या-बुद्धि का साभ भी गुप्त युक्तियों से होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। आठवीं सत्-

दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म में रुचि नहीं होती तथा भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं।

'मिनुन' लान को कुण्डली से 'तुतीयभाव' स्थित 'अंगल' का फलादेश

मियुनलग्न: सुतीयभाव: मंगल तीसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित



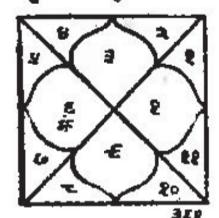
मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुखे कुछ परेशानों के साथ मिलता है तथा पराकम में वृद्धि होती है। बौधी दृष्टि से स्वराशि वाले धष्ठभाव को देखने से शतुपक्ष पर विवय मिलती है तथा शतुकों से लाभ होता है।

सातवीं समुद्धित से भवमभाव की देखने से भाग्य सवा धर्म का सामान्य लाभ होता है। बाठवीं मिल्रद्धित से दशमभाव की देखने के कारण राज्य तथा

पिता के पक्ष से यश. धन आदि का लाभ होता है तथा प्रभाव में वृद्धि होती है।

'मियुन' लग्न को कुम्मेली के 'बतुर्यमाव' स्थित 'अंगल' का फलावेश

मियुनलग्न :चतुर्थभाव : मंगल

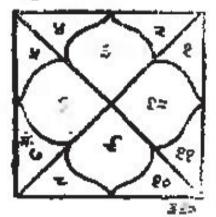


चौथे भाव में मिल बुंध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की माता से सामान्य वैमनस्ययुक्त साभ होता है तथा भूमि, भवन एवं घरेलू सुख भी कुछ कठिनाइयों के साथ ही मिलता है। चौथी मिलद्र कि सप्तमसाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सामान्य परेशानियाँ रहती हैं। सासवीं मिलद्र कि सम्मभाव की देखने से पिता एवं राज्य द्वारा यश एवं साभ मिलता है। आठवीं दृष्टि से स्वराधि के एकादशभाव की देखने से जातक की

आमदनी अच्छी रहती है।

'मियुन' लाम की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

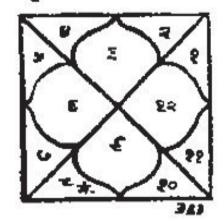
मियुनलग्नः पंचमभावः मगल पाँचवें भाव में सामान्य मित्र शुक्त की राशि



पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को मन्तान-पक्ष द्वारा कुछ वैमनस्य के साम लाभ होता है तथा परिश्रम द्वारा विद्या-बुद्धि प्राप्त होती है। चौथी उच्चद्षिट से अग्रु-वृद्धि तथा पुरातस्य का साभ होता है। आत्वी दृष्टि से स्वराशि वाले एकादशमाय को देखने से गुप्त युन्तियों एवं परिश्रम द्वारा पर्योप्त लाभ होता है। आठवी दृष्टि से द्वादशभाय की देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से नाम होता है।

'मिथुम' सान की कुष्यली के 'बष्टभाव' स्थित 'मंगल' का खलावेश

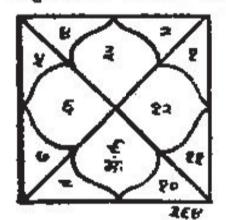
मिथुनलम्न : बष्ठभाव : मंगल



छठे भाव में स्वराशि-स्थित मगल के प्रभाव से जातक को शतुपक्ष पर विशेष सफलता मिलती है और शतू, सगड़े-टट्टे तथा बामा के द्वारा लाभ होता है। बीधी शतुद्धि से नवमभाव की देखने से धर्म तथा भाग्य के क्षेत्र में कुछ कभी रहती है। सातवीं मित-दृष्टि से द्वादशमाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथममान को देखने के कारण जातक शारीरिक परिश्रम सूब करता है तथा उसी से धन भी कमाता है।

'वियुत' सन्त की कुष्डली के 'सप्तम भाव' स्थित 'मंगल' का फलावेश

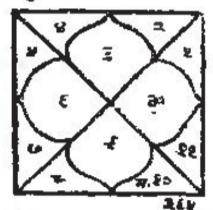
मिथुनलम्न : सप्तमभाव : मंगल



सातनें भाव में मित गुरु की राशि पर स्थित मगल के प्रभाव से जातक को ज्यावसायिक तथा स्त्री-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। चौथी मित्रदृष्टि से दशमभाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के माथ पिता तथा राज्यपक्ष सेलाभ होता है। सातनीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव की देखने से धारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु रक्त-विकार आदि रोग भी हो मकते हैं। आठवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुम्ब के कारण क्लेश भी मिलता है।

'भियुन' लब्न की कुकाली के 'अध्टममान' स्थित 'मंपल' का फलादेश

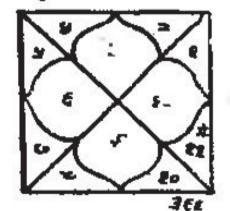
मिथुनलग्न: अष्टमभाव: मंगल बाठवें भाव में शबू शनि की राशि में उच्यस्य



मंगल के प्रमाद से जातक को अग्रुप्त तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा सन्तुपक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि वाले एकावश भाव की देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-सचय तथा कौदुम्बक कुछ में कुछ कमी रहती है। आठवीं मिलदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से आई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में बृद्धि होती है।

'भियुन' लग्न की कुष्वली के 'नवममाव' स्थित 'मेंपल' का फलादेश

मिथुनसन्न: नवनभाव: मंगल नवें भाव में भक्षु भनि की राश्चि पर स्थित

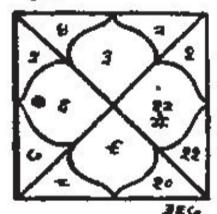


भंगल के प्रभाव के जातक की धाग्योन्नति ये कुछ कठिनाइयाँ असी हैं सथा धम-पालन में भी विभेष रुचि नहीं होती। ससूच्या में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। बीधी दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च की अधिकता तथा बाह्य स्थानों से लाभ होता है। सातनी मिस्नदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम म वृद्धि होती है। बाठवीं मिस्नदृष्टि से चतुर्वभाव को देखने से

माता, भूमि, भवन तथा घरेनू सुख भी कुछ कठिनाइयों के बाद पर्याप्त माला में मिलते हैं।

'मियुज' लग्न की कुक्दली के 'दशमभाव' स्थित 'मेंपस' का कलादेश

मिथुनसन्न : दश्रमभाव : मंगल

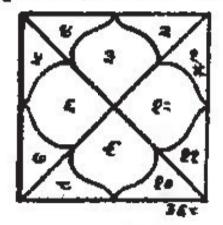


दसवें मार में भिन्न गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम द्वारा राज्य तथा पिता के क्षेत्र में यस और साभ कमाता है तथा सन्तुपक्ष पर अपना विशेष प्रभाव बनाये रखता है। बौधी मिलदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति में यूदि होती है। सातवीं दृष्टि द्वारा चतुर्यभाय को देखने से माता, भूमि तथा घरेलू मुख में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता भिलती है। आठवीं मिलद दृष्टि से सन्तान-पक्ष द्वारा वैमनस्यपुक्त लाग होता है

सया विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है। इसकी आमदनी बहुत अच्छी रहती है।

'मियुन' लम्म की कुच्हली के 'एकाइसभाव' स्थित 'र्मगल' का फलादेश

मियुनलान : एकादशभाव : संगल



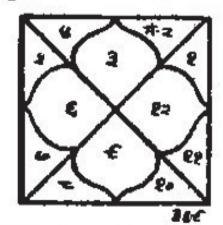
न्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की घन का स्थायी लाभ होता है। बीधी नीचदृष्टि द्वारा द्वितीयभाव को देखने से घन का संचय नहीं होता तथा कौदुम्बक मामलों में भी कष्ट होता है।

सातवीं दृष्टि से पंचमभाव की देखने से सन्तान-पक्ष द्वारा सुटिपूर्ण लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि के केंद्र में सफलताएँ मिनती है। आठवीं दृष्टि से स्वराणि वाले यष्ठभाव को देखने

के कारण शतु-पक्ष पर जातक का प्रभाव बना रहता है तथा उनसे लाभ भी होता है।

'सिथुन' लग्न की कुक्टली के 'द्वादसमाव' स्थित 'मंपल' का फलादेश

मिथुनलान : द्वादक्षभाव : मंगल



बारहवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से जाभ होता है। बीधी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव-को देखने के कारण पराक्रम की यूदि होती है तथा भाई-बहिनों. से द्वारा भी कुछ परेशानियों के बाद साम-होता है।

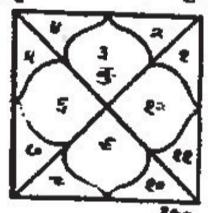
सातवीं दृष्टि से स्वराणि वाले धष्ठ-भाग को देखने के कारण शत्रू-पक्ष से कभी हानि

होती है और कभी लाभ होता है तथा माता का पक्ष कमजोर रहता है। बाठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री से कुछ परेशानी रहती है तथा जननेन्द्रिय सम्बन्धी कोई रोग भी हो सकता है।

'मियुन' सग्न में 'बुध'

'भियुन' लम्न की कुष्वली में 'प्रवसमाब' स्वित 'बुध' का फलादेश

मियुनलग्न : प्रथमभाव : बुध

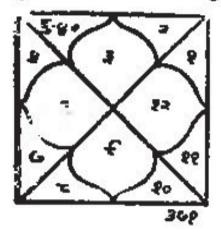


पहले बाव में स्वराशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। माता, भूमि, भवन तथा बरेलू सुख भी पर्याप्त परिमाण में उपलब्ध रहता है। सातवीं मिल्लदृष्टि से सप्तममान की देखने से विशेष सुख मिलता है तथा ज्यावसायिक क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति वनी, सुखी, शान्त, बुदिमान् तथा अत्येक क्षेत्र में सफलता पाने वाला होता है ।

'मियुन' सम्म की कुक्दली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'बुध' का कसावेश

मिथुन लग्न : द्वितीयमाय : बुध

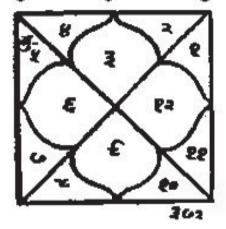


दूसरे बाव में शतु चन्द्रमा की राशि में स्थित बुध के प्रभाव से आतक को छन तथा कुटुम्ब का सुख तो प्राप्त होता है, परन्तु शारीरिक एवं माता के सुख में कभी रहती है। भूमि, भवन तथा सम्पत्ति का सुख अच्छा मिसता है।

सातवी मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की खायु में बृद्धि होती है सया पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

'सियुन' सम्म की कुण्डली के 'ठुलीयभाव' स्थित 'बुध' का फलावेश

मिथुन लग्न : तृतीयभाव : बुष

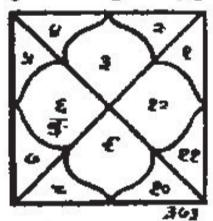


तीसरे भाव में मित्र सूर्य को राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराकेश में यूदि होती है। माता, भूमि एवं भवन का भी अच्छा सुख रहता है। ऐसा व्यक्ति वड़ा हिम्मती होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवसभाव को देखने के कारण जातक अपने पुरुषायं द्वारा भाग्य एवं धर्म की उन्तति करता है। ऐसा जातक स्वभावतः सज्जन, धैयंवान् सथा धशस्वी होता है।

'सियुम' लग्न की कुक्बली के 'बतुर्यवाब' स्थित 'बुध' का फलावेश

मिथुन सग्न : चतुर्थेभाव : बुध

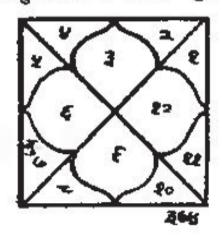


चौथे बाव में स्वराशि में स्वित बुध के प्रभाव से जातक को भारा, सूमि, भवन सवा सम्पत्ति का पर्याप्त सुख मिलता है। शारीरिक सौन्दयं एवं मनोविनोद के साधन भी अच्छे मिलते हैं।

सातवीं नीचदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमियाँ बनी रहती हैं सथा घरेनू सुखों में भी सापरवाही-सी रहती है।

'सियुन' लाम की कुच्हली के 'पंधमधाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : पचमभाव : बुध

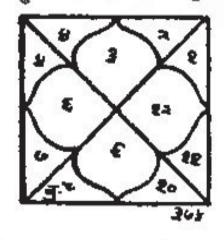


पीचवें भाव में मित्र शुक्त को राशि प्र स्थित बुध के भभाव से जातक की विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का थेप्ठ लाभ होता है और वह वड़ा गंभीर, चतुर तथा आत्मविश्वासी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि सं एकादश माय को देखने के कारण बुद्धि-वल से पर्याप्त लाभ होता रहता है। साथ ही माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति शान्ति-प्रिय स्वभाव का होता है।

'मिथून' लग्न को कुण्डली के 'वष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन जरन : एप्टभाव : बुध



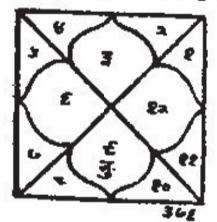
छडे भाव में मित्र मंगल को राणि पर स्थित कुछ के प्रभाव से जातक अपनी विदेश-शक्ति द्वारा शबु-पद्य में सफलता प्राप्त करता है स्या परिश्रमी होता है। माता, मूमि, घरेलू सुख तथा शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख मिलता है। परन्तु अगड़े-अंगटों

के कारण कुछ कब्ट भी उठाना पड़ता है।

'मियुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : बुध

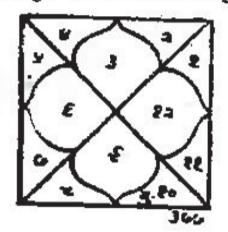


सातवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से पात्क को स्त्री-पक्ष, दैनिक जीवन एवं व्यवसाय में सफलता मिनती है। माता के पक्ष में कुछ कभी रहती है तथा भूमि, भवन का सुख अच्छा प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव की देखने से शारीरिक मीन्दर्य, चातुर्य, मुख एवं यथ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति अत्यन्त स्वाभिमानी होता है।

'मियुम' सम्न की कुच्हली के 'अब्द्रमुमाव' स्थित 'बुध' का फलावेश

मिथुन सग्नः अष्ठमभावः सुघ



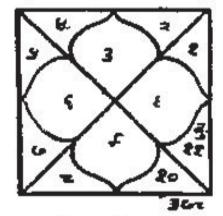
आठवें भाव में मित्र शनि को राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आधु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, पर आता, भूमि तथा अवन के सुख में कभी रहती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की भी हानि होती है। ऐसे व्यक्ति को अपने जन्म-स्थान से हट कर परदेश में जाकर रहना पड़ता है।

सातवी मिलदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने के कारण प्रयत्नपूर्वक छन एवं कुटुम्ब के

सुख का लाभ होता है, परन्तु शारीरिक सुख ये कमी रहती है तथा परेशानियाँ भी उठानी पड़ती हैं।

'मियुन' जन्म की कुक्टली के 'मबममाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्नः न्रदमभावः सुख



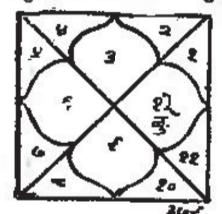
नवें श्राव में मित्र श्नि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक परिश्रम तथा विश्वेक द्वारा धर्म एवं भाग्य की उन्नति करता है। उसे माता, भूमि सथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है।

सारवीं मित्र दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का अञ्छा सुख भी मिसता है.।

ऐसा व्यक्ति चनी, सुखी, यशस्त्री, सन्तुष्ट तथा विवेकी होता है।

'भियुन' लम्न की कुच्छली के 'दशममाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : दशम्भाव : सुख



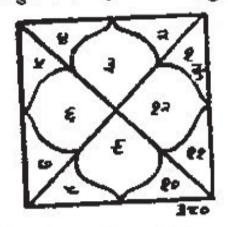
दसर्वे भाव में स्थित नीच के सुख के प्रभाव से आतक को अपनी उन्नति के लिए कठोर शारीरिक श्रम करना पड़ता है। पिता का अस्प-सुख मिसता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी अधिक सफसता नहीं मिसती।

सातवी उच्चदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक स्वास्थ्य और सुख के सातवीं में यूदि होती है। ऐसा व्यक्ति कभी

अपमानित और कभी सम्मानित होता रहता है।

'र्मिथुन' लान की कुच्हली के 'एकाइशमाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : बुध



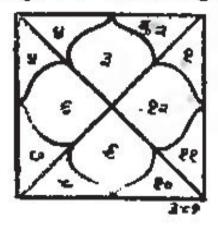
ग्यारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध से प्रभाव से जातक स्व-विधेक एवं शारीरिक परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ उठाता है। उसे माता, भूमि तथा भवन का मुख भी मिलता है।

सातवीं मिलदृष्टि से पंचम भाव की देखने के कारण विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा सन्तान-पक्ष से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, सुन्दर, मधुर-भाषी, धनी तथा विदेकी होता है।

'मियुन' लग्न को कुण्डली के 'हादशमाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

बारहवें भाव में मित्र शुक्र का राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाम होता है। माता,

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : बुध



भूमि तथा मकान के सुख में भी कभी रहती है। जातक की अपनी अन्म-भूमि से दूर रहने पर लाभ एवं सुख मिलता है।

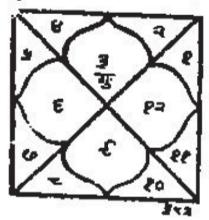
सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव की देखने के कारण सब्दु-पक्ष में विवेक एवं शांति द्वारा सफलता मिलती है। खर्च के कारण भीतरी चिताएँ रहते हुए भी वह अपने ऊपरी प्रभाव की बनाये रखता है।

'मियुन' लग्न में 'गुरु'

'मियुन' लग्न की कुल्बली के 'अपमनाव' स्थित 'शुब' का फलावेश

पहले भाव में मित्र बुध को राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को सुख , शारीरिक मौन्दर्य, स्वाभिमान तथा मनोबल की प्राप्ति होती है। पिता सथा राज्य से भी लाभ होता है।

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : गुरु

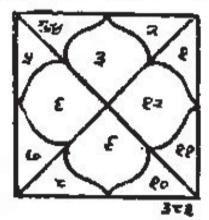


पाँचवीं शतुदृष्टि से पंचमभाव की देखने के कारण विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कभी रहती है। सातवीं दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री का सुख अच्छा रहता है सथा नवीं शतुदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कभी रहेती है।

'मियुन' सन्त की कुच्छली के 'डिलीपमार्च' स्थित 'गुच' का फलादेश

दूसरे भाव में मित्र चन्द्रमा भी राजि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : गुरु



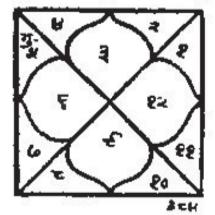
से आतक के धन-कुटुम्ब को बुद्धि होती है। पाँचवीं मिलदुष्टि से षष्ठभाव की देखने से सबु-पल पर प्रभाव एवं विजय की आप्ति होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा भुरातस्य के लाभ में कमी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराप्ति वाले दशमभाव को देखने से पिता एव राज्य के द्वारा सहयोग तथा सफलताएँ मिलती हैं तथा व्यवसाय द्वारा धन की पर्याप्त वृद्धि होती है।

'मियुन' लग्न की कुन्डली के 'ठुतीयमाव' स्थित 'ग्रुव' का कलावेश

तीसरे आव में सूर्य की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम

मियुन लग्न : तृतीयभाव : गुरु



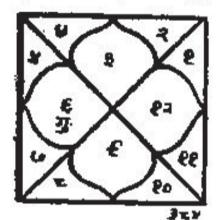
एवं आई-सहिनों के सुख में यूदि होती है। पाँचवीं यूद्धि से स्वराशि के सप्तमभाव को देखने से श्रेष्ठ पत्नी द्वारा सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफसता मिलती है।

सातवीं वृष्टि से नवमशाय की देखने से भाग्य सवा धर्म के क्षेत्र में कुछ असन्तीय रहता है सवा धन-प्राप्ति के लिए परिश्रम अधिक करना पड़ता है, परन्तु नवीं मिल-वृष्टि से एकादसमाब को देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है।

'सियुन' सम्ब की कुन्छली के 'बहुवंभाव' स्थित 'गुर्व' का फलावेश

चीये भाव ये मित्र बुझ की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को

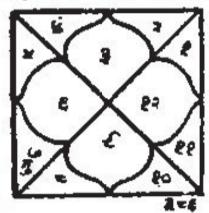
मियुन सम्न : चतुर्यभाव : गुरु



माता, भूमि तथा भवन बादिका सुख पर्याप्त मिलता है। पौजवीं नीचद्ंष्टि से अष्टमभाव की देखने से बायु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में अशांति तथा कुछ कमी रहती है। सातवीं द्षिट से स्वराशि दाले दशमभाव की देखने से पिता तथा राज्य-पक्ष से सहयोग, यथ एवं लाभ प्राप्त होता है ववीं शजूद्षिट से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ साभ भी होता है। 'सियुन' लान की कुष्डली के 'यंत्रममाव' स्थित 'शुरु' का कलादेश

पौचर्वे भाव में सन्नु कुक की राशियर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या-

मिथुन सन्न : वंचमभाव : गुरु

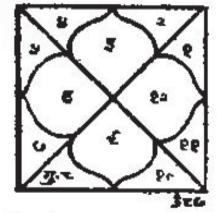


बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है परस्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कमजोरी रहती है। पीचवीं शतुदृष्टि से नवम बाद को देखने के कारण धारयोन्तित कुछ कठिनाइयों के साथ होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आसदती अच्छी रहती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव की देखने के कारण आतक को श्रेष्ठ शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं स्वामिमान की प्राप्त होती है।

'सिथुन' सम्ब की कुंच्छली के 'वष्टमाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

छठे भाव में मित्र प्रकल की राणि भर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की शबु-पक्ष में विजय प्राप्त-क्रोती है परन्तु स्त्री-पक्ष से कुछ म्तभेद रहता है।

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : गुरु

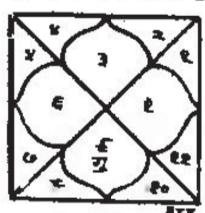


पाँचवीं दृष्टि से स्वराणि वाले दशमभाव की देखने से राज्य द्वारा सम्मान तथा उन्नति के अवसर मिलते हैं, परन्तु पिता से कुछ मतभेद रहता है। सातवीं शतुदृष्टि से द्वादशमाव को देखने के कारण खर्व अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से आभ होता है। नवीं उच्च दृष्टि से द्वितीयभाद को देखने से परिश्रम द्वारा धन की बृद्धि होती है तथा कुटुम्ब से भी सहयोग मिसता है।

"मियुन' सम्न की कुण्डली के 'सप्तमजाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

साववें भाव से स्वराशि-स्थित गुरु केप्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : गुरु

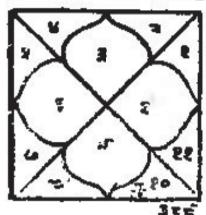


के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। विता तथा राज्य के क्षेत्र से भी सह्योग तथा सम्भान मिलता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूत रहती है। सानवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से आशेरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है-६ नवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव की देखने से पराक्षम में मृदि होती है तथा भाई-वहिनों का सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति बनी, सुखी तथा संपन्न होता है।

'मियुन' सन्त की कुच्छलों के 'अष्टममाद' स्थित 'गुढ़' का फलादेश

आंठवें भाव में सबु मनि की रामि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। पिता, राज्य, व्यवसाय सवा स्त्री-पक्ष

मिथुन सग्न : अष्टममाव : गुरु

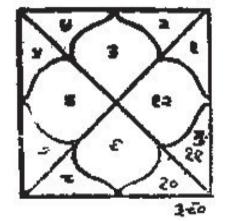


से भी कब्द होता है। पाँचवीं शतुदृष्टि से द्वादण-भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कपटपूर्ण सम्बन्ध द्वारा काम चलता है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से परिश्रम के द्वारा धन को कुछ वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि तथा मदन आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

'मियुन' लम्ब की कुकाली के 'नवंगकाब' स्थित 'गुर्व' का कलावेश

दर्वे भाव में अलु अनिकी राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक कुछ

मिचून लग्न : नवमभाव : गुरु

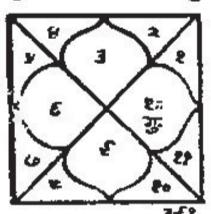


किनाइयों के साथ भाग्य तथा धर्म की उन्नति करता है। पिता, राज्य तथा स्ती-पक्ष से असंतोष रहता है। पौजवीं मिलदृष्टि से प्रयमभाव की देखते से शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। सातवीं मिलदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों का सुख बढ़ता है। नवीं शजुदृष्टि से पंचमभाव की देखने से विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष से असन्तोष रहता है।

'मियुन' साम की कुष्यली के 'दशमभाव' स्थित 'गुर' का फलावेश

दसवें भाव में स्वराणि स्थित गुरु के प्रभाव से आतक की राज्य एवं पिता से

सिथुन **सम्म**ः दशमभावः गुरु

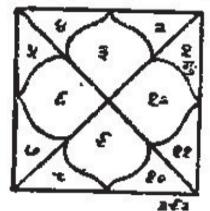


पूर्ण सहयोग, सुख तथा सम्मान मिसता है। व्यवसाय में भी सफलता मिसती है। पाँचवीं उच्चदृष्टि से दितीयभाव की देखने से घन का संजय की अच्छा होता है। सातवीं नित्रदृष्टि से चतुर्थमाय की देखने से बाता, भूमि, भवन तथा सम्पत्ति का सुख भी खूब मिसता है। नदीं मित्रदृष्टि से पण्ठ-भाव की देखने से मत्तु-पत्त पर प्रमाव स्थापित होता है। ऐसा व्यक्ति हर प्रकार से सुखी रहता है।

'मियुन' लग्न की कृष्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुद' का फलादेश

ग्यारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक

मिथुन लग्न : एक/दशभाव : गुरु

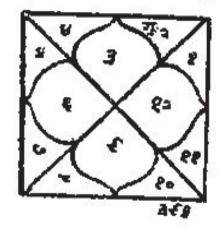


को श्रेष्ठ लाभ होता है तथा पिता, व्यवसाय एवं राज्य से भी सहयोग मिलता है। पौचयों मिलवृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। सातवीं मलुदृष्टि से पचमभाय को देखने से विद्या-बुद्धि में तो बुद्धि होती है परन्तु सन्तान-पक्ष कमजीर रहता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि के सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से पर्याप्त लाभ एवं सुख मिसता है।

'मियुन' लान की कुण्डली के 'हाबराभाव' स्थित 'गुव' का फलादेश

बारहवें भाव में शबु शुक्र की राजि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का

मिथुन सम्न : हादशभाव : गुरु



खर्च अधिक होता है स्या बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से यथ तथा लाभ मिलता है। स्त्री तथा पिता के सुख में कुछ कभी रहती है तथा व्यवसाय में भी हानि होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्यभाव को देखने से भाता, भूमि, भवन तथा धरेलू सुख की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्यभाव को देखने से शतुपक्ष में सफलता मिलती है। नवीं सन्नु-दृष्टि से अध्यम भाव को देखने से अगु तथा पुरातत्त्व के विजय में संकटों का सामना करना पड़ता है।

'मिथुन' लग्न में 'शुक्र'

'मियून' लग की कुण्डली के 'प्रयमशाब' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

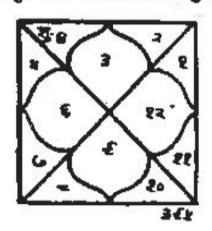
पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्त के प्रभाद से जातक शरीर मिथुन लग्न : प्रथमभाव : शुक्र से दुर्वल परन्तु विद्या, बुद्धि एवं चातुर्य में अवीण होता है। वह खर्चीला तथा बाहरी स्थानों

से लाग प्राप्त करने वाला होता है।

सातवीं शतुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री के साथ मतभेदपूर्ण आसम्ति बनी रहती है। दैनिक कार्यों तथा व्यवसाय में बड़ी युक्ति के साथ सफलता मिलतां है। ऐसा व्यक्ति बहुत विलासी होता है।

'सियुम' सम्म की कुव्हशी के 'द्वितीयबाव' स्थित 'शुब्द' का फलादेश

भियुन लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र



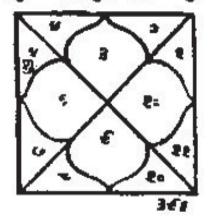
दूसरे भाव में सबू चन्द्रमा की रामि पर स्थित शुक्त के प्रभाव से जातक बुद्धि एवं चातुर्य द्वारा धन सथा प्रतिष्ठा तो कमाता है, परन्तु धन का संचय नहीं हो नाता। बाहरी स्थानों से संबंध अच्छा रहता है, परन्तु सन्तान-सुख में कुछ कमी रहती है। विद्या का खेष्ठ लाभ होता है।

सातवीं मिन्न-वृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का साम होता है।

ऐसी ग्रहस्थिति का व्यक्ति शानदार जीवन विताने का आदी होता है।

'नियुन' लग्न की कुष्डली के 'तृतीयमाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मियुनलम्नः तृतीयभावः शुक्र



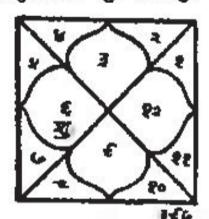
तीसरे भाव में सबु सूर्य की रामि पर स्थित सुक के प्रभाव से जातक के पराक्रम सथा भाई-बहिनों के सुख में कुछ कभी रहती है। विका तथा सन्तान-प्रभ में भी न्यूनता रहती है। परन्तु बुद्ध-बातुर्य प्रवस होता है।

सातवीं मित-दृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक धर्म तथा भाग्य की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करता है। वह पुरुवार्ष द्वारा

अपना खर्च चलाने तथा चातुर्य द्वारा काम निकानने में कुशन होशा है।

'मिपून' लग्न की कुष्टली के 'क्ष्युर्वजाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेक

मिथुनलम्नः चतुर्पेमावः शुक्र

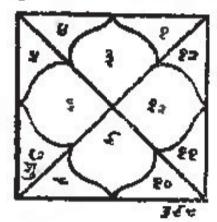


भीने भाव में स्थित तीय के शुक्त के अभाव से जातक की माता, भूमि तया भवत के सुख में कमी रहती है। सन्तान का सुख भी कम मिलता है। अन्य सुखों में भी व्यवधान आता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से दशमधाद की देखने से पिता तथा राज्य के द्वारा सुख-सम्मान तथा सहयोग मिलता है और गुप्त चतुराई के बन पर मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

'मिथुन' लन्न की कुण्डली के 'यंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादश

मिथुन लग्न: पंचमभाव: शुक

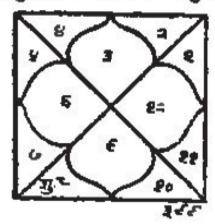


पांचवें भाव में स्वराशि-स्थित शुक्त के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कुछ बुटिपूर्ण सफलता सिन्तती है। ऐसा व्यक्ति चतुर होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाना है।

सातवीं मिन्न-दृष्टि से एकंदिश भाव को देखने से बुद्धि द्वारा लाभ अधिक होता है, परन्तु शुक्र के व्यथेश होने के कारण आगदनी से खर्च अधिक रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'बच्छभाव' स्थित 'शुक्त' का फलादेश

मिथुन लग्न : बष्ठभाव : शुक्र



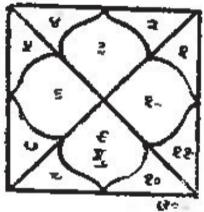
छठे भाव में सामान्य मिल मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक सबु-पक्ष में अपनी शुप्त चतुराई एवं खबं करने की शक्ति से सफलता प्राप्त करता है। सन्तान-पक्ष तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी कठिनाइयां आती हैं।

सातनी दृष्टि से स्वराशि बाले द्वादश भाव को देखने से खर्च आमदनी से अधिक बना

रहता है। ऐसा व्यक्ति झगड़े-टंटे एवं मुकद्मेबाजी में अधिक फेंसा रहता है और उसी में उसकी मक्तियाँ व्यय होती रहती हैं।

'मियुम' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : शुक्र

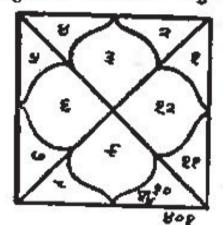


सातवें भाव से सामान्य मित शुरु की राशि पर स्थित शुक्त के प्रभाव से जातक की पत्नी बुद्धिमान् तथा चतुर होती है। परन्तु उसे स्त्री-पक्ष से कष्ट तथा चिन्ताएँ भी प्राप्त होती रहती हैं। दैनिक खर्च चलाने के लिए उसे बुद्धिमानी तथा वडी चतुराई से काम लेना पडता है।

सातवीं मित्र-धृष्टि मे प्रयमभाव की देखने से शरीर दुवेल होता है, परन्तु सम्मान की वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति की विद्या, वृद्धि, सन्तान तथा दाहरी सम्बन्धों के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

'मिथुन' लग्न की कृष्डली के 'अष्टभनाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : सूक



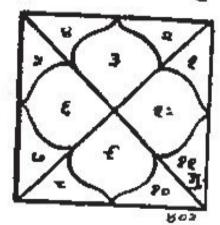
खाठवें भाव में मित्र शिन की राशि पर
स्थित शुक्त के प्रभाव से जातक को आयु तथा
पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। वह कूटनीतिज्ञ तथा परिश्रमी होता है। उसे सन्तान
सथा विद्या के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना
करना पहता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक की धन-वृद्धि के लिए विशेष

प्रयत्न करने पड़ते हैं, तथा शुक्र के व्यथेश होने के कारण खर्च अधिक बना रहता है।

'मियुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न: नवसभाव: शुक्र

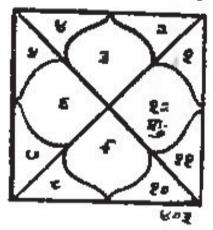


नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की फुछ कठिनाइयों के साथ उन्नति होती है। विद्या तथा सन्तान का सुख भी प्राप्त होता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिनों के साथ वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम में भी कुछ कमी आती है। ऐसा व्यक्ति भाग्य की पुरुषार्थ से वड़ा भानने वाला होता है।

'मिथुन' लग्न को कुण्डली के 'दशममाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न: दशमभाव: शुक्र



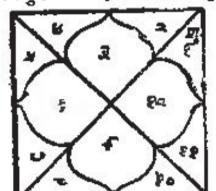
दसवें भाव में सामान्य मित्र गुरु की राशि पर स्थित ध्ययेश उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक की पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी होनि उठानी पड़ती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। पिता, राज्य, विद्या तथा सन्तान की शक्ति भी प्राप्त होती है।

चौयी नीचदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी आती है। ऐसा व्यक्ति अपने अहकारी स्वभाव के

कारण दार-बार हानि उठाता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकावशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मिथुन लान: एकादशभाव: गुक्र ग्यारहवें भाष में सामान्य मित्र मगल की

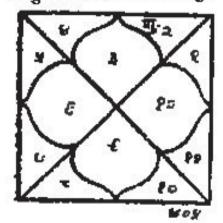


राणि सर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है परन्तु खर्च भी खूब होता रहना है। मस्तिष्क में चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव की देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि में प्रवीणता प्राप्त होती है तथा सन्तान-पक्ष में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसे व्यक्ति के मस्तिष्क में चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशमाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : शुक



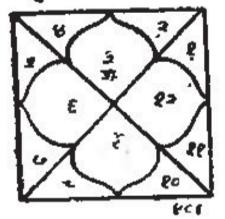
बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। विद्या तथा सन्तान के प्रकाम कुछ परेशानियाँ रहती हैं।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से पष्ठभाव की देखने के कारण जातक शत्नु-पक्ष में चतुराई से प्रभाव स्थापित करके अपना काम निकालता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा चतुर होता है। साथ ही, उसके मस्तिष्क में चिन्ताएँ भी मनी रहती हैं।

'मिचून' लग्न में 'शनि'

'मियुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रयमकाव' स्थित 'शर्नि' का फलादेश

मियुत् लग्न : प्रथमभाव : शनि



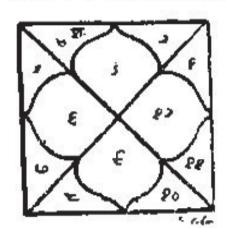
पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है, परन्तु आयु संघा पुरातत्व की वृद्धि होती है।

तीसरी मनुदृष्टि से तृतीयमाव की देखने से भाई-बहिन के बैमनस्य रहता है तथा पराक्रम में कमी आती है। सातवीं मनु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तीय रहता है। दसवीं मनु-दृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता से

बैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : शनि

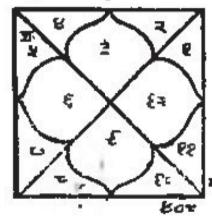


दूसरे मान के शत्नु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शिन के प्रभाव से जातक को धन-संचय को शिक्त एवं कौटुम्बिक सुख में हानि होती है। लीसरी मित-दृष्टि से चतुर्यभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कष्टों के साथ प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से स्थराशि के अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दसवीं नीचदृष्टि से एकादशभाव की देखने से आय के मार्ग में कठिनाइयां आती हैं। ऐसा व्यक्ति समाज में भाग्यवान् समझा

जाता है और यह सज्जन रोने के साथ ही स्वार्थी भी होता है।

'मियुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयवाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न: तृतीय भाव: शनि तीसरे

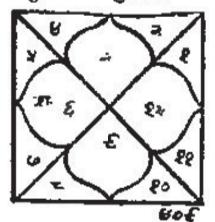


ने तीसरे भाव में शतु सूर्य की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से आतक के पराक्रम में कुछ कमी आती है तथा भाई-बहिन से कमनस्य रहता है। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है। तीसरी उच्चदृष्टि से पचमभाव की देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में उन्नित होती है। सातवीं दृष्टि से स्थराशि वाले नवमभाव की देखने से कुछ कठिनाइ यों के साथ भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। दसवीं दृष्टि से द्वादशभाव की

देखने के कारण दाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है।

'नियुन' लान की कुण्डली के 'कतुर्यभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न: चतुर्यभाव: शनि



चौथे आव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की कुछ कमी के साथ माता का सुख प्राप्त होता है सथा भूमि-भवन के सुख में भी कुछ कमी रहती है। आयु एवं पुरातस्व का अंध्ठ साभ होता है सथा धर्म का पालन भी होता है। तीसरी सबु-दृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शतु-पक्ष पर कड़ाई के साथ प्रभाव स्थापित होता है तथा शतुओं एवं सगड़ों से लाभ मिलता है। सातवीं शतुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य-क्षेत्र से असन्तोष तथा

वैमनस्य रहता है। इसवीं मिलदृष्टि से प्रयमभाव की देखने से शारीरिक शक्ति में विद्वि होती है तथा लोग उसे भाग्यवान् भी समझते हैं।

'मिथून' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित शनि का फलावेश

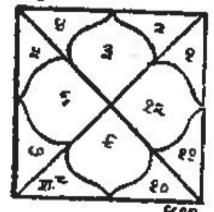
विध्न लग्न: चनमभाव: शनि

पाँचवें भाव में मित्र शुक्त की राशि पर स्थित शिन के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा मन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती हैं। भाग्य-वृद्धि भी होती है। तीसरी शतुद्धि से सप्तमभाव को देखने में म्ब्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाटगों के माथ सफलता मिलती है। सातवी नीचदृष्टि से एकादश-भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कभी जानी है। दसवीं शतु-दृष्टि से दितीय भाव की देखने से कठिनाइयों के साथ धन-सम्बन्धी आवश्यकताएँ पूरी

होतो हैं तथा कुटुम्ब से भी कम सुख प्राप्त होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चळभाव' स्थित 'शनि' का फलावेश

निथुन लग्नः पष्ठभावः शनि छठे भाव में शतु मंगल की राजि पर स्थित

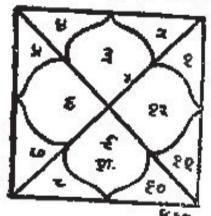


शनि के प्रभाव से जातक की शतु तथा झगड़ों के क्षेत्र में सफलता एवं विजय मिलती है। वीमरी दृष्टि में स्वराशि वाले अप्टमभाव की देखने में आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सानवी मिलदृष्टि से द्वादशभाव की देखने से दाहरी स्थानों के सम्बन्ध में लाम होता है तथा ठाठ-बाट में बहुत खर्च होना है। दसवीं शतु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने में पराक्रम में कमी आती है तथा भाई-वहिन के सुख में बाधा

पड़ती है। ऐसा व्यक्ति वड़ा परिश्रमी भी होत। है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तममाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न: सप्तमभाव: शनि सातवे भाव से शतु गुरु की राशि पर स्थित



शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री नया व्यवमाय के क्षेत्र में सुख-दुःख तथा हानि-लाभ दोनों की प्राप्ति होती रहती है। जननेन्द्रिय में कप्ट होना है। परन्तु आयु में दृढि होती है तथा पुरातस्व का नाभ भी होता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव को देखने से भाग्य की दृढि होती है। सातवीं मिन्न-दृष्टि से प्रथम भाव की देखने से शारीरिक प्रभाव में कुछ न्यूनना के साथ दृढि होती है। दसवीं मिन्न-दृष्टि में चतुर्थभाव

को देखने में माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कठिनाइयों के भाव मिलता है। ऐमा व्यक्ति परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय पाकर तरक्की करता है।

'मियुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टममाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

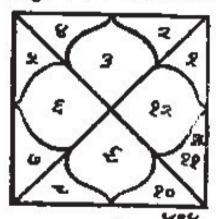
मिथुन लग्न : खष्टमभाव : शनि

आठवें भाव में स्थराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में दृढि होती है तथा पुरातस्व का लाभ होता है। भाग्य तथा सम्मान के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। धम का पालन भी ठीक से नहीं होता। तीसरी सनु-पृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शतु-दृष्टि से दितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है। दसवीं जच्च दृष्टि से पंचमभाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के

साथ सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। ऐसा जातक अपनी वाणी की शक्ति द्वारा भाग्योन्नति करता है।

'मियून' लग्न की कुण्डली के 'नवमकाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

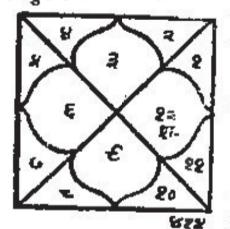
मिथुन लब्द : नवमभाव : शनि नवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से



जातक कुछ किमयों के लाभ भाग्यवान बना रहता है। उसे बायु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। धर्म-पालन में रुचि रहती है तथा यश भी मिलता है। तीसरी नीच-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं शतुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कमी खाती है। सातवीं शतु-दृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शतुपक्ष से होने वाली परेशानियों पर

विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति बड़े ठाठ का जीवन व्यतीत करता है। 'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शर्मि' का फलादेश

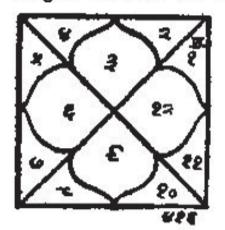
मिथुन लग्न : दक्षमभाव : शनि



दसर्वे भाव मे शतु गुरु की राशि पर स्थित शिन के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कमी रहती है, परन्तु राज्य सथा व्यवसाय के क्षेत्र में मुफलताएँ मिलती हैं। तीसरी मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से खेळ लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है। दसवीं दृष्टि से सप्तभभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष

में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा जातक संघर्षपूर्ण जीवन बिताता है। 'मिथुन' लान की कुण्डली के 'एकादशबाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुनलंगन: एकादशभाव: शनि ग्यारहवें-भाव में शद्ध मंगल की राशि पर

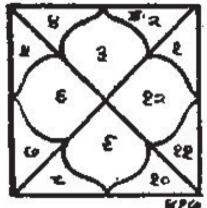


स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी के मानं में परेशानियां अपती हैं। भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में की लुटियां रहती हैं। यह अन-प्राप्ति के लिए अनुनित मानं भी अपनाता है। तीसरी मित्र-धृष्टि से प्रथमशाव की देखने से शरीर की कुछ कष्ट भी रहता है तथा जातक भाग्यशाली भी बनता है। सातवीं उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति होती है। दसवीं दृष्टि से स्थराशि थाले

अष्टमभाव की देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। नीच का शनि जातक के जीवन को अनेक संकटों तथा छतरों में डासता रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वावशमाव' स्थित सनि का फलादेश

मिथुन लग्न: द्वादशभाव: शनि बारहवें भाव में अपने मित्र शुक्र की राणि पर

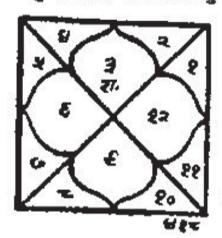


स्थित शनि के प्रभाव से जातक को दाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। तीसरी शबु-वृष्टि से द्वितीयमाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब-सुख के पक्ष में कभी बनी रहती है। सातवीं शबुदृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शबुपक्ष पर कठिनाइयों से बाद विजय मिलती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि के नदम भाव में देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा जातक धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति यश-अपयश

तथा सुख-दुःख दोनों ही प्राप्त करता है, परन्तु भाग्यशाली समझा जाता है।

'मिथुन' लग्न में 'राहु'

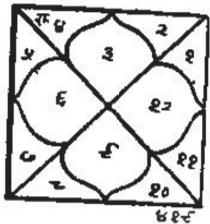
'मिथुन' सन्त की कुण्डली के 'प्रयममाव' स्थित 'राहु' का फलादेश मिथुनलन्न : प्रयमभाव : राह



यहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक प्रभावशाली, लम्बे शरीर वाला, विवेकी, स्वार्थी, गुप्त युक्तियों का शाता तथा बड़ी हिम्मत वाला होता है। यह कष्टसाध्य कमों तथा गुप्त युक्तियों के आश्रय से अपनी उन्नित करता है तथा धन एवं सम्मान पाता है।

'मियुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयमाब' स्थित 'राष्ट्र का फलादेश

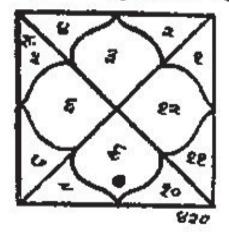
मिथुन लग्न: द्वितीयमाव: राहु



दूसरे भाव मे शतु चन्द्रमा की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन-सम्पत्ति तथा कौटुम्बिक सुख की बड़ी हानि उठानी पड़ती है। युप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम का आश्रय लेने पर भी धन-प्राप्ति के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ ही मिलती हैं। उसे बहुत समय बाद धन का अल्प सुख मिलता है।

'मियुन' लग्न की कुण्डली के 'तूतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

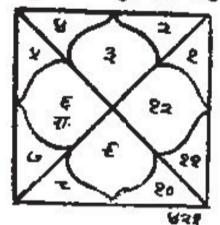
मिथुन लग्न : तृतीयभाव : राहु



तीसरे भाव में शतु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में दृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। यह अपनी उन्नति के लिए बहुत हिम्मत तथा परिश्रम से लगा रहता है। ऐसा व्यक्ति खड़ा धैयंवान्, हिम्मती तथा गुप्त युक्तियों से सम्पन्त होता है। परन्तु कभी-कभी उसे बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है।

'मिमुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्वमाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलादेश

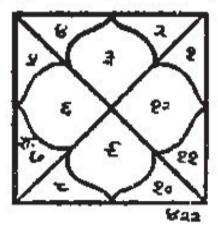
मियुन लग्न: **चतुर्थमाव**ः राहु



चौषे भाव में मिस बुध की राशि पर स्थित राहु के अभाव से जातक की माता, भूमि, भवत एवं घरेलू सुख में कमी तथा असंन्तीय की प्राप्ति होती है। यह गुप्त युक्तियों के बल पर सुख-प्राप्ति का प्रयत्न करता है, परन्तु इसकी इच्छी भली-भौति पूर्ण नहीं हो पाती।

'र्मियुम' सम्म की कुण्डली के 'पंचममाव' स्थित 'राहु' का र जारवेश

मिथुन सम्म : पंचमभाव : राहू

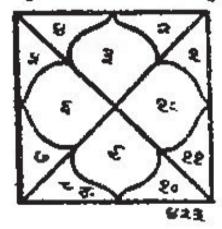


पाँचवें भाव में सित शुक्त की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव में जातक को अनेक कठि-नाइयों के बाद विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफ-लता मिलती है, परन्दु सन्तान-पक्ष में कप्ट ही बना रहता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों का जाता-वृद्धिमान, असत्यवादी, प्रभावोत्पादक तथा अनेक प्रकार की चिताओं से ग्रस्स होता है।

'मियुन' लग्न की कुण्डली के 'बच्छनाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

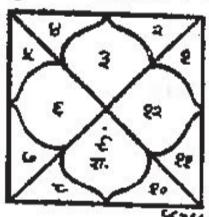
मिथुन लग्न : पष्ठभाव : राहु



छठं भाव में शतु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शतु पर अपना विशेष प्रभाव बनाये रखता है तथा उन पर निजय प्रभा है। ऐसा ध्यक्ति अपनी कमजोरियों की प्रकट नहीं होने देता तथा बड़ा साहसी, धैयंबान, चतुर, पराक्रमी तथा गुप्त युक्तियों का जानकार होता है।

मियुम' लग्न की कुण्डली में 'सप्तममाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलादेश

मिथुन लेख: सप्तमभाव: राह्र

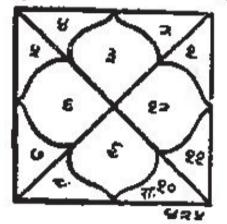


सातवें भाव में शवु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जानक की स्त्री को बहुत कप्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयां आती रहती हैं।

ऐसे क्यक्ति की मूझे न्द्रिय में भी कीई विकार होता है। यह गुप्त युक्तिमा तथा असत्य-भाषण आदि के अनुचित तरीकों से भी अपना स्वार्य-साधन करने से नहीं चुकता

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टममाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलावेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : राहु

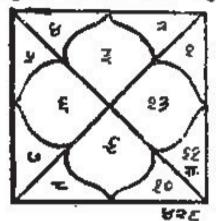


आठधें भाव में सित्न शनि की राणि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की पुरातत्त्व एवं आयु के विषय में अनेक प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ता है। उसके पेट के निम्न भाग में कोई विकार भी होता है।

ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रम तथा गुप्त मुक्तियों के गल पर सफलता पाने के लिए प्रयत्न-भील रहता है तथा अपनी कठिनाइयों के विषय में किसी की पता नहीं चलने देता।

'मिथुम' सम्न की कुष्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलावेश

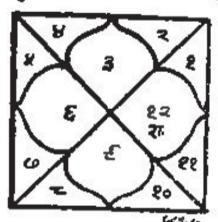
मिथुन लग्न : नवमभाव : राह्र



नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातंक की भाग्योग्नित में अनेक कठिनाइयां आती हैं। वह अपने परिश्रम तथा गुप्त गुक्तियों के बल पर भाग्य की वृद्धि तो करतां है, परन्तु पूर्ण सुख-सम्मान प्राप्त नहीं कर पाता । उसका धर्म-पालन भी ढोंग-जैसा ही होता है। कहीं बहुत बाद में उसे थोड़ो-सी सफलता मिल पाती है।

'मियुन' लग्न की कुण्डली के 'बराममाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

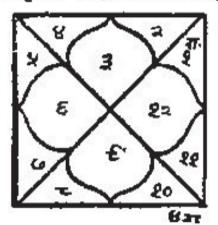
मिथुन लग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाव में शब् गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की राज्य, पिता तथा व्यवसाय के केन्न में किनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा अत्यन्त कठिन परिश्रम के बाद ही थोड़ी-बहुत सफलता मिल पाती है। ऐसे व्यक्ति पर बार-बार संकट आते रहते हैं, बन्त में थोडी-तो सफलता भी मिलती है।

'मियुन' लग्न की कुष्डली के 'शुकादशभाव' स्थित 'राहुं' का फलावेश

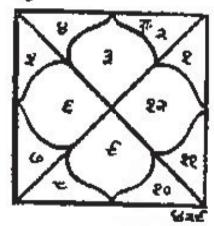
मिथुन लग्न: एकादशभाव: राहु



ग्यारहवें भाव में णतु मंगल की राशि पर स्थित राष्ट्र के प्रभाव से जातक गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर आमदनी की वृद्धि करता है तथा कठिन परिश्रम द्वारा पर्याप्त छन भी उपाजित करता है। कभी-कभी उसे घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता हैपरन्तु अन्त में विशेष सफलता भी मिलती है। ऐसा व्यक्ति धोड़े लाभ से सन्तुष्ट रहकर भी विशेष लाभ के लिए नित नई योजनाएँ बनाता रहता है।

'मियुम' लग्न की कुण्डली के 'ढावशमाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलावेश

मियुन लग्न : द्वादशभाव : राह्र



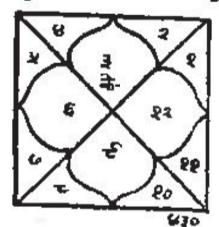
बारहवें भाव भे मित्र शुक्त की गाणि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है और इसी कारण उसे कभी-कभी वड़ी कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।

गुप्त युक्तियों, परिश्रम तथा चातुर्य के गल पर वह अपना खर्च चलाना है तथा बाहरी लोगों की दृष्टि में वह प्रभावशाली बना रहता है।

'मिथुन' लग्न में 'केतु'

'मियुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथममाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

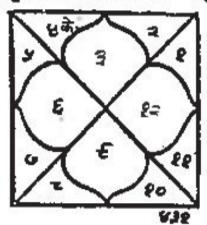
मिथुन् लग्नः प्रथमभावः केतु



पहले भाव में मित बुध की राशि पर स्थित केंद्र के प्रभाव से जातक में शारीरिक सौंदर्य में कमी रहती है। वह गुप्त चिताओं, रोग, चोट आदि का शिकार बनता रहता है। गुप्त गुक्तियों तथा शारीरिक परिश्रम के गल पर वह अपने स्वायों की पूर्ति करता है। विवेकी होने पर भी उसमें स्वाभिमान कम होता है।

मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'ब्रितीयमाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

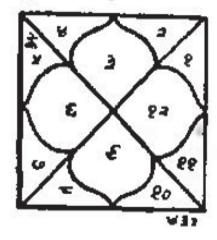
भिथुन लग्न : द्वितीयभाव : केंतु



दूसरे भाव में शतु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केंद्र के प्रभाव से जातक धन तथा कुटुम्ब के बारे में चिन्ता-पत्त बना रहता है। धन-संचय न हो पाने से कभी-कभी अत्यधिक कष्ट पाता है तथा कौटुम्बिक कारणों से मानसिक क्लेश का शिकार भी होता है। वह धैंगे, साहस एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर ही अपनी कठिनाइयों पर थोड़ी-बहुत विषय प्राप्त कर पाता है।

'मियुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयमान' स्पित 'केंतु' का फलावेश

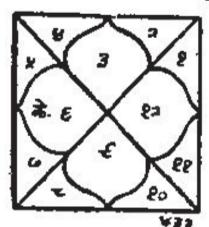
मिथुन लग्न : तृतीय भाव : केंतु



तीसरे भाव में शक्ष सूर्यं की राशि पर स्थित केंद्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सूख में कमी आ जाती है। यह अपने प्राक्रम-विषयक कारणों से ही परेशानी उठाता है। ऐसा जातक बड़ा दम्भी, हिम्मती, हठी, बहादुर तथा साहसी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुक्डली के 'बहुर्यमाव' स्पित 'केहुं' का फलावेश

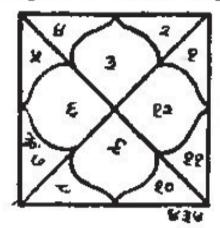
मिथून लग्न : चतुर्यमाद : केतु



चौथे भाव में मित बुध की राशि पर स्थित केंतु के प्रभाव से जातक घरेलू सुखों की पाने के लिए बड़ी चतुराई का आश्रय लेकर सफल होता है। भूमि तथा भवन का सुख भी कुछ कमी के साथ मिलता है। अपने गुप्त साहस एवं धैंगं के बल पर बन्त में उसे सुख-प्राप्ति में सफलता भी मिलती है।

'मिथुन' लग्न की कुछली के 'यंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : केंतु

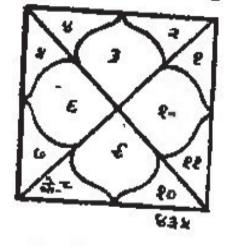


पौनवें भाव में मित जुक की राणि पर स्थित केंतु के प्रभाव में जानक की विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा मन्त्रान-पक्ष में भी कठिनाइयों के साथ ही मामान्य मफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति अपने गुप्त धैर्य की शक्ति, चातुर्य तथा हिम्मत के बल पर ही विद्या के नथा अन्य क्षेत्रों में सफलनाएँ प्राप्त करता है।

'मिषुम' सरन की कुच्छली के 'बच्छनाव' स्थित 'केंद्रु' का फलाइंश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : केतु

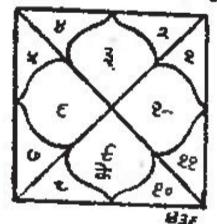


छठे भाव में शतु मंगन की गाणि पर स्थित केतु के प्रमाव से जातक अपनी गुप्त युक्तियों द्वारा शतुओं का दमन करने में समर्थ होता है तथा मुकदमें आदि में सफलताएँ प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी आन्तरिक कमजोरी की छिपाने में कुशल होता है तथा वड़ी हिस्मत से काम लेकर लोगों की आश्चर्य में डाल देता है।

'मिषुम' लग्म की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केंतु' का फलावेश

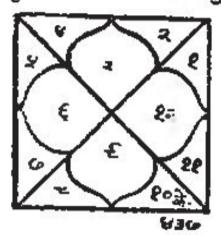
मिथुन लग्न : सप्तमभाव : केंतु



सातमें भाव में शक्षु गुरु की राशि पर स्थित केंद्र के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त होती है। उसके जीवन में इन्द्रिय-भोगों की अधिकता रहती है। ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रम तथा गुप्त गुक्तियों के बस पर अत्यधिक उन्तित भी कर सेता है।

'मिथुन' सम्म की कुडण्ली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

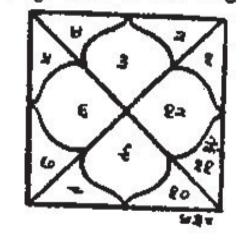
मिथुन लग्न : अव्धमभाव : केंत्र



आठवें भाव में मिल शनि की राशि पर स्थित केंतु के प्रभाव से जातक की पुरातत्त्व की हानि होती है तथा आयु के सम्बन्ध में भी अनेक बार संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी हिम्मत तथा बहादुरी के बल पर संकट के समय भी धैंयें को नहीं खोता। उसे पेट की कोई बीमारी भी हो सकती है।

'मियुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमधाव' स्थित 'केंद्रु' का फलावेश

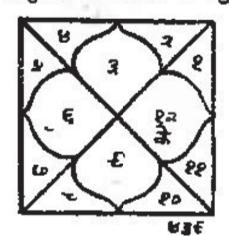
मिथुन लग्न: नवमभाव: केंतु



नवें भाव में मिल शनि की राशि पर स्थित केंद्र के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ बाधाएँ आती हैं, परन्तु परिश्रम द्वारा थोड़ी-बहुत सफलता भी मिलती है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पूर्ण पालन नहीं कर पाता। वह अपनी गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर सभी केंद्रों में न्यूनाधिक सफलताएँ प्राप्त करता रहता है।

'मियुन' लम्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केंद्र' का फलावेश

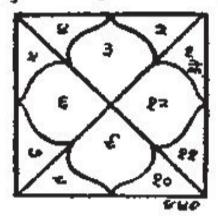
मिथुन लग्न : दशमभाव : केतु



दसवें भाव में अपने शत् गुरु की राशि पर स्थित केंद्रु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मान-प्रतिष्ठा की भी कमी-कभी बड़ी हानि उठानी पड़ती है। गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बाद ही उसे सामान्य सफलता मिल पाती है।

'सियुन' लान की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केंद्र' का फलादेश

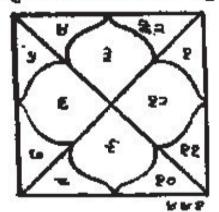
मियुन लग्न : एकादशभाव : केतु



ग्यारहर्षे भाव में शतु मंगल की राशि पर स्थित केंद्र के प्रमाव से जातक की आमदनी के क्षेत्र में कठिन परिश्रम करना पड़ता है सथा कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। अपने धेर्य, साहम तथा परिश्रम से ही उसे अन्त में कठिनाइयों पर विजय तथा आमदनी के क्षेत्र में घोड़ी-बहुत सफलता मिलती है।

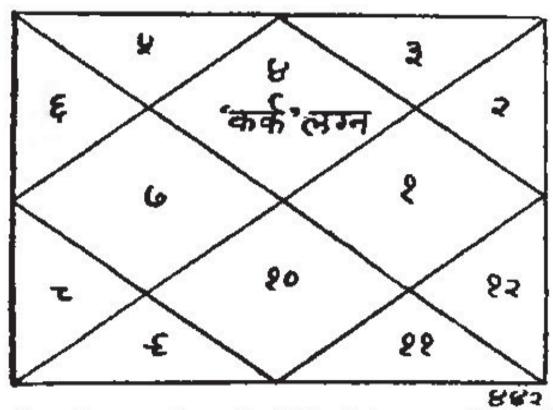
'मियुन' लग्न की कुण्डली के 'ढ़ावशमाव' स्थित 'केलु' का फलावेश

भियुन लग्न : द्वादशभाव : केंद्र



दारहवें भाव में मित्र शुक्त की राशि पर स्थित केतु के प्रमाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे कभी-कभी भारी संकटों का सामना करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी उसे कुछ परेशानी बनी रहती है। परन्तु ऐसा जातक अपनी हिम्मत, गुप्त युक्ति, परिश्रम तथा चतुराई के गल पर येन-केन-प्रकारेण अपना खर्च चलाता रहता है।

'कर्क' लाग्न



['कर्फ' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'कर्क' लग्न का फलादेश

'ककं' लग्न में उत्पन्न जातक का शरीर गौर-वर्ग तथा शक्तिशाली होता है। वह पित्त प्रकृति वाला, बुद्धिमान्, धर्मीत्मा, उदार, विनम्न, धनी, जलकीका-प्रेमी, पवित्त, क्षमाशील तथां मिष्टान्न-भोजी होता हैं। परन्तु इसके साथ ही वह व्यसनी, अत्यन्त ढीठ, कुटिल-स्वभाव, मित्र-प्रोही तथा कभी-कभी विपरीत-बुद्धि का परिचय देने वाला भी होता है।

इस लग्न वाला व्यक्ति अपने शतुओं से पीड़ित रहता है। उसके कन्या-सन्तानें अधिक होती हैं तथा उसे अपना जन्म-स्थान छोड़कर परदेश में निवास करना पहता है।

इस लग्न पाने जातक का मान्योदय १६-१७ वर्ष की बायु में ही ही जाता है।

'कर्क' सान बालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्त बालों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलावेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४३ से ४५० के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'कर्क' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१---'ककें' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्त भावों में स्थित 'सूर्ये' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४३ से ४५४ के दीच देखना चाहिए।

२---'ककें' लग्न दालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्यामी फसादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए----

जिस महीने में सूर्य---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४४३
- (ख) 'बूब' राशि पर हो तो संख्या ४४४
- (ग) 'मिषुन' राशि पर ही तो संख्या ४४५
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४४६
- (ङ) 'सिह' राशि पर हो तो संख्या ४४७
- (च) 'कन्या' राशि पर ही तो संख्या ४४८
- (छ) 'तुला' राशि पर हो की संख्या ४४६
- (ब) 'बुक्लिक' राशि पर हो तो संख्या ४६०
- (श) 'सनु' राशि पर हो तो संख्या ४५१
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४४२
- (ट) 'कुम्म' राशि पर ही तो संख्या ४४३
- (ठ) 'मोन' राशि पर हो तो संख्या ४५४

'ककैं' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१---'ककें' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्त भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उवाहरण-कुण्डली संख्या ४५५ से ४६६ के दीच देखना चाहिए।

२-- 'कर्क' लग्न बालों की गोचर-कुण्डली के विधिन्त भावों में स्थित

'बन्द्रमा' का अस्यायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए— जिस दिन 'चन्द्रमा'—

- (क) 'मेष' राशि एर ही तो संख्या ४५५
- (ख) 'बूद' राशि पर ही तो संख्या ४५६
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४५७
- (ध) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४५५
- (क) 'सिंह' प्रामि पर हो तो संख्या ४५६
- (च) 'कन्या' राशि पर ही तो संख्या ४६०
- (छ) 'तुला' राशि पर हो दो संख्या ४६१
- (च) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४६२
- (स) 'धनु' राशि पर ही तो संख्या ४६३
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४६४
- (ट) 'कुम्भ' राणि पर हो तो संख्या ४६५
- (ठ) 'मीन' राशि पर ही तो संख्या ४६६

'कर्क' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१---'कर्क' लग्न बालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मञ्जल' का स्थायी फलावेश उदाहरण-कुण्डली संख्वा ४६७ से ४७० के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न दालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मञ्जल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मञ्जल'-

- (क) 'नेष' राणि पर स्थित ही तो संख्या ४६७
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६=
- (ग) 'मियुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६६
- (च) 'ककें' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७०
- (क) 'सिह' राणि पर स्थित ही तो संख्या ४७१
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७२
- (ভ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७३
- (ख) 'बुश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७४
- (झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७५
- (अ) 'मकर' राशि पर स्थित ही तो संख्या ४७६
- (ट) 'कुम्म' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७७
- (ठ) 'भीन' राणि पर स्थित हो तो संख्या ४७८

'कर्क' लग्न में 'बुध' का फलांदेश

१--- 'कर्क' सम्म बालों को अपनी जन्मकुण्डली के 'विभिन्न भावों में स्थित 'बुब' का स्वायी फसादेश उदाहरण-कुण्डली सख्या ४७६ से ४६० के बीच देखना चाहिए।

२---'ककै' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का बस्यायी फलावेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'बूब'---

- (क) 'मेव' राशि पर स्थित हो तो सख्या ४७६
- (स) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४००
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८१
- (ब) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४०२
- (क) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४५३
- (ज) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४०४
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८%
- (ज) 'बृश्चिक' रामि पर स्थित हो तो संख्या ४०६
- (श) 'सर्नु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४०७
- (अ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८८
- (ह) 'कुम्म' राशि पर स्थित तो हो संख्या ४८६
- (ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो सख्या ४६०

'कर्क' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'ककें' लग्न बालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्त बालों में स्थित 'गुरु' का स्वामी फलावेस उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६१ से ५०२ के बीच देखना चाहिए।

२-- 'कर्क' खग्न वालों को गोजर-कुण्डली के विभिन्न वालों में स्थित 'गुरु' का बस्थायी फलादेश निम्नलिखित खदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस वर्ष में 'गुरु'---

- (क) 'मेव' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६१
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो यो संख्या ४६३
- (क) 'कके राणि पर स्थित हो तो संख्या ४१४
- (क) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संस्था ४९५
- (अ) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६६

- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६७
- (ज) 'बृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६८
- (श) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६६
- (ञा) 'भकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५००
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०१
- (ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०२

'कर्क' लग्न में 'शुक्र' का फलावेश

१---'कक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न बावीं में स्थित 'शुक्त' का स्वायी फलावेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०३ से ५१४ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सुक' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक'---

- (क) 'मेच' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०३
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०४
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०५
- (घ) 'ककें' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०६
- (ड) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०७
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४०८
- (छ) 'सुला' रामि पर स्थित हो तो संख्या ४०६
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संस्था ५१०
- (श) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५११
- (अ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४१२
- (ट) 'कुम्म' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१३
- (ठ) 'भीन' राशि पर स्थित हो तो संस्था ५१४

'कर्क' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१----'कक" उपन दालों को अपनी जन्मकुण्डली के विधिन्त भावों में स्थित 'कृति' का स्थायी फलावेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१४ से ४२६ के बीच देखना चाहिए।

२-- 'कर्क' लग्न वालों को गोपर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सिन'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए— जिस वर्ष में 'कनि'—

- (क) 'मेव' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१४
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१६
- (ग) 'मियुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१७
- (म) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१=
- (क) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१६
- (न) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४२०
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४२१
- (ज) 'बुश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४२२
- (क) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४२३
- (ञा) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२५
- (ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४२६

'कर्क' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१—'कर्क' खग्न वालों को अपनी जन्मकृष्डली के विधिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलावेश उदाहरण-कुष्डली संख्या ५२७ से ५३८ के बीच देखना चाहिए।

२---'कर्क' लग्न वालों को गोपर-कुण्डली के विभिन्न बातों में स्वित 'राहु' का अस्थायी फलावेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस वर्ष में 'राहु'---

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२७
- (अ) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४२=
- (न) 'मियुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४२६
- (भ) 'ककें' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३०
- (क) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३१
- (न) 'कन्या' राशि थर स्थित हो तो संस्था ५३२
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३३
- (अ) 'बुश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या १३४
- (स) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४३४
- (স) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संस्था ५३६
- (ट) 'कुम्म' राशि पर स्थित हो तो संख्या १३७
- (ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो सो संख्या ५३-

'कर्क' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१---'कर्क' लग्न बालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५३१ से ५५० के बीच देखना चाहिए।

र--'कक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विधिन्त बाबों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नसिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

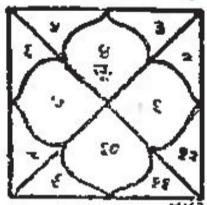
जिस वर्ष में 'केतु'-

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३६
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संस्था ४४०
- (ग) 'मियुन' राशि पर स्थित हो तो सख्या ५४१
- (व) 'ककें' राशि पर स्थित हो तो सख्या ४४२
- (क) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४४३
- (न) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४४
- (छ) 'तुला' रामि पर स्थित हो तो संख्या अ४%
- (अ) 'बुश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४६
- (झ) 'मनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४७
- (अ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४४=
- (ट) 'कुम्म' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४६
- (ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या १५०

'कर्क' सम्न में 'सूर्व'

'ककें' सन्त को कुण्डली के 'अधमसाब' स्थित 'सूर्वे' का फलादेश

ककं लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

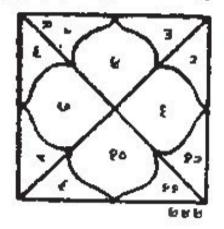


प्रथमभाव में जिस चन्त्रमा को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, तेज सथा प्रभाव में वृद्धि होती है। उसे धन तथा कुटुम्ब की शक्ति भी प्राप्त होती है।

सातवीं शतुद्धि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के जेत में कुछ कठिनाइयों के साय साय होता है।

'कर्क' सरन की कुञ्जली के 'ब्रितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्कं लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

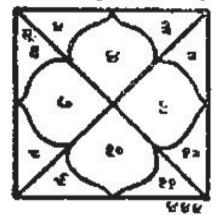


दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन, कुटुम्ब, यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

सातवीं शतुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में कमी आती है तथा पुरातस्य एवं दैनिक चर्या में यो सामान्य कठिनाइयों का शिकार होना पड़ता है।

'कर्क' लाम की कुच्छली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

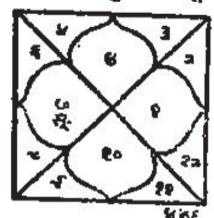
कर्कं सन्तः तृतीयभावः सूर्य



तीसरे मान में भिन्न बुध को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख कुछ जुटियों के साय प्राप्त होता है। पराक्रम के द्वारा धन-वृद्धि यो होती है। सातवीं मिन्नदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक पराक्रम द्वारा पाग्य की वृद्धि तथा वर्ष का पालन करता है। उसका प्रभाव एवं सम्मान यो बढ़ता है।

'ककें' लग्न की कुष्डलों के 'बतुर्वेशाव' स्थित 'सूर्वे' का फलादेश

कर्क खग्न : चतुर्यमाव : सूर्य

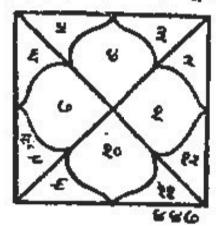


नौये भाव में मनु मुक को राशिस्य बीच के सूर्य के प्रभाव से जातक के माता, भूमि सथा भवन के सुख में कमी रहती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कम मिलता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से दसमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के होत में सफलता, यस तथा धन की प्राप्ति होती है।

'ककें' लग्न को कृष्टलों के 'पंचममाव' स्थित 'सूर्य' का फसादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : सूर्य

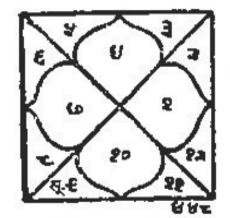


पीचवें भाव में मिन्न भंगल को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के सन्तान-सूख में बाधा आती है, परन्तु एक सन्तान अत्यन्त प्रभावशालिनी होती है। विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है तथा धन की बृद्धि की होती है।

सातवी शतुदृष्टि से एकादशभाव की देखने से आगदनी अच्छी रहती है। ऐसा जातक स्पष्ट यक्ता तथा उप स्वभाव का होता है।

'कर्क' लग्न की कृष्टलों के 'बच्छभाव' स्थित 'सूर्य' का फसादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : सूर्य



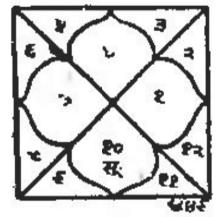
छठें भाव में मिल्ल गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से खातक शलु-पक्ष पर अत्यन्त प्रभाव रखता है, परन्तु धन तथा कुट्रुम्ब के सुख में कमी रहती है।

सातवीं मिलदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। ऐसा व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा के आगे धन की जिता नहीं करता तथा सगड़े एवं परिश्रम के

कामों से प्रभाव की वृद्धि करता है।

'कर्क' लग्न को कुष्डलो के 'सप्तमबाव' स्थित 'सूर्व' का फलावेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : सूर्य



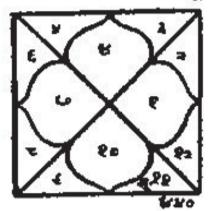
सातवें भाव में जन्न शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की स्ती-पक्ष से कट्ट होता है। स्त्री से बैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय में भी परेशानियां जाती रहती हैं। मूनेन्द्रिय में विकार सथा पारिवारिक कठि-नाइयां की रहती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक को प्रतिष्ठा मिलती है तथा

शारीरिक अभाव भी बना रहता है।

'ककें' लाल की कृष्डलों के 'अध्टममाव' स्थित 'सूर्वे' का फसावेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

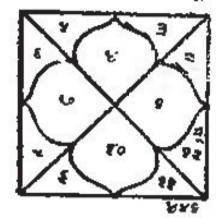


सातवें भाष में शनु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु पर कभी-कभी संकट आते रहते हैं तथा पुरातत्त्व के नाम में भी कभी आती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के द्वितीयभाव के बेखने से घन तथा कूटुम्ब के सुख में कुछ कभी रहती है तथा पेट में भी कोई रोग हो सकता है। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन घनवानों जैसा होता है।

'ककें' लग्न की कुष्पली के 'नवभभाव' स्थित 'सूर्ये' का कसादेश

कर्क लग्न : चवमभाव : सूर्य

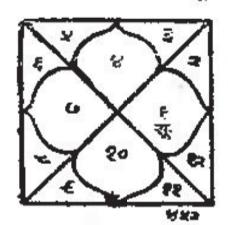


नवें भाष में मिन्न सूथ की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का भाग्य प्रवल होता है। वह धनं का पालन यो करता है तथा मान-प्रतिष्ठा यो पाता है।

सातनीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराकम में वृद्धि होती है तथा भाई-वहिनों का सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति पराकमी, सुखी, स्वार्थी तथा परमार्थी होता है।

'कर्क' लब्द की कुथ्हली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्व' का फसादेश

कर्के लग्न : दशमभाव : सूर्य

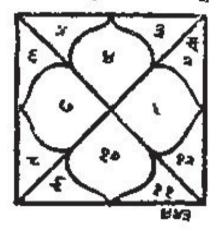


दसवें भाव में स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से आतक की पिता, राज्य तथा क्यवसाय के केंद्र में सहयोग, प्रतिष्ठा सथा लाभ की प्राप्त होती है।

सातनीं नीचदृष्टि से चतुर्यभाव की देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के साथ हो घरेलू सुख में भी कुछ कमियाँ बनी रहती हैं।

'कके' लग्न की कुण्डली के 'एकादशमाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क स्वनः एकादशभावः सूर्ये

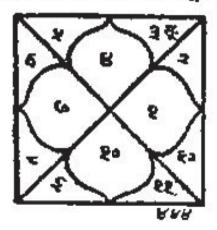


ग्यारहर्वे भाव में भसू शुक्र की राशि पर त्यित सूर्य के प्रभाव से जातक को धन का विशेष लाभ होता है, परन्तु कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है।

सातवीं भिवद्ष्टि से पंचमभाव की देखने के कारण विद्या-बुद्धि में प्रवीणता तथा सन्तान-पक्ष से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति ऐक्वर्यसाली जीवन विताता है।

'कर्क' स्वत्त की कुच्छली के 'हादशमाव' स्थित 'सुवें' का कलादेश

कर्क खग्न : द्वादशभाव : सूर्य



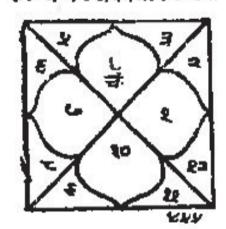
बारहवें भाव में भिन्न बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन का भेष्ठ लाभ होता है, परन्तु खर्च की अधिकता रहती है। यह रईसी ढंग का भीवन बिताता है। धन तथा कौटुम्बिक सुख में कभी बनी रहती है।

सातवीं भिववृष्टि से षष्ठभाव की देखने से मानुओं पर विजय प्राप्त होती है।

'ककें' लग्त में 'खन्द्रमा'

'कर्क' लग्न की कृष्टली के 'प्रयममार्व' स्थित 'बन्त्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रवसभाव : चन्द्र

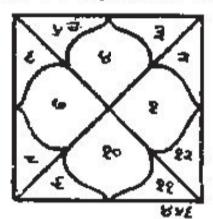


पहले आव में स्वराणि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से आतक को सौन्दर्ग, स्वास्थ्य, अधिक सब्सि, यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति उच्च कोटि का विचारक सवा मुकी होता है।

सातनी मनु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्ती-पक्ष में असन्तोषपूर्ण सुख प्राप्त होता है, परन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी सफलता मिलती है।

'ककं' लग्न की कुथाली के 'ब्रितीयभाव' स्थित 'बलाया' का फलावेश

कर्के लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र



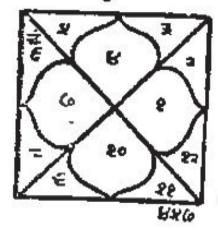
दूसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थितः चन्द्रमा के प्रभाव से आतक को कुछ परेशानियों के साथ सन तथा कीट्रुम्बिक सुख पर्याप्त माता में उपलब्ध होता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से अष्टम लाम को देखने से आयु के विषय में परेशानियाँ आती हैं तथा पुरातत्त्व का लाम कम होता है। ऐसा व्यक्ति

शान-शौकत का जीवन विताने वाला, प्रतिष्ठित या भाग्यशाली होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

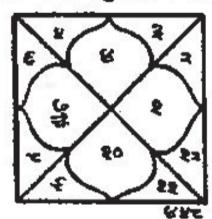


तीसरे भाव में जिस सुख को राश्चियर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पराकम एवं भाई-वहिन के सुख में अस्यन्त वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र दृष्टि से नवमभाव को देखने से वर्ष सवा भाग्य की भी पर्याप्त उन्नित होती है ! ऐसा व्यक्ति धार्मिक, दानी, उदार, ईश्वर-भक्त, धनी, उत्साही, पराक्रमी सवा पुरुषार्थी होता है।

'कर्क' सन्त की कुथ्हली के 'सतुर्वभाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलादेश

क्षके लग्न : चतुर्वमाव : चन्द्र

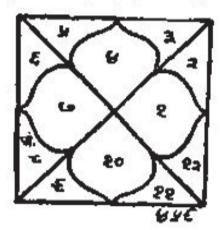


नौथे भाव में सामान्य-मित्र शुक्त की राशि पर स्थित भन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि भवन आदि का पर्याप्त सुख उपलब्ध होता है। उसका शरीर सुन्दर सवा मन कोमल होता है।

सातवीं मित्र दृष्टि से दशममाय की देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता, सहयोग एवं यज्ञ को प्राप्ति होती है। ऐसा जातक हर प्रकार से सम्यन्त एवं सुखी रहता है।

'कर्क' लग की कृष्टली के 'वेषममाव' स्थित 'बन्त्रमा' का कसादेश

कर्के लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

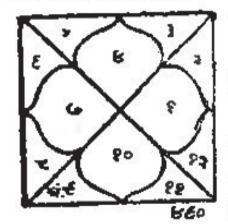


पाँचवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में कठिनाई से सफलता मिलती है। मन तथा भरीर भी दुवेंल रहता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से एकादशमाय को देखने से गुप्त मानसिक एवं शारीरिक शक्तियों के बस पर आमदनी अच्छी बनी रहती है, पर्न्तु कुछ अशान्ति का अनुभव भी होता है।

'कर्क' लग्न की कुष्डली के 'वष्ठमाव' स्थित 'वसमा' का फलावेश

कर्के लग्न : बष्ठभाव : चन्द्र

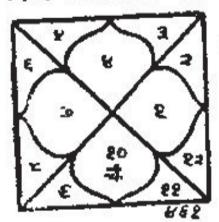


छठे भाव में मित्र सूथकी राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्नु-पक्ष में दुर्बेलता रहती है और विनम्न बनकर काम निकालना पश्ता है।

सातवी मिल-पृष्टि से द्वादशभाव की देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से यश, सम्मान तथा धन प्राप्त होता है एवं खर्च की अधिकता रहती है। ऐसा व्यक्ति गौरवशाली तथा आत्मवली होता है।

'कर्क' लाम की कृष्टकों के 'सप्तमगाव' स्थित 'बलाया' का फलावेस

कर्के लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र



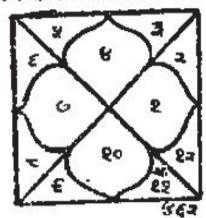
सातवें भाव में शसु भान की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्ती-पक्ष में कुछ असन्तोष के बाद सफलता मिलती है तथा व्यवसाय पक्ष में भी कठिनाइयाँ अरती हैं। ऐसा व्यक्ति भोगादि में अधिक रुचि रखता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि के प्रथमभाव की देखने से बारीरिक सीन्दर्य, प्रभाव, मनोबल तथा

खात्मिक बल की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, विनासी, सुखी तथा सुन्दर होता है।

कर्त सन्त की कुष्डली के 'अष्टभभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

ककं लग्नः अष्टमभावः चन्द्र

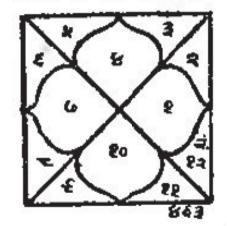


आठवें भाव में शत्नु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से आतक के भारीरिक सौन्दर्य में कभी आती है तथा पुरातत्त्व का लाभ असन्तोषजनक रहता है, परन्तु आयु की वृद्धि होती है।

सातवीं मिल्लदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने के कारण जातक अपने शारीरिक अम द्वारा धन-जन की वृद्धि करने में समय होता है।

'कर्क' सम्म की कुण्डसी के 'नवममाव' स्थित 'खन्त्रमा' का फलादेश

ककेलम्नः नयमभावः चन्द्र



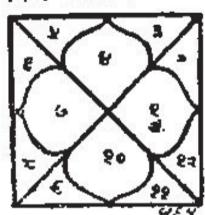
नवें भाव में मिल गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रमाद से जातक को मन तथा भारीर की अच्छी शक्ति प्राप्त होती है, जिसके कारण वह अपने भाग्य की खूब उन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में दृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है । ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली, धर्मात्मा,

सतोगुणी, ईस्वर-भक्त, यशस्वी सथा सज्जन होता है।

'कर्क' सन्त की कुण्डसी के 'बसमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' कृत फलादेश

ककं लग्न : दशमग्राव : चन्द्र

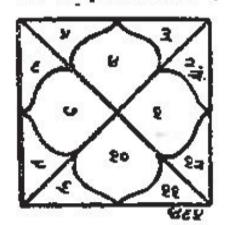


दसर्वे भाव में मिल्ल मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से आतक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय पक्ष से प्रभाव, यह तथा लाभ प्राप्त होता है और वह किसी उच्च पद की प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर तथा शक्तिशाली होता है।

सातवीं सामान्य मिल-दृष्टि से चतुर्वभाव की देखने के कारण जातक की भूमि, भवन आदि का सुख भी मिलता है।

'कर्क' सम्त की कुण्डली के 'ध्कावसभाव' स्थित 'क्ष्प्रमा' का फलादेश

कर्कलस्तः एकादशभावः चन्द्र

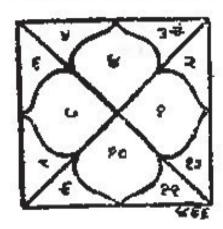


ग्यारहवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव के जातक की शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों एवं सौन्दर्य में दृद्धि होती है तथा आभदनी अच्छी रहती है।

सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कभी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने लाभ के लिए कटु शब्दों का प्रयोग करता पाया जाता है।

'कर्क सम्त की कृष्यती के 'द्वादशमाय' स्थित 'खल्डमा' का फलादेश

कके लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र



कारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को बाहरी सम्पर्क से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

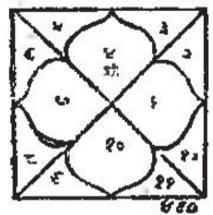
सातवीं मिल-दृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शतु-पक्ष में अपने शान्त स्वभाव के द्वारा प्रभाव-स्थापित करता है, परन्तु मन में कुछ अवान्ति भी बनी रहती है।

ऐसे व्यक्ति का शरीर दुवला-पतला होता है।

'कर्क' लग्न में मंगल

'कर्क' लग्न की कुष्कती के 'प्रथममार्थ' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्ते लग्नः प्रयमभक्षः संगल



पहले भाव में मिल चन्द्रमा की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा पिता, राज्य, सन्तान एवं विद्या का पक्ष भी धूर्वेल रहता है।

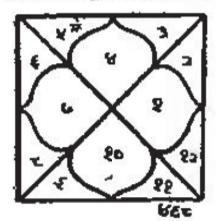
चौथी मिल-दृष्टि से चतुर्वमान की देखने से माता, भूमि, मवन का सुख मिलता है। सातवीं उच्च दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री-पक्षमें असन्तोष-पूर्ण दृद्धि होती है तथा व्यवसाय में कठिनाइयों के

साय सफलता मिलती है।

आठवीं शहु-दृष्टि के अध्यम भावकी देखने से पुरातत्त्व तथा दैनिक जीवन में कमी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'संगल' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : मगल



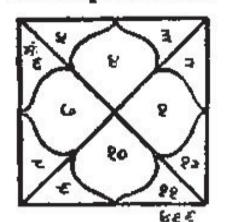
दूसरे भाव में मिझ सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की अन तथा कुटुम्ब का सुझ मिलता है। राज्य तथा पिता से भी लाभ होता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में पचमभाव की देखने से विद्या तथा सन्तान की शक्ति मिलने पर भी कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता रहता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से

आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कभी आती है। जाठवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव की देखने के कारण भाग्य, यश तथा धर्म की दृद्धि होती है।

ु 'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयशाव' स्थित 'संगल' का फलादेश

ककें लग्न : सुतीयभाव : अंगल

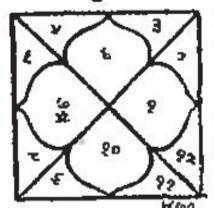


तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में दृद्धि होती है। विद्या तथा सन्तान का लाभ भी होता है। सातवीं मिन्न-दृष्टि से नवमभाव की देखने से जातक दृद्धि-शक से भाग्यशाली होता है तथा यश एवं धर्म का लाभ करता है। आठवीं दृष्टि से स्थराशि में दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय

के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। चौथी मिन्न-दृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शतु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा विजय मिलती है।

'कर्क' सम्न की कुष्डली के 'चतुर्यमाव' स्थित 'संगत' का फलादेश

कर्के लग्न : चतुर्यमाव : मंगल



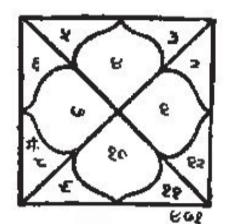
भीवे भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रमाद से जातक की माता, भूमि एवं भवन का सुक्ष मिलता है। विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। उच्च दृष्टि से सप्तम-भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय का अच्छा लाम होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि के दणमणाव को देखने के राज्य, पिता एवं व्यवसाय के सेन में सुख,

सहयोग तथा यश का लाभ होता है। सातवीं शबु-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से धन की भी पर्याप्त आमदनी बनी रहती है।

'कर्क' सान की कुष्डली के 'धंषमभाष' स्थित 'भंगल' का फलादेश

ककै लग्न :पंचमभाव : मंगल

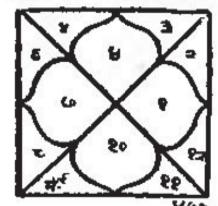


पांचरें भाव में स्वराभिस्य मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का यथेट लाभ होता है। चौथी शंबुद्धि से अव्हमभाव को देखने से कुछ असन्तोष के साथ पुरातत्त्व एवं आयु का लाभ होता है।

सातवी शतु-दृष्टि से एकादश आव की देखने से लाभ-प्राप्ति के लिए दिमागी परिश्रम अधिक करना पड़ता है तथा जाठवीं मिल-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से

यश-धन की प्राप्ति होती रहती है। 'कर्क' सम्म की कुच्छली के 'बच्छनाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

ककें लग्न : षष्ठभाव : मगल

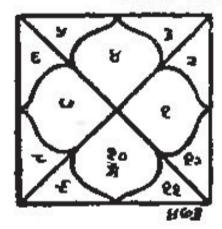


छठे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रमाद से जातक की शतु पक्ष में विजय मिलतो है तथा विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का की छेष्ठ लाभ होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्य सथा धर्म की बुद्धि होती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से द्वादशमाय की देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्ष अधिक रहताहै। आठवीं नीच-दृष्ट्र से प्रथम भाव

की देखने से जारीरिक सुक्ष, सौन्दर्य, स्वास्थ्य सथा शान्ति में कुछ कमी बनी रहती है। 'करूँ' सम्म की कुच्हली के 'सप्तमगाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

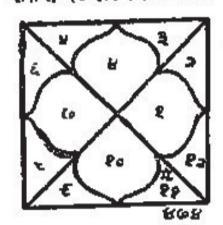
ककें लग्न: सप्तमभाव: मंगल



सातवें भाव में सन् मनि की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से आतक की अनेक सुन्दर स्मियों का लाम होता है प्रन्तु उनसे कुछ सतभेव भी रहतू है। व्यवसाय में विशेष सफलता मिलती है तथा विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पक्ष की बच्छा रहता है।

चौथी दृष्टि से स्वराणि में दशमधाय की देखने से पिता तथा राज्य से सुध, लाभ एवं सम्मान

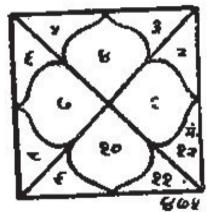
मिलता है। सातवीं नीच दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से खारीरिक स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कभी रहती है। आठवीं मिल-दृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन-संचय खूब होता है तथा वाणी भी प्रभावशासिनी होती है। 'कर्क' सम्म की कुष्डली के 'अध्ययकाव' स्थित 'संगत' का फलादेश कर्क लग्न: अध्यमभाव : संगल



आठवें भाव में शतु शनि की राशि पर स्थित मगल के प्रभाव से जातक को आधु तथा पुरातस्य का लाभ मिलता है, परन्तु विद्या, बुद्धि, सन्तान, पिता तथा राज्य पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है।

चौथी शतु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है। सातवीं मिन्न-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कौटुम्बिक सुझ में वृद्धि होती है। माठवीं मिन्न-दृष्टि से तृतीयभाव

को देखने से माई-वहिन के सुख तथा पराक्रम में दृद्धि होती है। 'कक' सम्म की कुच्छली के 'मयमभाव' स्थित 'संगल' का फलादेश कर्क लग्न: नवसभाव : संगल



नवें भाव में मिल गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति होती है तथा विद्या, बुद्धि, सन्तान, पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष का सुख की मिलता है।

चौथी मिल-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से बाहरी सम्बन्धों से लाग होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से थाई-बहिन के सुख तथा परक कम में दृद्धि होती है। बाठवीं शलू-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

'कर्क' सम्तः' की कुखली के 'बसममस्य' स्थित 'भंगल' का कलादेश कर्क सम्तः दशमभावः मंगल

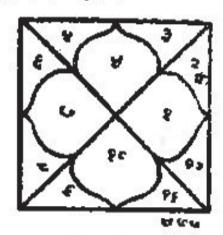


दसमें आव में स्थित स्वतेशी मंगल के प्रभाव के जातक की राज्य, पिता एवं व्यवसाय पक्ष से सुद्ध, यस तथा धन का साथ होता है। 'बौबी नीच-दृष्टि से प्रथमधाव की देखने से बारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शहु-दृष्टि से चतुर्यमाव की देखने से माता, मूमि तथा भवन का सुख शुष्ठ असन्तोषजनक

रहता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव की देखने के सन्तान, विद्या एवं अबि का अंक्ष्ठ जान होता है तथा कोई अन्य पर भी आपत होता है। 'कर्क' लग्न की कुष्डली के 'एकादसमाव' स्थित 'संगल' का फलादेश

कके लग्न : एकादशभाव : मंगल



ग्यारहुवें भाव में अपने सामान्य मित्र कुछ की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव के जातक को कठिन परिश्रम द्वारा पर्याप्त धन लाम होता है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। चौथी मित्रवृष्टि के द्वितीय-भाव को देखने से भी धन तथा कुटुम्ब के सुख का लाभ होता है।

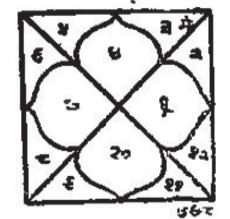
सातवीं दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव की देखने के कारण विद्या, बुद्धि सथा सन्तान

का लाभ होता है। आठवीं मिक्ष-दृष्टि से चष्ठभाव को देखने से शत्नु-पक्ष पर विषय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति बनी, सुखी तथा शत्नुजयी होता है। 'कर्क' सम्न की कृष्टली के 'हुएदशमाव' स्थित 'संगल' का फलादेश

बारहवें भाव में मिन्न बुध की राशियर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। पिता, राज्य, संताम

तथा विचा-मुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव

होता है।



कर्कं लग्न : द्वादशमाव : संगल

वीयो मिलदृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-वहिन के सुक्ष तथा पराक्रम में दृढि होती है।

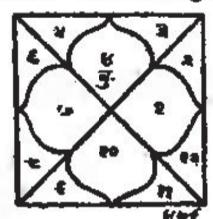
सातवीं मित्र दृष्टि के पष्ठभाव की देखने से शतु-पक्ष में विजय भिन्नती है। आठवीं उच्च-दृष्टि के सप्तम्भाव को देखने के स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता भिन्नती है। परन्तु

बुद्धिम्रम तथा मस्तिष्म में परेशानी की स्थिति भी बनी रहती है।

'ककें' सग्न में 'बुध'

'कर्के' लग्न की कूळली के 'प्रयम जाव' स्थित 'ब्रुप्त' का फलादेश

ककं लग्न : प्रथम भाव : बुध

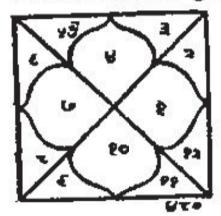


पहले भाव में शतु चन्द्रमा की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का आरीर दुर्बेल रहता है तथा भाई-बहिन के सुध में कभी आती है, परन्तु पराक्रम, एवं प्रधाव में वृद्धि होती है। बाहरी संबंधों से साम होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं मित्र-वृष्टि से सप्तमभाव की देखने से सामान्य बुटियों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के लेख में सफसता शाप्त होती है।

'कर्क' सम्त की कुम्बली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुद्ध' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयमाद बुध

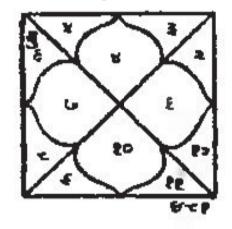


दूसरे भाव में मिल सूर्य की राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को धन-संघय के लिए अधिक प्रयत्न करना पड़ता है। भाई-बहिन के सुक्ष में कुछ कमी रहती है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं मित-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से-आयु का पूर्ण सुझ मिलता है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ अपूर्ण रहता है। दैनिक जीवन सुखी तथा प्रशाब-शाली रहता है।

'कर्क' सान की कुण्डली के 'शुतीयमाव' स्थित 'बुख' का फलादेश

ककं लग्न : तृतीयभाव : बुध

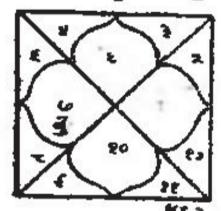


तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित सुझ के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुझ में कुछ कमी आती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से नवसभाव की देखने से भाग्य कमजोर रहता है तथा धर्म में भी विशेष रुचि नहीं होती। ऐसे व्यक्ति को अपयश भी उठाना पहता है।

'कर्त' सान की कुण्डली के 'बतुर्वभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्कं लग्न : चतुर्यभाव : बुध

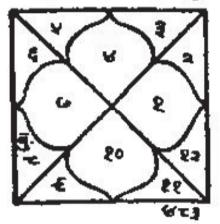


चौथे भाव में मिल शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव के जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुध में कुछ लुटिपूर्ण सफलता मिलती है, परन्तु भाई-बहिन का सुध प्राप्त होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ एवं सुध मिलता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से दलमणाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ मिलती हैं।

'कर्क' लग्न की कुच्डली के 'वेचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

ककं लग्न : पचमभाव : बुध

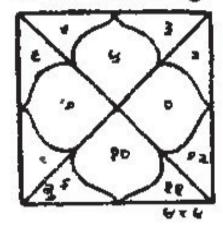


पाँचवें भाव में मिल्ल मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में जुटिपूर्ण सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान सथा हिम्मती होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से एकादशमाय की देखने से बुद्धि-यल द्वारा लाम होता है सथा बाहरी सम्बन्धीं से सुख प्राप्त होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'बष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलारेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : बुध

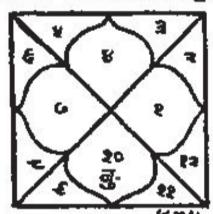


छठे थाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शतु-पण में न स्नता एवं शांति के आध्य से सफलता प्राप्त करता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि वाले द्वादशभाव की देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सामान्य सम्बन्ध बना रहता है।

'कई' सम्त की कुष्डली के 'सप्तमभाष' स्थित 'बुध' का फलादश

ककं लग्न : सप्तमभाव : बुध

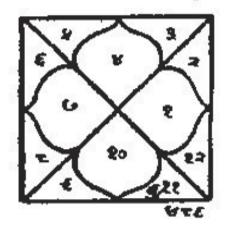


सातवें भाव में मिल्ल मनि की राशि परस्थित सुक्ष के प्रभाव से जातक की स्त्री का सुक्ष मिलता है तथा व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से प्रयमभाव की देखने के कारण जातक के शरीर में शक्ति तथा दुर्बेलता का सामंजस्य रहता है। ऐसा व्यक्ति अधिक खर्चीला होता है तथा बाहरी सम्बन्धों एवं परिश्रम के बल पर उन्नति भी करता है।

'कर्ब' समा की कुच्छली के 'अव्हमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेस

कर्कं लग्न : अष्टमभाव : बुध

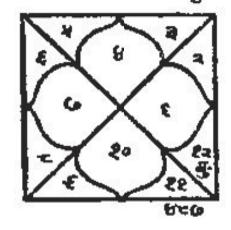


आठवें भाव में मनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का बुछ कमियों के साथ लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी आती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से खर्च चलता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से द्वितीयमाय की देखने से धन का लाम होता है, परन्तु सुध के व्ययेश होने के कारण खर्च अधिक बना रहता है।

'कर्क' सम्म की कुच्छली के 'नवसभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

ककें लग्न : नवमभाव : गुरु

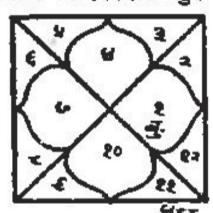


नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्वित बुध के प्रभाव से जातक की धर्म तथा भाग्योन्नित के क्षेत्र में कुछ तृटिपूर्ण सफलता मिनसी है। बाहरी स्वानों के सम्बन्ध से सामान्य लाभ होता है। खर्च अधिक रहता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से तृतीयभाव की देखने के कारण भुरुषायें की वृद्धि होती है, परन्तु भागो-न्त्रति में बाधाएँ की आसी रहती हैं।

'कर्क' सका की कुच्छली के 'दशमधाव' स्थित 'बुख' का फलादेश

कर्के लग्न : दशमद्भाव : बुध

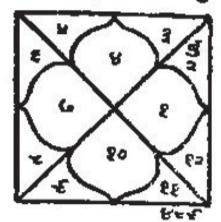


दसवें भाव में मिल संगल की राशि परस्थित बुध के प्रभाव के जातक की पिता, राज्य तथा ब्ययसाय के क्षेत्र में लुटिपूणं सफलताएँ मिलती हैं, परन्तु भाई-बहिन के सुक्ष तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

सावनीं मिल-दृष्टि के चतुर्वमान को देखने के कारण माता, भूमि एवं भनन आदि का सामान्य लाम होता है तथा परित्रम द्वारा खर्च चलता है।

'कर्क' सम्म की कुष्पसी के 'एकाइशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्कं लग्न : एकादशभाव : बुध

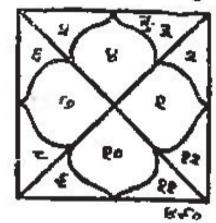


ग्यारहवें भाव में मिल जुक की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से पंचम भाव की देखने से सन्तान, विका तथा बुद्धि के क्षेत्र में लुटिपूर्ण लाभ होता है, परन्तु जातक अपनी बुद्धि, विवेक-शक्ति तथा वाणी के बल पर लाभ कमाता है।

'कर्न' सान की कुच्छली के 'द्वादशसाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : बुष्ट



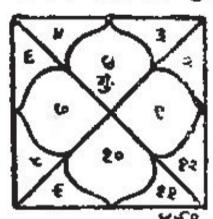
बारहवें भाव में स्वराशित्य बुध के प्रभाव के जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पष्ठभाव की देखने के कारण शान्त स्वभाव, पुरुषायं एवं व्यय की शक्ति से शतुपक्ष में सामान्य सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति धन खर्च करने के बल पर ही अनेक कठिनाइयों पर नियन्त्रण स्थापित कर पाता है।

'कर्क' लग्न में 'गुरु'

'कर्के' सम्त की कुम्बली के 'प्रथम भाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्के लग्न : प्रथमभाव : गुरु

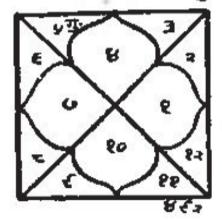


पहले भाव में मिस्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रमाद से जातक की शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। पौचर्यी मित्रद्दि से पंचमभाव की देखने से सन्तान, विद्या तथा वृद्धि का पूर्ण सुक्ष मिलता है।

सातवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री पक्ष तथा दैनिक खर्च में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। नवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव की देखने से भाग्य की शक्ति प्रवल रहती है तथा धर्म का लाभ भी होता है।

'कर्क' लग्न की कुच्चलों के 'द्वितीयबाव' स्थित 'गुर्व' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

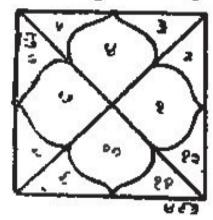


दूसरे भाव में मिल सूर्य की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि के षष्ठभाव को देखने से धन को शक्ति द्वारा शतु पक्ष पर विजय मिलती है।

सातवीं शतु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता

तया व्यवसाय के क्षेत्र में यश, धन, सहयोग तया सफलता का लाभ होता है। 'कर्क' लग्न की कुण्डसी के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : सृतीयभाव : गुरु

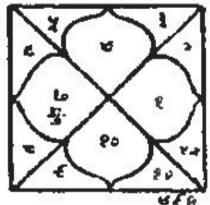


तीसरे भाव में मिल बुध को राशि पर स्थित गुरु के भभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख मिलता है। पाँचवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि तथा क्लेश का शिकार बनना पड़ता है।

सातनीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव की देखने से धर्म तथा भाग्य को वृद्धि होती है। नवीं

शतू-दृष्टि से एकादशमाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति धर्मात्मा, धनी, हिम्मती तथा शत्रुजयी होता है। 'कर्क' सम्म की कुष्पसी के 'चतुर्षभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

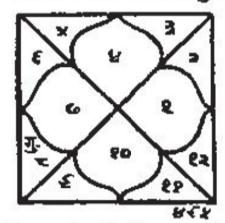
कर्क लग्न : चतुर्यभाव : गुरु



चौथे भाव में शतु शुक्त को राशि पर स्थित
गुर के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन
के खेत में सुटिपूर्ण लाम होता है। शतु पक्ष में भान्ति
से सफलता मिलती है। पाँचवीं शतु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आगु तथा पुरातत्त्व के खेल में कुछ
वसन्तोष रहता है।

सातवीं मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नवीं मित्र दृष्टि से द्वादम भाव को देखने के कारण बाहरी संबंधों से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक रहता है। 'कर्के' लग्न की कुष्वली के 'पंचमवाव' स्थित 'गुव' का फलावेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : गुरु

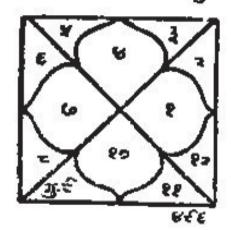


पौजर्वे भाव में मिल मंगल की रामि पर
स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या, बृद्धि तथा
सन्तान के खेल में विशेष सफलता मिलती है। पौजनीं
दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से बृद्धि तथा
सन्तान के सहयोग से भाग्य तथा धर्म को वृद्धि
होती है।

सातवीं शतु दृष्टि से एकादशमाय की देखने

से लाभ के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। नवीं मित्र दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य, आत्मवल तथा यश की वृद्धि होती है। गुरु के घष्टेश होने के कारण जातक को प्रत्येक क्षेत्र में कुछ परेशानियों के बाद ही सफलता मिलती है। 'कर्क' लग्न की कुष्यसी के 'घष्टभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्के लग्न : वष्ठभाव : गुरु

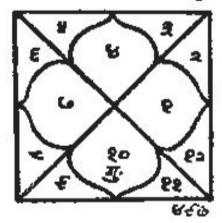


छड़े भाव में स्थराशि स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अपने शतूओं पर अत्यिक्षिक प्रभाव स्थापित करता है तथा यशस्वी होता है। परन्तु भाग्योन्नित में कुछ किताइयाँ आती है। पौचनीं मिन्न-दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। पीचनीं है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा

खर्चे अधिक रहता है। नवीं मिझ-दृष्टि से द्वितीयभाव की देखते के कारण धन तथा कुटुम्ब का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा यशस्त्री होता है। 'कर्क' सम्ब की कुष्यसी के 'सप्तमभाव' स्थित 'गूव' का फलादेश

कर्के लग्न : सप्समभाव : गुरु



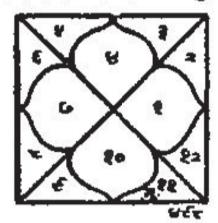
सातवें भाष में सबू शनि को राशि पर स्थित नीच के गुर के प्रभाव से जातक को स्थी तथा व्यवसाय के खेब में कठिनाइयां आती हैं तथा सबु पक्ष से व्यवसाय को हानि पहुँचती है। पाँचवीं शबु-दृष्टि से एकादशमाय की देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि हिस प्रयमभाव को देखने

से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। नवीं मिल-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिन का सुख भी मिलता है।

'कर्फ' लग्न की कुष्यसी के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुर्फ' का फलादेश

कर्के लग्न : अष्टमभाव : गुरु

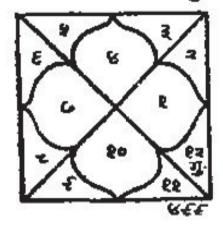


आठवें भाव में शतु शनि की राशि पर स्थित युरु के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का बुटिपूर्ण लाभ होता है, परन्तु शतु पक्ष से अश्वान्ति भिलती है तथा भाग्य पक्ष दुर्वेल रहता है। पाँचवीं मिल-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ भी होता है।

सातवीं मिन्न-दृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से घन तथां कुटुम्ब की वृद्धि होती है। नवीं शतु-दृष्टि से चतुर्यभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के बुध में कुछ कमी रहती है।

'कर्क' सन्म को कुम्हली के 'नवममत्रव' स्थित 'गुर्क' का फलावेश

कर्के सप्त : नवमभाव : गुरु

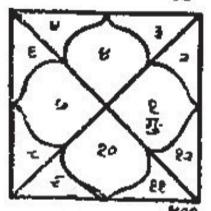


नवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म को वृद्धि होती है। पौचवीं उच्च दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। नवीं मिल-दृष्टि से पंजमभाव को देखने से विद्या-बृद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी विशेष सफलता मिलती है।

'कर्क' सम्म की कुन्दली के 'दशममाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्के लग्न: दशमभाव: गुरु



दसर्वे भाव में मिल मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के खेल में पूर्ण सफलता, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। पौचवीं भिल-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब की बृद्धि होती है।

सातवीं शतु-वृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से कुछ असन्तोष के साथ माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में

वष्ठभाव की देखने से शबु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम तथा झगड़ों के द्वारा उन्तित करता है।

'कर्फ' सम्म की कुष्डली के 'एकादशकाब' स्थित 'गुब' का फलावेश

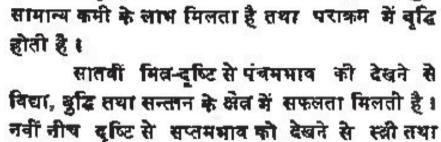
कर्के लग्न : एकादशभाव : गुरु

20

ε

23

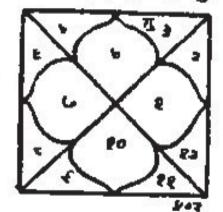
ग्यारहुवें भाव में शतु शुक्र को राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा लाम कमाता है तथा उसे शतु पक्ष से भी साभ होता है। पौचरी मिल-वृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-वहिनों का सुख सामान्य कमी के लाभ मिलता है तथा पराक्रम में विद



व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष एवं हानि का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति धनी अवश्य होता है।

'कर्फ' लग्न की कुन्बली के 'हादराभाद' स्थित 'गुर्द' का फसादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : गुरु



बारहवें भाव में मिल बुध की राशि पर स्थित
गुरु के प्रभाव से जातक की बाहरीं सम्बन्धों से लाभ
होता है तथा खर्चे अधिक रहता है। भाग्य तथा धर्म के
क्षेत्र में कमी रहती है। पौचवीं शतु दृष्टि के चतुर्थभाव
को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख बड़े परिश्रम
हारा मिलता है।

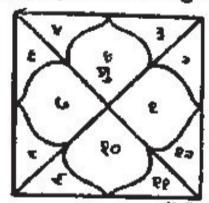
सातवीं वृष्टि से स्वराशि में षष्ठ भाव की देखने से शतुपक्ष में सफलता मिलती है। नवीं शतु-वृष्टि से

अब्टममान की देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

'कर्फ' लग्न में 'शुक'

'कर्क' साम की कुच्छली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

कर्के लग्न : प्रयमभाव : शुक

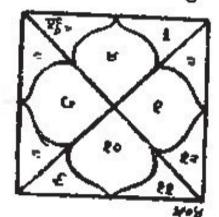


पहले भाव में शबु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शुक्र के अभाव से आतक की शारीरिक सौन्दर्य, सुख तथा चातुर्य का लाभ होता है। माता तथा भूमि का बुध भी मिलता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के खेल में भी लाभ होता है तथा भोगादि में खूब दिंच छनी रहती है। ऐसा जातक सुखी, छनी, विलासी तथा ऐम्बर्गशासी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'ब्रितीयमाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्नः द्वितीयभावः शुक्र

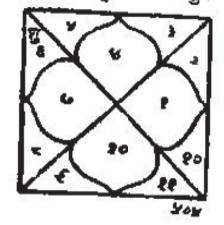


दूसरे भाव में शतु सूर्य की राशि पर स्थित सुख के प्रभाव से खातक की धन-कुटुम्ब का सामान्य असन्तोष के लाभ सुख प्राप्त होता है तथा भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है। माता के सुख में कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। ऐसा जातक धनी तथा सुखी जीवन विताता है।

'कक' साम को कुण्डली के 'सुतीयमाव' स्थित 'शुक' का फलादेश

कर्के लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

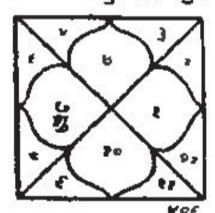


तीसरे भाव में मिल बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के भाई-बहिन के गुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। माता के सुख में भी कमी का अनुभव होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्य की श्रेष्ठ वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी भीतरी कमजोरियों को फिपाकर प्रकट में हिम्मती बना रहता है।

'कर्क' साम की कुण्डली के 'शतुर्थमाव' स्थित 'शुक' का फसावेश

कर्केलग्न : चतुर्यमाव : मुक

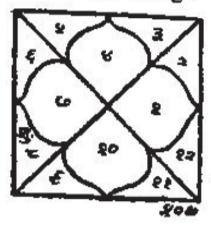


चौथे भाव में स्वराणि-स्थित शुक्त के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है। आय में वृद्धि होने से वह धनी भी बनता है।

सातवी मिल-दृष्टि से सप्समभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता, सुख, यश एवं धन की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा चतुर, प्रतिष्ठित तथा धनी होता है।

'कर्क' सम्म की कुण्डली के 'पंचममान' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : शुक्र

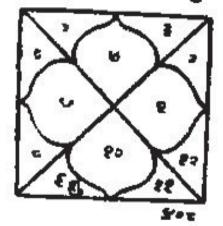


पौचरों मान में सामान्य मिल मंगल को राशि पर स्थित शुक्त के प्रभाव से जातक को विद्या, शुद्धि तथा सन्तान का यथेष्ट लाम होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादशमान को देखते से आमदनी भी अच्छी रहती है तथा धन का लाभ खूब होता है।

ऐसे व्यक्ति की माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है।

'कके' सप्त की कुखसी के 'वष्ठभाव' स्थित 'शुक' का कलादेश

कर्के लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

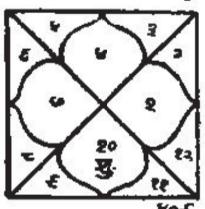


छठे भाव में शतु गुरु को राशि पर स्थित भुक के प्रभाव से जातक को शतु-पक्ष में विजय भिलतो है, परन्तु माता, भूमि तथा भवन के सुख में फुछ कमी तथा अशान्ति भी रहती है। लाभ के मार्ग में भी परतन्त्रता का योग बन्द्रा है।

सातवीं मिन्नदृष्टि से द्वादमभाव की देखने के कारण बाहरी सम्बन्धों से सुख तथा लाभ मिलता है तथा खर्च अधिक रहता है।

'कके' लग्न को कुच्छलों के 'सप्तममाव' स्थित 'शुक्र' का फसावेश

कर्केलग्नः सप्तमभावः शुक

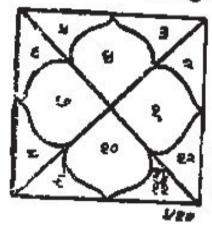


सातवें भाव में मिल मिल की राशि पर स्थित सुख़ के प्रभाव से जातक की स्त्री, व्यवसाय सथा दैनिक आय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं मित-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक की बारीरिक सीन्दयें, प्रभाद, चातुर्वे एवं सुख की प्राप्ति भी होती है।

कर्क' लग्न की कुष्वती के 'अव्हमभाव' स्थित 'शुक्क' का फसावेश

कर्के लग्न : अध्यमभाव: शुक्र

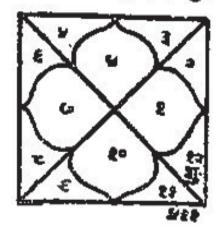


काठवें भाव में मिल्ल शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातस्य का लाभ होता है तथा परदेश में रहकर उन्नति करता है। घरेलू सुख में कुछ कभी भी रहती है।

सातवीं शतु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संचय नहीं ही पासा तथा कीटुम्बिक सुख में भी कमी रहती है।

'कर्क' सन्त की कुष्डली के 'मवसभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

कर्के लग्न : नवसमाव: शुक्र

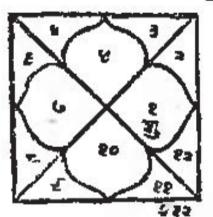


नवें भाव में शतु गुरु की राशि पर स्थित उच्च शुक्र के प्रभाव से जातक के धर्म सथा भाग्य को विशेष वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का उत्तम सुख भी मिलता है।

सातवीं दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-वहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवादी, धनी सुखी तथा सौभाग्यशाली होता है।

कर्के लग्न की कुछाती के 'बसमभाव' स्थित 'शुक' का फलावेश

ककं लग्न: दशमभाव: भुक



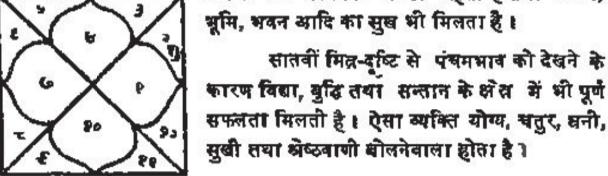
दसवें भाव में सामान्य मिल भंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलताएँ मिलती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्घभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्रभूत माला में उपसब्ध होता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, गंभीर, चतुर, बुद्धिमान, म्हंगार-प्रिय, प्रेमी तथा ऐक्यमंत्रासी होता है।

'कर्क' सन्त की कुन्दसी के 'श्कादशमाव' स्वित 'शुक्र' का फलावेश

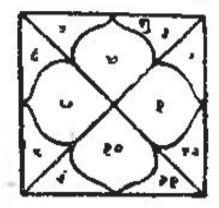
ग्यारहवें भाव में स्वक्षेत्री भूक के प्रभाव से 'कर्क' लग्न : एकादशभाव : सुख

जातक को आमदनो अच्छी रहती है तथा माता, भूमि, भवन आदि का सुख भी मिलता है।





कर्क लग्न : द्वादशभाव : शुक्र



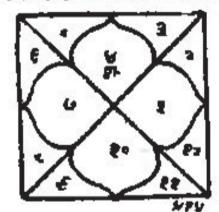
बारहवें भाव में मिल बुध को राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख एवं लाभ उठाता है तथा उसका खर्व अधिक रहता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है तथा मातुश्रमि से अलग भी रहना पड़ता है।

सातवीं शतु-दृष्टिस षष्ठभाव को देखने से शस् पक्ष में चातुर्य एवं खर्च से काम निकालने में सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न में 'शनि'

'कर्फ' लग्न की कुव्यली के 'अथमधाव' स्थित 'शर्मि' का फसाबेश

कर्के लग्द : प्रयमभाव : शनि



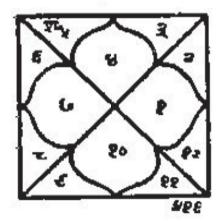
पहले भाव में शबु चन्द्रमा की राक्षि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा गरीर में रोग भी रहता है। तीसरी मिल-दृष्टि से तृतीयमाव की देखने से भाई-बहिन का खुटिपूर्ण सुख मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वज्ञेत्र में सप्तमभाव की देखने से ब्यावसायिक क्षेत्र में सफलता मिलती है

तथा स्त्री का सुख होने पर भी उससे कुछ परेशानी रहती है। दसवीं नीय-वृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता तथा राज्य के क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान का सामाना - साभ होता है।

'कर्क' सम्म की कुण्डसी के 'द्वितीयमाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : शनि

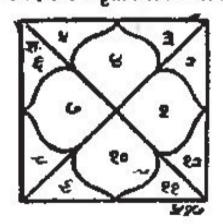


दूसरे भाव में शनुं सूर्य की राशिपर स्थित शनि के प्रभाव से आतक को धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में हानि पहुँचती है। तीसरी उच्च दृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव की देखने से आयु-वृद्धि तथा पुरातत्त्वका नाम होता है। दसवीं मिल-दृष्टि से एकादशभाव की देखते से

परिश्रम द्वारा धन का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अभीरी ढंग का जीवन तो विताता है, परन्तु धन तथा पारिवारिक सुख में कमी ही बनी रहती है।

'कर्क' सम्म की कुष्यसी के 'सुतीयमाव' स्थित 'शनि' का फसाबेस कर्क सम्म : तृतीयमाव : शनि

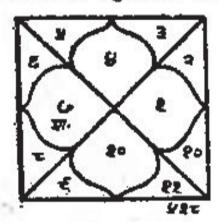


तीसरे भाव में मिल बुध को राशि नर स्थित शिन के प्रभाव से आतक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों द्वारा परेशानी भी मिलती है। तीसरी शतु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान से कष्ट मिलता है तथा विद्या-बुद्धि को कमी रहती है।

सातवीं शतु-दृष्टि से नवममाव को देखने से भाग्य में स्कावटें आती हैं तथा धर्म में अरुचि रहती

है। बारहवीं मिल-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक रहता है। ऐसा व्यक्ति कुछ कोधी स्वभाव का होता है।

'कर्क' लग्न की कुष्पती के 'चतुर्यमाव' स्थित 'शनि' का फलावेश' कर्क लग्न : चतुर्यमाव : शनि



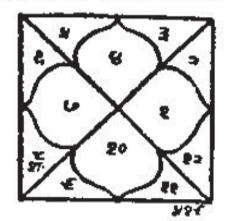
चौथे भाव में मिल शुक्त की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से माता के सुख में कुछ कमी आती है, परन्तु भूमि, भवन का यवेष्ट सुख मिलता है। सीसरी शतु-दृष्टि से पष्ठभाव को देखने से शतु-पक्ष में प्रभाव रहता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। दसवीं शतु-दृष्टि से प्रयमभाव को देखने

से मरीर में बासस्य तथा रोग रहता है तथा घरेलू सुख में भी कुछ कमी आती है।

'कर्क' लग्न की कुष्वलों के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फसावेश

कर्के लग्न: पंचमभाव: शनि



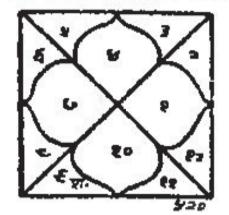
पौचवें भाव में शबु मंगल को राशि में स्थित शिन के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में किठनाइयाँ आती हैं। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से बुद्धिमती स्थ्री मिलती है, परन्तु उसके कारण कुछ कष्ट भी होता है। व्यवसाय में भी बुद्धि-योग से सफलता मिलतीहै।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने

से आमदनी अच्छी रहती है। दसवीं शतु-दृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन-संशय में कमी रहती है तथा कुटुम्ब द्वारा भी परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं।

'कर्क' लग्न की कुष्डली के 'बळमाव' स्थित 'सनि' का फसावेस

कर्क लग्न : षष्ठभाव : शनि



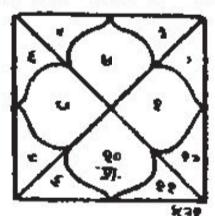
छठे भाव में शतु गुरु को राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शतु-पक्ष में प्रभाव बनाये रखता है परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के छोत्र में कुछ कठिनाइयों। के बाद ही सफलता मिलती है। तीसरी दृष्टि में स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातस्य की शक्ति बढ़ती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से द्वादणभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से नाम

होता है। दसवीं मिल-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु माई-बहिन से बैमनस्य रहता है।

'कर्के' छग्न की कुष्पसी के 'सप्तमभाव' स्थित 'शर्मि' का फसाबेश

कर्के लग्न : सप्तममाव : शनि



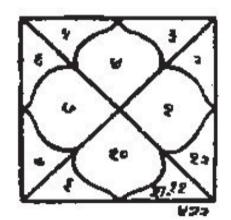
सातनें भाव में स्वराणि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा भोगादि के सुख भी खूब मिलते हैं। तीसरी शतु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शतु-दृष्टि से प्रथमभाव की देखते से शारीरिक सौन्दर्थ एवं स्वास्थ्य में कभी आती है। दसवीं उच्च-दृष्टि से चतुर्यभाव की देखने से माता,

भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है।

'कर्क' सम्म की कुष्डली के 'अष्टममाव' स्पित 'शनि' का फलादेश

कर्के लग्न : बष्टमभाव : शनि



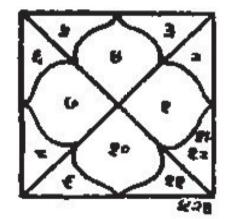
वाठवें भाव में स्वराणि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु बढ़ती है तथा पुरातस्व का साभ होता है, परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के सेव में परेशानियां बनी रहती हैं। बाहरी स्थान के संबंध से सक्ति भी मिलती है।

तीसरी नीच-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानी रहती है। सातवीं शतु-दृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से वन-संचय तथा कुटुम्ब-सुख में कमी आती है। दसवीं

शतु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का अनुभव होता है।

'कके' सक्त की कुष्टली के 'नवममाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्के सम्त : नवमभाव : शनि

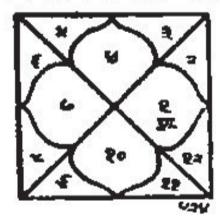


नवें भाव में शतृ गुरु की राशि पर स्थित शित के प्रभाव से जातक को धर्म-पालन तथा भाग्योत्नति के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां जाती हैं, परन्तु आयु की बृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी बढ़ती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में बृद्धि होती है तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी

रहती है। दसवीं शतु-दृष्टि से वष्ठमाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के बाद शतु-पक्ष पर प्रमाव स्थापित होता है।

'कर्क' लग्न की कुच्बली के 'बशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्के सम्ब : दशमभाव : शनि



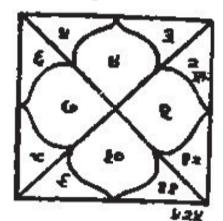
दसमें भाव में शबू मंगल को राशि पर स्थित नीन के मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में किठनाइयाँ जाती रहती हैं। पुरातत्त्व तथा आयु की हानि भी होती है। तीसरी मित्र-वृष्टि से द्वादमभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है।

सातवीं उच्चद्दि से चतुर्यभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन आदि का सुख मिलता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से

स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकावश जाव' स्थित 'शबि' का फलावेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : शनि



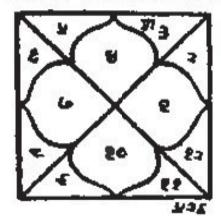
ग्यारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। स्त्री तथा व्यवसाय पक्ष में भी लाभ होता है। तीसरी शतु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है।

सातवीं शतु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कष्ट

रहता है। दसवीं दृष्टि से स्वराणि में अष्टमभाव को देखने से आयु बढ़ती है सथा पुरातस्य का साभ भी होता है। ऐसा जातक कम पढ़ा-लिखा होने पर भी अपने चातुर्य एवं परिश्रम द्वारा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

'कर्क' सम्म की कुण्डली के 'द्वादरामाव' स्थित 'शमि' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव । शनिः



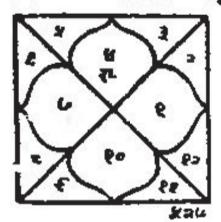
बारहवें भाव में मिल बुध को राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा ख़र्च अधिक रहता है। स्त्री, व्यवसाय, खायु तथा पुरातस्व की शक्ति में हानि होती है। तीसरी शतु-दृष्टि से द्वितीय-भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में भी धीर चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं शतृ-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शतु उत्पात करते रहते हैं, परन्तु उन पर प्रभाव भी बना रहता है। दसवीं शतू-दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म-पालन में कमी रहती है तथा भाग्य को शक्ति भी क्षीण हो जाती है। परन्तु इन सब कठिनाइमों के बावजूद जातक शानदार जीवन व्यतीत करता है।

'कर्क' लग्न में 'राहु'

'कर्क' सम्म की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

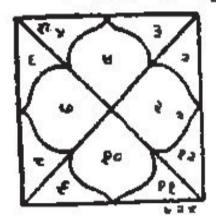
कर्क लग्न : प्रथमभाव : राह



पहले भाव में शतु चन्द्रमा की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के मारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है सथा हुदय चिन्तित बना रहता है। कभी-कभी मृत्युतुल्य कब्टों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु वह गुप्त युक्तियों के बल पर अपने सम्मान को अवाये रखता है तथा उन्नति के लिए कठिन परिश्रम भी करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

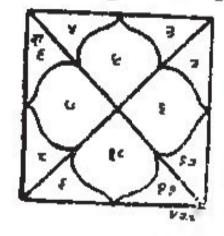
कर्क लग्न : द्वितीयभाव : राह्र



दूसरे भाव में शतू सूर्य को राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब के सुख की हानि होती है। वह गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर धन की वृद्धि के लिए प्रयत्नणील रहता है और कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी प्राप्त करता है। उसे अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए सदेव चितित बने रहना पड़ना है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी तथा हिस्मती होना है।

'कर्ड' लग्न की कुण्डली के 'सुतीयमाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव । राह्र

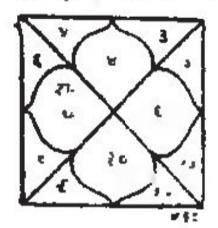


तीसरे भाव में मिल्ल बुध की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ भाई-वहिन का सुख भी मिलता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए कठिन परिश्रम, गुप्त युक्तियों तथा पुरुषायें का सहारा लेता है। भीतरी रूप से कमजोर होने पर भी ऊपर से बडा हिम्मती दिखाई देता है।

'कर्क' सम्म की कुण्डली के 'चतुर्यभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

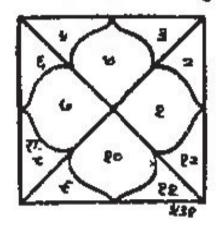
कके लग्न : चतुर्यभाव : राहु



चौथे भाव में मित्र सुख की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माला के सुख में कुछ कमी प्राप्त होती है तथा भूमि और भवन का सुख भी अल्प माना में अप्त होता है। उसे देश छोड़ कर परदेश में भी रहना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति कमी-कभी असफलताओं का भी विशेष शिकार बनता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलादेश

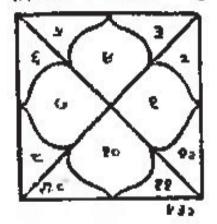
कर्क लग्न : पंचमभाव : राहु



पीचवें भाव में शसू मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की विद्याध्ययन में कठिनाई आती है तथा सन्तान-पक्ष से कच्ट होता है। ब्रष्टुत समय बीत जाने पर हो सन्तान का सुख मिलता है। कम पढ़-लिखा होने पर भी ऐसा व्यक्ति अपनी बातों से बड़े-बड़े बुद्धिमानों को भी प्रभावित करता है। यह स्वभाव से जिही तथा कानून का जानकार भी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'बष्ठमाव' स्थित 'राहुं' का फलादेश

कर्कं लग्न : षष्ठभाव : राहु

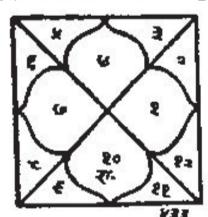


छठे भाव में शतु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के लिए शतु-पक्ष द्वारा कठिनाइयां उत्पन्न को जाती हैं, परन्तु वह देश-नीति के आश्रय से उनका दमन करने में सफल हो जाता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों का जाता, चतुर, स्वार्थी तथा पाप-पुष्य की चिन्ता न करने बाला होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तममाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

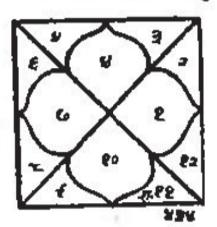
कर्कं लग्न : सप्तमभाव : राहु



सातवें भाव में मिल्ल शनि को राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के खेल में परेशानियों तथा कठिनाइयों का शिकार होना पड़ता है। उसकी इन्द्रिय में विकार होता है। घरेलू मामलों में उसे कमी-कभी घोर कब्ट उठाना पड़ता है, परन्तु अन्त में सफलता भी प्राप्त कर लेता है।

'कर्क' लात की कुण्डली के 'अष्टभमाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

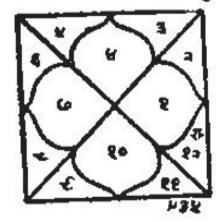
कर्क स्टब्न : अष्टमभाव : राहु



सातवें भाव में मित्र श्रांत की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आयु के बारे में कभी-कभी चिन्ताजनक स्थितियों का मुकाबला करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि की होती है। वह उदर-विकार से प्रस्त रहता है। जीवन-निर्वाह के लिए छठे अनेक मुख्य युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है।

'कर्क' साम की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

ककं सम्म : नवमभाव : राह

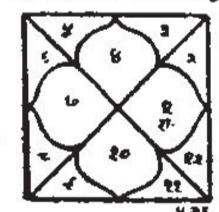


नवें भाव में शतु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कि-नाइयां जाती हैं सथा धर्म का की यथावत् पासन नहीं हो पाता !

उसे कभी-कभी बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु मुप्त युक्तियों तथा परिश्रम के बस पर कुछ सफसता की प्राप्त करता है।

'कर्क' शन्त की कुण्डली के 'बरामभाष' स्थित 'राहुं' का फलादेश

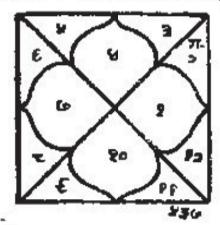
कुकै लुग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाव में शतु मंगल की राजि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य स्था व्यवसाय के क्षेत्र में परेज्ञानियाँ उठानी पड़ती हैं। अनेक कब्टों की भोगने तथा अनेक बार निराण होने के बाद वह अपने परिश्रम, धैर्य तथा बहादुरी से योड़ी बहुत उन्नति करता तथा प्रतिष्ठा की वशाता है।

'कर्क' सान की कुच्डली के 'एकादशमान' स्थित 'राहु' का फलादेश

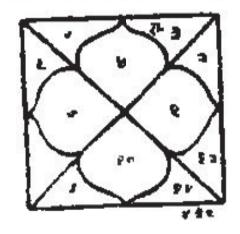
कर्के लग्न : एकादशभाव : राहु



ग्यारहवें भाव में मित्र मुक्त की राक्ति पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को बड़ी खतुराई के साथ यथेष्ट धन का लाभ होता है, परन्तु कभी-कभी सामान्य कठिनाइयाँ भी उठानी पड़ती हैं तथा संकटों का सामना करना पड़ता है। कभी कभी जाकस्थिक रूप से की धन-लाभ होता है।

'क्षकें' साम की कुण्डली के 'हादरामाव' स्थित 'राहुं' का फलादेश

कके लग्न: द्वादशमान: राहु



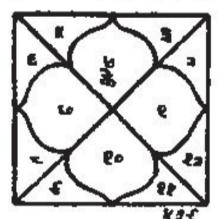
बारहवें भाव में मित बुध की राशि में स्थित राहु के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के संबंध से गुप्त गुक्तियों के बल पर लाभ होता है तथा खर्च विधिक रहता है। वह परदेश में विशेष सम्मान एवं ख्यांति प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी कमजोरियों की प्रकट नहीं करता तथा बड़ी चतुराई तथा बुद्धिमानी से उन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है !

'कर्क' सप्त में 'केतु'

'कक' साम की कुछाती के 'प्रथमश्राव' स्थित 'केतु' का फलावेश

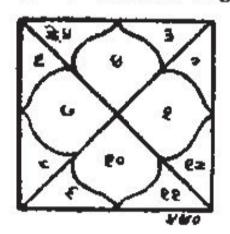
ककं सम्न: प्रथमभःवा केतु



पहले भाव में शतु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर पर किसी गहरी चोट अथवा भाव का निशान बनता है। शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कभी जाती है। चेचक की 'बीमारी हो सकती है तथा कभी-कभी मृत्युतुल्य कब्ट भी भोगना पडता है।

'कर्क' लग्न की कुम्बली के द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

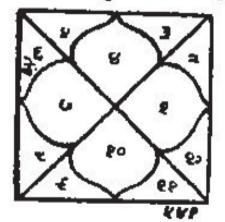
ककें लग्न : द्वितीयभाव : केत्



दूसरे भाव में शतु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव में जातक के धन की अत्यधिक हानि होती है तथा उसी के कारण बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है। कुटुग्ब सेक्लेश मिलता है। ऐसा व्यक्ति ऋण लेकर अपना काम चलाता है तथा परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों हारा अपने प्रभाव की रक्षा करता है।

'कर्क' सन्त की कुष्यली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : केतु

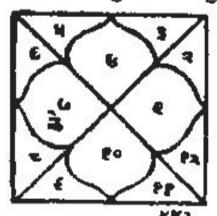


तीसरे भाव में मित्र बुध को राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है। वह गुप्त युक्तियों, विवेक तथा कठिन परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति उद्घट स्वभाव तथा उग्र प्रकृति का होता है। भाई-बहिनों के सुख में भी कमी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुच्छली के 'खतुर्यभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

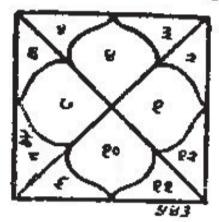
कर्क लग्न : चतुर्पभाव : केत्र



चौथे भाव में मित्र सुक को राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के सुद्ध में कमी रहती है तथा परदेश में जाकर रहना पड़ता है। बार-बार स्थान का परिवर्तन की करना पड़ता है। कभी-कभी घोर संकट भी आ जाते हैं। अन्त में. उसे सामान्य सुद्ध का लाम भी होता है।

'कर्क' लग्न की कृष्यली के 'वंचममाध' स्थित 'केंबु' का फलादेश

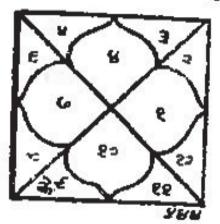
कर्क लग्न : पंचमभाव : केतु



पाँधवें भाव में शबू मंगल को राश्चिपर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कब्ट मिलता है तथा विद्याध्ययन में की कठिनाइयाँ आती हैं। परन्तु ऐसा व्यक्ति चतुर, चालाक सथा बातूनी होने के कारण अपनी अयोग्यता को छिपाकर दूसरों पर प्रभाव डालने में सफल हो जाता है। वह सन्तोषी तथा शीलयुक्त भी नहीं होता।

'कर्क' सन्त की कुच्छली के 'धष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

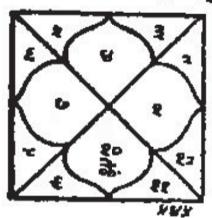
कर्क लग्न । षष्ठभाव : केतु



छठे भाव में मृत्यु गुरु को राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की मृत्यु पक्ष में बड़ी सफलदाएँ भिलती हैं। वह फठिन स्थितियों में भी अपने छैयें तथा साहस को नहीं छोड़ता। ऐसा व्यक्ति स्वस्थ मारीर का, साहसी तथा परिश्रमी होता है, परन्तु उसमें दया, भील, सौजन्य आदि सब्गुण नहीं होते।

'कर्क' सम्म की कुच्छसी के 'सप्तममाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

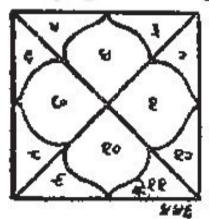
कर्क लग्न : सप्तममाव : केतु



सातवें भाव में मित्र शनिकी राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के सेत्र में कठिनाइयों तथा हानियों का सामना करना पड़ता है। मूत्रेन्द्रिय में विकार होता है। विषयेच्छा अधिक रहती है। यह भोगी, जिद्दी, हठी तथा कठिन परिश्रमी होता है।

'करों' सम्ब की जुन्छली के 'अच्छमभाव' स्थित 'केंचुं' का फलादेश

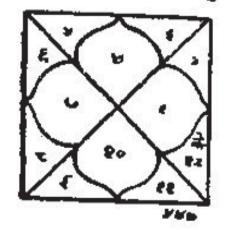
ककं लग्न : अष्टमभाव : केतु



वाठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आयु-पक्ष में बनेक बार मृत्यु-सुल्य कष्ट होते हैं तथा पुरातस्व की हानि भी होती है। पेट शिकार-प्रस्त रहता है। धन का संकट तथा गुप्त चिन्ताएँ रहती हैं। ऐसा व्यक्ति गुप्त रूप से बपनी उन्नति तथा सुख के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है।

'कर्क' सम्म की कुष्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केंद्रु' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : केतु

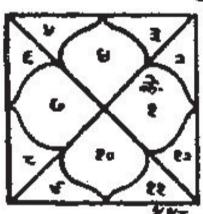


नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को जपनी भाग्योन्नित के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी बड़े संकटों तथा विफलताओं का शिकार भी होना पड़ता है।

वह मुप्त रूप से वपनी उन्नति के लिए प्रयत्न करता है, परन्तु भाग्योन्नति बड़ी घीमी गति से हो होती है।

'कर्ड' सम्म की कुण्डली के 'बशमगार्व' स्थित 'केट्रु' का फलादेश

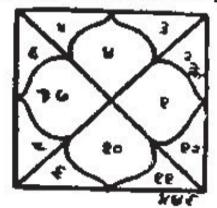
ककं सान : दशमभाव : केतु



दसवें भाव में भव मंगल की राशि पर स्वित केतु के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता तथा व्यवसाय के खेल में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती है। यश तथा प्रतिष्ठा को धक्का भी लगता है परन्तु वह अपनी गुप्त युक्ति एवं परिश्रम द्वारा पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

'कर्क' सम्म की कुण्डली के 'एकादरामाव' स्थित 'केट्र' का फलादेश

कर्कं सम्त : एकादशभाव : केत्

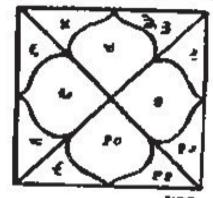


स्थारहर्वे भाव में मित्र मुक्त की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक आर्थिक लाभ पाने के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा परिश्रम, चतुराई एवं गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ में वृद्धि भी करता है।

ऐसे व्यक्तिको बारभ्यार संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह कभी हिम्मतनहीं हारता तथा परिश्रम से भी नहीं चुराता।

'कर्क' सन्त की कुच्छली के 'हावशमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

ककं लग्न : द्वादशमाव : केतु

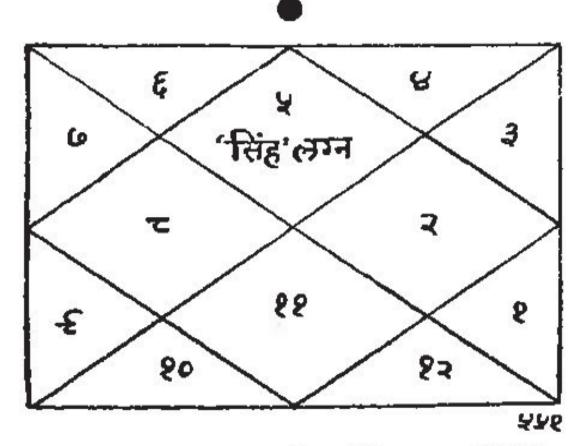


बारहवें भाव में मित्र वुध की राशिपर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को खर्च के बारे में वहुत परेशानी उठानी पड़ती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कब्ट ही मिलता है।

ऐसा जातक मुप्त युक्तियों से काम लेनेवाला, परिश्रमी तथा भीतर-ही-भीतर दु:खी रहने वाला होता है।

'कर्क' लग्न समाप्त

'सिंह' लग्न



['सिंह' लान की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक-पृथक वर्णन]

'सिंह' लग्न का फलादेश

सिंह' लग्न में जन्म लेने बाले जातक के शरीर का रंग पाण्डुवर्ण होता है। वह पिल एवं वायु के विकार से पीड़ित रहता है। ऐसा व्यक्ति रजोगुणी, बीर, साहसी, अत्यन्त पराक्रमी, अहंकारी, कोधी, उग्रस्वभाव, अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण ढीठ, भोगी, तीक्ष्णबुद्धि, चुड़सवारी से प्रेम रखने वाला तथा मांस एवं रसीली वस्तुओं का भोजन करने वाला होता है।

इसके हाय बढ़े होते हैं तथा छाती चौडी होती है। यह उदार तथा साधु-सन्त-सेवी भी होता है।

इस सम्म दाला जातक अपनी आरंभिक अवस्था में सुखी, मध्यावस्था में दु:खी तथा अन्तिमावस्था में पूर्ण सुखी रहता है। इसका भाग्योदय २१ अथवा २५ वर्ष की साधु में होता है। सिंह लग्न बाला व्यक्ति जहाँ प्रवल पराक्रमी होता है, जहाँ आलसी की पाया जाता है, परन्तु समय पड़ने पर यह अपना कमाल प्रदक्षित कर दिखाता है।

'सिंह' लग्न वालों के अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश वाले दो गई उदाहरण कुण्डली संख्या ५१२ से ६५६ के वीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझं सेना चाहिए।

1

'सिह' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

- 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४२ से ४६३ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'सिह' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्त भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थादी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'सूर्यें-

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४४२
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ५५३
- (ग) 'मिधुन' राशि पर हो तो संख्या ५५४
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ५५५
- (च) 'सिह' राशि पर हो तो सख्या १५६
- (ङ) 'कल्या' राशि पर हो तो संख्या ५५७
- (छ) 'तुला' राणि पर हो तो संख्या ५५८
- (ज) 'बृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ५५६
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४६०
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो सख्या ५६१
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४६२
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १६३

'सिंह' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६४ से ५७५ के बीच देखना चाहिए। २- 'सिह' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भादों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

पिल दिन 'चन्द्रमा'---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो सख्या ५६४
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ५६५
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ५६६
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ५६७
- (ड) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ५६=
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ४६६
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ५७०
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ५७१
- (झ) 'धनु' राज्ञि पर हो तो संख्या ५७२
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ५७३
- (ट) 'कूम्भ' राशि पर हो तो संख्या ५७४
- (ठ) 'भीन' राशि पर हो तो संख्या ५७५

'सिंह' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

- श्रिह' लग्न वासों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थामी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५७६ से ६८७ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'सिंह' लग्नवालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'संगल'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ५७६
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ५७७
- (ग) 'नियुन' राशि पर हो तो संख्या ५७=
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ५७६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ५८०
- (च) 'कल्या' राशि पर हो तो संख्या ४८१
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १८२
- (अ) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ५५३
- (म) 'धर्नु' राशि पर हो तो संख्या ५**८४**
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ५८६
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या प्रदह
- (ठ) 'मीन' रामि पर हो तो संख्या ५८७

'सिंह' लग्न में 'बुघ' का फलादेश

- १. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुष्डली के विभिन्न भावों से स्थित 'बुघ' को स्थायी फलादेश उदाहरण-कुष्डली संख्या ४८८ से ४९६ के वीच देखना चाहिए।
- २. 'सिह' लग्न वालों को गोचर-कुष्डली के विभिन्न वालों में स्थित 'बुघ' का अस्यायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'ब्रुध'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ५८८
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ५८६
- (ग) 'मियून' राशि पर हो तो संख्या ५६०
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ५६१
- (ड) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ५६२
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ५६३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४६४
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ५६:
- (झ) 'धनुं राशि पर हो तो संख्या ५६६
- (का) 'सकर' राशि पर हो तो संख्या ४१७
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या ५६८
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४६६

'सिह' लग्न में 'गुर' का फलादेश

- १. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न वालों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०० से ६११ के वीच देखना चाहिए।
- २. 'सिंह' सम्न वालों की गोचस्कुण्डली के विभिन्त भावों में स्थित 'युडे' का अस्थायी फलादेश निम्नसिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस वर्ष में 'गूर'—

- (क) 'मेव' राशि पर हो तो संख्या ६००
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६०१
- (त) 'मियून' राशि पर हो तो संख्या ६०२
- (क) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६०३

- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६०४
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६०५
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६०६
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६०७
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६०=
- (अ) 'सकर' शांका पर हो तो संख्या ६०६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो सक्या ६१०
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६११

'सिह' लग्न में 'शुक्र' का फलावेश

श्रीसहं लग्न वालों को अपनी अन्मकुण्डली के विभिन्न वालों में स्थित
 श्रुक का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१२ से ६२३ के बीच देखना
 चाहिए।

'सिंह' लग्नदालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्त भाषों में स्थित 'शुक' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

पिस महीने में 'शुक'-

- (क) 'मेव' राशि पर हो तो संख्या ६१२
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६१३
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६१४
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्ता ६१५
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६१६
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६१७
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६१८
- (अ) 'बृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६१६
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६२०
- (ङा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६२१
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या ६२२
- (ठ) 'भीन' राशि पर हो तो संख्या ६२३

'सिह' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. पिंह' लग्नवालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्त भावों में स्थित शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२४ से ६३५ के बीच देखना चाहिए। २. 'सिंह' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्षे में 'शनि'---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६२४
- (ख) 'वृष' राज्ञियर हो तो संख्या ६२%
- (ग) 'मियून' राशि पर हो तो संख्या ६२६
- (भ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६२७
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६२८
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो सख्या ६२६
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संदया ६३०
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६३१
- (म) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६३२
- (ञा) 'सकर' राज्ञियर हो तो संख्या ६३३
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६३४
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६३४

'सिंह' लान में 'राहु' का फलावेश

- १ 'सिह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुष्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३६ से ६४७ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'सिंह' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राड़ें' का अस्वायी फलादेश निम्नसिक्षित उदाष्ट्रण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

.

पिस वर्ष में 'राहु'-

- (क) 'सेष' राशि पर हो तो सच्या ६३६
- (छ) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६३७
- (ग) 'मियून' राशि पर हो तो संख्या ६३८
- (मं) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६३६
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६४०
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६४१
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६४२
- (अ) 'बुश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६४३
- (झ) 'शनु' राशि पर हो तो संख्या ६४४
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संस्था ६४५
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६४६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संस्था ६४७

'सिंह' लग्न में 'केतु' का फलादेश

- रै. 'सिह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों से स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४८ से ६५६ के वीच देखना चाहिए।
- 'सिंह' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु'
 का बस्यायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

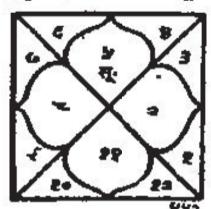
जिस वर्ष में 'केतु'---

- (क) 'मेव' रामि पर हो तो सच्या ६४८
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६४६
- (य) 'मियून' रामि पर हो तो संख्या ६५०
- (म) 'ककें' राणि पर हो तो संस्था ६४१
- (ड) 'सिंह' राशिय पर हो तो संख्या ६५२
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६%३
- (छ) 'तुसा' रामि पर हो तो संख्या ६५४
- (ज) 'कृश्चिक' रामि पर हो तो संख्या ६५६
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६४६
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६५७
- (ट) 'कु-क' राशि पर हो तो संख्या ६५०
- (ठ) 'मीन' रामि पर हो तो संख्या ६४६

'सिह' लग्त में 'सूर्ये'

'सिह' सम्त को कुष्पती के 'अवनमाव' स्थित सूर्य का फलादेश

सिंह लग्न: प्रथमभाव: सूर्य

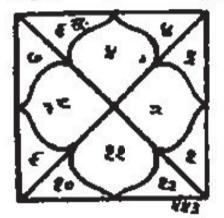


यहसे धाव में स्वराशि-स्थित सूर्य के प्रमाद से जातक शारिरिक अक्ति, आत्मवल तथा सीन्दर्य का लाभ प्राप्त करता है। यह बड़ा हिम्मती तथा सम्बे कद का होता है।

सातवीं मजु-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से जातक को स्त्री तथा दिनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा असन्तोष बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कुन्दली के 'ब्रिसीयमार्थ' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव:सूर्य

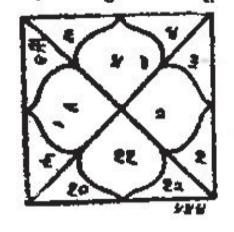


दूसरे माव में भिन्न बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रमान से जातक के धन सथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है, परन्तु उसी के कारण कुछ परतंत्रता का अनुमय भी होता है।

सातनीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातस्य का साम होता है सथा जातक समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति समझा जाता है।

'सिंह' लाम को कुष्टली के 'ठुतींयमाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह सन्न : सृतीयभाव : सूर्य

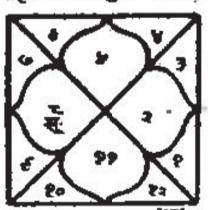


तीसरे भाव में मह् मुक की युक्ता रामि पर स्थित वीच से सूर्य के प्रभाव से जातकों का माई-बहिनों से वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम में कुछ-कमी आती है। फिर भी वह जातक बढा हिम्मती होता है।

सातवीं भित्रवृष्टि से नवसभाव को देखने से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है तका वह धर्में में भी आस्या रखता है।

'हिंसह' लग्न की कुष्पती के 'बतुर्वभाव' स्थित 'सूर्व' का फलावेश

सिंह सम्म : चतुर्वभाव : सूर्व

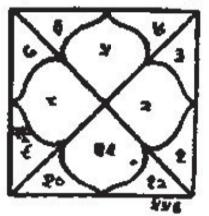


भौथे शाव में मिल मंगल की राशि पर स्थित सूर्य के प्रधाद से जातक की माता, भूमि तथा शवन वादि का सुख प्राप्त होता है तथा शरीर सुखी रहता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से बशमभाव को देखने के कारण जातक का पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक प्रयत्न करने पर ही सफसता मिसती है।

'सिह' लग्त को कुष्यसी के 'पंचमसाव' स्थित 'सूर्व' का फलादेश

सिंह सन्तः पंचमभावः सूर्ये

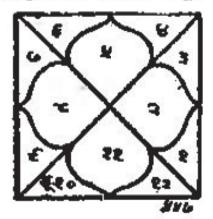


पाँचवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती, है। यह जात्मज्ञानी तथा उग्र मंस्तिष्क बाला होता है।

सातवीं मिलदृष्टि से एकावशभाव को देखने से बृद्धि-बल द्वारा पर्याप्त खामदनी होती है। ऐसा व्यक्ति अहंकारी भी होता है।

'सिह' लग्न को कुष्यती से 'वष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

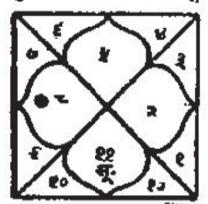


छठे भाव में शतु शनि को राशि पर स्थित सूर्य के अभाव से जातक शतुओं पर विजय प्राप्त करता है तथा कठिनाइयों से भवराता नहीं है। शारीरिक सीन्दर्य में कभी आती है तथा रोग एवं परतंत्रता के योग भी बनते हैं।

सातवीं मिलदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से सर्च अधिक पहता है तथा बाहरी स्थान के सबंध से भी लाभ होता है।

'सिह' लग्न को कुम्बलों के 'सप्तममाब' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

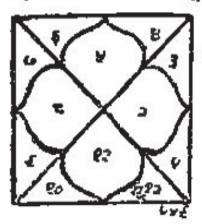


सातवें भाव में शतु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के अभाव से जातक का स्त्री-पक्ष से वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय के सेव में फिल-नाइयों के बाद सफलता मिलती है।

सातवीं दृष्टि से प्रयमभाव को देखने से भारीरिक शक्ति एवं स्वाभिमान में वृद्धि होती है और वह वपने यह का विस्तार भी करना है।

'सिह' लग्न को कुष्टली के 'अध्यमसाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

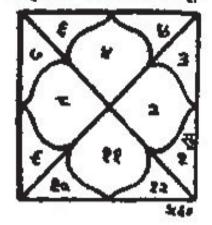


आठवें भाव में मिस गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ बायु एवं पुरातस्व का साभ होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है।

सातवीं दूष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा धन एवं कौटुम्बिक शुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति कोवी स्वभाव का होता है।

'सिंह' सन्द की कुष्डली के 'नवमचाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह सरन : नवमभाव : सूर्य

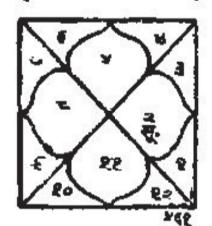


नवें भाद में मिस संगल को राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के भभाव से जातक की भाग्य-शक्ति प्रवस होती है तथा वर्ष में भी अभिरुचि बनी रहती है।

सातवीं वीच दूष्टि से तृतीयभाव की देखने से जातक को भाई-बहिनों से असन्तोष रहता है तथा पराक्रम के बारे में ऐसा व्यक्ति लापरवाह रहता है। स्थूल भरीर वाला भाग्यवान तथा ईश्वर-भक्त होता है।

'सिह' लग्न की कृष्डली के 'बरामचाब' स्थित 'सूबें' का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभ 🖫 : सूर्य

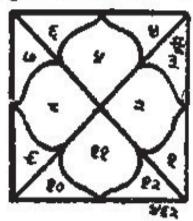


दसर्वे भाव में शतु मुक्त की राशि पर स्थित सूर्य के भगव से जातक का पिता से बैमनस्य रहता है, परम्यु राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नित एवं महन-प्रतिष्ठा का साभ होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से चतुर्यभाव की देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन का ययेष्ट सुख भी मिलता है।

'सिह' सक की कुमली के 'गुकादशमाव' स्थित 'सूर्वे' का कलादेश

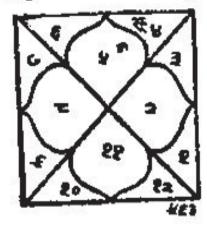
सिंह सन्त : एकादशभाव : सूर्य



स्वारहवें भाव में मित्र बुध की राजि में स्वित सूर्य के प्रभाव से जातक की अमदनी अच्छी रहती है स्वा शारीरिक सक्ति में वृद्धि होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से विधा, बुद्धि तथा सन्तान का सुख की यथेष्ट मिलता है। ऐसे व्यक्ति की बाणी में कुछ उपता रहती है और बह स्वार्थी की होता है.

'सिह' सम की कुमली के 'हादरामान' स्थित सूर्य' का कलादेश

सिह् सन्त : द्वादशभाव : सूर्य



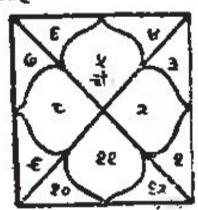
बारहुवें भाव में मिल चन्द्रमा की राजि पर क्लित सूर्य के प्रभाव से जातक का मरीर दुवेल बना रहता है। बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाम होता है तथा अर्थ पर प्रभाव बना रहना है। जातक भ्रमण का सौकीन भी होता है।

सातवीं सनु-दृष्टि से बच्छमान की देखने से सनुपक्ष पर प्रभाव अना रहता है सथा अनेक कठिनाइयों के बावजूद सनुजों पर विजय पाता है।

'सिंह' लग्न में 'चन्द्रमा'

ींसह' लग्न की कुण्डली के 'प्रवमसाव' स्थित 'अग्रमा' का फलादेश

सिह् सन्त: प्रथमभाव: चन्द्र

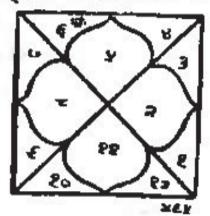


पहले भाव में मित्र सूर्य की राजि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शरीर से दुवेंल, भ्रमण-प्रिय तथा कुछ चिन्तित बना रहने वाला होता है।

सातवीं सन्दु-वृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय से क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों तथा शामि का सामना पड़ता है।

'सिह' सम्म की कुण्डली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'चन्द्रमा' का खलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयमाव : चन्द्र

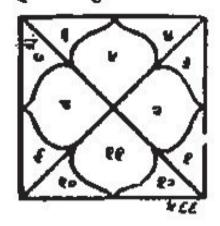


दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की धन की अल्प हानि होती है। उसका रहन-सहन ठाठदार होता है। कुदुम्ब से भी कुछ असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ तथा सुख मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से वष्टमभाव की देखने से आयु-वृद्धि होती है स्वा पुरातस्य का भी कुछ कमी के साथ लाभ होता है।

'सिह' सरन की कुण्डली के 'तृतीयबाव' स्थित 'बन्प्रमा' का खलादेश

सिंहु लग्न : सृतीयभाव : चन्द्र

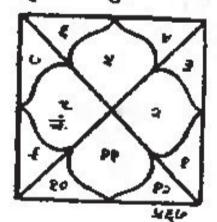


तीसरे भाव में साभान्य मित्र मुक की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से वातक को भाई-बहिन के सुख स्था पराक्रम में कुछ कमी रहती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं मिन्न-दृष्टि से नवभभाव की देखने से माग्य एवं धर्म को उन्नति होती है तथा खर्च आराम से चलता रहता है। अन्य सोमों की दृष्टि में ऐसा ध्यक्ति धनी सथा सुखी समझा जाता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्वभाव' स्थित 'चन्त्रमा' का फतारेश

सिंह लग्न : चतुर्यभाव : चन्द्र

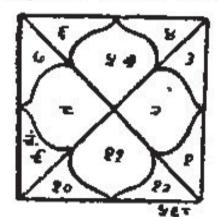


चौथे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से आतक की माता, भूमि तथा भवन वादि का मुख कुछ कब्ट के साथ अल्प परिमाण में मिलता है तथा घरेलू खणों से परेशानी धनी रहती है!

सातवीं उच्च दृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सह्योग, सुख तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

"सिह' लग्न की कुष्यली के 'यंबनमाव' स्थित 'बन्धमा' का फलादेश

सिंह सरन : पंथमभाव : चन्द्र

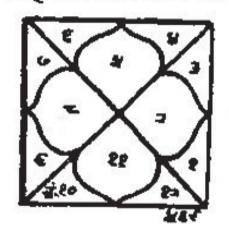


पाँचवें मान में मित्र गुर की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में बाधाएँ रहती हैं। खर्च को चिन्ता से मस्तिष्क परेशान की रहता है।

सातवीं मिझद्बिट से एकादशभाव की देखने से जातक बुद्धि-दल से आमदनी के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है, परन्तु उसे कुछ असन्तीय भी दना रहता है।

'सिंह' सन्त की कुन्दली के 'वष्ठमान' स्थित 'वन्त्रमा' का फलादेश

सिंह सम्न : षष्ठभाव : चन्द्र

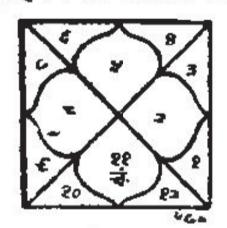


छठे भाव में कतू भनि की राभि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शक्ष-पक्ष द्वारा उत्पन्न झगड़ों तथा रोग आदि में खर्च अधिक करना पहता है, जिससे यन दुःखी बना रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि में द्वादशभाव की देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा आय कम रहते हुए भी अधिक खर्च होता है। वह खर्च से द्वाराही शबु-पक्ष में सफलता भी पाता है।

'सिह' लग की कुखली के 'सप्तममाव' स्थित 'बन्तमा' का खलावेत

सिंह संग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

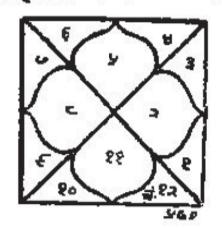


सातवें भाव में शबु भनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री स्था व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है तथा वरेलू खर्च चलाने में कठिनाई बाती है। बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ होता है।

सातवीं मिल्रद्बिट से प्रथमभाव को देखते. के कारण भरीर दुवंल तथा रहता है।

'सिंह' लग्न की कुष्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलारेग

सिंह सन्न : अष्टमभाव : चन्द्र

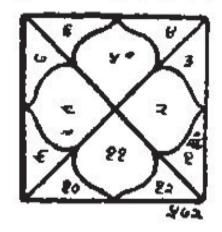


आठवें भाव में मित गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में हानि तथा चिन्ता के अवसर उपस्थित होते हैं। पेट में विकार रहता है सथा बाहरी स्थानों से साभ होता है।

सातवीं मिलदृष्टि से द्वितीयमाव की देखने से धन की भी कुछ हानि होती है तथा कीटुम्बिक सुख भी अल्प परिमाण में भाप्त होता है।

'सिंह' लग्न की कुष्डली से 'सवसभाव' स्थित 'वन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : नवसभाव : चन्द्र

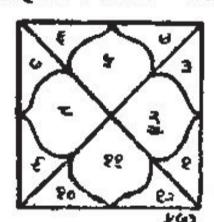


नवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है, परन्तु धर्म-पालन में कभी रहती है।

सातवीं सम-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम तथा माई-बहिनों के सुख में को कुछ कभी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति मानसिक दुर्बलता का सिकार भी होता है।

'सिह' लग्न की कुण्डली के 'बशममाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : चन्द्र

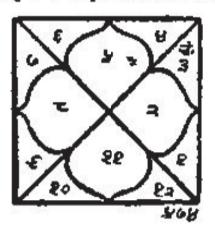


दसवें भाव में सामान्य मित शुक्त की राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रभा के प्रमाद से जातक पैतृक सम्पत्ति का अधिक व्यय करता है सथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुटिपूर्ण सफलताएँ प्राप्त करता है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्यभाव को देखने से जाता, भूमि तथा भवन के बुध में कमी आती है तथा खर्च की अधिकता से मन अशान्त बना रहताहै।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'धुकादशभाव' स्थित 'बन्द्रमा' का खलावेत

सिंह लग्न : एकादशमात्र : चन्द्र

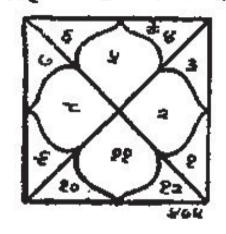


ग्यारहवें भाव में मित बुध की राणि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु खर्च भी अधिक बना रहता है।

सातवीं मिल्नद्धि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि स्था सन्तान के पक्ष में भी कुछ कमी रहती है। बाहरी तौर पर ऐसा बादक धनी समझा जाता है।

'हेंसह' लग्न को कुण्डली के 'हादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र



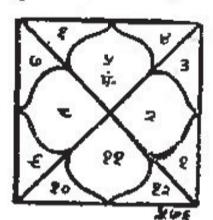
बारहवें भाव में स्वराशि में स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से आतक का खर्च अधिक रहता है सथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से यश, सुख तथा साम की प्राप्ति होती है।

सातवीं शतुद्धि से षष्ठभाव की देखने के कारण जातक अपने मनोबल तथा खर्च के बल पर शतु-पक्ष पर विषय पाता तथा प्रभाव स्थापित करता है, परन्तु अगड़े-मुकड्मे आदि में खर्च बहुत होता है ।

'सिंह' लग्न में 'मंगल'

'सिंह' लग्न की कुछली के 'प्रथममाब' स्थित 'मंगल' का फलारेन

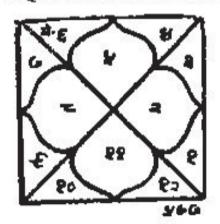
सिंह लग्न : प्रथमभाव : मंगल



पहले भाव में मित्र सूर्य की राभि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। वह भाग्यवान्, सर्मात्मा तथा ईश्वर-भक्त भी होता है। चौथो दृष्टि से स्वराधि के चतुर्यभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है। सातवीं शतुर्षिट से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ आती हैं। आठवीं मिल्नदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरांतस्य का लाभ प्राप्त होता है।

'सिंह' लग्न की कुन्दली के 'ड़ितीयबाब' स्थित 'संगल' का फलादेश

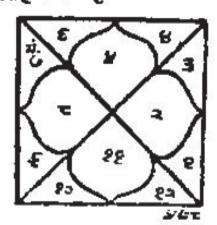
सिंह लग्न : द्वितीयभाव : संगल



दूसरे मान में मिल बुध की रामि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन स्था कुटुम्ब का सुख मिलता है। परन्तु पाता, भूमि तथा भवन के बुध में कुछ कमी रहती है। चौथी मिल-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है। सातनीं मिल-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व को वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वरांशि के नवमभाव की देखने से आग्य तथा धर्म की भी वृद्धि होती है।

'सिंह' लाज को कुष्डलों के 'शृतीयमाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह् लग्नः तृतीयभावः संगल

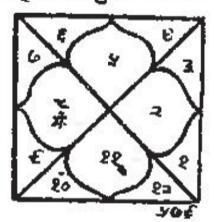


तीसरे भाव से मझु शुक्त को रामि पर स्थित भंगल के प्रभाव से जातक की माई-बहिन का सुख भिलता है तथा पर्राक्षम में वृद्धि होती है। जीवी उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से मनुपक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

सातवी दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव को देखने से धर्म तथा आग्य को उन्नति होती है। आठवीं सतु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सहयोग, सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है।

सिंह' लग्न की कुण्डली से 'सतुर्यमाव' स्थित 'संगत' का फलारेग

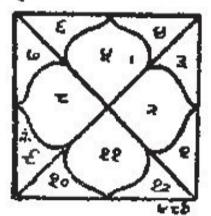
सिंह सन्न : चतुर्यभाव : मंगत



चौथे भाव में स्वराशि स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भूमि, भवन एवं माता का मुख प्राप्त होता है। चौथी समु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साय सफलता मिलतो है। सातवीं सन्दु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता तथा लाभ के क्षेत्र में सहयोग एवं प्रतिका की प्राप्त होती है। आठवीं मिन्द-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी को खूब वृद्धि होती रहती है।

'सिह' लग्न की कुष्टली के 'वंचममाव' स्थित 'मंगल' का कलादेश

सिंहलग्नः पंचमपावः मगल



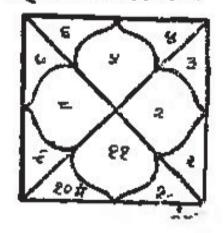
पांचवें भाव में मिल गुरु को रामि पर स्थित मगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान का लाभ होता है। चौथी मिल-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातस्य का लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव से देखने से आमदनी खूब रहती है। आठवीं नीच-दृष्टि से द्वादस-भाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा

बाहरी स्थानों के सम्बन्ध भी निबंल रहते हैं।

'सिंह' सम्म की कुष्डली के 'बळजाब' स्थित 'मंगल' का फसाबेस

सिंह लग्न : षष्ठभाव : मंगल

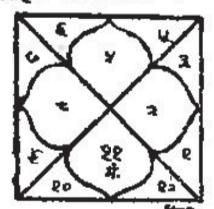


छठे भाव में शसु शनि को राशि पर स्थित उच्च मंगल के प्रभाव से जातक को शतु-पक्ष में सफलता मिलती है लथा भाग्य को शक्ति से सुख प्राप्त होता है। जौथो दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म को उन्नति होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च को परेमानी रहती है तथा बाहरी सम्बन्ध कम-और रहते हैं। आद्वीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक प्रभाव, सीन्दर्य एवं सुख को यृद्धि होती है।

'सिंह' लाम की कुच्छली के 'शायतमसाव' स्थित 'मंगस' का फलादेश

सिंह सन्न : सप्तमभाव : मंगल



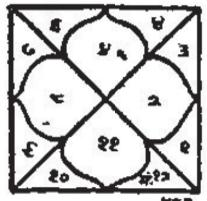
सातवें भाव में मह मिन की रामि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के खेत में सफलता मिलती है। चौथी शत्नु-वृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से कुछ मतभेद रहताहै परन्तु पिता, राज्य तथा व्यवसाय द्वारा साभ एवं सफलता को प्राप्ति भी होती है।

सातवीं मित्र-वृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं सौभाग्य का लाभ होता है।

आठवीं मिल-दृष्टि से द्वितीय भाव की देखने से धन तथा कुदुम्ब का सुख भी मिलता है।

'सिंह' सम्म की कुण्डली के 'अव्हमभाव' स्थित 'मंगल' का कलादेत

सिंहु लग्न: अष्टमभाव: मंग्रह



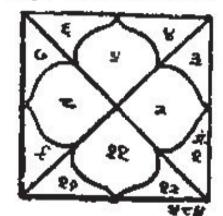
अठवें भाव में मिल गुरु को राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातस्य को शक्ति का लाभ होता है। परन्तु आग्य तथा धर्म के पक्ष में कमी रहती है। चौथी मिक्ष-वृष्टि से एकादश-भाव को देखने से जामदनी खूब होती है। सातवीं मिल-वृष्टि से दितीभाव को देखने से कौटुम्बिक सुख सथा ग्रन का लाभ भी होता है।

अरब आठवीं मिल-वृष्टि से तृतीयभाव को देखने से

पराक्रम बढ़ता है सथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। आठवीं सामान्य मित-दृष्टि से मृतीयभाव को देखने से जातक सुखी जीवन विसासा है।

'सिंह' साम की कुष्डली के 'नवमसाब' स्थित 'संगल' का फलादेश

सिंह सन्न : नवभभाव : मंगल



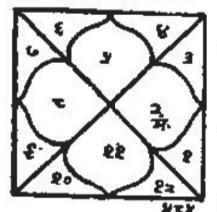
नवें भाव में स्वराशि-स्थित भंगल के प्रभाव से बातक से भाग्य तथा धर्म को उन्नति होती है। चौथो नीच दृष्टि से द्वादशमाय को देखने से खर्च की अधिकता से कष्ट प्राप्त होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानी होती है।

सातवीं कतु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन का सुख असन्तोषजनक रहता है, परन्तु पराकम में वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वरांशि में

चतुर्यभाव को देखने से माता, भूमि सथा भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है।

'सिंह' लग्न की कुष्टली के 'बशमनाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिहलग्न: दशमभाव: मंगल



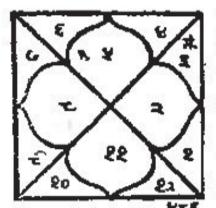
दसवें भाव में शतु शुक्र को राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यव-साय के क्षेत्र में उन्नति, सफलता एवं सम्मान के योग प्राप्त होते हैं। चौची मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव सवा सौभाग्य में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्यभाव की देखने से माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख

मिलना है। आठवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान एवं विद्या-वृद्धि के क्षेत्र में भी सफनता प्राप्त होती है।

'सिह' लग्न की कुण्डली के 'एकावशभाव' स्थित 'मंगल' का फलावेश

सिंह लग्न: एकादशभाव: मंगल ग्यारहवें भाव में मिल बुध की राशि में स्थित



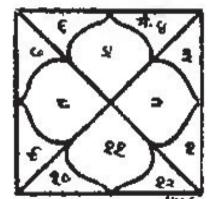
मंगल के प्रभाव से जातक को आय में वृद्धि होती है स्या भारा, भूमि, भवन बादि का सुख भी मिलता है। भीषी मिल-वृद्धि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुद्भ्य के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, वृद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आठवीं उच्चदृष्टि से चष्ठभाव की देखने से कतू तथा रोगों पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा

प्रभावशाली, धनी तथा शतुष्रयी होता है।

'हेंसह' लग्न को कुण्डली के 'द्वावशमाध' स्थित 'अंवस' का फलादेश

सिंह लग्नः द्वादशमाथः संगल बारहवें भाव में मिल चन्द्रमा को राशि पर स्थित



नीय के मंगल के प्रभाव से आतक को खर्च के बारे में कठिनाई उठानी पड़ती है तथा बाहरी सम्बन्धों से कट मिलता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी हानि पहुँचती है। चौथी शज़ु-वृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

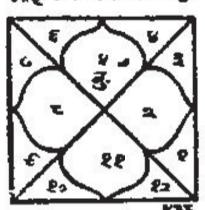
सातवीं उच्चवृष्टि से वष्ठमाव को देखने से श्रमुकों पर विवय मिलती है। सातवीं शतु-वृष्टि से

सप्तमभाव की देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है !

'सिंह' लग्न में 'बुध'

'सिंह' सक्त को कुण्डली के 'प्रथममाड' स्थित 'बुव' का कमावेश

सिंह साम: प्रथममाव: वृध

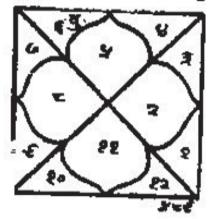


पहले भाव में मिल सूर्य की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति विवेकी, दानी, भोगी सथा धनी होता है।

सातवीं मिल-वृष्टि से सप्तमभाव की देखने से व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में भी उन्नति, सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है।

'सिह' सम्म की कुण्डली के 'द्वितीयबाद' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाष : बुध

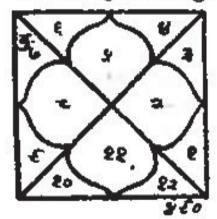


दूसरे भाव में स्वराशि स्थित उच्च के बूध के प्रभाव से जातक के धन सथा कौटुम्बिक सुख को वृद्धि होती है। भाई-बहिनों का यथेष्ट सुख भी मिलता है।

सातवीं नीय-दृष्टि से अष्टममाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के बारे में अनेक संकटों तथा चिन्ताओं का शिकार बनना पड़ता है। पेट को बीमारी रहती है सथा दैनिक जीवन भी असन्तोषजनक बना रहता है।

'सिह' लग्न की कुथाली से 'तृतीयमाव' स्थित 'बुख' का कलावेश

सिंह् लग्न : तृतीयभाव : बुध



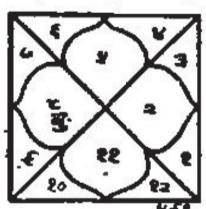
तीसरे भाव में मिल शुक्त को राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ता है तया भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से नवसभाव को देखने से भाग्य को उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है।

ऐसा व्यक्ति धनी, धर्मात्मा, पराक्रमी, यहस्वी तया सुखी होता है।

'सिह' सक्त की कुष्डली के 'बहुर्यमाव' स्थित 'बुर्घ' का फलादेश

सिंह सन्नः चतुर्थेभावः सुध

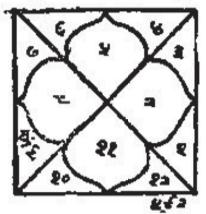


चौथे मान में मिल मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा मनन का पर्याप्त सुख मिलता है तथा धन का संचय होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, क्यवसाय तथा पिता के क्षेत्र में सुख, सम्मान सथा साम मिलता है।

'सिंह' लग्न की कुष्यली के 'यंचनमाव' स्थित 'शुध' का फलावेस

सिंह लग्न: पंथमभाव: सुध

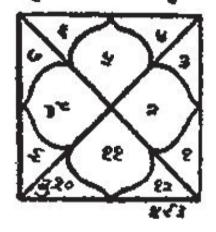


पौचनें भाव में मिल्ल गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। साथ ही, धन की उन्नति भी होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादशभाव की देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है। ऐसा जातक धनी, सुखी, विद्वान्, सज्जन तथा स्वार्थी होता है।

'सिह' लग्न की कुष्तकों के 'वच्छमाव' स्वित 'बुख' का फलावेस

सिंह लग्न : षष्ठभाव : बुध

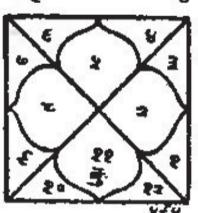


छठे भाव में मिल्ल मिल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्त में नज़ता एवं धन की शक्ति से सफलता प्राप्त करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशमाव में देखने से खर्म अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाग मिसता है। कौदुम्बिक सुख की प्राप्ति कम ही होती है।

'सिह' लग्न की कुष्यली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलावेस

सिंह लग्नः सप्तमभावः बुध



सात में भाव में मिल प्रति की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की सुन्दर स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी साभ होता है। धन तथा कुट्रम्ब का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित-दृष्टि से प्रयमभाव की देखने से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, आस्थिक बल, विवेक तथा यश की वृद्धि होती है।

वित्रु' कल को कुण्डाकी के 'काव्यवसाव' कियत 'दुर्घ' का क्लाडेस

सिंह लग्न: अन्टममाय: दुध

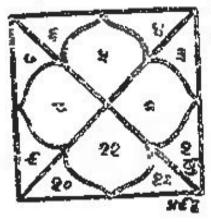
22

आठवें भाव में सित्त गुरु की राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रधाव से जातक की आयु-पक्ष में संकटों का सामना करना पड़ता है सथा पुरातस्व की हानि की होती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से स्वयात्रि में द्वितीयकार को देखने केथन की कभी रहते हुए भी दैतिक खर्च में. पूर्ति होती है तथा की दृम्दिक सुख जिन्तनीय रहता है।

विंत्रहुं सक्त की पुन्धनी के 'नयमणार्य' क्रियर 'बुख' का खताहैय

सिंहलान: नवमभाव: बुध

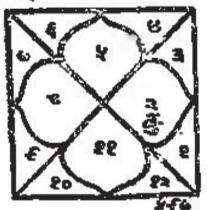


नमें भाव के मिल मंगन भी राशि पर स्थित कुष के प्रभाव से जातन के शाया तथा धर्म की उत्तरित होती। है। वह धनी, सुखी, ईमानदार, उदार, सज्दन तथा ईश्वर-अक्त होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से पराक्रम के बृद्धि होती है तथा भाई-दिहनों का सुख भी मिसता है। ऐसा जातक दड़ा यशस्वी होता है तथा निरन्तर उन्मति करता रहता है!

र्गतिष्ट्र' स्नम्भ की दुव्याली के 'दशमभाष' स्थित 'तुष्ट' का फलादेश

सिंह लग्न: दशमभाव: बुध

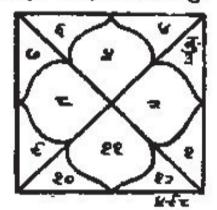


वसर्वे भाव में मिन शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रयाव से जातक की पिता, राज्य व्यवसाय के क्षेप्र में पर्याप्त सफलताएँ मिलती हैं क्ष्या धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

सातवीं मिल-दृष्टि ने चतुर्वभाव की देखने से माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख भी मिलता है।

"सिह' लग्न की कुष्धली के 'एकावशभाव' स्थित 'बुध' का फलावेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : बुध

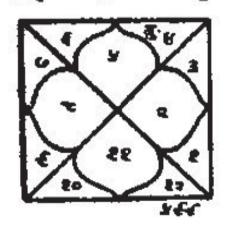


ग्यारहवें भाव कें स्वराशि-स्थित गुरु से प्रभाव से जातक को यथेष्ट लाभ होता है तथा धन, यश एवं मुख को वृद्धि होती रहती है।

सातवीं मित-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र मे भी सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्त्री, विद्वान् तथा सन्तितवान् होता है।

'सिह' लान की कुष्यली के 'हादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशमाव : गुरु



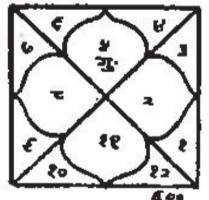
कारहवें भाग में शत् चन्द्रमा को राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शतु-पक्ष में धन तथा विवेक द्वारा सफलता प्राप्त होती है, परन्तु झगड़े-टंटों के कारण उसे हानि भी उठानी पड़ती है।

'सिंह' लग्न में 'गुरु'

'सिंह' लग्न की कुण्डसी से 'अथममाव' स्थित 'गुरु' का फलावेश

सिंह लेग्न: प्रथमभाव: गुरु



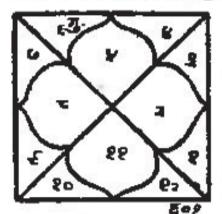
पहले भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित गुरु से प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, तथा दीर्घायु की प्राप्ति होती है। पाँचवीं दृष्टि से स्थराशि से पंचमभाव की देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र से सफलता मिलती है।

सातवीं शतु-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्रो तथा व्यवसाय के सेन्न में कुछ असन्तोष रहता है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्य तथा

धर्म की वृद्धि होती है तथा पुरातस्य का भी लाभ होता है।

'सिंह' लान की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव: गुरु



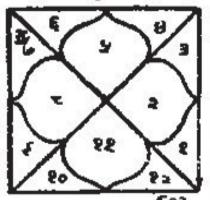
दूसरे भाष में मिस बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की धन तथा कौटुम्बिक सुख की प्राप्ति होती है, परन्तु सन्तान के पक्ष से कुछ कब्द मिसता है। पौचवीं नींच-दृष्टि से पष्ठभाव को देखने से धनु-पक्ष तथा ननसाल में हानि होती है।

सारावीं दृष्टि से स्वराधि में अष्टमशाव की देखने से आयु तथा पुरातस्व की वृद्धि होती है। नवीं शतु-दृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता से मतभेद

रहता है तथा व्यवसाय एवं राजकीय क्षेत्र में असन्तीय बना रहता है।

'सिह' सन्न की कुण्डली के-'तृतीथमाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न: तृतीयभाष: गुरु



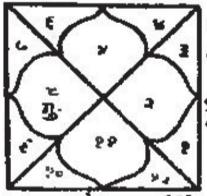
सीसरे भाव में शंदु शुक्त की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से आतक का भाई-बहिनों से मतभेद रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। सन्तान का सुख कुछ कठिनाई से मिलता है तथा आयु का लाभ होता है।

पौचवीं सञ्ज-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं मिल-दृष्टि से नवमभाव की देखने से बुद्धि बस से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। नवीं मिल-दृष्टि से

एकादशभाव को देखने से साम खूब होता है। ऐसा जातक प्रत्येक क्षेत्र में साहसी होता है।

"सिंह" लग्न की कुष्यली के 'बहुकंबाब' स्थित 'गुर' का फलादेश

सिंह सम्न : चतुर्यभाव : गुरु

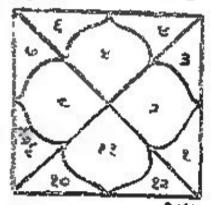


चौथे भाव में मिल मंगल की राशि पर स्थित गुर के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कभी वाती है, परन्तु विद्या एवं सन्तान के पक्ष में साभ होता है।

से बायु तथा पुरातस्य का लाम होता है। सातवीं सत्य-दृष्टि से दशममाय को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय से पूर्ण लाम नहीं होता।

नवीं उच्च दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धीं से लाग एवं सुख मिलता है । 'सिंह' हान्य की खुण्डली के 'चंचनपाद्य' देखत 'गुर्च' का फलादेश

सिंह लग्न : पंचनभाव : गुरु



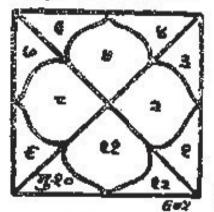
वाँचवें आह हैं स्वराशि-स्थित हुआ के प्रभाव से जातक की विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में सफलता जिलती हैं। पाँचवीं मित्रवृष्टि से नवमभाव की देखने से भाष्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। साथ ही पुरातस्य का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-वृष्टि से एकादशभाय की देखने से आमदनी अच्छी रहती है। नवीं मित्र-वृष्टि से प्रथम भाव को देखने के शारीरिक सुख, मनोवल, यश, सुख

तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है, वरन्तु गुरु के अष्टमेश होने के कारण सुब-दुःख दोनों का अनुभद होता रहता है।

'सिह' साम की कुण्डली से 'खळमाध' स्थित 'गुढ' का फरावेश

सिहसन्नः षष्ठभावः गुरु



छठे भाव में शतु शनि की राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक करे शतु-पक्ष से चिन्ता रहती है। विद्या तथा सन्तान का पक्ष भी दुवल रहता है। पुरातस्व की हानि होती है तथा दैनिक जीवन के सुख में भी कभी आती है।

पौचवीं दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है। सातवीं उच्च दृष्टि से हादशभाव को देखने से बाहरी

सम्बन्धों से श्रेष्ठ लाभ होता है तथा व्यय अधिक रहता है। नवीं मित्र-दृष्टि से दितीयमान को देखने से धन एवं कुटुम्ब को सामान्य वृद्धि होती है।

'सिहं' लग्न की कृष्यली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरुं का फुलादेश

सिंह लान : सप्तमभाव: गुरु सातवें भाव में शत्रु शनि को राशि पर स्थित



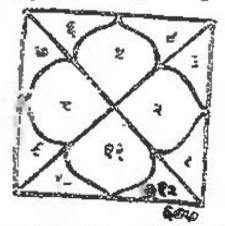
गुरु के प्रभाव से जातक का स्त्रों से वैमनस्य रहता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का अनुभव होता है। विचा तथा सन्तान के पक्ष में सामान्य सफलता मिलती है। आयु भी वृद्धि होती है तथा पुरातस्य की सामान्य साभ मिलता है।

पौचनों दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आधिक लाभ अच्छा रहता है। सातनीं मिल्ल-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव से वृद्धि होती

है। नवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की कुछ वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनोंसे वमनस्य रहता है।

पित्रह लग्न की कुण्डली के 'अष्टमश्राद' स्थित 'गुड' सा एउलादेश

सिंह लग्न : अध्यमभाव : पुरु



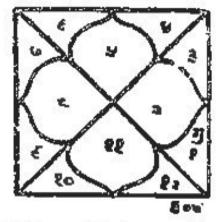
आठदें भाव में स्वराणि-स्थित युव के प्रधाब से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व में दृद्धि होती है, एरन्तु सन्तान के पक्ष से कष्ट जिल्हा है सथा विद्या, बुद्धि में भी कुछ कभी रहती है।

पौज़वी उच्च दृष्टि से द्वादकक्षण की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बहुरी स्वाक्षी के सम्बन्ध से लाभ सिनता है। ज्ञातवीं मित्र दृष्टि द्वितीयभाव की देखने से जातक धन-जृद्धि के सिए प्रयत्नशीस रहता है तथा कुटुम्य का साजान्य

सुख शिलता है। नवीं भित्रदृष्टि से खतुर्थणाद की देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ करियों के साथ सफलता विलती है।

'सिह' सम्म की कुण्डली के 'नवनशास' स्थित 'गुरु' का कलादेश

सिंह लग्न : नवम प्राव : गुरु



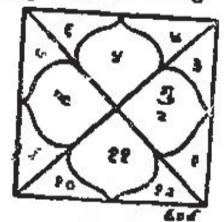
नवें बाद में मिल मंगल की राशि वर स्थित गुर के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। पुरातस्व के क्षेत्र में सफलता जिलती है। पौचवीं मिलदृष्टि से प्रथमनाद को देखने के कारण शारीरिक प्रभाव, सुख एवं सनीवल को प्राप्तिहोती है।

सातवीं शक्षु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-वहिनों से असन्तोष रहता है, परन्तु पराक्रस बढ़ता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि कें पंचमभाव देखने

से सन्ताव, विद्या तथा बुद्धि का यथेष्ट साभ होता है, परन्तु गुरु के अष्टमेश होते के कारण हर क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभद भी अवस्य होता है।

'सिह' लग्न की कुण्डसी के 'हावशमाव' स्थित 'गुरु' का फलावेश

सिंह लग्न : दशमभाद : गूर



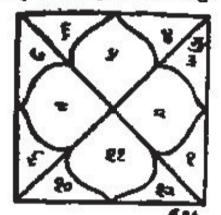
दसनें भाव में सबु शुक्त को राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता-पक्ष में हानि तथा राज्य के पक्ष में सम्मान मिलता है। विद्या, बुढि, सन्नान तथा पुरातस्य को शक्ति का साम होता है।

भौजवीं मित्रदृष्टि से दितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। सारावीं मित्र-दृष्टि से चतुर्यभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख मिलता है। धनी नीच-वृष्टि से चष्टभाव से देखने से शबू-पक्ष से परेशानी होती

है तथा झगड़े-अंझटों के कारण चिताएँ घेरे रहती हैं।

'सिह' सम्न की कुण्डली के 'एकावराभाव' स्थित 'गुरु' का फलावेश

सिंह लम्म : एकादशभाव : गुरु



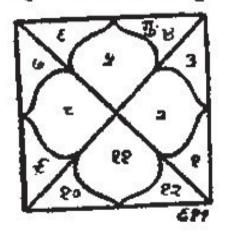
ग्यारहवें भाव में मित्र शुष्ठ की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से आतक की आमदनी बढ़ती है। बायु तथा पुरातत्त्व की भी वृद्धि होती है। पौचवीं सतुवृष्टि से तृतीयभाव की देखने से पराकम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहुनों से भतभेद रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराधि में प्रचमभाव की देखने से सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का लाभ मिलता

है। नवीं सन्नु-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ आती रहती हैं।

'सिह' सम्म की कुष्वली के 'द्वादशमाव' स्थित 'गुरु' का फलावेस

सिंह लग्न : द्वादशभाव : गुरु



वारहर्वे भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि में स्थित गुरु के प्रभाव से आतक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ मिलता है। विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सुटिपूर्ण सफलता मिलती है।

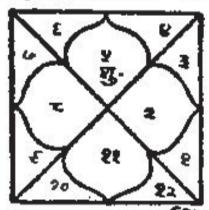
भौतवीं मित-दृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि, भवन आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं नीच-दृष्टि से षष्ठमाव की देखने से शतु-पक्ष से परेतानी धनी रहती है। नवीं दृष्टि से

स्वराक्षि में अष्टमभाव की देखने से आयु की विश्वेष शक्ति मिलती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

'सिह' लग्न में 'शुक्र'

'सिंह' लग्न की कुण्डली से 'नदमकार्य' स्थित 'सुक' का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : शुक

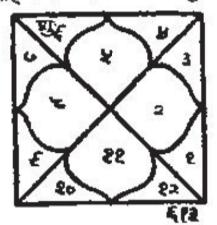


पहले भाव में शहू पूर्ण की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की शारीरिक सौन्दर्य, श्रृंगार, यस तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है। भाई-बहिन एवं पिता से मतभेद रहते हुए भी. सुख मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तममान को देखने से स्त्री के पक्ष में सफलता मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में लाभ होता है।

'सिह' लग्न की कुण्डली से 'द्वितीयमाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह सन्न : द्वितीयभाव : शुक्र

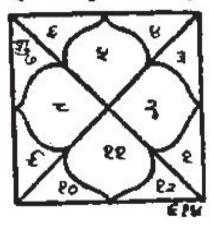


दूसरे मान में मिक्ष बुध को राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को धन तथा कौटुम्बिक सुख अल्प माला में प्राप्त होता है। पिता, व्यवसाय, राज्य तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी कमी धनी रहती है।

सारावीं उच्च दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से जातक को बायु में वृद्धि होती है तथा पुरातस्व का लाभ होता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति ऐश्वयं-मालियों जैसा जीवन व्यतीत करता है।

'सिह' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेस

सिंह लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

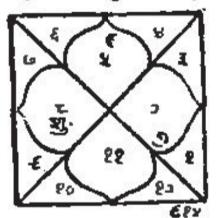


तीसरे भाव कें स्वराशि-स्थित शुक्त के प्रभाव से जातक के पराकर में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का शुक्र मिलता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय द्वारा भी लाभ प्राप्त होता है।

सातवीं शत्नु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक अपने पुरुषार्थे द्वारा भाग्य तथा धर्म की वृद्धि करता है। वह बड़ा चतुर, योग्य तथा परि-श्रमी भी होता है।

'सिह' समा की कृष्यली के 'चतुर्यमाव' स्थित 'शुक' का फलादेस

सिंह लग्न : चतुर्यभाव : शुक्र

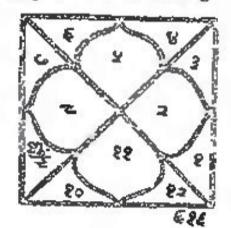


चौथे भाष हैं सन्नु मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का माता के साथ सामान्य मतभेद रहता है, परन्तु भूमि एवं भवन का लाभ प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, सफलता तथा यश की प्राप्ति होती है। भाई-बहिन का सुख भी यथेडट मिलता है तथा रहन-सहन भी रईसों-जैसा होता है।

'रिह्र' **लग्न की कृष्डली के 'एं**न्डबजाब' स्थित **'शुक्र' का फ**लादेश

सिंह लग्न : पंजमभाव : गुक



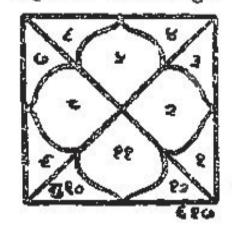
पर्विदें भाव के शत्रु पुरु की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता विकती हैं। भाई-बहिन एवं पिता का मुख भी प्राप्त होता है। वह अपनी योग्यता एवं चातुर्य के बल कर सर्वेत्र सम्मानित भी होता है।

सातवीं मिलवृष्टि से एकादरभाव को देखने से परिश्रम द्वारा पर्याप्त न्वाभ होता है तथा राज्य-पक्ष में भी सम्मान, सुख एवं लाभ मिलता है। ऐसा

व्यक्ति राजनीतिक, सुखी, धनी, यशस्वी तथा चतुर होता है।

'सिह' लग्न की कुण्डली के 'बध्ठलांड' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

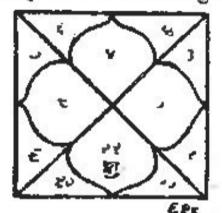


छठे भाव में मित्र सिन की राशि पर स्थित शुक्त के प्रभाव से जातक बड़ा चतुर, प्रभावशाली तथा शबुओं पर विजय पाने वाला होता है। पिता के साथ सामान्य मतभेद रहता है, परन्तु राज्य-पक्त से उन्नित एवं सफलता मिलती है।

सातनी शतुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से सुख और लाभ को प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों के बल पर सफलताएँ प्राप्त करता है।

'सिह' सम्म की कृष्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : शुक्र



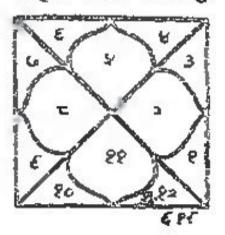
सातवें भाष में मिल शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता सिलती है तथा भाई-बहिन एवं पिता का सुख भी मिलता है। वह कुशलतापूर्वक गृहस्थी का संचालन करता है तथा यश प्राप्त करता है।

सातवीं शतुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक को शारीरिक सक्ति, प्रभाव, मनोवल तथा

हिम्मत वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बहादुर तथा हुकूमत करने वाला होता है।

'सह' लग्न की **कुण्डली के 'अ**ष्टवश्रा**व' स्थित 'शुक्र' का फलादेश**

सिंह सन्त: अष्टमभाव: शुक

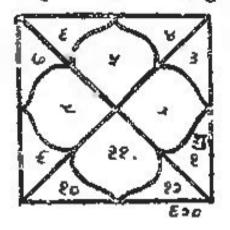


काठवें भाव में शतु गुरु की राशि तर स्थित उच्च के शुक्त के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरा-तत्त्व का लाभ होता है तथा भाई-बहिन एवं पिता से सुख में कुछ जुटिपूर्ण सफलता मिलती है। दैनिक जीवन में वह वड़ा प्रभावशाली रहता है। राज्य-पक्ष में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं नीचवृष्टि से द्वितीयभाव की देखने के कारण धन के संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी दनी रहती है।

'सिह' सप्त को सुण्डली के 'नवमधाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिह लग्न : नवमभाव : शुक्र



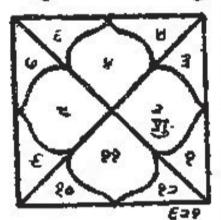
नवें भाव के शतु मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि के तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिए के सुखतथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, परिश्रमी, यशस्त्री, चतुर तथा हिम्मत वाला होता है।

'सह' लग्न की कुण्डली के 'दशमकाय' स्थित 'शुक' का फलादेश

सिंह लग्न : दशममाव : शुक्र



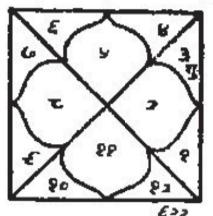
दसवें नाव के स्वराधि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के केंद्र में अत्यधिक सफलताएँ मिलती हैं तथा यम, सुख एवं साथ की प्राप्ति होती है। भाई-वहिनों का सुख भी पर्याप्त रहता है।

सातवीं शतुद्धि से चतुर्थभाव को देखने से माता, मकान तथा भूमि का अच्छा सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, भभावशाली, परिश्रमी तथा भाग्यदान् होता है।

'सिंह' लग्न को कुण्डली के 'एकादराभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह् लग्न: एकादशभाव: शुक

म्यारहर्वे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की अरमदनी में खूथ वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन एवं पिता का अष्ठ सुख भी मिलता है।

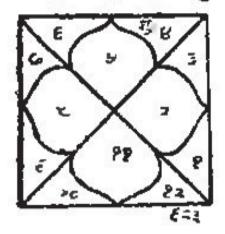


सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का भी विशेष लाभ होता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी वाणी द्वारा सबको प्रभावित करने वाला, सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

'सह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशमाव : शुक



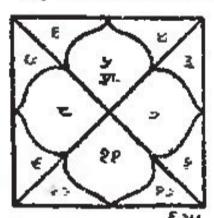
बारहवें भाव में शबु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खब अधिक रहता है सवा बाहरी स्थान के सम्बन्ध से लाभ होता है। पिता तथा भाई-बहिन के सुख तथा पराकम में कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव की देखने के कारण जातक शत्रु-पक्ष में चातुर्य द्वारा प्रभावशाली बना रहता है तथा अपनी हिम्मत से सभी झगड़ों में विजय प्राप्त करता है।

'सिह' लग्न में 'शनि'

र्शिह लग्न को कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

सिंह लग्न: प्रथमभाव: शनि



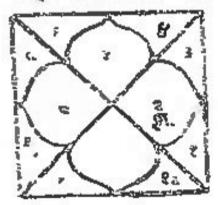
पहले भाव में शबु सूर्य की राभि पर स्थित शिंत के प्रभाव से जातक की शारीरिक कष्ट, रोगादि होते हैं, परन्तु शबु-पक्ष पर कुछ प्रभाव बना रहता है। तीसरी उच्च-वृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिन के सुख स्था पराकम की वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के सप्तमभाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है। देसवीं मिस्रदृष्टि से दशमभाव्

को देखने से पिता, राज्य एवं ध्यथसाय के लाम, यम तथा सुख प्राप्त होता है।

'सिंह' सन्द की कुण्डसी के 'पंचमकाय' स्थित 'शन्ति' का रालावेश

सिंह् लग्दः, पचमभादः, जनि



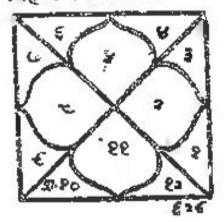
यौजयें भाव में अब् युद की राशि पर स्थित गिन के अभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के एक्ष में कुछ परेशानी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्थ-राशि में सन्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यदमाय से सुद्ध भिलता है। स्त्री बुद्धिमती होती है।

कातवीं मिल्रदृष्टि से एकादश भाव की देखने से आय में वृद्धि होती है। दसवीं मिल्रदृष्ट से दितीयभाद की देखने से धन की वृद्धि होती है तदा सरवात्य

कौटुम्बिक सुद्ध भी मिलता है। ऐसा जातक दड़ा विषयी होता है।

'सिह' सन्द की कुण्डली के 'वज्ठभाव' स्थित 'शहेर' का फलादेश

मिह **लग्न** च्याप्रभाव : शनि



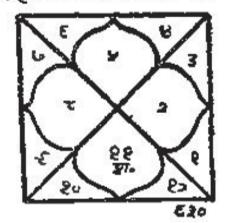
छठे भाव में स्वराणिस्थ शनि के प्रभाव से जातक शक्षु-पश्च पर प्रभावी रहता है तथा नजसाल से भी शवित प्राप्त करता है। दैनिक खर्च के सचरचन में तथा स्त्री-पक्ष से कुछ असन्तोद रहता है। तीसरी शक्षु-वृद्धि के अध्यतभाव की देखने के कारण पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है, परन्तु आय के विषय में कुछ अशान्ति रहती है।

सातवीं शबु-दृष्टि से हादशभाद को देखने स खर्म अधिक होता है, जिससे परेशानी रहती है।

दसवीं उच्चद्वित से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-विहिनीं का सुद्ध मिलता है। ऐसा व्यक्ति हिम्मत से कठिनाइयों पर विजय पाता है।

'सिंह' साम की कुण्डली के 'सप्तमन्नाव' स्थित 'शनि' का फलावेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : शनि



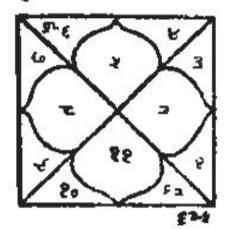
सातवें भाव में स्वराशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष तथा दैनिक व्यवसाय में कठिनाइयां बनी रहती हैं। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। तीसरी नीचदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धमें की कुछ हानि होती हैं तथा यश में कमी आती है।

सातवीं शतुद्धि से प्रथम भाव की देखते से शारीरिक सीन्दर्य एवं मानसिक शक्ति का हास होता है। दसवीं शतुद्धि से चतुर्यभाव की देखने

मे माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी कमी आ आती है।

'सिंह' लग्न की कुष्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का कलावेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : शनि



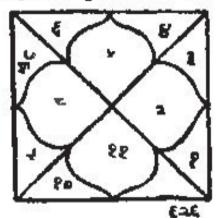
दूसरे भाव में मित्र दूस की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में हानि-लाभ दोनों की प्राप्ति होती है। स्त्री तथा व्यथसाय के क्षेत्र में बाधाएँ आती है। तीसरी शतुद्धि से चतुर्षभाद को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शतुद्धि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातस्य के विषय में असन्तीय रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव की देखने से

आमदनी में वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सुख-दु:खपूर्ण बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कुष्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

सिंहलग्न : तृतीयभाव : शनि



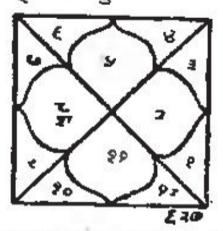
तीसरे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के प्रभाव तथा पराक्रम में बहुत वृद्धि होती है सबा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। शक्षु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा स्त्री-पक्ष पर विशेष प्रभाव थना रहता है। दैनिक जायदनी भी अच्छी रहती है। तीसरी शक्षु-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ रहती है।

सातवीं नीचदृष्टि से नवम भाव की देखने

से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी आती है। दसवीं शतुर्वृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्म अधिक रहता है, जिसके कारण परेशानी भी रहती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'बतुर्वेशाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

सिंहलग्न : चतुर्थभाव : शनि



चौथे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की भाता, भूमि तथा भवन के सुख में बृटिपूर्ण सफलता मिलती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी असन्तोष रहता है।

तीसरी दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव की देखने से शक्षु पक्ष पर प्रभाव रहता है, परन्तु कुछ कठिनाइयों के साथ शत्रुओं पर विजय मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशममाय को देखने से पिता,

राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। दसवीं दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शरीर में रोग रहता है तथा सौन्दर्य में कुछ कमी आती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'एकावशमाब' स्थित 'शनि' का फलावेश

ग्याहरवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित सिंह लग्न : एकादशमाव : शनि

28

शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है। शबू-पक्ष से भी विशेष लाभ होता है। कुछ परेशानियों के साथ स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी अच्छी सफलता मिलती है ।

तीसरी शद्दुष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा रोग का शिकार बनना पङ्ता है। सातवीं शत्रुद्धि से पंचमभाव की देखने से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती

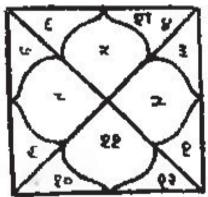
है। इसवीं शत्रुद्ध्यि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व में कमी आती है सथा आयु के विषय में भी चिन्ताएँ बढ़ आती हैं।

'सिह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशमाव' स्थित 'शर्मि' का फलादेश

बारहवें भाव में शतु चन्द्रमा की राशि पर सिंह लग्न : द्वादशमाव : मनि

स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है सवा बाहरी संबंधों से कुछ लाभ होता है। शतुपक्ष से

परेशानी भी मिलती है।



तीसरी मिलद्ष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन-जन को बृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

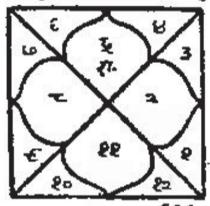
सातवीं दृष्टि से स्थराणि में बष्ठभाव की देखने से शबु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। दसवीं नीच-

दृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ अति हैं सवा धर्म की भी हानि होती है। ऐसा ध्यक्ति स्त्री-पक्ष तथा व्यवसाय से कष्ट पाने वाला, अपयशी तथा रोगी होता है।

'सिंह' लग्न में 'राहु'

'सिंह' लग्न की कृष्डली के 'प्रयमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

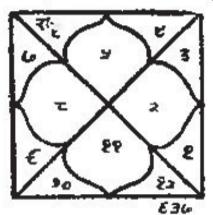
सिंह लग्न : प्रथमभाव : राह्र



पहले भाव में शबु सूर्य की राशि पर स्थित राह के प्रभाव के जातक के शारीरिक सौन्दर्य सथा सुख में कमी आती है तथा कभी-कभी घोर कच्टों का सामना भी करना पहुता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों सथा साहस के सहारे आगे बढ़ता है तथा भीतरी चिन्ताओं से जिन्तित भी बना रहता है।

'सिह' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'राहु' का कलादेत

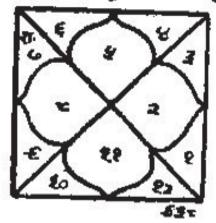
सिंह लग्न : द्वितीयभाव : राह



दूसरे भाव में मिद्र बुध को राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता अलती है। कभी-कभी उसे घोर आर्थिक कष्ट भी उठाना पड़सा है तथा ऋण-यस्त भी होना पड़ता है तो कभी आकस्मिक धन का लाभ भी होता रहता है। ऐसा व्यक्ति चतुर सथा चालाक होता है तथा धन-वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है।

'सिह' लब्न को कुण्डली के 'ठुतीयमाव' त्यित 'राहु' का फलादेश

सिंह लग्न : **तृ**तीयभाव : राहु

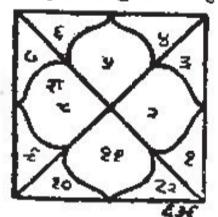


सीसरे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राष्ट्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-अहिन की ओर से कुछ कष्ट प्राप्त होता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, धैर्यवान् सथा परिश्रमी होता है। वह गुप्त गुक्तियों द्वारा गंभीरतापूर्वक अपनी स्वार्थ-सिद्धि करता है तथा दृढ़ निश्चयी होता है।

'सिंह' लग्न की कुछली के 'बतुर्यमाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

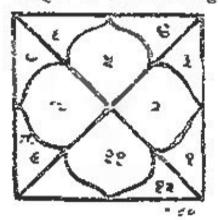
सिंह लग्न: चतुर्थभाव: राह



नौये भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की मातृ पक्ष से कष्ट मिलता है तथा भूमि, भवन खादि के सुख में बाधा उत्पन्त होती है। उसे परदेश में जाकर रहना पड़ता है। परन्तु वह हिम्मत, गुप्त युक्ति एवं धीरज के साथ सुख के साधनी की जुटाता तथा संकटों का सामना करता है।

'सिह' राम की कुण्डली के 'यंखयश्राद' स्थित 'राहु' का फलावेज

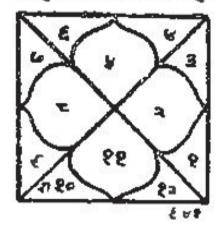
सिंह लग्न: पचनभाव: राहू



प्रविदें भाव में शबु युद की राशि पर स्थित नीव के राहु के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से कब्ट मिलता है तथा विद्या की कमी रहती है। वह बुद्धि-इल से अपनी अयोग्यता को छिपाने का अयत्न करता है। परन्तु उसकी वाणी में विनम्नता, शिब्दता एवं सत्य का अभाव रहता है। वह गुप्त शुक्तियों से स्वार्थ-सिद्धि करता है।

'सिह' साम की कुण्डली के 'खष्ठशाय' स्थित 'राहुं का फलादेश

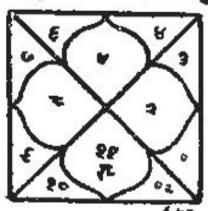
सिंह लग्न : षष्ठभाष : राहु



छठे भाव में मित्र शनि की राशि-पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक युक्ति-बल से शबु-मक्ष पर विजय प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे शबुओं द्वारा अधिक परेशान भी किया जाता है। वह बढ़ा हिम्मती, बहादुर, धैर्यवान् तथा साहसी होता है। क्षणड़े के समय वह अपनी बहादुरी का प्रदर्शन करता है। उसे अपनी ननसाल के पक्ष से हानि भी उठानी पढ़ती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलादेश

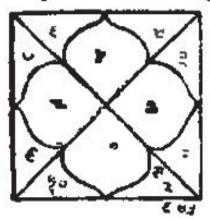
सिंह लग्न : सप्तमभाव : राहु



सातवें भाव में मित्र शनिकी राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है सवा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी ओर परेशानियां जाती रहती हैं, परन्तु वह बड़ी हिम्मत तथा क्षयें के साथ उनका मुकाबला करता है। कमी-कभी संकटों से बहुत थिर जाता है, किन्तु गुफ्त युक्तियों द्वारा उन्हें पार कर जाता है।

'सिह' लम्म की कुण्डली के 'अञ्चलनाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलादेश

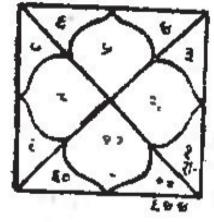
सिंह लग्नः अष्टभभावः राह्य



खाठवें भाव में मलू गुर की राशि पर स्थित राष्ट्र के प्रभाव से जातक की अपने जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कब्टों का सामना करना पड़ता है। उसके पेट के निम्न भाग में विकार रहता है तथा उसे चिन्ताएँ एवं परेशानियाँ घेरे रहती हैं। उसे पुरातस्य की हानि भी उठानी पड़ती है।

प्सिंह' लग्न को कुण्डली के 'अवनधाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

सिंह खग्न : नवमभाग : राह

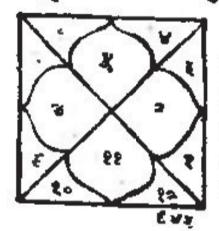


नवें भाव में सन्धु मंगल की राशि पर स्थित राष्टु के प्रभाव से जातक की भाग्योग्नित में अनेक बार क्कावटें जाती हैं तथा परेशानियों उठ खड़ी होती हैं। उसे धर्म-पालन में अरुचि रहती है।

ऐसा व्यक्ति अपने भाग्य की वृद्धि के लिए अनेक प्रकार की युक्तियों का सहारा लेता है तथा वैर्यवान्, हिम्मती एवं साहसी होने के कारण परेशानियों की हटाने में कुछ सफल भी हो जाता है।

प्रसह' लग्न की कृष्यली के 'बशमनाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

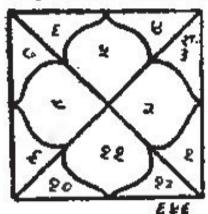
सिंहसम्बः दशमभाव: राह्



दस्वें भाव में अपने मिल शुक्त की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की पिता के सुख में कमी रहती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के खेल में भी कठि । इयों का सामना करना पड़सा है। परन्तु गुफ्त युक्तियों के बल पर वह अनेक कठिनाइयों की पार कर जाता है तथा कुछ उम्नति भी प्राप्त कर खेता है।

'सिह' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहुं' का फलादेश

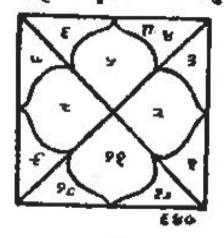
सिंह लग्न: एकादमभाव: राहु



ग्यारहवें भाव में मिल्ल बुध की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव के जातक की आमदनी में बहुत वृद्धि होती है तथा कभी-कभी खाकस्थिक छन-लाम भी होता है। वह अपने धैम, साहस, परिश्रम सथा गुप्त युक्तियों के बन पर लाय की बढ़ाता रहता है, परन्तु कभी-कभी उसे हानि भी उठानी पड़ती है।

'सिंह' लग्न को कुच्छली के श्वादशमाव' स्थित 'राहु' का कमादेश

सिंह लग्न : द्वादक्षभाव : राहु



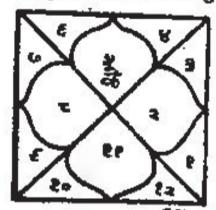
बारहवें भाव में सबू बन्द्रमा की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने के लिए हर समय जिन्तित रहना पड़ता है तथा कभी-कभी घोर कच्टों का सामना भी करना पड़ता है।

उसे बाहरी सम्बन्धों से भी हानि पहुँचती है। परन्तु गुप्त गुन्तियों, परिश्रम सथा साहस के बल पर वह बोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त कर सेता है।

'सिह' लग्न में 'केतु' का फलावेश

'सिंह' साम की कुच्छली के 'प्रथमचाव' स्थित 'केतु' का कलावेस

सिंह सन्न:प्रयमभाव:केतु

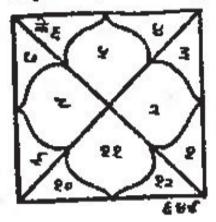


पहले भाव में शबु सूर्य की राशि पर स्थित केंतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कमी खाती है तथा कभी बाहरी जोट भी लगती है. जिसका शरीर पर स्थायी चिह्न धन जाता है।

ऐसा व्यक्ति मीतर केकाफी चिन्तित रहता है तथा सुख पाने के लिए कठिन परिश्रम करता है।

'सिह' लग्न की कुण्डली के 'द्वितायमान' स्थित 'केंतु' का कलादेश

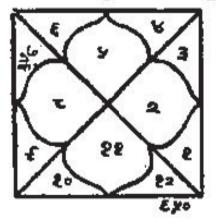
सिह्लग्नः द्वितीयभावः केतु



दूसरे भाव में मित्र बुध की रामि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की धन-संचय में कमी रहती है, जिसके कारण उसे अनेक कठिनाइयों सवा शिक्ताओं का सामना करना पड़सा है। वह धन-वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त गुमितयों के आश्रय से प्रतिष्ठा की बढ़ाने का प्रयत्न भी करता है। उसे पूर्व कीटुम्बिक सुख भी आप्त नहीं होता है।

प्रसह सम्म की कुण्डली के 'तृतीयमाव' स्थित 'केतु' का फलादेत

सिंह लग्न: तृतीयभाव: केंबु

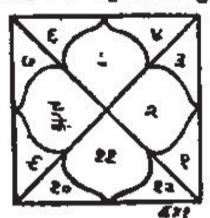


तीसरे भाव में मिल शुक्र की राशि पर स्थित केंद्र के प्रभाव से जातक की भाई-बहिनों से कच्छ प्राप्त होता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति निटर, साहसी, पराक्रमी, यरिश्रमी, चतुर तथा क्षक्तिकाली हरेता है, साय ही हठी तथा लापरवाह भी रहता है। वह अस्पेक कार्य की अपने बाहुबस से ही पूरा करता है।

'सिह' लग्न की कुण्डली के 'क्तुर्वमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

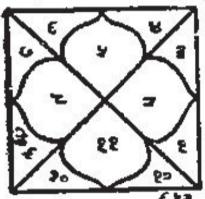
सिंह लग्न: चतुर्थभाव: केतु



चीथे शाव में शबु मंगल की राशि पर स्थित केंद्र के प्रभाव से जातक की माता के सुख में कभी आती है। घरेलू सुख में अशान्ति रहती है तथा भूमि-भवन का सुख भी नहीं मिलता। उसे परदेश में जाकर रहना पहला है।

ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रमी तथा कुप्त मुक्तियों का प्रयोग करने सासा होता है, फिर भी प्रायः परेवान ही बना एहता है। 'सिह' लग्न की कुण्डली के 'पंचममाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

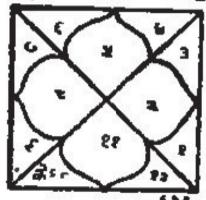
सिंह लग्न: पंचमभाव: केंद्र



पौनवें मान में शबु गुरु की राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से शक्ति मिलती है, परन्तु कभी-कभी कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में परिश्रम करने पर भी अधिक सफलता नहीं मिलती। ऐसा व्यक्ति स्वयं की बुद्धिमान् भी समझता है, परन्तु उसकी वाणी में प्रभाव नहीं होता।

'सिह' लग्न की कुष्डली के 'बळकाब' स्थित 'केतु' का कलावेश

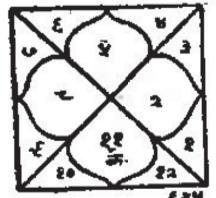
सिंह लग्न : षष्ठभाव : केतु



छठे भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केंद्र के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम द्वारा शत्रु पर विजय प्राप्त करता है। वह बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान् होता है। ग्रुप्त युक्तियों सथा आन्तरिक साहस के बल पर वह निरन्तर आगे बढ़ने का प्रयत्म करता है तथा मुसीबर्ते आगे पर भी घबराता महीं है। उसे अपने ननसाल पक्ष से हानि भी उठानी पढ़ती है।

'सिहं लग्न की कुञ्जली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

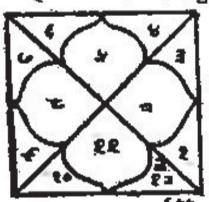
सिंह लग्न : सप्तमभाव : केंतु



सातवें भाव में मित शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की स्थी-सुख तथा व्यवसाय-पक्ष में कमी का सामना करना होता है। वह अपने साहस, धैर्य तथा गुप्त युक्तियों के बल पर गृहस्थी की चलाता है। कभी-कभी बड़ी मुसीबतों में भी फैसता है, परस्पु धैर्य तथा साहस की नहीं छोड़ता और अन्त में सफलता पाकर ही रहता है। उसकी मूसे न्दिय में विकार होने की संभावना भी रहती है।

'सिंह' लांग की कुछली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

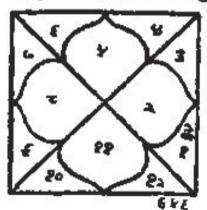
पत्र लग्न का कृष्यता क यह जग्न : अष्टमभाव : केतु



आठवें मान में शबु गुरु की राशि पर स्थित केतू के प्रभाव से जातक को जीवन में अनेक बार मृत्यु-तृत्य कच्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातस्य की हानि भी उठानी पड़ती है। वह सदैव जिन्तित रहता है, फिर भी धैमें ओर साहस की नहीं छोड़ता। ओर परिश्रम सथा गुप्त युक्तियों के बल पर यह कठिनाइयों पर विजय पाता है। उसके पैट के निम्न भाव में कुछ विकार भी रहता है। ₹8₹

'सिह' लग्न की कुष्डली के 'नवममाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

सिंह लग्नः नवमभावः केतु



नवें भाव में शतु मंगल की राशि पर स्थित केंद्र के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में वाधाएँ साती हैं तथा धर्म के पता में भी कमजोरी रहती है।

वह कठिन परिश्रम करने पर भी यशस्त्री नहीं बन पाता तथा कभी-कभी और संकटों में पड़ जाता है। भाग्यहीन होने पर भी वह अपने परिश्रम, धैयं, साहस तथा गुप्त युक्तियों के बन पर कुछ सफलता एवं शक्ति प्राप्त कर लेता है।

'सिह' लग्न' की कुथ्बली के 'वशनभाव' स्थित 'केतु' का 'फलावेश

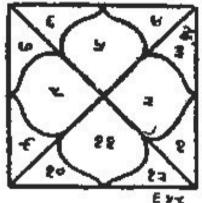


दसर्वे भाव में मिल शुक्त की राशि पर स्थित केंद्र के प्रभाव से जातक की पिता से कुछ कच्ट भिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के होत में सफलता पाने के लिए बीर परिश्रम करना पड़ता है।

वह अपने सैयं, साहस, चातुरं, बुद्धि-कल तथा परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ता है और तुरक्की भी करता है।

'सिह' लग्न की कुण्डली के 'एकावशभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

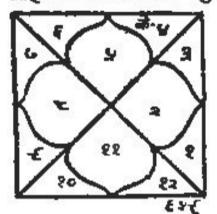
सिंह लग्न: एकादशभाव: केंतु ग्यारहर्वे भाव



ग्यारहर्वे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की धन की कमी का दुःख विश्वेष रूप से बनुभव होता है तथा वह अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए बीर परिश्रम तथा संधर्ष करता है। वह लाभ उठाने के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता तथा गुप्त गुक्तियों एवं धैयें के बल पर कठिनाइयों की पार कर लेता है।

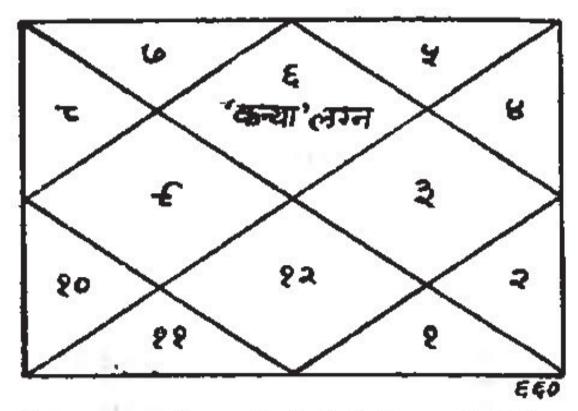
'सिह' सन्न की कुण्डली के 'द्वादशमाव' स्थित 'केतु का फलावेस

सिंह लग्न: द्वादशमाव: केंद्र



बारहवें भाव में भाव चन्द्रमा की राशि पर स्थित केंद्र के प्रमाव से जातक अपने खर्ष की बड़ी कठिनाई से चला पाता है। उसे मानसिक चिन्ताएँ तथा परेशानियाँ चेरे रहती हैं। वह अनेक बार संकटों तथा हानियों का सामना करता है, परन्तु अपने गुप्त धैर्य, युक्तिबल, परिश्रम तथा साहस के बल पर उन कठिनाइयों पर विजय पाता हुआ अपने काम की और्स-तैसे चलाता रहता है।

'कन्या' लग्न



['कम्या' सान की कुण्डलियों के विभिन्न ग्रहों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलावेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'कन्या लग्न' का फलादेश

'कन्या' सान में जम्म लेने वाले जातक का भारीर सामान्य अवदा स्मूल और सुन्दर होता है। इसकी खाँखें बड़ी-बड़ी होती हैं। यह कफ एवं पिस अकृतिवाला, सत्यभाषी, त्रियवादी, गंभीर, शाकुक-मिजाक, अपने मन की बात की खिपाने वाला, सर्वेव प्रसन्त रहने वाला, बहुर, काम-कीड़ा-कुशस, मायावी, भोथी, विचारतील, हरपोक, याद्या-प्रेमी, गणितक, धर्म में हिच रखने वाला तचा अनेक प्रकार के गुणों तथा कसा-कौछलों से युक्त होता है।

इसे सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है तथा कन्या-सन्तति अधिक होती है। यह भारत-द्रोही तथा स्त्री द्वारा पराजिस भी होता है।

इसं सम्म वाला आतक बाल्यावस्था में सुखी, मध्यमावस्था में सामान्य तथा विन्तिमावस्था में बु:क भोगने वाला होता है। इसका भाग्योदय २४ से ३६ वर्ष की जामु के बीच होता है। इसी व्यवधि में यह अपने धर्म तथा ऐक्वयं की वृद्धि करता है, परस्तु यह अन्त तक नहीं टिक पाता। 'कन्या' लग्न बालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न मावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६१ से ७६८ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ब्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आये सिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'कन्या' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१---'कन्या' सम्म बालों की अपनी जन्मकुष्डली के विभिन्न मावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलावेश उदाहरण-कुष्डली संख्या ६६१ से ६७२ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न घालों को अपनी गोचर-कुण्डली के विधिन्स धावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नसिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'--

- (क) 'मेव' राशि पर हो तो सख्या ६६१
- (ख) 'बूब' राणि पर हो तो संख्या ६६२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६६३
- (भ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६६४
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६६%
- (ख) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६६६
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६६७
- (ख) 'बृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६६८
- (स) 'सनु' राणि पर हो तो संख्या ६६६
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संस्था ६७०
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या ६७१
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६७२

'कन्या' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१---'कन्या' सरन बालों की वयनी जन्मकुष्डसी के विभिन्न मावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डसी संख्या ६७३ से ६८४ के बीच देखना चाहिए। २---'कन्या' सान वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बन्द्रमा' का अस्वामी फसादेश निम्नसिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस दिन 'शन्द्रमा'---

- (क) 'मेच' राशि पर हो तो संख्या ६७३
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६७४
- (ग) 'मियुन' राशि पर हो तो संख्या ६७५
- (थ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६७६
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६७७
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६७८
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६७६
- (क) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६८०
- (क्र) 'धपु' राशि पर हो तो संख्या ६८१
- (ञा) 'मकर' रामि पर हो'तो संख्या ६०२
- (ट) 'कुम्म' राणि पर हो तो संख्या ६८३
- (ठ) 'मीन' राणि पर हो तो संख्या ६८४

'कन्या' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

.

१---'कन्या' सरन बालों की अपनी जन्मकुष्डली के विभिन्न मावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८१ से ६१६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' सरन वालों की गीचर-कुण्डली के विभिन्न मावों में स्थित 'मंगस' का अस्वामी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'-

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६८५
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६८६
- (ग) 'मियुन' राशि पर हो तो संख्या ६८७
- (ब) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६= द
- (क) 'सिह' राशि पर हो तो संख्या ६८६
- (च) 'कम्या' राशि पर हो तो संख्या ६६०
- (छ) 'तुला' राणि पर् हो तो संख्या ६६१
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६ हर
- (क) 'धपु' राशि पर हो तो संख्या ६१३
- (क्न) 'नकर' राशि पर हो तो संख्या ६१४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६६५
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६६६

'कन्या' लग्न में 'बुघ' का फलादेश

१—'कम्या' लम्न बालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलावेज उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६७ से ७०८ के बीच देखना चाहिए।

२---'कन्या' लग्न वालों को योचर-कुण्डली के विभिन्न मावों में स्थित 'बुध' का अस्वामी फलादेश निम्नतिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए----

जिस महीने में 'बुध'---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६६७
- (ख) 'वृष' राशि पर ही सो संख्या ६६८
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६६६
- (म) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७००
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७०१
- (च) 'कम्या' राशि पर हो क्षे संख्या ७०२
- (छ) 'तुला' राजि पर हो तो संख्या ७०३
- (ज) 'बुश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७०४
- (झ) 'बनु' राशि पर हो तो संख्या ७०५
- (मा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७०६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७०७
- (ठ) 'मीन' राणि पर हो तो संख्या ७००

'कन्या' लग्न में 'गुरु' का फलावेश

१—'कन्या' सम्न बालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्वायी फसादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०१ से ७२० के बीच देखना चाहिए।

२--'कन्या' लग्न वासों की धोचर-कुण्डली के विभिन्न मावों में स्थित 'गुर' का अस्वामी फसादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए--

जिस वर्ष में 'गुर'---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७०१
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७१०
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो सो संख्या ७११

- (ध) 'कई' राशि पर हो तो संख्या ७१२
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७१३
- (भ) 'कम्या' राशि पर हो तो संख्या ७१४
- (छ) 'तुला' राणि पर हो तो संख्या ७१५
- (अ) 'वृश्चिक' राशि पर हो क्षे संख्या ७१६
- (स) 'धनु' राणि पर हो तो संख्या ७१७
- (ठा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७१८
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७१६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७२०

'कन्या' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न बालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कूंडली संख्या ७२१ से ७३२ के बीच देखना चाहिए।

२---'कन्या' सग्न बालों को गोषर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुर' का अस्यायी फतादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'शुक'-

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७२१
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७२२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७२३
- (भ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७२४
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७२%
- (च) 'कम्या' रामि पर हो तो संख्या ७२६
- (छ) 'तुला' राणि पर हो तो संस्था ७२७
- (च) 'वृश्चिक' राणि पर हो तो संख्या ७२८
- (स) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७२६
- (ठा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७३०
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या ७३१
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७३२

'कन्या' लग्न में 'शनि' का फलादेश

र---'कन्या' सरन बालों की अपनी जन्मकुण्डसी के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३३ से ७४४ के बीच देखान चाहिए। २---'कन्या' सरन बालों की गीचर-कुण्डली के विभिन्न मावों में स्थित 'शनि' का सस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस दर्ष में 'शनि'---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७३३
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७३४
- (ग) 'मियुन' राणि पर हो तो संख्या ७३४
- (थ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७३६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७३७
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७३८
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७३६
- (ध) 'बुश्चिक' राणि पर हो तो संख्या ७४०
- (स) 'वनु' राशि पर हो तो संख्या ७४१
- (क्य) 'सकर' राशि पर हो तो संख्या ७४२
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७४३
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७४४

'कन्या' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१—'कत्या' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में 'राहुं' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४५ से ७५६ के बीच देखना चाहिए।

२---'कन्या' सरन वालों को गोषर-कुण्डसी के विभिन्स भावों में स्थित 'राहु' का अस्यायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डसियों में देखना चाहिए----

जिस वर्ष में 'राहु'--

- (क) 'मेव' राणि पर हो तो संख्या ७४%
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७४६
- (भ) 'मियुन' राशि पर हो तो संब्या ७४७
- (भ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७४८
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७४E
- (च) 'कम्या' राणि पर हो तो संख्या ७५०
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७५१
- (ख) 'बुश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७५२
- (क्त) 'बनु' राणि पर हो तो संख्या ७५३
 - (का) 'सकर' राशि पर हो तो संख्या ७५४
 - (ट) 'कुम्भ' राणि पर हो तो संख्या ७४४
- (ठ) 'भीन' राशि पर हो तो संख्या ७५६

'कन्या' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१---'कन्या' लग्न दालों सो अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थितः 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५७ से ७६८ के बीच देखना चाहिए।

२---'कन्या' लग्न दालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केलु' का अस्वामी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

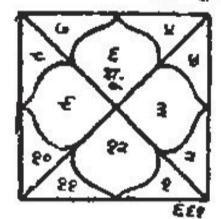
जिस वर्षे में 'केतु'---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७५७
- (ख) 'वृष' राशि पर हो शो संख्या ७५=
- (ग) 'मिथुन' राणि पर हो तो संख्या ७५६
- (भ) 'कर्क' राशि पर हो तो संक्या ७६०
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७६'१
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७६२
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७६३
- (अ) 'बृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७६४
- (स) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७६५
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७६६
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या ७६७
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७६=

'कन्या' लग्न में 'सूर्य'

'कम्या' लग्न की कुम्बली के 'प्रयममाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या सरन : प्रथमभाव : सूर्य

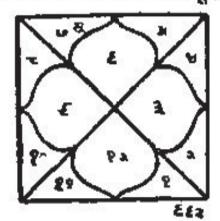


पहले भाव में जिस बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक दुवंल एरीर वाला, खूब खर्च करने वाला तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त करने वाला होता है। परन्तु कभी-कभी खर्च के कारण उसे परेशानी उठानी पढ़ती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाथ के पक्ष में कुछ हानि का सामना भी करना गड़ता है सथा असन्तोष भी बना रहता है।

'कन्या' लम्न की कुण्डली के 'हितीयमाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

क्रम्या सरन : द्वितीयभाव : सूर्यं

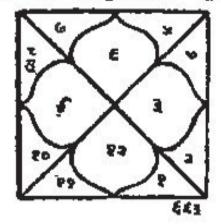


दूसरे भाव में मलू 'गुक' की राणि पर स्थित बीच के सूर्य के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब की हानि होती है। बाहरी स्थानों से आधिक लाभ कम होता है, तथा खर्च के कारण परेशानी भी होती है।

सातवीं दृष्टि से अष्टममान को देखने के कारण जातक की पुरातस्य तथा खायुका लाभ प्राप्त होता है।

'कन्या' लम्न की कुम्बली में 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

क्रम्या लग्न : तृतीयभाव : सूर्यं

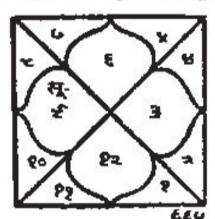


तीसरे भाव में जिस 'संगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ न्यूनता आती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा जीवन में सफलताएँ प्राप्त करता है तथा अत्यन्त हिम्मती और प्रभावशाली होता है।

सातवीं समुद्धि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कभी रहती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सामान्य ढंग से व्यतीत होता है।

"कन्या" लग्न की कुष्डली में 'बतुर्यमाव' दियत 'सूर्य' का फलावेश

कन्या सरन : चतुर्यंभाव : सूर्यं

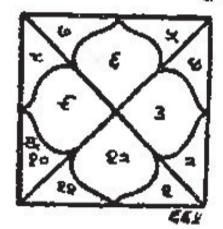


चौषे भाव में मिल 'गुरुं की राशि पर स्थित 'सूयें' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवनके सुख में कभी रहती है। उसे बाहरी स्थानों से सुख तथा खर्च के लिए धन प्राप्त होता है।

आतवीं मिन्नदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से भी कुछ असन्तीष रहता है।

'कम्या' लम्न की कुष्डली में 'बंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कत्या सरन : पंचमभाव : सूर्यं

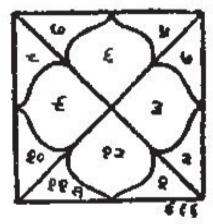


पाँचवें भाव में सत् शनि की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की विद्या, वृद्धि तथा सन्तान में कभी रहती है तथा खर्च चलाने के लिए विभाग में परेशानी रहती है।

सातवीं मिन्नदृष्टि से एकादश मान का देखने के कारण सामान्य लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति चक्करदार बातें करने दाला तथा चंचस होता है।

'कम्पर' लग्न की कुण्डली में 'यच्छनाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

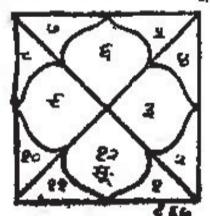


छठे भाव में मतु 'मनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक मतुओं से परेकान रहता है तया अधिक खर्च करके हो जन पर प्रभाव स्थापित कर पाता है। वह परिश्रम द्वारा अपना खर्च चलाता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सामान्य लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव की देखने के कारण खर्च अधिक बना रहता है।

'कन्या' सन्त की कुष्वली में 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या सरन : सप्तमभाव : सूर्य



रे सातवें भाव में मित्र 'गुड' की राणि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से आठक की स्त्री सथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। बाहरी स्थानों से लाभ के अतिरिक्त हानि भी होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव की देखने के जातक का शरीर दुवंस होता है तथा वह स्वभाव से चंचल, कोधी एवं धन की और से जिन्तित बना रहने भासा होता है।

'कृषा' सन्त की कृष्डली में 'अष्टममाव' स्थित 'शूर्य' का फलादेश

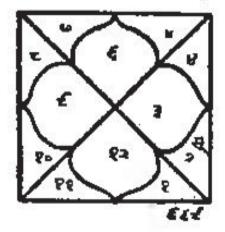
कत्या लग्नः अष्टमभावः सूर्य

वाठवें माव में भिन्न 'मंगल' की राणि पर स्थित उच्च 'सूर्ये' के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातस्व में कुछ कठिनाइयों के साथ बृद्धि होती है। खर्च की अधिकता एवं बाहरी संबंधों से लाथ होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन की हानि होती है एवं कौदुम्बिक सुख में कमी आती है। ऐसी गृह-स्थिति का जातक धन के विषय में बहुत चिन्तिस बना रहता है।

'रूपा' सम्म की कृष्टली में 'जनमनाम' स्थित 'सूर्व' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : सुर्ये

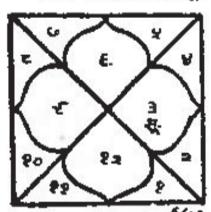


वर्षे भाव में शतु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'सूर्ये' के प्रभाव से जातक के भाग्य सभा धर्म के जेल में कभी रहती है। ऐसे लोग प्रायः नास्तिक होते हैं। उन्हें बाहरी सम्बन्धों से जाम होता है।

सातवीं मिलदृष्टि से सृतीयभाव को देखने से माई-बहिन के सुख में कभी रहती है तथा पराकम की भी अधिक बृद्धि नहीं होती।

'कन्या' सम्म की कुन्डली में 'दसमगान' स्थित 'शूर्य' का फलावेल

कन्या लग्नः दशमभावः सूर्ये

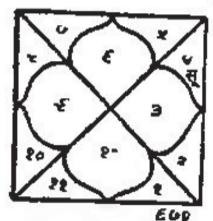


दसर्वे भाव में नित्त 'बूध' की राजि पर स्थित 'सूर्ये' के प्रमान से जातक की राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ वाती हैं। खर्च कथिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

सातवीं मित-वृष्टि से चतुर्यभाव की देखने है. माता, सूमि तथा भवन के सुख में भी कुंछ कभी बनी रहती है।

'कन्धा' लग्न की कुच्छली में 'एकादसमाव' स्थित 'सूर्ये' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : सूर्य

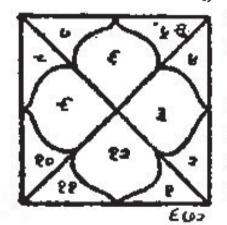


ग्यारहवें माव में भिल 'चन्त्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की पर्याप्त आमदनी होते हुए भी खर्च चलाने की चिन्ता बनी रहती है सचा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाम, सुख सचा सम्भान मिसता है।

सातवीं शतु वृष्टि से पंचमभाव की देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का लेख भी कमजोर रहता है।

'क्त्या' सन्त की कुण्डली में 'हादशमाव' स्थित 'सूर्ये' का फलावेश

कन्या लग्नः द्वादशभाषः सूर्ये



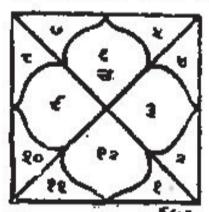
बारहवें भाव में स्वराणि-स्थित सूर्य के प्रभाव जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ एवं सम्मान भी मिलता है।

सातवीं सञ्जूदृष्टि से वष्ठभाव को देखने के कारण सञ्ज्ञपक्ष एवं रोग आदि से काफी परेशानी होती है तवा खर्च भी अधिक होता है। फिर भी जातक अपना साहस बनाये एख कर सजु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित कर लेता है।

'कन्या' लग्न में 'चन्द्रमा'

'करपा' लग्द की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'बन्त्रमा' का कलावेश

केम्यालग्नः प्रथमभावः धन्द्र

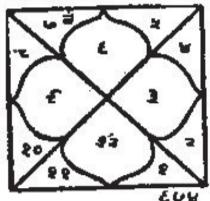


पहले साव में भिल बुध की राशि पर क्यित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की खारीरिक सौन्दर्य, प्रसन्तता एवं मनोबल का लाभ होता है। वह परिश्रम द्वारा धन तथा यश कमाता है और प्रभावशामी बनता है।

सातवीं भित्रदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से सुन्दरी स्त्री मिलती है तथा स्त्री-पक्ष एवं व्यवसाय से यपेट्ट लाभं होता है ।

हत्या' सम्म की कुच्छली में 'द्वितीयमाध' स्थित 'कश्रमा' काफलावेश

न्या लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

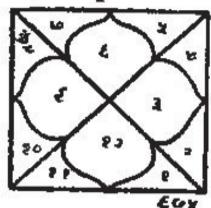


दूसरे भाव में मतु 'खुक' की रामि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के धन-कुटुम्ब में वृद्धि होती है तथा धन का संचय भी होता है।

सातवीं मिल-दूष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातस्य एवं आयु में बृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, सम्पन्न तथा यत्रस्वी जीवन विवादा है।

हम्या' लग्न की कुष्डली में 'तुतीयभाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलावेश

न्या सम्ब : तुतीयभाव : चन्द्र

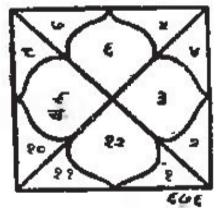


सीसरे भाव में भिन्न 'मंगल' की राशि पर नीच के 'चन्द्रमा' के प्रमाद से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के मुख में कमी खाती है, धनोपार्जन में कठिनाइयां आती हैं सभा चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं उच्च दृष्टि से नवममाव की देखने से परिश्रम द्वारा भाग्योन्तित होती है तथा धर्म-पालन में भी रुचि बनी रहती है।

क्रमा' सम्म को कुण्डली में 'सतुर्यभाव' स्थित 'सम्मना' का फलादेश

न्या लग्न : चतुर्थमाव : चन्द्र

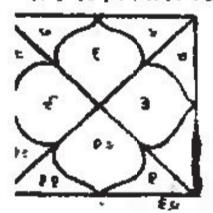


नौथे भाव में भित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन आदि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है और सर्वेद प्रसन्क बना रहता है।

सातवीं मिलबुष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के लेल में भी यश, सम्मान, सफलता, जन्मति एवं प्रभाव की बृद्धि होती

क्रमा' लाग की कुच्छली में 'धंचमभाव' स्थित 'बन्धमा' का फलावेश

न्या तुर्न : एंचमभाव : पन्द्र

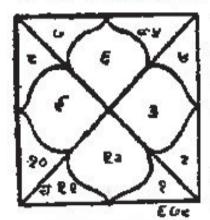


पाँचवें माव में मतु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विचा-बुद्धि पंक्ष की वृद्धि होती है तथा उसी के द्वारा धन-लाम भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादरायाद की देखने से आपदनी में भी बृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति. सुबी जीवन विताता है।

'कन्या' सग्न की कुप्डली के 'बळमाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

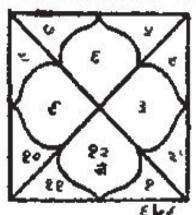


छठे भाव में भन्न 'शानि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की शन्न पक्ष द्वारा मानसिक अशान्ति बनी रहती हैं, परन्तु वह अपनी विनम्नता द्वारा शन्न-पक्ष पर सफलता पाता है और उससे लाभ भी उठाता है।

सातदीं मिल-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से साम भी मिलता रहता है।

'कन्या' सम्न की कुण्डली के 'सप्तमगरंव' स्थित 'चन्त्रमा' का फलादेश

कन्या लग्नः सप्तमभावः धन्द्र

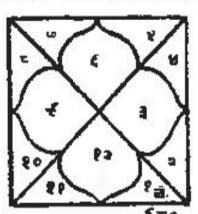


सातवें भाव में मिल 'गुरु' की राणि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को मुन्दर परनी मिलती है, भोगादि के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते हैं तथा व्यवसाय में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मिलदूष्टि से प्रथमभाव को देखने से भारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, शक्ति एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक सुन्दर, स्वस्थ, सुखी सवा सम्यन्न होता है।

'कन्या' सम्म की कुण्डली में 'अध्यममाव' स्थित 'चन्त्रमा' का कलावेश

कृत्या लग्नः अष्टमभावः चन्द्र

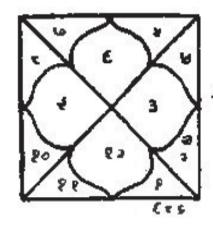


बाठवें माव में मिल 'मंगल' की राणि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की दीर्घायु एवं पुरातस्य का लाभ होता है। माव के सातवीं में कुछ कठिनाइयाँ आठी हैं, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन तथा कुटुम्बं का सुख भी मिसता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या सरन : नवमभाव : चन्द्र

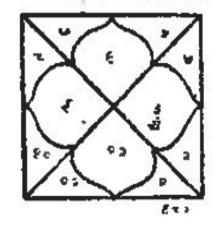


नवें भाव में सामान्य मिल्ल 'सुक' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को धन का सबेध्द लाभ होता है तथा आकिस्मिक देवी सहायताएँ भी मिलती रहती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने में भाई-वहिनों के सुख में कुछ कमी आती है तथा पराक्रम की भी अधिक वृद्धि नहीं हो पाली।

'कन्या' लग्न की कुष्डली में 'दशममाव' स्थित 'सन्द्रमा' का फलादेश

कन्यर लग्ने : दशमभाव : चन्द्र

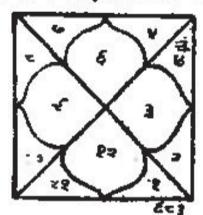


दसर्वे भाव में मित 'बुध' की राशि पर स्थित 'बन्द्रमा' से प्रभाव से जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष से पूर्ण लाभ तथा सम्मान मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा यशस्यी होता है।

सातवीं मिद्धदृष्टि से चतुर्षभाव को देखने से भूमि, मेवन तथा माता का सुख भी पर्याप्त मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'चन्डमा' का फलादेश

कन्या सरन : एकादशभाव : 'बस्द्र



ग्यारहवें भाव में स्वराधिनस्वित धन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आमंदनी अच्छी रहती है और वह अपने मनोबल द्वारा पर्योप्त चन कमाता है।

सातवीं शक्तु-दृष्टि से पंचर्गभाव की देखने से विद्या में कभी रहती है तथा सन्तानों से वैमनस्य रहता है, परन्तु वह अपनी चतुराई द्वारा अन्य क्षेत्रों में उन्नति करता रहता है।

'कन्या' सम्ब की कुण्डली में 'द्वादशमाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

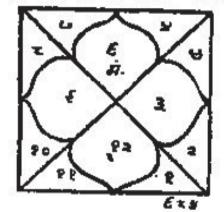
बारहवें भाव में निल्न 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से पर्याप्त लाम भी होता है। खर्च के कारण कभी-कभी मन में जिन्ताएँ धनी रहती हैं।

सातवीं शतु-दृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शतु-पक्ष में धन के खर्च एवं विनम्नता से सफलता मिलती है। वीमारी तथा अन्य झगड़ों में भी खर्च होता है।

'क्रस्या' लग्न में मंगल

'कन्या' लम्म की कुण्डली में 'प्रयममाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : मंगल

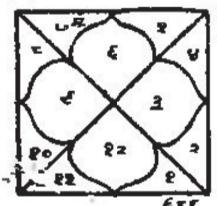


पहले माव में मिद्र 'बुध' की राशि पर स्थित बज्दमेश 'मगल' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कभी आती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख तथा परात्रम में बृद्धि होती है। सौथी मित्र-दृष्टि से चतुर्यभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी आती है। सातवीं मिन्न-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा ध्यवसाय के केंद्र में भी कठिनाइयाँ आती है। आठवीं दृष्टि से स्वराणि के

अष्टमभाव को देखने से आयु की यूदि तथा पुरातस्य का साथ होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन संघर्षपूर्ण रहता.है।

'कत्या' लग्न की कुष्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगस' का फलावेश

कृत्या लग्न : द्वितीयभाव : मगल



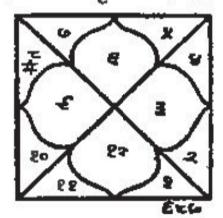
दूसरे भाव में शतू शुक की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है। परन्तु धन का लाभ होता है। चौथो उच्च दृष्टि से पंचममान को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में प्रयत्न करने से लाभ होता है।

सातवीं दुष्टि से स्वराणि में खष्टममाव को देखने से आयु सभा पुरावत्त्व का साथ होता है। नवीं

शतु-दृष्टि से देखने से धर्म-पालन सथा भाग्योन्तित में कुछ कमियाँ बनी रहती हैं।

'कन्या' सग्न की कुष्डसी में 'तृतीयभाव' स्थित 'संगल' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : मंगल



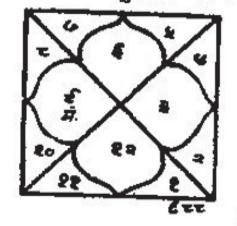
तीसरे भाव में न्वराशि-स्थित व्यवेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो 'वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कभी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है।

भीयी शतु-दृष्टि से चप्ठभाव के देखने से शतु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। सातवीं शतु-दृष्टि से नवम-भाव को देखने से भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में कठिनाइयाँ आती है। आठवी मित-दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कृष्टिक

परिश्रम करर्ने पर भी थोड़ी सफलता मिलती है तथा पिता का सुख भी कम ही रहता है।

'कन्या' लग्न की कृष्डली में 'खतुर्यं मार्च' स्थित 'मंगल' का फलावेश

कन्या लग्नः चतुर्थंभावः मंगल



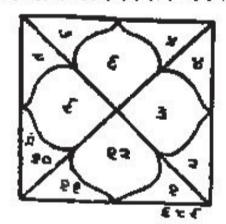
चौथे भाव में मित 'गुरु' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा आई-वहिनों के सुख में कमी आती है, परन्तु पुरावस्य का लाभ होता है।

चौथो मिल-दृष्टि से सम्तम्भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के होत में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

आठवीं नीच-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से लाभ के मार्ग में स्कावटें आठी हैं।

'कन्या' लग्न की कुछली में 'पंचममाव' स्थित 'यंगल' का फलादेश

कत्या लग्न : पंचमभाव : मंगल



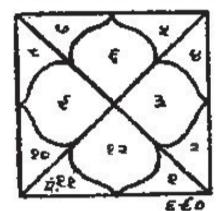
पौचवें माव में शतु 'सनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की कुछ कठिना-इयों के साथ सन्तान-पक्ष की शक्ति तथा विद्या-बुद्धि के लेख में सफलता प्राप्त होती है। नौथी दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरा-तस्य की शक्ति बदती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आय के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं भित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक

रहता है सथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है सथा प्रभाव बढ़ता है।

'कन्या' संग्न की कुण्डसरे में 'बच्ठभाव' स्थित 'संगस' का फलादेश

कन्याः लग्नः धष्ठभावः संगल



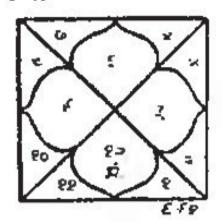
छठे भाव में शतु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शतु-एक पर विजय पाता है। यह परिश्रमी तथा पुरुषार्थी होता है, परन्तु भाई-वहिनों में कुछ विरोध रहता है। आयु तथा पुरासत्त्व का अच्छा लाभ होता है।

चौयी शतु-बृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धमं के क्षेत्र में कमजोरी रहती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक

रहता है। आठवीं शतु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक स्वास्थ्य में कमी तथा रक्त-विकार आदि रोग रहते हैं।

'कन्या' सन्त की कुष्डली में 'सप्तममाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या सरम : सप्तमभाव : मंगल



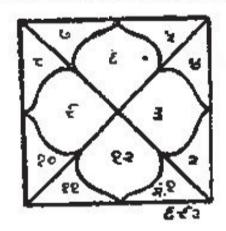
सातवें भाष में मित्र 'गुर' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्वी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कब्ट मिलता है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों के मुख में न्यूनाधिकता बनी रहती है।

सीयो मित-दृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। सातवीं शतु-दृष्टि से प्रथम-

भाव को देखने से शरीर में कुछ परेशानियाँ रहती हैं। आठवीं शतृ-दृष्टि से दितीय-भाव को देखने से धन-संचय तथा छीटुम्बिक सुख में भी कमी बनी रहती है।

'कल्या' सरम की कुण्डली में 'अध्टमभाव' स्थित 'अंगल' का फलावेश

कन्या लग्नै : अष्टमभाव : मगल



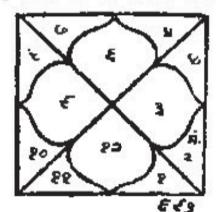
आठवें माव में स्वराशि में स्थित 'मगल' के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरासत्त्व का साम होता है, परन्तु आई-बहिन के सुख में कमी आती है। भीथी नीच दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनों के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

मातवीं शतुद्धि से द्वितीयभाव को देखने मे धन-सचय तथा कीटुम्बिक सुख में कुछ असंतीय रहता है। आठवीं दुष्टि से स्वराणि के तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में

कृति होती है तथा गुप्त हिम्मत बढ़ती है ।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवममाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कृत्या लग्न : नव्मभाव : म्गल



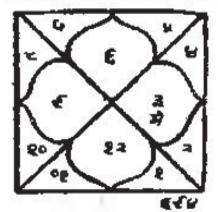
नवें भाव में शतु 'शुक' की राशि पर स्थित बष्टमेश 'संगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कुछ कभी आती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। सीथी मिस्रदृष्टि से द्वादशमाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातनीं दृष्टि से स्वराणि वाले तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा कुई

कठिनाइयों के साथ भाई-वहिनों का सुख मिलता है। आठवीं मित्र दृष्टि से चतुर भाव को देखने से कुछ कमी के साथ माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होत है। सामान्यतः जीवन शानदार बना रहता है।

'कन्या' लग्न को कृष्टलो में 'बराममाब' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या सन्तः दशमभावः मंगल



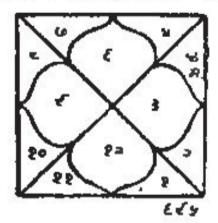
दसमें भाव में भन्न 'कुघ' की राशि पर स्थित 'मगल' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलत' मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होत है, परन्तु भाई-वहिनों के सुख में कुछ कभी रहती है।

चौभी शतुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर विकार-प्रस्त रहता है, अब कि हिम्मत बड़ी रहती है। सातवीं भित्रदृष्टि से चतुर्यभाव को देखने

से माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। आठवी उच्चदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सम्तान-पक्ष में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि की पर्याप्त वृद्धि होती है।

'कल्या' लग्न की कुण्डली में 'एकावंशमाव' स्थित 'संगल' का फलावेश

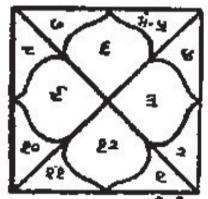
कन्या लग्नः एकादशभावः मंगल



ग्यारहवें मान में मित 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को लाभके क्षेत्र में कुछ कठिनाई आती है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। चौथी शत्नुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संख्य तथा कौटुम्बिक सुख में कमी आती है। सातदीं उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या एवं बुद्धि की उन्नति होती है तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

आठवीं शत्रुद्धि से धष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मती, बहुत बोलने थाला तथा कहादुर होता है। 'कन्या' सम्म की कृष्डली में 'द्वादशमाद' स्थित 'संगल' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादसभाव: अंगल



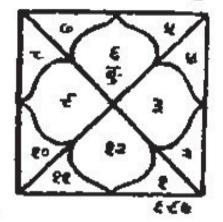
बारहवें भाव में मित 'सूर्य' की राणि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से कुछ शक्ति भी मिलती है। आयु सभा पुरासत्त्व के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां आती रहती हैं। चौथी दुष्टि सेस्वराशि वाले ठुतीयभाव को देखने से पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में सामान्य वृद्धि होती है।

हर्ड सातनीं शतुद्धि से पण्डभाव को देखने से शतुपक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद प्रमाव स्थापित ही पाता है। आठनीं मिसर्वृष्टि से सप्तममाव को देखने से स्त्री पक्ष में कुछ कठिनाई रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम तथा कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

'कन्या' लग्न में 'बुघ'

'कन्या' सन्त की कुष्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'बुख' का कलादेश

कन्यालग्नः प्रथमभावः बुध

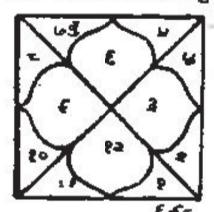


पहले भाव में स्वराशि-स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शरीरिक सौन्दर्य में बुद्धि होती है। राज्य, पिता तथा व्यवसाथ के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक आय के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अर्थाधक स्वाभिमानी होता है, इस कारण व्यवसाय में अधिक उन्नति नहीं कर पाता।

'कन्या' लग्त की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुख' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : बुध



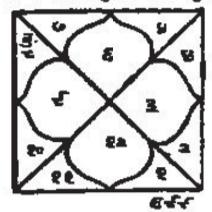
दूसरे मान में मिल 'सुक' की राणि पर स्थित 'वृष्ठ' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख में वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के केंद्र में भी सफलताएँ मिलती है।

सातवीं भिस्रवृष्टि से अष्टममान को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की मक्ति प्राप्त होती है।

ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन ऐश्वर्यशाली होता है। वह बनी सभा सुखी भी रहता है।

'करवा' सन्त की कुण्डली में 'हुतीयमाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

क्षन्या लग्न:तृतीयभाव:बुध



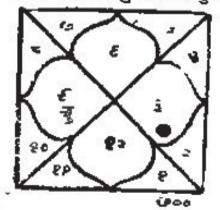
तीसरे भाव में भिन्न 'मंगल' को राणि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। राज्य, व्यवसाय तथा पिता के पक्ष में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मिल्लदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है।

ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी. धर्मात्मा, यशस्त्री तथा प्रभावशाली होता है।

'कम्या' लम्म की कुव्हली में 'सतुर्यभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्नः चतुर्यभावः बुध

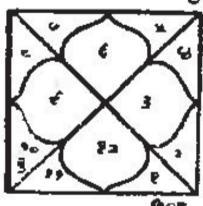


भीये भाव में <u>मिल</u> 'गुरु' की राजि पर स्थित 'बुष' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि एवं भवन का खेष्ठ सुख मिलता है। सारीरिक सीन्दयं तथा सुख में भी वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्व<u>रार्</u>णि के एकादशभाव की देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सब प्रकार की सफलताएँ प्राप्त होती हैं।

'कम्या' लान की कुच्छली के 'पंचमन्नाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या सग्तः पंचमभावः बुध



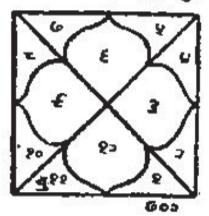
पौचनें भाव में मिल 'सिन' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पर्याप्त सुख मिलता है और उच्च पद की प्राप्ति होती है।

सातवीं सबुद्धि से एकादमभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कडिनाइयों के साथ यृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलनाएँ मिलती है।

ऐसा व्यक्ति सुन्दर, सुन्ती, धनी तथा स्वाभिमानी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'बष्ठमाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : बुध

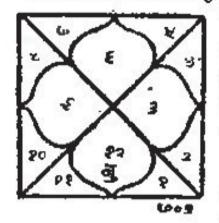


छठे भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'बूध' के प्रभाव से जातक को शलु-पक्ष में विवेक एवं युक्तियों के द्वारा सफलताएँ मिलती हैं। सनसाल-एक से भी लाभ होता है। परन्तु शारीरिक सौन्दर्य तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है।

सातवी मिलदृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से अच्छा लाभ एवं सुख प्राप्त होता है।

'कन्या' सप्त की बुच्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'बुघ' का फलावेश

कन्या लग्न :सप्तमभान :बुध

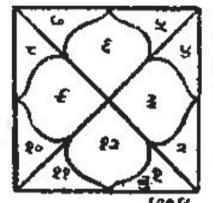


सातवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बूध' के प्रभाव से जातक अपनी पत्नी के अ्यक्तित्व के समक्ष स्वयं की कुछ हीन-सा अनुभव करता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ प्राप्त होती है।

सातवीं उच्चवृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं मानसिक सुख-गान्ति में भी कुछ कमी रहती है।

'कन्या' लग्न की बुण्डली में 'अब्टममाब' स्थित 'बुघ' का फलादेश

कत्यालग्न:अष्टमभावः बुध आठवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर

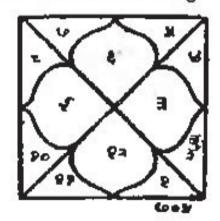


व अठव भाव म । मत 'मगल' का राश पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयां आती रहती हैं। बाहरी सम्बन्धों से आजीविका चलती रहती है।

सातवीं मित्रवृष्टि से दितीयभाव की देखनें के कारण गुप्त युक्तियों के साध्य से घन की वृद्धि होती है। ज्ञा कुटुम्ब से प्रेम रहता है।

'कत्या' लग्न की बुज्डली में 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न: नयमभाव: ब्ध

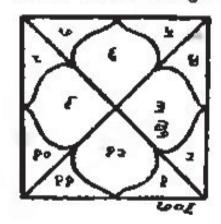


नवें भाव में मित्र 'शुक' की राक्षि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होतो है तथा राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

मातवीं मिलद्धि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होसी है। ऐसा व्यक्ति सज्जन, सुखी, यहस्वी तथा धनी होता है।

'कन्या' सन्त की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'बुद्ध' का फलादेश

कन्यालग्नः दशमभावः वृध

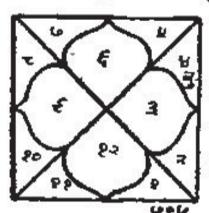


दसवें भाव में स्वक्षंत्री 'बुध' के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेद्र में अत्यधिक सफलता, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होसी है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर, यशस्वी, स्वाभिमानी तथा सुखी होता है।

सातवीं मिलद्धि से चतुर्यमाय की देखने से माता, भूमि, भवन आदि का मुख भी पर्याप्त उपलब्ध होता है। घरेलू जीवन सुख, शान्ति तथा ऐश्वर्य से पूर्ण रहता है।

'कन्या' लग्न की बुष्डली में 'एकारशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : बुध



म्यारहवें भाव में शतु 'चन्द्रमा' की राजि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी

रहती है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेद्र में भी सफलताएँ प्राप्त होती है। खारीरिक सीन्दर्य, मनोदल

एवं सुख में भी वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रचममाव की देखने से जातक को विद्या, वृद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में भी विशेष उन्नति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, विद्वान् नया ऐश्वयंशाली होता है।

'कम्या' सप्त की कुण्डली में 'द्वादशमाव' स्थित 'बुद्ध' का फलादेश

कत्या लग्नः द्वादेशभावः बुध

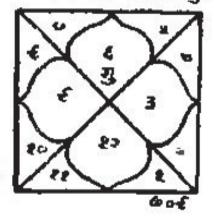
बारहर्वे भाव में मिन्न 'सूयें' की राणि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। परन्तु पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष रहता है।

सातवीं मिलदूष्टि से षष्ठभाव की देखने से शतु-पक्ष पर सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति दूरदर्शी, विवेकी तथा बुद्धिमान् होता है।

'कन्या' लग्न में 'गुरु'

'कन्या' लाम की कुंच्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'गुढ' का फलादेश

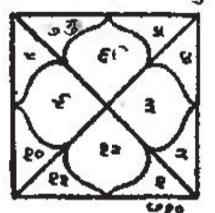
कन्या लग्न : प्रथमभाव : बुद्र



पहले भाव में मित 'बुध' की राणि पर स्थित
'गुर' के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ शारीरिक सौन्दर्य एवं
स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। माता, भूमि तथा भवत का
सुख भी मिलता है। पाँचवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को
देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कठिनाइयां
आती रहती हैं। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव
को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख मिलता
है। नवीं शब्द दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति
एवं धर्म के क्षेत्र में वाधाएँ आती रहती हैं। परन्तु ऐसा
व्यक्ति सज्जन तथा धनी होता है।

'कन्या' लम्म की कुष्यली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'गुरु' का कुलावेश

कन्यास्तरनः द्वितीयभावः बुद्य



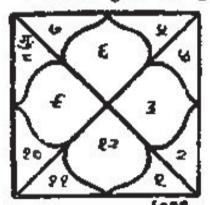
दूसरे भाव में सामान्य शतु 'शुक' की राशि पर स्थित 'शुक' के प्रभाव से जातक की धन, कुटुम्ब का सुख मिलता है, परन्तु माता एवं स्त्री के सुख में कुछ बाधाएं आती हैं जबकि व्यवसाय-पक्ष की उन्नति होसी है। पौषवीं शतु-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से शतु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाष को देखने से आयु तथा पुरातस्य का लाभ होता है। नवीं मित्र-

दृष्टि से एकादशमाय की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में साभ, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'कन्या' सन्त की कुण्डली के 'सृतीयमाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्नः तृतीयभावः गुरु



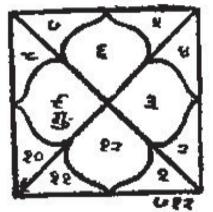
तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित
'गुर' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के
मुख में वृद्धि होती है और माता, भूमि तथा भवन का
मुख भी प्राप्त होता है। पीचवीं दृष्टि से स्वराशि में
सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में
भी सफलताएँ मिन्नती हैं। स्त्री सुन्दर मिलती है।

सातवीं शतु-वृष्टिसे नवमभाव की देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ इकावटों के ताथ उन्नति होती

है। नवीं उच्चवृष्टि से एकादणभाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है। ऐसा जातक धनी तथा सुखी रहता है।

'कन्या' लज्न की कुष्पसी से 'चतुर्यमाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या*लग्न*ः चतुर्यभावः बुध



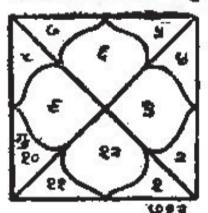
भीर्य भाव में स्वक्षेत्री 'गुक' के प्रभाव से आतक को माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती है।

पांचवीं मिल-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातस्य का लाभ होता है। सातवीं मिल-दृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं अयवसाय के क्षेत्र में सफलताएं मिलती रहती है।

नवीं मिल-कृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में लाभ मिनता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'यंचमभाव' स्थित 'गुर्व' का फलावेश

कन्या लग्न : संचमभाव : गुरु

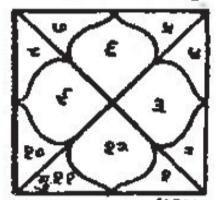


पौचर्वे भाव में मलु 'सनि' की राशि पर मीच के गुढ़ के प्रभाव से जातक की सन्तान पक्ष से कच्ट मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि में कमी रहती है। मालु-पक्ष भी कमजोर रहता है। पाँचवी मलु-दृष्टि से नवम-भाव की देखने से भाग्य एवं धमें की सामान्य वृद्धि होती है। सातवीं उच्च-दृष्टि से एकादभभाव की देखने से आमदनी में वृद्धि होती है तथा नवीं मिल-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक, समित, सम्मान, प्रभाव एवं काय-कुशनता में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी

सथ: सामान्य धनी होता है।

'कन्या' लग्न की कुष्पसी के 'वष्ठप्राव' स्थित 'गुर' का फलावेश

कन्या लग्न । षष्ठभाव : गुरु



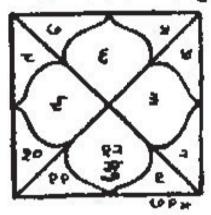
छठे भाव में शतु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुढ' के प्रभाव से जातक शतु-पक्ष में नश्रता से काम निकालता है। माता, भूमि एवं भवन के सुख में भी कमी रहती है। पॉचवीं मित्र-दृष्टि से देशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ सफलताओं, सुख तथा यह की प्राप्ति होसी है।

सातवीं मिल-कृष्टि से द्वादणभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संवेदों से लाम

होता है। नवीं शतु-वृष्टि से दितीयभाव को देखने से कुटुम्य का सामान्य सुख मिलता है तथा धन-संचय के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

'कन्या' लब्न की कुण्डली के 'सप्तममाव' स्थित 'गुर्व' का फलादेश

कन्या लग्नः सप्तमभावः गुरु



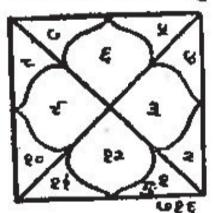
सातवें भाव में स्वक्षेत्री 'गुरु' के प्रभाव से जातक को स्त्री एवं व्यवसाय-पक्ष में पर्याप्त लाभ मिलता है। माता, भूमि तथा मकान का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। पौचवीं उच्चवृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी में बहुत वृद्धि होती है।

सातवीं मिल-वृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक-सुख, मान एवं सौन्दर्थ की प्राप्ति होती है। नवीं मिल-वृष्टि से शृतीयभाव को देखने से शाई-वहिनों के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति

सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डलों के 'अष्टममाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्नः अष्टमभावः गुरु



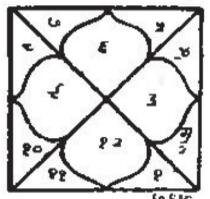
आठवें भाव में मित 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। परन्तु स्त्री तथा क्यवंसाय के संख में कुछ कमी आती है।

पौचनीं मिल-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। सातनी शलु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कौटुम्बिक सुख में भी कभी आती है। नेवीं दृष्टि से

स्वराशि में चतुर्वभाव की देखने से माता, श्रुमि तथा भवन का सुख कुछ प्रेशानियों के साथ मिलता है।

'कन्या' संग्न की कुण्डली के 'नवममान' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्यां लग्नः नवसभावः गुरु

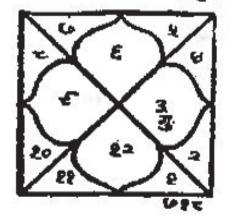


नवें भाव में शतु 'शुक' की राशि पर स्थित'
'गुर' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। स्त्री तथा व्यथसाय के क्षेत्र में भी कुछ
कमी रहती है, परन्तु माता, भूमि तथा भवन का सुख
प्राप्त होता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को
देखने से मुख-सम्मान की वृद्धि होती है तथा भ्रोगेच्छा
प्रवल रहती है।

सातवीं मित-वृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिन के मुख तथा पराकम में वृद्धि होती है। नवीं नीच-दृष्टि से पंचमनाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कमजोरी आती है।

'कन्या' लम्म की कृष्डली के 'दशमभाव' स्थत 'गुरु' का कलादेश

कन्या लग्न : दश्यभाव : गुरु



दसवें भाव में मित 'बुघ' की राजि पर स्थित 'गुर' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य सथा व्यव-साय से लाभ होता है। स्त्री सुन्दर सथा प्रभावशाली भिलती है। पाँचवीं शतु-वृष्टि से द्वितीयमाव को देखने से घन, कुट्म्ब का सामान्य लाभ हाता है।

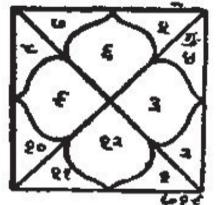
सातवीं दृष्टि अपनी राशि में चतुर्थभाव की देखसे ने माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ मुख मिलता है।

नवीं शतु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण

गतु-पक्त में शान्ति-नीति से विजय मिलती है तथा उससे लाभ भी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का श्वलादेश

कन्या लग्न: एकादशमाव: गुरु ग्यारहवें भाव में मित्र 'धन्द्रमा' की राणि पर



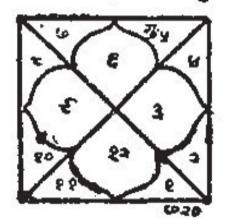
स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदनी बढ़ती है तथा माता, भूमि एवं भकान का यथेष्ट सुख भी मिलता है। पाँचवीं मिद्रबृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से परेशानी रहंती है तथा विद्या-बुद्धि में कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में मप्तम भाव की देखने से सुन्दर तथा योग्य पत्नी मिलती है। भोगादि का

खेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में भी उन्नति होती है।

'कन्या' लग्न की कुच्चली में 'द्वादशभाव' स्थित 'गुर' का फलादेश

कन्या नग्न : द्वादशभाव : गुरु



बारहवें भाव में मित 'सूयें' की राशि पर स्थित 'गुर' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से साभ भी मिलता है। स्त्री के सुख में कमी आती है। याँचवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख मिलता है।

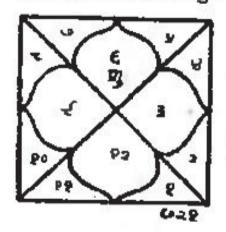
सातवीं सबुद्धि से षष्टमाव की देखने से शबु पक्ष में नम्रता से काम निकालना पड़ता है। नवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव की देखने से आयु तथा

पुरातत्त्व का लाम होता है। ऐसा जातक सामान्यतः सुखी जीवन विवासा है।

'कन्या' लन में 'शुक'

'कत्या' सप्त की कुण्डली में 'प्रथमचाव' स्थित 'सुक' का फलावेश

कस्या लग्नः अथमभावः शुक्र



पहले भाव में मित 'बुघ' की राशि पर स्थित मीच के 'शुक' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कभी रहती है और वह अधमैं-पूर्वक भी धन कमाने का प्रयत्न करता है।

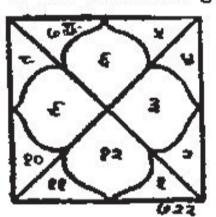
सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तम भाव की देखने से स्त्री सुन्दर तथा भाग्यदान् मिलती है तथा व्यवसाय एवं भोगादि में भी पर्याप्त सफलता प्राप्त होती है।

'कत्या' सन्त की कुष्पती में 'ब्रितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

क्षन्यालग्नः द्वितीयभावः शुक्रं दूसरे भाव में स्वराशि स्थित शुक्रं के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। वह

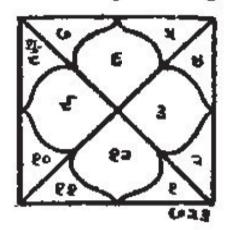
भाग्यवान्, यशस्त्री तथा धर्मात्मा भी होता है।

सातवीं शतुवृष्टि से अष्टम भाव की देखने से जातक की आयु तथा पुरातस्य का भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, भनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।



कन्या' सप्त की कुण्डली में 'सृतीयमाव' स्थित 'सुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

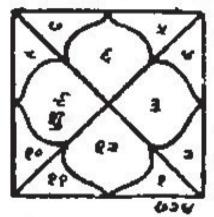


तीसरे भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक' के प्रभाव से जातक की भाई-वहिन का अच्छा सुख मिलता है तथा पराक्ष्म में भी वृद्धि होती है। कौटुम्बिक सुख की भी वह बढ़ाता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले नवमभाव की देखने से भाग्य तथा धर्म में बहुत कृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बहुत सुखी, धनी, धर्मातमा तथा भाग्यशाली होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डलों में 'चतुर्वमाव' स्थित 'शुक्र' का कलावेस

कन्या लग्न : चतुर्थं भाव : शुक्र

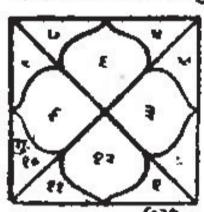


क वीचे भाव में शत्यु 'गुरु' की राशि पर स्थित गुक्त' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट लाम होता है तथा धन एवं कुटुम्ब का मुख भी मिलता है।

सातवीं मित्रवृष्टि से दशमभाव की देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पासन भी करता है।

'कमा' लग्न की कुण्डली में 'बंचमजाब' स्थित 'सुफ' का फलावेश

कन्या सन्न : पंचमभाव : शुक्र

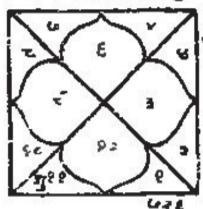


क पाँचवें भाव में मित 'शनि' की राशि पर स्थित सुक के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से खेड लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि की बुद्धि से साथ धन, धर्म नथा भाग्य की बुद्धि भी होती है।

सातवीं शृज्दृष्टि से एकादशभाव को देखते से जानक अपनी बुद्धि एवं भाषुर्य के बल पर आमदनी की इट्रांसा है सथा निरन्तर जन्नति करता रहता है।

'कत्या' लव्न की हूं इसी में 'वष्ठमाव' स्थित 'शुक्र' का फसाबेस

कन्या लग्न : एष्ठभाव : श्रुक

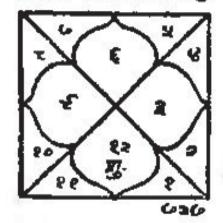


छठे माय में मिल 'मिन' की राशि पर स्थित 'शुक' के प्रभाव से जातक के भाग्य, घन तथा कौटुम्बिक' मुख में कुछ कमी आती है तथा धर्म में भी अरुचि रहती है, फिर भी वह अपनी चतुराई द्वारा भाग्य तथा घन की वृद्धि करता है तथा परिश्रम द्वारा शक्षु-पक्ष में सफलताएँ पाता है। उसे झगड़े-मुकदमों से भी साथ होता है।

सातवी शब्दुष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्ष अधिक रहता है तथा वाहरी संबंधों से सुख एवं साभ की प्राप्ति होती है।

'कन्या' लज की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

कन्याः लग्नः सप्तमभावः शुक्र

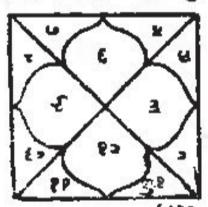


सातंबें भाव में सामान्य शत्रु 'गुरु' की राजि पर स्थित उच्च के 'शुक्त' के प्रभाव से जातक की सुन्दर म्ही मिलती है तथा व्यवसाय के झेंद्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति भोगी, धर्मात्मा, सुखी तथा भाग्यवान् होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य से कुछ कमी आती है। ऐसा व्यक्ति अन-वृद्धि के लिए शारीरिक सुखों की चिन्ता नहीं करता।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अव्दमसाव' स्थित 'सुक' का फुलादेश

कत्या लग्नः अष्टमभावः शुक

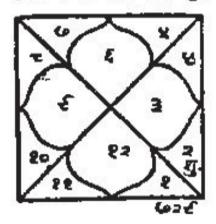


आठवें भाव में शतु 'मंगल' की राजि पर स्थित 'सुक' के प्रभाव से जातक का भाग्य कमजोर रहता है तथा धन-संक्य में भी कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का समुचित पालन भी नहीं हो पाता। पर आगु तथा पुरातस्य का लाभ होता है।

सातवीं मीच दृष्टि से स्वराशि वाले द्वितीय भाव की देखने से जातक गुप्त चातुर्य एवं कठौर परिश्रम द्वारा धन-संचय करता है।

'कत्या' साम की कृष्टली में 'सवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

क्त्या लग्नः नवमभावः शुक्र

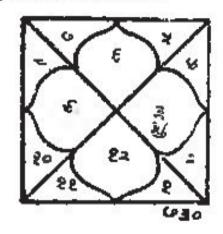


नवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक वडा भाग्यशाली तथा धर्मात्मा होता है। उसके धन, सम्मान तथा यश में भी वृद्धि होती है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों की ग्रान्ति तथा पुरुषार्थ में वृद्धि होती है। साथ ही धन एव कुटुम्ब का पूर्ण सुख भी मिलता है।

'कम्या' लग्न की कुण्डली में 'वशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कत्या लग्नः दशमभावः

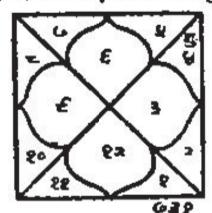


दसर्वे भाष में मिस 'बुध' की राशि पर स्थित शुक्र' के प्रमाद से जातक को पिता, राज्य तथा 'व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सुख, सम्मान सथा संफलताएँ प्राप्त होती हैं। वह अपने अच्छे कमों से धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है।

सातवीं सामान्य शतुदृष्टि [से चतुर्यभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

'क्ल्या' लग्न की कुण्डली-में 'एकादशमाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कत्या लग्न : एकादशभाव : शुक्र



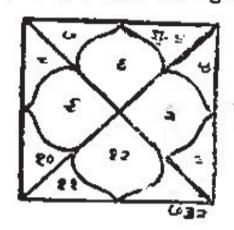
ग्यारहर्वे भाव में शतू 'जन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'गुक्ष' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। वह धनी, कुटुम्बवाला, धर्मात्मा. भाग्यभाली तथा न्यायी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है तथा सन्तान-पक्ष में सुख मिलता है।

ऐसा व्यक्ति प्रभावयुक्त वाणी का उनी. चतुर. निपुण, सुखी तथा यहस्त्री हो है

'कम्या' सम्म की कुण्डली से द्वावशयाब' स्थित 'शुक' का फलादेश

कन्या लग्न : हादशभाव : शुक्र



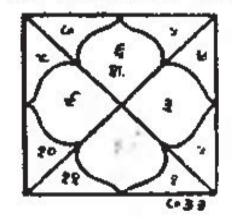
बारहवे भाव में मन्नू 'सूर्य' की राणि पर स्थित शुक्र' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, बाहरी सम्बन्धों से हानि होती है, धन-सच्य नहीं हो पाता सथा भाग्योग्नित में व्यवधान पड़ना है! कौटुम्बिक सुख में भी कभी रहती है।

सातवी मित्रदृष्टि से पष्ठभाव को देखने से शत्र-पक्ष एव झगड़े-मुकद्मों में सफलना एव लाभ की प्राप्ति होती है।

'कन्या सन्त में 'शनि'

'कन्या' सम्म की कृष्डली में 'प्रथमभाव स्थित 'शनि' का फलादेश

क्षत्या सरद : प्रथमभाव : शनि

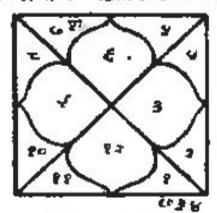


पहले भाव में मिस 'बुध' की राशि पर मिश्रत 'शनि' के प्रभाव से जातक का शरीर रोगी रहता है। विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का सुख प्रप्त होता है, परन्तु सन्तान से बैमनस्य रहता है। शतु-।स पर विजय मिलती है। तीसरी शतुद्धि से तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिनों के सुख में कुछ कृमी रहती है। सातवीं शतुद्धि से सप्तमभाव का देखने से स्त्री से कुछ बैमनस्य रहता है नथा व्यवसाय के क्षत्र में अधिक मेहनत करनी प्रशी

ह । इसनीं मिल्लदृष्टि में दणमभाव को देखने से पिता की ओर में सामान्य परेशानी रहनी है तथ राज्य एवं व्यापार के क्षेत्र में मफलता मिलती है।

कन्या' लग्न की कुण्डली में 'हितीयमाध' स्थित 'शनि का फलादेस

क्ता स्था तथा दितीयभाव । शनि



दूसरे भाव में मिक्ष 'शुक्र की राशि पर स्थित 'शिन के प्रभाव से जातक विद्या-बुद्धि का सुख प्राप्त करता है तथा संन्तान से वैमनस्य रहता है।

तीसरं! शतुद्धि से चतुर्यभाव को देखने से माता भूभि तथा भवन के सुख में कभी आती है।

सातवीं नीच दृष्टि से अष्टमधान की देखने

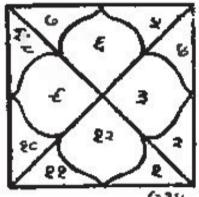
से अध्य तथा पुरातत्त्व को कुछ हानि होती है।

दसनी शतू-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता

मिलनी है। रोगा व्यक्ति प्रायेश क्षेत्र या संवर्षशील रहता है तथा शतू-पक्ष पर विजय प्राप्त करना है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्यान्तरनः तृतीयभावः शनि



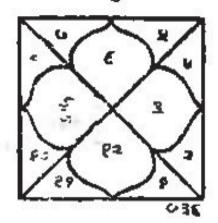
तीनरे भाव में शतु मगत' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की भाई-यहिनों से परेशानी रहती है. पर अवपक्ष पर विजय मिलती है और पराक्रम की वृद्धि होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराणि के पचमभाव को देखने सं विद्या-धुद्धि का लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष मे सामान्य कठिनाइयां आसी हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति होती है। दसवीं शजूद्धि से द्वादशभाव की देखने से खर्च

में कठिनाई का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से असन्तोप रहता है।

'कत्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्वमाच' स्थित 'शनि' का फलावेश

मन्या लग्न : चतुर्थभाव : श्रानि



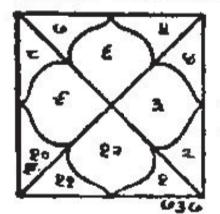
चीये भाव में शतु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कभी रहती है तथा सन्तान के पक्ष से भी परेशानी रहती है. परन्तु विद्या-बुद्धि का लाभ होता है। तीसरीदृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव की देखने से शब्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़ों से सुख-दु:ख दोनों ही मिलते हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से हैपिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र मे परिश्रम द्वारा

सकलता मिलती है। दसवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव की देखने से परिश्रम एवं प्रभाव की वृद्धि होती है, परन्तु भरीर कुछ अस्वस्थ बना रहता है।

'कन्या' लप्त की कुण्डली में 'यंचममाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

पाँचवें भाव में स्वराणि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से क्रन्या लग्न : पंचमभाव : शनि



आतक की कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का साभ होता है, परन्तु सन्तान से कुछ परेशानी भी होती है। शतु-पक्ष में उसे गुप्त युक्तियों से विजय मिनती है। तीसरी शबुद्धिः सेसप्तमभाव की देखने से स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं शतु-दृष्टि से एकादभगाव की देखने से

परिश्रम द्वारा लाम होता है। दसवीं उच्च दृष्टि से द्वितीय भाव की देखने से धन-कुटुम्ब की धृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण सुखी-सम्पन्न जीवन बिताता है।

'क्न्या' सन्त की कुण्डली में 'बष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्नः षष्ठभावः शन्ति

छठे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक शतु-पक्ष पर अपने बुद्धि-वल से सफलता पाता है, परन्तु विद्या एवं सन्तान के पक्ष में सामान्य कठिनाइयां आती हैं। तीसरी नीच दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु पर अनेक बार संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि होती है।

सातवीं भानु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है, तथा बाहरी सम्बन्ध भी सुखद

नहीं रहते । इसवीं शतु-वृष्टि से तृतीय भाव की देखने से भाई-वहिनों द्वारा कष्ट मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है ।

'कृत्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमकाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कत्यालग्नः सप्तमभावः सनि

23

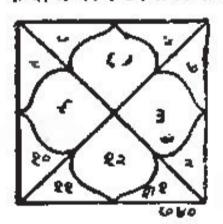
ति सातवें भाव में शतु 'गुर' की राशि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा मुखेन्द्रिय में विकार श्री होता है। सन्तान के पक्ष से श्री परेशाणी रहती है, परन्तु शतु-पक्ष में सफलता मिलती है। तासरी मिक्ष-दृष्टि से नवम भाव की देखने से जातक बुद्ध-बल द्वारा भाग्योन्निट करता हुना सर्म का पालन श्री करता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से प्रथम भाग से देखने से शरीर में रोग रहता है, परन्तु प्रभाव की वृद्धि होती है।

दसवीं शतु-दृष्टि से चतुर्य भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी आती है। ऐसा जातक अपने जन्म-स्थान में परेशानी का अनुभव करता है।

'कन्या' सन्त की कुण्डली में 'अष्टममाव' स्थित 'शनि' का फलावेश

कन्या लग्न:अष्टमभाव: शनि



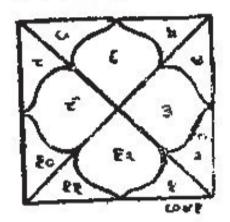
आठवें भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक की आयु पर अनेक बॉर संकट आते हैं 'या पुरातत्त्व की हानि होती है। तीमरी दृष्टि से स्वराणि के दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य-पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, किन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में बुद्ध-बल से सामान्य सफलता मिलती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-सचय के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है। दसवीं दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से

कष्ट होता है। विद्या कम रहती है परन्तु चातुर्य अधिक होता है।

'कन्या' लान की कुण्डली में 'नवसमाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्याल्यतः नवसभावः सनि



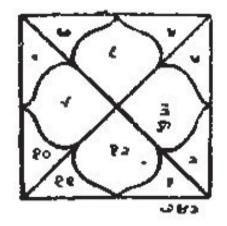
नवें भाग में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित
'शिन' के प्रभाव से जातक बुद्धि-बल से भाग्योन्निति
करता तथा स्वधमें का सामान्य परिपालन करता है।
संतान तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है।
सीसरी शतु-वृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी
के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य पहता है। दसवीं दृष्टि से स्वराणि के बण्ठ-

भाव को देखने से शतु-पक्ष में विजय मिलती है तथा झगड़ों से साथ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा चतुर, नीतिज्ञ. प्रभावशाली तथा हिम्मती होता है।

'कन्या' सप्त को कुछ सी में 'बसमधाव' स्थित 'शर्ति' का फलादेश

कत्या लम्न : दशमभाव : सनि



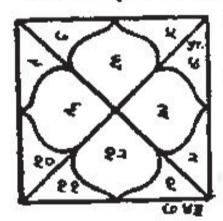
दसवें भाव में मिक्ष 'बुघ' की राशि पर स्थित शिन के प्रभाव से जातक की पिता-पक्ष से परेशानी रहती है, परन्तु राज्य-पक्ष से सम्मान एवं व्यवसाय-पक्ष से लाभ होता है। विद्या तथा सन्तान का भी सुख मिलता है। तीसरी शबु-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च के मामले में असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी सुख्यायी नहीं रहता।

सातवीं शतू-वृटि से चतुर्यमाय को देखने से माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी रहती है। दसवीं

शवु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कभी आती है तथा वैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कठिन परिश्रम से ही सफलता मिलती है।

'कन्या' लग्न की कुम्बली में 'एकावशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादश्रमाव : स्रीन



नि ग्यारहवें भाव भें शतु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में खूब वृद्धि होती है तथा शतु-पक्ष से भी साथ होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में रोग रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि में पंचमभाव की देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि की शक्ति प्राप्त होती है। दसवीं नीच-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व की हानि होती है तथा आयु पर भी अनेक संकट बाते हैं।

'कन्धा' लग्न की कृष्डली में 'द्वादशमाव' में स्थित 'शनि' का कलादेश

कन्या सन्न : द्वादशभाव : क्षति वारहवें साव र

त बारहवें साथ में शतु 'सूर्य' की राणि पर स्थित 'शित' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से परेशानी रहती है। तीसरी उच्च-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुग्ब की दृद्धि विशेष प्रयत्न करने से होती है।

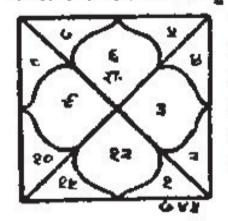
सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव की देखने से शतु-पक्ष पर प्रभाव रहता है, परन्तु रोगादि से कुछ कष्ट होता है। दसवीं मिल-दृष्टि से नदमभाव को देखने से बुद्धि-योग द्वारा भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म

में रुचि भी रहती है। ऐसा व्यक्ति शान-शौकत में खूब खर्च करता है।

'कन्या' लग्न में 'राहु'

'कत्या' लान की कुण्डली में 'प्रथमधाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

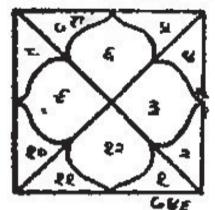
कत्या लग्न: प्रथमभाव: राहु यहले भाव में मित्र 'द



यहले भाव में मिन्न 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शारीरिक दृष्टि से शक्ति-भानी, दुइ सनीयल बाला सथा स्वाभिमानी होता है, परन्तु कभी-कभी उसे शारीरिक कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। वह गहरी सून-बूझ बाला सथा कठोर परिश्रमी होता है। मानसिक रूप से चिन्तित रहते हुए भी बड़े धैर्य से काम लेकर उन्नति करता है।

'कन्या' सन्न की कुष्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

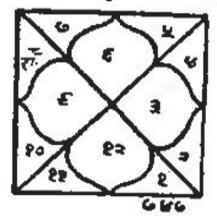
कत्या लग्नः द्वितीयभावः राहु



दूसरे बाव में मिल 'शुक' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक धन-कुटुम्ब की खोर से परे-बान रहता है। वह गुप्त प्रयत्न तथा कठिन परित्रम द्वारा कुछ धन-संचय भी करता है तथा संकट रूप में धनवान् भी समझा जाता है। कभी-कभी उसे अस्किस्मिक लाभ तथा हानि—दोनों ही होते हैं।

कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्यालग्नः तृतीयभावः राहु

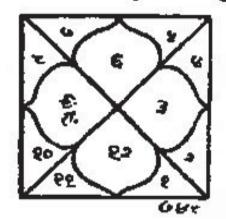


तीसरे भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से परेशानी मिलती है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों एवं हिम्पत के बल पर सफलता प्राप्त करता है तथा स्वार्थ-सिद्धि के लिए भने-बुरे का विभार नहीं करता।

'कन्या' लग्न की कुम्बली में 'बतुर्वभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कस्या लग्नः चतुर्थभावः राहु



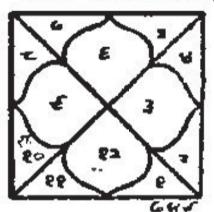
चौथे भाव में शतु 'शुर' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को माता का अच्छा सुख मिलता है, परन्तु भूमि, भवन एवं घरेलू सुख में कमी रहती है। घरेलू कारणों से कमी-कभी घोर संकटों का मामना भी करना पड़ता है। परदेश में रहने का योग भी उपस्थित होता है। जल्म-भूमि में उसे दुःख मिलता है, परन्तु बाहरी स्थाव में सुख प्राप्त होता है।

'कन्या' लग्न की कुम्बली में 'यंचममाव' स्थित 'राहु' का कलादेश

कन्या सम्न: पंचमभाव: राहुं पाँचवें भाव में मिक्ष 'शनि' की राशि पर स्थित राहुं के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से अब्द

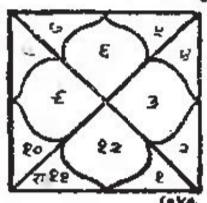
मिलता है तथा विचा के क्षेत्र में कठिनाइयाँ अती हैं।

ऐसा व्यक्ति विद्वान् न होने पर भी बातें करने में वड़ा चतुर होता है तथा खपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए सत्यासत्य का विचार भी नहीं करता। कमी-कमी उसे चिन्ताएँ भी परेशान करती रहती हैं।



'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'बष्ठमाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

कन्या लग्नः धष्ठभावः राहु

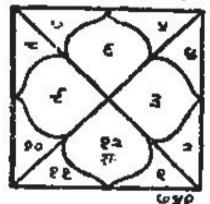


छठे भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शतु-पक्ष पर प्रभावशाली रहता है तथा झगड़ों एवं संकटों के समय हिम्मत तथा धैर्य से काम लेकर, अपनी कमजोरी को प्रकट नहीं होने देता।

वह कठिन संकथों के समय भी विचलित नहीं होता और उन पर अपनी गुप्त युक्तियों द्वारा नियन्त्रण पालेता है।

'कन्या' लान की कुच्छली में 'सप्तमशाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव: राह

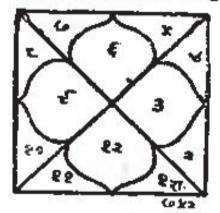


सातवें भाव में शतु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की स्ती-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। उसकी मूत्रेन्द्रिय में विकार भी ही सकता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर ही अपना काम चलाता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अध्यमभाष' स्थित 'राहु' का फलावेश

कन्यालग्नः अष्टमभावः राह

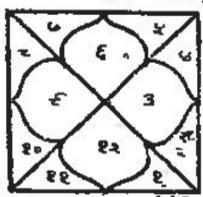


आठवें साथ में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को जीवन में अनेक बार खतरों का सामना करना पड़ता है तथा मृत्यु-तुल्य कष्ट भी भोगने पड़ते हैं। उसके पेट में भी विकार रहता है।

गुप्त गुक्तियों, धैर्य तथा साहस के बल पर वह आगे बढ़ता है। उसे चिन्ताएँ तथा परेशानियां हमेशा घेरे रहती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवममार्च' स्थित 'राष्ट्र' का फलावेश

कन्या लग्नः नवसभावः राह

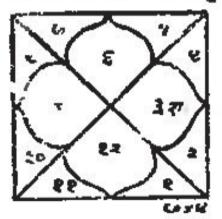


नवें भाव में मिल 'शु%' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक अपनी भाग्योन्नति के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा धर्म का उचित मालन नहीं कर पाता।

कभी-कभी उसे भाग्य के विषय में घोर सकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्तियों, धैयं तथा साहस के बल पर ही थोड़ी बहुत उन्तित कर पाता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

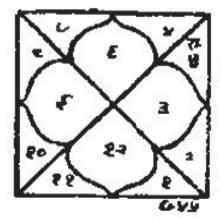
कन्या लग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाग में मित्र 'वुध' की राशि पर स्थित उच्च 'राहु' के प्रभाव से जातक अपने पिता के साम संघर्ष करता हुआ उन्तित करता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे गुप्त युक्ति एवं चातुर्य के बल पर ही सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। कमी-कभी सकट भी बाते हैं, परन्तु फिर स्थिति ठीक ही आती है।

'कन्या' लग्न की कुच्छली में 'एकादशमाब' स्थित 'राहु' का फलादेश

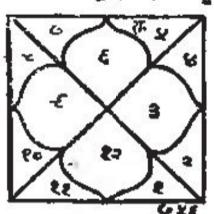
कस्था लग्न : एकादशमाव : शह



राहु ग्यारहवें भाव में शतू 'चन्द्रमा' की राजि पर रिधत 'शहु' के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है, परन्तु कठिनाइयों का सामना भी बहुत करना पड़ता है। उसे कभी बहुत लाभ तो कमी बहुत घाटा होता है। वह अपनी गुप्त गुक्तियों, धैर्य, साहस सथा परिश्रम के सहारे लाभ उठाता है, परन्तु कमी-कभी धीखा भी खा जाता है।

'कन्या' सन्त की कुच्छली में 'द्वादशमाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कत्या लग्न : द्वादशभाव : राह



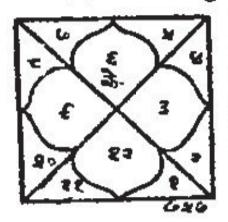
बारहवें भाव में शतू 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को खर्च-सभ्बन्धी कठिनाइयाँ बहुत रहती है तथा बाहरी सम्पर्कों से भी कष्ट होता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त शुक्तियों, धैर्य, साहस तथा परित्रम के सहारे अपना खर्च चलाता है। कमी-कभी उसे आकस्मिक अन-लाभ भी हो जाता है।

'कन्या' लग्न में 'केतु'

'कत्या' लग्न की कुष्डली में 'प्रयममाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

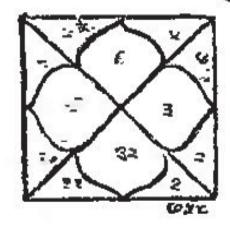
कन्या लग्न : प्रथमभाव : केतु



पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के 'प्रभाव से जातक को शारीरिक कब्ट एवं विन्ताओं का सामना करना पड़ता है। अरीर पर कोई यहरी और खगने अथवा रोग होने का योग भी बनता है। शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त गुक्तियों वाला, हिम्मसी, धैयंवान् तथा अक्खड़ स्वभाव का होता है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'डितीयमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : केत्र

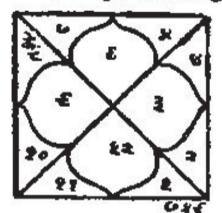


दूसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से आतक के धन तथा कीटुम्बिक सुख में कभी आती है। कभी-कभी आकस्मिक उन-हानि भी होती है तो कमी-कमी आकस्मिक रूप से धन-लाभ भी हो जाता है।

ऐसा व्यक्ति धन की वृद्धि के लिए अथक परिश्रम करता है, तथा हर समय परेशान बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'शुलीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या स्वय्नः तृतीयभावः केतु

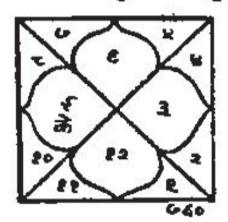


तीसरे भाव में शतु 'मगल' की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से आतक के पराक्रम की अत्यिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से परेशानी मिलती है।

ऐसा व्यक्ति सकट के समय भी हिम्मत नहीं हारता तथा अपने ही बाहु-बल का भरोसा रखता है। वह कठिन परिश्रमी भी होता है।

'कन्या' लग्न की कुष्णली में 'खतुर्थकार्थ' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्यासम्बः चतुर्थभावः केतु

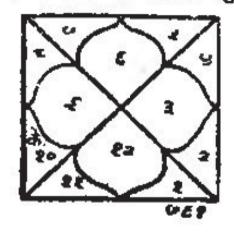


चौषे भाव में शतु 'गुरु' को राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। घरेलू जीवन ठाठदार होता है। इसके लिए उसे विशेश परिश्रम भी करना पडता है।

कभी-कभी घरेलू सुख में संकट भी आता है और कभी सुख में वृद्धि भी हो जाती है।

'कन्या' लग्न की कुष्पली में 'यंचमभाव' स्थित 'केंतु' का फलादेश

कन्या लग्न : पचमभाव : केतु

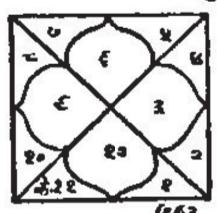


पाँचवें भाव में मिल 'सनि' को राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से चिन्ता रहती है तथा विद्या-प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी विद्या-बुद्धि में कभी की स्वयं अनुभव करता है, परन्तु फिर भी स्वयं की वड़ा समझदार लगा योग्य प्रदर्शित करता है। वह बातचीत में बड़ा तेज होता है।

'कथा' लग्न की कुच्छली में 'बष्ठभाव' स्थित 'केंतु' का फलादेश

कन्यः लग्न : यष्ठभाव : केतु

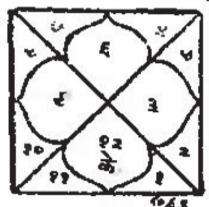


छठे भाव में मिल 'शिन' की राशि पर स्पित 'केतु' के प्रभाव से जातक शतु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है। उसे ननसाल-पक्ष से परेशानी उठानी पहती है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा धैयंवान्, गुप्त युक्तियों बाला, बहादुर, निर्भय तथा अक्खड़ स्वभावका होता है और इन्हीं विशेषताओं के कारण अपना काम बना लेने में सफलता भी प्राप्त करता है।

'कन्या' लम्म को कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'केंतु' का फलादेश

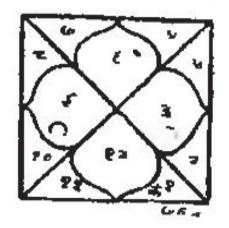
कन्यालग्न : सप्तमभाव : केतु



सातवें भाव में शतु 'गुरु' को राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से कब्ट मिलता है तया व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठि-नाइयाँ जाती हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्ति, क्षेयं-तथा साहस के दल पर उनके निराकरण का प्रयत्न करता है। उसका गृहस्थ-जीवन बड़ी कठिनाइयों से सफल बनता है। उसकी मूतेन्द्रिय में विकार होने की संभावना भी रहती है।

'कत्या' लग्न की कुँवली में 'अष्टमधार्च' स्थित 'केतु' का फलादेश

कत्यालग्न : अष्टमभाव : केतु

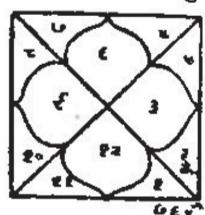


आठवें भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के जीवन में अनेक बार प्राणान्तक कव्ट उपस्थित होता है तथा पुरातस्व की हानि भी होती है। उसके पेट में भी विकार रहता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, कोबी, धैर्यवान्, हिम्मत तथा तेजी से काम करने वाला होता है।

'कत्या' सप्त की कुण्डली में 'नवमधाव' स्थित 'केंतु' का फलादेश

कन्यालग्न: नवमभाव: केनु

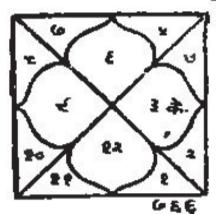


नवें भाव में मिल 'शुक्त' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से आतक की धर्म-क्षेत्र में कमी रहती है तथा भाग्योत्नति में भी बड़े संकट आते हैं।

ऐसा व्यक्ति अपने चातुर्यं, गुप्त युक्तियों, बुद्धि तथा साहस के बल पर संकटों से अपनी रक्षा करता है तथा कभी-कमी विशेष चिन्तनीय स्थितियों में होकर भी गुजरता है।

'कन्या' लग्न की कुँबसी में 'दशमभाव' स्थित 'केंतु' का फलादेश

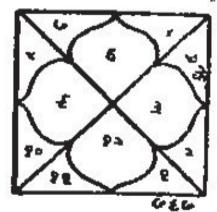
कत्याः लग्नः दशमभावः केतु



दसर्वे आव में मित्र 'वुध' की राशि पर स्पित 'केतु' के प्रभाव से जातक की पिता के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है सथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक प्रभाव स्थापित नहीं होता। उसे आव-हानि, धन-हानि आदि का शिकार बनना पड़ता है। वह झगडे-अअट सथा परेशानियों में अक्सरफंसता रहता है।

'कन्या' लम्न की कुंडली में 'एकाइसमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

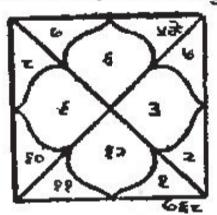
कन्याः लग्नः एकदशभावः केतु



ग्यारहवें भाव में शतु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी के साधनों में वृद्धि होती है, परन्तु उसे मानसिक-परेशानियाँ भी बहुत रहती हैं। कभी-कभी उसे संकट एवं हानि का सामना करना पड़ता है तो कभी-कभी बाकस्मिक लाभ भी होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा धैर्यवान् सथा परिश्रमी होता है।

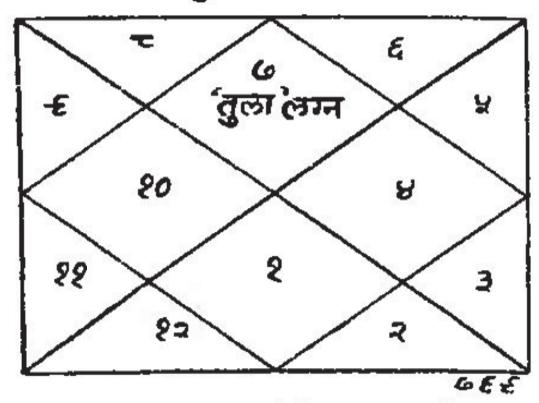
'कन्या' लग्न की कुच्छली में 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्याः लग्न : द्वादशभाव : केतु



बारहवें भाष में शतु 'सूर्य' की राशि पर स्पित 'केतु' के प्रभाद से जातक की खर्च के कारण अनेक चिन्ताओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध भी कब्टकारक सिद्ध होते हैं। वह कभी-कभी संकटों का शिकार भी अनता है, परन्तु अपने धैर्य एवं गुप्त शुक्तियों के बल पर जैसे-तैसे खुटकारा भी पा लेता है।

'तुला' लग्न



['तुला' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न मायों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'तुला' लग्न का फुलादेश

'तुला' लग्न में जन्म लेने वाला जातक गौर वर्ण, क्षिथिल शरीर तथा मोटी नाक वाला होता है। वह कफ प्रकृति वाला एवं वीयंविकारयुक्त भी होता है।

ऐसा व्यक्ति गुणी, धनी, यशस्वी, परोपकारी, प्रियवादी, सत्यवादी, सतोगुणी, सीर्थ-प्रेमी, निलींभ, व्यवसाय-कुशल, ज्योतिपी, भ्रमणशील तथा अपने कुल का भूषण होता है। वह राज्य द्वारा सम्मानित, देव-पूजन में चित्त लगानेवाला तथा पर-स्त्रियों से प्रेम रखने वाला भी होता है।

'तुला' लग्न में जन्म लेने बाले जातक की वरनी बारणिक अवस्था में दुःख धीगना पड़ता है, मध्यमावस्था में दह सुख प्राप्त करता है तथा बन्तिमावस्था सामान्य स्थिति में बीहती है।

'तुला' लग्न के आतक का भाग्योदय ३१ अथवा ३२ वर्ष की आयु में होता है।

'तुला' सन्त बालों की अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावा में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७० से ८७७ के दोच देखना शाहिए।

गोचर-कुण्डली से ब्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखे, इसे आगे लिसे अनुसार समझ लेना शाहिए।

'तुला' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७० से ७६१ के बीच देखना चाहिए।

र---'तुला' लग्न बालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न वालों में स्थित 'सूर्य' का बस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

चित्त महीते में 'सूर्य'--

- (क) 'भेष' राणि पर हो तो संख्या ७७०
- (ख) 'ब्व' राणि पर हो तो संख्या ७७१
- (ग) 'मियुन' राशि पर हो तो संख्या ७७२
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७७३
- (इ) 'सिंह' राशि पर हो भी संख्या ७७४
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७७५
- (छ) 'तुला' राणि पर हो तो सक्या ७७६
- (ज) 'वृश्चिक' राणि पर हो तो संख्या ७७७
- (स) 'धनु' राणि पर हो तो संख्या ७७८
- (ङा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७७€
- (ट) 'क्रुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७८०
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संस्था ७६१

'लुला' लग्न में 'बन्द्रमा' का फलादेश

१---'लुना' लग्न वालों की अपनी जन्मकुष्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बन्द्रमा' का स्वायी फलादेश उदाहरण-कुष्डली संख्या ७८२ के ७६३ के बीच देखना-चाहिए।

२---'तुला' लग्न बालों की गोचर-कृष्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिश्वित उदाहरण-कृष्डलियों में देखना चाहिए---

बिस दिन 'चन्द्रमा'---

- (क) 'मेष' राति पर हो तो संख्या ७<२
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७५३
- (श) 'मियून' राशि पर हो तो संख्या ७६४
- (भ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७८%
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७८६
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संस्था ७६७

- (छ) 'तुला' राशियर हो तो संख्या ७६**८**
- (अ) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७६E
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संस्था ७६०
- (डा) 'सकर' राणि पर हो तो संख्या ७६१
- (ट) 'कुम्भ' राम्नि पर हो तो संख्या ७६२
- (ठ) 'मीन' रामि पर हो तो संख्या ७२३

'तुला' लग्न में 'संगल' का फलावेश

१—-'शुला' सन्त वालों को अपनी अन्यकुण्डली के विभिन्न भावों में स्वित 'मंबल' का स्थायी फलादेश संख्या उदाहरण-कृष्डली ७६४ से ८०५ के बीच देखना चाहिए।

२-- 'तुला' लग्न धावों को गोचर-कृष्डली के विभिन्न भावों में स्थित' मंगल' का अस्वायी फलादेश निम्मसिखित उदाहरण-कृष्डलियों में देखना चाहिए---

जिस बहीने में 'मंबल'---

- (क) 'मेव' राशि पर हो तो संख्या ७६४
- (ख) 'बूब' राशि पर हो तो संख्या ७६५
- (ग) 'मिथून' राशि पर हो तो संख्या ७६६
- (भ) 'ककें' राशि पर हो तो संख्या ७६७
- (क) 'सिह' राशि पर हो तो संख्या ७६=
- (च) 'कन्या' राशि पर हो ती संख्या ७६६
- (छ) 'तुला' राजि पर हो तो संख्या ६००
- (अ) 'बृश्चिक' राज्ञि पर हो सो संख्या =०१
- (झ) 'सनु' राखि पर हो तो संख्या द०२
- (क्न) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या द०३
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ५०४
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६०%

'तुला' लग्न में 'बुख' का फलाबेश

१—'तुला' सन्न वालों की अपनी जम्मकुंब्बेली के विभिन्त आयों में स्थित 'बुध' का स्वायी फलादेश उदाहरण-कुंब्बेली संख्या ८०६ से ८१७ के बीच देवना चाहिए।

२-- 'तुल!' जन्न वालों को खोचर-कृष्टली से विधिन्त भावों में स्वित 'संवव'

का अस्थायी फलादेश निम्नसिखित उदाहरण-कृष्डलियो मे देखना श्राहिए---

जिस महीने में 'बुघ'---

- (क) 'मेय' राशि पर हो तो संख्या ८०६
- (ख) 'वृष' राणि पर हो तो संख्या ५०७
- (ग) 'मिथुन' राणि पर हो तो संख्या ८०८
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ५०६
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या <१º
- (च) 'कत्या' राशि पर हो तो संख्या <११</p>
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या द१२
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या द१३
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ≒१४
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८१६
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या ८१६
- (ह) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या द१७

'तुला' सम्न में 'गुर' का फलादेश

१---'तुला' सन्त बालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुच' का स्वादी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या दश्य से दश्र के कीच देखना बाहिए।

२---'तुला' लग्न वालों की योचर-कुण्डली के विधिन्न भावों में स्थित 'गृर' का अस्यायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस वर्ष में 'बुच'---

- (क) 'मेव' राजि पर हो तो संख्या = १=
- (ख) 'बूव' राशि पर हो तो संख्या द१६
- (य) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या द२०
- (भ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या दरश
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या द२२
- (भ) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या = २३
- (छ) 'तुला' राजि पर हो तो संख्या ८२४
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो सो संख्या =२५
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या दर्६
- (ठा) 'मकर' राशि-पर हो तो संख्या ६२७
- (ट) 'कुम्भ' राजि पर हो तो संख्या **८२**८
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या दश्ट

यत

'तुला' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वासों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या द२० से द४१ के खीच देखना चाहिए।

२---'तुला' लग्न बालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्यायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए----

चित्त महीने में 'शुक'---

- (क) 'क्षेष' राणि पर हो तो संख्या =३०
- (ब) 'वूष' राशि पर हो तो संख्या = ३१
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या द३२
- (घ) 'कर्क' राजि पर हो तो संख्या द३३
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८३४
- (च) 'कन्या' रामि पर हो तो संख्यां द३४
- (छ) 'तुला' राशि पर ही तो संख्या **८३६**
- (ख) 'वृश्चिक' राणि पर हो सो संख्या ५३७
- (का) 'धनु' राणि पर हो तो संख्या **५३**५
- (का) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या बहे &
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या ६४०
- (ठ) 'मीन' राजि पर हो तो संख्यः च¥१

'तुला' सन्न में 'शनि' का फलादेश

- 'तुला' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न आवों में स्थित
 'शिन' का स्थायी फलाईस उदाहरण-कुण्डली संख्या क्षाप्त से क्ष्म के बीच देखना जाहिए।
- 'तुला' लम्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सलि' का अस्वायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए।

जिस वर्ष में 'सनि'---

- (क) 'बेच' राणि पर हो तो संख्या ८४२
- (खं) 'बूब' राशि पर हो तो संख्या द४३
- '(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या बध्ध
- (घ) 'कंक' राशि पर हो तो संख्या ६४%
- (इ) 'सिह' राणि पर हो तो संख्या व४६
- (च) 'कन्या' राजि पर हो तो संख्या ६४७

- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ब४व
- (ज) 'वृश्चिक' रामि पर हो तो संख्या ५४६
- (झ) 'धतु' राशि पर हो तो संख्या च**५०**
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या = ५१
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या नध्र
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या नध्३

'तुला' लग्न में 'राहु' का फलादेश

- १. 'तुला' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न वालों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संबंधा ८५४ से ८६४ के बीच देखना श्वाहिए।
- २. 'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'राहु' का अस्यायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना श्वाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या < ५४
- (ख) वृष' राशि पर हो तो संख्या ५५५
- (ग) 'मियुन' राशि पर हो तो संख्या ५५६
- (घ) 'ककें' राणि पर हो तो संख्या ८५७
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६५६
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८५६
- (छ) 'तुला' रामि पर हो तो संख्या **=६०**
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६६१
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या द६२
- (ठा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या न६३
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या न६¥

(ठ) भीन राणि <u>पर हो तो संख्या न्ह</u>प्र . (वृष्ट) लग्त में केतु का फलावेश

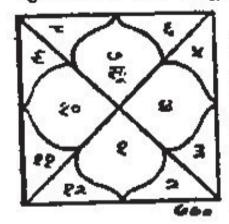
- १. 'तुला' लग्न बालों की अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्त भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६६ से ८७७ के बीच देखना श्वाहिए।
 - २. 'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्पित केंद्र'

का अस्थायी फलादेश निभ्नलिखित उदाहरण कुण्डलिग्रों में देखना चाहिए----जिस वर्ष में 'केतु'----

- (क) 'मेष' राशि पर हो सो संख्या व६६
- (ख) 'बुष' राणि पर हो तो संख्या ८३७
- (ग) 'मियुन' राशि पर हो तो संख्या ब६व
- (घ) 'कर्क' राणि पर हो तो संख्या द६६
- (छ) 'सिंह' राणि पर हो तो संख्या ८७०
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो सख्या ८७१
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८७२
- (क) 'बृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६७३
- (झा) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या वर्ध
- (ठा) 'मकर' राणि पर हो तो संख्या ५७%
- (ट) 'क्रुम्म' राशि पर हो तो संख्या **=**७६
- (ठ) 'मीन' **रानि पर** हो तो संख्या ८७७

'तुला' लग्न में 'सूर्य'

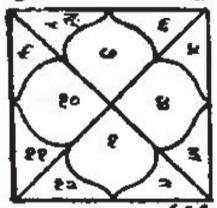
'तुला' सरन को कुण्डली के 'अयमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश तुलासरन : प्रथमभाव : सूर्य



शरीर-स्थान में अपने शतु शुक्र की राजि पर स्थित बीच के शनि के प्रभाव से जातक की शरीर में सदा दुवंलता तथा सौन्ध्यं को कभी का अनुभव होता है। वह किसी की युलामी करने में हानि समझता है। पराक्रम की भी कभी रहती है। सातवीं उच्च दृष्टि से मित्र मंगल को राशि में सप्तम भाव की देखने से स्ती पक्ष से लाभ होता है। सुन्दर स्ती गिसती है। भोग-शक्ति तथा व्यवसाय पक्ष को उन्नति होती है।

'तुला' लान की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्पत 'शूर्य' का फलादेश

सुषा लग्न : द्वितीयभाव : सूर्ये

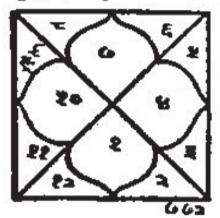


दूसरे भाव में मिल 'संगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की धन सथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है और वह धनी सथा प्रभावशाली भी होता है।

सातवीं शङ्गदृष्टि से अष्टमभाव की देखने से पुरातत्त्व तथा आयु के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है।

'तुला' सम्म की कुष्डली में 'तुतीयभाष' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला सम्न : तृतीयभाव : सूर्य

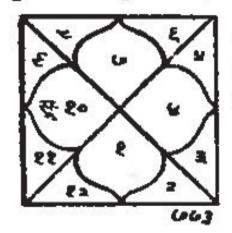


तीसरे भाव में मिझ 'शुरु' की राशि पर स्थित 'सूयें' के प्रभाव से जातक की भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने बाहु-बल का भरोसा अधिक रखता है।

सातवीं मिलदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म में कृद्धि होती है तथा आमदनी अच्छी बनी रहती है।

'तुला' लाम की कुष्डली में 'बतुर्वभाव' स्थित 'सूर्य' का दलावेश

तुला लग्नः चतुर्यभावः सूर्य

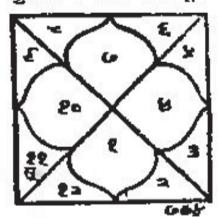


नौथे भाव में शतु 'सनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' से प्रभाव से जातक की भूमि, भवन तथा माता का अपूर्ण सुख रहता है तथा आय से पक्ष में भी कठिनाइयां आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सफलता, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'तुला' लम्न की कुण्डली में 'पंचममाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

तुला लग्न : पंचमभाव : सूर्य

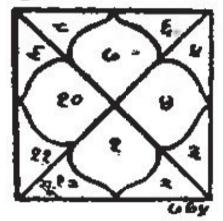


पौचरें भाव में शतु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूयें' के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से असंतोषपूर्ण साम होता है तथा विद्याध्ययन में भी बड़ी कठिनाइयों से सफसता मिसती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि के एकादण भाव को देखने से बुद्धि-योग का तथा कठिन परिश्रम द्वारा खेळ आमदनी का लाभ मिलता है, परन्तु दिमाग में कुछ परेशानियां भी रहती है।

'तुला' लग्न को कुण्डली में 'वष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुलालग्नः षष्ठभावः सूर्य

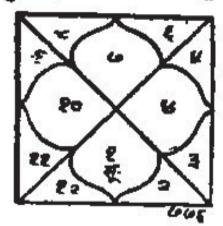


छठे भाव में मिल 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूयें' के प्रभाव से आतक को शतु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा शतुओं से लाभ भी होता है। आमदनी भी अच्छी रहती है।

सातवीं मिलदृष्टि से डादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बहादुर तथा हिम्मती होता है।

'जुला' लम्न की कुच्छली में 'सप्तमसाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सुला लग्नः सप्तमभावः सूर्य

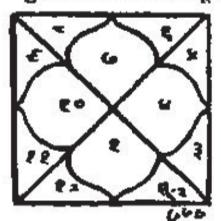


सातवें भाव में मित 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को सुन्दर पत्नी मिलती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से लाग भी खूब होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से प्रयमभाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्व तथा स्वास्थ्य में कभी रहती है तथा विस भी विन्तापस्त बना रहता है।

'तुला' सम्म की कुष्डली में 'अध्यमधाव' स्थित 'सूर्व' का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

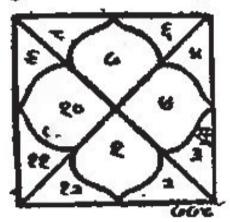


बाठवें भाव में शबु 'शुक्र' को राशि पर स्थित एकादशेश 'सूर्य' के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम से धनीपार्जन करता है तथा बाहरी सम्बन्धों से साम होता है। बायु की वृद्धि होती है तथा पुरातस्व-साम में कमी आती है।

सातवीं मिसदृष्टि से दितीय भाव की देखने से जातक धन-वृद्धि से लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त करता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

सुला चन्न : नवमभाव : सूर्य

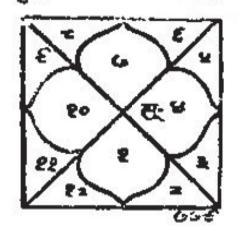


नवें भाव में मित 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूव' से प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती रहती है। उसे धन तथा सुख पर्याप्त मिलता है।

सातवीं मिल्रदृष्टि से तृतीय भाव की देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी कृदि होती है।

'जुला' लग्न की कुण्यली में 'बसममाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सुला लग्न : दशमभाव ! सूर्य

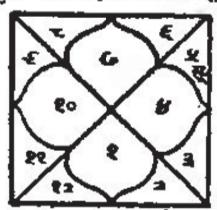


दसवें भाव में मित 'धन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूयें' से प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय से क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। आमदनी में खूब वृद्धि होती है।

सातवीं शसुद्धिः से चतुर्थं भाव की देखने से माता, भूमि एवं भवन से सुख में कुछ कभी बनी रहती है।

'तुला' लव्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सुला लग्न : एकादनभाव । सूर्य

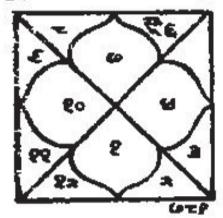


ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आमदनी में बहुत बृद्धि होती रहती है।

सातवीं शतुद्धि से पंचम भाव की देखने से सन्तान के पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है तथा विद्याध्ययन में भी कभी रहती है। ऐसे व्यक्ति की बाणी में तेजी पाई आती है।

'तुला' लव्न की कुण्डली में 'हादरामान' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सुना सग्त : द्वादक्षभाव : सूर्य



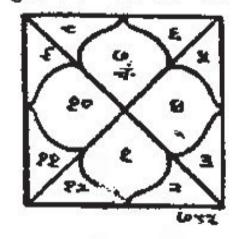
बारहर्वे भाव में मित 'ब्रुध' की राधि पर स्थित 'क्रूबं' से प्रभाव से जातक का खर्व अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख, सफलता एवं लाम की प्राप्ति होती है।

सातवीं मिल्लदूष्टि से षष्ठमान को देखने से मानु-पक्ष से मिलता स्थापित होती है, झगडों से लाभ होता है तथा प्रभाव की बृद्धि होती है।

'तुला' लग्न में 'चन्द्रमा'

'तुला' सन्त को कुष्पसी में 'प्रथमभाव' स्थित 'बल्दमा' का फलादेश

तुला लग्ने : प्रथमशाव : चन्द्र

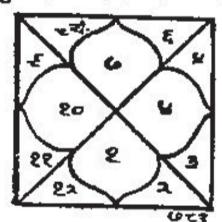


पहुले भाव में सामान्य मिक्ष 'शुक' की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की शारीरिक सौन्दर्ग, स्वास्थ्य एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व की प्राप्ति होती है। उसे राजनीति के क्षेत्र में सम्मान मिलता है।

सातवीं मिल्लदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय से क्षेत्र में भी लाभ होता है।

'तुला' लव्न की कुष्वली में 'द्वितीयमाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

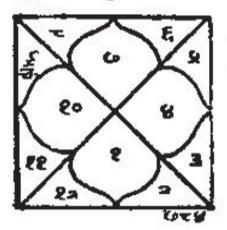


दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब के सुख में कभी का सामना करना पड़ता है। धन-संचय के लिए गुप्त युक्तियों का सहारा भी लेना पड़ता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टम माद की देखने से बायु एवं पुरातस्य का लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुष्डली में 'तृतीयभाष' स्थित 'चन्त्रमा' का फलादेश

तुला लग्नः तृतीयमावः चन्द्र

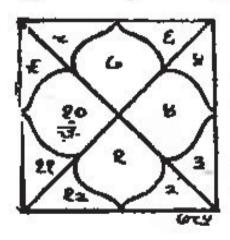


तीसरे भाव में मित 'गुर' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में बृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय से क्षेत्र में भी सफलता मिलती है तथा पुरातस्य का भी लाभ होता है।

सातवीं भिलदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक के धर्म सथा भाग्य की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी होता है।

'तुला' लग्न की कुकाली में 'सतुर्यमाम' स्थित 'सन्त्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : चतुर्यभाष : चन्द्र

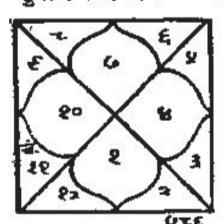


चौथे भाव में शतु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का सुटिपूर्ण लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न की कुष्डली में 'प्ंचममाव' स्थित 'चन्त्रमा 'का फलादेश

तुला लग्न : पंचमधाव : चन्द्र

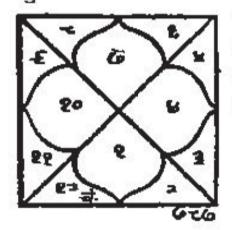


पीचवें भाव में शतु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या सथा वृद्धि के अंत में सफलता मिलती हैं। राज्य तथा अपवसाय से क्षेत्र में भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ी तीक्ष्ण बुद्धि वाला होता है।

सातवीं मिनदृष्टि से एकादश भाव की देखने से आमदनी में पर्याप्त कृदि होती है तथा जातक बनी होता है।

'तुला' लग्न की कुष्डली में 'बष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

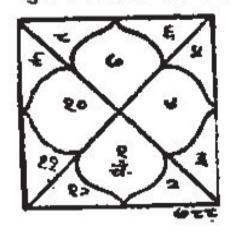


छठे भाव में मित 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चल्रमा' से प्रभाव से जातक को अपनी चतुराई. मनोबल सथा शान्त स्वभाव के कारण शतु-पक्ष पर सफलता मिलती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के स्रोत में कुछ रकावटें आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्व अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ भी होता है।

'तुला' लग्न की कुकालों में 'सप्तमभाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलावेश

क्षुना सम्तः सप्तमभावः चन्द्र

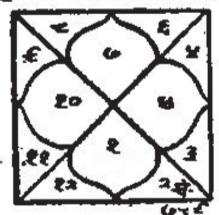


सातवें भाव में मिल 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को व्यवसाय-पक्ष में अत्यधिक सफलता मिलती है सवा स्त्री द्वारा उन्नति एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष से भी यश तथा लाभ मिलता है।

सातवीं मिलवृष्टि से प्रयम भाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्ग, स्वास्थ्य, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डसी में 'अध्यप्तमान' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुना लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

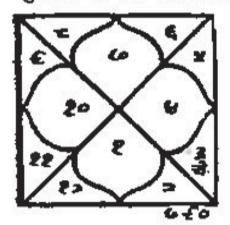


वाठवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'चन्द्रमा' से प्रभाव से आसक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातस्य का लाम होता है। दैनिक जीवन आनन्दमय रहता है, परन्तु पिता-पक्ष से हानि, राज्य-पक्ष से सामान्य सम्मान तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ लाम की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीचवृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कमजोर रहता है।

'तुक्षा' सन्त की कुष्डली में 'नदमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : चन्द्र

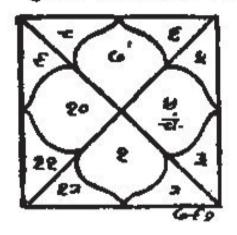


नवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की बृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से भी यश, सहयोग तथा सम्मान का लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखन से भाई-बहिनों का सुख मिलता है सथा पराक्रम में कृदि होती है।

'जुला' लग्न को कुष्डली में 'इरामभाव स्थित 'चन्द्र मा' का फलावेश

सुला लग्नः दशमभावः चन्द्र

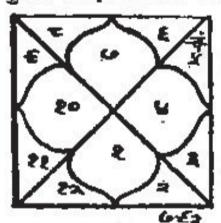


दसर्वे भाव में स्वराशि-स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की किता, राज्य तथा व्यवसाय के केंद्र में भक्ति, सहयोग, सम्मान, यश तथा धन का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति स्वाभियानी तथा समाज में प्रतिष्टित होता है।

सातवीं सत्नुदृष्टि से चतुर्थे भाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

'तुला' सन्त की कुष्डली में 'युकाबरामार्च' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सुलालग्न : एकादशभाव : चन्द्र

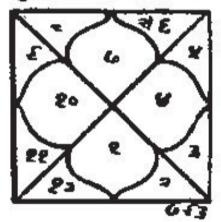


ग्यारहवें भाव में मिल 'सूबे' की राशि में स्थित 'बन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को लाभ के अवसंर निरन्तर मिनते रहते हैं। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सफलता, सम्मान तथा यश खादि की ग्योब्ट प्रांप्ति होती है।

सातवीं सन्तृद्धि से पंथम भाव को देखने से सन्तान से पक्ष से सामान्य असंतीय रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति होशियार, चालाक तथा स्थार्थी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशमान' स्थित 'चलूमा' का फलादेश

तुलालगनः हादशभावः चन्द्र



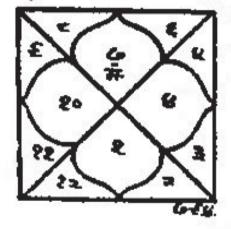
वारहवें भाव में मित 'गुर' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' से प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परम्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं उन्नति भी होती है। पिता, व्यवसाय तथा राज्य-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। प्रतिष्ठा-मान में भी कभी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से वष्ठभाव को देखने से शतु-पक्ष में शक्ति एवं चातुर्वे द्वारा सफलता प्राप्त होती है ३

'तुला' लग्न में मंगल

'तुसा' लग्न की कुण्डली में 'प्रयमशाब' स्थित 'अंगल' का फलावेश

तुलालग्न: प्रथममाव: मंगल



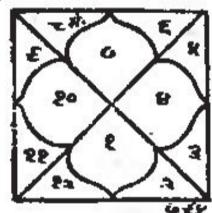
पहले भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रमाद से जातक की शारीरिक सुख तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

भौषी उच्च दृष्टि से मतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि तथा भदन का विशेष सुख मिलता है। सातवीं दृष्टि से स्वराणि में सप्तमभाव की देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय में उन्नित होती है। बाठवीं सामान्य मिलदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से

आयु तथा पुरावस्व की बृद्धि होती है, परतु उदर-विकार रहता है।

'तुला' लग्न को कुण्डली में 'डितीयभाव' स्थित संपल का फलादेश

तुलालग्न : द्वितीयभाव : मंपल

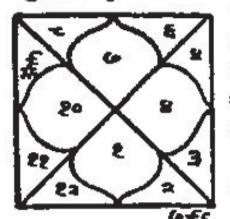


दूसरे भाव में स्वराणि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को सन तथा कृद्म्य का सुख प्राप्त होता है। चौथी शतु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का लाभ कुछ कठिनाइयों के साम होता है।

सातवीं सामान्य मिल-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातस्य की शक्ति प्राप्त होती है। आठवीं मिलदृष्टि के नवम भाव को देखने से भाग्य तथा समें की वृद्धि होती है।

'तुला' सक की कुकलो में 'तृतीयधाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुसालग्न: तृतीयभाव: भंगल



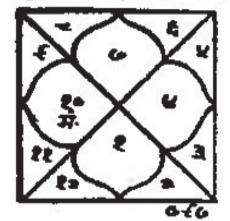
तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से भाई-प्रहिन का मुख मिलता है तथा पराक्रम की बृद्धि होती है। धन-लाभ भी खूद होता है तथा स्त्री-पक्ष में भी सफलता मिलती है। चौथी मित्र-दृष्टि से षष्ठमाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती रहती है।

सातवीं भिक्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म तथा भाग्य को उन्नति होती है। आठवीं त्रीचदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता. राज्य एवं व्यवसाय के

क्षेत्र में कुछ रकावर्टे आती हैं।

'तुला' लग्न की कुक्रली में 'बतुर्वभाव' स्थित 'संगल' का फलावेश

तुललाग्न : अतुर्यभाव : यंगल



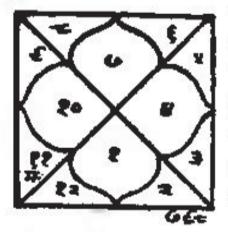
नीये भाव में शतु 'सनि' की राशि पर स्थित उच्च के संगत के प्रमाद से जातक की माता, पूमि तथा भवन का विशेष सुख मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय से भी सुख मिलता है।

सातवीं नी चद्षिट से मित्रराशि में दशमभाव की देखने से पिता से सुख में कभी आती है तथा राज्य एवं भ्यवसाय से क्षेत्र की उम्नति में दकावटें आती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी

खूय अच्छी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा भुषी होता है।

'तुला' लाम को कुण्डली में 'यंचनशाब' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : पंचमघाव : मंगल



पांचवें भाव में मानु 'मिन' की राशि पर स्थित
'मंगल' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्याबुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता
मिलती है। कुटुम्ब तथा स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता
है। बुद्धि-बल से व्यवसाय में सफलता मिलती है।
चौथी शत्नु-दृष्टि से खप्टम भाव को देखने से आयु के
क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुछ कठिनाइयों
से साथ पुरातस्य का साम होता है।

सातवीं मित्र-वृष्टि से एकादश भाव की देखने

से आमदनी खूब होती है। आठवीं मित्र-वृष्टि से द्वादममाव की देखने से खर्व अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'तुला' लग्न को कुन्द्रसी में 'बच्छमाव' स्थित 'अंगल' का फलादेश

तुला सग्न : षष्ठभाव : मंगस

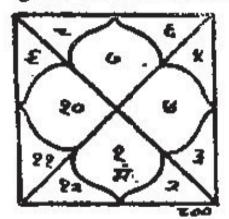
छठे भाव में मित्र 'गुरु' को राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शक्षु-पक्ष पर बड़ा प्रभाव रखता है। धन-संचय में कमी रहती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के लाभ सफलता मिलती है। चौथी मित्र-दृष्टि से नवम भाव की देखने से भाग्य तथा धर्म की बृद्धि होती है।

सातवीं मिल-दूष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा याहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाम होता है। अध्यों शतु-दूष्टि से प्रथम भाव को

देखने से शारीरिक सौन्दर्ग में कभी आती है। ऐसे व्यक्ति को अगड़े-मुकड्मे आदि से लाभ होता रहता है।

'तुला' लग्न की कुष्डलों में 'सप्तममाव' स्थित 'अंगल' का फलादेश

तुला सग्न : सप्तमभाव : मंगल



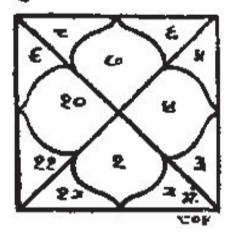
सातवें भाव में स्वराणि-स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्वी-पक्ष से कुछ बंधन-सा रहता है, परन्तु भीग की यथेष्ट प्राप्ति होती है। दैनिक व्यवसाय भी अष्टा रहता है। चौथी नीच-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कभी रहती है।

सातवीं शकु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में गर्मी अथवा रक्त-विकार रहता है। आठवीं

दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव की देखने से धन तथा कुट्म्ब का अच्छा सुख प्राप्त होता है।

'तुला' लग्त की कुण्डली में 'अध्यमसाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : खष्टमभाव : यंगल



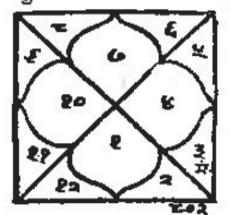
आठवें भाव में शतु 'शुक्र' की रामि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष तथा वैनिक व्यवसाय के कुछ कव्ट होता है। बाहरी स्थानों के व्यवसाय से तथा पुरातस्य से लाभ होता है। चौथी मिल्न-दृष्टि से एकादम भाव को देखने से खामदनी खूब होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि में क्रितीय माव की देखने से घन तथा कुटुम्ब का सुख परिश्रम द्वारा प्राप्त होता है। आठवीं मिल्ल-दृष्टि से तृतीयमाव की देखने

से बाई-बहिनों का सामान्य सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

'तुला' सम्म की कृष्टली में 'मवसभाव' स्थित 'संगल' का कलादेश

हुला सम्न : नवमभाव : मंगल



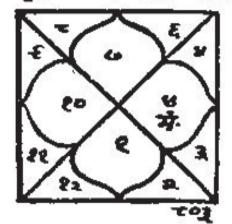
नवें भाव में मिद्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मगल' के प्रभाव से जातक की भाग्योग्नित खूब होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। स्त्री भाग्यशालिनी मिलती है, फलतः विवाहोपरान्त विशेष लाभ होता है। चौथी मित-सृष्टि से हादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ शी होता है।

सातवीं मित्र-इष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में शी

बृद्धि होती है। आठकी उच्च-दृष्टि से चतुर्यभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है।

'तुला' सम्म को कुण्डली में 'वशमधाव' स्थित 'बंगल' का फसावेश

सुला संग्नः दशमभावः मंगल्



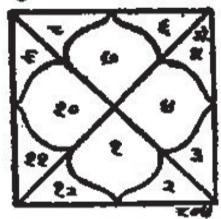
दसवें भाष में मित 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से आंतक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के होंस में कठिनाइयां आती हैं तथा स्त्री एवं कुट्रम्ब के सुख में भी कभी रहती हैं।

चौथी मिल-दृष्टि से प्रथममान की देखने से भरीर हुनेंन रहता है, परन्तु सम्मान की प्राप्ति होती है। साववीं उपन वृष्टि से चतुर्यभान की देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। आठवीं शलू-दृष्टि से पंचमभान की देखने से सन्तान-पक्ष से

वैमनस्य रहता है तथा विद्या-बुद्धि में कुछ कमी बनी रहती है।

'तुला' सम्म को कुण्डली में 'युकावशभाव' स्थित 'बंगल' का कमधेश

तुला लग्न: एकावशभाव: मंगल स्थारहर्वे भार



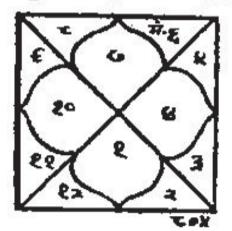
स्थारहर्वे भाव में मित 'सूर्ये' को राणि पर स्थित मंगल के प्रभाव से धन का पर्योप्त लाभ होता है। स्त्री-पक्ष से भी सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती है। चौदी शुष्टि से स्वराणि में दितीयभाव की देखने से धन तथा कुट्रम्ब का सुख भी पर्योप्त मिलता है।

सातनीं सहु-दृष्टि से पंत्रमभाव को देखने से सन्दान से असन्तोष तथा विद्या-दृष्टि में कमी रहती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से स्वराधि में सप्तमभाव को देखने

से स्त्री-एक में भी कुछ कमी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है।

'सुसा' लग्न की कृष्टली में 'हावराभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सुला सन्तः द्वादशभावः मंगल



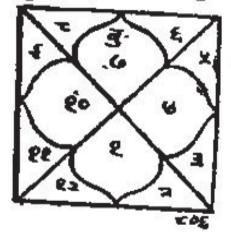
वारहवें साव में मिक्स 'बुध' की राणि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। धन, कुटुम्ब, स्त्री तथा व्यवसाय-एक में हानि एवं असन्तोष के अवसर उपस्थित होते हैं। चौथी मिक्क-दृष्टि से सृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराकम में वृद्धि होती है। सातवीं मिक्क-दृष्टि से चच्छ-भाव की देखने से णवु-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। आठवीं वृष्टि से स्वराणि में सप्तमभाव की

देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में नाभ होता है तथा स्वी-पक्ष में कुछ कमी रहती है।

'तुता' सन्न में 'बुध'

'तुला' लग्न को कृष्डली में 'प्रयमभाव' स्थित 'बुख' का फमलेस

तुला लग्न : प्रथमभाव : बुध

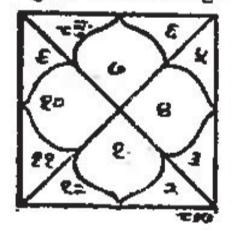


पहले भाव में मित 'हुक' की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का भरीर हुवंल होता है तथा वह बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता और खूब खर्च करता है। भाग्य में कभी होते हुए भी भाग्यवान् समझा जाता है तथा धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा देनिक व्यवसाय के लेख में सफलता प्राप्त होती है।

'तुमा' सम्म की कुन्छसी में 'ब्रितीयमाव' स्थित 'ब्रुव' का फलादेश

तुला लप्न : द्वितीयभाव : कुध

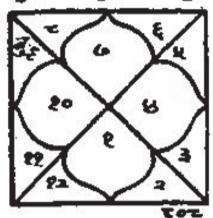


दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से आतक को धन तथा कुट्टम्ब के सुख में कुछ कमी रहती है। धन खूब खर्च करता है तथा स्वार्ष के लिए ही धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मिलदृष्टि से खंद्रमभाव की देखने से आयु एवं पुरातत्व का यथेष्ट लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्यतः धनी माना जाता है।

तुला' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयमाय' स्थित 'बुख' का कलादेश

तुला लग्न : तृतीयभाव : बुध

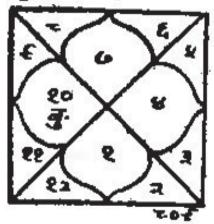


तीसरे भाव में मिल 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की भाई-बहिनों के सुख तथा पराकम में वृद्धि होती है। बाहरी स्थानों के संबंध में लाभ होता है तथा भाष्योन्नति में सामान्य रुकावर्टें आती हैं।

सातवीं बृष्टि से स्वराशि में नवममाव की देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। ऐसा व्यक्ति सुद्धी, धनी धर्मात्मा तथा यमस्वी होता है।

'तुला' सम्म की कुन्डली में 'बतुर्यमान' स्थित 'बुख' का फलादेश

तुला लग्नः चतुर्थमावः बुध

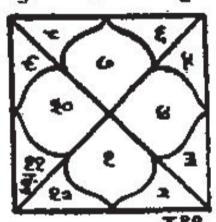


चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि 'पर स्थित 'बुध' के भभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। बाहरी संबंधों से यमेष्ट साभ होता है। बहु खर्च भी खूम करता है।

सातवीं मिद्धदृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग, प्रतिष्ठा, यश, मान तथा साथ की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न भी कुष्पसी में 'यंचनभाव' स्थित 'बुल' का फलावेश

तुला लग्न : एंचमभाव : बुध

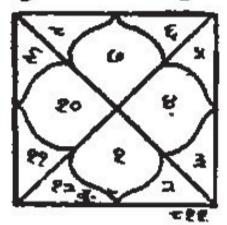


पौचवें माव में मिस 'शिन' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रमाय से जातक की सन्तान-एक से शक्ति मिलती है तथा विद्या-बुद्धि का लाभ कुछ धनी के साथ होता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भाग्य की वृद्धि होती है। खर्च थी खूब रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी यथेष्ट रहती है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पालन करने वाला, प्रतिष्ठित तथा माम्यशाली होता है।

'तुला' लग्न भी कुण्डली में 'यच्छमाय' स्पित 'बुध' का फलावेश

तुला संग्तः यप्ठभावः बुध

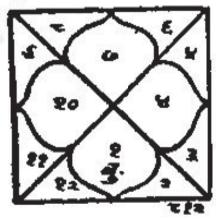


छठे भाष में मित 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'बुध' के प्रभाव से जातक की शतु-पक्ष में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा खर्च भी कठिनाई से चलता है। धर्म एवं भाग्य के क्षेत्र में भी कमज़ीरी रहती है परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव की देखने से खर्च की अधिकता बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमनाव' स्थित 'बुध' का **एलादेश**

सुला लग्न : सप्तमभाव : बुध

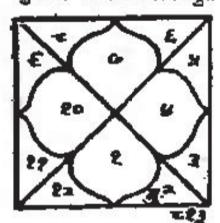


मातवें भाव में मिल 'मगल' की राशि पर रियत व्ययेश 'हुध' के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। गृहस्थी का खर्च अच्छी तरह चलता है तथा धर्म का पालन की होता है। बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है।

सातनीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव की देखने से सारीरिक सुख तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान् समझा जाता है।

'तुला' सन्न को कृष्डली में 'अव्हमशाब' स्थित 'बुध' का फलावेश

तुला लग्न : अच्टमभान : सुध

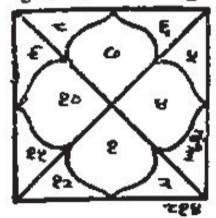


अठिवें भाव में मित 'सुक' को राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातस्त्र की शक्ति प्राप्त होती है परन्तु भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमजोरी रहती है। बाहरी संबंधों से कठिनाइयों के साथ लाभ होता है तथा खर्ज चलाने में भी परेणानियों आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से कठिनाइयों के साथ धन की वृद्धि होती है, परन्तु यश कम ही मिलता है।

'तुला' सम्म की कुच्छली में 'नवममाब' रियत 'बुध' का फलादेश

तुला जन्नः नवमभावः बुध

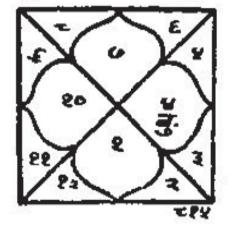


नवें भाव में स्वराभि-स्थित 'बुध' के प्रभाव - से बातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मिलदृष्टि सं हृतीयभाव की देखने से भाई-वहिनों का तुल मिलता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुन्डली में 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुना लग्न : दशमभाव . सुध

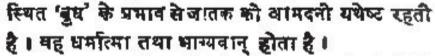


दसर्वे भाव में शतु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति करने के लिए कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का पालन भी कम ही होता है। भाग्योन्ति भी कम होती है।

सातवीं मिलद्बिट से चतुर्वभाव की देखने से जाता, भूमि तथा भवन का पर्योप्त सुख मिलता है जिसके कारण वह धनी समझा जाता है।

'तुला' लग्न की कुष्कसी में 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

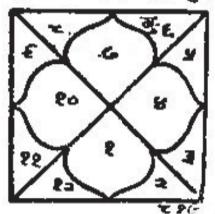
तुलालग्न: एकादशभाव: बुध ग्यारहर्वे भाव में मित्र 'सूर्ये' की राशि पर



सातवीं मित-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के छेत में सफलताएँ मिलनी है। ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धि तथा वाणी के बल पर विशेष उन्नति करता है। परन्तु बुध के व्ययेश होने के कारण हर क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ भी खाती रहती हैं।

'तुमा' सन्न की कुण्डली के 'द्वावशमाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

दुला लग्न : द्वादशभाव : बुध



वारहवें भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ भाव तथा सुख की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से चष्ठ आव को देखने से भातु-पक्ष में कुछ परेशानियाँ आती हैं तथा कुछ अनुचित उपायों के सहारे भजु-पक्ष में काम निकालना पडता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी होता है।

'तुला' लग्न में 'गुरु'

'तुमा' लग्न की कुष्यसी के 'प्रयमभाव' स्थित 'गुरु' का समावेश

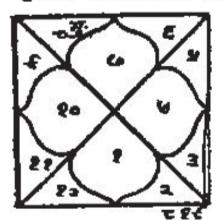


पहले भाव में शजू 'शुक्र' की राशि पर स्थित
'गुरु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव, पुरुवार्थ
तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों
के सुख में कुछ कमी बाती है। शजू-पक्ष में हिम्मत के
बल पर प्रभाव स्थापित होता है। पाँचवीं शजू-वृष्टि
से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से बैमनस्य रहता
है, परन्तु विद्या-बुद्धि का लाभ होता है। सातवीं मितदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के

क्षेत्र में लाभ होता है। नवीं मिश्र-दृष्टि से नवममाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'गुर्व' का खलादेश

बुला लग्न : द्वितीयभाव : गुरु



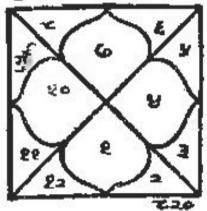
दूसरे भाव में मित्र 'मंगस' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ द्वारा धन की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कमी रहती है। पौचवीं दृष्टि से स्वराणि में यष्ठभाव को देखने से जातक अपने धन के बल से भातु-पक्ष पर विजय भाषा करता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से अध्यमभाव की देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

नवीं उच्च तथा मिल-दृष्टि में दशमणाव की देखने से राज्य, पिता तथा दयवसाय के क्षेत्र में यश, मुख सम्मान तथा लग्न लाम प्राप्त होते हैं।

'तुला' लब्न की कुछली के 'तृतीयमान' रिथत 'गुरु' का फलादेश

सुलालग्नः सृतीयभावः गुरु



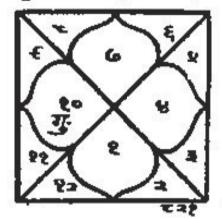
तीसरे शाव में स्वराभि-स्थित 'गुड के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-विह्नों के सुख में सामाग्य कमी आती है। शबू-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। पौजवीं मिल-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं शिव-दृष्टि से नव्मभाव की देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। नवीं मिव-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के दीव में खूब

सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है।

'तुला' लग्न की कुन्छली से 'चतुर्यमाव' रियत 'गुष' का फलावेश

हुलालग्नः चतुर्थमावः गुरु



चौथे भाव में शतु शनि की राशि पर स्थित नीच के 'गुरु' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है तथा शतु-पक्ष में भी परेशानी उठानी पड़ती है। पाँचवीं शतु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का कुछ लाभ होता है।

सातवीं मित्र तथा उच्च-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशमाय को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के

सम्बन्ध से लाभ होता है।

'तुला' सम्म की कुम्हली के 'यंचममाब' स्थित 'गुर्व' का फलावेश

सुला खग्न: पंचमभाव: गुरु



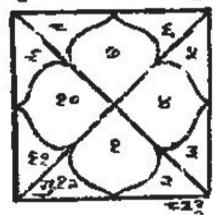
प्रावनें भाव में शत्नु 'शनि' की राशि पर स्थित 'युर' के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा शतु-पक्ष में प्रभाव बढ़ता है। माई-बहिनों से कुछ मनभेद भी रहता है। पौभवीं मित्रदृष्टि से नथम भाव को देखने से पुरुषाये द्वारा भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं भिन्न-दृष्टि से एकादणभाव की देखने से आमदनी खूब होती है। नवीं शनु-दृष्टि से प्रथम

भाव को देखने से कारीरिक सक्ति, प्रभाव तथा बल की प्राप्ति होती है, परन्तु स्थास्थ्य में कुछ कमी बनी रहती है।

'तुला' सन्त की कुन्डली के 'बच्चभाव' स्थित 'बुध' का खलादेश

मुला लग्न: षष्ठभाव: गुरु



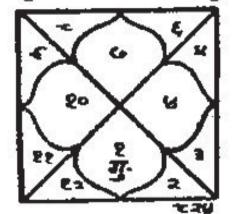
छठे भाव में स्वराशिस्य 'गुरु' के प्रभाव से जातक शतु-पक्ष में प्रभाव स्थापित करता है। भाई-बहिनों से कुछ बैमनस्य रहता है तथा पुरुषार्थ में भी कुछ कभी रहती है। पौभवीं उच्च-दृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता, व्यवसाय एवं राज्य के क्षेत्र में योष्ट सम्मान तथा सफलता की प्रप्ति होती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ होता है। नवीं मिल-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से

धन की वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब से कुछ मतभेद बना रहता है।

'तुमा' लग्न की कुछली के 'सप्तमभाव' स्थित 'युव' का खलावेश

सुला लग्नः सप्तमभा**वः** गुरु



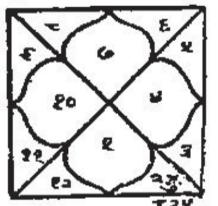
सातवें भाव में मित 'मंगल' की राशि पर स्थित
'गुर' के प्रभाव से जातक पुरुषार्थं द्वारा व्यवसाय की
उन्नित करता है तथा स्त्री की शक्ति भी पाता है,
परन्तु स्त्री से कुछ मनभेद रहता है। पौचवीं मितवृष्टि से एकादशभाव को देखने से पुरुषार्थं द्वारा यथेष्ट
धनोपार्जन होता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से करीर में कुछ परेशानियाँ रहती हैं, परन्तु प्रभाव की

वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से स्वराधि के तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-वहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुष्टली के 'अव्ययमाव' स्थित 'बुध' का फलावेश

मुला लग्तः अष्टमभावः गुरु



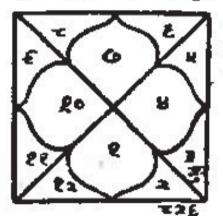
वाठवें भाव में शतु 'शुक' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पुरातस्य एवं आयु की वृद्धि होती है। परन्तु भाई-वहिन के सुख तथा पराक्रम में कभी आती है। शतु-पक्ष में भी परेशानी रहती है। पौचवीं मित्रवृष्टि से द्वादश भाव की देखने से खर्च व्यधिक रहता है तथा वाहरी स्थानों से लाभ हीता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दितीय भाव को देखने से धन तथा कुदुम्ब के सुख की वृद्धि होती है। नवीं नीचदृष्टि

से चतुर्यभाव को देखने से भाता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है।

'तुला' लम्म की कुच्छली के 'स्वमधाब' स्थित 'गुरु' का फलादेश

हुला लग्न : नवसमाव : गुरु



नवें भाव में मित 'बुध' की राशि पर स्थित ,गुरं के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है तथा वह यशस्वी भी होता है। शतुपक्ष अथवा अन्य अगड़ों के कारण भाग्योन्नित में कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। पाँचवी शतुद्धि से प्रथमभाव की देखने से भरीर में कुछ कमजोरी रहती है, परन्तु प्रभाव में वृद्धि होती है।

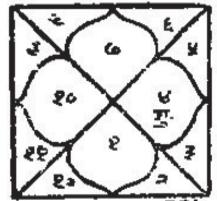
सातवीं दृष्टि से स्वराणि में तृतीय भाव को देखने

से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

नवीं शतूर्विट से पंचमभाव को देखने से सन्तान से कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'दशममान' स्थित 'गुष' का फलादेश

हुला सम्म : दशमभाव : गुरु



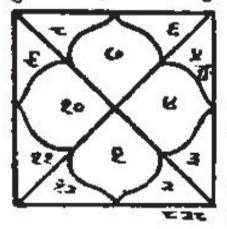
दसर्वे भाव में मित 'चन्द्रमा' की राणि पर रिथत 'गुर के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। भाई-खहिन का सुख भी मिलता है, परन्तु कुछ मतभेद भी रहता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को-देखने से धन तथा कुटुम्ब का-सुख मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्यमाव की देखने से चुद्ध भाता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी आती है।

नवीं दृष्टि से स्वराशि में बष्ठभाव की देखने से शतु-पक्ष में प्रभाव स्थापित

होता है। 'तुमा' लग्न भी कुण्डली के 'एकावसभाव' स्थित 'गुर्च का समावेश

तुलालग्न : **एकादशभाव** : गुरु



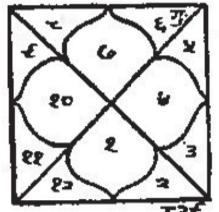
ग्यारहर्वे भाव में मित 'सूवे' की राशि पर रिथत 'बुध' के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा अपनी अध्य तथा ऐश्ववें की बढ़ाता है। उसे शतु-पक्ष में भी लाभ होता है। पांचवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव की स्थराणि में देखने से भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं शतुदृष्टि से पंत्रमधान को देखने से निद्या तथा संतान के क्षेत्र में कुछ अनी रहती है। परन्तु बुदि अधिक होती है।

नर्जा मित्रदृष्टि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के शेव में सफलता भिलती है।

'सुला' लग्न की कुन्छली के 'द्वादशमाव' स्थित 'गुरु' का खलादेश

तुलालग्न : द्वादणभाव : गुरु वारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित



'गुर' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से साथ होता है। आई-बहिन के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। पाँचवीं नीचद्षिट से चतुर्धभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी कुछ कमी आती है।

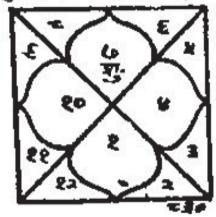
सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव की देखने से गुप्त युक्तियों द्वारा तथा कुछ दयकर शब्दु-पक्ष में सफलता मिलती है। नवीं शबुदृष्टि से अष्टमभाव की देखने से

कुछ कठिनाइयों के साथ पुराहत्त्व एवं आयु का लाभ होता है।

'सुला' लग्न में 'शुक्र'

'तुला' लग्न की कुळली के 'अयमभाव' रियत 'शुक्र' का खलादेश

तुलालान : प्रथमभाव : शुक

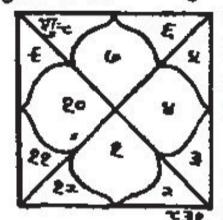


पहले भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के शारीरिक तथा आदिमक बल एवं प्रभाव में वृद्धि होतो है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी मिलता है, परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण कमी-कभी शरीर में परेशानी का अनुभव भी होता है।

सातवीं शज़्दुवृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय की उन्नति के लिए भी कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता होती है।

'तुला' लग्न भी कुण्डली के 'द्वितीयचाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

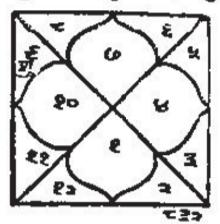


दूसरे भाव में शतु 'संगल' की राशि पर रिथत शुक्र के प्रभाव से जातक की धन-संजय के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है, परन्तु उसे कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। कथी-कभी उसे कठिनाइयाँ भी आती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टममाय की देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की सन्ति का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन विताता है।

'तुला' लग्न को कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्नः तृतीयभावः सुक

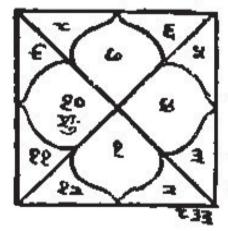


तीसरे भाव में सामान्य शतु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का भाई-विहमों से कुछ बैमनस्य रहता है परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव की देखने से धर्म तथा भाग्य की उन्निति होती है। ऐसा व्यक्ति प्रभाव-भाजी जीवन विताता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्यं भाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्नः चतुर्थभावः शुक

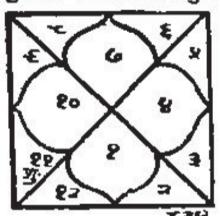


चौथे मान में मिल्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुक' के प्रभाव से जातक की कुछ कमी के साथ माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। आयु तथा पुरातस्य का साम भी होता है।

सातवीं मिळवृष्टि से समस्माय की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान, लाभ सथा सहयोग की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'यंचमभाव' स्थित 'शुक' का फलादेश

सुला लग्नः पंचमभावः ग्रुक

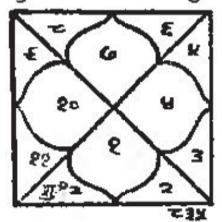


पाँचनें भाव में मिल 'सिन' की राक्षि पर स्थित
'शुक्र' ने प्रभाव से जातक की विद्या-बुद्धि के खेल में
मफलता मिलती है, परन्तु सन्तान के पक्ष में कुछ कम-जोरी रहंती है। आयु तथा पुरातस्व का खेळ लाभ होता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से लाभ भी अच्छा रहता है। ऐसा जातक अपने बुद्धि-बल से उन्नति करता है।

'तुला' सन्न की कुष्डली के 'बष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का कलादेश

तुला लग्न: पष्ठभाव: शुक

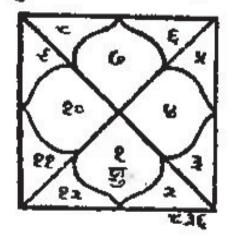


छठे भाव में शब् 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'गुक' के प्रभाव से जातक शब्द-श्क्ष पर विशेष प्रभाव रखता है तथा बड़ी-बड़ी कठिनाइयों पर भी विजय पा लेता है। उसे आयु तथा पुरातस्य का सामान्य लाभ भी होता है।

सातवीं नी चवुष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों के कारण कुछ परेशानी रहती है। ऐसा व्यक्ति ठाठ-बाट का जीवन विताता है।

'तुला' लग्न की कुच्छली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालान: सप्तमभाव: गुक

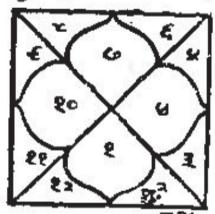


सातवें भाव में शत्नु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक' के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के रहते हुए भी उनमे शक्ति प्राप्त होती है तथा शारीरिक परिश्रम द्वारा दैनिक व्यवसाय में भी सफलता मिलती है और क्षायु तथा पुरातत्त्व का साथ भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराधिस्य प्रथमभाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य, आत्म-इस एवं प्रभाव की प्राप्ति भी होती है।

'तुला' लन की कुष्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला सन्तः अष्टमभावः शुक्र

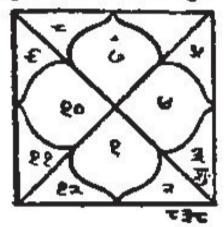


वाठवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक' के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्वका लाभ होता है, परन्तु शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य, में कुछ कमी आती है।

सातवीं शत्नु-दृष्टि से दितीयभाव को देखने से जातक को धन-मंचय के लिए चतुराई का सहारा लेना पड़ता है सथा कुटुम्बियों से उसका कुछ मतभेद बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'मवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

बुला लग्न: नवमभाव: शुक

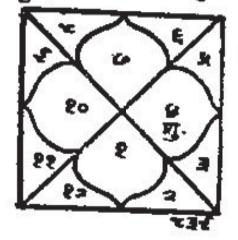


नवें भाव में मित 'बुध' की राक्षि पर स्थित
'बुक' ने प्रभाव से जातक ने भाग्य एवं धर्म को उन्नति
कुछ कमी ने साथ होती है। उसे आयुत्रया पुरातस्थ को शक्ति भी प्राप्त होती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं शीस भी मिलता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से सृतीयभाव की देखने से पराक्रम में तो बृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से सामान्य मतभेद बना रहता है।

'तुला' लन्न की कुण्डली के 'बशममाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सुला लग्नः दशमभावः शुक

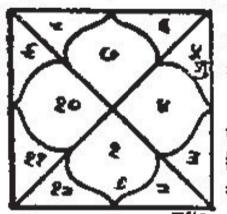


दसर्वेभाव में चलु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित धुक के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा ध्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ मफलता मिलती है। सफलता का मूल कारण चातुर्य एवं शारीरिक श्रम होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख मधेष्ट प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'यूकारशभाव' स्थित 'शुक्र' का खलादेश

सुलासन्त: एकादशभाव: शुक्र न्यारहर्वे भाव में

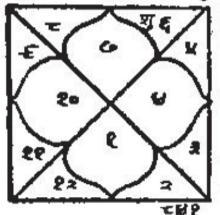


व्यारहवें भाव में शजू 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक' के प्रभाव से जातक शारीरिक अम तथा आसुर्य के द्वारा पर्याप्त साभ कमाता है'। उसे आयु तथा पुरातस्व की शक्ति भी मिलती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु निद्या-बुद्धि तथा वाणी की शक्ति में पर्याप्त वृद्धि होती है।

'तुला' सम्म की कुण्डली के 'द्वावशकाव' स्थित 'शुक्र' का कलादेश

तुलालनाः द्वादशभावः गुक



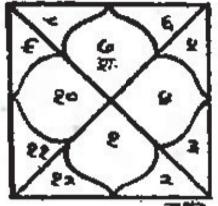
वारहवें भाव में भित्न 'वुध' की राज्ञि पर स्थित नीच के 'शुक' के प्रभाव से जातक की खर्च के खारे में कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं तथा वाहरी सम्बन्धों से भी कष्ट होता है। आयु, पुरातत्त्व तथा शारीरिक क्षेत्र में भी कुछ कभी रहती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से पण्ठभाव की देखने से शज़ु पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है तथा झगड़े-संझटों में हिम्मत तथा चतुराई से सफलता मिलती है।

'तुला' लग्न में 'शनि'

'तुला' लग्न की कुष्डली के 'प्रथमसाव' स्थित 'शॉन' का फलादेश

'तुलालग्नः प्रथमभावः शनि

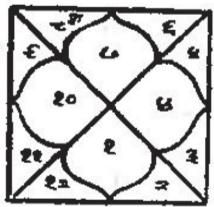


पहले भाव में मिद्र 'गुक' को राशि पर स्थित सनि के प्रभाव से जातक स्थूल शरीर का तथा प्रभाव साली होता है। उसे माता, भूमि, भवन, सन्तान तथा विद्या का सुख भी उत्तम रहता है। तीसरी शलुद्धिः से तीसरे भाव को देखने के भाई-बहिनों से कुछ बैमनस्य रहता है तथा पराकम भी कठिनाई से ही सड़ पाता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्ती से कुछ मतभेद रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं। दसदी शतुदृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता के सुख में कभी रहती है, परन्तु अयदसाय तथा राज्य के क्षेत्र में सफलता मिलती हैं।

'तुला' लम्न की कुण्डली के 'द्वितीयमान' स्थित 'शनि' का फलादेश

नुलालग्न : द्वितीयभाव : शनि दूसरे भाव में 'शव्यु' 'मंगल' को राकि पर



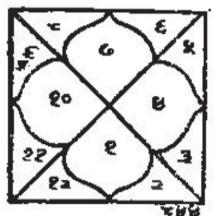
स्थित 'शनि' के अभाव से जातक की धन-संचय में
कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुटुम्बियों से कुछ मत-भेद रहता है। सन्तान के पक्ष में कभी तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में साभ होता है।

तीसरी दृष्टि से स्वराणि में चतुर्यभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। सातभी मिलदृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है।

दसवीं शत्नुदृष्टि से एकादशमान की देखने से कुछ कठिनाइयों के साम आम-दनी अच्छी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुलालग्न : तृतीयश्वाव : शनि



तीसरे भाव में शजू 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से कुछ मतभेद रहता है। माता द्वारा भी शक्ति मिनती है।

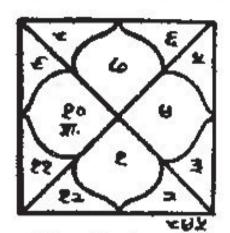
तीसरी दृष्टि से स्वराशि में पंचनभाव की देखने से विद्या तथा सन्तान की यथेव्ट प्रस्ति प्राप्त होती है, परन्तु सम्तान से कुछ मतभेद भी रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव की देखने से धर्म तया भाग्य की वृद्धि होती है। दसवीं मिलदृष्टि से

द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाम मिलता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली से 'बतुर्वभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्नः चतुर्थभावः धनि



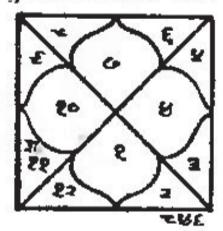
चौथे भाव में स्वक्षेत्री सनि के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। सन्तानं तथा विद्या के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। सीसरी शतु-दृष्टि से चष्ठभाव की देखने से शतु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है। सातवीं शबूद्धि से दशम भाव को देखने से पिता से मतभेद रहते हुए भी सुख मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के खेद में भी सफलता मिलती है।

दसवीं उच्च-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में बृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, यशस्त्री, भानी

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'यंग्रममाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालम्न : पचमभाद : शनि

तया प्रभावशाली होता है।



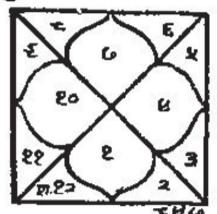
पाँचमें भाव में स्वराणि-स्थित "यति" के प्रभाव से जातक को सन्तान, विधा तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलली है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलदा है। सीसरी नीचदृष्टि स सप्तमभाव की देखने से स्वीसे मतभेद रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं शबु-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी के लेल में कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। दसवीं शतुद्धित से द्वितीय भाव को देखने

से धन-संचय में भी फठिनाइयाँ आती हैं तथा कुट्म्य से मतभेद बना रहता है।

'चुला' लग्न की कुण्डली के 'बध्ठमाव' स्थित 'शर्मि' का फलादेश

तुलालग्नः पष्ठभावः गनि



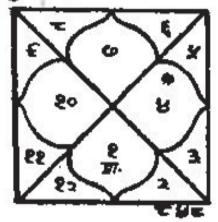
उसे भाव में शतू 'गुर' की राज्ञि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक की बुद्धि-दल द्वारा सन्नु-पक्ष में सफलता मिलती है। माता, पूमि तथा भवन के सुख एवं विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता भी कुछ कठिनाइयों के बाद प्राप्त होती है। तीमरी मित्र-दृष्टि से अध्यमभाव की देखने से आयु तथा पुरासस्य की शक्ति में वृद्धि होती है।

सातवीं मिल्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाम

होता है। दसवीं शतुर्पिट से दुवीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु पुरुषायें की दृढि होती है।

'तुला' सन्त की कुण्डली के 'सप्तममाब' स्थित 'शर्नि' का फलादेश

तुलालग्नः सप्तमभावः शनि



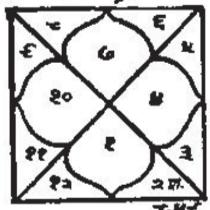
सातवें भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रमाय से जातक की स्त्री, गृहस्थी तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाई और अगान्ति का सामना करना पहता है। विधा तथा सन्तान का पक्ष भी कमजोर रहता है। तीसरी मित्र-वृद्धि से नवम्याय की देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से प्रथम भाव की देखने से जातक के शरीर का कद सम्बा होता है तुवा उसे

शारीरिक सुख भी मिलता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्यभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख फठिन परिश्वम द्वारा प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'अध्टममार्थ' स्थित 'सनि' का फलादेत

सुलालग्न : अष्टमुआव : शनि



आठवें भाव में मित 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'सिन' के प्रमान से जातक को आयु तथा पुरावस्य का बच्छा लाभ होता है। माता, सूमि, भवन, सन्तान तथा विद्या के पक्ष में कमी आदी है।

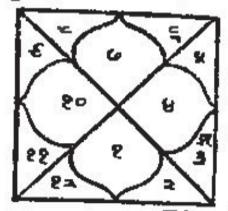
तीसरी सतृद्धि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से दिसीयमान को देखने से धन-संचय में कमी रहती है तथा कौटुम्मिक सुख

में भी व्यवधान पड़ता है। दसवीं वृष्टि से स्वराशि में पंचममाव की देखने विवासे एवं सन्तान का सामान्य साथ होता है।

'तुला' लग्न को कुच्छली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

नुला लग्न : नवमभाव : जनि



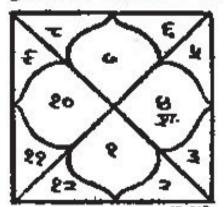
नवें भाव में मिल 'वुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक बुद्धि द्वारा भाग्योग्नित करता है सथा धर्म का पासन भी करता है। विद्या, सन्तरन, भूमि, भवन एवं माता का सुख भी अच्छा मिलता है। नीसरी मानुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी से मार्ग में रुकावरें आती है।

सातवीं शतुद्धि से तृतीय भाव की देखने से भाई-बहिनों से मतभेद रहता है, परन्तु पराक्रम की

बृद्धि होती है। दमनी जनुद्धि से पष्ठमाव को देखने से बुद्धि-वल द्वारा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'बराममाव' स्थित (मूर्य) का फलादेश

तुलालम्नः दशमभावः शनि



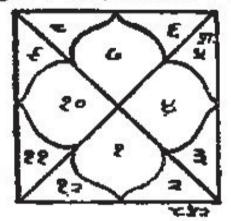
दसर्वे भाव में शतु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'स्ति' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। वह स्ववं विद्वान् होता है, परन्तु सन्तान से मतभेद बना रहता है। तीसरी मित्रवृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है नथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के चतुर्यभाव में देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है।

दसवीं नीच दृष्टि से नप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कभी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ वाती रहती हैं।

'तुला' लग्न को कुण्डली के 'एकादशमाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुला लग्न: एकादमभाव: शनि



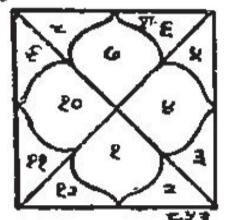
म्यारहवें भाव में शलु 'सूरें' की राजि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक की आमदनी कुछ कठिनाइयों से साथ खूब होती है। माता, भूमि तथा भवन आदि का भी यथेष्ट सुख मिलता है। तीसरी उच्च तथा मिलदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति एवं प्रभाव में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि में पंचमभावको देखने से विद्या, बुढि एवं सन्तान-पक्ष में सफलता

प्राप्त होती है। दसवीं मित्रवृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातस्य की शक्ति बढ़ती है। ऐसा व्यक्ति मनमीशी, खापरवाह तथा स्वार्थी स्वभाव का होता ।है

'तुला' लन्न की कुण्डली के 'द्वादरामाव' स्थित 'शनि' का कलादेश

तुला स्रग्न : द्वादशभाव : शनि



मारहवें भाव में नित 'तुध' की राकि पर स्थित 'सनि' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा उसे वाहरी संबंधों से साभ होता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है।

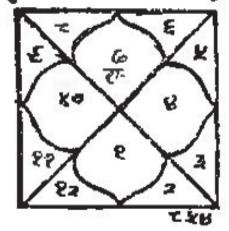
तीसरी शतुद्धि से दितीयभाव की देखने से धन के संचय में कभी आती है तथा कुटुम्ब से मतभेद रहता है। सातवीं शसुद्धि से बष्ठभाव की देखने से शतु-पक्षपर सामान्य प्रभाव बना रहता है। दसवीं मिळवृष्टि से नवसभाव की देखने से

धने तथा भाग्य की वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति की बुद्धि तथा वाणी कुछ भ्रम-युक्त भी बनी रहती है।

'तुला' लग्न में 'राहु'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहू' का फलावेश

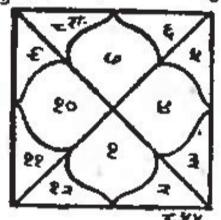
तुला तग्न : प्रथमभाव : राहु



पहले भाव में मित्र 'शुक' की राभि पर स्थित 'राहुं के प्रभाव से जातक का सरीर दुवंल होता है। वह परेशान भी रहता है। वह अपनी उन्नति के लिए गुप्त चातुर्य का आश्रय लेता है तथा कठिन परिश्रम करता है। कमी-कभी उसे बड़ी कठिनाइमों का सामना करना पड़ता है, परन्यु अपनी सूझ-बूझ से उन पर विजय भी या लेता है।

'तुला' लम्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहुं का फलादेश

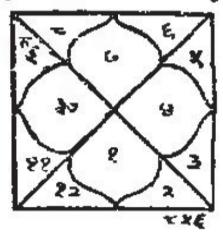
तुला लग्न : द्वितीयभाव : राहु



दूसरे भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहुं के प्रभाव से जातक को धन के संग्रह करने में बड़ी कठिनाइयां आती हैं। कमी अकस्मिक रूप से धन-प्राप्ति होती है तो कभी भोर आधिक संकट भी आते हैं। वह गुप्त युक्तियों का आश्रय सेकर किसी प्रकार अपना काम चलाता है। उसे कुटुम्बियों द्वारा भी कष्ट प्राप्त होता है।

'तुला' जन की कुष्डकी के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का कलादेश

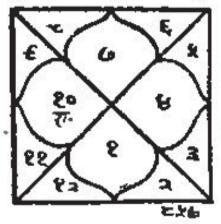
तुना सन्न : सृतीयभाव : राहु



तीसरे भाव में शत्रु 'गुर' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आतो है, परन्तु वह युक्तियों की अध्यय लेकर उसमें वृद्धि करता है तथा अनुचित मार्ग भी अपनाता है। उसे भाई-विहिनों से कष्ट मिलता है तथा जीवन में कमी-कभी अन्य प्रकार के घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। चातुर्य, युक्ति और पुरुषायं के बल पर ही वह कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर पाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'क्लुधंमाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

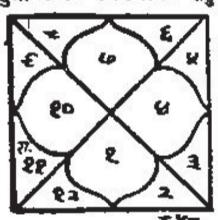
तुला लग्नः चतुर्यमादः राहु



चीये भाव में मित्र 'शित' को राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है, परन्तु गुप्त बुक्तियों, साहस तथा दृढ़ता के सल पर वह संकटों का नामना करके धन पर विजय पा लेता है। उसका जीवन बड़ा संघर्षपूर्ण बना रहता है।

'तुला' लन्न की कुण्डली के 'गंचममाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

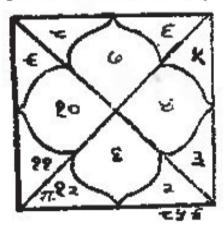
तुला लग्न : पंचमभाव : राहु



पाँचवें भाव में मिल्ल 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहुं' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पश्च से कष्ट मिलता है तथा विद्याध्ययन में भी कठिनाइयों आती हैं। वह सर्वव चिन्तित तथा परेशान बना रहता है। स्वार्थ-सिद्धि के लिए वह उचित-अनुचित का विचार नहीं करता तथा भूप्त बुक्तियों से काम लेकर ऊपर से बड़ी बृद्धा प्रदणित करता है।

'तुला' लग्न को कुण्डली के 'बळभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुना सग्न : पष्डभाव : यह

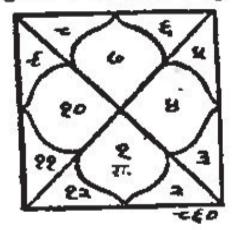


छठे भाव में शतु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से आतक शतु-पक्ष में कटिनाइयाँ उठाकर भी विजय प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा बहादुर, हिम्मती तथा गुप्त युक्तियों का शाता होता है। अपना प्रभाव स्थापित करने में उसे सफलता मिल जाती है।

'हुला' अपन को कुण्डली के 'सप्तममाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला अन्त । सन्तमभाव : राहु

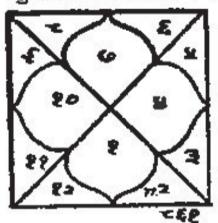


मातवें भाव में शबू 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की स्थी-पक्ष से संकटों का सामना करना पड़ता है तथा दैनिक स्यवसाव के क्षेत्र में भी कठिनाइयां जाती है।

व्यवसाय में भी कभी-कभी बड़े संकट आते हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्ति, धैर्य और साहस के सल पर उन सभी बाधाओं पर विजय प्राप्त कर सेता है।

'तुला' सन्न की कुण्डली के 'अष्टममाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

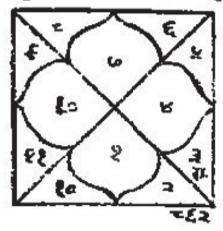
तुलालग्न : अष्टमभाव : राहु



अहिं भाव में मिल 'शुक्त' की राश्चित स्थत राहूं' के प्रभाव से जातक की आयु पर उसे बड़े सकट अति है, परन्तु मृत्यु नहीं होतो । पुरासस्य की हानि भी होती है। दैनिक जीवन में भी अनेक संघर्ष, जिन्हा ॥ । परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

'तुना' लग्न की कुण्डलों के 'नवमश्राव' स्थित 'राहु' का फ्लादेज

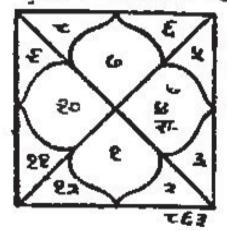
तुलानग्नः त्वमभावः राह्



नवें भाव में मित्र बुधं की गणि पर निधत 'राहु' के प्रभाव में जातक गुध्त मुक्तिकों के बल पर अपने भाग्य की विशेष उन्तति करता है नथा धमें का पालव भी करता है। उसकी भाग्योन्ति में कभी-कभी बाधाएँ भाती हैं. परन्तु वह अपने चातुर्य, धैर्य एवं गुप्त मुक्तियों के बल पर उन सब पर विजय पा लेना है।

'बुका' लग्न की कुन्डली के 'बशमधाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

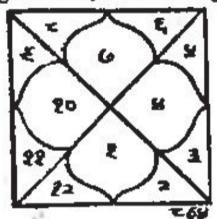
त्वालम्ब : दशमभीव : राहु



दसवें भाव में शतु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव में जातक को पिता के सुख में कमी रहती है। राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयों का मामना करना पडता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी मंकट आते हैं। उन्नति के नार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को पार करने के बाद ही उसे नफलता मिलती है।

'तुला' लम्न की कुञ्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहुं' का फलादेश

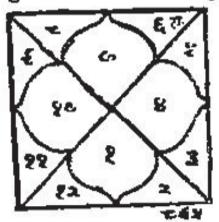
तुनानग्र : एकादशभाव : राहु



ग्यारहवें भाव में शह 'मूर्य' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आगदनी के नार्ग में कठिनाइयां आती हैं जिन पर वह गुप्त युक्तियों, खतुराई, धैर्य एवं हिम्मत के बल पर विजय पाता है तथा उन्नति करता है। कभी-कभी उसे विशेष संकटों का सामना भी करना पहना है।

'तुला' सम्म की कुण्डली के 'द्वादरामाव' स्थित 'राहु' का फशादेश

नुलालम्न : द्वादशभाव : राहु

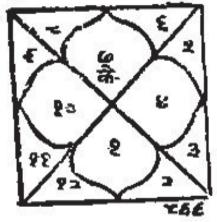


बारहवें भाव में मिल 'बुध' की राष्टि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा कभी-कभी वड़े संकटों का शिकार भी बनवा पड़ता है। उसे वाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ लग्भ भी मिल जाता है। ऐसा ध्यक्ति वड़ा विवेकी, कुट-नीतिज्ञ, परिश्रमी, धैर्यवान् तथा हिम्मती होता है।

'तुला' लग्न में 'केतु'

'तुला' लग्न की कुच्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

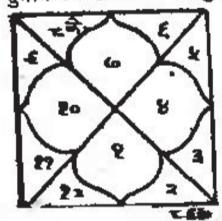
तुत्रालग्न : प्रथमभाव : केतु



पहले भाव में मिल 'सुक' की राशि पर रियत 'केतु' के भगाव से जातक को कभी-कभी विशेष मानीरिक संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह अपने गुप्त चातुर्य तथा साहस के बल पर उन पर विजय पाता है और भीतर से गुप्त कमजोरी रहते हुए भी ऊपर से बड़ा हिम्मती दिखाई देता है।

'तुला' सन्त्र की कुण्डलों के 'द्वितीयमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

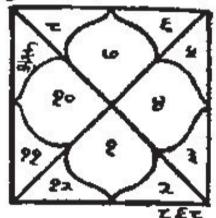
तुलालग्न : द्वितीयभाव : केतु



दूसरे भाव में शत्रु 'मगल' की राणि पर स्थित 'केंग्रु' के प्रभाग से जातक को धन-प्राप्ति एवं धन-संघय के नार्ग में बड़े संकट आते हैं। वह गुप्त मुक्तियों' के यल पर ही धनोपार्जन करता है, परन्तु हमेला चितित तथा परेशान ही बना रहता है। उसे अपने कुटुम्बियों हारा भी कब्ट मिलता है। फिर भी वह बड़ा हिम्मती तथा श्रीयं वाला होता है।

'तुला' सम्म की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुलालग्न : तृतीयभाव : केतु

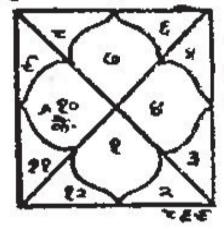


तीसरे भाव में शबु 'गुर' की राशि पर स्थित उच्च के कितुं के प्रभाव से जातक के पराक्ष्य में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का मुख भी खूद मिलता है। कभी-कभी भाई-बहिनों के कारण उसे कब्द भी उठाना पहता है।

ऐसा व्यक्ति वड़ा हिम्मती, परिश्रमी तथा धैर्य-वान् होता है।

'तुला' सन्त की कुण्डली के 'चतुर्यभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

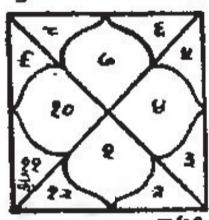
तुलालग्न : चतुर्थभाव : केतु



चौये भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित ' 'केतु' के प्रभाव से जातक की माता, श्रूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। घरेलू सगड़े भी बहुत रहते हैं, फिर भी वह अपने धैये, साहस तथा गुप्त युक्तियों के बस से कठिनाइयों पर विजय पाने का प्रयत्न करता है और कुछ सफलता भी पा लेता है।

'तुला' लब्न की कुष्यसी के 'धंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुल(सम्ब:पंचमभावः केतु

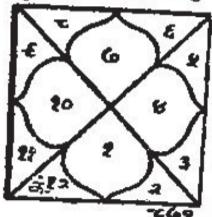


पीनवें भाव में मिस 'शनि' की राप्ति पर स्थित केतु' के प्रभाव से जातक की संतान-पद्म से कच्ट मिलती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

ऐसा व्यक्ति अनेक कठिनाइयो के बाद विद्या, मुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में थोड़ो-बहुत सफलता पासा है, फिर भी उसके संकट बने ही रहते हैं।

'तुला' सप्न की कुन्डसी के 'बच्छभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

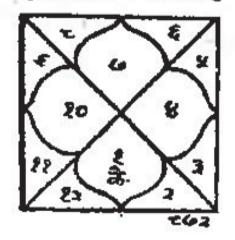
तुनः सन्नः षष्ठभावः केतु



छठे भाव में शतु 'गुर' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक झगड़े-संझट, शेन तथा श्रद्ध्य में वड़ी हिम्मत, वहादुरी तथा धैय से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है और कभी खरता या घवराता नहीं है। उसे अपने उद्देश्य में सफलता भी मिलती है। ऐसे व्यक्ति का ननसाल-पक्ष प्राय: कमजीर रहता है।

'तुला' सम्म की कुण्डली के 'सप्तममाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

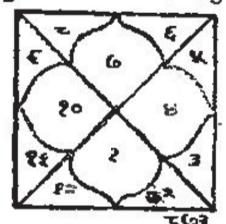
तुन, लग्न:सप्तमभाव:केतु



सातवें भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्ती-पक्ष से विशेष कष्ट मिलता है तथा दैनिक आमदनी में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं। वह स्ती तथा व्यवसाय-पक्ष में सफलता पाने के लिए धैयं, हिम्मत, पराक्रम बधा गृप्त युक्तियों का सहारा लेता है और थोड़ी-बहुन सफलता भी प्राप्त करता है।

'तुला' लग्न की कुन्डसी के 'अध्टममाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

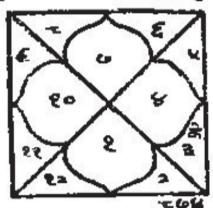
तुला तान : अध्यमभाव : केत्



आठवें भाव में मिल 'गुक' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाय से जातक की आयु पर अनेक बार संकट आते हैं तथा उसे पुरातस्व की भी हानि उठानी पडती है। पेट में कुछ विकार भी रहता है।

ऐसा व्यक्ति सदैव चिन्तातुर रहता है तथा अपने साहम, सैयं एवं सुप्त युक्तियों के बल पर कुछ सफलता भी प्राप्त कर लेता है। 'तुला' सम्म की कुण्डली के 'सवमभाव' स्थित 'केंद्र' का फलादेश

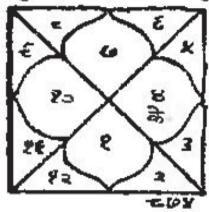
तुला अग्न : नवमभाव : केनु



नवें भाव में मित्र 'बुध' की राश्चित पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जानक की भाग्योत्नति में अनेक बाधाएँ आती हैं तथा कभी-कभी घोर सकटों का बामना भी करना पडता है।

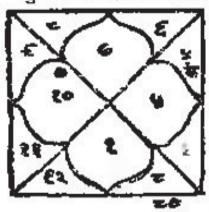
ईश्वर तथा धर्म के विषय में भी उनकी श्रद्धा कम होती है। वह धर्म के विरद्ध चलने में भी नहीं चूकता तथा स्वार्थ-सिद्धि के लिए अनुचित साधनों का प्रयोग कर अपयक भी पाता है।

'तुमा' सप्त की कुण्डमी के 'दशमधाम' स्थित 'केतु' का फलादेश तुला स्थ्या दशमधान: केन्



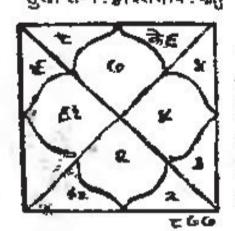
दसवें भाव में अनु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा कष्ट प्राप्त होता है तथा राज्य-पक्ष से भी परेशानी होती है। व्यवसाय में उसे विष्ट-वाधाओं का नामना करना पड़ता है। उसे अपने जीवन में प्रापः अनेक स्तार-चन्नाव देखने पडते हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'एकावशमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश सुल(लग्न: एकादशभाद: कृतु



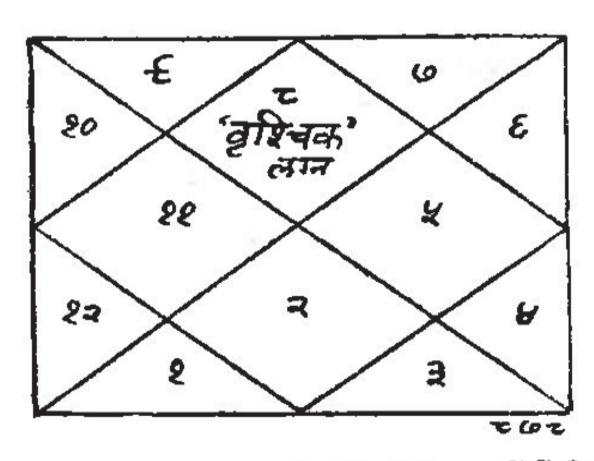
ग्यारह्यें भाव में शवू 'स्यें' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कठिन!इयों का सामना करना पड़ता है परन्तु यह अपने धैर्य, परिश्रम तथा गुप्त मुक्तियों के बल पर उन्हें दूर करके मफलता प्राप्त करना है। कभी-कभी उसे लाभ के बजाय बहुत घाटा भी उठाना पड़ता है। अनेक संकटों को पार करने के बाद ही उसे सफलता मिलती है।

'तुला' लग्न की कुण्डलों के 'द्वादशमाय' स्थित 'केतु' का फलादेश तुला सन्न : द्वादशभाव : केत्



वारहवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित केतु' के प्रभाव से खातक का खर्च अधिक रहता है तया बाहरी स्थानों के संबंध से उसे लाभ भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपना खर्च भलाने के लिए विवेक-बुद्धि से काम नेता तथा कठिन परिधम करता है, फिर भी उसे कभी-कभी बड़ी कठिनाइयों को किकार बनना पड़ता है तथा संन्त में सफलता भी प्राप्त हो खानी है।

'वृंश्चिक लग्न'



['वृद्धिवक' लग्न को कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'वृश्चिक' लग्न का फलादेश

'वृष्टिनक' लान में जन्म लेने वाला जातक ठिंगने तथा स्थूल शरीर का होता है। उसकी आंखें गोल तथा छाती चौड़ी होती है। ऐसा व्यक्ति कोषी, पाखण्डी, मिथ्यावादी, तकोगुणी, कपटी, कड़ने स्थभाव का, पर-निन्दक, दयाहीन, भिक्षा-वृत्ति करने वाला, माइयों से द्वेप रखने वाला, शतु-नांशक तथा सेवा-कमें करने वाला होता है। परन्तु इसके बाय हो यह शास्त्रका, विद्या के आधिक्य मे युक्त, गुणी, भूरवीर, अत्यन्त विचारणील तथा ज्योतियी भी होता है। दूसरों के मन की बात शाम लेने में खह खड़ा निषुष होता है। 'वृश्चिक' लग्न में जन्म लेने वाला जातक अपनी प्रारंभिक अवस्था में दू:बी रहता है तथा मध्यमावस्था में सुख भोगता है। २० से २४ वर्ष की आयु के बीम उसका भाग्योदय होता है।

वृश्चिक लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७६ के १८६ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डकी के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें—इसे आग लिखे अनुमार ममझ लेना चाहिए।

'वृध्चिक' लग्न में 'सूर्य' का फलावेश

- १. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७६ से ८६० के बीच देखना चाहिए।
- २. 'वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'सूवं'--

- (क) 'मेप' राशि पर ही तो संख्या =७६
- (ख) 'बूव' राशि पर ही तो संस्था ८८०
- (ग) 'मियुन' राजि पर हो तो संख्या ८८१
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ५८२
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या == ३
- (च) 'कन्या' राष्ट्रियर ही तो संख्या बदध
- (छ) 'तुषा' राशि पर हो तो संख्या ५८५
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८८६
- (झ) 'धनु' रामि पर हो तो संख्या ८५७
- (अ) 'सकर' राशि पर हो तो संख्या व्यव
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर ही तो संख्या च**८**६
- (द) 'मीन' राशि पर हो हो सक्या हरू

'वृश्चिक' स्रान में 'चन्द्रमा' का फलादेश

- 'वृष्टिक ' लग्न बालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रम: का स्थायों फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या दश् से ६०२ के बीच देखना चाहिए !
- वृश्चिक' लग्न वालीं को गोचरकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित
 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए----

जिस दिन 'चन्द्रमा'--

- (क) मेव' राशि पर हो तो संख्या = ६१
- (क) 'क्व' राजि पर हो तो संख्या वहर
- (ग) 'मिथुन' राणि पर ही तो सख्या व्हर
- (घ) 'कर्क' राणि पर हो तो संख्या ८६४
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या **८**६%
- (च) 'कन्या' राकि पर हो तो संख्या कर्द
- (छ) 'जुला' राशि पर हो तो संख्या = ६७
- (छ) 'धृश्चिक' राक्षि पर हो तो संख्या = ६
- (अ) शतुं गालि पर ही तो सस्या = ६६
- (ञा) 'मकर' राक्षि पर हो तो संख्या ६००
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर ही तो संख्या ६०१
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६०२

'वृश्चिक' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

- 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगन का स्वाजी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०३ से ६१४ के बीच देखना चाहिए।
- २- 'वृश्चिक' लग्न बालों को गोकर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का अस्यायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मगल'---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६०३
- (म्ब) 'बूब' राशि पर ही तो संख्या ६०४
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६०५
- (घ) कर्के गिश पर हो तो संख्या ६०६
- (डं) 'सिंह' राणि पर हो तो संख्या ६०७
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६०८
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६०६

- (अ) वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६१०
- (झ) 'घनु' राणि पर हो तो संख्या ६११
- (ङा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६१२
- (ट) 'कुम्भ' राकि पर हो तो संख्या ६१३
- (ठ) 'मीन' राष्टि पर हो तो संख्या ६१४

'वृद्धिचक' लग्न में 'बुध' का फलादेश

- १. 'बृधिनक' भन्न भावों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थापी फालक्षेत्र उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१४ से ६२६ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'वृश्चिक' लग्न वालीं को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों से रियत 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिम महीने में 'बुध'--

- (क) नेष' राशि पर ही तो संख्या ६१५
- (ख) वृष' राशि पर हो तो संस्या २१६
- (ग) 'निथुन' राणि पर हो तो संख्या ६१७
- (ध) 'कई' राजि पर हो तो संख्या ६१०
- (४) 'सिह' राशि पर हो तो संख्या ६१६
- (च) क्रन्या' राशि पर हो तो सख्या ६२०
- (छ) तुला राधि पर हो तो सच्या ६२१
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६२२
- (अ) धनु राशि पर हो तो संख्या ६२३
- (ङा) 'मकर' रामि पर हो तो संख्या ६२४
- (ह) कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६२५
- (ठ) 'भीन' राशि पर हो तो संख्या ६२६

'वृश्चिक' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

- १. 'वृश्चिक' सम्म दालों को अपनी जन्मकुष्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२७ से ६३८ के बीच देखना चाहिए।
- वृद्धिक " सम्म वालों की गांचर-कुण्डली के विभिन्न मानों में स्थित 'गुर'
 का अस्यामी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस वर्ष में गुरु'-

- (क) ·मेव' राशि पर हो तो संख्या ६२७
- (ख) 'ब्न' राधि पर ही तो संख्या ६२=

- (ग) 'मिथुन' राशिषर हो तो संख्या ६२६
- (घ) 'कर्क' राजि पर हो तो संख्या E३०
- (क) 'सिह' राशि पर ही तो सख्या ६३१
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो सच्या ६३२
- (छ) 'तुला' राशि पर ही तो संख्या ६३३
- (अ) 'वृश्विक' राशि पर हो तो संख्या ६३४
- (श) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६३%
- (ङा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६३६
 - (ट) 'कुम्भ' राजि पर हो तो संख्या ६३७
 - (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या **६**३८

'वृश्चिक' सग्न में 'शुक्र' का फलादेश

- १. 'वृश्चिक' लग्न दालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का न्यायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३६ से ६५० के वीच देखना चाहिए।
- २. 'बृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक'-

- (क) 'मेष' राशि पर ही तो संख्या ६३६
- (ख) 'वृष' राजि पर हो तो संख्या ६४०
- (ग) 'भियुन' राजि पर ही तो संख्या ६४१
- (च) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६४२
- (ङ) 'सिंह' राशि पर ही तो संख्या E४३
- (ध) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६४४
- (छ) 'तुला' राशि पर ही तो संख्या १४५
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर ही तो संख्या १४६
- (क) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १४७
- (ठा) 'मकर' रामि पर हो तो संख्या ६४६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर ही तो संख्या ६४६
- (ठ) 'मीन' राशि पर ही तो संख्या १४०

'वृश्चिक' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'ज्ञानि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६५१ से ६६२ के बीच देखना चाहिए 1 'वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शिन' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'-

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६५१
- (ख) 'बुव' राणि पर हो तो संख्या ६५२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६५३
- (थ) 'कर्क' राजि पर हो तो संख्या ६५४
- (क) सिंह' राणि पर हो तो संख्या ६५<u>५</u>
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १५६
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६५७
- (ज) 'वृश्चिक' राक्षि पर हो तो संख्या ६५८
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६५६
- (अ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६६०
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या ६६१
- (ठ) 'मोन' राशि पर हो तो संख्या ६६२

'वृद्दिचक' लग्न में 'राहु' का फलावेश

- १. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ' 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६३ से ६७४ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'वृश्चिक' लग्न वालीं को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए----

जिस वर्ष में 'राहू'—

- (क) भिष' राणि पर हो तो संख्या ६६३
- (ब) 'बूष' राशि पर हो तो संख्या ६६४
- (ब) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६६४
- (च) 'ककें' राजि पर हो तो संख्या ६६६
- (क) 'सिह' राशि पर हो तो संख्या ६६७
- (ख) 'कन्या' राणि पर हो तो संख्या ६६=
- (छ) 'तुसा' दाशि पर हो तो संख्या १६६
- (अ) 'वृश्चिक' दाशि पर हो तो संख्या ६७०
- ं (झ) 'धनु' राश्चिपर हो तो संख्या ६७१
 - (का) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६७२
 - (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६७३
 - (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६७४

'वृश्चिक' लग्न में 'केतु' का फलादेश

- 'वृश्चिक' चन्त वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में विवत केनुं का स्थायी कलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७४ से ६८६ के बीच देखना साहिए ।
- २. वृष्टिक वर्ग वालों को बोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतू' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए-

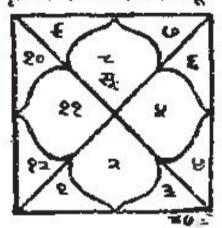
जिन वर्ष में 'केनु'---

- (क) में पंशिषर हो तो संख्या १७५
- (ब) वृषं राशि पर हो तो संख्या ६७६
- (ग) मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६७७
- (घ) कर्क रागि पर हो तो संख्या ६७६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६७६
- (च) 'कन्या' टाशि पर हो तो संख्या ६००
- (छ) 'सुला' राणि पर हो तो संख्या ६८१
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६८२
- (स) चनुं राशि पर हो तो संख्या ६ ६३
- (ङा) 'सकर' राशि पर हो तो संख्या ६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संस्था ६८५
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६८६

'बुश्चिक' लग्न में 'सूर्य'

वृश्चिक' लग्न की कुष्डली के 'अवमभाव' स्थित 'सूर्य' का कलावेश

बुश्जिक लग्न : प्रयमभाव : सूर्ये

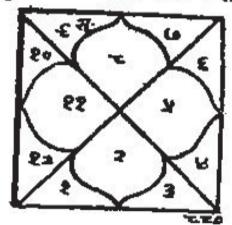


शरीर-स्थान में अपने मिल मंगल को बुश्चिक राक्षि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक सौन्दर्य से युक्त, हुब्ट-पुब्ट, आत्माभिमानी, कोखी, प्रभावशाली और दबंग होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष से जातक को सुख, सहयोग और सम्मान प्राप्त होता है। वह सुन्दर वस्त्रों तथा आभूषणों का श्रीकीन और यशस्त्री होता है। सात्रवीं शसुद्धि से मुक्र की राशि में मम्तमभाव को देखने से स्त्री से वैमनस्य रहता है

तथा दैनिक व्यवसाय में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

'वृश्चिक' सम्म की कुण्डली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष्टिकलग्न : द्वितीयभाव : सूर्ये

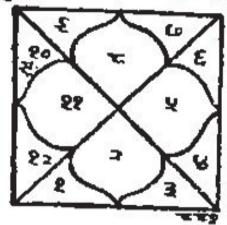


दूसरे भाव में मिल 'गुर' को राणि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को पितृपक्ष से धन की प्राप्ति होती है तथा कौटुम्बिक सुख भी मिन्ता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता है, परन्तु पिता के सुख में कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व को शक्ति भी प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति कार्दैनिक जीवन सुखी तथा प्रभाव-पूर्ण बना रहता है।

'कृष्टिक' लग्न को कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्व' का कलादेश

वृष्टिचकलग्नः सृतीयभावः सूर्ये

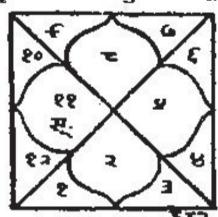


तीसरे भाव में भन्नु 'शनि' की राणि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी मफलनाएँ प्राप्त होती हैं।

सातवीं मिलदृष्टि से नवम आव को देखने सेशमें तथा भाग्य की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति तेजस्वी तथा पुरुषार्थी होता है।

'ब्रॅंडचक' लग्न को कुम्हसी के 'बतुर्यभाव' स्थित 'सूर्य' का असावेस

बृश्चिकलग्न : चतुर्वभाव : सूर्य

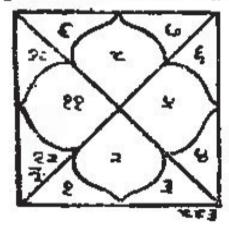


चौथे भाव में भवु 'शिवि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से आतक का अपनी माता के साथ मतभेद रहता है तथा भूमि-भवन के सुख में कुछ कमी आती है। घरेलू सुख में भी कुछ जुटियाँ वनी रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वरेशिंग में दशम माय की देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग सम्मान, लाम तथा सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति स्वयं उन्नति करता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली से 'वंचममाय' स्थित 'सुर्वे' का फलादेश

वृश्चित्रलग्न : पंचमभाव : सूर्ये

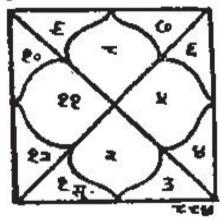


पाँचवें भाव में मिल 'गुरु' को राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, सहयोग एवं लाभ मिलता है। राजनीतिक क्षेत्र में उन्नति मिलती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से एकादश भाव की देखने से लाभ के थेष्ठ साधन प्राप्त होते हैं। ऐसा व्यक्ति उच्च कोटि का जीवन विताता है।

'वृश्यिक' लाम को कुण्डली के 'बच्छभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

बृश्चिकलग्न : बष्ठभाव : सूर्ये

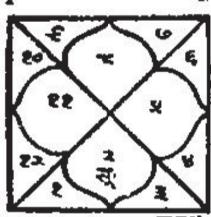


छठे भाव में मिल 'मगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक अनु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। राज्य एवं व्यवसाय के खेन में भी सफलता मिलती है, परन्तु माता एवं पिता से कुछ मतभेद बना रहता है।

सातवी नीच-दृष्टि से द्वादश मान को देखने से खर्च के मामले में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं तथा नाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी परेशानी देता है।

'बुरिचक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कृश्चिलानः सप्तमभावः सूर्यं

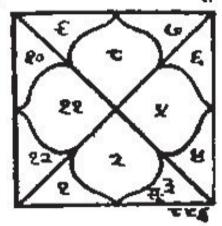


सातवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से संतोष एवं शक्ति को प्राप्ति होती है तथा दैनिक व्यवसाय में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मिल-वृष्टि से प्रथम भाव को देखने से जातक का शरीर सुन्दर तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली, त्यांगी तथा उन्नति-जील होता है।

'शुरेश्वक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

वृश्चिकत्वनः अष्टमभावः सूर्ये

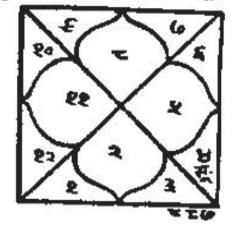


आठवें भाव में मिल 'बुग्न' की राणि पर स्थित 'सूपें' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व में वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र' में सफलता, थण एवं लाम को प्राप्ति होती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से दितीय मान की देखने से परिवाम द्वारा धन की पर्याप्त वृद्धि होती है तथा कीटुम्बिक सुख भी प्राप्त होता है। बाह्न्से स्थानों से भी सम्बन्ध जुड़ता है।

'बृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुर्वे' का फलादेश

वृश्चिकलग्नः तवमभावः सूर्यं



नवें भाव में मिल चन्द्रमा' को राश्चि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाष्य की उन्नति होती है एवं जिता, राज्य और व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलसी हैं।

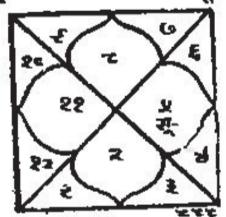
सातवीं शबु-बृष्टि से तृतीय भाव की देखने से भाई-बहिनों मतभेद रहता है तथा पराक्रम में सामान्य वृद्धि होती है।

संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति मुखी जीवन विताता

'बृश्चिक' लग्न को कुण्डली के 'बशममान' स्थित 'सूर्व' का फलादेश

ŧι

वृश्चिकलग्नः दशमभावः सूर्यं

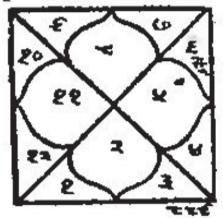


दसवें भाव में स्वराशि-स्थित 'सूये' के प्रभाव से आतक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र' में सफलता, सहयोग, लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। वह अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए उप कमें भी करता है।

सातवीं शतुद्धि से चतुर्वभाव को देखने से जातक ना अपनी माता के साथ वैमनस्य रहता है तथा भूमिएवं भवन के सुख में कमी रहती है।

'बुदिसक' लग्न की कुण्डली के 'श्कादशमाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

वश्चिक लग्न : एकादशभाद : सुर्वे



ग्यारहवें भाव में मिल 'बुध' को राशि पर न्धित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की अपने पिता द्वारा खेष्ठ लाभ होता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, घन, लाभ एवं सहयोग भी प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि रः पचम भाव को देखने से मिला, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष से भी श्रेष्ठ लाग होता है। ऐसा व्यक्ति स्वाभिमानी, तेज स्वभाव हा, प्रतिप्ठित तथा यशस्त्री होता है।

'बृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्व' का फलावेश

बारहवें भाव में अबु 'शुक्र' की राशि पर स्थित ब्धिकक लग्न : हादलभाव : सूर्य

नीच के 'सूबें' के प्रभाव से आतक बड़ी कठिनाई से खर्च चलाता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी

कठिनाइयां आती हैं।

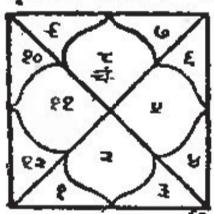
28

सातवीं उच्च मिल-दृष्टि से षष्ठ माव को देखने से शनू-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा अगड़े-मुकदमे आदि से भी लाभ मिलता है।

'वृच्चिदक' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

'बृहिसक' लग्न को कुण्डली के 'प्रथमसाव' स्थित 'सन्द्र' का फलावेश

बृश्चिक लग्न : प्रथमभाय : चन्द्र

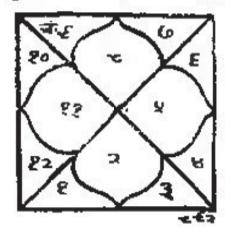


पहले भाव में मित 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का शरीर कुछ दुर्वल रहता है तथा यश भी कठिताई से मिसता है।

मानवीं उच्च दृष्टि से सप्तम भाव की देखने से मुन्दर नथा मनोनुक्ल स्त्री प्राप्त होती है एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ भिषती रहती हैं।

'वृश्चिक' सम्म की कुष्डली के 'द्वितीयभाद' स्थित 'कन्द्र' का फलादेश

बृश्चिक लग्न : द्वितीयभाव : चद्र

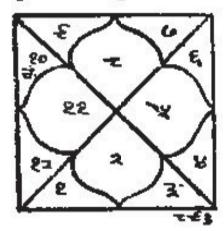


दूसरे भाव में मिल 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातन को धन-संखय में सफलना मिलती है तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। परन्तु वह धम का यथाविधि पालन नहीं करता।

सातवीं मिल-दृष्टि से अष्टम भाव की देखने से पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा आयु की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा भाग्यशासी होता है।

'वृश्चिक' लग्न को कुण्डली के 'ठुतीयमाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

बृश्चिकसम्न : तृतीयभाव : चंद्र

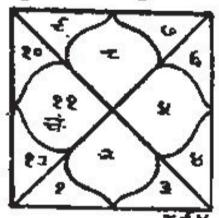


तीमरे भाव में शबु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-वहिन के सुख में कुछ कमी आसी है। मानसिक शक्ति बहुत प्रवल होती है।

सातवीं दृष्टि में स्वराशि में नवम भाव की देखने से धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थं द्वारा यशस्त्री एवं भाग्यशाली बनता है।

'वृश्चिक' सम्त की कुष्डली के 'बतुर्यमाव' स्थित 'चन्त्र' का फलादेश

बृश्चिक लग्नः चतुर्यभावः चंद्र चौथे ४

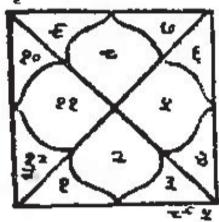


चौथे भाव में भवु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को कुछ असन्तोष के साथ माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। यह धर्म का पालन करता है तथा मनोयोग के द्वारा भाष्य की उन्नति करता है।

सातवीं मिल-वृष्टि में दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख, सम्मान, साम एवं सफल का को प्राप्ति होती है।

'वृश्चिक' लान की कुंग्टली के 'पंचनभाव' स्थित 'बन्द्र' का फलावेश

ब्हिन्क लग्न । पंचमनाय : चंद्र

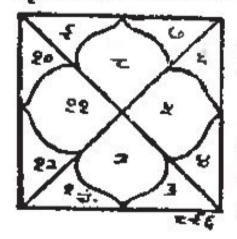


पाँचनें भाव में मित्र 'गुर' को राशि पर स्थित चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को मिला, बुद्धि एवं मन्तान के क्षेत्र में अच्छी सफलतः मिलती है। यह सज्जन, वित्रभ्र, मधुरभाषी, बर्मात्मा तथा अपने बुद्धि-सन् से भाष्य की उन्नति करने वाला भी होना है।

सातवीं मित-दृष्टि से एकादण भाव की देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा लाभ भी खूब होता रहता है।

'बुश्चिक' सान की कुण्डली के 'वष्ठभाव' स्थित 'चन्त्र' का फलावेश

शश्चिकः लग्नः पष्ठभावः चंद्र

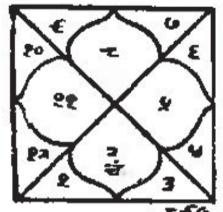


छठे भाव में मिल 'मगल' की राशि पर स्थित चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को भन्नु-पक्ष में अपनी मान्ति-नीति से सफलता मिलती है। यों, मानुओं के कारण घन में अशान्ति भी बनी रहती है।

नातवीं सामान्य मिल-कृष्टि से द्वादश मार की देखने से भाग्य-बल पर खर्च चलता रहता है तथा बाह्नी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं सफनताओं की प्राप्ति भी होती है।

'बुदिबक' सरन की कुण्डली के 'सप्तमसाब' स्थित 'बन्त' का फलादेश

वृश्चिक स्तत् व्यवस्थातः चद्र मातवें भाव में मामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि

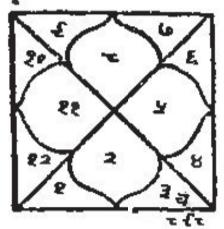


पर स्थित अच्च के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को मुन्दर तथा भाग्यणानिनी स्त्री मिलती है। उसका गृहस्य कीयन मुखनय रहता है। दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। सनोबल बढ़ा रहने के कारण भाग्य तथा यश में भी बृद्धि होतो है।

मानवीं नीच-दृष्टि ने प्रथम भाव को देखने से बरोर में कुछ कमजोरी रहती है तथा भाग्य एवं धर्म के पक्ष में भी कुछ न्यूनता बनी रहती है।

·वृश्यिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टममाव' स्थित 'बार्' का फलादेश

बृष्टिबक लग्न: अष्टमभाव: चन्द्र



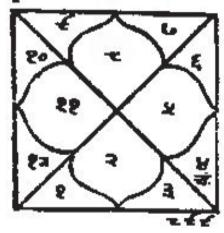
आठवें भाव में मिल 'कुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से आतक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सानवीं मिलवृष्टि से द्वितीयभाव की देखन स धन तथा कुट्न्व के सुख का लाभ भी पर्याप्त निकता है।

ऐना स्पनित शास्त स्वभाव वाला, बनी, नुई। नथा यशस्त्री होना है।

'बृश्चिक' लग्म को कुण्डली के 'नवसभाव' स्थित 'बन्ह' का फलादेश

बुश्चिक लग्नः नवमभावः चन्द्र



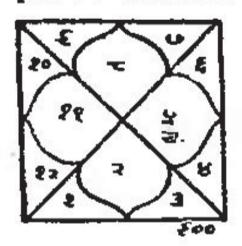
नवें भाव में स्वराशिस्य 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के धमंतया भाष्य की अच्छी उन्नति होती है। यह यमस्वी तथा धनी होता है।

नातवीं शतु-वृष्टि से तृतीय भाव की देवने से भार्ड-विदिनों का सुख खुटिपूर्ण रहता है, परन्तु पराक्रम को अत्यक्षिक युद्धि होती है।

ऐमा व्यक्ति मृख तथा समृद्धि से युक्त जीवन विताता है।

'वृष्टिकक' सम्म को कुण्डली के 'बशममाब' स्थित 'खन्त्र' का फलादश

बृश्चिक लग्नः दशमभावः चन्द्र



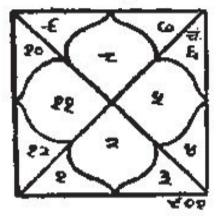
दसमें भाव में मिल 'सूर्य' को राजि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से आतक को पिता, राज्य नथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यक्षिक सफलताएँ विश्वती है। वह धर्मात्ना तथा भाग्यणाली होता है।

सातवीं शत्नु-दृष्टि से चतुईभाव की देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। परन्तु आतक मुखी, बसस्वी, सन्तुष्ट तथा धनी औधन विताला है।

'बृश्चिक' लग्म की कुण्डली के 'श्कादशमाव' स्थित 'खन्त्र' का फलावेश

बृश्चिक लग्न : एकादशभाव : चन्द्र ग्यारहवें भाव में मिल 'चुन्न' की राशि पर

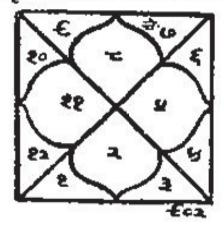
स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से आतक को खेष्ठ लाभ होता रहता है। यह धर्मपरायण, भाग्यशाली, भुखी तथा यमस्यी होता है।



सातवीं मिल-दृष्टि से एंचम भाव की देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का श्रेष्ठ लाभ होता है, वाणी में शक्ति रहती है नया मनोबल बढ़ा-चढ़ा रहता है।

'बुड़िकक' सरन की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बन्ब' का कलादेश

वृश्चिक लग्नः द्वादशभावः चन्द्र



बारहवें भाव मे सामान्य मिल 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु उसकी पूर्ति के लिए किसी कठिनाई का अनुभव नहीं होता। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अत्यधिक लाम होता है। स्वदेश में भाग्य कमजोर रहता है, परन्तु विदेश में तरक्की होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्नु-पक्ष में शक्ति से काम निकालता है तथा भाग्य-बल से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है।

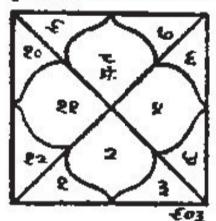
'वृश्चिक' लग्न में 'मंगल'

'वृश्चिक' लग्न की कुच्छली के 'प्रयमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

पहले भाव में स्वराशि में स्थित 'मगल' के प्रभाव ब्रिक्क लग्न : प्रथमभाव : मंगल

से जातक को शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है

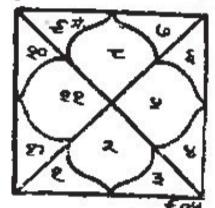
तथा शतू-पक्ष में सफलता मिलती है।



चौयो शक्षदृष्टि से चतुर्व भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। सासवीं शतुद्धिः से सप्तमभाव को देखने से स्त्रो तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। आठवीं मिल-दृष्टि सेखव्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व को शक्ति में वृद्धि होती है।

'कृष्टिबक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयप्राव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चित्र लग्न : द्वितीयजान : मगन दूसरे भाव में मिल 'गुरु' की राजि पर स्थित

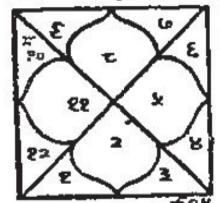


मगल' के प्रभाव से जातक अपने मारोरिक धम दारा अनोपार्जन करता है सथा कुछ परेजानियों के मान्य कीट्रिम्बक मुख भी प्राप्त करता है। गारीरिक मुख ग्व स्वास्थ्य में कमी रहती है किन्तु शबु-पक्ष पर प्रभाद बना रहता है। चौथी मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-युद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में तफलना प्राप्त होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अप्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातन्व की वृद्धि होती है। आठवीं नीच-वृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म स्था भाग्य की हानि होती है और यश की भी कमी रहती है।

'ब्रिकिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिक लग्न: तृतीयभाद: मगुल तीसरे भाव में शबु 'शनि' की राश्चि पर



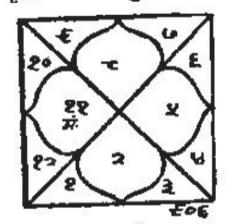
मिथत उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों से सामान्य वैमनस्य रहता है। चौथी दृष्टि से स्वराणि में पण्डभाव को देखने से शबु-एश्र पर विजय प्राप्त होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म का यथाविधि पालन नहीं होता तथा भाग्य की अपेक्षा पुरुषार्थ का अधिक भरोसा रखा जाता है। आठवीं मित-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता,

राज्य एवं व्यवसाय के नक्ष में सुख, सहयोग, लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'बृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'बतुर्वमाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृक्ष्यिक सम्म: चतुर्यभाद: भंगल चौथे भाव में शतु 'शनि' की राशि पर



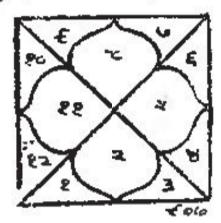
स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। चौथी सामान्य शतु-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री।पक्ष से सामान्य मतभेद-युक्त सुख प्राप्त होता है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता मिलती है।

मातवीं मित-दृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में मुख, सफलता, लाभ एवं यश की प्राप्ति होती हैं। आठवीं मित्रदृष्टि

से एकादश भाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है।

'वृश्चिक' सन्त की कुण्डली के 'पंचयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष्टिक्कलन्तः पंचयभावः संगत



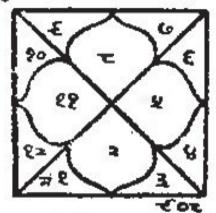
परैनवें भाव में सित्र 'गुरुं की राशि पर
स्थित 'मगल' के प्रभाव से जातक की कुछ किन्
नाइयों के साथ विद्या-बृद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र
में सफलता मिलती हैं। मन्नु-पक्ष पर विजय पाने
के लिए गहरी चाल चलनो पड़ती हैं। चौथी मित्रवृद्धि से अध्यम भाव को देखने से आयु एवं पूरानत्त्व की वृद्धि होती हैं। सातवीं विद्य-दृष्टि से
एकादणभाव को देखने से आमदनी खूब होनी है।

आठवीं अनु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने

के कारण खर्व अधिक रहने से परेशानी का अनुभव होता है। तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है।

'वृश्चिक' सम्म की कुष्डली के 'बच्ठमाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकत्रम्नः पष्ठभावः सगल

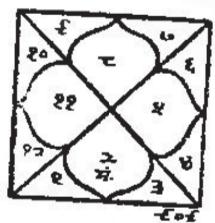


छठे आव में स्वराशि में स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को शत्नु-पक्ष में सफलता मिलती है। चौथी नीच-दृष्टि से नवसभाव को देखने से आध्य तथा धमें में कमी रहती है। सम्मान में भी कमी आती है।

सातवीं शक् -दृष्टि से द्वादश भाव से देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ होता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि

में प्रयमधाय की देखने ने भरीर के प्रभाव तथा आत्य-बल में सामान्य वृद्धि होती है। 'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमधाव' स्थित 'संगस' का फसादेश

वृश्चिकलग्नः सप्तमभावः मगल



सातवें भाव में शत् 'सुक' की राणि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है, जननेद्रिय में विकार होता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष में सुख-सम्मान

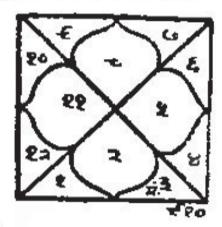
तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

सातवी दूष्टि से स्वराशि के प्रथममाव की

देखने मे शारीरिक शक्ति एवं व्यक्तित्व का विकास होता है। आठवीं मिन्न-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-कुट्न्य का सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति मानान्यतः सुखी रहता है।

'बृश्चिक' सम्म की कृष्यसी के 'अध्यमभाव' स्थित 'अंगल' का कलादेश

बुश्चिकतन्तः अध्यमभावः भगल



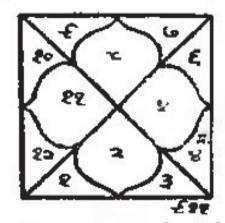
अंदिनें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के कारीरिक मंन्दियं तथा सुख में क्सी आती है। आयु तथा पुरातस्य के लाभ में भी कमी रहती है। पेट में विकार रहता है तथा शबु-पक्ष से परेशानी होती है। चौथी मिलदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आगदनों अच्छी रहती है।

सातवी मिल-दृष्टि से द्विसीयभाव को देखने से धम तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि विशेष प्रयत्न

से हीती है। अठवीं उच्च दूष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-शहन की शक्ति भाष्य होती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'बृश्चिक' सम्म की कुष्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मगल' का कलादेश

बुक्तिकलग्न : नवसभाव : स्वल



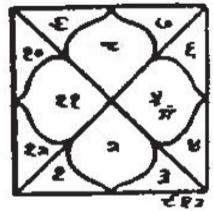
नवे भाव में मिद्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के 'मगल' के प्रभाव से जातक के धर्म स्था भाग्य में कुछ कमी रहती है। शबु-पक्ष के अंतर से भी भाग्योन्नति में जावा पड़ती है। वैसे जातक धनी होता है। चौथी शबु-दृष्टि से द्वादण-भाव को देखने संखर्च अधिक रहता है सथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध सं लाभ होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से सुतीयभाव की देखने से पराक्रम तथा भाई-सहिन के मुख में वृद्धि होती

है। अटबी मन्द्रिय में चतुर्थभाव को देखने सं माता, भूमि सया अवन के सुब में कमी नहनी है।

'बृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'बशममारव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : दशमभाव : संगल



दमने भाव में मिद्र 'सूर्य' की राशि पर 'स्थित' मगल के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के नाथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में शुन्त, नफलता, सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। शतु-पक्ष पर विजय मिलती है। चौथी दृष्टि से स्वराणि में प्रथम भाव की देखने से जारीरिक शक्ति प्रवस रहती है। ऐसा व्यक्ति सगकत तथा स्वाभिमानी होता है।

शतवीं शत्-वृष्टि से चन्धंगाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन के मुख में कुछ कमी रहती है। आठवीं मित्रवृष्टि से एक्स भाव की देखने से विद्या, बुढि एवं सन्तान के कित ने सफलना मिलनी है।

'वृत्रिवक' लग्न की कुच्छली के 'एकावशमाव' स्वित 'मंगल' का कलादेश

बृश्चिकलम्न : एकादमधाव : भगल

22

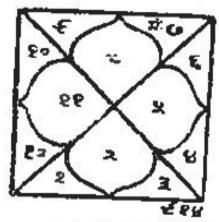
E E ग्यारहवें भाव में मित 'बुध' की राशि पर स्थित 'संगल' के प्रभाव से जातक कारीरिक परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ कमाता रहता है। परन्तु शक्ष-पक्ष से कुछ कप्ट होता है तथा शरीर रोगी भी हो जाया करता है। चौथी मिल्न-वृष्टि से इतीयभाव को देखने से धन एवं कुंटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या, बुद्धि एवं

सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में बण्ठम भाव की देखने से शतु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है तथा ननसाल पक्ष से लाभ होता है।

'बृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'हादशमाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृध्विकलग्न: द्वादशभाव मगल बारहवें भाव में श्रद्ध 'शुक्र' की राशि पर



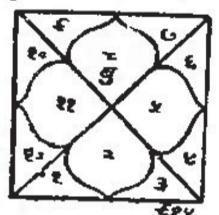
स्थित 'मंगल' के प्रभाष से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख-शान्ति मिलती है। चौबी उच्च-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती हैं। सातबी दृष्टि से स्वराशि में पष्ठ-भाव को देखने से शक्ष-पक्ष पर विजय मिलती रहती है।

साठवीं जलु-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री से कुछ मैमनस्य रहते हुए भी सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में कुछ परेशानियों के साथ लाभ होता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'बुध'

'बृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अयमगाव' स्थित 'बुध' का कलादेश

बृश्चिकत्यनः प्रथमभावः संगल

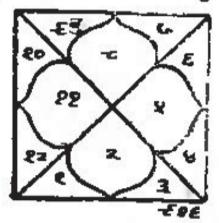


पहले भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुघ' के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है। उसे आयु एवं शक्ति का लाभ भी होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से मप्तमभाव की देखने से स्त्री-पक्ष में कुछ कठिनाई के लाभ सहयोग मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी परिश्रम के बाद हो सफलता मिलती है।

"युश्चिक" लग्न की कुच्हली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुघ' का फलादेश

वृश्चिकलन्तः द्वितीयभावः सुध



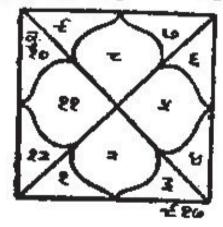
दूसरे भाव में मित 'शुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से ज्यातक की धन तथा कुटुम्ब का श्रेष्ठ मुख प्राप्त होता है।

सातवी दृष्टि से स्वराणि में अष्टमभाव को देखने से आयुकी वृद्धि होती है तथा पुरातस्व का नाम होता है।

ऐसी ग्रहस्थिति वासा व्यक्ति गान-शौकत का जीवन विताता है।

'वृध्धिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुघ' का फलादेश

वृश्चित्रगम : तृतीयमास : सुध



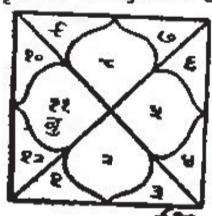
तिमरे भाव में मित्र 'शिवि' की न्यशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पराश्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-दिहिनों का सुख भी प्राप्त होता है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं शक्षु-दृष्टि से नवम भाद को देखने से जातक स्वविवेक-शक्ति हत्रा भाग्य एवं धर्म की उन्निति करता है।

ऐसां व्यक्तिसुखी, धनी. धर्मीत्मा तथा परात्रमी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थमार्थ' स्थित 'बुध' का फलादेश

धृश्चिकलग्न : चतुर्बभाद : सुध

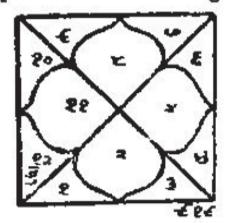


सौथे आव में, मित-'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव में जातक की माता, भूमि एवं भवन का मुख प्राप्त होता है तथा आयु एवं पुरातस्य की वृद्धि भी होती है।

सातवीं मित-दृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के लाभ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सुब, सफलता, लाभ तथा यम की प्राप्ति होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली से 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : युध

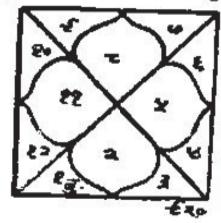


पौनवें भाव में मिद्र 'गुर' की राशि पर स्थित नीन के 'बुघ' के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में कष्ट का सामना करना पड़ता है, परन्तु स्विववेक-शक्ति से लाभ् भी होता है। बागु के क्षेत्र में कुछ परेशानी आती है। पुरातत्त्व का स्वल्प लाभ होता है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से स्वराणि में एकादण भाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है तथा जीवन सुख से बीतता है।

'बृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'बच्चमाव' स्थित 'बुध' का कलादेश

वृश्चिक लग्न : पप्ठभाव : बुध

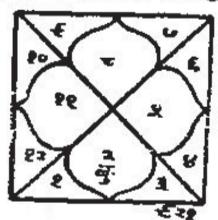


छठे भाव में मिद्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुघ' के प्रभाव से जातक शतुपक्ष पर विषय पाता है। कुछ कठिनाइयों के साथ आनदनी बढ़ती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी हीता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी मिलता है।

'बृश्चिक' लान की कुन्छली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तमभाद : बुध

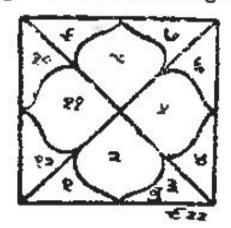


सातर्वे भाव में मिद्र 'झुक' की राशि पर स्थित 'बुघ' के प्रभाव से आतक की स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा अायु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

सातवीं मिलदृष्टि से प्रथममांव को देखने से भारीरिक बल एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा दैनिक जीवन लाभ-सौकत से व्यतीत होता है।

'वृदिचक' सन्त की कुण्डलों के 'अध्यमधार' स्थित 'बुध' का फलादेश

बुश्चिक सम्न : अप्ट्रम् अत्य : सुध

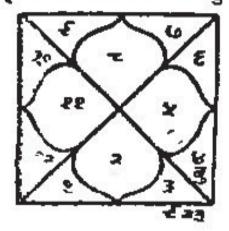


आठवें भाव में स्वराणि स्थित 'युध' के प्रभाव से जातक की अन्यु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातनी मिलदृष्टि से मुतीयभाव की देखने से जातक स्वविदेक द्वारा घन का सचय करता है। उसे कौटुम्बिक सुन्त भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अमोरी दंग का जीवन विताता है।

'वृश्चिक' लान की कुष्टली के 'मवमभाव' स्थित 'बुख' का फलादेश

वृष्टिक लग्न : नबमभाव : बुध

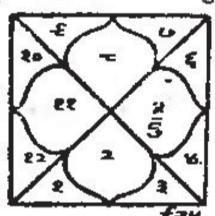


नवें भाव में मित 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुघ' के अभाव से जानक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। साथ ही अख़ु तथा पुरातत्त्व का साभ भी होता है।

मातवीं मिलदृष्टि से तृतीयभाव की देखने से कुछ कमियों के साथ ही भाई-विहिन का सुख मिलता है तथा पराकम की वृद्धि भी होती है। ऐसा व्यक्ति प्रायः सुखी तथा भाग्यभावी जीवन विताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमधार्य' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक् लग्न । दक्षमभाष : बुध

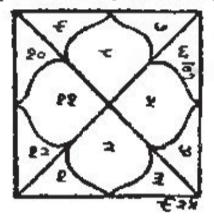


दमवें भाव में मिल 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के लाभ पिता का सुख एवं लाभ तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सम्मान और सफलता की प्राप्ति होती है। पुरातस्व एवं आयुका लाभ भी होता है।

सातवीं मिलदृष्टि से चतुर्य भाव की देवने से कुछ कठिनाइयों के लाभ माता, भूमि एवं भवन आदि का सुख भी प्राप्त होता है।

'वृश्चिक' सम्म को कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुव' का फलादेश

बृष्टिचक लग्न । एकादशभाव : बुध



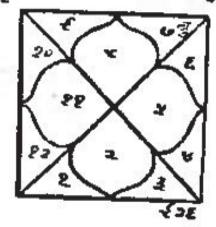
ग्यारहवें भाव में स्वराणि-स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है। आयु तथा पुरासस्य का भी न्याभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साव विद्या, बुद्धि एवं सन्तान केक्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है।

ऐसाव्यक्ति कुछ रूखे स्वभाव का भी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'हादशमाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कृष्टिकः लग्नः द्वादशभावः बुध



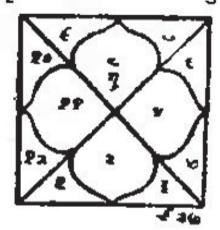
बारहवें भाव में मित 'शुक्त' की राणि पर स्थित 'शुघ' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संवध से लाभ भी होता है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी बढ़ती है।

सातवीं मिलदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शक्ष-पक्ष में विवेक-बुद्धि एवं विनम्नता से काम निकालता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन भ्रमणशील होता है तथा चित्त में कुछ अशान्ति भी बनी रहती है।

'बृश्चिक' लग्न में 'गुर'

'बृश्सिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथममाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : प्रथमभाव : गुरु

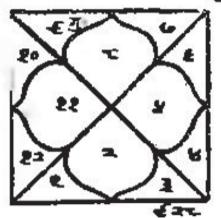


पहले अाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति सथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। पौचवीं दृष्टि से स्वराधि में पंचम आव को देखने से विद्या, बुद्धि एव सन्तान के क्षेत्र में श्रेष्ठ सफलता मिलती है।

सातवीं शतुद्धि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ मतभेद रहता है सथा दैनिक व्यवसाय में पहले सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं, किन्तु बाद में लाभ भी होता है। स्त्रो से भी सुख मिलता है।

नवीं उक्सदृष्टि से नवम् भाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की विशेष उन्निति होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी तथा भाग्यशाली होता है। श्यक' लाम की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

न्त्रक लग्न : द्वितीयभाव : युध



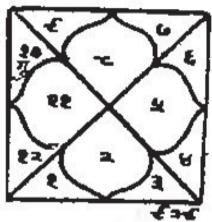
दूसरे भाव में स्वराशि में स्थित 'गुह' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का उसम सुख प्राप्त होता है। सन्तान-पक्ष में कुछ कमी रहती है। पांचवी मिलदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शबू-पक्ष में खुदिमानी से सफलता मिलती है।

सातवीं मिलदृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती-है। नवीं मिलदृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, सम्मान

भ तथा यश की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बुढिमान तथा धनी होता है।

रियक' सन्न की कुण्डली के 'तृतीयमाव' स्थित 'गुर्ड' का फलादेश

स्वक अग्नः तृतीयभाद: गुरु



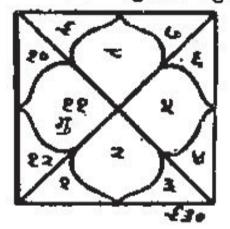
तीसरे भाव में शत् 'सनि' की रामि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से आतक को माई-वहिन के मुख में बाधा आती है तथा पराक्रम में भी कभी रहती है। विद्या, धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कम रहता है। पौचवीं शतुद्दिट से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ बैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय में कठिनाई से सफलता मिसती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से नदमभाव को देखने से भाग्य सभा धर्म की उन्नति होती है।

तिं मिलवृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में खूब वृद्धि होती है। ऐसा कि सुखी तथा धनी होता है।

श्चिक' लग्न की कुन्डली के 'बहुर्यभाव' स्थित 'गुढ' का फलादेश

श्चकः लग्न : चतुर्वमाद : गुरु

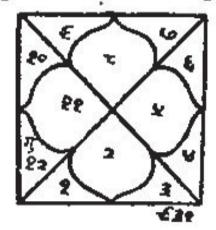


वीये भाव में अनु 'शनि' की रामि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का माता के साथ कुछ वैमनस्य रहता है तथा भूमि एवं धवन का सुख प्राप्त होता है। विद्या तथा सन्तान-पक्त में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। पौचवीं मित्रपृष्टि से खष्टमभाय को वेखने से अोग्र तथा पुरातस्य का साथ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशममान को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में खाभ.

ब्र, सहयोग तथा सम्मान मिलता है। नवीं शतुदृष्टि से द्वादशभात की देखने से में की अधिकता रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों से सामान्य जाभ होता है। 'बृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'यंचमभाव' स्थित 'गुढ़' का फलादेश

वृक्ष्यिक लग्नः पंचमभावः गुरु

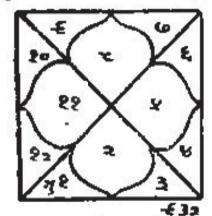


पौषवें भाव में स्वराशि-स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक विद्या, बुद्धि एवं भन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता घाष्त करता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी उसे मिलता है। पौषवीं मित्र तथा उच्चदृष्टि से नक्मभाव को देखने से धर्म सभा भाग्य की विशेष उन्तति होती है।

सातवीं मिल्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है। नवीं मिल्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सीन्दर्य, शक्ति,

सम्मान, प्रतिष्ठा तथा यश की बृद्धि होती है। ऐसा व्यक्तिबड़ा ऐश्वर्यक्षाली होता है। 'बृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'बष्ठभाव' स्थित 'गुर्य' का फलादेश

बृश्चिक लग्न : षष्ठभाव : गुरु

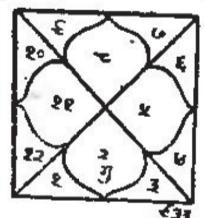


छठे भाव में मिद्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरुं के प्रभाव से जातक शबु-पक्ष में बुदि-बल से सफलता पाता है तथा धम एवं कुटुम्ब के कारण झगड़ों में फंसता है। विद्या तथा सन्तान पक्ष कमजोर रहता है। पौचवीं मिद्रधूष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा लाभ, सुख, सम्मान आदि की श्राप्ति होती है।

सातवीं सन्नुदृष्टि से द्वादशभाय की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की बृद्धि होती है। कुटुम्ब से कुछ बैमनस्य भी रहता है।

'बृश्चिक' लग्न की कुच्छली के 'सप्तममाब' स्थित 'गुर' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तममाद : गुरु



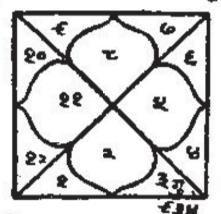
सातवें भाव में शतू 'शुक्त' की राशि पर स्थित 'शुक्त' के प्रभाव से जातक की सामान्य मतभेदों के वावजूद स्त्री का खेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में सफलता मित्रती है। पौचवीं मित्रदृष्टि से एकादशमान की देखने से आमदनी खून रहती है।

सातवीं भिन्नदृष्टि से प्रयममान की देखने से सारीरिक सौन्द्रवं तथा प्रमाव की प्राप्ति होती है। नवीं नीचदृष्टि से मृतीयभाव की देखने से

भाई-दहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी का अनुभव होता है !

'कृष्टिकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमधाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : अध्यक्षभाव : गुरु



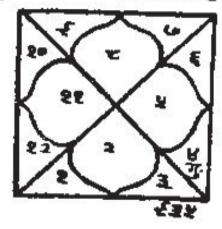
आठवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरावत्त्व का अंष्ठ लाभ होता है, परन्तु विद्या, बुद्धि, सन्तान, धन एवं कुटुम्ब के सुख में कमी रहती हैं। पाँचवीं शबुद्धिट से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव

की देखने से धन तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि होती है। नवीं श्रवृद्धि से चतुर्यभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कठिनाइशों के साथ मिलता है।

'बृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'बदममाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

बृश्चिक लग्न : नवमभाव : गुरु

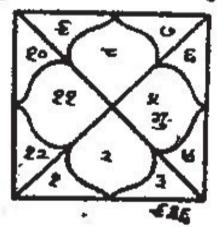


नवें भाव में विद्य 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित उच्च के 'गुरु' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। पौचवीं, मिलदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से भारीरिक प्रभाव एवं मान सम्मान की उपलब्धि होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से हृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराणि में पंचमभाव की देखने

से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि की विशेष जन्नति होती है तथा जातक यशस्वी बनता है । 'बुष्यिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुरु' का फलादेश

बुश्चिक लग्न : दशमभाव : युरु



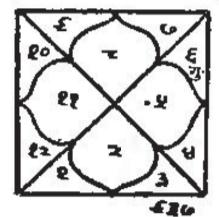
दसनें भाव में विद्य 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'युद' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, लाभ, सफलता संधा यश की प्राप्ति होती है। पौचवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव की देखने से धन तथा कृदुम्ब के सुख की वृद्धि होती है।

सातवीं शतूर्विट से पंचमभाव की देखने से माता, शूमि तथा भवन का सुख कुछ असन्तोष के साथ प्राप्त होता है।

नवीं मित्रवृष्टि से चन्डभाव की देखने से शत-पक्ष में बुद्धिमानी से सफलता एवं निजय प्राप्त होती है।

'बृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'श्कादशसाव' स्थित 'गुर' का फलखेश

बृष्टिचकलग्न: एकादशभाव: गुरु स्यारहर्वे भाव में मित्र 'युर्घ' की राशि पर



स्थित 'गुरुं के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। पौचवीं शक्षु तथा नीच दृष्टि से तृतीयभाव में देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराकम में कमी आती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमधाव की देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान-पक्ष की विशेष उन्नित होती है। नवीं क्षतु-दृष्टि से सप्तमधाव की देखने से पत्नी के साथ कुछ वैमनस्य रहते हुए भी लाम होता है

सथा दैनिक व्यवसाय में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

'बुश्चिक' सन्त की कुण्डली में 'द्वादशमाव' स्थित 'शुरु' का फलावेश

वृश्चिक लग्न: हादशभाव: गुरु बारहवें भाव में भक्षु 'शुक्र' की राशि पर



स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्ध भी कमजीर रहते हैं। धन, कुटुम्ब, विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में भी कभी रहती है। पौचवीं शतु-दृष्टि से चतुर्घभाव को देखने से भाता, मूमि एवं भवन के सुख में कभी रहती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से चष्ठभाव की देखने से शतु-पक्ष में चतुराई से सफलता प्राप्त होती है। नवीं मिल दृष्टि से अब्दमभाव को देखने से आयु तथा पुरातस्य की

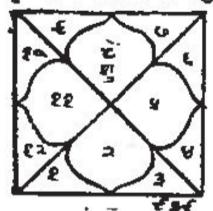
अच्छी शक्ति प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाले जातक का चिस प्रायः अभान्त ही बना रहता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'शुक्र'

'बुश्चिक' सम्म की कुष्पली में 'प्रयमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलारेश

बुल्विक सम्ब : प्रयमभाव : शुक्र

33



पहले भाव में अनु 'संगल' की राशि पर स्थित 'शुक' से प्रभाव से जातक का खरीर कमजोर रहता है, परन्तु प्रभाव, चातुर्य एवं कार्य-कुशवता में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि , में सप्तमभाव को देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होती रहती है, परन्तु शुक्र के व्यवश होने के कारण हन क्षेत्रों में सामान्य कठिनाइयों का सामना भी करना पढ़ता है।

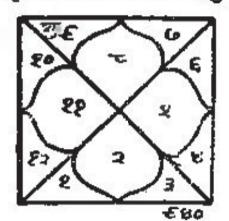
'बुविश्वक' लग्न की कुष्डली में 'हितीयमाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

यूश्चिक लग्न : द्वितीयभाव : सुक

दूसरे भाव में सामान्य शावु 'गुर' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के धन सथा कौटुम्बिक सुख में कुछ परेशानी रहती है यद्यपि धन का साम भी होता है।

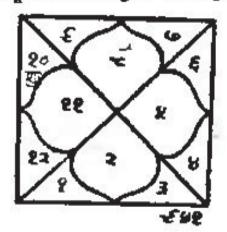
सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु में वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ कम रहता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा चतुर समझा जाता

है ।



'वृदिसक' लग्न की कुष्डली में 'तृतीयमाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

बुंश्चिकलग्नः तृतीयभावः सुक

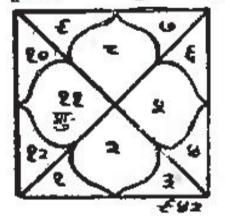


तीसरे आद में मिन्न 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्त' के प्रभाव से जातक की भाई-बहिन के सुख तथा पुरुषायें में कमी प्राप्त होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ भी होता है। स्त्री-पक्ष में भी कुछ कमी रहती है।

सातनी शतुद्धि से नवमभाव की देखने से भाग्योन्नति में कुछ कमी रहती है सथा धर्म का पालन भी थोड़ा ही होता है।

'बुविचक' लग्न की कुष्यली में 'बतुर्यमाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : चतुर्थभाव : शुक

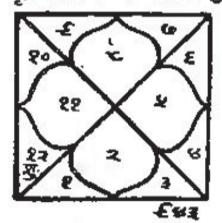


चीये जाद में जित 'शनि' की राजि पर स्थित 'शुक' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि सथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। स्त्री-पक्ष भी कमजोर रहता है। बाहरी सम्बन्धों से सुख प्राप्त होता है और खर्च आराम से चलता रहता है।

सातवीं अनु-दृष्टि से दशमणान की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद लाभ, सुख, यश एवं सफलता की प्राप्ति होती रहती है।

'बृष्टिबक' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

विश्विक लग्न : पंचमभाव : शुक

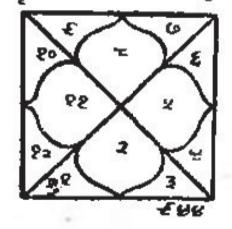


पाँचवें माद में सामान्य माद्यु 'गृष्ठ' की राशि पर स्थित उच्च के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कुछ कभी के साथ सफलता मिलती है, परन्तु ग्रह किसी कला का विशेषण भी अवश्य होता है। ऐसा व्यक्ति स्त्री के प्रभाव में रहने वाला तथा वाक्-चतुर होता है। उसे बाहरी सम्बन्धों से शक्ति एवं लाभ भी प्राप्ति होता है।

सातवी नीच-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी के मार्ग में भी कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'बुश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'बष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

बुश्चिक लान: पष्ठभाव: शुक

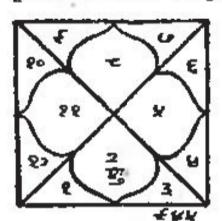


छठे भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा शतु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। यूहस्थी के संचालन में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि में द्वादणमाय को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अधिक परिश्रम द्वारा सामान्य लाभ प्राप्त होता है तथा खर्न को अधिकता बनी रहती है।

'ब्हिक्क' लग्न की कुष्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : सप्तमभाव शुक

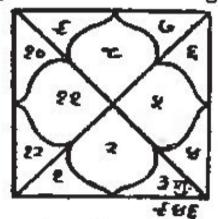


सातवें भाव में स्वराधि-स्थित 'शुक्त' के प्रमाद. से जातक की स्त्री एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है। वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से खपना खर्च चलाने में सहायता भी मिलती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बुढिमान होता है।

सातयीं शतुब्धि से प्रथमभाय की देखने से शरीर में दुवंलता रहती है, फिर भी जातक यशस्वी, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला तथा कार्य-कुश्ल होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डलों के 'अष्टमधाव' स्थित 'शुक' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : अध्टमभाव : शुक्र



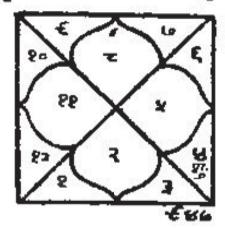
आठवें भाव में मित्र 'बुघ' की राशि पर स्थित 'शुक' के प्रभाव से जातक को आयु सथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में संकटों तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यही स्थिति स्त्री तथा व्यवसामके पक्ष में भी रहती है, परन्तु गुप्त चातुर्य एवं कठिन परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त होती है।

सातवीं मातु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-सचय तथा कीटुम्बिक सुख में भी कठिनाइयाँ

अर्जी हैं। बड़ी चतुराई से काम लेकर जातक किसी तरह अपनी इज्जत बचाता है।

'वृदियक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्नः नवमभावः शुक्र

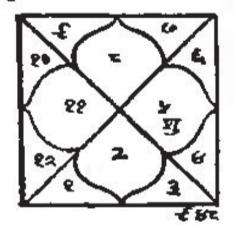


नवें भाव में मातु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रमाव से जातक की भाग्योन्नित तथा धर्म-पालन के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं। स्त्री-पक्ष से भी परेशानी रहती है। यह बढ़ी च्छु-राई से काम निकासता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ उठाता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-वहिन एवं पराक्रम के क्षेत्र में भी असन्तोष-जनक स्थिति बढी रहती है।

'बृश्चिक' लान की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : दशमभाव : सुख

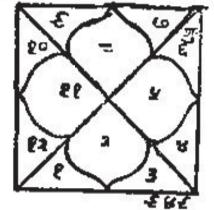


दसवें माद में मादु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक' के प्रमाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्रमें कुछकठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। स्त्री सथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कमी धनी रहती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से चतुर्यभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख-सहयोग प्राप्त होता है।

'बृश्यिक' लग्न की कुष्यली के 'एकादराभाव' स्थित 'सुक' का फलादेस

वृश्चिकलग्न: एकादसमाव: शुक ग्यारहर्वे भाव में मित्र 'कुछ' की राशि

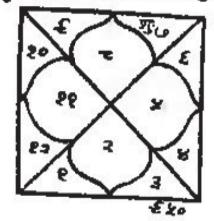


पर स्थित नीच के 'शुक' के प्रभाव से आतक की आमदनी में कमी आती है। स्त्री सथा दैनिक व्यवसाय का खेद भी असन्तोषजनक रहता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से चातुर्व द्वारा कुछ लाम भी निलता है।

सातनी उच्च तथा बाबु दृष्टि से पचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु सन्तरन-पक्ष में कुछ कमजोरी बनी रहती है।

'वृश्चिक' सन्त की कुण्डली से 'हादराभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेस

वृश्चिकलग्न : द्वादशभाव : शुक्र



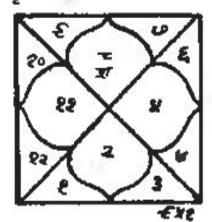
वारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक' के प्रभाव से आतक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष में भी कुछ परेशस्तियाँ रहती हैं।

सातनीं बाबु-दृष्टि से षष्ठमाव की देखने से बाबु-पन्न में भी कुछ परेशानियों के बाद ही सफलता प्राप्त होती है।

'वृश्चिक' लग्न में 'शनि'

'बुश्चिक' सग्न की कुण्डली के 'अयमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकश्चनः प्रथमभावः प्रति



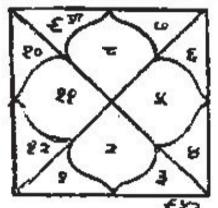
पहले भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सिन' के प्रभाव से आतक का स्वभाव शान्त तथा छग्न दोनों प्रकार का होता है। माता, भूमि तथा अवन का सामान्य सुख मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराणि में तृतीयभाव की देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-विहन का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के सेलमें सफलता मिलती

है। दसवीं शबु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के बादे ही सफलता मिलती है।

'वृदिश्रक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सनि' का फलादेश

वृश्चिकलभ्नः द्वितीयभावः शनि



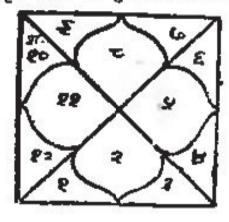
दूसरे भाव में भव 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को धन, कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातस्य की वृद्धि होती है। दसवीं

मिल-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुखी तथा धनी जीवन बिताता है।

'बृश्चिक' लग्न की कृष्यलों के 'तृतीयचाव' स्थित 'शनि' का फलावेश

बृश्चिकलग्न : तृतीयभाव : शनि



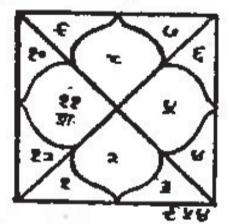
तीसरे माद में स्वक्षेत्री 'शिन' के प्रभाव से जातक को भाई-विह्नों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है। तीसरी श्रेष्टु-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

सातवीं शतु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य की उन्नति होती है तथा मतभेदों के साथ धर्म का भी पालन

होता है। दसवीं उच्च तथा मिल-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अच्छी तरह चलता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'बृश्चिक' लान की कृष्डलों के 'बतुर्वभाव' स्थित 'शर्नि' का फलावेश

वृश्चिकलग्न : चतुर्यभावं : शनि



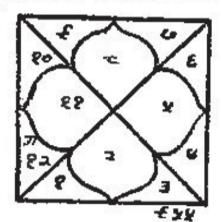
चौथे माद में स्वराशि-स्थित शिनि के प्रमाव से जातक को साता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी बृद्धि होती है। तीसरी नीच-दृष्टि, से षष्ठभाव को देखने से शतू-पक्ष द्वारा अशान्ति मिलती है।

सातवीं मानु-दृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता से मतभेद रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी अधिक सफलता नहीं मिलती। दसवीं शबू-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक

सीन्दर्य में कुछ कमी रहती है फिन्तु जातक बहुत परिश्रमी होता है।

'ब्रियक' सम्म की कुण्डली के 'यंचमभाव' स्थित जाति' का फलादेश

वृश्चिकलग्न: पचमभाव: मनि

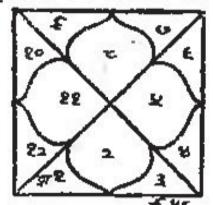


पीचवें भाव में शक्षु 'गुरु' की रागि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से आतक को सन्तान-सुख ती मिलता है, परन्तु सन्तान से मतभेद भी रहता है। विद्या-बुद्धि पर्याप्त रहती है। माता से वैमनस्य रहता है तथा भूमि-भवन का सामान्य सुख प्राप्त होता है। तीसरी मिल-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सुख एवं सफ-लता की प्राप्ति होती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी अच्छी रहती है। दसवीं शतु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कुटुम्ब से वैमनस्य रहता है तथा अधिक प्रयत्न करने पर भी धन का विशेष संचय नहीं हो पाता।

'वृद्धिक' लग्न की कुष्डली के 'वध्द्रभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

बृश्चिकलग्न : पष्ठभाव : गनि



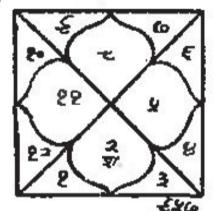
छठे भाव में शत्नु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक शत्नु-पक्ष में युक्ति से काम निकालता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी अल्प माहा में प्राप्त होता है। तीसरी मिद्र दृष्टि से अव्हमभाव की देखने से आयु तथा पुरातत्व का लाम होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध

में लाभ होता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव की देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा विरोध रहते हुए भी भाई-बहिनों का सुख मिलता है।

'बुश्चिक' लग्न की कुम्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष्टिकलग्न: सप्तमभाव: शनि



सातवें भाय में मित्र 'शुक' की राशि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा वैनिक व्यवसाय के सेस में सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। तीसरी शासु-वृष्टि से नवमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं शत्नु-दृष्टि से प्रयममाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है तथा अम

अधिक करना पड़ता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्यमाथ की देखने से माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। दैनिक जीवन प्रभावशाली तथा आमोदपूर्ण रहता है। 'वृदियक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शमि' का फलावेश

वृश्चिकलभ्नः अष्ट्रमभावः शनि

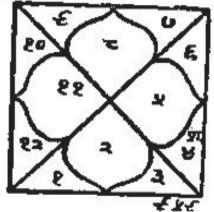
आठवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर

स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु माला के सुख में बहुत कभी आती है। भूमि, भवन तथा भाई-बहिनों का सुख भी कम ही मिलता है। तीसरी शबु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से वैभनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। सातवीं शबु-दृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन-संचय में कभी तथा कुटुम्ब से वैमनस्य

रहता है। दसवीं मायु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पक्ष अपूर्ण रहता है।

'बृश्चिक' लान की कुथ्बली के 'नवमश्राव' स्थित 'शनि' का फलावेश

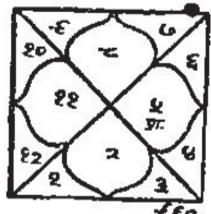
वृश्चिकलान: नथमभाव: शनि नवें भाव में शक्षु 'चन्द्रमा' की राशि पर



स्थित शनि के प्रभाव से आतक की भाग्योन्नति कुछ इकावटों के साथ होती है तथा धर्म का पालन भी कठिनाई सहित होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी खूब रहती है तथा धन का अच्छा लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिन

के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। दसवीं नीच तथा शतु-दृष्टि से पष्टमाय की देखने से शतु पक्ष में परेशानी रहती है तथा ननसाल पक्ष कमजोर रहता है। 'वृश्चिक' स्टब्न की कुष्यती के 'दशमशाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : दशमभाव : शनि

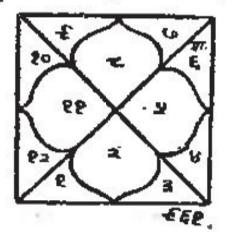


दसवें भाव में शक्षु 'सूर्य' की राशि पर स्थित शिन के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। भाई-वहिनों का सुख भी कम ही मिलता है परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। तीसरी मित्र तथा उच्च दृष्टि से दादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्यभाव की देखने से माता से कुछ मतभेद रहता है सथा भूमि, भवन का सुख प्राप्त होता है। दसवीं भित्न-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है तथा घरेलू जीवन मुखमय बना रहता है।

'ब्रिचक' लग्न की कुथ्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : एकादशभाव : शनि



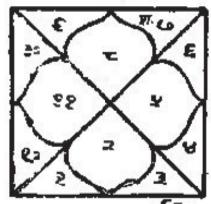
ग्यारह्वें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अच्छी वृद्धि होती है। भाई-बहिन, माता, मूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा परा-कम भी बढ़ता है। तीसरी शबु-दृष्टि से प्रथम भाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आधी है।

सातवीं शतुद्धि से पंचमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या एवं सन्तान

का लाम होता है। दसवी मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से जातक दीर्घायु होता है तथा पुरातत्त्व का लगभ भी होता है।

वृश्चिक' सम्म की कुण्डली के 'द्वादशमाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुञ्चिकलग्नः द्वादशभावः शनि



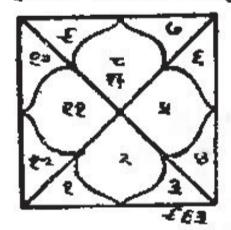
वारहवें भाव में मित 'शुक' की राशि पर स्थित उच्च के 'शिन' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख एवं लाभ की प्राप्ति भी होती है। भाई-बहिन, माता तथा भवन के सुख में भी कुछ कमी आ आती है। तीसरी शक्षु-दृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन-संचय तथा कीट्रस्विक सुख में कमी रहती है।

मित्री नीच-दृष्टि से पष्ठमाय की देखने से मित्रपक्ष से परेशानी रहती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अधिक धनी न होते हुए भी अभीरी हंग से जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'राहु'

'वृश्विक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शहु' का फलादेश

वृश्चिकलम्न : प्रथमभाव : राह्र

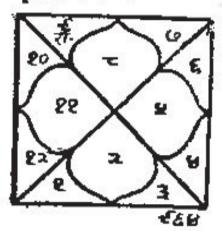


पहले मान में मानु 'मंगल' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर में किसी गुप्त कष्ट अथवा चिन्ताका निवास रहता है। कमी-कभी उसे मृत्यु-सुत्य शारीरिक कष्ट भी होता है।

यह उन्नति के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है। ऐसा व्यक्ति तेज स्वभाव का, स्वायी तथा असुन्दर होता है।

'ब्रुश्चिक' लाम की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

बृश्चिक लग्न : द्वितीयभाव : राहु

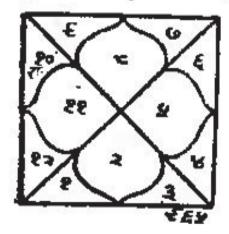


दूसरे भाव में शब् 'शृष्ठ' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रमाव से जातक की धन-प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुम्ब के विषय में चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

अनेक गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर भी वह ऋणी ही बना रहता है। आधिक चिन्ताओं से छुटकारा नहीं पाता।

'वृश्चिक' साम की कुण्डली के 'सुतीयभाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलादेश

वृश्चिक सम्म : तृतीयभाव : राहु

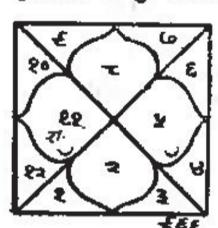


तीसरे भाव में मिक्ष 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसे भाई-बहिनों का सुख भी खूब मिलता है, परन्तु उनके बारे में चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं।

ऐसा व्यक्ति चतुर, हिम्मत वाला, धर्यवान्, असाधारण साहसी तथा कठिन परिश्रमी होता है।

'बुश्चिक' लान की कुक्डलों के 'बतुर्वभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

चृश्चिम लग्न: चतुर्थमाव: राष्ट्र

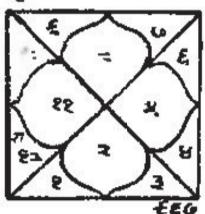


चौथे भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कभी-बनी रहती है।

कभी-कभी पारिवारिक संकटों का सामना भी करना पड़ता है, जिनके निराकरण के लिए उसे मुप्त युक्तियों, हिम्मत तथा धैर्य का सहारा लेना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति होशियार तथा परिश्वसी भी होता है।

'बृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'यंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न: पंचमभाव: राहु

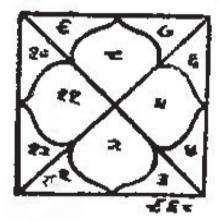


पाँचवें भाव में शतु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव में जातक की विद्याध्ययन तथा सन्तान से पक्ष में कठिनाइयां आती हैं, बाद में कुछ सफलता भी मिलती है।

ऐसा व्यक्ति चतुर, गुप्त युक्तियों में प्रवीण तथा हर समय चिन्तित रहने वाला होता है, परन्तु वह अपनी परेशानियों को किसी पर प्रकट नहीं करता।

'ब्रिंगक' सम्त की कुण्डली के 'बच्चमाब' स्थित 'राहु' का फलावैश

वृश्चिक सग्न: बष्ठमाव: राहु

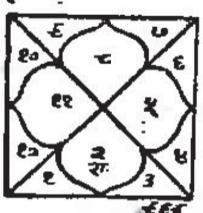


छठे भाव में शतु 'संगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शतुओं पर अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा उन पर विजयी होता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त चातुर्यं, धैयं, हिम्मत, कठिन परिश्रम तथा युक्तियों के बल पर हर प्रकार की कठिना-इयों पर विजय पाता रहता है तथा कभी भी हिम्मत नहीं हारता।

'कृश्चिक' लग्न की कृष्टली के 'सप्तममाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलावेश

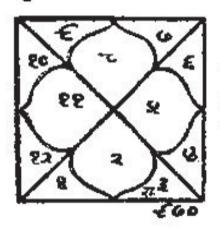
वृश्चिक सन्तः सप्तममावः राहु



सातवें भाव में निक्ष 'शुक्त' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की स्थी तथा व्यवसाय-पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। कभी-कभी स्थी अथवा व्यवसाय के कारण चौर संकटों में भी फैस जाना पड़ता है, परन्तु वह अपनी हिम्मत, युक्ति, चतुराई एवं धैर्य के बल पर चन सब कठिन्नाइयों की पार कर माता है।

'वृश्यक' साम की कुण्डली के 'ठाव्टमभाव' स्थित 'राह्न' का फलादेश

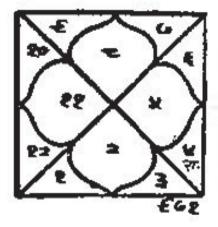
वृश्चिक लग्न : अप्टमभाव : राहु



आठवें भाव में मिल 'बुघ' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा आयु में कृदि होती है। उसका ओदन उमन एवं उत्साह से भरा रहता है। वह बड़े ठाठ-बाट की जिंदगी बिताता है, परन्तु कभी-कभी उसे हानि भी उठानी पड़ती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा यशस्वी भी होता है।

'बुश्चिक' सन्त की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

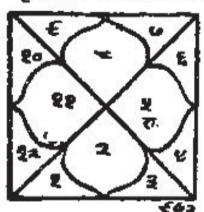
वृश्चिक **लग्न : नव**मभाव : राहु



नवें भाव में मानू 'चन्द्रमा' की गाशि पर स्थित 'राहू' के प्रभाव से खातक की भाग्योन्नति में बहुत बाक्षाएँ आती हैं तथा धर्म के प्रति भी अश्रद्धा रहती है। वह मानसिक चिन्ताओं से प्रस्त रहता है। कई बार निराण भी ही जाता है। अनेक प्रकार के कब्द भोगने के बाद अन्त में उसे थोड़ी-बहुत सफलता मिनती है।

'बृष्टिक' सान की कुष्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

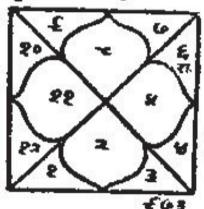
वृश्चिक **लग्नः दशमभाव**ः राहु



दसर्वे भाव में मह्नू 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की अपने पिता द्वारा परेशानी रहती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कष्ट उठाने पढ़ते हैं। कभी-कभी वह अस्यधिक निराश भी हो जाता है। अन्त में धैर्य, साहस एवं चातुयं के बल पर किसी प्रकार उन संकटों पर विजय पाकर थोडी-बहुत उन्नति कर सेता है।

'वृश्चिक' साम की कुछली के 'एकादरामाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : एकादशभाव : राहु

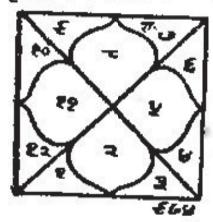


ग्यारहवें भाव में मिल 'बुघ' की राणि परस्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की आमदनी के क्षेत्र में खूब सफलता मिलती है। यह अधिक मुनाफा कमाने के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता।

ऐसा व्यक्ति भीर स्वार्थी तथा चतुर होता है। कभी-अभी उसे आकस्मिक धन-साम होता है, तो कभी अचानक ही भारी घाटा भी चला जाता है।

'बुश्चिक' लाम की कुण्डली के 'द्राधमभाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : राहु

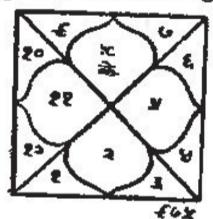


बारहवें भाव में मिल 'शुक्त' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक कर खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे परेशानियाँ रहती हैं। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे कुछ कठिनाइयों के साप लाभ भी होता है। कभी आकस्मिक धन-लाम तो कभी आकस्मिक धन-हानि के अवसर भी उपस्थित होते हैं। अन्य प्रकार के कच्ट भी उठाने पृष्ठते हैं।

'वृदिचक' लग्न में 'केतु'

'वृश्यक' लग्न की कुछली के 'प्रथमनाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : प्रथमभाव : केलू

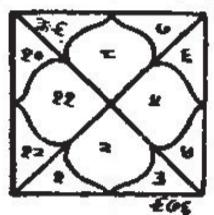


पहले भाव में शत्नु 'मगल' की राक्षि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के शरीर में कई बार चौट लगती है तथा शारीरिक सौन्दर्य में कभी आ जाती है।

ऐसा व्यक्ति स्वभाव का उग्न, दिमाग का कमजोर तथा कठिन शारीरिक श्रम करने वाला होता है। उसके शरीर- पर चोट आवि का कोई स्थायी चिन्ह भी बनता है।

'बूरिक्क' लब्न की कुछली के 'हितीयभाव' स्थित 'केतु' का फसावेस

वृश्चिक सन्तः द्वितीयभावः केतु

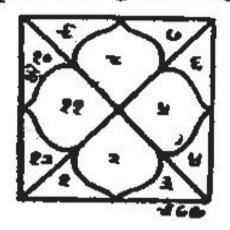


दूसरे भाव में मन्नु 'शुरु' की रामि पर स्थित 'केनु' के प्रभाव से जातक सन-प्राप्ति के लिए प्रयस्त करता है। कभी-कभी आकस्मिक रूप से भी धन-लाभ हो जाता है। कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी बनी रहती है।

ऐसा व्यक्ति अपनी अतिष्ठा बनाये रखने के लिए सदैव सतकं बना रहता है।

'बृश्तिक' सम्त की कृष्यती के 'तृतीयमाव' स्थित 'केतु' का फसादेश

बृश्चिक सम्तः तृतीयमावः केतु



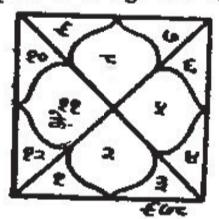
तीसरे भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। भाई-यहिनों के संबंध के कष्ट का अनुभव होता है।

श्चगड़े-संसटों में उसे सफलता प्राप्त होती है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, परिवासी, धैर्यवान् तथा हिम्मती होता है।

'बुरिवक' सन्त की कुम्बली के 'बहुमंत्राव' स्वित 'केतु' का फलादेश

कृश्चिक सन्तः चतुर्वभावः केतु

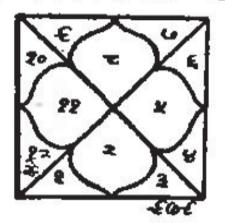


नीय भाव में मित्र 'सिन' की राणि पर स्थित 'केंद्र' के प्रभाव से जातक की अपनी माता के कारण परेणानी उठानी पड़ती है। भूमि तथा भवन के सुख में भी कमी रहती है। चित्त सदैव बमान्त रहता है।

कंठिन परिश्रम के बाद उसे कुछ चैन मिलता है। स्थान बदल देने बर्षात् परदेश में रहने से कुछ सुख मिलता है। घर में उसे सदैव अक्तान्ति हो बनो रहती है।

'वृश्यक' लब्त की कृष्यली के 'वंचनमाव' स्थित 'केंद्रु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : केंद्र

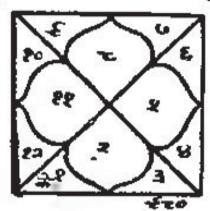


पौजर्वे भाव में शतु 'बुष' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक तो विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ काती हैं तथा सन्तान-पक्ष से भी कब्ट मिलता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, दूढ़-निक्तबी, गुप्त युक्तियों से काम तेने वाला, धैयंबान् तथा निक्र होता है। यह अपनी मुप्त चिन्ताओं की किसी पर प्रकट नहीं होने देता।

'बुरिकक' खप्त की कुछली के 'बळमाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

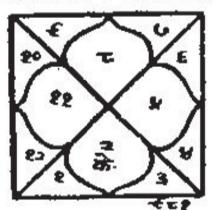
बृष्टिक लग्न : बष्ठभाव : केंद्र



छठे भाव में शतु 'मंगल' की राजि पर स्थित 'केंद्र' के प्रमाव से जातक शतु-पक्ष पर अपना विकेष प्रभाव रखता है। यह झगड़ों, कठिनाइयों आदि पर अपने साहस, मुप्त युक्ति, धैर्य, परिश्रम एवं बहादुरी के बस पर विजयपाता है। उसका ननसाल-पक्ष कमजोर रहता है।

'बूरिक्क' सम्म की कुन्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केंतु' का फलावेश

बुश्चिक लग्न : सप्तमभाव : केंद्र

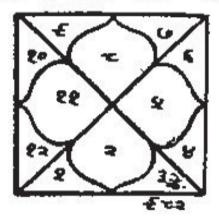


सातवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राक्षि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से भोर कष्ट मिलता है। गृहस्य जीवन में अनेक संकट उठ खड़े होते हैं, दैनिक व्यवसाय के सेन्न में भी बड़ी कठिनाइयां जाती हैं।

ऐसा व्यक्ति अपनी मुप्त युक्तियों, धैर्य साहस आदि के बल पर संकटों का कुछ निवारण कर पाने में समर्थ ही जाता है।

'बृधिव क' लम्त की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केंबु' का फलावेश

वृश्चिक लग्न : अप्टमभाव : केतु

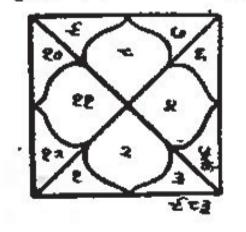


आठवें भाव में मिल 'शुघ' की राणि पर स्थित नीच के 'केतु' के प्रभाव से जातक की अपने जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कच्टों का सामना करना होता है। पुरातस्व की भी हानि होती है।

ऐसा व्यक्ति जीवन-निर्वाह के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय सेता है परन्तु संकटों से युक्ति नहीं मिल पाती।

'बृश्चिक' लग्न की कृष्यली के 'भवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : नवमभाव : केतु

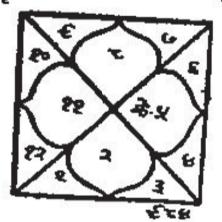


नवें भाव में शतु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बड़े संकट छाते हैं तथा धर्म की हानि होती है।

ऐसा व्यक्ति हर समय जिन्ताओं से जिरा रहता है। कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करता है। गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के अल पर भाग्य को बनाने की चेष्टा करते रहने पर भी सफलता नहीं मिल पाती।

'बुश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

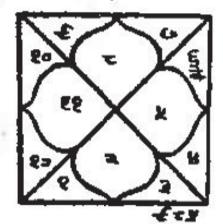
वृश्चिक लग्न । दशमभाव : केंत्र



दसर्वे भाव में शत्नु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की अपने पिछा द्वारा कष्ट प्राप्त होता है। राज्य के क्षेत्र में मान-भंग होता है तथा व्यवसाय-क्षेत्र में घोर संकट खाते रहते हैं। यद्यपि वह धैयें, हिम्मत एवं गुप्त युक्तियों के जाश्रय से अन्ततः थोड़ी-सहुत राहत भी प्राप्त कर सेता है, परन्तु उसका जीवन सुख से नहीं बीतता।

'बृद्दिक' लब्द की कुण्डली के 'एकादरामाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

वृश्चिक लब्न । एकादशभाव : केतु

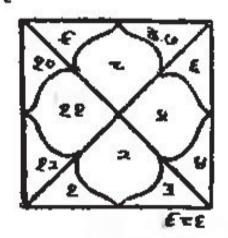


ग्यारहवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। कभी-कभी आकस्मिक धन का लाभ होता है तो कभी-कभी संकट भी आते हैं।

ऐसा व्यक्ति चालाक, स्वार्थी, धूर्त तथा मतलबी होता है। उसे अपनी आमदनी से कभी सन्तोष नहीं होता।

'बृद्धिक' लग्न की कुछली के 'हादशभाव' स्थित 'केतु' का फलावेस

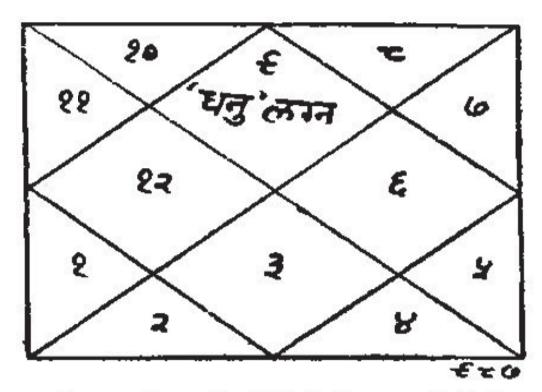
वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : केंतु



बारहवें भाव में मिल 'शुक' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक का खर्ष अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी मिलता है।

वह गुप्त युक्ति, चातुर्य तथा परिश्रम के बल पर अपने खर्च की खलाता है, परन्तु कभी-कभी उसे घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। फिर भी वह अपने धैर्य की कभी नहीं छोड़ता !

'धनु' लग्न



['धनु' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'धनु' लग्न का फलादेश

'धनु' लग्न में लग्न लेने बाला जातक पिंगलवर्ण, बहे दौतों वाला घोड़े-जैसी जीघों वाला तथा सुन्दर स्थरूप वाला होता है। यह अत्यन्त कार्य-कुशल, प्रतिभा-शाली, बुद्धिमान्, सतीगुणी, श्रेष्ठ स्थमाय वाला, सत्य-अतिश्च, पराक्रमी, तथा ऐश्वयंवान् होता है।

ऐसा व्यक्ति याता-प्रेमी, व्यवसायी, बाह्मण तथा देवताओं का अक्त, प्रेम के वश में रहने वाला, मिलों के काम आने वाला, अनेक कताओं का जानकार अववा कवि तथा लेखक होता है। उसे बोड़े पालने का शीक भी होता है।

'धनु' लग्न में जन्म लेने वाला जातक बाल्यावस्था में अधिक सुख भोगता है, मध्यमावस्था में सामान्य जीवन व्यतीत करता है तथा अन्तिमावस्था में धन-धान्य पूर्ण होता है। २२ अथवा २३ वर्ष की आयु में उसे धन का विशेष साम होता है। 'धनुं लग्न वालों के अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८८ से १०६५ के वीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

0

'धनु' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

- १. 'धनु' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८८ के बीच देखना चाहिए ।
- २. 'धनु' लग्न वालों की योचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूवें' का अस्थायी फलावेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'---

- (क) 'मेष' राशि पर श्री ती संख्या ६ पन
- (ख) 'वृष' राशि पर ही तो संख्या ६=६
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६६०
- (घ) 'कर्क' राशि पर ही तो संख्या ६६१
- (च) सिंह' राणि पर ही तो संख्या ६६२
- (क) 'कन्या' राशि पर श्री तो संख्या ६६३
- (छ) 'तुला' राशि पर ही तो संख्या ६६४
- (अ) 'वृश्चिक' राणि पर हो तो संख्या ६६४
- (म) 'बनु' राशि पर ही तो संख्या ६६६
- (ङा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६६७
- (ट) . 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या ६६८
- (ठ) 'मीन' राशि पर ही तो संख्या ६६६

'धनु' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

- १. 'धनु' सन्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००० से १०११ के बीच देखना चाहिए।
 - २. 'धनु' सग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विधिन्न मावों में स्थित

'चन्द्रमा' का अस्यायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०००
- (का) 'वृष' रामि पर हो तो संख्या १००१
- (य) 'मियुन' राशि पर हो तो संख्या १००२
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १००३
- (ब) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १००४
- (भ) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १००५
- (छ) 'तुला' राजि पर हो तो संख्या १००६
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १००७
- (झ) 'खनु' राशि पर हो तो संख्या १००८
- (ञ) 'अकर' राशि पर हो तो संक्या १००**६**
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या १०१०
- (ठ) 'भीम' राशि पर हो तो संख्या-१०११

'धनु' लग्न में 'मंगल' का फलावेश

- रे. 'अपूरं लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१२ से १०२३ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'अष्टु' लग्नवालों को योचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्वित 'संवत्त' का अस्थानी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'मंगल'--

- (क) 'मेव' राजि पर हो तो संस्था: १०१२
- (ख) 'बृष' राशि पर हो तो संख्या १०१३
- (य) 'मियुन' राशि पर हो तो संख्या १०१४
- (घ) 'ककं' राशि पर हो तो संख्या १०१५
- (क) 'सिंह' राजि पर हो तो संख्या १०१६
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०१७
- (छ) 'तुला' रामि पर हो तो संस्था १०१८
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०१६
- (स) 'समु' रामि पर हो तो संस्था १०२०
- (का) 'अकर' राशि पर हो तो संस्था १०२१
- (ह) 'कुम्भ' राजि पर हो तो संस्था १०२२
- (ठ) 'भीन' राशि पर हो तो संख्या १०२३

'धनु' लग्न में 'बुध' का फलादेश

- १. 'धनु' लग्न वातों को धपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्वादी फलादेश खदाहरण-कुण्डली संख्या १०२४ से १०३४ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'धनु' सम्न वातों को गोचर-कुष्डली के विभिन्न भावों में स्वित 'बुध' का अस्थामी फतादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'बुध'-

- (क) 'वेष' राणि पर हो तो संख्या १०२४
- (ज) 'वृष' रामि पर हो तो संख्या १०२४
- (य) 'मियून' राजि पर हो तो संख्या १०२६
- (च) 'कर्क' राणि पर हो तो संख्या १०२७
- (क) 'सिंह' राणि पर हो तो संख्या १०२८
- (च) 'कन्या' राजि पर हो तो संख्या १०२६
- (छ) 'तुला' राषि पर हो तो संस्था १०३०
- (ज) 'वृश्चिक' राणि पर हो तो संस्था १०३१
- (झ) 'धनु' राणि पर हो तो संख्या १०३२
- (ट्रा) 'सकर' राजि पर हो तो संस्या **१०३३**
- (ट) 'कुम्ब' राजि पर हो तो संख्या १०३४
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०३४

'धनु' सम्त में 'गुष' का फलादेश

- १. 'अपूर' सम्त वासों को अपनी जन्मकुष्यसी के विभिन्त भावों में स्थित 'गुर' का स्वायी फलावेश उदाहरण-कुष्यसी संख्या १०३६ से १०४७ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'अपूर' सम्म कालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्मित 'गुर' का अस्थामी फलादेश निम्मलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'बुध'—

- (क) 'मेष' राणि पर हो तो संख्या १०३६
- (ब) 'बृष्टू राणि पर हो तो संस्था १०३७
- (न) 'मिचून' राजि पर हो तो संख्या १०३८
- (च) 'कर्क' राणि पर हो तो संख्या १०३६
- (क) 'सिंह' राजि पर हो तो संख्या १०४०

- (च) 'कन्या' राणि पर हो तो संख्या १०४१
- (छ) 'तुला' राणि पर हो तो संख्या १०४२
- (ज) 'वृश्चिक' राणि पर हो तो संख्या १०४३
- (म) 'अनु' राशि पर हो तो संख्या १०४४
- (अ) 'अकर' राणि पर हो तो संस्था १०४४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०४६
- (ठ) 'मीन' राणि पर हो तो संख्या १०४७

'धनु' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१. 'समू' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मुक' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४८ से १०५६ के बीच देखना चाहिए।

'धमु' लग्नवालों को गोधर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुक' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'शुक'—

- (क) 'मेव' राणि पर हो तो संख्या १०४८
- (ख) 'बूब' रामि पर हो तो संख्या १०४६
- (य) 'मिषुन' रामि पर हो तो संख्या १०५०
- (व) 'ककें' राजि पर हो तो संख्या १०५१
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०५२
- (च) 'कन्या' राणि पर हो तो संख्या १०४३
- (छ) 'तुला' राणि पर हो तो संख्या १०५४
- (ज) 'वृश्चिक' राणि पर हो तो संख्या १०५५
- (श) 'धमु' राणि पर हो तो संख्या १०४६
- (ञा) 'मकर' रामि पर हो तो संख्या १०५७
- (ट) 'कुम्म' रामि पर हो तो संस्था १०५८
- (ठ) 'मोन' राणि पर हो तो संख्या १०५६

'धनु' लग्न में 'शनि' का फलावेश

- 'समू' लग्नवन्तों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित
 'कृति' का स्वायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२४ से ६३४ के बीच देखना
 चाहिए।
 - २. 'धमु' क्षम्न कालों को गोलर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सर्नि'

का अस्यामी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस वर्ष में 'शनि'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०६०
- (ख) 'व्य' राशियर हो तो संख्या १०६१
- (ग) 'मियुन' रामि पर हो तो संख्या १०६२
- (व) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०६३
- (छ) 'सिंह' राणि पर हो तो संख्या १०६४
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०६५
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०६६
- (अ) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०६७
- (श) 'खपु' राशि पर हो तो संख्या १०६८
- (ञा) 'सकर' राशि पर हो तो संख्या १०६६
- (ट) 'कुम्ब' राशि पर हो तो संख्या १०७०
- (ठ) 'सीन' राणि पर हो तो संख्या १०७१

'धनु' लग्न में 'राहु' का फलावेश

- १ 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संस्था १०७२ से १०७३ के बीच देखना चाहिए।
- २- 'समु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस वर्ष में 'राहु'-

- (क) 'मेव' रावि पर हो तो संख्या १०७२
- (ख) 'बूष' राणि पर हो तो संख्या १०७३
- (य) 'मियुन' राणि पर हो तो संस्था १०७४
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०७५
- (ड) 'सिंह' राणि पर हो तो संख्या १०७६
- (भ) 'कन्या' रामि पर हो तो संख्या १०७७
- (छ) 'तुला' रामि पर हो तो संख्या १०७८
- (ज) 'वृश्चिक' राणि पर हो तो संख्या १०७६
- (झ) 'अनु' राणि पर हो तो संस्था १०८०
- (ञा) 'अकर' राणि पर हो तो संख्या १०८१
- (ट) 'कुम्म' रामि पर हो तो संस्था १०५२
- (ठ) 'भीन' राणि पर हो तो संख्या १०५३

'घनु' लग्न में 'केतु' का फलादेश

- 'अनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुष्डली के विभिन्न धावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुष्डली संख्या १०६४ से १०६५ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'सनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित. 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

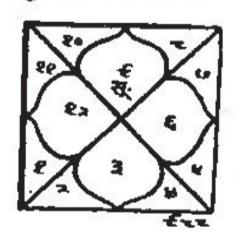
जिस वर्ष में 'केलु'—

- (क) 'नेव' राशि पर हो तो संख्या १००४
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०५५
- (ग) 'मिथुन' राणि पर हो तो संख्या १०५६
- (च) 'कर्क' राक्षि पर हो तो संख्या १०८७
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०८८
- (च) 'कन्या' राणि पर हो तो संख्या १०८६
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संस्था १०६०
- (ज) 'वृश्चिक' राणि पर हो तो संक्या १०६१
- (क्ष) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०६२
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०१३
- (ट) 'कुःभ' रामि पर हो तो संख्या १०१४
- (अ) 'मीन' राणि पर हो तो संख्या १०६x

'धनु' लग्न में सूर्य

'चनु' कम्न को कुष्वसी के 'अयममान' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

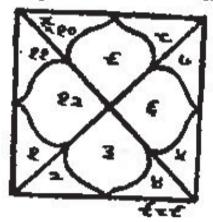
छनु लग्न : प्रथममाव : सूर्यं



केन्द्र सथा शरीर-स्थान में अपने मित 'गूर' की रामि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की उत्तम मिक्तिशाली शरीर की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यणाली, धार्मिक रुचि बाला तथा आस्तिक होता है। सातवीं बृष्टि से बुध की राणि में सप्तमभाव की देखने से जातक की सुन्दर स्त्री का सहयोग और गृहस्य-सुख प्राप्त होता है। साथ हो दैनिक व्यवसाय में लाभ भी होता है।

'धनु' सम्म को कुष्डली में 'हितीयमाव' स्मित 'सूर्य का फलादेश

धनु सम्न : द्वितीयभाव : सूर्य

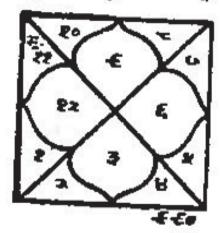


दूसरे भाद में अतु 'शनि' की राजि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ धन-संग्रह में श्रेष्ठ सफलता मिलती है तथा कुछ मत-धेरों के साथ कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा ध्यक्ति स्वार्थ-सिद्धि के लिए धर्म का पालन करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से जातक को आयु में वृद्धि होती है सबा पुरातस्य का लामं भी होता है। ऐसे व्यक्ति की भाग्योन्नति भी अच्छी होती है।

'क्षत्रु' सम्म को कुष्डली में 'तूतीपकाव' स्थित 'सूर्य' का कलादेश

धनु लग्न : तृतीयमाव : सूर्य

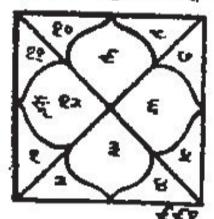


तीसरे भाव में शबु 'मिन' की राशि पर स्थित 'सूयं' के प्रभाव से जातक की भाई-बहिनों का सुख कुछ असंतोष के साथ मिनता है सथा पराकम में अध्यक्षिक वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से पुरुषार्व द्वारा भाग्य की अत्यक्षिक दृद्धि होती है, साथ हो धर्म का भी पालन होता है। ऐसा व्यक्ति बढ़ा हिम्मती तथा यशस्वी होता है।

'अपूर्' लग्न को कुच्डली में 'बतुर्वमार्च' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्यभाव : सूर्य

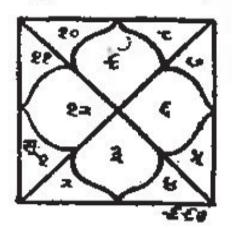


चीये भाव में मित्र 'गुरु' को राजि पर स्थित 'सूर्य के प्रभाव से जातक को माता का सुख अधिक मिलता है तथा भूमि, भवन का सुख भी प्राप्त होता है। धर्म तथा भाग्य की उन्नति भी होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दसमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सम्मान, लाभ तथा सफलता के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं।

'धनु' सन्न की कुष्डसी में 'पंचमधाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्नः पंचमभावः सूर्य

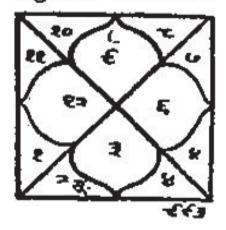


पौचवें भाव में मित्र 'मंगल' को राशि पर स्थित उच्च के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एव बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा विद्वान, धर्मात्मा, भानी तथा बुद्धिमान् होता है।

मातवीं नीच-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमननी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं । वाणी में सुप्रखरता तथा शिष्टाचार एवं सज्जनता में कभी होने के कारण आर्थिक उन्नति अधिक नहीं होती।

'अनु' सरन की कुष्यसी में 'बष्ठभाव' स्पित 'सूर्य' का फशादेश

धनु लग्न: षष्टमाव: सूर्यं

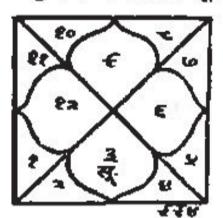


छठे भाव में मलु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'सूबे' के प्रभाव से जातक मलु-पक्ष पर अश्यक्षिक प्रभाव रखता है तथा अगड़े के मामलों से लाभ उठाता है। धर्म-पालन में विशेष रुचि नहीं होती।

बारहवें भाव में मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है, जिसके कारण खर्च चलता है तथा भाग्य की वृद्धि भी होती है।

'अनु' कप्न की कुष्यसी में 'सप्तममाव' स्थित 'सूवें' का फलादेश

धनु लग्नः सप्तमभाषः सूर्यं



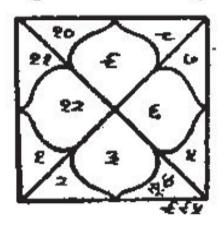
सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलताएँ मिलती रहती है। वह भाग्यमानी तथा ईश्वरमक्त भी होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से प्रयममान को देखने से छेष्ठ शारीरिक सुक्ष एवं प्रमावशासी व्यक्तिस्व की प्राप्ति होती है।

ऐसे व्यक्ति की पत्नी कुछ तेज स्वभाव की होती है।

'धनु' सन्त की कृष्टली के 'अष्टमधान' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : अष्ट मभाव : सूर्य

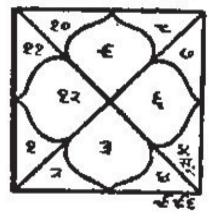


आठवें भाव में मित 'चंद्रमा' की राजि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातस्य का लाभ होता है। दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है, परन्तु भाग्योन्नति में अनेक रकावटें आती हैं।

सातवीं शतु-दृष्टि से दितीयभाव की देखने से धन-संचय तथा कौटूम्बिक सुक्ष के क्षेत्र में भी कुछ कमी रहती है।

'धनु' लग्न की कुष्डली के 'शवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : नवमभाव : सूर्य



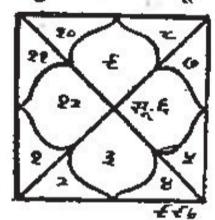
नवें भाव में स्वराशि-स्थित 'सूथें' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। वह बड़ा यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

सातवी शतु-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से पराक्रम में कुछ कमी आती है तथा भाई-वहिनों के साथ कुछ मतभेद दना रहता है।

ऐसा व्यक्ति भाग्य पर आश्रित रहने वाला होता है।

'धमु' सान की कुण्डली के 'दशमबाव' स्थित 'सूथे' का फलादेश

धनु लग्नः दशमभावः सूर्यं

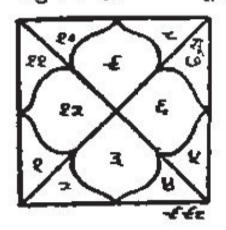


दसनें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की पिता द्वारा अत्यक्षिक सह-योग मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ प्राप्त होती हैं। ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यवान् तथा आर्थिक विचारों का होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से चतुर्यमाव की देखने से जातक की माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख मिलता है और यश तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त हीती है।

'धनु' सन्त की कुष्यसी के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्व' का फसावेश

धनु लग्न : एकादशभाव : सूर्यं



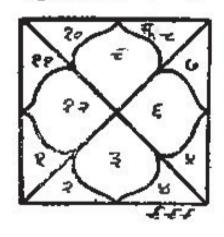
ग्यारहवें भाव में शक्षु 'शुक्र' की राशि पर स्थित नीज के भूयें के प्रभाव से जातक की आमदनी में कुछ कठिनाइयों के साथ अच्छी वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र सथा उच्च दृष्टि से पंचमभाव की देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति गुणी, विद्वान्, सञ्जन, मधुरभाषी तथा सुखी होता है।

'वनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशमाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लम्न : द्वादशभाव : सूर्य



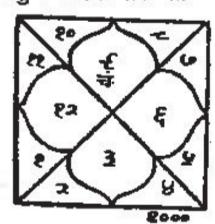
बारहवें भाव में मिल 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूमें' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ विलम्ब के साथ सफलता मिलती है और लाभ होता है। धर्म-पालन में किच अधिक नहीं होती, परन्तु धर्म तथा परोपकार में ही अधिक खर्च होता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शतुओं पर प्रभाव बना रहता है तथा शतु-पक्ष, अगड़े, मुकदमे आदि से लाभ एवं विजय की प्राप्ति भी होती है।

'धनु' लग्न में 'चन्द्रमा'

'धनु' लग्न को कुष्डली के 'प्रयमभाव' स्थित 'चन्त्रमा' का फलादेश

धनु लग्न: प्रथमभाव: चद्र

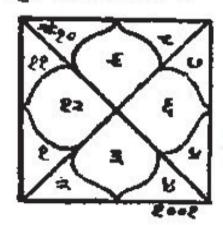


पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातस्य का नाभ होता है। शरीर मुन्दर तथा स्वस्थ होता है।

सातवीं मित-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के बाद स्त्री का सुख मिनता है तथा दैनिक वामदनी में भी जातक की कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'धनु' सम्म को कुण्डली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'चन्त्रमा' का फलादेस

धनुलम्न : द्वितीयभाव : चंद्र

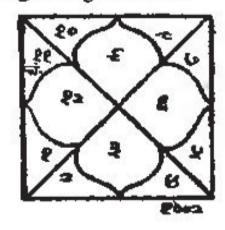


दूसरे भाव में शब्ध 'शनि' की राणि पर स्थित 'खन्द्रमा' के प्रभाव से जातक धन का संख्य नहीं कर पाता तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी बनी रहती है, परन्तु रहन-सहन अमी री ढंग का होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमधाव की देखने से आयु तथा पुरातस्य की वृद्धि होती है। यन में कुछ वेचेनी भी रहती है।

'धनु' सम्म की कृष्यली के 'तृतीयभाव' स्थित 'वन्त्रमा' का फलादेश

धनु लम्न : तृतीयभाव : यंद्र

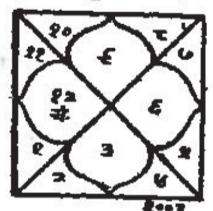


तीसरे भाव में शतु 'शनि' को राणि पर स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कमी प्राप्त होती है तथा पराक्रम की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। आयु तथा पुरातस्य का लाभ होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से नवमभाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य एवं धमं की वृद्धि होती है। सामान्यतः जातक भाग्यशाबी तथा संबर्ध-पूर्ण जीवन जीने वाला होता है।

'अपूर' मान को कुष्डसी के 'अतुर्यशाव' स्थित 'चलमा' का फलावेश

धनु लग्न : चतुर्येभाव : बंद्र

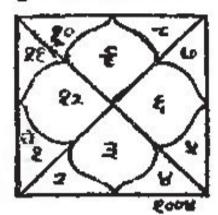


चौथे भाव में मित 'गुरु' की राजि पर स्थित 'चन्द्रमा' के अभाव से जातक को माता के मुख में कुछ कमी रहती है। उसे मातृशूमि से दूर आकर भी रहना पड़ता है। आयु तथा पुरातस्य का लाभ होता है। दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है।

सातवीं भिन्नं-दृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय से होत में कुछ कठिनाइयों के साम सफलता मिलती है।

'धमु' लग्न की कृष्यली के 'यंचयभाव' स्थित 'बंहमा' का फलावेश

धनु लग्नः पचमभावः भंद्र

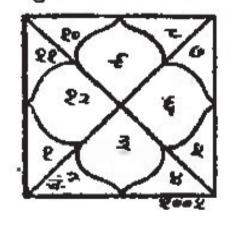


पाँचवें भाव में 'मंगल' की राशि पर स्थित अध्ट-मेश 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमियों का सामना करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, किन्तु मस्तिष्क में चिन्ताएँ भी रहती हैं।

सातवीं शृतु-दृष्टि से एकादश भाव की देखने से आमदनी के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइमों के बाद सामान्य सफलता मिलती है!

'धमु' लान की कुष्यली के 'बष्ठमाव' स्थित 'बंद्रमा' का फलावेश

धनु लग्न : षष्ठमाव : चंद्र



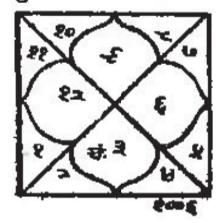
छठे भाव में भन्नु 'नुक' की राशि पर स्थित उच्च के 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक का भन्नु-पन्न पर प्रभाव बना रहता है। आयु तथा पुरातस्य का लाभ भी होता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से द्वादण भाव की देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध भी अच्छे सिद्ध नहीं होते !

ऐसे व्यंक्ति की शतु-पक्ष के कारण कुछ शान-सिक परेशानियां भी रहती हैं।

'धनु' सम्ब की कुण्डली के 'सप्तममाव' स्थित 'बंद्रमा' का फलावेश

धनु सन्तः सप्तमभावः चंद्रं

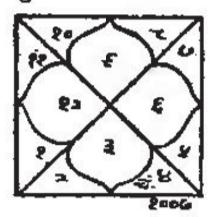


सातवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक को स्ती-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा वैनिक व्यवसाय में भी कठिना-इयाँ आती हैं। आयु तथा पुरातस्य का लाभ होता है तथा वैनिक जीवन भी कुछ आनन्दमय बना रहता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में दृद्धि होती है, परन्तु स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता । योड़े परिश्रम से ही पक जाया करता है ।

'धमु' लान की कुथ्डली के 'अष्टमकाव' स्थित 'चंडमा' का फलादेश

धनुलग्न : अष्टमभाव : चंद्र

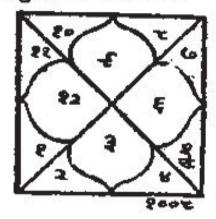


आठवें भाव में स्वराणि में स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरा-तत्त्व का यथेष्ट लाभ होता है। दैनिक जीवन बडे ठाठ-बाट का रहता है।

सातवीं शतु-वृष्टि से तृतीय भाव की देखने से धन के बारे में जिन्ताएँ बनी रहती हैं तथा कौटुम्बिक सुख में भी कभी रहती है।

'धनु' सन्त की कुष्डली के 'नदमधाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलावेश

धनु सन्तः नवमभावः चंद्र

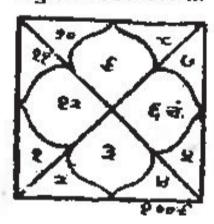


नवें भाव में मिल 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ परेशानियां आती हैं तथा यश भी कम मिल पाता है। धर्म का यदाविधि पालन नहीं होता। आयु तथा पुरा-तस्व में वृद्धि होती है।

सातवीं अनु-दृष्टि से तृतीय भाव की देखने से भाई-बहिनों से मतभेद रहता है तथा पराकम में भी यदोचित वृद्धि नहीं हो पाती । जीवन सामान्य ढंग से ध्यतीत होता है।

'धमु' सन्त की कुण्डली के 'दशममाव' स्थित 'चलामा' का फलारेश

धनु लग्ने : दशमभाव : शंद्र

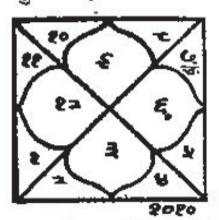


दसवें भाव में मिन्न 'बुध' की राशि पर स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां आती हैं, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है जिसके कारण जीवन ठाठ से बीतता है।

साठवीं मिल-वृष्टि से चतुर्य भाव की देखने से भाता, सूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी एवं परेशानी के साथ मिलता है।

धनु' लप्त की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

ानु लग्न : एकादशभाव : चंद्र



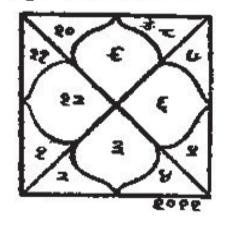
ग्यारहवें भाव में भन्नु 'सुक' की राभि पर स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ लाम होता है। आयु तथा पुरातस्य की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा दैनिक जीवन आनन्दपूर्ण बना रहता है।

सातवीं मित-दृष्टि से पंचम भाव की देखने से विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है

तथा मस्तिष्क में चिन्ताएँ विरो रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशमाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशमा**व** : चंद्र



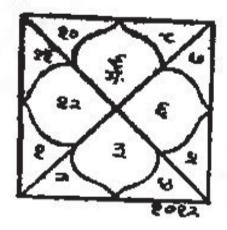
बारहवें माय में मिल 'भंगल' की राशि पर' स्थित नीच के 'चंद्रमा' के प्रभाव के जातक की छईं के बारे में वड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कच्ट मिलता है। आयु तथा पुरातत्त्व की भी हानि होती है। दैनिक-जीवन अशान्तिपूर्ण रहता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से बंध्ठ भरव की देखने से शतु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़े-मुकदभों में सदैव विजय प्राप्त होती है।

'घनु' लग्न में 'मंगल'

'छन्' लग्न की कुण्डली के 'प्रथममाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु सम्ब **। प्रय**मभाव : मंगल



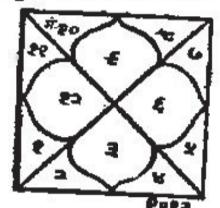
पहले माव में मित 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति अच्छी रहती है तथा परिश्रमी भी होता है। विद्या, सन्तान तथा बाहरी सम्बन्धों से लाम होता है:

वीयो मित-दृष्टि से चतुर्थमाव की देखने से माता, मूमि, भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। सातवीं मित-दृष्टि से सप्तमभाव की नेखने से कुछ कमी के साथ स्त्री तथा ज्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है। खाठवीं नीचदृष्टि से अष्टम-

माव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का श्रेत्र कमजोर रहता है।

'धमु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयमाय' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्नं : द्वितीयभाव : मंगल



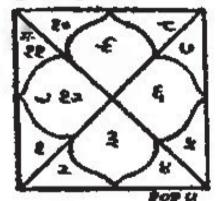
दूसरे भात्र में भन्नु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रमान से जातक धन का सामान्य संचय करता है तथा उसे कौटुम्बिक सुख कुछ कभी के साथ मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव की देखने से विद्या तथा सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कभी रहती है।

आठवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से बड़ी कठिनाइयों के साथ भाग्योन्नति में बोड़ी-बहुत सफलता मिलती है तथा धर्म का पालन भी कम ही हो पाता है।

'धमु' लग्न की कुथ्बली के 'तृतीयमाव' स्थित 'संगल' का फलावेश

धनुलग्न: तृतीयभाव: मंगल



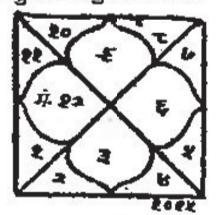
तीसरे भाव में भन्न 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-वृहित का सुख कुछ कभी के साथ मिलता है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष भी कमजोर रहता है। चौथी शन्नु-वृष्टि से यष्ठ भाव की देखने से भन्न पक्ष पर विजय मिलती है।

सातवीं मित-दृष्टि के नेवम भाव की देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्निति होती है। आठवीं मित-

दृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के श्रोत में न्यूनाधिक सफलता मिलती रहती है। जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।

'धर्तु' लग्न की कुण्डली के 'बतुर्यं बाव' स्थित 'शंगल' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्यमान : मंगल



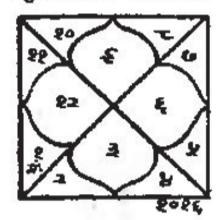
चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से भाता, भूमि तथा भवन के सुख की हानि होती है: सन्तान तथा विद्या का पक्ष भी कमऔर रहता है। चौथी भिस्न-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा दैनिक ज्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइमों से काम चलता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी के

साय सफलता मिलती है। आठवीं शतु-दृष्टि से एकादशमाव की देखने से बुद्धियोग के आमदनी बढ़ती है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'शतु' सन्त की कुष्टली के 'पंचममाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्नः पंचमभाव : मंगल



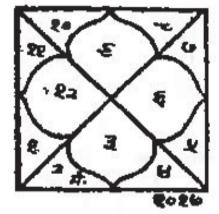
परैनवें भाव में स्वराशि-स्थित ब्ययेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक की कुछ परेशानियों के बाद विद्या एवं संतान के क्षेत्र में कुछ सफलता मिलती है। चौथी नीच-दृष्टि से मिन राशि में अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातस्य में कभी रहती है तथा उदर-विकार बना रहता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से एकादश माय की देखने से बुद्धियोग द्वारा आमदनी के क्षेत्र में कुछ सफलता मिलती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में

हादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से विशेष लाभ भो होता है !

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'बच्टभाव' स्थित 'मंगल' का फलावेश

धनुतग्न : षष्ठभाव : मंगल



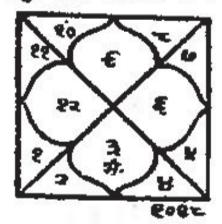
छठे भाव में भन्न 'शुक' की राभि पर स्थित 'संगल' के प्रभाव से जातक की शनु-पक्ष में सफलता मिलती है। परन्तु सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कमी रहती है। चौथी मिन-दृष्टि से नवम भाव की देखने से कुछ परेशानियों के साथ भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि में द्वादश मात्र की देखने से खर्चे अधिक रहता है तथा बाहरी संबन्धों

में कठिनाइयां आती हैं । आठवीं मित-दृष्टि से प्रथम भाग को देखने से भारीरिक सीन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी तथा मस्तिष्क में परेशानी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलावेश

सनुलग्न : सप्तमभाव : संगल



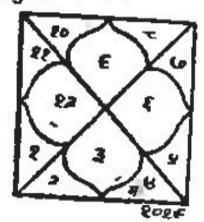
सातवें भाव में मिन 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से कब्ट मिलता है तथा व्यवसाय में हानि होती है। बाहरी स्थानों से कुछ अच्छा संबंध रहता है, जिसके बल पर खनें चलता रहता है। चौथी मिस-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से प्रथम भाव की देखने से शरीर में कुछ कमजीरी रहती है। आठवीं उच्च-

दृष्टि से द्वितीय भाव की देखने से धन तथा कुटुम्ब का अच्छा सुख प्राप्त होता है।

'अनु' साम की कुण्डली के 'अष्टममाद' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न : अष्टमभाष : मयल

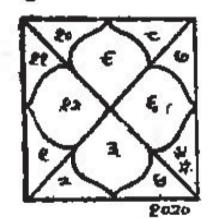


आठवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के 'भंगल' के भभाव से जातक की आयु तथा पुरायस्व शक्ति में कमी आती है। पेट में विकार तथा मस्तिष्क में चिन्ताएँ रहती हैं। संतान पक्ष से कट्ट होता है शया विद्या-पक्ष में कमजोरी रहती है। चौथी शतु-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा खामदनी में वृद्धि होती है। सातवीं उच्च-दृष्टि से दितीय भाव को देखने से धन-कृटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है। खाठवीं शतु-

दृष्टि से तृतीय माव को देखने से पराक्षम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-विहिनों से विरोध रहता है।

'धनु' लम्न की कुष्डली के 'सवयमाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनुसान:नवमभाव:मंगल



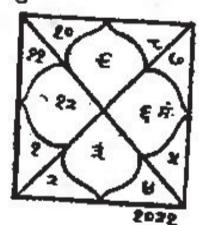
नवें भान में मिल 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'संगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में भी कुछ कमी के साथ सफनता मिनती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में हादशभाव की देखने से खर्च विधिक रहता है तथा वाहरी संबन्धों से खर्च चलता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से तृतीय भाव की देवने से भाई-बहिनों से विरोध रहता है तथा पराक्रम में

कमी आती है। आठवीं मिल-वृष्टि से चतुर्यभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुखं कुछ कमी के भाव मिलता है।

'क्षतु' सन्त की कुण्डली के 'बसमझाव' स्थित 'संगल' का फलादेश

धनु लग्न: दशयभाव: मंगल



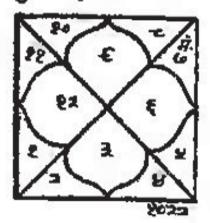
दसवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'स्यत' के प्रभाव से जातक की राज्य के क्षेत्र में बुद्धियोग से सफलता मिलती है तथा पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि रहती है। चौद्यी मिल-दृष्टि से प्रथम भाव की देखने के बारीरिक सौन्दयं एवं स्वास्थ्य में कभी रहती है।

सातवीं मित्र-यूष्टि से चतुर्वमाय की देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साय मिलता है । आठवीं दृष्टि से स्वराणि में पंचम मार

की देखने से विद्या, बुद्धि का श्रेष्ठ लाग होता है, परन्तुं सन्तान-पक्ष फिर भी कमकोर रहुता है।

'धनु' लग्न की कुन्छली के 'एकाइश भाव' स्थितं 'संगल' का फलादेश

बनुलग्न: एकादश माव: मंगल



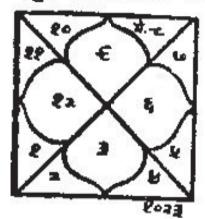
ग्यारहवें भाव में भवू 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की आमदनी में पर्याप्त बृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से कुछ कठिनाई के साथ लाम होता है। चौथी उच्च दृष्टि से मसूराशि में दितीय भाव को देखने से बन-संचय के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है।

क्षाठवीं दृष्टि से स्वराणि में पंत्रम भाव की देखने से विद्या एवं सन्तान पक्ष से लाग होता है।

आठवीं शतु-दृष्टि से पष्ठ भाव की देखने से सतु-पक्ष पर प्रभाव रहता है स्वा अगड़ों में विजय एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

'धनु' संग्न की कुकासी के 'द्वादशसाध' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनुलग्न : द्वादश्रमाव : मंगल



बारहवें भाव में स्वराणि में स्थित 'भंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा-बाहरी सम्बन्धों से भाव होता है। सन्तान तथा क्षिया-पक्ष में कभी रहती है। चौथी सपु-दृष्टि से दितीय भाव की देखने से भाई-बहिनों से विरोध रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

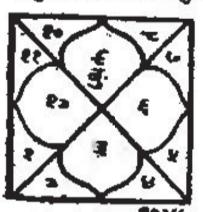
सातवीं सनु-दृष्टि से चष्ठ भाव की देखने से सनुजों पर विजय आप्त होती है तथा अगड़ों से लाभ होता है। आठवीं मिल-दृष्टि से सप्तम भाव की देखने

से स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय में कठिनाइयां आती रहती है।

'धनु' लग्न में 'बुध'

'धनु' लप्न की कुछली के 'प्रथमभाव' स्थित 'हुध' का फलादेश

धनु लग्न: प्रथमभाव: बुध

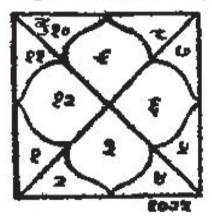


पहले भाव में मिस 'युर' की राजि पर स्थित 'बुर्स' के प्रभाव से जातक की श्रेष्ठ शारीरिक तथा विवेकसक्ति प्राप्त होती है। पिता, 'राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित-दृष्टि से स्वराक्षि में सप्तम भाव की देखने से सुन्दर पत्नी निवती है तथा ससुराध से मवेष्ट धन भी प्राप्त होता है। दैनिक ज्ञामदनी औ बहुत अध्की रहती है।

'धनु' लान की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु सरनः द्वितीयभावः बुध

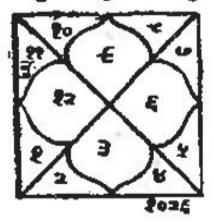


दूसरे माव में मिन 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुब' के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब का विशेष सुख मिलता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय से भी लाम होता है परन्तु स्त्री-सुख में कमी रहती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से अष्टम भाव की देखने आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है ! दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण एवं शानदार बना रहता है !

'धनु' सम्न की कुम्बली क 'हुतीयकाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु सरन : तृतीयभाव : बुध

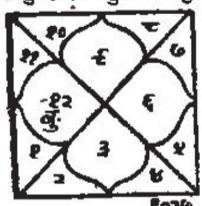


तीसरे भाव में मिन 'सनि की राशि पर स्थित 'बूध' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का यथेष्ट सुख मिलता है। अपनी विवेक-बुद्धि से उसे अत्येक क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती रहती है।

'धंनु' सम्न की, कुन्डली के 'बतुर्वभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु लग्नः चतुर्थभावः सुख

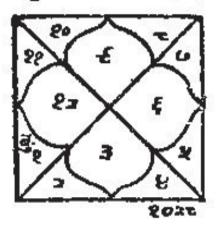


भीषे भाव में मिल 'गुरु' को राशि पर स्थित नीच के 'शुर्ब' के प्रभाव से जातक की साता, सूमि एवं भवन के सुख में कमी प्राप्त होती है। स्त्री तथा गृहस्थी के सुख में भी कठिनाइयां आती हैं।

सातवीं उच्च दृष्टि से स्वराप्ति में दशम भाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भवित एवं सफलता प्राप्त होती है।

'धनु' लग्न की कुष्डली के 'यंचममाव' स्थित 'कुछ' का फलादेश

धनु सरतः पंचमभावः बुध

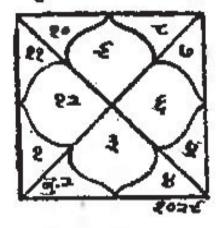


पीचवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि घर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का श्रेष्ठ लाभ होता है। स्त्री, गृहस्थी, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी उन्तित होती है।

सातवीं मिन-दृष्टि से एकादश भाव की देखने से आमदनी खूब होती है। ऐसा व्यक्ति दार्तालाप करने में बड़ा चतुर, बुद्धिमान तथा यशस्वी भी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'वष्ठमाव' स्थित 'ब्रुख' का फलादेश

वनु लग्न : थष्ठमाव : बुध

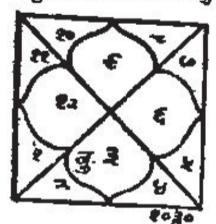


छठे भाव में तित्र 'ज़ुक' की राशियर स्थित 'जुध' के प्रभाव से जातक की सन्नु-पक्ष में सफलता मिलती है, परन्तु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। नाना के पक्ष से लाभ होता है।

सातवीं मिल-वृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तया उसे बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'खनु' साम की कुण्डली के 'सप्सममाव' स्थित 'ब्रुव' का फलावेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : बुध

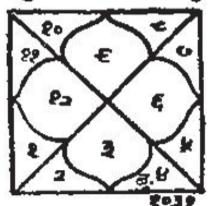


सातवें भाव में स्वराशि स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री-पक्ष से लाभ भी होता है। दैनिक व्यवसाय के खेल में भी सफलता मिलती है। राज्य एवं विद्या से भी सहयोग तथा सम्मान मिलता है।

सातवीं मिस-दृष्टि से प्रथम भाव की देखने से बारीरिक सीन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है।

'धमु' लग्न की कुण्डली के 'कष्टमभाव' स्थित 'सुख' का फलादेश

धनुसम्ब : अष्टमभाव : बुध

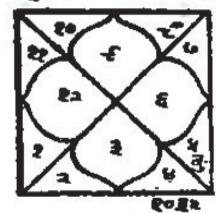


आठवें लाभ में भन्न 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की अायु तथा पुरा-तस्व की मक्ति प्राप्त होती है। परंतु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कमी-कभी बड़े चाटे तथा कठिना-इयों का सामना करना होता है। सामान्य रहन-सहन भानदार रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के धन तथा कुटुम्ब की दृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

'धमु' सन्त की कुन्छसी के 'नवममान' स्थित. 'बुंध' का फलावेश

बनुसरन : नवमभाव : सुख



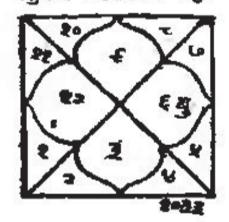
नवें शाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक अत्यधिक शायवान् तथा धर्मात्मा होता है। पिता, राज्य, व्यवसाय तथा स्वी-पक्ष में भी उसे अस्यन्त सफलता मिलती है। अपनी विवेक-बुद्धि से वह यभेष्ट धन तथा सम्मान अजित करता है।

सातवीं मिस-दृष्टि से तृतीय भाव की देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराकम की भी अत्यधिक

वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बहुत सुखी जीवन विवादा है।

'सबु' लग्न की कुण्डली के 'दशमसाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनुसान : दशमभाव : सुख

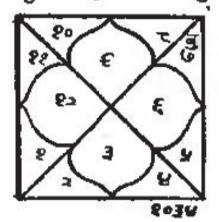


दसर्वे भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक संकलताएँ मिलती हैं। उसे पर्याप्त यश, धन तथा सम्मान प्राप्त होता है।

सात्वीं नीच-दृष्टि से चतुर्थं धाव की देखने के माता के सुख में कमी रहती है तथा सूमि, धवन के सुख में भी कुछ कठिनाइयां आती हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशमाव' स्थित 'ब्रुध' का फलादेश

धनुलग्न : एकादशभाद : युध

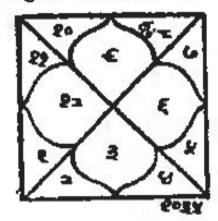


ग्यारहवें भाव में मिल 'कुक' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की खामदनी खूब होती है। पिता, राज्य, व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में भी पर्याप्त सुख, यग, धन, लाभ तथा सम्मान प्राप्त होता है।

सातवीं मिल्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का सुख भी यथेष्ट मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, विद्वान् तथा यशस्त्री होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'हादशमाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनुलग्न : द्वादशभाव : बुध



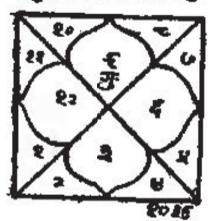
बारहवें मान में मिल 'संगल' की राशि पर स्थित 'बूब' के प्रभाव से जातक का खर्च बधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होता है। पिता, राज्य तथा स्त्री के सुख की हानि होती है। जन्म-स्वान में रहकर व्यवसाय करने से घाटा होता है।

सातवीं मित-दृष्टि से घष्ठ भाव की देखने से शत्रु-एक एवं झगड़े-शुकर्षे के मामलों में सफलता होती है।

'बनु' लग्न में 'गुरु'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रधनमाव' स्थित 'बूब' का फलादेश

अनुलग्न : प्रयमभाव : युध

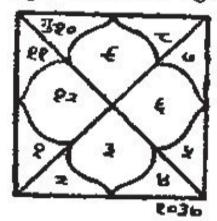


पहले भाव में स्वराणि में स्थित 'गुर' के प्रभाव से आतक की सारितिक सीन्वमं एवं सुख की प्राप्ति होती है। भूमि तथा भवन का सुख भी मिनता है। पौचवीं मित-दृष्टि से पंचम भाव की देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। सातवीं मित-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्ती तथा व्यवसाय का सुख भी मिलता है। ववीं मित-दृष्टि से नवम भाव को देखने से माग्य तथा धमें की उन्नति होती है।

ऐसर व्यक्ति विद्वान्, युणी, सुन्दर, धनी, धर्मात्मा, मयुरमाधी, सज्जन सथा आनम्दी होता है।

'धनु' सम्म की कुण्डली के 'द्वितीयवाव' स्थित 'ब्रुच' का फलादेश

धनु सन्तः हितीयभाव : बुरु

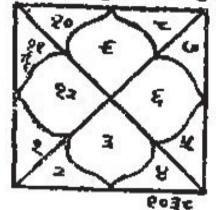


दूसरे माव में शत्नु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुठ', के प्रभाव से जातक के धन सथा कुटुम्ब-सुख की हानि होती है। शारीरिक मुख सथा सौन्दर्य में भी कभी आती है। माता, भूमि तथा भवन का पक्ष भी कभजोर रहता है। पाँचवीं शत्नुदृष्टि से षष्ठ अत्य को देखने से शत्नु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा भगड़े के मामलों में बुद्धिमानी से सफलता मिलती है। सातवीं उच्च-दृष्टि से बष्टम भाव को देखने से अायु एवं प्ररातस्य का लाभ होता है।

नवीं मिल-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के कींच में मुख, सम्मान, यश तथा सफलता को प्राप्ति होती है।

'धनुं लान की कुण्डकी के 'शुतोग्रमाव' क्वित 'शुरु' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : गुह



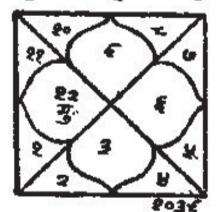
तीसरे माव में शत्नु 'शिन' को राशि पर स्थित 'गुर' के प्रभाव से जातक को कुछ मतभेद के लाभ भाई-बहिन का मुख प्राप्त होता है सथा पराक्रम में भी कमी आती है। भूमि, भवन तथा माता का सामान्य मुख मिलता है। पौचवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री सुन्दर मिलती है सथा स्त्री से सुख और व्यवसाय में सफलता मिलती है।

सातवीं भित्र-दृष्टि से नवम माव को देखने से

भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से एकादश भाष को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती रहती है।

'बनु' लग्न की मुण्डली के 'श्रतुर्वभाव' स्थित 'गुर्व' का फलावेश

धनु लग्न : चतुर्यभाव : गुह



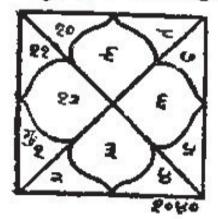
भीषे भाव में स्वराधि में स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का खेष्ठ सुख मिलता है। सारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति भी होती है। पौचवीं उच्च सवा मिल-दृष्टि से अव्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातस्य की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशम शाय की देखने से पिता से सुख, राज्य से सम्मान सथा व्यवसाय से लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वादश माव की देखने से

खर्च अच्छी तरह चलता है सया बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

'धनु' लग्न की कृष्टली के 'यंत्रममाव' स्थित 'शुद' का कलादेश

धनुलग्न : पंचमभाव : गुह

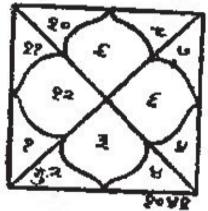


पौचवें मान में मिद्र 'मंगल' को राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान-पक्ष में सफलता मिलती है। पौचनीं मिद्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं शतुद्धि से एकादश भाव को देखने से बामदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम माव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा तथा प्रभावको प्राप्ति होती है।

'धतु' लग्न की कुण्डली के 'वष्ठमाव' स्थित 'गुर्व' का फलादेश

धनु लग्न : षष्ठभाव : गुह

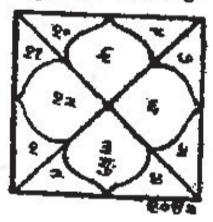


छठे मान में शलु 'ग्रुक' को राशि पर स्थित 'ग्रुह' के प्रभाव से जातक को शलु-पक्ष तथा रोगादि से परेशानी होती है सथा बुद्धि-चल से उनका निराकरण होता है। ग्रारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में भी कमी आती है। माता का अल्प सुख होता है तथा भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त नहीं होता। पौचनी मिलदृष्टि से दशम मान को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में साम, सुख तथा सम्मान को प्राप्त होती है।

सातबीं मित्रदृष्टि से द्वादश मान को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से सुख मिलता है। नवीं नीचदृष्टि से तृतीयमान को देखने से धन सवा कुट्रम्ब को और से परेशानी रहती है।

'बनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुर्व' का फलावेश

धर्ने लग्न : सप्तमभाव : युक्



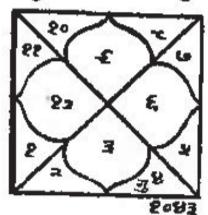
सातवें भाव में मिल 'ब्रुह्न' की राशि पर स्थित 'गुर' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से सुख एवं सौन्दर्य तथा व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। माता, भूमि सथा भवन का सुख भी मिलता है। खेळ पांचीं शतुदृष्टि से एकादश माव को देखने से धामदनी के कींच में कुछ असतोष रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दयं, स्वास्थ्य एवं स्वाभिमान को प्राप्ति होती है। नवीं शबूद्ष्टि से तृतीय भाव को देखने से

भाई-बहिनों से असन्तोष रहता है तथा पराकम में भी कुछ कमी आती है।

'धनु' साम की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुढ' का फलावेश

धनुलग्नः अष्टमभावः गुह



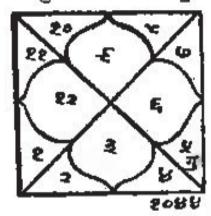
आठवें मान में मिद्ध 'चन्द्रमा' की राशि में स्थित
'गुर' के प्रभाव से आतक को आयु तथा पुरातस्य को
अच्छ मिद्द का लाभ होता है। परन्तु मारीरिक सौन्दर्य
एवं स्वास्थ्य में कभी आती है। पौचनीं मिद्रदृष्टि से
द्वादश मान को देखने से खर्च अधिक रहता है सथा बाहरी
स्थान के संबंधों से लाभ मिलता है।

सातवीं नीच तथा शतुद्धि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता,

भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

'धनु' लग्न की कुष्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न**ः नवमभाव**ः गुरु



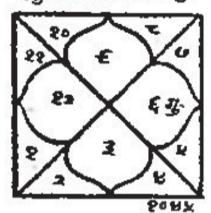
नवें भान में मिल 'सूर्ष' को राशि पर स्थित 'गुर' के प्रभाव से आतक के भाग्य की अत्यिष्ठिक बृद्धि होती है तथा धर्म का यथाविधि पालन होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। पौचनीं दृष्टि हैं स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य. स्वास्थ्य एवं यश को प्राप्ति होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय मान को देखने से भाई-वहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। नदीं मित्रदृष्टि से पंचम मान को देखने से सन्तान-पक्ष से

सुख मिलता है सथा विचा एवं बुद्धि की वृद्धि होती है।

'बनु' लग्न की फुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनु सन्न : दशमभाव : गुरु

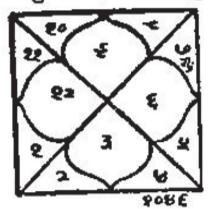


दसवें मान में मिल 'बुघ' को राधि पर स्थित 'गुठ' के प्रभाव से आतक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, लाभ, सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होता है। मारीरिक सौन्दर्य एवं स्वाभिमान को प्राप्त भी होती है। पौचनीं नीच तथा मसुदृष्टि से द्वितीय मान को देखने से धन तथा कुटुम्ब पक्ष से असन्तोष रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ मान को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। नवीं शतुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शतु-पक्ष में वड़ी होशियारी से प्रभाव स्थापित होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकाश्शमाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलन्नः एकादशभावः गुह

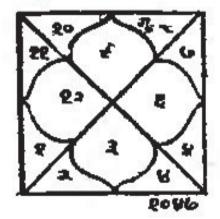


ग्यारहवें मान में शतु 'शुक्त' की राशि पर स्थित 'गुर' के प्रभाव से जातक शारीरिक श्रम द्वारा अपनी आय को बढ़ाता है। उसे माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। पौचनों शसुदृष्टि से तृतीय मान को देखने से भाई-बहनों से असन्तोप रहता है सथा पराक्रम की वृद्धि भी नहीं हो पाती।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचयभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का साम होता है। नदीं मित्रदृष्टि से सप्तम माव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाम को प्राप्ति होती है।

'क्षतु' लान की कुण्डली के 'द्वादशमान' स्थित 'ब्रुव्व' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : गुरु



वारहवें भाव में भिन्न 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुर' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा वाहरी संबंधों से लाभ होता है। शरीर में कुछ कमजोरी भी रहती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्यभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं शत्दुवृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्-पक्ष में बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित होता है। नवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु को वृद्धि होती है सथा पुरातत्त्व का साम होता है। ऐसे

व्यक्ति का दैनिक जीवन भाव से बीतता है।

'धनु' लग्न में 'शुऋ'

'बर्नु' सन्म की कृष्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनु लग्नः प्रथमभानः शुक

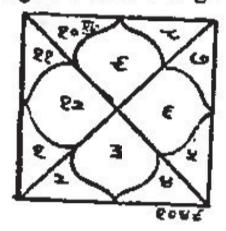


पहले मान में शलु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का स्वास्थ्य कुछ कमजोर रहता है, परन्तु परिश्रमी तथा चतुर होता है। शलु-पक्ष पर विजय मिलती है। यशस्वी भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम मान को देखने से स्त्री से कुछ मतभेद-युक्त सुख मिलता है सथा दैनिक व्यवसाय के कींच में चतुराई द्वारा सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

'धनु' सम्म की कुण्डली के 'हितीयशाव' स्थित 'शुक' का फलादेश

धनुलग्न : द्वितीयभाव : मूक



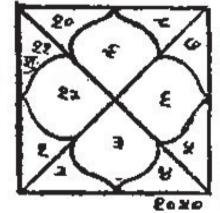
दूसरे मान में मिद्र 'शनि' की राशि पर स्थित स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को धन को अच्छी शक्ति मिलती है, परन्तु कुटुम्बियों से मतभेद रहता है। शलु-पक्ष से लाभ होता है तथा उस पर प्रभाव भी स्थापित होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से अष्यु एवं पुरातस्य को भक्ति में वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली सथा प्रतिष्ठित होता है।

'चतु' सम्म की कुम्बली के 'तृतीयमाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

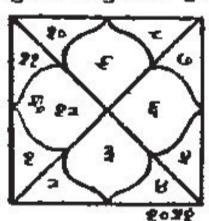


तीसरे भाव में मित्रं 'शनि' को राशि पर स्थित 'शुक्त' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा कुछ कमी के लाम भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। घन का लाभ होता है सथा शत्नु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है।

सातवीं शालु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्यो-न्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म में भी विशेष रुचि नहीं रहती। सामान्यतः जीवन सुखी बना रहता है।

'धनु' सन्त की कुण्डली के 'श्रदुर्वभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

धनु लग्नः : चतुर्यभावः शुक्र

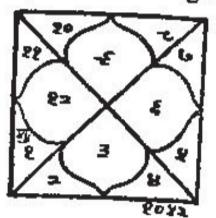


चौथे मान में शतु 'गुर' की राशि पर स्थित उच्च 'शुक' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ मुख प्राप्त होता है। आमदनी खच्छी रहती है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

सातनीं नीच-दृष्टि से दशम मान की देखने से पिता से हानि तथा राज्य के क्षेत्र में असफलता मिलती है। व्यवसाय की उन्नति के मार्ग में भी अनेक कठिनाइयाँ आती हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'यंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुसम्बः पंचमभावः मुक्र

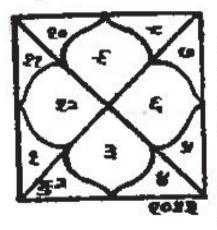


पौचवें माव में सन् 'मंगल' को राशि पर स्थित 'सुक' के प्रभाव के जातक को विद्या, बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। काणी की शक्ति, चातुयं एवं कला का लाभ भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वरामि में एकादक शाव को देखने से विदा-बुद्धि द्वारा आमदनी की वृद्धि होती है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्ते होती है।

'बनु' सम्म की कुण्डली के 'बष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धमुलग्न : षष्ठभाव : मुक्र

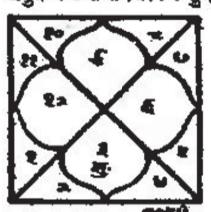


षष्ठ भाव में स्वराशि-स्थित , 'शुक्त' के प्रभाव के जातक शत्नु-पक्ष पर भारी प्रमाद रखता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है। परिश्रम द्वारा धन एवं आमदनी के लेव में श्री अच्छी सफलता मिलती है। जनसाल-पक्ष से भी लाभ होता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से द्वादशभाष को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ अंच्छा लाभ होता रहता है।

'श्रमुं सम्म की कृष्टली के 'सप्तममाव' स्थित 'श्रुक' का फलादेश

धनुसम्म : सप्तमभाव : सुक

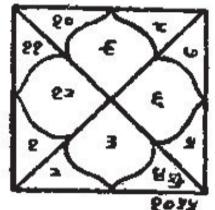


सातवें भाव में मिल 'बुघ' की राहि पर क्षित मुक्त के प्रभाव से जातक को स्ती-पक्ष से कुछ मतभेद-मुक्त लाभ मिलता है। व्यवसाय क्षेत्र में भी कठिनाइयों के साथ लाभ प्राप्त होता है। मनुषक्ष पर प्रमाव स्वापित होता है तथा भूतेन्द्रिय में विकार की संभावनां भी रहती है।

सातवीं मनुवृष्टि के अथम भाव की देखने से सारीरिक मंक्ति एवं अभाव की जान्ति होती है।

'बनु' सम्म की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : अष्टमभाव : णुक अाठवें माव में शतु 'चन्द्रमा' को रागि पर स्थित

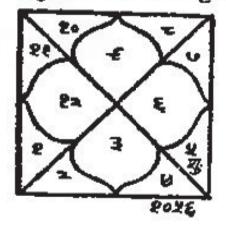


'कुक' के प्रभाव से जातक की अायु में वृद्धि होती है सवा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। आमदनी के मार्ग में कठिनाइयां आती हैं। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से परिश्रम द्वारा लाभ मिलता है। शतुपक्ष से भी परेशानी होती है।

सातवीं मिलदृष्टि से द्वितीय भाव की देखने से कुटुम्ब का सहयोग प्राप्त होता है तथा धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पडता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवसभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

धनुलग्न : नवमभाव : शुक

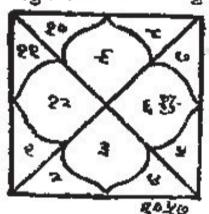


नवें भाव में शलु 'सूर्यं' को राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जानक को भाग्योन्नति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। सथा धर्म में भी कम श्रद्धा रहती है। अपनी चतुराई द्वारा शत्नु-पक्ष से लाम भी उठाता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से तृतीय माव को देखने से भाई-अहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति भाष्यवान् समझा जाता है।

'बनु' सम्म की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : दशमभाव : शुक

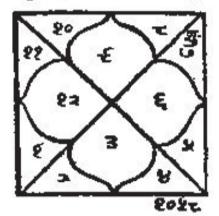


्रदसर्वे भाव में मिद्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'सुक' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का अनुभव होता है। भाग्योन्नति में शहुपक्ष के कारण एकावटें आती हैं।

सातवीं उच्च दृष्टि से चतुर्व मान को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख आप्त होता है तथा घर के भीतर प्रभाव भी बना रहता है।

'खर्नु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशमाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनु लग्नः एकादशभावः शुक

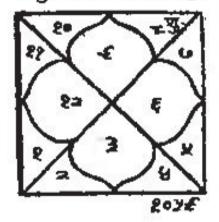


ग्यारहवें भाव में स्वराणि में स्थित 'शुक' के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है सथा शलुपक्ष से विशेष साभ मिलता है।

सातवीं शत्नुदृष्टि से पंचम आय की देखने से विदा, बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु वाद में यड़ा गुणी, चतुर तथा विद्वान् भी बनता है। सन्तान-पक्ष से बुटिपुणं साथ प्राप्त होता है।

'धन्' सान की कुण्डली के 'द्वादशवाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

बनु लग्ने द्वादशभाव : शुक



वारहवें भाव में शब्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाद से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ भी होता है। झगड़े सथा शब्रुओं के कारण कुछ परेशानो होती है, परन्तु अपनी चतुराई से लाभ भी उठाता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शतु-पक्ष पर पूर्ण प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण जीवन विताता है।

'धनु' लम्त में 'शनि'

'धनुं लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलावेश

धनु सन्नः प्रयमभावः शनि



पहले भाव में शत्नु 'गुरं को राशि पर स्थित 'शति' के प्रभाव से जातक के शरीरिक सौन्दर्य में कभी आती है। परिश्रम से घन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से पराक्रम सथा भाई-शहिनों के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य

'धनु' सम्म की कुण्डली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

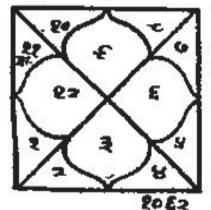
धनु लग्न : हितीयभाव : शनि

 दूसरे मान में स्वराणि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को घन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। तीसरी शतुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि सथा भवन का अल्प सुख मिलता है।

सातवीं शसुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु सथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। दसवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने के आमदनी खूब रहती है नथा कमी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है।

'धम्' लग्न की कृष्डली के 'तृतीयसाद' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु सन्न:तृतीयभाव:शनि तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव

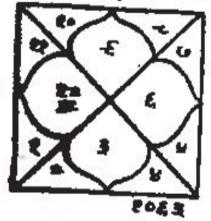


से जातक के ए कम में विशेष वृद्धि होती है सथा भाई-बहिन का सुर कुछ कमी के लाम मिनता है। तीसरी नीचदृष्टि पंचम मान को देखने से सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है , बा विद्या-बुद्धि में कभी रहती है।

सातवीं शतुदृष्टि से नवममाव को देखने से भाग्य तथा यश को उन्नति होती है परन्तु धर्म में श्रद्धा कम रहती है। दसवीं शतुदृष्टि से द्वादम साम को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्यन्ध्र भी लाभदायक सिद्ध नहीं होता।

'धनु' सम्न की कुण्डली के 'बहुर्चभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्नः चतुर्थभावः शनि



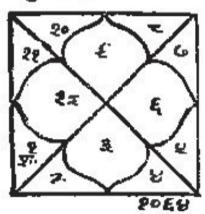
चौथे भाव में शत्नु 'गुर' की राशि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कभी रहती है सथा भूमि, भवन का सामान्य सुख प्राप्त होता है। भाई-बहिन तथा कुटुम्ब का सुख भी असन्तोषजनक रहता है। तीसरी मिन्नदृष्टि से पष्ठ भाव को देखने से शत्नु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा सगढ़ों से लाभ भी होता है।

सालवीं मित्रदृष्टि से वशम मान की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र की उन्नति होती है।

इसवीं मजुद्धि से प्रथम मान को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कभी

'धनु' लग्न की कुष्डसी के 'यंचमभाव' स्थित 'शमि' का फलावेश

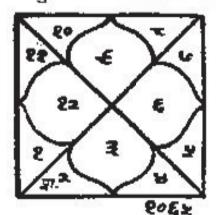
धनु लग्न . पंचममावः शनि



प्रविवें भाव में शब्रु 'भंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'शिन' के प्रभाव से जातक को मन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या, बृद्धि के क्षेत्र में कभी रहती है। तीसरी मिल्लदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। सातवी उच्चदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब रहती है। दसवीं दृष्टि से स्थराशि में दितीय भाव को देखने से कौटुम्बिक सुख तथा धन-संचय के लिए गुप्त गुक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है तभी सामान्य सफलता मिलती है।

'धनु' सग्न की कुण्डसी के 'बष्ठभाव' स्थित 'शॉन' का फलावेश

घनु लग्न: पष्ठभाव: शनि



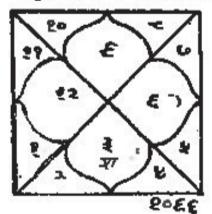
छठे भाव में मिल 'सुक' की राणि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक शतु-पक्ष पर भारी प्रभाव रखता है तथा अगड़ों से लाभ उठाता है। कुटुम्बियों से कुछ विरोध भी रहता है। तीसरी शलुद्धि से अध्यमभाव को देखने से आयु में वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ कम होता है।

सातवीं शतुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है। बाहरी संबंधों से भी हानि होती है।

दसवी दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से बैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती हैं। ऐसा व्यक्ति हिम्मती तथा पुरुषायीं होता है।

'धर्नु' लप्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शर्मि' का फलादेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : शनि



सातवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक को स्त्री का लाभ तो होता है, परन्तु उससे सुख कम ही मिलता है, तथापि दैनिक व्यवसाय में पर्याप्त लाभ होता है। भाई-वाहन तथा कुटुम्बियों से अच्छे संबंध रहते हैं। तीसरी शलुदृष्टि से नवमभाव की देखने से धमें तथा भाग्य के क्षेत में कवावटें आती हैं।

सातवीं शबुदृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शरीर में कुछ कष्ट रहता है। दसवीं शबुदृष्टि से चतुर्यभाव की

देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आ आती है और उसे अपना स्थान छोडकर परदेश में भी रहना पड़ता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'अध्दममाथ' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : अप्टमभाव : शति

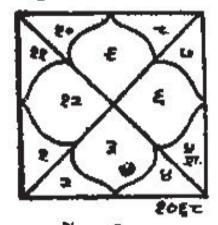
अरुवें भाव में शतु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। दिनिक सुख, धन-संचय तथा भाई-बहिन के सुख में कभी रहती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता राज्य एव व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दितीयभाव को देखने से धन-कुटुम्य का सामान्य सुख मिलता है। दसवीं नीच-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एव

सन्तान के पक्ष में कमी बनी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्नः नवमभावः शनि



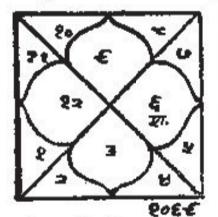
नवें भाव में शब्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति एवं धर्म-पालन में वाधाए आती हैं। धन-कुटुम्ब का सानान्य-सुख मिलता है। तीसरी मिल्न तथा उच्च-वृद्धि से एकादशभाव की देखने से आमदनी खूब रहती है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। दसवी मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव की देखने से

शतुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा अगड़े-अझटों से लाभ होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'दशममाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्नः दशमभावः शनि



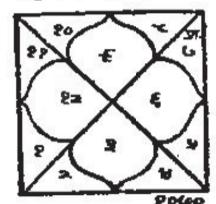
रसर्वे भाव में मित 'बुध' की राशा पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक की पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ मिलता है। भाई-विहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। तीसरी शतु-वृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्ने अधिक रहता है तथा वाहरी सम्बन्ध भी असन्तोषजनक रहते हैं।

सातवीं शतु-दृष्टि से चतुर्य भाव को देखने से माता, भूमि एव भवन के सुख में कमी रहती है। दसवीं

मिल-दृष्टि से सप्तम भाष को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता की प्राप्ति होती है।

'अनु' लग्न की कुण्डसी में 'एकादशभाव' स्थित 'शमि' का फलादेश

धनु लग्न: एकादशभाव: शनि ग्यारहवें भाव में मिल 'शुक' की राशि पर



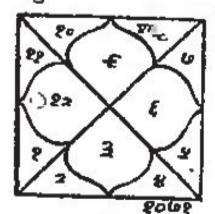
स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है। कुटुम्ब तथा भाई-वहिनों के मुख एवं पराक्ष्म में भी वृद्धि होतीं है। तीसरी शनु-दृष्टि से प्रथम भाव की देखने से शारीरिक सीन्दर्य एवं स्थास्थ्य में कभी आती है।

सातवीं नीच तथा शतु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान से कष्ट मिलता है तथा विद्या-युद्धि के क्षेत्र में कभी रहती है। दसवीं शतु-दृष्टि से अप्टम भाव

की देखने से आयु एवं पुरातस्य का खाम होता है परन्तु दैनिक जीवन में परेक्षानियों का अनुभव होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'हादशमाव' स्थित 'सनि' का फलादेश

धनु लग्न: द्वादशभाव: शनि वारहवें भाव में शनु 'मगल' की राशि पर



स्थित 'गुरुं के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का संबंध भी असन्तोषजनक रहता है। धन-कुटुम्ब तथा भाई-बहिन के सुख में भी कमी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में तीसरे भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

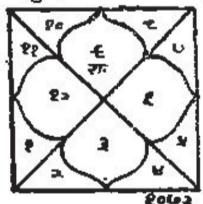
सातवी मिल-दृष्टि से बष्ठमान को देखने से शतु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा गुप्त युक्तियों के सहारे लाभ भी मिलता है। दसवीं शतु-दृष्टि से नवम

भाव को देखने से भाग्योन्ति में कठिनाइयाँ अती हैं तथा धर्म का पालन भी पूर्ण एप से नहीं हो पाता।

'धनु' लग्न में 'राहु'

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

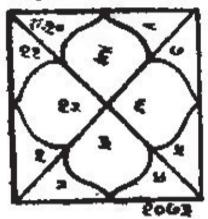
धनु लग्न : प्रथमभाव : राहु



पहले भाव में शबु 'गुरुं की राणि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के शारिरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। कमी-कभी कठिन शारिरिक कट भी उठाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति देखने में सज्जन परन्तु भीतर से चालाक होता है।

'श्रमु' सन्त की कुष्वली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनु लम्नः द्वितीयभावः राहु

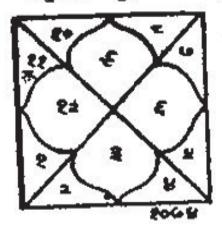


दूसरे भाव में मिल 'शनि' की राजि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी रहती है। कभी-कभी कौटुम्बिक कारणों से दौर संकटों का णिकार भी बनना पड़ता है।

उसे प्रायः ऋण लेकर अपना काम चलाना पड़ता है। अपनी कठिनाइयों पर बहु गुप्त युक्तियों द्वारा विजय पाने का प्रयत्न करता है।

'धनु' सन्त की कुण्डली में 'तृतीयमाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धन् लग्नः तृतीयभावः राहु

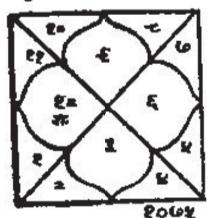


तीसरे मान में मिल शिन की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है। भाई-बहिनों के साथ उसके सम्बन्ध सुखकर नहीं रहते।

उसे कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु धर्यवान् तथा साहसी होने के कारण उन्हें चुपचाप सहन कर लेता है।

'सतु' सान की कुष्यती में 'सतुर्यभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

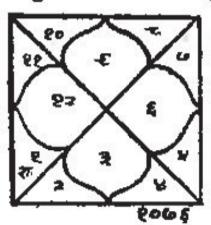
धनु लग्तः चतुर्थभावः राहु



चौथे भीव में शतु 'गुरु' की राजि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को माता के सुख में बड़ी कमी रहती है। भूमि तथा भवन का सुख भी नहीं मिलता। कभी-कभी थोर मुसीवतें भी उठानी पड़ती हैं। धैर्य तथा गुप्त मुक्तियों के बल पर यह संकटों का सामना करता रहता है।

'धन्' साम की कुण्डली के 'यंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

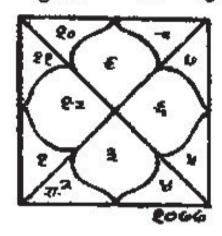
धनुलग्न : पंचमभाव : राहु



पौचर्षे भाव में भाव 'मंगल' को राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है सथा विद्याध्ययन में भी बड़ी कठिनाइयाँ सथा कमी रहती है। उसकी बोली में रूखापन रहता है। वह धैयं तथा गुप्त युक्तियों के बल पर काम तो चलाता है, परन्तु चिन्ताओं से घरा रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'श्वय्वधाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

धनुलग्न : षष्ठमाव : **रा**हु

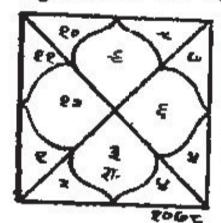


छठे मान में मिल 'सुक' की राशि पर स्थित'
'राहु' के प्रभाव से जातक शलु-पक्ष पर अत्यन्त प्रभाव
रखता है तथा चातुर्य एवं गुप्त गुक्तियों के बल पर उन्हें
पंरास्त करता रहता है।

ऐसा व्यक्ति बडा साहमी, बहादुर तथा धैर्यवान् होता है। वह मातू-पक्ष को भी कुछ हानि पहुँ वाता है।

'धर्नु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राह्न' का फलादेश

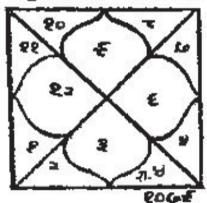
धनुलग्न : सप्तमभाव : राह



सातवें भाव में मित 'बुध' की राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक की स्ती-पक्ष की विशेष सक्ति मिलती है। उसके एक से अधिक विवाह भी हो सकते हैं। दैनिक आमदनी की वृद्धि के लिए वह अनेक उपायों का आध्य सेता है। वह धनी तथा सुखी जीवन विताता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

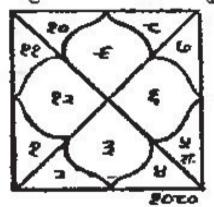
धनुलग्न : अष्टमभाव : राहु



वाठवें भाव में शतु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के जीवन पर कई बार संकट आते हैं तथा मृत्यु-सुल्य स्थितियाँ बन जाती हैं। पेट में विकार रहता है। पुरामत्त्व की हानि होती है। ऐसा व्यक्ति परेशानियों से चिरा रहता है।

'धर्नु' लग्न को कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

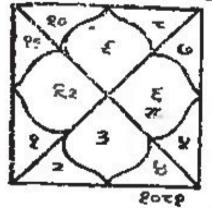
धनुलग्न : नवमभाव : राह



नवें भाव में शतु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में भोर संकट आते हैं। सर्में में उनकी आस्था नहीं होती। ऐसा व्यक्ति प्रायः अनीश्वरवादी होते हुए भी भाग्योन्नति के लिए अधिकाधिक परिश्रम करता तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

'धनुं लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

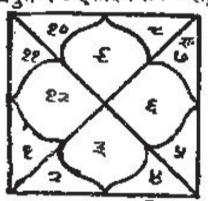
धनुलग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित
'राहु' के अभाव से जातक की पिता द्वारा परेशानी, राज्य
द्वारा संकट तथा व्यवसाय में हानि का शिकार बनना
पड़ता है। वह अपनी हिम्मत तथा गुप्त गुक्तियों के बल
पर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता रहता है, परन्तु अधिक
सफलता नहीं मिल पाती।

'धनुं लग्न की कुण्डली के 'एकादराभाव' स्थित 'राहुं का फलादेश

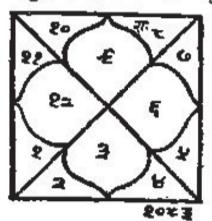
धनुलग्न : एकादणभाव : राहु



ग्यारहवें भाव में मिन 'खुक' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। कभी-कभी कठिनाइयां भी आती हैं, परन्तु वह अपना धैर्य नहीं छोड़ता और हिम्मत से काम लेकर कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

'धनु' लम्न की कुण्डली के 'हादशमाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : द्वादशभाव : राह

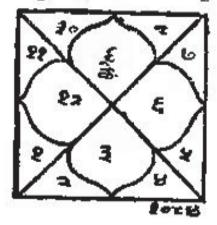


वारहवें भाव में शबु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक का खर्ने अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी कष्ट का अनुभव होता है। एस। व्यक्ति हिम्मती होने के कारण भवराता नहीं है तथा संकटों पर विजय पाने का प्रयत्न करता रहता है।

'घनु' लग्न में 'केलु'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलादेश

धनुलस्तः प्रथमभावः केत्

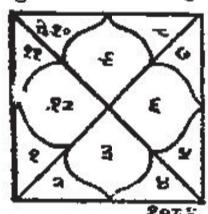


पहले भाव में शबु 'गुरं' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति एवं आकार में तो वृद्धि होती है, परन्तु शारीरिक सौन्दर्य में कमी भी अवश्य आती है। यह जिद्दी तथा हठी स्वभाव का होता है।

ऐसा व्यक्ति सब कठिनाइयों का साहस के साथ मुकाबला करने वाला, परिश्रमी तथा वैग्रैदान् होता है।

'क्षनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'केतु' का फलादेस

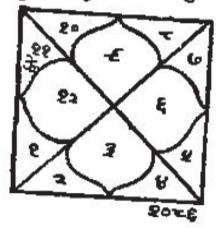
धनु लग्न : द्वितीयभाव : केतु



दूसरे धाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है तथा धन-संचय के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पडता है। कभी-कभी उसे घोर आर्थिक संकटों में भी फंसना पड़ता है और प्राय: ऋण लेकर काम चलाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मतो तथा धैयंवान् होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'शृतीयमाय' स्थित 'केतु' का फलावेश

धनु लग्न: शृतीयभाव: केतु

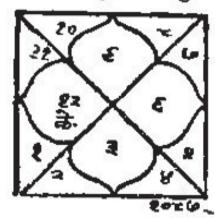


तीसरे भाव में मिल 'शिनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्य-धिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-सहिन के सुख में कमी तथा कब्ट का अनुभव होता है।

ऐसा न्यक्ति गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला, साहसी तथा कठिन परिश्रमी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डसी के 'चतुर्यभाष' स्थित 'केतु' का फलावेश

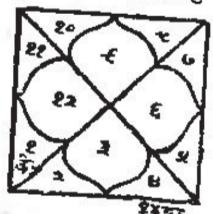
धनु लग्न : चतुर्थभाव : केतु



नौथे भाव में शतु 'गृरुं की राशि पर स्थित' केतु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में दड़ी हानि उठानी पड़ती है स्था मातृभूमि का वियोग भी सहना पड़ता है। भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त नहीं होता। परन्तु ऐसा व्यक्ति वड़ा परिश्रमी, साहसी, दैर्यवान् तथा सन्तोषी होता है।

'धनुं' लग्न की कुण्डली के 'यंचनमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न । पंचमभाव : केतु

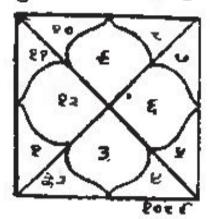


पीनवें भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष में बड़ी हानि का सामना करना पड़ता है तथा विद्या-ध्ययन में भी बड़ी कठिनाइयों के बाद अरूप सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति घोर परिश्रमी, जिही तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला होता है। वह सदैव चिन्तित भी बना रहता है।

'श्रमु' लग्न की कुण्डली के 'बळमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

द्यमुलग्न : षष्ठभाव : केतु

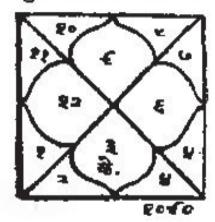


छठे माव में मिस 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक शजू-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़े-मुकदमे आदि से भी वह साम उठाता है।

महान संकट उपस्थित होने पर भी वह कभी हिम्मत नहीं हारता तथा बहादुरी के साथ मुकाबला करता हुआ उस पर विजय प्राप्त करता है।

'धमु' लग्न की कुण्डसी के 'सप्तममाव' स्थित 'केंद्रु' का फलावेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : केतु

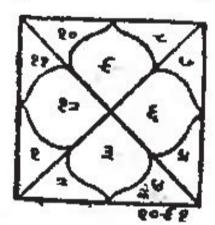


सातवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित नीय के 'केंद्रु' के भभाव से जातक को स्थी-एक्ष में घोर हानि उठानी पड़ती है सथा दैनिक बामदनी के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइमाँ आती रहती हैं।

यह धैर्य सथा साहस के साथ गृहस्य जीवन को सुखी बनाने का प्रयस्न करता रहता है, परन्तु सफलता थोड़ी ही मिलती है।

'धनुं लग्न की कुण्डली के 'अध्यममान' स्थित 'केतुं का फलावेश

धनुलग्न : अष्टमभाव : केतु

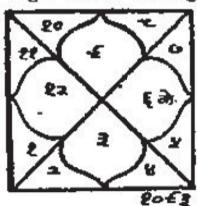


आठवें भाष में शतु 'चन्द्रमा' की राशि पर हैं स्थित 'केंदु' के प्रभाव से आतक के जीवन पर हैं वहें-बड़े संकट आते हैं सथा उसे मृत्यु-तुस्य कच्टों का सामना करना पड़ता है। पेट में विकार भी हैं रहता है।

दैनिक जीवन में परेशानियाँ छनी रहती हैं। पुरातश्व की की हानि होती है। घोर परिश्रम करने पर भी सुझ नहीं मिल पाता।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

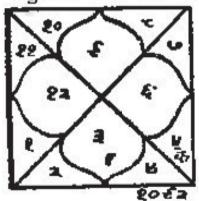
धनु लग्न : नवममाब : केतु



नवें भाव में अनु 'सूर्य' की राणि पर स्थित 'केनु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अस्यधिक बाधाएँ आती हैं। उन्हें दूर करने के लिए वह अनेक गुप्त युक्तियों तथा परिश्रम का सहारा लेता है, परन्तु आंशिक सफलता ही मिल पाती है। धर्म तथा ईश्वर में उमकी आस्था कम होती है। सदैव चिन्ताओं तथा असफलताओं का शिकार बना रहता है।

'धतु' सान की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

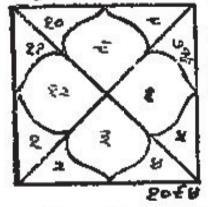
धनु लग्नः दशमभावः केतु



दसनें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को कुछ कमियों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य लाभ, सफलता, सुख, यश, सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। अत्यधिक परिश्रम तथा युक्ति-वल का आश्रय लेने पर भी विशेष उन्नति वहीं हो पाती।

'धन्' सरन को कुष्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

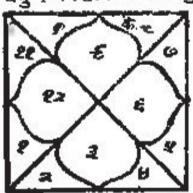
धनु लग्न : एकादशभाव : केत्



ग्यारहवें भाव में मिल 'शुक की राशा पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। कमी-कभी संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है, परन्तु उन पर बहु अपनी गुप्त युक्तियों तथा कठोर परिश्रम के बल पर विजय प्राप्त कर लेता है। फिर भी पूर्ण सन्तोष नहीं मिल पाता।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशमाव' स्थित 'केंद्रु' का फलादेश

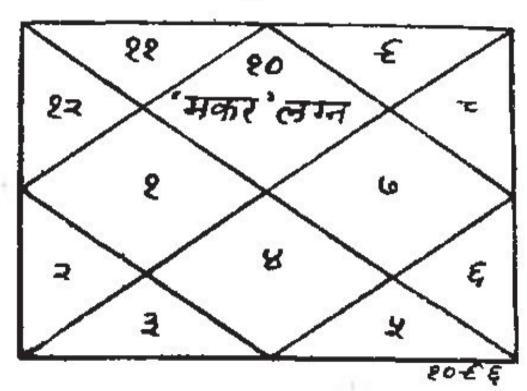
धनु नान : द्वादशभाव : केतु



बारहवें माव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है जिससे उसे बड़ी परेशानी तथा संकट उठाने पड़ते हैं।

बाहरी स्थानीं के सम्बन्ध के भी परेशानियां मिलती हैं। वह गुप्त युक्तियों, परिश्रम, धैयं तथा हिम्मत के बल पर कठिनाइयों की दूरं करने का प्रयस्न करता है, परन्तु अधिक सफल नहीं हो पाता।

'मकर' लग्न



['मकर' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'मकर' लग्न का फलादेश

'मकर' लग्न में जन्म लेने बाले जातक का घरीर लम्बा हीता है। वह बडी-बड़ी आँखों बाला, उग्र स्वभाव का, निरन्तर पुरुपार्थ करने बाला, लोभी, चतुर, बंचक, ठग, पाखण्डी, अल्सी, मनमौजी तमीगुणी तथा कफ-वायु से पीडित रहने बाला होता है।

ऐसा व्यक्ति भीरु, सन्तोषी, खर्चीला, लज्जा-रहित, धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाला, अधिक मन्त्रतिवान्, कवियों तथा स्त्रियों में आसक्त भी होता है।

'मकर' लग्न वाला जातक अपनी प्रारम्भिक अवस्था में सुख भोगता है, मध्यमावस्था में दुःख पाना है तथा ३२ वर्ष की आयु के वाद अन्तिम समय तक सुखी बना रहता है।

ऐसे व्यक्ति की आयु पूर्ण होती है तथा उसका भाग्योदय प्रायः ३२-३३ वर्ष की अवस्था में होता है। 'मकर' लग्न वालों की अपनी जन्मकुष्डली के विभिन्न भावों में स्थित-विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुष्डलियों में संख्या ३३४ से ४४१ के बीच देखना चाहिए।

गोचर कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे अगे लिखे अनुसार समझ सेना चाहिए।

'मकर' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भाषों में स्थित 'बुर्य का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१७ से ११०८ के बीच देखना चाहिए 1

२---'मकर' लग्न वालों की गोधर-कुण्डली के विभिन्न वालों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'सूर्य'-

- (क) 'सेव' राशि पर स्थित हो तो संख्या १०६७
- (ख) 'वृष' राणि पर स्थित हो तो संख्या १०६=
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या १०६६
- (घ) 'कर्क' राणि पर स्थित हो तो संख्या ११००
- (क) 'सिंह' रामि पर स्थित हो तो संख्या ११०१
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०२
- (छ) 'तुला' राणि पर स्थित हो तो संख्या ११०३
- (अ) 'वृष्णिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०४
- (झ) 'छनु' राणि पर स्थित हो तो संख्या ११०५
- (ञ्न) 'मकर' राणि पर स्थित हो तो संख्या ११०६
- (ट) 'कुम्म' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०७
 - (ठ) 'सीन' राशि पर स्थित ही तो सक्या ११०६

'मकर' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलावेश

१--- 'मकर' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०६ से ११२० के बीच देखना चाहिए।

२---'मकर' सम्न वालों को योषर-कुष्यली के विभिन्न भावों में स्थित 'कुर'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखनां चाहिए---

जिस वर्ष में 'करूमा'---

- (क) 'सेव' रामि पर स्थित हो तो संख्या ११०१
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११०
- (ग) 'मियुन' रामि पर स्थित हो तो संख्या ११११
- (च) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११२
- (ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो सो संख्या १११**३**
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो सो संख्या १११४
- (छ) ''तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११४
- (च) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११६
- (स) 'धनु' राणि पर स्थित हो तो संख्या १११७
- (ञा) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११८
- (ट) 'क्रुम्भ' राणि पर स्थित तो हो सक्या १११६
- (ठ) 'मीन' राणि पर स्थित हो तो संख्या ११२०

'मकर' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१---'मगल' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विधिन्त भावों में स्थित 'मजून' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२१ से ११३२ के बीच देखना चाहिए।

२—'मंगल' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मक्स' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मञ्जल'--

- (क) 'मेव' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२१
- (क) 'बूच' राशि पर स्थित हो सो संख्या ११२२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो यो संख्या ११२३
- (च) 'ककं' राशि पर स्थित हो सो संख्या ११२४
- (क) 'सिंह' राणि पर स्थित हो तो संख्या ११२५
- (घ) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२६
- (छ) 'तुला' राधि पर स्थित हो तो संख्या ११२७
- (ज) 'वृश्यिक' राणि पर स्थित हो तो संख्या ११२८
- (झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२६
- (का) 'मकर' राणि पर स्थित हो तो संख्या ११३०
- (ट) 'क्रुम्भ' रामि पर स्थित हो तो संख्या ११३१
- (ठ) 'मीन' राणि पर स्थित हो सो संख्या ११३२

भिक्ते लग्त में 'बुध' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३३ से ११४४ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वायों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में बुध-

- (क) 'सेव' राशि पर हो तो संख्या ११३३.
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ११३४
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ११३४
- (थ) 'कर्क' राणि पर हो तो संख्या ११३६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ११३७
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ११३८
- (छ) 'तुला' राणि पर हो तो संख्या ११३६
- (ज) 'बृषिजक' राणि पर ही तो संख्या ११४०
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ११४१
- (का) 'मकर' रामि पर हो तो संख्या ११४२
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ११४३
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ११४४

'मकर' लन्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४५ से ११५६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोवर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अध्यायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुर'-

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ११४५
- (ख) 'वृष' रामि पर हो तो संख्या ११४६
- (ग) 'मिथुन' रामि पर हो तो संख्या ११४७
- (ज) 'कर्क' रामि पर हो तो संख्या ११४८
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ११४६
- (च) 'कन्या' राणि पर हो तो संख्या ११५०

- (छ) 'तुला' राणि पर हो तो संख्या ११५१
- (अ) 'बूश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ११५२
- (झ) 'मनु' रामि पर हो तो संख्या ११५३
- (ञा) 'सकर' राशि पर हो तो संख्या ११५४
- (ट) 'कुम्भ' राणि पर हो तो संख्या ११५५
- (ठ) 'मीन' राणि पर हो तो संख्या ११५६

'मकर' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१---'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न मानों में स्थित 'मुक' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संस्था ११५७ से ११६= के बीच देखना चाहिए।

२---'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न वालों में स्थित 'सुक' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'मुक्त'---

- (क) 'सेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११५७
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११४८
- (म) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११५६
- (म) 'कर्क' रामि पर स्थित हो तो संख्या ११६०
- (ङ) 'सिंह' राणि पर स्थित हो तो संख्या ११६१
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६२
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६३
- (ज) 'बृष्णिक' राशि पर स्थित हो तो सच्या ११६४
- (स) 'धनु' राणि पर स्थित हो तो संख्या ११६%
- (ञा) 'मकर' राणि पर स्थित हो तो संस्था ११६**६**
- (ट) 'कुम्भ' राणि पर स्थित हो तो संख्या ११६७
- (ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६=

'मकर' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१—'मकर' सम्ब बालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न बालों में स्थित 'क्वनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६६ से ११८० के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोवर-कुण्डली विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दर्ष में 'शनि'---

(क) 'सेव' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६६

- (ब) 'बूब' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७०
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो सक्या ११७१
- (भ) 'कक" राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७२
- (क) 'सिंह' राणि पर स्थित हो तो संख्या ११७३
- (भ) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७४
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७%
- (भ) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७६
- (श) 'धर्नु' राशि पर स्थित हो को संख्या ११७७
- (का) 'सकर' राणि पर स्थित हो तो संख्या ११७**८**
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संस्था ११७६
- (ठ) 'मीन' राप्ति पर स्थित हो तो संख्या ११८०

'मकर' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१---'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न वालों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरष-कुण्डली संख्या ११८१ से ११८२ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्नं बाओं को गोवर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहुं का अस्वायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'-

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०१
- (क) 'कूप' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८३
- ं (म) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८४
 - (क) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८५
 - (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८६
 - (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८७
 - (ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संस्था ११८८
 - (क) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११ मस
 - (अ) 'मकर' राति पर स्थित हो तो संख्या ११६०
 - (ट) 'कुम्भ' रामि पर स्थित हो तो संख्या ११६१
 - (ठ) 'मीन' राणि पर स्थित हो तो संख्या ११६२

'मकर' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१—'मकर' लग्न बालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न **मार्वी, में स्थित** 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६३ से १२०४ के बीच देखना चाहिए ।

२---'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न मार्थी में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नविश्वित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

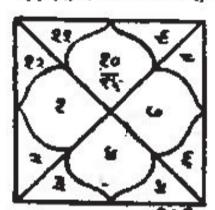
जिस वर्ष में 'केतु'-

- (क) 'सेव' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६३
- (ब) 'बुध' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६४
- (ज) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६%
- (भ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६६
- (क) 'सिंह' राशि पर स्थित हो सो संख्या ११६७
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६८
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६६
- (ज) 'वृष्णिक' राप्ति पर स्थित हो तो संख्या १२००
- (झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो सो संख्या १२०१
- (अ) 'अकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०२
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो सो संख्या १२०३
- (ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०४

'मकर' लग्न में 'सूर्यं'

'शकर' लाग की कृष्यती के 'प्रथममाव' स्थित 'सूर्व' का फलादेश

मकर लग्न: प्रथमभाव: सूर्य

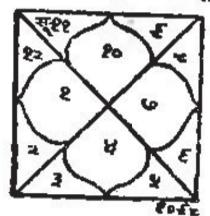


पहले मंदन में सन्तु 'सनि' को राजि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के सारीरिक सौन्दर्य एवं स्वाल्य्य में कभी आती है लथा कभी-कभी विशेष सारीरिक कच्टों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु आयु एवं पुरातस्य को वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाष को वेखने से स्त्री के पक्ष में सामान्य फठिनाई रहती है तया दैनिक व्यवसाय में भी कुछ परेक्षानियाँ आती रहती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्यली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेस

मकर लग्न : द्वितीयभाष : सूर्यं

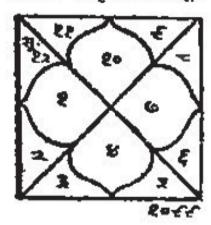


दूसरे भाव में शतु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता। तथा कुटम्ब के सुख में भी संकट आते रहते हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वरामि में अष्टमभाव को देखने से आयु को वृद्धि होती है तथा पुरातस्य का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन विताता तथा भान-गौकत में खर्च करता रहता है।

'अकर' लग्न को कुण्डलों के 'तृतीयबाद' स्थित 'सूर्य' का कलादेश

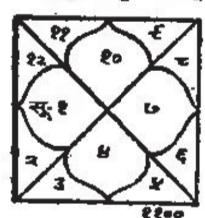
मकर सम्नः तृतीयभाषः सूर्यं



तीसरे भाव में भिन्न 'गुरु' की राशि पर स्थित
'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक
वृद्धि होती है, परन्तु भाई-विहन के सुख में कभी आती
है। आयु सथा पुरातत्त्व की भिन्त का लाम होता है।
सातवीं भिन्न-वृद्धि से नवमभाव को देखने से
भाग्योन्नति में कुछ रुकावटें आती हैं तथा धर्म के पक्ष
में भी कभी कनी रहती है।

'अकर' लाम को कुच्छली के 'बतुर्वमाव' स्थित 'सूर्य' का कलावेश

मकरमानः चतुर्यमानः सूर्यं

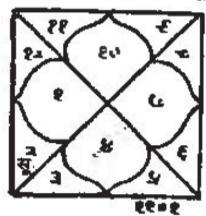


वीये भाव में मिल 'मंगल' की राशि पर स्वित उच्च के 'सूमें' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि उदा भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। आयु तथा पुरातस्व का भी लाभ होता है। दैनिक जीवन अमीरी ढंग का रहता है।

सातवीं बीच-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से सुख में कभी आती है तथा राज्य एवं व्यवसाय की उन्नति में एकावटें आती हैं।

'मकर' सप्त की कृष्यकी के 'पंचमधाव' स्थित 'सूर्य' का कलादेत

मकरलग्न: पंचमभाव: सूर्ये

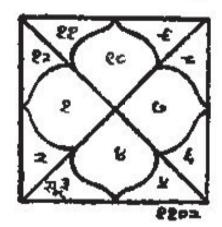


पौनवें भाव में सत् 'सुक्त' की राशि पर स्थित सूर्व के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विधाध्ययन में कठिनाई रहती है। बुद्धि भी कम-जोर रहती है। 'ऐसा व्यक्ति चिन्तातुर तथा स्वभाव का कोशी होता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से एकादशभाव तो देखने से लाभ-प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तभी सफलता मिल पाती है।

'अकर' लाम भी कृष्यली के 'बच्छवाव' स्थित 'सूर्य' का कलावेश

मकरलग्न : चच्छमाव : सूर्यं

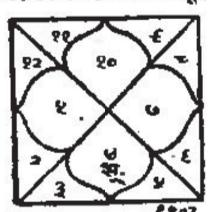


छठे भाव में मिल 'बुघ' को राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शतु-पक्ष पर हमेशा विजव प्राप्त करता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में असन्तोष भी रहता है।

'मकर' लग्न की कुच्छली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

मकरणान: सप्तमभाव: सूर्य

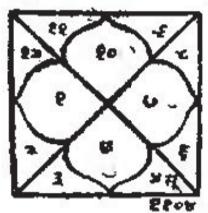


सातवें भाव में मित चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्व के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा कभी-कभी बहुत हानि भी खठानी पड़ती है। बाबु सथा पुरातस्य का लाभ होता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से सारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कभी रहती हैं सथा कभी-कभी किकार भी बनना पड़ती हैं।

'मकर' सम्म की कुण्डली के 'अष्टममाद' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

बकरलकः अष्टमभावः सूर्यं

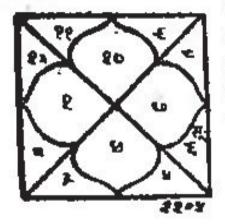


बाठवें भाव में स्वराणि में स्थित 'सूर्य के प्रभाव से जातक सो आयु तथा पुरासत्त्व की विभेष शक्ति प्राप्त होता है। वह बड़ा स्वाभिमानी, तेजस्वी, निकर तथा बहादुर होता है। उसका दैनिक जीवन भी बड़ा प्रभाव-पूर्ण रहता है।

सातवीं मतु-वृष्टि से दितीयभाव को देखने से धन संबय में परेशानी रहती है तथा कौटुम्बिक सुख में बाह्याएँ आती हैं।

'मकर' लाम की कुष्यक्षी के 'नवममाव' स्थित 'सूर्य' का कलावेत

मकरलग्न : नवमभाव : सूर्य

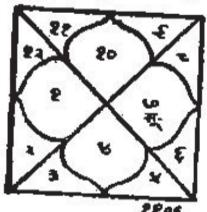


नवें भाव में मिल 'बुध' को राशि पर स्थित 'सूर्थ' के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नित कुछ रकावटों के साथ होती है। धर्म-पासन में भी खोड़ी खुटि रहती है तथा यस में भी कभी आती है। आयु तथा पुरातत्व की वृद्धि होती है। जिससे जातक रईसी ढंग का जीवन व्यतीत करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराकम की समुजित वृद्धि नहीं हो पाती।

'अकर' सम्म की कुण्यसी के 'बरामबाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न: दशमभाव: सूर्य



वसनें भाव में सतु 'सुक' की तुला राशि पर स्थित बीच के 'सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता पक्ष से बोर कष्ट स्टाना पड़ता है। राज्य पक्ष से प्रतिष्ठा में कभी तथा व्यवसाय-पक्ष में बाधाओं का का सामना करना पड़ता है। आयु तथा पुरातस्य सो शक्ति को भी कुछ हानि होती है।

सातवीं जिस तथा उच्य-दृष्टि से चतुर्वभाव

को देखने से माता, भूमि तका भवन का सामान्य सुक प्राप्त होता है।

'मकर' जन्म की कुच्छलों के 'एकाइसमाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

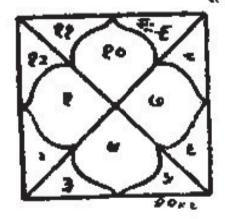
मकरलम्न : एकादशमाद : सूर्ये न्यारहवें भाव में मिल 'मंगल' की राशि पर

रियत 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आमदनी में यूदि होती है, परन्तु कभी-कभी कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। आयु तथा पुरातस्य की शक्ति का विशेष लाभ होता है। सातवीं सत-दृष्टि से पंत्रममान की देखने से

सातवीं सतु-दृष्टि से पंचममान की देखने से सन्ताम-पक्ष से कष्ट रहता है तथा विद्याख्यम के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा व्यक्ति उम्र स्वभाद का होता है।



मकरलम्न : द्वादशभाव : सूर्यं



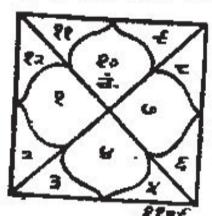
बारहवें भाव में मिल 'शुर्द की राशि पर स्थित 'सूर्ये' के प्रभावसे जातक को खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों में कठिनाई उपस्थित होती है। पेट में विकार भी रहता है। बायु तथा पुरातस्य की भी कुछ हानि होती है।

सातवी अमल-दृष्टि से पष्ठभाव को देखने से शतु-पक्ष पर कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा अगड़े-टंटे स्वयं ही दूर होते रहते हैं।

'मकर' लग्न में 'चन्द्रमा'

'मकर' लग्न की कुष्यती के 'अध्यममान' स्वित 'क्यमा' का फलावेश

अकरलग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

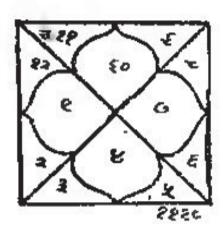


पहले भाव में शहु 'विनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के सारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है। वह विनोदी, मानी, यशस्त्री तथा कार्य-कुशल भी होता है

सातवीं दृष्टि से स्वराप्ति में सप्तमभाव को देखने से स्त्री सुन्दर, सुयोग्य तथा स्वाभिमानिनी मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय के खेत में भी पूर्ण सफलता मिसती है।

'मकर' सम्म की कुष्कली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : द्वितीयभाष : चंद्र

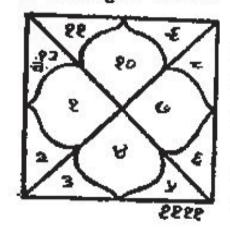


दूसरे मान में शतु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव के जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु स्त्री के कारण कुछ परेशानी का अनुभव भी होता है।

सातवीं मित्रवृष्टि से अष्टममाय को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती हैं। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन अमीरी ढंग का होता है।

'अकर' लग्न की कुष्डली के 'मृतीयमाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर सम्नः भृतीयभावः चद्र

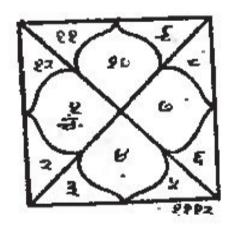


तीसरे भाव में भिन्न 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की भाई-बहिनों का खेष्ठ सुख भितता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। स्त्री, ज्यवसाय तथा कुटुम्ब का सुख भी अच्छा रहसा है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नथमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्त्री, सुखी तथा सम्पन्न होता है।

'मकर' सम्म की कुन्डली के 'चतुर्वभाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलावेस

यकर सम्न : चतुर्यमाव : चंद्र

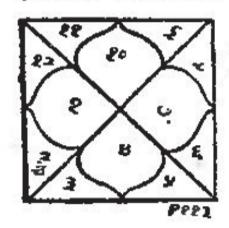


चीये मान में मिन्न 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्त्रमा' के प्रमान से जातक को माता, भूमि तथा भवन का खेष्ठ मुख प्राप्त होता है। घरेलू बातावरण क्षानन्दमय रहता है है स्त्री सुन्दर मिसती है, ब्यवसाय में भी सफलता मिसती है।

सातवीं मिलद्ष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा स्थायी ध्यवसाय के केल में यश, प्रतिष्ठा, सहयोग, अन तथा अन्य साभ प्राप्त होते रहते हैं।

'मकर' करन की कुन्डली के 'यंधमधाध' स्थित 'वन्त्रभा' का कलावेश

भकर लग्नः पंचमभाव : खंद्र

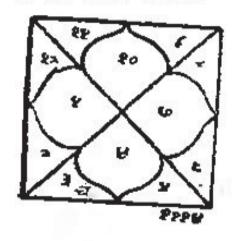


पौषनें मान में सामान्य मित्र 'सुक' की रामि पर स्थित उर्च्य के 'चन्द्रमा' के प्रभाव में जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिसती है। स्ती तथा व्यवसाय-एक्ष से भी सुन्न मिसता है।

सातवीं नीचवृष्टि से एकादशमाद की देखने से आमदनी के भाग में कुछ एकावटें आती हैं। ऐसा व्यक्ति हेंसमुख तथा हाजिरजवान भी होता है।

'मकर' सम्म की कुळाती के 'वळात्राव' स्थित 'बन्द्रमा' का कलादेश

सकर लग्न: बष्ठभाव: चंत्र

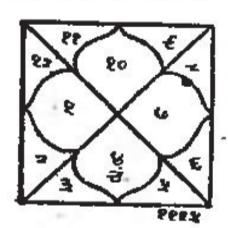


छठे माव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रमाव से जातक शबु-पक्ष में विकस्ता से काम निकालता है। स्त्री से विरोध तथा व्यवसाय में कठिनाई का सामना भी करना पड़ता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी म्यानों के सम्बन्ध से साथ भी भिनता रहता है।

'अकर' ज्ञान की कुष्पक्षी के 'सप्तममाथ' स्थित 'बश्रमा' का फलावेस

भकरसमा: सप्तमभाव: चंद्र

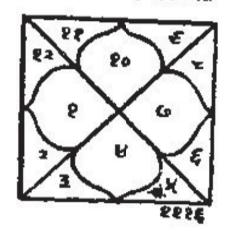


सातवें मान में स्वराणि में स्थित 'चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की सुन्दर स्त्री तथा उसके द्वारा यथेष्ट सुख की प्राप्ति होती है। व्यवसाथ में भी पूर्ण सफलता मिलती है। 'चरेलू जीवन खानन्दमय बना रहता है।

सातवीं शतुद्धि .से प्रथमभाव की देखने से सारीरिक प्रभाव में कुछ असंतोषपूर्ण वृद्धि होती है । यस तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी असंतोष बना रहता है।

'मकर' जम्म की कुन्धली के 'अञ्चलकाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलावेंश

यकर सम्न : अध्यमभाव : श्रंह

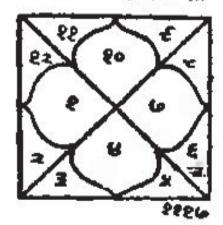


आठवें मान में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमां' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्व का यग्नेष्ट लाभ होता है, परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। गृहस्थी का मुख भी कम रहता है। मन में अशान्ति रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ प्राप्त होता है। वैसे दैनिक जीवन ठाठ-बाट का रहता है।

'मकर' लम्ब की कुष्पली के 'नवमभाव' स्थितं 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : नवमभाव : चंद्र

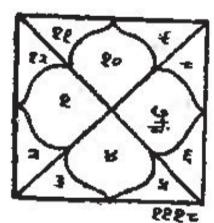


नवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्त्रमा' के प्रमाद से आतक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म में भी अत्यक्षिक कृषि बनी एहती है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्त्री, न्यायी तथा धर्मात्मा होता है।

सातवीं मिलद्ष्टि से तृतीयभाव को देखने से साई-बहिनों से सुख तथा पराक्रम में बृद्धि होती है।

'मकर' क्या की कुलाओं के 'दशरकाव' स्थित 'बस्तमा' का फलादेश

मकर सम्न : दशमभाव : खंद

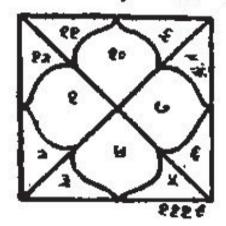


दसर्वे भाव में सामान्य मित्र 'सुक' की राशि पर स्थित 'चन्त्रमा' के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य से प्रतिष्ठा तथा व्यवसाय से साम की प्राप्ति होती है। यनोबलु बढ़ा रहता है। स्ती सुन्दर तथा स्वाभिमानियी मिसती है। घरेनू जीवन सस्सासपूर्ण रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्यमाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख भी यमेष्ट मिलता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा भाग्यभासी होता है।

'मकर' जन्म की कुन्दली के 'एकादशभाव' स्थित 'बन्दमा' का फलादेश

यकर सम्न: एकादशमाद: संद्र

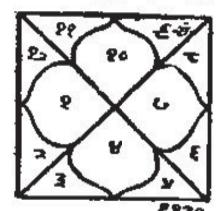


स्थारहवें भाव में मित्र 'संगल' की राशि पर स्थित नीच के 'खन्त्रमा' के प्रभाव से जातक की आम-दनी में कुछ कमी एहती है। स्त्री तथा व्यवसाव के क्षेत्र में भी अल्प सुख मिलता है। गृहस्यी के कारण चिंताओं का शिकार बनना पड़ता है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से विद्या, बुद्धि तथा तथा सन्तान का यथेव्ट सुख प्राप्त होता है ।

'मकर' जम्म की कुष्यली के 'द्वावसभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलावेस

मकर सम्न : द्वादश्रभाव : संद्र



बारहवें भाव में मिल 'गुरु' की राशि पर स्थित
'सन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता
है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से साभ होता रहता
है। स्त्री-सुख में कमी रहती है तथा दैनिक व्यवसाय
में भी कठिनाइयां आती रहती हैं। इसी से मन चितित
तथा बन्नान्त बना रहसा है।

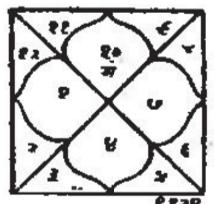
सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शतु-पक्ष एवं अगड़े के मामलों में जातक विनम्रता से

काम निकालकर अपना प्रभाव भी स्थापित करता है।

'मकर' अन्त में 'मंगल'

'अकर' ज्ञान की कृष्टली के 'प्रथममाव' स्थित 'अंगल' का फलावेस

मकर सम्न : प्रथमभाव : मंगल



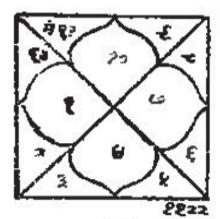
पहले भाव में सतु 'शनि' की राशि पर स्थित उच्च के 'मंगल' के प्रभाव से जातक के मारीरिक सौन्दर्य एवं संक्ति में वृद्धि होती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्यभाव को दिखने से माता, भूमि एवं भवन का अच्छा सुख प्राप्त होता है। रहन-सहन ठाठ-बाट का होता है।

सातवीं नीय-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में कठिनाइयाँ आसी हैं। सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा

पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, दनी तथा चतुर होता है।

'सकर' लग्न की कुच्छली के 'द्वितीयभाष' स्थित 'संगल' का फलादेश

मकर स्कान: द्वितीयभाव: मंगल दूसरे माव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित

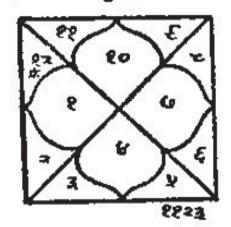


'मंगल' के प्रभाव से खातक की मन-कुटुम्ब का पर्याप्त मुख सामान्य असंतोष के साथ प्राप्त होता है, परन्तु माता के सुख में कमी रहती है। भूमि एवं भवन का लाभ होता है। चौथी शतु-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-एक्ष की उन्नित होती है। सातवीं मिल-दृष्टि से अप्टमभाव की देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। ऐना व्यक्ति अपने आधिक लाभ का अधिक ध्यान रखता है।

'मकर' सम्म की कुच्छली के 'तृतीयमाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकर लग्न : सृतीयभाव : मंगल



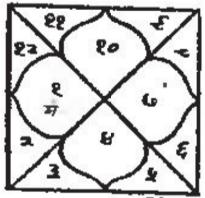
क्षीसरे भाव में मिन्न 'युर' को राणि पर स्थित 'मंगल' के प्रमाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। मासा, भूमि, भवन का सुख प्राप्त होता है। चौथी मिन्न-दृष्टि से पष्ठभाव को देखने से शनु-पन्न पर प्रभाव बना रहता है। ऐसा व्यक्ति वहादुर तथा हिस्मती भी होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म को उन्हिति होती है। आठवीं सामान्य

शतु-दृष्टि स दशमभाव को देखने से कुछ कमियों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है-।

'मकर' सम्म की कुण्डसी के 'चतुर्थमाव' स्थित 'मंगल' का फसादेश

मकर लग्न : चतुर्यभाव : मंगल



RESE

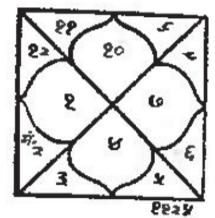
चौये भाव में स्वराधि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का विशेष मुख प्राप्त होता है। चौथी नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्वी के मुख में कमी रहती है तथा दैनिक स्थवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं।

सातनीं सामान्य मितद्धि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सम्मान तथा सफलता की प्राध्ति होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादशमाव को देखने से आमदनी

खूद रहती है तथा लाभ के साधन सरलता से मिलते रहते हैं।

'मकर' लग्न की कुष्वकों के 'बंधनभाव' स्थित 'बंगल' का फलावेश

मकरलग्न: पंचमभाव: मंगल पौचर्ने भाव में सामान्य मिक्ष 'शुक' की राशि



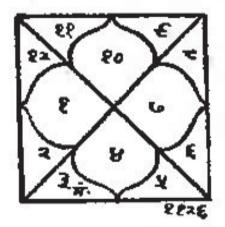
पर स्थित 'भंगल' के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान-सुख का लाभ होना है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। चौथी मिल-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातस्य की मन्ति में यृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि सं स्वराशि में एकादशभाव की देखने से आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं मिक्स-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से सर्च अधिक रहता है तथा

बाहरी सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होता है।

'मकर' सम्म की कुष्पक्षी के 'खष्ठमाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सकरलग्न: षष्ठभाव: मंगल



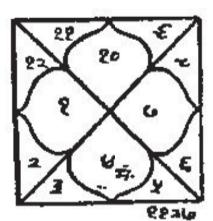
छठे भाव में मित्र 'गुरु' की रामि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक सबु-यदा पर विशेष प्रभाव रखता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है । माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है तथा आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं मिल-दृष्टि के द्वादसभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा वाहरी सम्बद्धीं से लाम

होता है। आठवीं उच्च दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से भारीरिक सौन्दर्य स्वास्य्य, एवं प्रभाव में वृद्धि होती है।

'मकर' लम्न को कृष्टली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

अकरलग्न: सप्तमभाव: मंगल सातवें भाव में मिल 'चन्द्रमा' की राजि पर



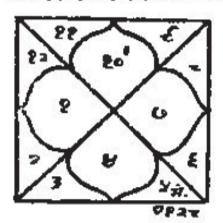
स्थित नीच के 'संगल' के प्रभाव से जातक की स्ती-पक्ष तथा गृहस्थी के सुख में कभी रहती है। व्यवसाय माता, भूमि तथा भवन का सुख भी कमजोर रहता है। चौथी सन्दु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से भारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं गौरवकी वृद्धि होती है। आठवीं शतु-दृष्टिसे तृतीयभाव की देखने से धन-संचय

में कठिनाइयां आती हैं तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

'मकर' क्या की कुच्छलों के 'आस्टममाच' स्थित 'संगत' का फलावेस

अकरलग्न: अष्टमभाव: मंगल

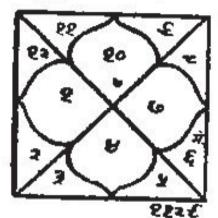


आठवें मान में मिल 'सूर्य' की राशिपर स्थित
'अंगल' के धनान से जातक की आयु तथा पुरातस्य
की यथेट भक्ति प्राप्त होती है, परन्तु माता, भूमि
एवं भवन का सुख कुछ दुवैत रहता है। चौथी दृष्टि
से स्वराशि में एकादशभाव की देखने से आमदनी
बहुत अच्छी रहती है। सातवीं सन्नु-दृष्टि से तृतीय
भाव को देखने से कुछ कमियों के साथ धन-संचय में
सफलता मिलती है तथा कुदुम्ब का सुख सामान्य
रहता है। आठवीं मिल-दृष्टि से तृतीय भाव को

देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराकंग में वृद्धि होती है।

'मकर' शप्त की कुष्पली के 'जनमनाव' स्थित 'संगल' कर फलावेश

मकरलय्न : मवसभाव : भंगल . वर्वे भाव में यित्र 'बुध' की रामि पर स्थित



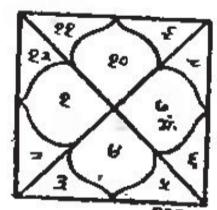
'भंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। वह धनी, यशस्त्री, धर्मात्मा तथा न्यायप्रिय होता है। चौथी मिल-दृष्टि से द्वादमभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से साथ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से मृतीतभाव की देखने से भाई-वहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराक्ति में चतुर्यमाव की देखने से

माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट मुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्त्री, मुखी, पराक्रमी तथा विनोदी होता है।

'मकर' सम्ब की कुन्डसी के 'दशमधाव' स्थित 'संगल' का कलादेश

मकरलय्नः दशमभावः भंगल दसर्वे भाव में सामाग्य शतु 'सुक' की राणि



पर स्थित 'संगल' के प्रभाव से आतक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। चौथी शतु-वृष्टि से प्रथमभाव की देखने के शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव में बृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराधि में चतुर्यमाव की देखने के माला, भूमि तथा भवत का सुख प्राप्त होता है। आठवीं सामान्य मिन्न-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से सल्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि होती है।

'अकर' लग्न की कुन्डली के 'एकाश्सभाव' स्थित 'संगल' का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : भगल

ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'संगल' के

2 2 6 4 7 7

प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यिष्ठिक वृद्धि होती होती है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। चौथी शबु-वृष्टि से द्वितीय भाव की देखने से धन और कुटुम्ब का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

सातवीं सामान्य मिद्ध-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का श्रेष्ठ सुख मिसता है। आठवीं मिद्र-दृष्टि से चळ भाव को देखने से सद्ध-

पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहसा है तथा क्षगड़ों से खाभ होता है।

'मकर' सम्म की कृष्वली के 'द्वादसभाव' स्थित 'मंबल' का फलावेश

मकरलग्न: श्वादशमाय: मंगल बार

बारहवे भाव में मिल्न 'गुरु' की राशि पर

स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कभी रहती है। चौथी मिन्न-दृष्टि से तृतीय भाव की देखने से भाई-बहिनों का सुख मिनता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

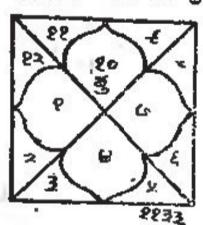
सातवीं मिल-दूष्टि से बष्ठमाव को देखने से शहु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। आठवीं नीच-दृष्टि से सप्तम भाव की देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी आती

है तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ हानि उठानी पहती है।

'मकर' लग्न में 'बुघ'

'शकर' जन्म को कृष्णली के 'प्रथममाव' स्थित 'बुब' का कलावेस

मकरलग्न : प्रथमभाव : बुध

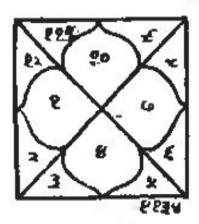


पहले भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। यह शतु-पक्ष पर स्वविवेक से प्रभाव स्थापित करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है, परन्तु व्यवसाय में कभी-कभी कठिनाइयों भी आती हैं।

'अकर' सम्म की पुष्यली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुर्छ' का कलावेश

यकरलगः द्वितीयभाव : युध

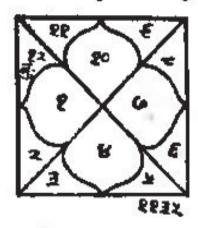


दूसरे भाव में भिन्न 'मनि' की रामि पर स्वित 'बुध' से प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि होती है। भान, प्रतिष्ठा सथा धर्म में इचि भी रहती है।

सातवीं मिस-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातस्य का लाभ होता है। परन्तु कभी-कभी भाग्योन्ति में कठिनाइयां भी आसी रहती हैं।

'मकर' लम्म की भूष्यली के 'तृतीयमाव' स्थित 'बुध' का कलादेश

मकरलम्नः तृतीयभावः बुध

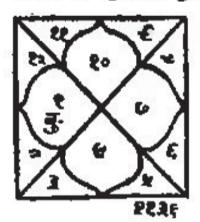


तीसरे भाव में मित 'गुरु' की राजि पर स्थित 'बुख' के प्रभाव से जातक की माई-बहुन के बुध तक पराक्रम में कुछ कमी का अनुमव होता है। भाग्योन्ति तथा धर्म-पालन में भी कठिनाइयों आती हैं। सन्नु पत्त से भी कुछ परेशानी होती है।

सातवीं उच्य-दृष्टि से स्वराणि में मवसभाव की देखने से स्वविवेक-बुद्धि द्वारा भाग्य सथा धर्म की उन्नित होती रहती है।

मकर' सम्ब को श्रुष्यली से 'बतुबंबाब' स्थित 'बुध' का फलादेश

यकरलग्नः चतुर्येशावः बुध

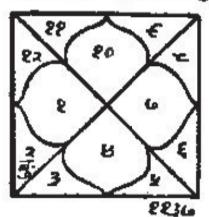


वीये भाव में मिस 'अंगल' की राक्षिपर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का बुध प्राप्त होता है तथा भाग्य की भी उन्नित होती है। घरेलू बुध-शान्ति में कुछ विध्न आते है।

सातवीं मित-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के खेल में सफलता मिनती है सभा सनु-पक्ष में विजय प्राप्त होती है !

'मकर' सान की कुखसी के 'यंधमनाव' स्थित 'बुख' का फलावेश

मकरलग्नः पंचमभावः बुध

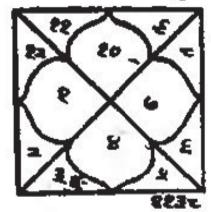


पौक्षें भाव में मित्र 'गुक्त' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान, विद्या सथा बुद्धि के केन्न में सफलता प्राप्त होती है। वह स्वपरिक्रम से खामदनी तथा धर्म की उन्नति भी करता है। शनु-पक्ष में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकावश भाव को वेखने से भाग्य की शक्ति में यथेष्ट वृद्धि होती है।

मकर' साम की कुम्बली के 'बष्ठमान' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न: षष्ठमाव: बुध

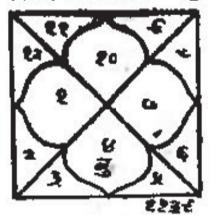


छठे भाव में स्वराशि में स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को शज़ु-पड़ा पर विजय प्राप्त होती है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति में कुछ कठिनाइयाँ तो आती हैं, परन्तु बाद में वे दूर भी हो आती हैं।

सातथीं मिल-दृष्टि से द्वादशमान की वेखने से खर्च अधिक रहता है तथा श्राहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाम तथा सुख भी मिलता रहता है।

'सकर' साम की कुण्डली के 'सप्तममाव' स्थित 'बुव' का फलावेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : सुध

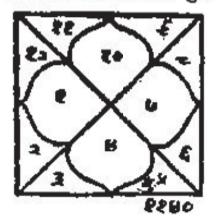


सातवें भाव में भन्नु 'चन्द्रमा' की राशि पर रिवत 'बुध' के प्रभाव से जातक स्वविवेक द्वारा मान्य की अत्यधिक उन्नति करता है तथा व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है। स्त्री-पक्ष से अमान्ति मिलती है। व्यवसाय-पक्ष में कुछ कठिनाइयों साम विशेष लाभ भी होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से प्रथमभाव की वेखने से शारीरिक प्रभाव तथा यस की बृद्धि होती है। कभी-कभी बीमारियों तो आ घरेती हैं।

'सकर' लग्न की कुण्डली के 'अव्टबमाव' स्थित 'बुध' का फलावेश

मकरलग्न: अष्टमभाव: बुध

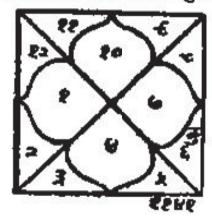


आठवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राणि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का साथ होता है। भाग्योक्तित में बहुत बाधाएँ आती हैं तथा यश में भी कमी रहती है। शबू-पक्ष से भी अशान्ति मिलती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से तृतीय भाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है तथापि दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुख' का फलावेश

मकरलग्नः नवमभावः बुध

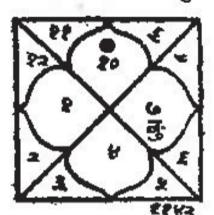


नवें भाव में स्वराशि स्थित उच्च के 'कुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य सथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। शजू-पक्ष पर सफलता प्राप्त होती है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से तृतीय भाव की देखने के कारण भाइयों से विरोध कहता है तथा भाई-वहिन के बुध में कमी आती है। पराक्रम भी शिथिल बना रहता है।

'अकर' लग्द की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

संभरलग्न :दशमभाव : बुध

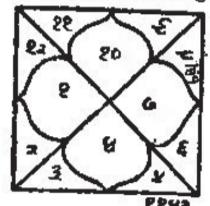


दसर्वे भाव में मित्र 'सुक' की राशि पर स्थित 'वृध' के अभाव से जातक की पिता, राज्य एवं व्यव-साय के क्षेत्र में लाभ, अतिष्ठा, सहयोग तथा यश की प्राप्ति होती है। शतु-पक्ष पर विजय तथा धनोपार्जन में सफलता मिलती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से चतुर्य भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का बुख प्राप्त होता है, परन्तु उन्नति के मार्ग में रुकावर्टे भी आती रहती हैं।

'मकर' लग्न की कुष्डली के 'एकावशमाव' स्थित 'बुव' का कलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : बुध

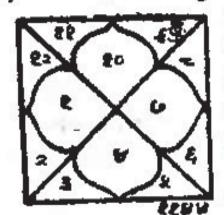


ग्यारहवे भाव में भिन्न 'मंगल' की राष्ट्र पृट्ट स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यक्षिक वृद्धि होती हैं स्था भन्नु-पक्ष में सफलता मिलती है। विवेक स्था परिश्रम हारा भाग्य की विशेष उन्नति होती है। स्वार्ययुक्त धर्म का पालन भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव की देखने से सन्तान-पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु विद्या-बुद्धि की विशेष उन्नति होती है।

'सकर' लग्न की कृष्यली के 'द्वादरामान' स्थित 'बुध' का फलादेश

- मुकरलग्नः द्वादशभावः बुध



बारहवें भाव में मिस 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से आतक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु उसकी पूर्ति दिना किसी कठिनाई के होती रहती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। भाग्यो-न्नित में कठिनाइयाँ आती हैं तथा यश की कभी रहती है।

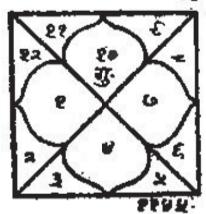
सातवीं दृष्टि से स्वराणि में पष्ठभाव की देखने से सत्तु-पक्ष से कुछ कठिनाई होती है, परन्तु भाग्य-बल

से वह उन पर विजय भी पा लेता है।

'मकर' लग्त में 'गुरु'

'सकर' लम्न की कुण्डली के 'प्रथममाव' स्थित 'गुर्व' का फलादेश

मैकरलग्न : प्रथमभाव : बुध

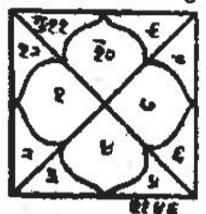


पहले भाव में शतु 'शिन' भी राशि पर स्थित नीच के 'बुध' के प्रभाव से आतक का शरीर दुर्वल रहता है। भाई-बहिन के सुख में कभी आती है एवं पराक्रम भी अल्प रहता है। खर्च चलाने में कठिनाई होती है तथा वाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी असंतीप-जनक रहता है। पाँचवीं भन्न-दृष्टि से पंचम भाव की देखने से विशा-बुद्धि के अन में नुटिपूर्ण सफलता निलती है तथा सन्तान-पक्ष से सुख-दुःख दोनों ही मिलते हैं।

सातवी उच्य-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के सेन्न में सफलता मिलती है। नदीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव की देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में न्यूनाधिकता होती रहतीं है।

'अकर' लग्न की कुळली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुर्व' का फलावेश

मकरलय्नः द्वितीयभावः गुरु



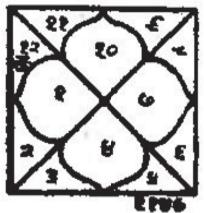
दूसरे भाव में भाव 'शनि' की राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक के धन-संग्रह में कमी आती है तथा कुटुम्ब से भी परेशानी रहती है। खर्च अधिकं रहता है तथा वाहरी सम्बन्धों से साथ होता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को वेखने से शत्रु-पक्ष में बुदिमानी से काम निकलता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से खण्टम माव की देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का कुछ लाभ मिलता है।

नवीं शतु-दृष्टि से दशमभाव की वेखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ मिलती हैं।

'अकर' लग्न की कुण्डली के 'हुतीयभाव' स्थित 'गुर्व' का फलावेश

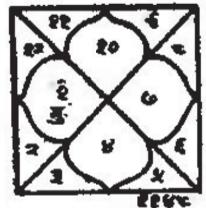
मकरलग्नः तृतीयभावः गुरु



तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'गुरुं के प्रभाव से जातक की माई-बहिनों का बुध मिलता है, परन्तु पुरुषार्थ में कभी आती है। खर्च ठीक से चलता है। बाहरी स्थानों से लाभ होता है। पौचवी उच्च सथा मिल-बृष्टि से सप्तम भाव को वेखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। सासवीं मिल-दृष्टि से सप्तम भाव की देखने से भाग्य तथा धर्म के केंद्र में उतार-भड़ाव आते हैं।

नवीं भित्र-वृष्टि से एकादशमाव की देखने से आमरनी श्रेष्ठ रहती है। ऐसा व्यक्ति सुखी जीवन विताता है! 'अकर' शब्द की कृष्टली के 'शतुर्वमाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

अकरलग्न : च**तुर्वभाव : मुरु**

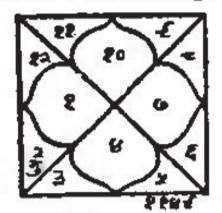


चौषे भाव में मिल 'मंगल' की राशि पर क्लित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन में बुख में सथा भाई-बहिन के बुख में भी कुछ कमी रहती है। पाँचवीं मिल-दृष्टि से अष्टम भाव की वेखने से आगु एवं पुरांतत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

सातवीं भानु-दृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है।

नतीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव की वेखने से खर्च अधिक रहता है सया बाहरी सम्बन्धों से घर-बैठे ही साथ प्राप्त होता है। 'अकर' लब्द की कुखली के 'धंधमन्नाव' स्थित 'गुब' का फलावेश

अकरलग्न : पंचमभाव : मुरु

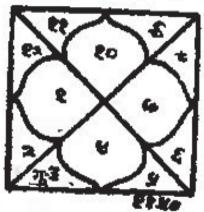


पौचवें भाव में सब् 'सुक' की राशि पर स्थित
'गुर' के प्रधाब से जातक को सन्तान-पद्म से न्यूनाधिक
लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में भी कुछ कमी
रहती है। बुद्धि-बस से खर्च चलता है तथा बाहरी
सम्बन्धों से साथ होता है। भाई-बहिनों से सामान्य
बुध मिलता है तथा पराक्रम की बुद्धि होती है।

पाँजवीं मिल-युष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्य एवं धर्म की सामान्य बृद्धि होती है। सातवीं

मिल-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी अच्छी रहती है। नवीं नीच-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सीन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कभी रहती है। 'मकर' सकर की कुछली के 'बळकाव' स्थित 'ग्रुव' का फलादेश

मकरलग्न : वष्ठभाव : मुरु



छठे भाव में मिल 'बुघ' की राशि पर क्यित 'गुर' के प्रभाव से खर्च की शक्ति से शक्ष-पद पर प्रभाव स्थापित होता है। भाई-बहिनों से सामान्य विरोध रहता है तथा पराक्रम में कमी आती है।

पॉर्चवीं शत्नु-वृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के बीत में कुछ कठिनाइयाँ रहती हैं।

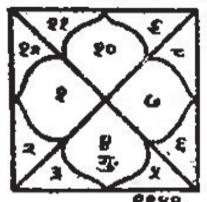
सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भावको देखने

से अर्च अधिक रहता है सया बाहरी सम्बन्धों से साभ होता है।

नवीं शालु-वृष्टि से द्वितीय भाव को वेखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि के लिए अत्यधिक परिक्षम करने पर भी कष्ट ही मिलता है।

'मकर' लग्त की कुष्यती के 'सप्तमश्राव' स्थित 'ग्रुव' का फलावेस

मकरलग्नः सप्तमभावः बुध



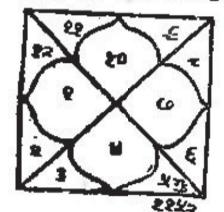
सात्वें भाव में मिक 'बन्द्रमा' की राहित पर क्षित उच्च के 'गुब' के प्रमान से जाउंक की सुन्दर पत्नी मिलती है तथा रही और व्यवसाय से बुध प्राप्त होता है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता है तथा खर्च अफ्रिक रहता है।

प्रांचवीं मिल-दृष्टि से एकावस भाव की वेखने से जीमदनी अच्छी रहती है। सातवीं नीच तया सतु-दृष्टि से प्रथम भाव की वेखने से मरीरिक सीन्दर्य तथा

स्वास्थ्य में कमी आती है। नवीं वृष्टि से स्वराशि में दुवीय भाव की वेखने से भाई-वहिनों के सुख सथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'मकर' अपन की कुण्डली के 'अध्यममाम' स्थित 'गुक' का फलादेश

मकरलग्न: अष्टममाव: गुरु



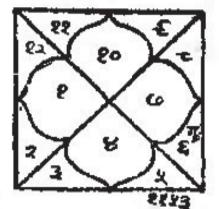
आटवें भाव में मित्र 'सूर्व' भी राशि पर स्थित 'गुरु' से प्रभाव से जातक भी आगु तथा पुरातत्त्व भी मुख हानि होती है। प्रीचवी दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक होता है तथा वाहरी सम्बन्धों से लाभ रहता है।

सातती शबू-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन सथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कभी रहती है। नदीं मित्र-दृष्टि से चतुर्य भाव की देखने से माता, भूमि एवं

भवन के सुख में कुछ सुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

'मकर' लब्द की कुष्डली के 'नवमधाव' स्थित 'बुध' का फलावेश

मकरलग्न : नवमभाव : बुध नवें भाव में मिक 'बुध' की राशि पर स्थित



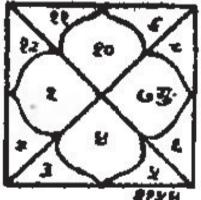
'बुध' में प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कमजोरी रहती है। वाहरी सम्बन्धों से कुछ लाभ होता है जिससे खर्च चलता रहता है। पाँचवीं नीच-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्थास्थ्य में कमी रहती है। धन भी क्षशान्त रहता है।

सातवीं दृष्टि से 'स्वराशि में तृतीय भाव की सेखने से, भाई-वहिनों के सुख तथा पराक्रम में सामान्य वृद्धि

होती है। नवीं मिल-दृष्टि से षट्ठ भाव को सेखने से शतु-पक्ष में स्व-विवेक-बुद्धि से सफनता मिलती है।

'मकर' लग्न को कुछली के 'बशमजाब' स्थित 'बुध' का फलादेश

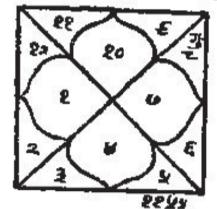
मकरलग्न : दशमभाव : गुरु



दूदिसर्वे भाव में भवु 'सुक' की राशिपर स्थित 'गुर' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कभी रहती है। भाई-बहिनों के सुख तथा परा-कम में दूदि होती है, जिसके कारण खर्च अच्छी सरह चलता है। वाहरी स्थानों से लाभ होता रहता है। पाँचवीं भवु-वृष्टि से द्वितीयभाव को वेखने से धन-संचय तथा की दुम्बिक सुख में कठिनाइयां आती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से खतुर्वे भाव की देखने से माता के सुख में कभी रहती है, परन्तु भूमि तथा भवन का सुख खर्च के बस पर मिलता है। नवीं मिल-दृष्टि से षष्ठ भाव की देखने से शत्नु-पक्ष पर बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित होता है। 'मकर' सम्म' की कुण्डली के 'एकावशमाव' स्थित 'गुर्च' का फलादेश

सकरलग्न: एकादशभाव: बुध ग्यारहर्वे भाव मे मित्र 'संगल' की राशि



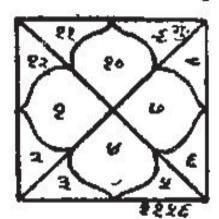
पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। वाहरी सम्बन्धों से भी लाभ होता है, अतः खर्च आराम से चलता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-शहन के सुख तथा पराकम में वृद्धि होती है।

सातवीं शतू-दृष्टि से पंचम भाव को वेखनें से सन्तान-पक्ष में असन्तीय रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि की बुद्धि होती है। नवीं उच्च-दृष्टि से सप्तम भाव

की देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'मकर' लग्न को कुण्डली के 'द्वादशमाव' स्थित 'गुब' का फलादेश

मकरतग्तः द्वादणभावः बुध



वारहवें भाव में स्वराणि-स्थित 'गुर्ड के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु वाहरी स्थानों के सम्बन्धों से साभ मिसता रहता है। भाई-वहिनों के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। पौचवीं मिस-दृष्टि से चतुर्व भाव भी देखते से माता, भूमि एवं भवन का सामान्य सुख मिसता है।

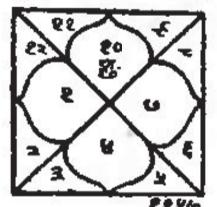
सातवीं मिल-दृष्टि से षष्ठ भाव की देखने से शातु-पक्ष पर युक्तिपूर्वक प्रभाव स्थापित होता है।

नवीं मिल-दृष्टि से अष्टम भाव की वेखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ कुछ कभी के साथ होता है। परन्तु ऐसा व्यक्ति शानदार खर्च करता तथा समाज में प्रभाव-शाली बना रहता है।

'सकर' लग्न में 'शुक्र'

'सकर' लब्द की कुध्दली के 'प्रयमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

म्करलग्नः प्रयमभावः शुक

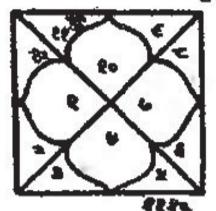


पहले भाव में भिन्न भनि भी राशि-पर स्थित
'शुक्र' के प्रभाव से जातक को शारीरिक सीन्दर्य, प्रभाव
एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। पिता, राज्य एवं
व्यवसाय के केनों में भी सफलता मिनती है। समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। सन्तान से सुख मिनता है तथा विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से सप्तमभाव को वेखने से पत्नी सुन्दर तथा योग्य मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता रहता है।

'मकर' लब्द की कुखली के 'द्वितीबबाद' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मकरलग्न : द्वितीयभाव : शुक



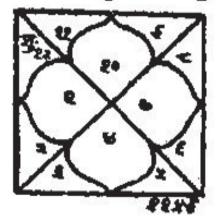
दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से आतक की घन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। पिता, व्यवसाय तथा राज्य के क्षेत्रों से भी लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाई रहती है।

सातवीं शत्नु-वृष्टि से अष्टम भाव की वेखने से आयु तथा पुरातत्त्व में कुछ कमी आती है।

ऐसा व्यक्ति धनी और यशस्वी होता है परन्तु चिन्तित रहता है।

'अकर' सम्ब की कुष्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मकरलग्न : तृतीयभाव : शुक

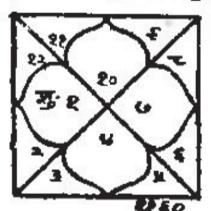


तीसरे भाव में सामान्य मित्र 'गुक' की राशि पर स्थित उच्च के 'गुक' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष बृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। विद्या एवं संतान का लाभ होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं नीच-दृष्टि से नवम भाव की देखने से भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में कुछ कभी रहती है तथा यश भी कम मित्र पाता है।

'सकर' सम्त की कुम्बली से 'क्तुर्वभाव' स्थित 'शुक्र' का कलावेश

मकरलग्न : चतुर्यभाव : शुक्र



चीये भाव में सामान्य मिक्न 'संगस' की राक्षि पर क्षित 'गुक्त' के प्रभाव से जातक को साता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। बुद्धि नीच से आमदनी भी अच्छी रहती है।

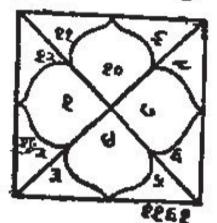
सातवीं वृष्टि से स्वराशि में दशम भाव की देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सफलता, यस, लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

ऐसा व्यक्ति नीतिज्ञ, शीलवान, विचारसील

तथा सुख-शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमधाब' स्थित 'शुक' का फलावेश

मकरलग्नः पंचमभावः शुक

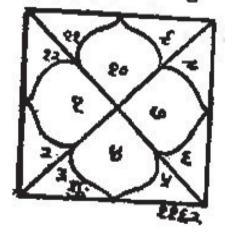


पौचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'सुक' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का मधेक्ट साभ होता है। पिता, राज्य सथा व्यवसाय के केवों में भी सफलताएँ मिलती है। ऐसा व्यक्ति प्रातः हुकूमत-पसन्द तथा कायदे-कानून माता होता है।

सातवीं शतुदृष्टि से नवम भाव की देखने से जातक की आमदनी यथेष्ट रहती है और वह निरन्तर उन्नति करता चला जाता।

'अकर' श्राम की कुण्डली के 'बच्चमार्च' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

सकरलग्न: षष्ठभाव: शुक



छठे भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'बुक' के प्रभाव से जातक सक्षु-पक्ष पर प्रभाव रखता है। पिता से कुछ मतभेद के साथ मिक्त प्रश्व होती है तथा राज्य से सम्मान भिलता है किंदु सन्तान तथा विद्या-पक्ष दुर्वल रहता है।

सातवीं शतुद्धि से द्वादश भाव की वेखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता रहता है। ऐसा व्यक्ति दिमागी रूप से भी चिन्तित बना रहता है।

'सकर' सम्म की कुश्वली के 'सप्तममाव' स्थित 'शुक्र' का खलावेश

मकरलग्नः सप्तमभावः शुक

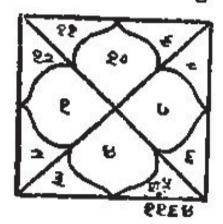


सातर्वे भाव में गन्नु 'धन्द्रमा' की राधि पर स्थित 'शुक्त' के प्रभाव से जातक को मुन्दर तथा सुयोग्य स्त्री मिलती है। पिता, राज्य, व्यवसाय, सन्तान सथा विद्या पक्ष से भी मुख मिलता है। घरेलू जीवन जानन्दपूर्ण रहता है।

सातवीं मिलदृष्टि से प्रथम भाव की वेखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। राजकीय तथा सामाजिक केल में प्रतिष्ठा भी मिलती है।

'मकर' लम्न की कुष्पली के 'अध्यमभाव' स्थित 'शुक' का फलावेश

मकर लग्न:अष्टमभाव:शुक

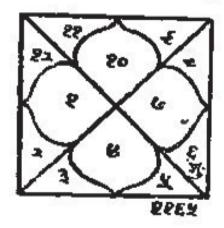


.आठवें भाद में भवू 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की पुरातत्त्व एवं आयु की शक्ति का लाभ होता है। पिता तथा सन्तान-पक्ष से कब्ट होता है एवं राज्य तथा विद्या का क्षेत्र जुटिपूर्ण रहता है।

सातवीं मिलदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के यश पर ज़न्निति करता है।

'सकर' सम्त की कुण्डली के 'नवमचाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मकरलग्न:नवमभाव:शुक

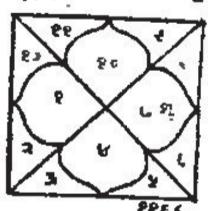


नवें भाव में मित्र 'बुध' की राधिः पर स्थित भीच के 'बुक' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में बाधाएँ आती हैं। पिता, राज्य, व्यवसाय, सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में जुटिपूर्ण सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं उच्च तथा शतुद्धि से तृतीयभाव की देखने से भाई-शहन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से तरक्की करता है।

'सकर' लब्द की कुख्यली के 'बरामजाब' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

सकरलनः दशमभावः शुक

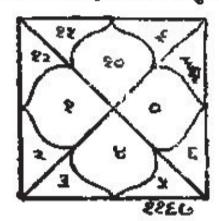


दसर्वे भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बत्यिक सहयोग, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष भी प्रवल रहता है।

सातवीं शतुद्धि से चतुर्य भाव की वेखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है तथा घरेलू जीवन उल्लासमय बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुष्यली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

-मकर लग्न : एकादशभाष : शुक्र

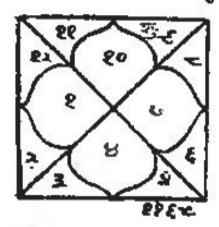


ग्यारहवें भाव में सन्नु 'संगल' की राशि पर स्थित 'सुक' के प्रभाव से जातक की धामदनी में बुद्धि होती है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराधि में स्थित पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का भी खेळ लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी योग्यता के अल पर तरक्की करता है।

'मकर' लग्न की कुप्पती के 'हादशमाव' स्थित 'शुक' का फलादेश

सकर लग्न : द्वादशभाव : शुक्र



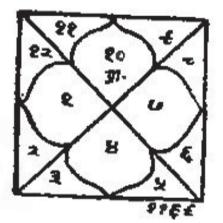
बारहवें भाव में सतु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'गुक' के प्रभाव से जातक का खर्व अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सबंध से लाभ प्राप्त होता रहता है। पिता पक्ष से हानि, सन्तान-पक्ष से कष्ट तथा विद्या-पक्ष में कमी रहती है। मानसिक चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं मिन्नदृष्टि से घष्ठ भाव की देखने से शतु-पक्ष में चतुराई से काम निकलता है। ऐसे व्यक्ति को उन्नति करने में कुछ विलम्ब लगता है।

'मकर' लग्न में 'शनि'

'मकर' सान की कुण्डली के 'अथममाव' स्थित 'जनि' का फलावेश

मकर लग्न: प्रथमभाव: शनि



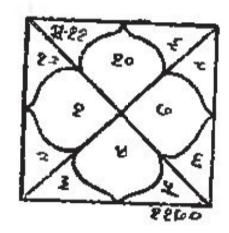
पहले भाव में स्वराणि-स्थित 'शिन' के प्रभाव से आतक के भारीरिक सीन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। वह स्वाभिमानी तथा पशस्वी भी होता है। सीसरी शतुद्धि से तृतीय भाव की देखने से पराक्षम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-वहिनों से असन्तोष रहता है।

सातवीं शतुदृष्टि से सप्तम भाव की देखने से स्त्री से असन्तोष रहता है तथा व्यवसाय की वृद्धि के लिए प्रयत्न करता है। दसवीं उच्चदृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता,

सहयोग, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'जकर' साम की कुष्वली के 'द्वितीयचाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर स्टब : द्वितीयभाव : शनि

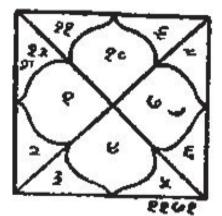


दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'सनि' के प्रभाव से जातक की धन-संचय एवं कौटुम्बिक सुख का यथेष्ट लाम होता है। तीसरी नीच-दृष्टि से चतुर्य भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है।

सातनीं शतुद्धि से अष्टम भाव की देखने से आयु तथा पुरातस्व की कुछ हानि होती हैं। दसवीं शतुद्धि से एकादश भाव की देखने से कुछ कठिना-इयों के साथ आमदनी में वृद्धि होती है।

'मकर' लान की कुण्डली के 'तृतीयमाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न: शृतीयभाव: शनि तीसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित



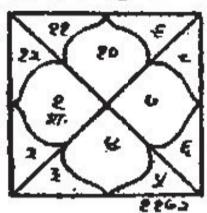
'शनि' के अभाय से जातक की कुछं कठिनाई के साथ भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। पुरुषार्थ के अल पर धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी मिलदृष्टि से पंचम भाव की देखने से अन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्मे की मृद्धि होती है। दसवीं शतुदृष्टि से

द्वादश भाष की देखने से खर्ज अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कुछ कठिनाई के साथ लाभ मिलता है।

'मकर' लग्न की कुण्यसी के 'बतुर्यभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

म-कर लग्न : **चतुर्य**भाव : शनि



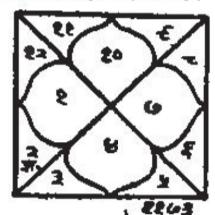
चौथे भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'मनि' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि सथा भवन के सुख में कमी रहती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं धन-कुटुम्ब का सुख भी कम ही मिलता है। तीसरी मिलदृष्टि के षष्ठभाव की देखने से शतु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगडों से लाभ होता है।

सातवीं उच्चर्ष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्धवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ भिलती हैं। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने रे

करीर सुन्दर होता है तथा आत्मवल को अधिकता पाई जाती है।

'मकर' लग्न की कुच्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकरस्य : पंचमचाव : श्रीन



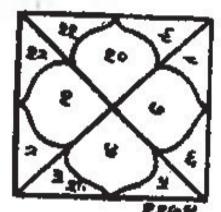
पाँचवें भाव में मित्र 'शुक्त' की राशि पर स्थित 'शित' के प्रभाव से जातक की सन्तान, विद्या तथा बुद्धि का विशेष लाभ होता है। शारीरिक सौन्दयं, बाणी तथा योग्यता की भी प्राप्ति होती है। तीसरी शतुद्दि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री से कुछ असंतीष रहते हुए भी उसमें अधिक अनुरक्ति होती है तथा व्यवसाय-पक्ष में भी कुछ जुटिपूर्ण सफलता मिलती है।

सातवीं संजुद्धिः से एकादनभाव को देखने से

आमदनी के केस में कठिनाइयाँ जाती हैं। दसवीं दृष्टि से स्वराणि में दितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुष्वली के 'वष्ठमाव' स्थित 'शनि' का कसःदेश

मकर लग्न: बच्ठभाव: शनि



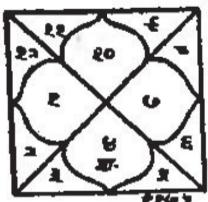
छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक के भारीरिक सौन्दर्थ एवं स्वास्थ्य में कुछ कभी रहती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बढ़ता है। कुटुम्ब से सामान्य विरोध रहता है तथा धन-संग्रह में कभी आती है।

तीसरी सन्नुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातस्य का अधिक लाभ नहीं होता। सातवीं सन्नुदृष्टिसे द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक

रहता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध बनता है। दसवीं शतुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-वहिनों से कुछ वैमनत्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

'मकर' साम की कुन्छली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर सन्तः सप्तमभावः शनि

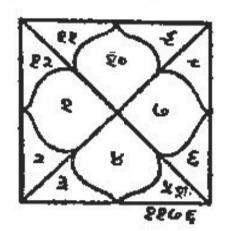


सातनें भाव में सन्नु 'चन्द्रमा' की राशि पर रियत 'सिन' के प्रभाव से जातक को स्ती-पक्ष से शक्ति एवं आत्मीयता मिलती है तथा परिश्रम के द्वारा व्यवसाय में उन्तित होती है। धन तथा सन्तान का सुख भी मिलता है। तीसरी मिलदृष्टि से नवम भाव को देखने से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्तित होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि में प्रथम भाव को देखने से गारीरिक सीन्दर्य में दृद्धि होती है तथा स्वाभिमान एवं प्रभाव का लाभ होता है। दसवी नीच तथा शबुवृष्टि से चतुर्यभाव को देखने से माता, भूमितथा भवन के सुख में कमी रहती है।

'मकर' सन्न की कुण्यसी के 'अध्यमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : अध्यमभाव : अनि

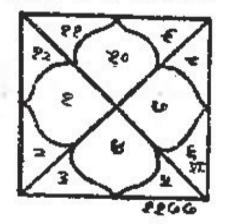


आठवें भाव में शतु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'गनि' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्वका लाभ होता है। धारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी अती है तथा धन-कुदुम्ब की हानि पहुँचती है। तीसरी उच्चदृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाव के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दितीय भाव को देखने से धन-कुटुस्व का अल्प सुख मिलता है। दसवीं मिलदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्नान-पक्ष की बुद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्यली के 'नवमभाव' स्थित 'शर्मि' का फलादेश

स्कर लप्न: नवमभाव: गनि



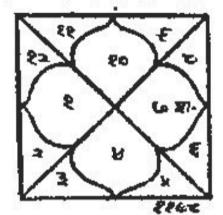
नवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की पर्याप्त उन्निति होती है। शारीरिक प्रभाव, सम्मान तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी शतूदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयां आती हैं।

सातवीं शतुद्धि से शृतीय भाव की देखने से भाई-बहिन के सुख में कभी आती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

दसवीं मित्रदृष्टि से थण्ठ भाव को देखने से धन एवं शारीरिक शक्ति के अल से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़े के मामलों से लाभ होता है।

'मकर' सन्न की कुप्पती के 'दशमधाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : दशमभाव : श्राम



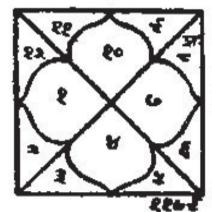
दसर्वे भाव में मिल 'शुक्त' की राशि पर स्थित उच्च के 'शनि' के अभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यक्षिक सुख, सहयोग, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी यथेंद्र मिलता है। तिसरी शतु-वृष्टि से क्षादश भाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से असन्तोष रहता है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्य भाव को देखने से

माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी जाती है। दसवीं शतुदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री-सुख में कुछ कमी तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ परेशानियाँ वाती हैं।

'मकर' साम की कुन्डली के 'एकावसभाव' स्थित 'सनि' का फलावेश

मकरलग्न: एकादशभाव: अनि ग्यारहर्वे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर



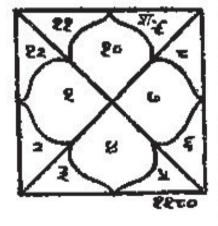
स्थित 'शिन' के प्रभाव से आतक की आमदनी में अत्य-धिक वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में प्रयम भाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा, आत्यवल तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है।

सातवीं मिलदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी यपेष्ट सफलता मिलती है। दसवीं शतूदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से

क्षायु के विजय में चिन्ता रहती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है।

'मकर' साम की कुण्डली के 'हादशमाय' स्थित 'सनि' का फलावेश

मकर स्वयः : द्वादशभावः सनि



बारहवें भाव में सन् 'गुर' की राशि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। धन, कुटुम्ब तथा शारीरिक स्वास्थ्य के सुख में कभी जाती है।

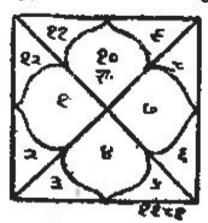
तिसरी दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव की देखने से धन-प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न करना पड़ता है। सातवीं मिलदृष्टि से षष्ठ भाव की देखने से शत्नु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा अगड़े के मामलों में दिजय मिलती है।

दसवीं मिलदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा भाग्यवान् होता है।

'मकर' लग्न में 'राहु'

'मकर' लम्म की कुंब्बली के 'प्रथममाव' स्थित 'राहु' का क्सावेश

मकर लग्न : प्रथममाव: राहु

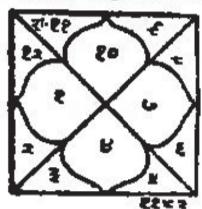


पहले भाव में मित्र 'मित' की रामि पर स्थित
'राष्ट्र' के प्रभाव से जातक के गारीरिक सौन्दर्य एवं
स्वास्थ्य में कमी जाती है। कमी मरीर में चोट भी
लगती है। कमी कोई विशेष रोम भी होता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, चतुर, सतक तथा युक्ति-बल से अपने प्रभाव की वृद्धि करने बाला होता है।

'मकर' लाम की कुण्डली के 'द्वितीयमाब स्थित 'राहु' का फलारेश

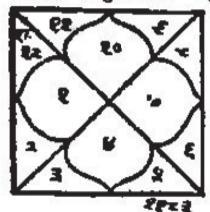
मकर लग्न:द्वितीयभाव: राहु



दूसरे भाव में जिन्न 'सिन' की राणि पर स्थित
'शहुं के प्रभाव से जातक धन तथा कुटुम्ब के कारण
विन्तित रहता है तथा कष्ट भोगता है। कभी-कभी ऋण
भी लेना पड़ता है। प्रकट रूप से वह अनी समझा जाता
है, परन्तु यथायें में धन की कभी रहती है। बाद में गुप्त
युक्तियों के बल पर वह अपनी खायिक स्थिति को सुदृढ़
भी बना लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'शृतीयबाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलादेश

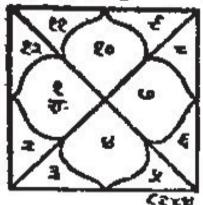
मकरसन्नः दृतीयभावः राहु



तीसरे भाव में भतु 'गुरु' की राशि पर स्थित
'राहु' के प्रभाव से जातक को भाई-वहिनों की थोर से
कच्ट मिलता है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती
है। भीतर से दुर्वलता अनुभव करने पर. भी वह प्रकट
रूप में बड़ा हिम्मती होता है तथा कठिनाइयों पर विजय
पाता रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'खतुर्यमाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकर लग्न : चतुर्यभाव : राहु



वीये माव में मतु 'मंगल' की रामि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कभी रहती है। कभी मातृभूमि का त्याग भी करना पड़ता है। अन्त में वह गुप्त युक्तियों के बल पर सुख तथा प्रभाव की वृद्धि करता है। ऐसा व्यक्ति हिम्मती तथा वैयंवान् होता है।

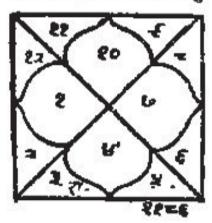
'मकर' लग्न की कुष्णली के 'यंत्रममाव' स्थित 'राहु' का अलादेश मकर लग्न: प्रमाभाव: राहु

पाँचवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के भ्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है तथा विद्या ग्रहण करने में भी कठिनाई आती है। परन्तु उसकी बुद्धि बड़ी तीत्र होती है।

बह होशियार तथा गुप्त युक्तियों में प्रवीण होता है। अन्त में, सन्तान तथा विद्या दोनों ही क्षेत्रों में सफलता भी था नेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'बळकाव' स्थित 'राष्ट्र' का कलादेश

संकरलग्न: बण्ठभाव: राहु

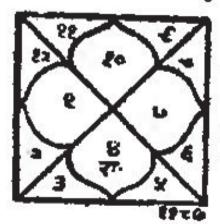


छठे भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शतु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा झगड़ों के मामलों में सफलता प्राप्त करता है।

वह कूटनीतिज्ञ, विवेकी, सीव-बुद्धि तथा गुप्त युक्तियों का जानकार होता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः कभी बीमार नहीं होता।

'अकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तममाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलादेश

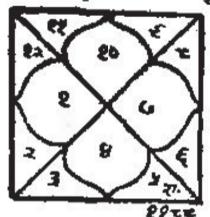
मकर लग्न : सप्तमभाष : राहु



सातवें भाष में शतु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से महान् कष्ट होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयां जाती रहती हैं। उसकी मूत्रेन्द्रिय में रोग भी होता है। बह अपनी युप्त युक्तियों के अल से कठिनाइयों पर कुछ विजय भी पा लेता है।

'मकर' सम्म की कुचाली के 'अव्हममाव' स्थित 'राष्ट्र' का कुसारेश

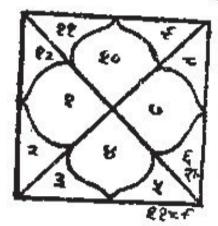
मकरतग्नः अष्टमभावः राहु



अठवें भाव में सत् 'सूवें' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के जीवन पर बड़े संकट आते हैं तथा कमी-कभी मृत्यु-तुस्य कष्ट भी भोगना पड़ता है। पुरातत्त्व की हानि भी होती है। उदर अथवा गुदा-सम्बन्धी रोगों का शिकार बनना पड़ता है। वह अपनी गुप्त गुक्तियों के बल पर जैसे-तैसे जीवन-वापन करता है।

'मकर' सप्त की कुण्डली के 'मवमभाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलादेश

मकरलग्न : नवमभाव: राहु

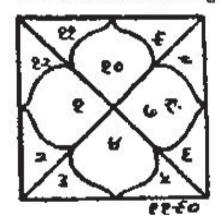


नवें भाव में मिस 'बुध' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में निरम्तर बाधाएँ आती रहती हैं। कभी-कभी विशेष कठिनाइयों का शिकार भी बनता है। धर्म-पालन में भी कमी रहती है।

कठिन संघर्ष, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर वह बोड़ी-बहुत उन्नति भी कर लेता है।

'अकर' लग्न की कुष्डलों के 'दशमधाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलादेश

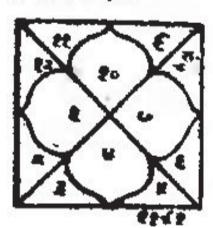
भकरलग्न: दशमभाव: राहु



दसर्वे भाव में मिल 'शुक्त' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य सपा व्यवसाय के क्षेत्र में विष्नों वाधाओं का सामना करना पड़ता है। परन्तु वह अपनी गुप्त गुक्तियों के बल पर उन्हें दूर करता हुआ भाग्य की उन्तत बनाता है। यद्यपि उसे अनेक बार संकटों में थिर जाना पडता है।

'अकर' साम की कुण्डली के 'एकारशमाव' स्थित 'राह्न' का फलावेश

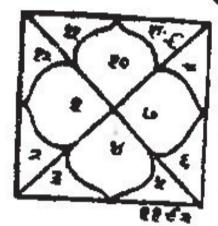
मकरलग्न : एकादशमार्व : राहु



ग्यारहवें भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम तथा गुप्त युक्ति-बल द्वारा विशेष लाभ प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे बड़ी हानि भी उठानी पड़ती है तो कभी विशेष लाभ भी होता है। उसके जीवन में सुख-दु:ब वाते-बाते बने रहते हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशमाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

म्बरलप्न : द्वादशभाव : राह



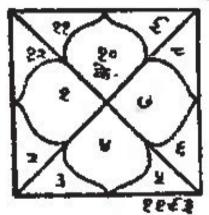
बारहवें भाव में मत्नु 'गुर' की राशि पर स्थित नीच के 'राटु' के प्रभाव से जातक की अपना खर्च चलाने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कष्ट उठाने पड़ते हैं।

हिम्मती होने के कारण वह अपनी कठिनाइयों की प्रकट नही होने देता तथा उन्हें दूर करने की विशेष परिश्रम करता रहता है।

'मकर' लग्न में 'केतु'

'अकर' लग्न को कुण्डली में 'प्रथममाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्नः प्रथमभावः केतु

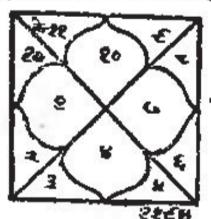


पहले भाव में विद्य 'सिन' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के सारीरिक सीन्दर्य सथा स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा कभी कोई बड़ी चौट सगने की संभावना भी रहती है।

ऐसा व्यक्ति उप तथा जिही स्वभाव का होता है तथा अपने प्रभाव की बढ़ाने के लिए गुप्त युक्तियों का अप्त्रिय भी सेता है।

'मकर' लग्न की कुच्छली में 'द्वितीयमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

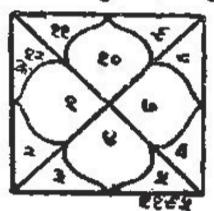
मकरलग्न : द्वितीयभाव : केतु



दूसरे भाव में मिन 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के विषय में बड़ें संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह हिम्मत तथा युप्त युक्तियों का आश्रय लेकर धन-सम्बन्धी कभी को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

मकर सम्म को कुमाली के 'तृतीयमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

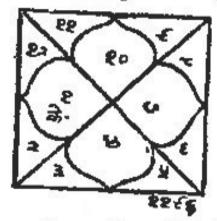
मकरलग्न: सृतीयमाव: केतु



तीसरे भाव में शतु 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के पक्ष में परेशानी तथा संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है।

वह साहस, धैर्य, पुरुषार्य तथा गुप्त युक्तियों के अल पर जीवन को प्रभावशाली बनाये रखने का प्रयत्न करता रहता है।

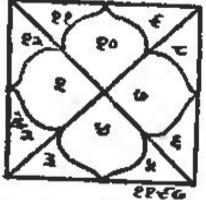
'मकर' स्थन की कुण्डली के 'चतुर्यमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश ग्रकरलग्द : चतुर्यभाव : केतु



चौथे भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के अभाव से जातक की माता के सुख में कमी तथा माता के कारण ही कट भी प्राप्त होता है। घरेलू जीवन कलहपूर्ण रहता है। मातृ-भूमि का त्याग भी करना पड़ता है। अन्त में, कठिन परिश्रम सथा युप्त युक्तियों के बल पर उसे सुख के साधन प्राप्त करने में थोई।-बहुत सफलता मिल जाती है।

'मकर' सप्त की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

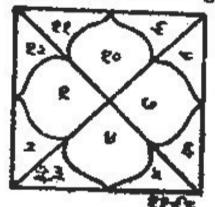
मकरलग्नः पचमभावः केतु



पौषवें भाव से मिस 'शुक' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कभी का शिकार होना पड़ता है। मस्तिष्क में गुप्त चिन्ताओं का निवास रहता है। परन्तु उसकी बुद्धि तीय होती है, अतः वह चतुराई से काम लेकर अपनी कठिनाइयों के निवारण का प्रयत्न करता है।

'मकर' लग्न की कुचाली के 'बक्ठमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

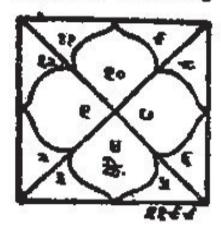
भकरलग्न : षष्ठभाव : केतु



छठे भाव में विद्य 'बुध' की राशि पर स्थित 'के तू' के प्रभाव से आतक की शक्षुओं के कारण किल्नाइयों में फँसना पड़ता है, परन्तु अपनी गुष्त युक्तियों के अल पर वह उन पर विजय भी पा लेता है। अगड़े- संसट के सामलों में उसे सफलता मिलती है। ननसास-पक्ष की हानि पहुँचती है। और संकट आने पर भी वह अपना धैयं नहीं छोडता है।

'मकर' संग्न की कुव्हली के 'सप्तमगाब' स्थित 'केतु' का फलावेश

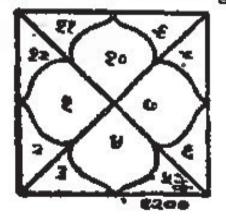
मकरलग्न: सप्तमभाव:केत्



सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से अनेक प्रकार के कच्ट प्राप्त होते हैं। गृहस्थ-जीवन में परेशानियां जाती हैं। अनेक प्रकार के व्यवसाय करने पर भी कठिनाइयां आती रहती हैं। अन्त, में वह अपनी गृप्त युक्तियों तथा कठोर परिश्रम के द्वारा उन पर यथोचित सफलता भी पा लेता है।

'मकर' लग्न की कुखली के 'अव्ध्यसमान' स्थित 'केतु' का फलावेश

मकरलम्न : अध्यमभाव : केत्

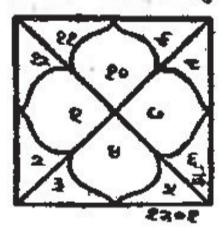


बाठवें भाव में शाबु 'सूबें' की राशि पर स्थित केतृ के प्रभाव से जातक के जीवन पर अनेक बार संकट आते हैं और यह मृत्यु-तुल्य कष्ट पाता है। पेट में विकार रहता है।

अजीविका-उपार्जन के लिए कठिन प्रिथम करना पड़ता है। भीतर से जिन्तित रहते हुए भी प्रकट भे यह प्रभाव प्रदक्षित करता है। प्रायः उसका जीवन संघर्षपूर्ण रहता है।

'अकर' सम्म की कुळली के 'नवसमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

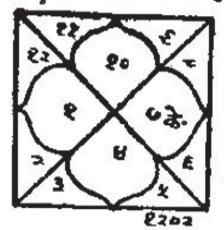
मकरलग्न : नवमभाव : केत्



नमें भाव में मिन्न 'बुध' की राशि पर स्थित
'केतू' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ जाती हैं, परन्तु वह अपनी हिम्मत, परिश्रम
तथा गुप्त युक्तियों के द्वारा उन पर विजय पाकर
भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन करता है।
कभी-कभी उसे भाग्य-क्षेत्र में घोर संकटों का सामना
करना पड़ता है, परन्तु अन्त में उनका निराकरण
करने में सफल हो जाता है।

'अकर' लग्न की कुळली के 'दत्रमञ्जाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

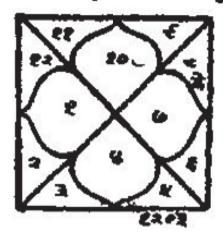
मकरलम्न : दशमभाव : केतु



दसवें भाव में मिल 'शुक' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से आतक की पिता से कब्द, राज्य से कठिनाइयाँ तथा व्यवसाय-क्षेत्र में संकटों का शिकार बनना पड़ता है, परन्तु अपनी गुप्त युन्तियों के बल पर वह उन पर विजय पा लेता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन संघर्षपूर्ण तथा परिवर्तनशील होता है।

'मकर' सम्म की कुळली के 'एकादरामाव' स्थित 'केषु' का फलादेश

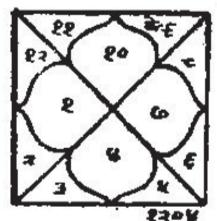
मकरलग्न : एकावशमाव : केतु



ग्यारहवें भाव में अलू 'संगल' की राशि पर स्थित 'केतू' के प्रभाव से जातक की जामदनी में अत्यधिक यृद्धि होती है। वह अपनी गुप्त युक्तियों, साहस एवं कठिन परिश्रम के बल पर जामदनी की निरन्तर बढ़ाता रहुता है। बाने वाली कठिनाइयों पर उसे विश्रय मिलती है। ऐसा ब्यक्ति गुप्त रूप में जिन्तित भी बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुष्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का कलादेश

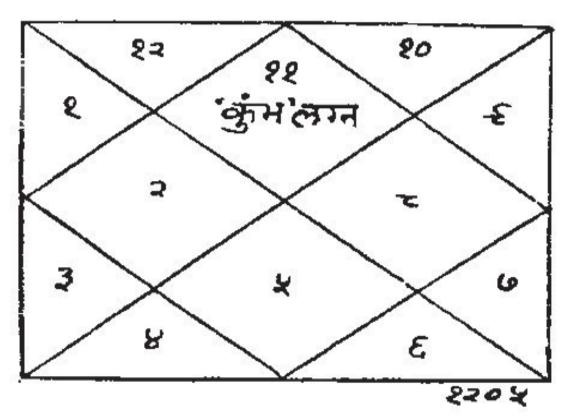
मकरलग्न : द्वादशभाव : केतु



बारहवें भाव में शतु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक का खंदें अत्यधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से उसे लाभ मिलता है।

ऐसा व्यक्ति कठिनाइयों का साहस के साथ सामना करता है तथा अन्त में उन पर विजय भी पा लेता है। यह बड़ा परिश्रमी, धैर्यवान्, गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला तथा साहमी होता है।

'कुम्भ' लाग



['कुम्भ' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न ग्रहों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'कुम्म' लग्न का फलादेश

'कुम्म' सरन में जन्म लेने दाला व्यक्ति लम्बे शरीर वाला, मोटी गरदन दाला, गंजे सिर वाला, तेजस्थी, दात-प्रकृति वाला तथा चंचल स्वमाव का होता है।

ऐसा व्यक्ति पानी अधिक पीता है। वह बातूनी, दम्भी, अहंकारी, ईर्घ्यासु, द्वेषी, सुस्थिर तथा आतृ-द्रोही होने के साथ ही खेष्ठ मनुष्यों से संयुक्त, सर्वेप्रिय, सुन्दर पानी बाला तथा पर-स्तियों में बासक्त भी होता है।

'कुम्म' लग्न का आतक अपनी प्रारम्भिक अवस्था में दुःखी रहता है मध्यमावस्था में सुखी रहता है तथा अन्तिम अवस्था में धन, भूमि, भवन, पुतादि के सुख का उपभोग करता है।

'कुम्ब' लग्न के जातक का भाग्योदय २४-२५ वर्ष की आयु में होता है।

'कुम्भ' लग्न वालों को अपनी अम्मकुण्डली के विभिन्न भाषों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उवाहरण-कुण्डली संख्या १२०६ से १३१३ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के पहीं का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार भमझ लेना चाहिए।

'कुम्म' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'कुम्भ' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूबें' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२०६ से १२१७ के बीच देखना चाहिए।

२—'कुम्म' लग्न वालों को खपनी गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूबें'---

- (क) 'मेष' राशि पर ही तो संख्या १२०६
- (ख) 'वृष' राशि पर ही तो संख्या १२०७
- (ग) 'मिथुन' राशि पर ही तो संख्या १२०८
- (घ) 'कर्क' रामि पर ही तो सख्या १२०६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२१०
- (भ) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२११
- (छ) 'सुला' राशि पर हो तो संख्या १२१२
- (अ) 'वृश्चिक' राशि पर ही ती संख्या १२१३
- (झ) 'धनु' राशि पर ही तो संख्या १२१४
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२१५
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर ही तो संख्या १२१६
- (ठ) 'सीन' राशि पर हो तो संख्या १२१७

'कुम्भ' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'कुम्भ' लग्न वालों की खपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१८ से १२२९ के बीच देखना चाहिए।

२-- कस्वा' जरून दालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्पित

'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस दिन 'चन्द्रमा'---

- (क) 'मेष' राक्षि पर ही तो संख्या १२१८
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२१६
- (ग) 'मिथुन' राजि पर हो तो संख्या १२२०
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १२२१
- (ङ) 'सिंह' राशि पर ही तो संख्या १२२२
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संक्या १२२३
- (छ) 'सुला' राशि पर ही तो सख्या १२२४
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर ही तो संख्या १२२५
- (झ) 'धनु' राक्षि पर ही तो संख्या १२२६
- (ञा) 'मकर' राक्षि पर ही तो संस्था १२२७
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२२६
- (ठ) 'मीन' राशि पर ही तो संख्या १२३६

'कुम्भ' लग्न में 'मंगल' का फलावेश

१—'क्रुम्भ' लग्न बालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२३० से १२४१ के बीच देखना चाहिए।

२--'कुम्म' लग्न थालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'संगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'मंगल'-

- (क) 'मेष' राशि पर ही तो संख्या १२३०
- (ब) 'वृष' राक्षि पर हो तो संख्या १२३१
- (ग) 'मियुन' राशि पर हो ती संख्या १२३२
- (घ) कर्क राशि पर हो तो संख्या १२३३
- (क) 'सिंह' राशि पर ही तो संख्या १२३४
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२३%.
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२३६
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२३७
- (झ) 'घनु' राशि पर हो तो संख्या १२३**८**
- (ङा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२३६
- (ट) 'कुम्भ' राणि पर हो तो संख्या १२४०
- (ठ) भीन' राशि पर हो सो संख्या १२४१

'कुम्म' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१— 'कुम्भ' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२४२ से १२५३ के बीच देखना चाहिए।

२—'कुम्भ' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'-

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो सख्या १२४२
- (ख) 'यून' राशि पर हो तो संख्या १२४३
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १२४४
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १२४५
- (क) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२४६
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२४७
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२४६
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२४६
- (अ) 'धनु' राधि पर हो तो संख्या १२४०
- (ञा) 'सकर' राशि पर हो तो संख्या १२५१
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संस्था १२५२
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२५३

'कुरम' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'कुम्ब' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुढ' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५४ से १२६५ के बीच देखना चाहिए।

२—'कुम्भ' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'---

- (क) 'मेष' राधि पर हो तो संस्था १२५४
- (ख) 'बूब' राशि पर हो तो संख्या १२५५
- (ब) 'मिचुन' राशि पर हो तो संख्या १२५६
- (भ) 'कर्क' राशि पर हो तो संस्था १२५७

- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२५८
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२५६
- (छ) 'सुला' राशि पर हो तो संख्या १२६०
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२६१
- (स) 'धनु' राजि पर हो तो संख्या १२६२
- (ठा) 'यकर' राक्षि पर हो तो संख्या १२६३
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या १२६४
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२६५

'कुम्भ' लग्न में 'शुक्त' का फलादेश

१—'कुम्म' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र'का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली सख्या १२६६ से १२७७ के बीच देखना चाहिए ।

२---'कुम्म' लग्न वालों को शोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए----

जिस महीने में 'शुक्र'—

- (क) 'मेष' राक्षि पर हो तो सख्या १२६६
- (स) 'यूष' राशि पर हो तो संख्या १२६७
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १२६८
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १२६६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो सख्या १२७०
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२७१
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२७२
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संस्था १२७३
- (झ) 'धनु' राशि पर ही तो संख्या १२७४
- (ङा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२७५
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२७६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२७७

'कुम्भ' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१— 'कुम्म' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भाषों में स्थित शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संस्था १२७६ से १२६६ के भीन देखना चाहिए।

२---'कुम्भ' लग्न दालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सनि'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'--

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १२७८
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२७६
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १२८०
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १२८१
- (E) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२८२
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२०३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२८४
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२८५
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १२५६
- (ठा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२८७
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२००
- (ठ) 'बीन' राशि पर हो तो संख्या १२०६

'कुम्म' लग्न में 'राष्ट्र' का फलादेश

१—'कुश्म' लग्न थालों को अपनी अम्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२६० से १३०१ के मीन देखना चाहिए ।

२---'कुम्भ' लग्न दालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस वर्ष में 'राहु'---

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १२६०
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२६१
- (ग) 'मिथुन' राजि पर हो तो संख्या १२६२
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १२६३
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२६४
- (च) 'कल्या' राशि पर हो तो संख्या १२६५
- (छ) 'सुला' राशि पर हो तो संख्या १२६६
- (ब) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२६७
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १२६८
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२६६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३००
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३०१

'कुम्म' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१—'कुम्भ' लग्न वालों को खपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३०२ से १३१३ के बीच देखना चाहिए।

२---'कुम्भ' लग्न भावीं को योषर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

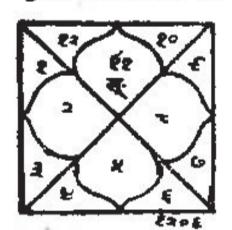
जिस वर्ष में 'केतु'—

- (क) 'मेष' रामि पर हो तो संख्या १३०२
- (ख) 'वृष' राशि पर हो ती संख्या १३०३
- (ग) 'नियुन' राशि पर हो तो संख्या १३०४
- (भ) 'कर्क' राशि पर हो ती संख्या १३०५
- (छ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३०६
- (च) 'कन्या' राणि पर हो ती संख्या १३०७
- (छ) 'सुला' राशि पर हो तो संख्या १३०८
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३०६
- (झ) 'शनु' राशि पर हो तो संख्या १३१०
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३११
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या १३१२
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३१३

'कुम्म' लग्न में 'सूर्य'

'कुम्म' सम्म की कुच्डली के 'प्रयमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भलम्न : प्रथमभाव : सूर्ये

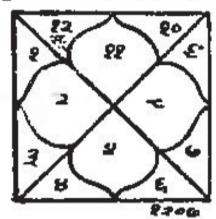


पहले भाव में शत्रु 'शिन' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दयं तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है, परन्तु प्रभाव एवं शक्ति की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति तेज स्वभाव का तथा बहुत बौड़-श्रूप करने वाला है।

सातवीं दृष्टि से स्वरामि में सप्तमभावको देखने से स्त्री-पक्ष द्वारा विशेष सुख मिलता है तया पुरुषायं द्वारा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में भी सफलता मिलती रहती है। गाईस्थ जीवन आनन्दमय वना रहता है।

'कुम्म' लग्न की कुच्छली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'सूर्य' का कलादेश

कुम्भ लग्न : द्वितीयभाव:सूर्यं

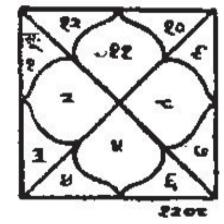


दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब-सुख की बृद्धि होती है, परन्तु स्त्री-पक्ष से किसी विशेष कमी का अनुभव होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टममान को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है तथा दैनिक जीवन भी प्रभावशासी बना रहता है।

'कूम्म' लग्न की कुच्छली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूबे' का फलादेस

कुम्भ करनः सृतीयभावः सूर्यं

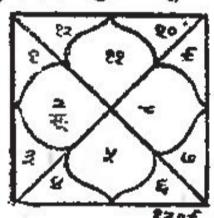


तीसरे भाव भें मिल 'मगल' की राशि पर स्थित उच्च के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का पर्याप्त सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी अत्यक्षिक बृद्धि होती है। व्यवसाय द्वारा अन्य केलों में भी सफलता मिलती है।

सातवीं नीच तथा शतुष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नित तथा धर्म-पालन में कमी आती है तथा सम्मान भी अधिक नहीं मिलता।

'कुम्म' लग्न की कुळली के 'बतुर्यभाव' स्थित 'सूबें' का फलादेश

कुम्भ लग्नः चतुर्यभाव । सूर्यं

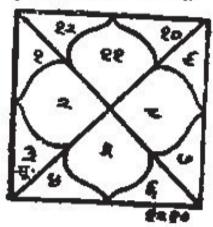


चौथे भाव में शबु 'शुक' को राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कठिनाई के साथ मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी परेशानियाँ आती हैं।

सातवीं मिलदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय द्वारा सफलता एवं लाम की प्राप्ति होती है तथा प्रतिष्ठा की बढ़ती है।

'कुम्म' साम की कुम्बली के 'यंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ सम्न : पंचमन्नाव : सूर्यं

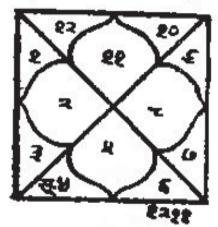


प्रांचवें भाव में मिल 'बुध' को राशि पर स्वित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। स्त्री तथा व्यवसाय से भी मुख मिलता है।

सातवीं मिलवूष्टि से एकादशभाव को देखने से बुद्धियोग द्वारा आमदनी अच्छी रहती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा प्रभावशासी होता है।

'कुम्म' लम्न की कुम्बली के 'बळबाब' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ सग्न : षष्ठशाव : सूर्यं

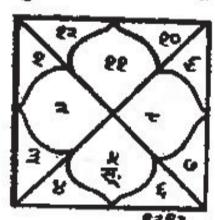


छठे भाव में मिस 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्ये' के प्रभाव से जातक शतु-पक्ष पर विजय पाता है तथा शगड़ों के भामलों से लाभ उठाता है। व्यवसाय में कुछ कठिनाई के साथ सफलता मिलती है।

सातवीं मतुद्धि से द्वादशभाव को देखने से खर्च विभिन्न रहता है सथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

'कुम्म' सरन की कुछली के 'सप्तममाव' स्थित 'सुमें' का फलादेश

कुम्म लग्न : सप्तमभाव : सूर्यं

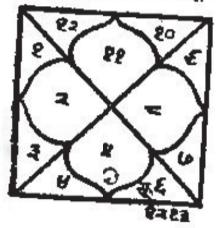


सातवें भाव में स्वराधि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को स्त्री का पर्याप्त सुख मिलता हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती हैं। ससुरास से जाभ होता है तथा गृहस्य जीवन सुखमय बना रहता है।

सातवीं शतुद्धि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्थ में कुछ कमी रहती है।

'कुरम' लप्त की ुकुब्डली के 'अष्टममाव' स्थित 'सूर्व' का फलादेश

कुम्भ लग्न : अष्टमभाव : सूर्यं

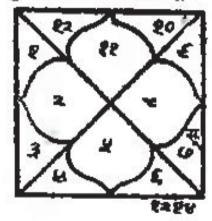


आठवें भाव में मिल 'बुध' को राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरासत्त्व-सक्ति में वृद्धि होती है। स्त्री-पक्ष से परेशानी तथा व्यवसाय में कठिनाइयों भी रहती है। बाहरी सम्बन्धों से कुछ लाभ होता है।

सातवीं मिलवूष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा धन का संचय होता है तथा कौटुम्बिक सुख भी प्राप्त होता है।

'कुम्म' लग्न को कुण्डली के 'अवसमाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ सम्न : नवमभाव : सूर्यं

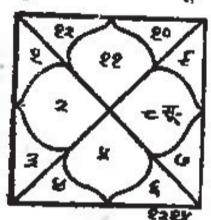


नवें भाव में शतु 'युक' की राशि पर स्थित तीच के 'सूयें' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म में कुछ कमी आती है। स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में भी कठिनाइयां रहती हैं। यह स्कार्य-सिद्धि के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता।

सातवीं मिल तथा उच्च-दृष्टि से भृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, पराक्रमी तथा सैयंवान होता है।

'कुम्म' सरन की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ लग्न : दशमभाव : सूर्यं

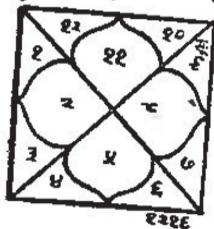


दसर्वे भाव में मिल 'मंगल' को राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा ध्यवसाय-पक्ष से लाग होता है। स्त्री-पक्ष से भी श्रेष्ठ शक्ति मिलती है।

सातवीं शतुदृष्टि से चतुर्वभाव को देखने मासा, भूमि एदं भवन के सुद्ध में कभी रहती हैं।

'कुरम' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ लग्नः एकादशभावः सूर्यं

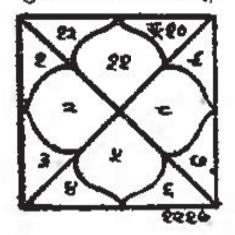


ग्यारहवें भाव में मिल 'गुरु' को राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को व्यवसाय द्वारा अच्छी भामदनी होती है तथा स्त्री-पक्ष से विशेष लाभ होता है।

सातवीं मिलवूष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में भी विशेष उन्नति होती है तथा सुद्ध मिलता है।

'कुम्ब' सरन की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्व' का फलादेश

कुम्भ लग्न : द्वादशभाव : सूर्यं



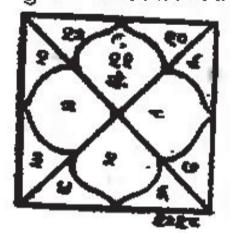
बारहवें भाव में शतु 'शनि' को राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को खर्च अधिक रहने के कारण कठिनाई उठानी पड़ती है। बाहरी संबंधों से साभ तथा स्थानीय व्यवसाय से हानि की प्राप्ति होती है। स्थी-सुख में भी बहुत कभी आती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शतु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़े के भामलीं से साभ होता है

'कुम्भ' लग्न में 'चन्द्रमा'

'कुम्म' सन्त की कुण्डली के 'प्रयूवभाव' स्थित 'बन्दमा' का फलादेश

कुम्भ लग्न : प्रचमदाव : चन्द्र

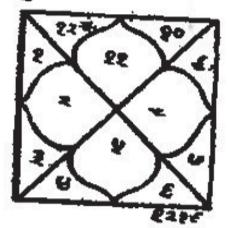


पहले भाव में शतु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का शरीर अस्वस्थ तथा मन चिन्तित। रहता है, परन्तु वह शतुओं पर प्रभाव डालने तथा झगड़ों में विजय पाने में सफल रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी चिन्ताएँ तथा कठिनाइयाँ बनी रहती हैं।

'कुम्म' सम्म की कुम्बली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'बन्तमा' का फलादेश

कुम्भ लग्नः द्वितीयभानः चन्द्र

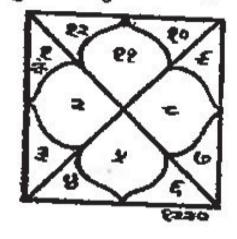


दूसरे भाव में मिक्ष 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक परिश्रमपूर्वक धन का संचय करता है तथा कौटुम्बिक सुख की बृद्धि भी होती है। शबु-पक्ष से परेशानी रहने पर भी अगड़े के भामलों से लाभ उठाता है।

सातवीं मिलदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ परेणानी रहती है।

'कुम्म' स्थन की कुखली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्त्रमा' का फलादेश

कुम्भ सग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

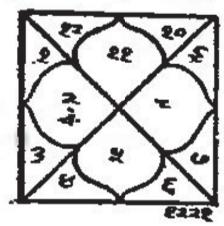


तीसरे भाव में मित 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से आतक के मनोबल तथा पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से कुछ मतभेद भी रहता है।

सातवीं सामान्य मिलदृष्टि से नवम भाव की देखने से भाग्योन्नति तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद बृद्धि होती है।

'कुम्म' लम्म की कुष्यली के 'बतुर्वमाव' स्थित 'बन्तमां' का फलादेश

कुम्म लग्नः चतुर्वभावः चन्द्र

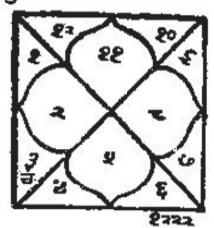


चौषे भाव में सामान्य मित्र 'सुक' की राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की माता, भूमि एवं भवन का मुख प्राप्त होता है। शतु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा क्षगड़े के मामलों से लाभ भी उठाता है।

सातवीं मिल तथा नी चट्टिट से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा न्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं।

'कुम्भ' सरन की कुण्डली के 'पंत्रभषाव' स्थित 'शन्त्रमा' का फलादेश

कुम्भ लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

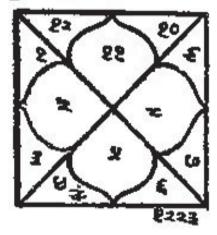


पौचवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा शब्द-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है।

सातवीं मिद्रदृष्टि से एकादश भाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी की वृद्धि होती है तथा गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ उठाता है।

'कुरम' सप्त की कुण्डली के 'बष्ठमान' स्थित 'बलामा' का फलादेश

कुम्भ सरन : बण्डमाद : चन्द्र

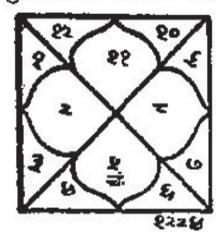


छठे भाव में स्वराभि-स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक शत्नु-पक्ष पर अस्यधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े के मामलों में सफलता भी प्राप्त करता है, परन्तु धन में चिन्ताएँ भी रहती हैं।

सातवीं शतुद्धि से द्वादशभाव को देखने से खर्च में कठिनाई रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानी मिलती है।

'कुरुम' लप्न को कुच्छली के 'सप्तममाव' स्थित 'खन्त्रमा' का फलाईश

कुम्भ स्वयनः सप्तमभावः चन्द्र

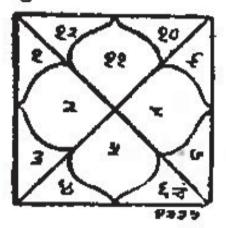


सातवें भाव में मिल 'सूर्य' को राक्ति पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष में रोग खादि को परेणानी रहती है। व्यवसाय-छेत में कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है। शतु-पक्ष पर भी प्रभाव रहता है।

सातवीं शलुदृष्टि से प्रवम शाव को देखने से शरीर रोगों एवं चिन्ताओं का जिकार रहता है। फिर भी मनोबल में बुद्धि होती है।

'कुश्य' सरन की कुव्यली के 'अध्यमभाव' स्वित 'चन्त्रमा' का फलावेश

कुम्भलग्त : अंदरमभाव : चन्द्र

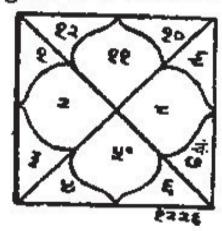


आठवें भाव में मिक्ष 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रमाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व पक्ष में कठिनाई आती है। शत्नु-पक्ष पर भी धड़ी कठिनाइयों के बाद प्रभाव स्थापित होता है। हर समय चिन्ताएँ लगी रहती हैं। ननसाल-पक्ष कमजोर होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दितीय भाष को देखने से धन तथा कुटुम्ब को बृद्धि के लिए जातक को विशेष परिश्रम करना पडता है।

'कुम्भ' लग्न की कुकसी के 'अवसभाव' स्थित 'बन्दमा' का फलादेश

कुम्भलग्नं ! नवसभाव : चन्द्र

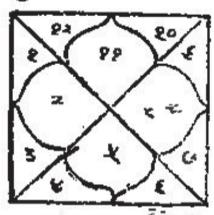


नवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से भाग्य एवं धर्म को जन्मति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा यश में भी लगी रहती है। शतु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा अगड़ों से लाभ हीता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से भृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख में कुछ कठिनाइयों आती हैं, यरन्तु पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है।

'क्रुप्स' लान को कुकती के 'वशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलावेश

कुम्भलग्नः दशमभावः चन्द्र

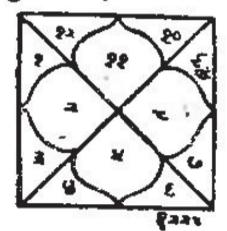


दसमें भाव में मिल 'संगल' की राशि पर न्थित तीन के 'चन्द्रमा' के प्रमाद से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। शब्द-पक्ष से भी बहुत परेशानी रहती है।

सातवीं उच्च-वृष्टि से चतुर्थे भाव को देखने से भाता, भूमि तथा भवन का सामान्य जातन को मुख प्राप्त होता है।

'क्रुम्म' लप्न की कुकली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कुम्भलग्न : एकादशभाव : बन्द्र

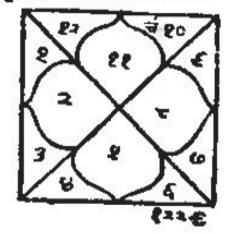


ग्यारहं वें भाव में मिल 'गुरु' को राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक अपने मनीबल एवं भारीरिक परिश्रम द्वारा आमदनी को बढ़ाता है। शलु-पद्म पर प्रभाव रखता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-शुद्धि का यथेष्ट साथ होता है एवं यरन्तु सन्तान-पक्ष से कुछ चिन्ता बनी रहती है।

'कुम्म' लप्न की कुम्बली के 'हावरामाव' स्थित 'कन्त्रमा' का फलादेश

कुम्मलग्नः द्वादशभावः चन्द्र



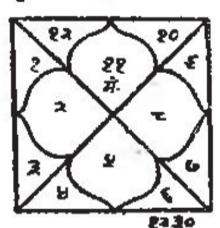
वारहवें भाव में शतु 'सनि' को राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' कें प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में कठिनाई रहती है। बाहरी सम्बन्धों से भी परेणानी होती है। शतु-पक्ष से मानसिक चिन्ताएँ रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराधि में घष्ठ भाव को देखने से शबु-पक्ष पर विनम्न तरीके से प्रभाव स्थापित करता है तथा सफलता पाता है।

'कुम्भ' लग्नं में 'मंगल'

'कुम्भ' लग्न की-कुम्बसी के 'प्रथममार्च' स्थित 'मंगस' का फलावेश

कुम्भलग्न : प्रथमभाव : मगल

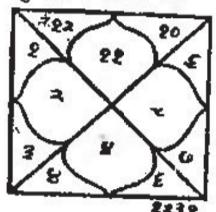


पहले भाव में शबु 'शिन' को राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को भारीरिक सौन्द्र्य तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व को प्राप्ति होती है। भाई-बिहन के मुख तथा पराक्रम को बृद्धि भी होती है। चौथी सामान्य मित्र-दृष्टि से चतुर्व भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का मुख मिलता है।

आठवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से सुख मिलता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से-अष्ट मभाव को देखने से आयु तथा पुरातस्य को बृद्धि होती है।

'कुम्ब' लव्न की कुकाली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भलग्नः द्वितीयभावः संगल



दूसरे भाव में मिल 'गुरु' को राशि पर स्थित 'संगल' के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के के साथ धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। भाई-अहिन एवं पिता के सुख में भी कुछ कमी रहती है। भीकी मिल-दृष्टि से पंचम भाव की देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष से शफलता भिलती

सातवीं मिल्ल-दृष्टि से अब्ट मभाव की देखने से आयु तथा पुरासत्त्व को बुद्धि होती है। आठवीं

सामान्य मिलद्धि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म को विशेष उन्नति होती है तथा यश का लाम भी होता है।

'कुम्म' सक्त को कुम्हली के 'तुतीयमाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्मलग्नः सृतीयभावः मंगल तीसरे भाव में स्वराणि में स्थित 'मंगल' के

प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराकम में विशेष बृद्धि होती है। भीषी नीच-दृष्टि से वष्ठ भाव को देखने से शतु-पक्ष से कष्ट रहता है तथा

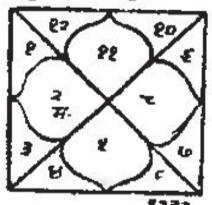
ननसाल-पक्ष को हानि होती है।

99

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म को उन्नति होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यव-साय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिसती है।

'कुम्म' लप्न की कुष्डली के 'बतुर्थमाव' स्थित 'संगल' का फलावेश

कुम्मलग्न : चतुर्धभाव : मगल



चौये भाव में सामान्य मिल 'शुक' की राशि पर स्थित 'संगल' के प्रभाव से जातक की कुछ लगी। के माथ माता, भूमि एवं भवन का भुक्ष मिलता है। चौथी निवन्द्रिट से सप्तम भाव को देखने से स्वी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है।

नातवीं दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। आठवीं भिल-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है।

'कुम्ब' लग्न की कुष्पली के 'वंचमधाव' स्थित 'संगल' का फलादेश

कुम्भ स्वयनः पंचमभावः संगल

22

पीचवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित

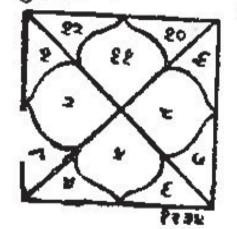
'मंगल' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का श्रोष्ठ सुख मिलता है। भाई-बहिन तथा पिता से भी सुख प्राप्त होता है। राज्य तथा व्यवसाय-सेश्न से लाभ होता है। चीची मिल्रहृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की बृद्धि होती है।

सातवीं मिलदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब रहती है। आठवीं उच्चदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों

के सम्बन्ध से लाभ भी अञ्चा मिनता है।

'कुम्म' लग्न को कुम्बली के 'बन्ठभाव' स्वित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भ लग्नः धष्ठभावः मंगल



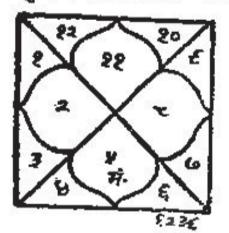
छठे भाव में मिल 'सन्द्रना' को राक्षि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ शतु-पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है। आई-बहिन तथा पिता से कुछ मनमुटाव रहता है। राज्य-क्षेत्र में भी कम प्रमाव रहता है। सीथी शतुदृष्टि से नवम भाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा भाग्य तथा धर्म को जन्नति होती है।

सातवीं उच्च-वृष्टि से द्वादम भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता

है। आठवीं शतुदृष्टि के प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है, यरन्तु प्रभाव में वृद्धि होती है।

'कुम्म' लग्न की कुम्हली के 'सप्तमगाव' स्थित 'संगल' का फलादेश

कुम्भ लग्नः सप्तमभावः मंगल



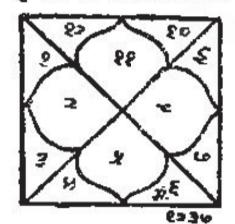
सातमें भाव में मिल 'सूवे' को राशियर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। भाई-बहिन को सक्ति भी प्राप्त होती है। चीचो दृष्टि से स्यराशि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के द्वारा साभ दोता है।

सातवीं शबुद्धि से प्रथम भाव को देखने से भारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है, परन्तु प्रभाव एवं सम्मान को वृद्धि होती है। आठवीं मिलद्धि से

द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब को श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है।

'कुम्म' लग्न की कुकली के 'अध्यमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

क्म्भ स्वन : अष्टमभाव : मगल



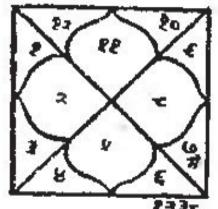
आठवें भाव में मिल 'बुध' को राशि पर स्थित 'संगल' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरासत्त्व को शक्ति का लाभ होता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं। भाई-बहित के सुख तथा पराक्रम में भी कमी आती है। भीषो मिलवृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है।

सः तवीं मिल्लदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। टाठवीं दृष्टि से

स्वराधि में भृतीय भाव को देखने से पराक्रम को बृद्धि होती है तथा आई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है।

'कुम्भ' साम की कुण्डली के 'नवसभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भ स्वरनः श्वमभावः संगल्



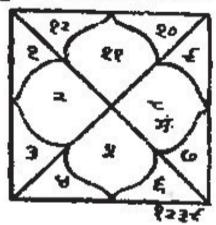
नवें थात्र में सायान्य मिस 'शुक्र' को राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्निति होती है और उसे पिता, राज्य तथा व्यवसाय से भी मुख प्राप्त होता है। चौथी उच्चदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से पराक्रम को वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिनता है। आठवीं सामान्य मित्रदृष्टि से चतुर्यभाव को

देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है।

'कुम्म' सन्न' को कुण्डली के 'बसमभाव' स्थित 'मंगल' का 'फलादेश

कुम्भ सन्न : दशमभाव : मंगल

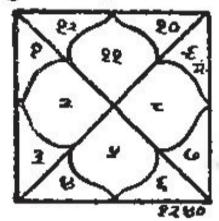


दसर्वे भाव में स्वराणि-स्थित 'संगल' के प्रभाव से आतक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सम्मान तथा सफलता प्राप्त होती है। पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। भीची मञ्जूद्धि से प्रथम भाव को देखने से भारीरिक सौन्दर्य में कभी काती है, परन्तु मान-प्रतिष्ठा एवं प्रभाव में वृद्धि होती है।

सातवीं सामान्य मिल्लदृष्टि से धतुर्थ भाव को देखने से माता के सुख में सामान्य कमी रहती है

तथा भूमि, भवन का सुख प्राप्त होता है। आठवीं मिल्लदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की वृद्धि होती है। 'कुम्म' लग्न की कुण्डली के 'शुकादशमाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भ लग्न : एकादशभाव : मंगल



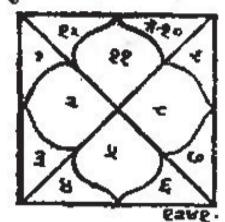
ग्यारहवें भाव में मित्र 'गुठ' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की आमदनी बहुत अच्छी रहती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। धन खूब कमाता है, भाई-बहनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में बृद्धि होती है। चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन का संचय अच्छा होता है सथा कुट्रम्ब के सुख की बृद्धि होती है।

सातवीं मिसद्ब्रि से पंचमभाव को देखने से

सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है। आठवीं नीचवृष्टि से पष्ठ भाव को देखने से मञ्जू-पक्ष से परेशानी रहती है सथा ननसास-पक्ष की कमजोर रहता है।

'कुम्म' सन्त की कुष्टली के 'द्वादशभाद' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्म लग्न : द्वावश्रमाव : मंगल



बारहवें भाव में सन्नु 'शनि' की राशि पर स्थित उच्च के 'मगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से यथेष्ट नाभ होता है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। वह परदेश में रहकर उन्नति करता है। चौथी दृष्टि से स्वराणि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

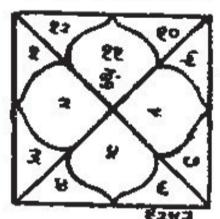
सातवीं मित्र सथा नीसदृष्टि से पष्ठ भाव

को देखने से मन्नु-पक्ष में कमजोरी रहती है तथा ननसाल-पक्ष भी कमजोर रहता है। आठवीं मिन्नदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री से सुख मिलता है तथा अववसाय में भी सफलता मिलती है।

'कुरम' सरन में 'बुध'

'कुम्म' लग्न को कुण्डली में 'प्रयममाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्म लग्नः प्रयमभादः बुध

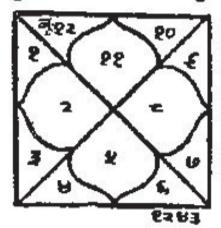


पहले भाव में मित्र 'शिव' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है, परन्तु आयु, पुरातस्व एवं सन्तान-पक्ष का लाभ होता है। प्रभाव तथा सम्मान में बुद्धि होती है।

सातवीं मिलद्बिट से सप्तमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ स्त्री-पक्ष से सुख तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ मिलता है।

'कूम्भ' लग्न की कुण्डली के 'हिसीयमाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भ लग्न : द्वितीयभाव : बुफ

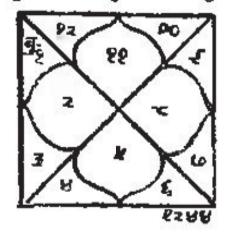


दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित नीच से 'बुध' के प्रभाव से जातक धन-संचय नहीं कर पाता तथा कुटुम्ब से भी विरोध रहता है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष कमजोर रहता है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से स्वराशि में अष्टम भाव में देखने से आयु की श्रेष्ठ सक्ति प्राप्त होती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ अधूरा रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने विवेक नथा विधा-बुद्धि के बल से लाभ एवं सम्मान प्राप्त करता रहता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुख' का फलादेश

कुम्भ तग्न : तृतीयभाव : बुध

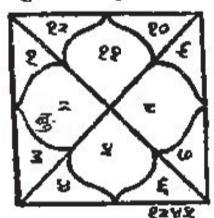


तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की कृषि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों से कप्ट मिलता है सथा सन्तान से परेक्षानी 'स्ती है। पराक्रम, विका तथा बुद्धि का कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य तथा धर्म को उन्नति होती है। ऐसे व्यक्ति को सफलता पाने के लिए हरू-क्षेत्र में संघर्ष करना पड़ता है।

'कुम्ब' सम्म की कुण्डली के 'बतुर्ववाद' स्थित 'बुद्ध' का फलादेश

कुम्लग्न : चतुर्धमाव : सुध

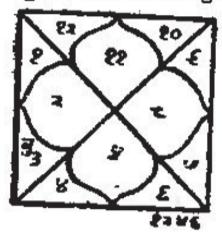


चौथे भाव में मित्र 'शुक' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सूमि, भवन का सुख प्राप्त होता है तथा माता के सुख में कमी रहती है। सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या, आयु एवं पुरातस्य की सुद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से कारण कुछ परेशानी होती है, परन्तु राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नित प्राप्त होती है।

'कुम्म' सम्म की कुण्डली के 'पंचममाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भलग्न : पंचमभाव :बुध

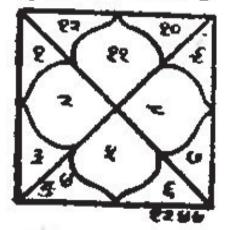


पौचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में खेष्ठ लाभ होता है। यह बुद्धिमान्, विवेकी सथा वाणी का धनी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादण भाव को देखने से विवेक-युद्धि द्वारा आमदनी के क्षेप्त में विशेष सफ-लताएँ मिलती हैं।

'कुम्म' लम्न की कुण्डली के 'बष्ठमाव' स्थित 'राहुँ का फलविश

कुम्भलन्तः षष्ठभावः बुध

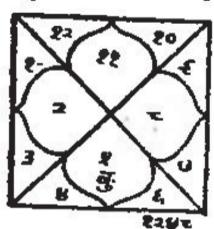


छठे भाव में भवू 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भवू-पक्ष से अशान्ति मिलती है तथा विवेक-बुद्धि द्वारा झगड़े से मामलों में सफलता प्राप्त हो पाती है। विद्या, सन्तान, आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष की कमजोर पहले हैं। परेशानियों भी उठानी पड़ती हैं।

सातवी मिल-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'कुम्म' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलावेश

कुम्भलन्तः सप्तमभावः सुध

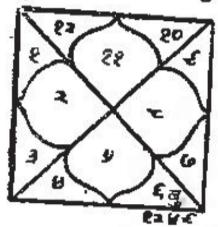


सातर्वे बाव में मित्र 'सूर्य' की राधि पर स्थित 'बुध' के प्रमान से जातक को कुछ कठिनाइयों से बाद स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में सफलता मिलती है। विद्या-बुद्धि, आयु तथा पुरातस्य सक्ति का भी लाभ होता है।

सातवीं मित-दृष्टि से प्रचम भाव को देखने से सुख शारीरिक परेशानियां तो रहती हैं, परन्तु प्रभाव एवं सम्मान की बृद्धि होती है।

'कूम्म' लग्न की कुण्डली के 'अव्हयमाद' स्थित 'बुध' का फलावेश

कुम्भलग्न : अष्टमभाव: सुध

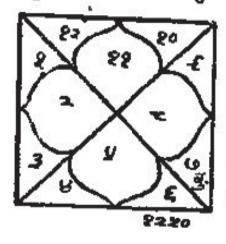


थाठवें भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक को आयुं तथा पुरातत्त्व का विशेष लाभ होता है। दैनिक जीवन प्रभावशाली रहता है। विवेक तथा बाणी की प्रचुर शक्ति मिलती है, परन्तु विशा एवं सन्तान-पक्ष में कुछ कभी रहती है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीय भाव की देखने से धन-सचय तथा कौटुम्बिक बुक में कठिनाइयाँ आती हैं।

'कु भ' सम्म की कुष्डली के 'मवसभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भलग्न : नवमभाव : बुध

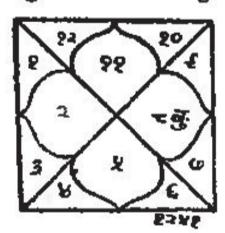


नर्वे भाव में मिल 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्मे की विशेष उन्नति होती है। सन्तान, विद्या, आयु तथा पुरातत्त्व का भी अच्छा लाभ होता है।

सातवीं मित्र वृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराकम का कुछ वृदिपूर्ण लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी रहता है।

'कुम्म' लग्न की कुष्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भलग्न : दशयभाव : सूक्ष



दसमें भाव में मित 'संगत' की राशि पर स्थित 'बुध' के भभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ खाती हैं, परन्तु सन्तान, विद्या-खुदि, आयु तथा पुरातत्त्व का पर्याप्त लाभ होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से चतुर्य भाव को देखने से माता, सूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है एवं यक तथा विवेक की यूद्धि होती है।

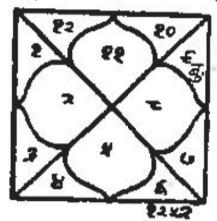
'कुम्म' लग्न की कुण्डली के 'एकादशमाव' स्थित 'बुध' का अलादेश

क्म्भ लग्न : एकादलभाव : बुध

ग्यारहवें भाव में मिल 'गुरु' की राशि पर

स्थित 'बूध' के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब होती है। आयु तथा पुरातस्य का भी लाभ होता है। दैनिक

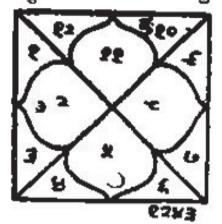
जीवन सुख एवं आनन्दपूर्ण रहता है।



सेरतवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

'कु म' सान की कुण्डली के 'हावशंभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्म लग्न : द्वादशभीव : बुध



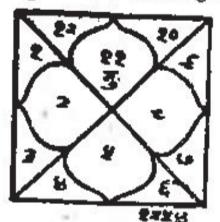
बारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से कुछ लाभ भी मिलता है। आयु तथा पुरातस्य शक्ति को हानि होती है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं मिसद्ब्रिट से बष्ठभाव को देखने से अनू-पक्ष में नम्रता से काम निकालता है तथा विवेक-बुद्धि से सफलता प्राप्त करता है।

'कुम्भ' लग्न में 'गुरु'

'कुम्म' सम्म की कुष्डली के 'प्रथममाव' स्थित 'गुर' का फलादेश

कुम्भ लग्न : प्रथमभाव : बुध



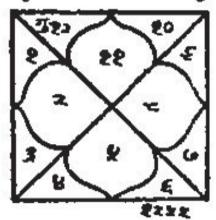
पहले भाव में शत्रु 'शिनि' की राशि पर स्थित 'गुद' के प्रभाव में जातक को शारीरिक सक्ति, सम्मान तथा प्रभाव को प्राप्ति होती है। धन तथा कुटुम्ब का बुफ भी मिलता है।

पाँचवीं मिलदुष्टि से पचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। सातवीं मिलद्बिट से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष की उन्नति होती है। नवीं शतुद्धि से

त्वम भाव को देखने के भाग्य तथा धर्म की उन्नति भी होती है।

'कुम्म' सम्म की कुष्डली के 'द्वितीयमान' स्थित 'बुध' का फलावेश

कुम्म लग्न : द्वितीयभाव : बुध

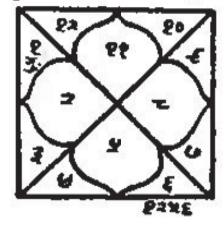


तूमरे भाव में स्वराभि-स्थित 'गुव' के प्रभाव से जातक को धन तथा कृटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। पाँचवीं मित्र तथा उच्च-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शतु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। अगड़े के मामलों से जाम मिलता है।

सातवीं मिस्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातस्व की बृद्धि होती है। नवीं मिस्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से राज्य, पिता. व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिस्रती है।

'कुम्म' लग्न की कुष्डली के 'तृतीयमाव' स्थित 'गुव' का फलावेश

कुम्म लग्न : तृतीयभाव : गुरु

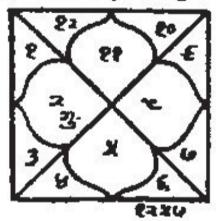


तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित
'गुरु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती
है तथा धन एवं कौटुम्बिक सुख का पर्याप्त लाभ
होता है। पौजवीं मिसदृष्टि से सप्तम भाव को देखने
से स्त्री सुन्दर मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में
लाभ होता रहता है। ससुराल से भी लाभ होता है।

सातवीं शतुवृष्टि से नवम् भाव को देखने से कुछ इकावटों के साम भाग्य तथा धर्मे की बृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से स्वराणि में एकादश माब को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है।

'कुम्म' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्वभाव' स्थित 'गुर्व' का फलावेश

कुम्म लम्न : चतुर्यमाद : गुरु



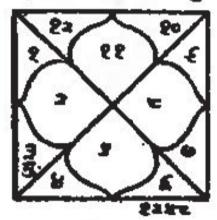
नीये भाव में सामान्य भव्नु 'शुक' की राभि पर स्थित 'गुरु' से प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है, परन्तु माता से लाभ भी होता है। मूमि तथा भवन का अच्छा सुख मिलता है। धन तथा कृट्य की बृद्धि होती है। पाँचवीं मिलदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातस्य में बृद्धि होती है।

सातवीं मिसवृष्टि से दशम भाष की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ

मिलती हैं। नवीं नीचदृष्टि से द्वादश भाव को वेखने से उसका खर्चे अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानी होती है।

'बुरभ' लान की कुच्डली के 'संखनभाव' स्थित 'सुव' का फलादेश

कुम्म लग्न : पश्रमभाव : ग्रुक



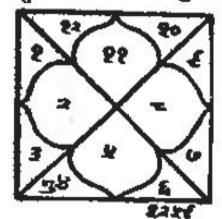
पौषवें भाव में मित्र 'बुध' को राशि पर स्थित
'युर' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान
का यथेव्ट लाम होता है। धन तथा कुटुम्ब का मुख भी
पर्याप्त मिलता है। पौषवीं शत्नुवृष्टि से नदम भाव को
देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य संया धर्म की
बुद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादशभाव को देखने से धन की आमदनी अच्छी रहती है। नवीं शतु-दृष्टि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक प्रभाव में वृद्धि

होती है तथा यश, मान एव प्रभाव की प्राप्ति होती है।

'बुक्स' साम की कुचाली के 'बट्टमार्च' स्पित 'युव' का फलावेश

कुम्भ सम्म : षष्ठमाव : गुरु



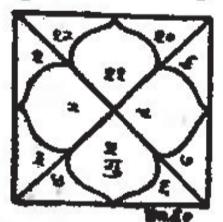
छठे भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राष्ट्र पर स्थित 'गुव' के प्रभाव से जातक जलु-पक्ष पर बहुत प्रभाव रखता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है। ननसाल-पक्ष उन्नत होता है। कुटुम्ब से कुछ झंझट रहता है सथा धन-संचय में भी कुछ कठिनाइयाँ खाती हैं। पांचवीं मिलदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य सथा व्यवसाय से पर्याप्त लाभ होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वादश भाव की देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से परेशानी

रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराणि में तृतीयभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साय धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है।

'कुम्भ' लान की कुष्टली में 'सप्तमभाव' स्थित 'ग्रुव' का फतादेश

कुम्भ लप्न : सप्तममाव : बुध



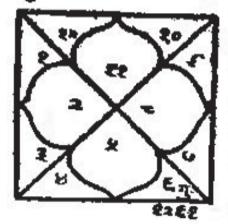
सातर्वे भाव में मिल 'सूर्य' की राभि पर क्यित 'गुर' के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है सथा स्त्री-प्ता से धन एवं सुख की प्राप्ति होती है। व्यवसाय से खूब नाभ होता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख बना रहता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराभि में एकादश भाव की देखने से आमदनी खूब रहती है।

सातवीं शतुद्धि से प्रवम भाव को देखने से आरीरिक मौन्दर्य में सुख कमी रहती है, परन्तु सम्मान एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। नवीं मिसद्धि से मुतीय

भाव को देखने से पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिन के सुख में भी बुद्धि होती है।

'कुम्म' लग्न की कुण्डली में 'अब्दममाव' स्थित 'गुरु' का कलादेश

कुम्भ सम्ब : अष्टनभाव : गुरु



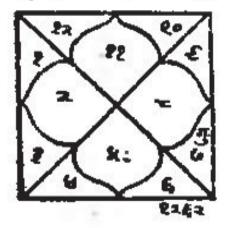
आठवें भाव में मित 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरुं के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। संचित धन की हानि तथा कौटुम्बिक सुख में कमी का योग भी बनता है। पांचतीं नीच तथा सनुदृष्टि से द्वादश भाव ट्रैंको देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से परेशानी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव की देखने से विशेष परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि होती है तथा

कुटुम्ब का सुख मिलता है। नवीं शत्नुदृष्टि से चतुर्यभाव को देखने से माता के सुख में कमी आती है तथा भूमि एवं भवन का भी सामान्य सुख ही मिलता है।

'कुम्भ' सम्म की कुष्यली में 'मधमनाव' स्थित 'गुरु' का फलावेश

कुम्भ लग्न : नवमनाव : गुरु

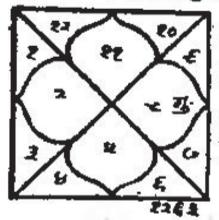


नर्ने भाव में भतु 'गुक्र' की राभि पर स्थित 'गुर' के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष वृद्धि होती हैं तथा धर्म का पालन भी होता है। कुटुम्ब तथा धन का सुख भी पर्याप्त मिलता है। पश्चिमी भतुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से भारीरिक प्रभाव की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की बृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बृद्धि एवं सन्तान का श्रेष्ठ साभ होता है।

'कुम्ब' लग्न की कुष्यली में 'दशमभाव' स्थित 'गुर्द' का फलादेश

कुम्भ लग्नः दशमत्रातः ग्रुह

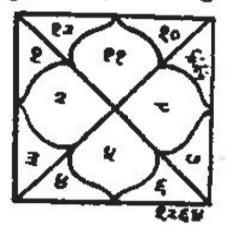


दसमें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित
'गुर' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय
के क्षेत्र में यथेष्ट सफलताएँ मिलती हैं। यह ठाठ का
जीवन विताता हैं तथा भाग्यशाली माना जाता है।
पौचती दृष्टि से स्वराणि में दितीयभाव को देखने से धन
तथा कुटुम्ब की बृद्धि होती है। सातवीं भानुदृष्टि से
चतुर्यभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ठ
सुख मिनता है। नवीं उच्चदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने
से शबु-एक्ष पर अत्यन्त प्रभाव रहता है तथा झगडे के

मामलों से लाभ होता है।

'कुम्म' लग्न की कुण्डली में 'एकावसमाब' स्थित 'शुद्द' का कलादेश

कुम्भ लग्न : एकादशभाव : गुरु



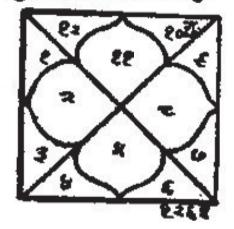
ग्यारहवें भाव में स्वराणि में स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदनों में पर्याप्त बृद्धि होती हैं। कभी-कभी आकस्मिक लाभ भी होता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में बृद्धि होती है।

सातवीं मिलदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा दिवा, बुद्धि के क्षेप्त में सफलताएँ मिलती हैं। नवी मिलदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री का पूर्ण सुख तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में

पर्याप्त सफलता की उपलब्धि होती है।

'कुम्भ' सम्म की कुण्डली में 'हाबसभाव' स्थित 'मुद' का फलावेश

कुम्भ लग्न : द्वादशभाव : गुरु



बारहवें भाव में भाव 'शिन' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से परेशानो रहती है। संचित धन नष्ट हो जाता है। कुटुम्ब में भी अशान्ति रहती है। पाँचवीं शनुदृष्टि से चतुर्य भाव को देखने से भाता, भूमि तथा मदन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है।

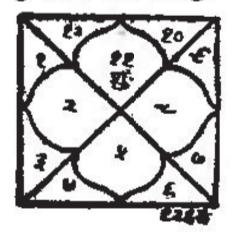
साततीं उच्चदृष्टि से वच्छमाय को देखने से मानु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़ों से

लाभ होता है। नवीं मिसदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातस्य सन्ति की वृद्धि होती है।

'कुम्भ' लग्न में 'शुक्र'

'कुम्म' सम्म की कुष्वला में 'प्रयमधाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भ लग्नः प्रयमभावः शुक

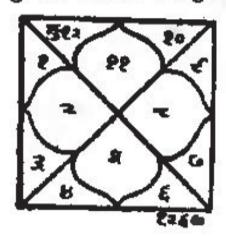


पहले भाव में मित्र 'शित' की राणि पर स्थित
'शुक', के प्रभाव से जातक को शारीरिक सुख, सौन्दर्य
तथा प्रभाव की प्राप्ति होती, है। माता, भूमि, भवन
का मुख मिलता है तथा साज्य एवं धर्म का पक्ष भी
प्रवल बना रहता है।

सातवीं शत्नुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से तो सुख मिलता है परन्तु व्यवसाय-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

'कुम्ब' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयमाव' स्थित 'शुक' का फलादेश

कुम्भ सन्तः द्वितीयभाव शुक

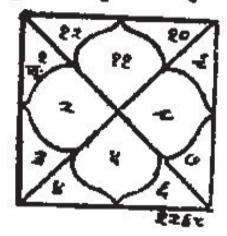


दूसरे भाव में सामान्य मित्र 'गुठ' की राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से आतक को धन तथा कुटुम्ब का विशेष सुख मिलता है। माता, सूमि तथा सबन के सुख का भी अत्यधिक लाग होता है। बहु बड़ा धनी, सशस्त्री तथा प्रतिष्ठित होता है।

सातवीं मिल तथा नी पद्षिट से अप्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातस्य की सक्ति में कुछ कमी आती है तथा दैनिक जीवन में भी कुछ चिन्ताएँ धनी पहती हैं।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'तूसीवमाव' स्थित 'शुक' का फलावेश

कुम्भ लग्न : सृतीयभाव : सुख



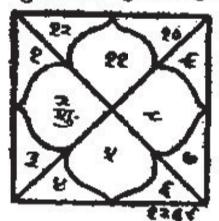
तीसरे मान में ग्रामान्य मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सुक' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का बुफ फिलता है स्था पराक्रम में विशेष बृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है।

स्रातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने से भाग्य की अत्यधिक उन्निति होती है तथा धर्म का भी यथाविधि पालन होता है।

ऐसा व्यक्ति पराक्रमी, धनी, सुखी तथा धर्मात्मा होता है।

'कुरुव' सम्म की कुष्यली में 'बयुर्वभाव' स्थित 'सुक' का फलावेश

कुम्भलग्नः चतुर्यमादः गुक

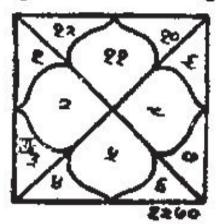


चौथे भाव में स्वराशि स्थित 'सुक' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एव सवन का सुख प्राप्त होता' है। भाग्य तथा धर्म की उन्तति भी होती रहती है।

सातवीं सामान्य मिसदृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति सुखी तथा भाग्यवान् होता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'यंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भलग्नः पंचमभावः शुक

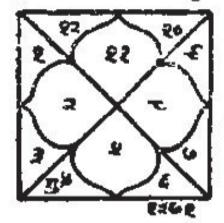


पाँचवें भाव में मित 'बुध' की राशि पर स्थित
'शुक' के प्रभाव से जातक को मिता-बुद्धि सथा सन्तान
के क्षेत्र में सफलता मिलती है। उसे नाता, भूमि तथा
भवन का सुख भी मिलता है तथा भाग्य की निरन्तर
वृद्धि होती रहती है।

सालवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से एकादक भाव को देखने से चतुराई के दल पर लाभ खूब होता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'बच्छभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भलन्तः षष्ठभावः गुक्र

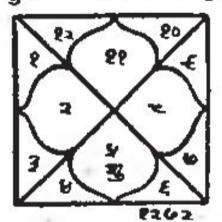


छठे भाव में शक्षु 'बन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'खुक' के प्रभाव से जातक शक्षु-पक्ष पर सफलता पाता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है। माता के सुख में कमी जाती है। मातृभूमि से दूर भी रहना पड़ सकता है। भूमि, भवन, भाग्य तथा धर्म का पक्ष भी दुर्तल रहता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से उसे सफलता मिलती है।

'कुंभ' लान की कुण्डली में 'सप्तमनाव' स्थित 'शुक्ष' का फलावेश

कुम्भनग्न : सप्तमभाव : शुक

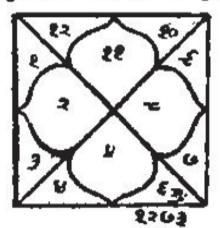


सातवें भाव में शतु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को स्ती-पक्ष से कुछ असंतीप युक्त सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक परिश्रम करने पर सफलता मिलती है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। धर्म तथा भाग्य की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य, सुख, सम्मान तथा प्रभाव की बृद्धि होती है।

'कुंभ' लग्न की कुच्छली में 'अष्टममाय' स्थित 'शुक्त' का फलादेश

कुम्भलग्न : अध्यमभाव : शुक्र

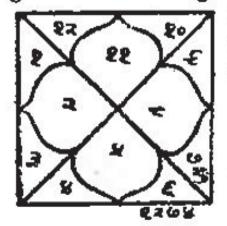


अरुवें भाव में मित 'बुध' की राणि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जानक के जीवन में अणान्ति रहती है। आयु तथा पुरातत्त्व के सुख ने कमी आती है। भूमि, भवन तथा माक्षा के मुख में भी बड़ी कमजोगी रहती है।

सातवीं उच्च तथा सामान्य मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के मृख की परिधम हारा उन्नति होती है।

'कुंध' लग्न की कुण्डली में 'शवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुंस्भलग्न : नवसभाव : शुक्र

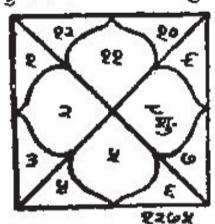


नकें भाव में स्वराधि स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती हैं तथा धर्म का .पालन भी यथाविधि होता है। साता, भूमि तथा भवन का सुख भी पर्याप्त मिलता है।

सातदीं सामान्य मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से परायम में बृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी खेष्ठ रहता है।

'कुंब' लान की कुण्डली में 'दशमभाद' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भलग्न : दशमभाव : शुक

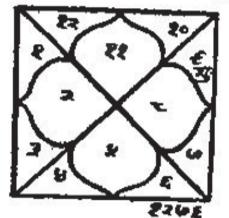


दसवें भाव में सामान्य भिक्ष 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्त' के प्रभाव से आतक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलताएँ मिलती हैं। यह धर्मीतमा, यशस्त्री तथा प्रतिष्ठित भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्य भाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का यथेप्ट मुख प्राप्त होता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'एकादशमाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेस

कुम्भलग्न: एकादशभाव: शुक्र ग्यारहवें भाव में सामान्य मित्र 'गुरु' की

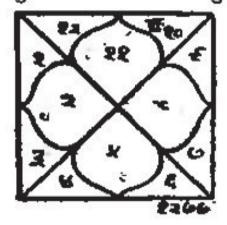


राशि पर स्थित 'शुक्त' के प्रभाव से जातक की आम-दनी में यथेष्ट बृद्धि होती हैं। यह धनी, न्यायी, चतुर, अभिक तथा यशस्त्री भी होता है एवं माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख भी मिलता है।

सातवीं मित-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तात-पक्ष से भी सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की अच्छी उन्नति होती है।

'कुंप' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का कलादेश

कुम्भलग्न : द्वादक्षभाव : श्क



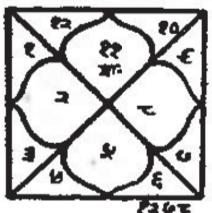
बारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'श्रुक' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से साभ भी मिलता है। धर्म का पालन भी करता है। अल्पायु में ही माता-पिता का वियोग हो जाता है। यश में भी कमी रहती है।

सातवीं शतु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से अपनी चतुराई के बन से शतु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा सगडों से लाभ होता है।

'क्रम्भ' लग्न में 'शनि'

'कूंम' लान की कुण्डली में 'प्रयमभाव' स्थित 'शनि' का फलावेश

कुम्भलग्तः प्रथमभावः शनि पहले भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव



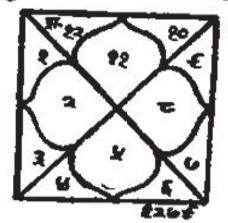
से जातक के शारीरिक सौन्वर्य एवं प्रभाव में बृद्धि होती है। यह यशस्वी तथा ऐश्वयंशाली जीवन विशाने वाला होता है। तीसरी नीच-दृष्टि से तृतीय भाव से देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में कमी आती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तम भाव की देखने से स्त्री-पक्ष से असन्तोंच रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में परेशानी रहती है।

दसवीं शत्रु-दृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के खेट में भी कठिनाइयां बनी रहती हैं।

'कुंब' सम्म की कुष्डली में 'द्वितीयन्नाव' स्थित 'शनि' का फलादेश.

कुम्भलग्न : द्वितीयभाव : शन्

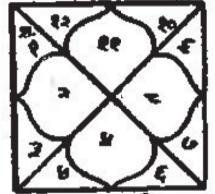


दूसरे भाव में शक्षु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक को अन-संचय के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है, प्रन्तु धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी आती है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से प्रतिष्ठा मिस्तती है। शारी-रिक सौन्दर्य में कमी रहती है। तीसरी मिन्न-दृष्टि से चतुर्य मांव की देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है, पर घरेलू सुख में कुछ कमी रहती है।

सातदीं भित-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दसवीं शतु-दृष्टि से एकदश भाव को देखने से आपदनी के मार्ग में कठि-नादयों जाती हैं।

'बूंब' लग्न की कुण्डली में 'ठुतीयमान' स्थित 'सनि' का फलादेश

कुम्मलग्न: तृतीयभाव शानि तीसरे भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर



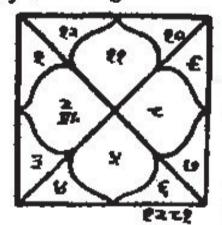
स्थित 'शनि के प्रभाव से आतक के प्रशक्त में कनी आती है तथा भाई-बहिनों से कष्ट मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में भी कमी रहती है। तीकरी मिल-दृष्टि के पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के सुख में बृद्धि होती है।

स्रातवीं उच्च-दृष्टि से नवम भाव की देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाग को देखने से खर्च की परेशानी

रहती है तथा वाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता रहता है।

'बूंच' सम्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुम्भलग्न : चतुर्यभाव : शनि



चौथे भाव में मिल 'सुक' की राशि पर स्थित 'सिन' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि एवं भवन का अपूर्व सुख मिलता है। तीसरी शक्षु-दृष्टि से बच्ठ भाव की देखने से अपनी शारीरिक शक्ति एवं बाहरी सुरक्षा के कारण शक्षु-पक्ष से रक्षा प्राप्त होती है।

सातवीं शब्रु-दृष्टि से दशम भाव की देखने है पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में परेशानी रहती है। दसवीं दृष्टि से स्वराधि में अथम भाव को देखने से

मारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है।

'कुंब' लग्न की कुण्डली में 'पचमभाव' स्थित 'समि' का फलाहेश

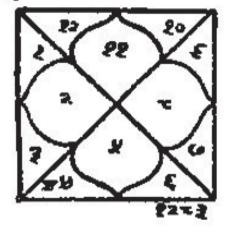
कुम्भलग्नः पंचमभावः शनि

पौचनें भाव में मित 'बुध' की राशि पर स्थित
'शनि' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान
के क्षेत्र में सफलता मिलती है। ऐसा म्यक्ति चिन्तायुक्त रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ भी उठाता
है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री
तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का अनुभव
होता है।

हिन्द सातवीं शतु-दृष्टि से एकदश भाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आतीं हैं। दसवीं शतु-दृष्टि से दितीय भाव को देखने अन तथा कुदुम्ब के बारे में चिन्तित रहना पड़ता है।

'कुंभ' सन्म की कुण्डली में 'बच्छभाव' स्थित 'सनि' का फलादेश

कृम्मलग्नः षष्ठभावः शनि



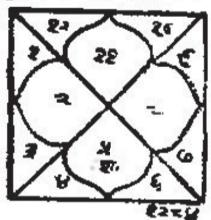
छठे भाव में शक्षु 'बन्द्रमा' की राजि पर स्थित शिन के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा अपने प्रभाव की वृद्धि केरता है तथा शबुओं पर विजय पाता है। शारीरिक सीन्वयं में कुछ कमी रहनी है। तीसरी मिल-दृष्टि से अष्टम भाव की देवन से आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति की बृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा थाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। दसवी नीचदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से

भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है।

'कुंब' लग्न की कुक्डली में 'सप्तमधाब' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुं भलग्न : सप्तमभाव : ननि



सातवें भाव में शतु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में कठिनाइयाँ आती हैं। खर्च अधिक रहता है। तीमरी उच्च तथा मिल-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराग्नि में प्रथम भाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य, यश. सम्मान तथा प्रभाव की दृद्धि होती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्य भाव

की देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है।

'कुभ' सम्ब की कुण्डली में 'अध्यमभाव' स्थित 'शर्नि' का फलावेश

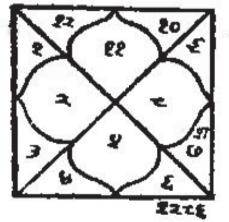
कुम्भलग्न : अष्टमभाव : शनि

थाठवें भाव में मित 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आयु में बुढि होती है, परन्तु पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है। शरीर तथा खर्च के विषय में कठिनाइयाँ भाती हैं। बाहरी स्थानों से भी लाभ होता है। तीसरी शलु-दृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता से बैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाव-सेल की जन्मति में बाधाएँ आती हैं।

मानवीं शतु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से छन तथा कुटुम्ब का सुख छुटि-पूर्ण रहता है। दसवीं मिल-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि का कुछ कभी के साथ लाभ होता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुंभलग्न : नवमभाव : शनि



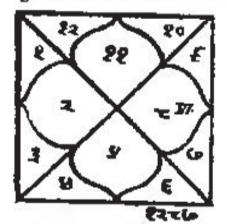
नवें भाव में मित्र 'शुक्त' की राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा छनं की यथेष्ट उन्नति होती है। शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ रहता है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिनता है। तीसरी शतु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने के जामदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिनती है। कहीं-कमी आकस्मिक लाभ होता है।

सातवीं नीच दृष्टि से तृतीय भाष को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है।

दसवीं शतु-दृष्टि ये एष्ठभाव को देखने से शतु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित करने के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

'कुंभ' लग्न की कुष्डली में 'दशमधाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुम्मलग्न : दशमभाव : शनि



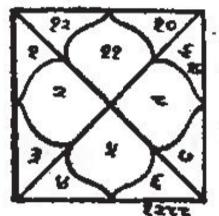
दसमें भाव में शब्रु 'मंगल'की राशि पर स्थित 'मिन के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से चतुर्य भाव को देखने से माला, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। दसवी यातु-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्ती-पक्ष से

असतीय रहता है तथा दैनिक वामदनी में कठिनाइपाँ आती है।

'कुं स' लग्न की कुंदली में 'एकादशपाव' स्थित 'समि' का फलादेश

कुम्भलग्नः एकादशभावः शनि ग्यारवें भाव में शतु 'शुरु' की राशि पर



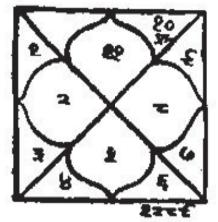
स्थित 'सनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक बृद्धि होती है। खर्च खूब रहता है तथा वाहरी स्थानों से लाभ भी मिलता है। तीसरी वृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव की देखने से शारीरिक सीन्दर्य, प्रभाव तथा यश की बृद्धि होती है। सातवीं मिल-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बृद्धि की पर्याप्त बृद्धि होती है तथा सन्तान-पक्ष का कुछ बृद्धिपूर्ण लाभ होता है।

दसवीं मिल-दृष्टि से अष्टम भाव की देखने से

आयु तथा पुरातस्व की वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन से खर्चे पूर्ण रहता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'द्वावशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुम्भलग्नः द्वादशभावः शनि



बारहवें मान में स्वराशि स्थित शनि के प्रमान से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से विशेष लाभ होता है। याताएँ भी करनी पड़ती हैं। सीसरी शन्नु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने सेधन तथा कुटुम्ब के सुख की खूदि के लिए निशेष परिश्रम करना पड़ता है।

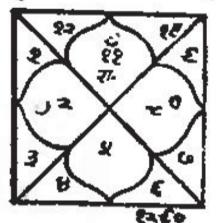
सातवीं शतु-दृष्टि से षष्ठ भाव की देखने से शतू-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है, परन्तु बाद में उस

पर प्रमाध स्थापित होता है। दसवीं मिल-दृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म का पालन होता है तथा भाग्य की बृद्धि होती रहती है।

'कुम्भ' लग्त में 'राहु'

'कुम्म' सान की कुष्टली में 'प्रयममाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

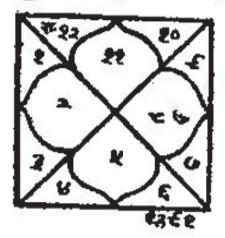
कुम्भलग्न : प्रथमभाव: राहु



पहले भाव में मिद्र 'शनि' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर में कहीं चोट लगती है तथा स्वस्थ्य एवं सौन्दर्य में कभी रहती है। वह गुप्त चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है, परन्तु मस्तिष्क की शक्ति से प्रभाव भी स्थापित करता है।

'कुम्म' लग्न की कुंग्डली में 'द्वितीयमाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

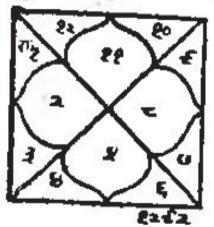
कुम्भलग्न : द्वितीयभाव : शह



दूसरे भाव में शसु 'गुष' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक से धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी आती है। कभी-कभी घोर आधिक संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है। बाद में यह अपनी गुप्त युक्तियों तथा परिश्रम के बन पर अन-संचय करता है तथा धनी एवं भाग्यदान समझा जाता है। ऐसा व्यक्ति खंडा हिम्मती होता है।

'कु' म' लम्म की कुंडली में 'तृतीयकाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

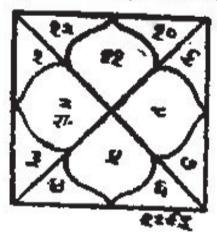
कुम्भलग्न**ः तृतीयभाव**ः राहु



तीसरे मान में शत्रु 'मगल' की राणि पर स्थित
'राहु' के प्रभाव से खातक के पराक्रम की अत्यधिक
बृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से विरोध रहता है।
ऐसा व्यक्ति अपनी चतुराई तका गुप्त युक्तियों
से बन पर सफलता एवं सुख के साधन प्राप्त करता
है और समाज में सम्मानपूर्ण स्थान बनाता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'बतुर्यमाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

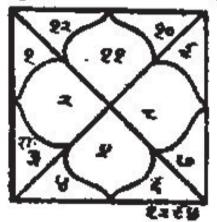
कुम्भलग्न : चतुर्थभाव: राहु



चौथेमाव में मिल 'सुक' की राणि पर स्थित राहु के प्रभाव से आतक की माता-पक्ष से बहुत कर्ट होता है। घरेलू जीवन अशान्तिपूर्ण रहता है। भूमि तथा भवन के सुख में भी कमी आती है। परन्तु अनेक संघड़ों से जूझने के बाद वह प्रयोग्त सफलता भी प्राप्त करता है।

'कुं म' लग्न की कुष्पली में 'यंधमशाब' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भलग्नः पंचमभावः राहु

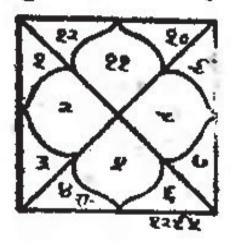


पाँचवें भाव के मिस 'बुध' की राशि पर स्थित उच्च से राहु के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से पहले कुछ कष्ट होता है, बाद में सुख मिलता है। विद्या तथा बुद्धि का विशेष लाभ होता है।

वह अपनी भीतरी कमजोरी छिपाने में चतुर, प्रभावशाली, मधुर-भाषी तथा चतुर होता है।

'कुं म' लम्न की कुछली में 'बष्टभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भलग्नः षष्ठभावः राहु

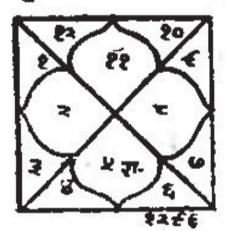


छठे भाव में शक्षु 'वन्द्रमा' की राशिपरस्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शक्षु-पक्ष पर भारी प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट आदि के मामलों में बुद्धि-बल से सफलता पाता है।

भीतरी रूप से परेशान रहने पर भी वह धैर्य तथा साहस की नहीं छोड़ता और अन्त में सभी कठिनाइयों पर विजय था लेता है।

'क्युं म' लान की कुच्डली में 'सप्तममाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

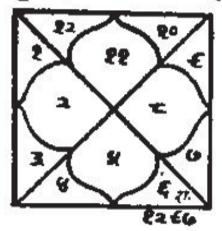
कुम्भलानः सप्तमभावः राहु



सातवें भाव में शतु 'सूर्य' की राजि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्ती-पक्ष से बहुत कष्ट होता है तथा दैनिक आमदनी कें क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु अन्त, में वह अपने श्रेयं, हिम्मत तथा परिश्रम के बल पर सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

'कुंम' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमचाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

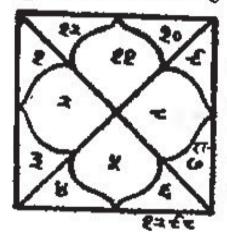
कुम्भ नान : अध्टमभाव : राहु



थाठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के जीवन पर अनेक संकट आते हैं तथा पुरातस्व की हानि भी होती हैं। पेट के निम्न भाग में विकार रहता है, फिर भी यह लम्बी आयु पाता है तथा स्विविक एवं बुद्धि के बल पर जीवन को प्रभावशाली ढंग से व्यतीत करता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

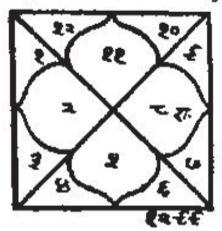
कुम्भ लग्नः वदमभावः राह



नवें भाष में मिल 'शुक्त' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से आतक की भाग्योन्नति में बावाएँ आती हैं तथा धर्म का पालन भी यथोचित नहीं होता, परन्तु अन्त में अपने बुद्धि-चातुर्य के बन पर यह सभी कठिनाइयों पर विजय 'पाकर उन्नति करता है तथा अपनी कमजोरियों को प्रकट नहीं होने देता।

'कुंभ' लग्न की कुंडली में 'बराममाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

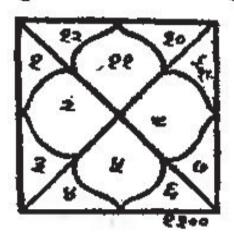
कुम्भकात: दशमभाव: दाह



दसवें भाव में शब्रु 'मंगल' की राजि पर नियन 'राहु' के प्रभाव से जातक को पिना से कष्ट, राज्य से परेशानी तथा व्यवसाय में हानि का शिकार होना पड़ता है। परन्तु वह अपने परिश्रम तथा युक्ति-बल द्वारा कठिनाइयों से संघषं करते हुए अन्त में सफलता भी पा केता है।

'कुंब' लग्न को कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'राष्ट्र' का फलादेश

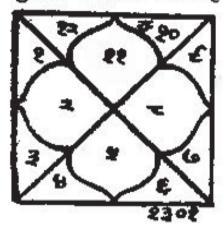
कुम्भ लग्न : एकादणभाव : शहु



ग्यारहवें भाव ने शतु 'गुरु' की राजि यर स्थित नीच के 'राष्ट्र' के प्रभाव से जातक की आमदनी के भार्य में बड़ी कठिनाइयां आती हैं, परन्तु वह अपने गुक्ति-यल से उन पर थोड़ी-बहुत विजय पा लेता है और अपनी कठिनाइयों को किसी पर प्रकट भी नहीं होने देता।

'कूंभ' सरंत की कुण्डली में 'हादशभाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

कुम्भ लग्न**ः द्वादराभावः** राष्ट्र



बारहवें भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को खर्च के बारे से बड़ी शिठिनाइयों उठानी पड़ती हैं। दाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे कुछ लाभ भी होता है। अपना खर्च चलाने के लिए उसे भठोर परिश्रम करना पड़ता है।

'क्रम्भ' लन में 'केतु'

'कुंस' लरत की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

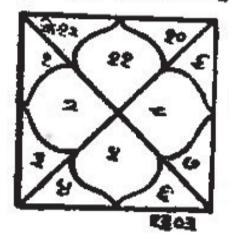
कुरभागभा : प्रथमभाव : केत्



पहले भाव में मिल 'शनि' को राशि पर स्थित 'कितु' के प्रभाव से जातक के शरीर में कहीं चोट या धाव का निशान बनता है तथा शारीरिक सौन्दर्य में कभी जाती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, धैंग्वान, गुप्ने-युक्ति-सम्पन्न तथा परिश्रमी होता है और इन्हीं गुणों के आधार पर सम्मान भी प्राप्त करता है।

'कुंब' लग्म की कुष्डली में 'डितीयमाब' स्थित 'केतु' का फलादेश

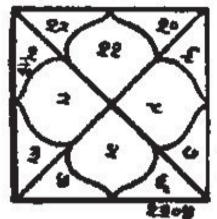
कुम्भ लग्न : द्वितीयभाव : केतु



दूसरे भाव में शतु 'गुर' की राशि पर स्थित के तु' के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब के सुख के विषय में कष्ट उठाना पड़ता है। कुटुम्ब में नित-नये उपद्रव होते रहते हैं। वह बड़े धैर्य, परिश्रम तथा न्याय-मार्ग से धन कमाने का प्रयत्न करता है और अन्त ने कुछ मफलता भी पा लेता है।

'कुंभ सम्न की कुण्डलो में 'तृतीयभाव' स्थित 'केशु' का फलावेश

कुम्भ सम्न : तृतीयभाव : केतु

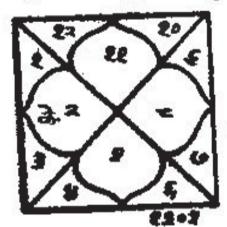


तीसरे भाव में शतु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, धैरंबान्, परिश्रमी, उद्योगी तथा गुप्त युक्तियों वाला होता है तथा इन्हीं गुणों के अल पर अन्त में जीवन की उन्नत भी बनाता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'सतुर्यमान' स्थित 'केतु' का फलादेश

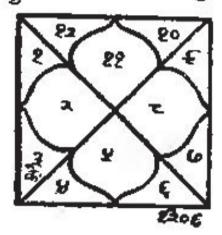
कुम्भ लग्नः चतुर्यभावः केतु



नौषे धाव में मिल 'शुक' की राशि पर स्थित 'केनु' के प्रभाव से जातक को माता के सुख में हानि या कमी रहती है। मातृभूमि से वियोग भी होता है। भूमि तथा भवन के सुख में भी कमी आती है। परन्तु बाद में वह अपनी गुप्त युक्तियों के बस पर इन कमियों की दूर करने में थोड़ी-बहुत सफलता पा लेता है।

'कुंभ' सम्म की कुण्डंशों में 'यंचमभाव' स्थित 'केंतु' का फलादेश

कूम्भ लग्न: पंचमभाव: केतु

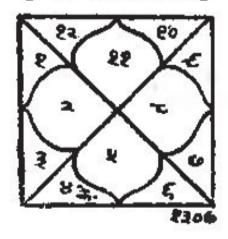


पाँचवें धाव में मिल 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केन्न' के प्रभाव से जातक को सन्तान का सुख पाने के लिए कष्ट-साध्य प्रयत्नों तथा गुप्त मुक्तियों का सहारा लेना पड़ता है, फिर जो अल्प सुख हो प्राप्त होता है।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती है। मस्तिष्क में अशान्ति रहती है तथा शील एवं विवेक भी कम होता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'बण्डमाव' स्थित 'केषु' का फलादेश

कुम्भसम्ब : पष्ठमाव : केतु

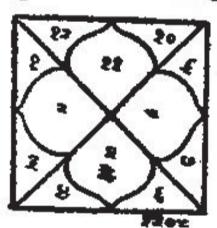


ं छठे भाव में भन्नु 'चन्द्रमा' की राजि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को शन्नुओं द्वारा अशान्ति मिसती है, परन्तु वह उन पर अपना प्रभाव स्थापित करने तथा विजय पाने में भी सफल हो जाता है।

ऐसा व्यक्ति मन में भयभीत रहने पर भी प्रकट रूप में बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है। वह धैयंवान्, कठोर परिश्रमी तथा गुप्त युक्तियों का जानकार होता है।

'कूंभ' लग्न की कुष्डली में 'सप्तमसाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

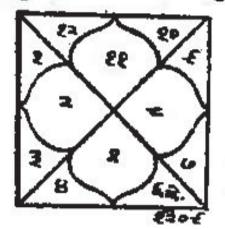
कुम्भ लग्न : सप्तमभाव : केतु



सातवें भाग में शतु 'सूर्य' को राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्ती-प्रश्न से विशेष कष्ट मिसता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में संकटों का सामना करता पड़ता है। उसकी जननेन्द्रिय में विकार भी होता है। अन्त में, वह अपने परिश्रम तथा गुप्त गुंक्तियों के बस पर सामान्य सफलताएँ भी पा लेता है।

'कूंब' लग्न की कुष्डली में 'अव्यममाय' स्थित 'केतु' का फलावेश

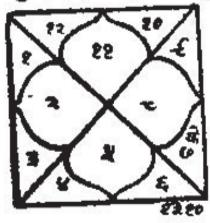
कुम्म सग्न : अध्टमभाव : केतु



बाठवें भाव में भिन्न 'बुध' को राजि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि ती होती है, परम्तु कई बार उसे मृत्यु-तुल्प कब्टों का सामना भी करना पड़ता है। पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है तया कई बार हानियां भी उठानी पड़ती हैं। अन्त में बह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर कठिनाइयों की दूर करने में सफल भी हो जाता है।

'कुंभ' सम्म की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'केसु' का फलादेस

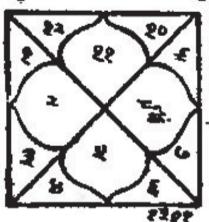
कुम्मलग्न: नवमभाव: केतु



नवें घाव में मिल 'शुक' को राशि पर स्थित 'केनु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बाधाएँ आती हैं, घम की भी विशेष उन्नति नहीं हो पाती। परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य एवं परिश्रम के बल पर भाग्य की उन्नति करता है और लगातार असफलताएँ मिलने पर भी कमी निरास नहीं होता।

'कुंच' साम की कुन्छती में 'दशमभाष' स्थित 'केतु' का फलादेश

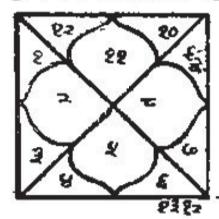
कुम्भ लग्न : दशमभाव : केतु



दसर्वे बाब में शतु 'मगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को अपने पिता से बहुत कब्ट मिलता है, राज्य से परेशानी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि होती है, फिर भी वह अपने धैर्य, साहस तथा युक्ति-बल से असफलताओं पर विजय प्राप्त करके हो रहता है।

'कुंच' लग्न को कुष्डली में 'एकादशमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : एकादशभाव : केतु

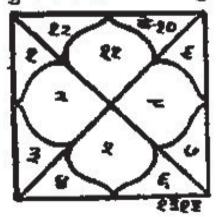


ग्यारहवें धाव में सामान्य मित्र 'गुर' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा कभी-कभी आकस्मिक रूप से भी धन लाभ होता है। कमी कठिनाइयाँ आने पर भी धीर्य नहीं छोड़ता।

्रेसा व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा न्याय-मार्गे से अस्यधिक धन कमासा और सुबी रहता है।

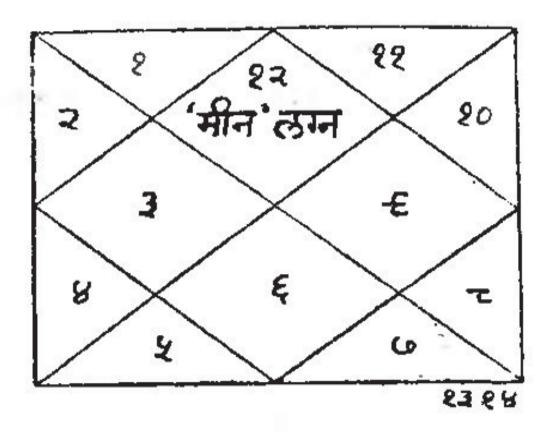
'कूंब' लग्म की कुण्डली में 'द्वादशकाव' स्थित 'केसु' कर फलावेश

कुम्भ लग्न : हादशभाव : केतु



बारहवें भाव में मिल 'शनि' की राजि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण परेणानी का अनुभव होता है, परन्तु वह अपनी गुप्त गुक्तियों से उन पर विजय पाता है तथां निराणाओं में दूब जाने पर भी कभी हिम्मत नहीं हारता। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से जाभ भी होता रहता है।

'मीन' लग्न



['भोन' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'मीन' लग्न का फलादेश

'भीन' सप्न में जन्म सेने वाला जातक सामान्य कद का, बड़ी अस्ति। तथा बड़े मस्तिष्क वाला होता है। उसकी ठोड़ी में गड्ढा होता है।

ऐसा व्यक्ति मित्र प्रकृति वाला, सतीगुणी, प्रवण्ड, विनम्न, चतुर, चंचन, भूतं, आलसी, रोगी, अल्पभोजी, खेप्ठ पण्डित, यशस्वी, सुरितवान्, स्त्री-प्रिय, जल- 'क्रीड़ा करने में कुशल, बहु-मन्ततिवान् तथा खेप्ठ रत्नाभूषणों को द्यारण करने वाला होता है।

'मीन' रुग्न वाने जातक की प्रारम्भिक अवस्था सामान्य होंग से व्यतीत होती है, मध्यमावन्था में वह दु:खी रहता है तथा अन्तिम अवस्था में सुख भीगता है। 'मीन' लग्न याने जातक का भाग्योदय २१-२२ वर्ष की आयु में होता है।

'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न शावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आने दी गई उदाहरण-कुण्डली सख्या १३१५ से १४२२ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिसे अनुसार समझ लेना चाहिए।



'मीन' लग्नं में 'सूर्य' का फलादेश

१—'मीन' सन्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उवाहरण-कुण्डली सख्या १३१६ से १३२६ के बीचे देखना चाहिए।

२---'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

ाजस महीने में 'सूर्य'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३१५
- (ख) 'बूष' राजि पर हो तो संख्या १३१६
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३१७
- (घ) 'कर्क' राशि पर ही ती संख्या १३१८
- (क) 'सिंह' राजि पर ही तो संख्या १३१६
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३२०
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो सख्या १३२१
- (अ) 'बृश्चिक' राजि पर हो तो संख्या १३२२
- (झ) 'धनु' राजि पर ही तो संख्या १३२३
- (ञा) 'मकर' राजि पर हो तो संख्या १३२४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३२५
- (ट) 'मीन' राजि भर ही तो संख्या १३२६

'भीन' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'जन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२७ में १३३≃ के बीच देखना चाहिए।

र--'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कृण्डलियों में देखना चाहिए— जिस दिन 'चन्द्रमा'—

- (क) 'मेप' राशि पर ही ती सख्या १३२७
- (ख) 'यृष' राशि पर हो तो संख्या १३२=
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३२६
- (घ) 'ककें' राशि पर हो तो संख्या १३३०
- (ङ) 'सिंह' राशि पर ही तो संख्या १३३१
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३३२
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३३३
- (ज) 'वृश्चिक' राजि पर हो तो संख्या १३३४
- (अ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३३५
- (ङा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३३६
- (ट) 'कुम्म' राशि पर हो तो संख्या १३३७
- (ठ) 'मीन' राशि पर ही तो संख्या १३३=

'मीन' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१--'मीन' लग्न वालों को खपनी जन्मकुण्डली के बिभिन्न शावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश संख्या उदाहरण-कुण्डली १३३६ से १३५० के बीच देखना चाहिए।

२--'मीन' सम्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न शादों में स्थित 'मंगल' का अम्थाधी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कृण्डलियों में देखना चाहिए--

जिस महीने में 'संगल'—

- (क) 'मेष' राजि पर हो तो सख्या १३३६
- (ख) 'दृष' राशि पर हो तो संख्या १३४०
- (ग) 'मियुन' राशि पर हो तो संख्या १३४१
- (च) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३४२
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३४३
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३४४
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३४%
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३४६
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३४७
- (अ) 'मकर' राशि पर ही ती संख्या १३४८
- (ट) 'कुम्भ' राजि पर हो तो संख्या १३४६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३४०·

'मीन' लग्न में 'बुघ' का फलादेश

१—'मीन' लग्न वालों को खपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३५१ से १३६२ के शील देखना चाहिए।

२—'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'संगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीन में 'बुध'—

- (क) 'मेप' राशि पर हो तो संख्या १३५१
- (ख) 'बूष' राजि भर हो तो संख्या १३५२
- (म) 'मियुन' राशि पर हो तो संख्या १३५३
- (थ) 'कर्क' राजि भर ही ती संख्या १३५४
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३५५
- (थ) 'कन्या' राजि पर हो तो संख्या १३५६
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३५७
- (অ) 'বৃश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३५८
- (झ) 'अनु' राणि पर हो तो संख्या १३५६
- (ञा) 'मकर' राजि पर ही ती संख्या १३६०
- (ट) 'कुम्भ' राजि पर हो तो संख्या १३६१'
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३६२

'भीन' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१---'मीन' साम वालों को अपनी जम्मकुण्डली के विभिन्न मावों में स्थित 'गुरु' को स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६३ से १३७४ के बीच देखना चाहिए।

२—'मीन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गूढ' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'-

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो सख्या १३६३
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३६४
- (ग) 'मियुन' राशि पर हो तो संख्या १३६%
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३६६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३६७

- (च) 'कन्या' राशि पर ही ती संख्या १३६८
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो सच्या १३६६
- (ज) 'बृश्चिक' राशि पर हो तो सँख्या १३७०
- (छ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या '१३७१
- (ञा) 'मकर' राजि पर हो तो संख्या १३७२
- (ट) 'कुम्भ' राजि पर हो तो सख्या १३७३
- (ठ) 'मीन' राशि पर ही तो संख्या १३७४

'मीन' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'मीन' खन्त वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सुक' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७४ से १३५६ के बीच देखना चाहिए।

२---'मीन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए---

जिस महीने में 'शुक'-

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३७५
- (ख) 'दृष' राशि पर हो तो संख्या १३७६
- (ग) 'मियुन' राशि पर ही तो संख्या १३७७
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३७८
- (ङ) 'सिंह' राजि पर हो तो संख्या १३७६
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३८०
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३ वंश
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३८२
- (क) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३८३
- (ट्य) 'मकर' राशि पर ही ती संख्या १३८४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३<×
- (ठ) 'भीन' राशि पर हो तो संख्या १३**८**६

'मीन' लग्न में 'शनि' का फलादेश

- १. 'मीन' सम्म वालो को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली सख्या १३८७ से १३८८ के बीच देखना चाहिए।
 - २. 'मीन' लग्न बालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि'

का अस्थामी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए ।

जिस वर्ष में 'शनि'-

- (क) 'सेष' राशि पर हो तो संख्या १३०७
- (ख) 'बूब' राशि पर हो तो संख्या १३८८
- (ग) 'मियुन' राशि पर हो तो संख्या १३=६
- (घ) 'कर्के' राशि पर हो तो संख्या १३६०
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३६१
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३६२
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३६३
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो सख्या १३६४
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३६%
- (ञा) 'सकर' राशि पर हो तो संख्या १३६६
- (ट) 'कूम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३६७
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३६८

'मोत' लग्न में 'राहु का फलादेश

- १. 'मीन' लग्न वालों को अपनी अत्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६६ से १४१० के बीच देखना चाहिए।
- २. 'सोम' लग्न वालों को गोचर-कृण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थामी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कृण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राष्ट्र'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३६६
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १४००
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १४०१
- (घ) 'ककें' राशि पर हो तो संख्या १४०२
- (ङ) 'सिंह' राशिपर हो तो संख्या १४०३
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १४०४
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १४०५
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १४०६
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १४०७
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १४०८
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १४०६
- (ठ) 'भीन' राशि पर हो तो संख्या १४१०

'सीन' लग्न में 'केतु' का फलावेश

- १. 'भीन' लग्न बालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बेतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४११ से १४१२ के बीच देखना चाहिए।
- २. 'मोन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भाषों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

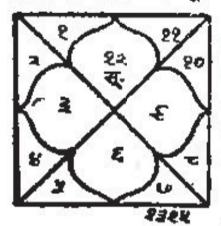
जिस वर्ष में 'केतु'---

- (क) 'मेप' राशि पर हो तो सख्या १४११
- (ज) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १४१२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १४१३
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १४१४
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १४१५
- (च) 'कल्या' राशि पर हो तो संख्या १४१६
- (छ) 'नुला' राशि पर होतो संख्या १४१७
- (ञा) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १४१८
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १४१६
- (ञा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १४२०
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १४२१
- (ठ) 'मोन' राजि पर हो तो संख्या १४२२

'भीन' लग्न में 'सूर्ये'

'मीन' सभा की कुष्पली के 'प्रथममाव' स्थित 'सूर्य' का कलादेश

मीनवरन : प्रथमभाव : सूर्य



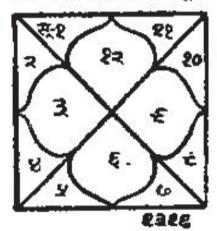
पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्ये' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति एवं प्रभाव में वृद्धि होती है, परन्तु रक्त-विकार तथा अन्य रोग होने को संभावना भी रहती है। शत्नु-पक्ष पर विजय पाने तथा अपना सम्भान बढ़ाने के लिए उसे विशेष दौड़भूप करनी पड़ती है।

सातवीं मिझदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से भूछ कठिनाइयों के बाद स्त्री का सुख मिलता है तथा

दैनिक आमदनी के लिए भी अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

'मीन' लग्न को कुण्डली में 'द्वितीयमाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाष : सूर्य

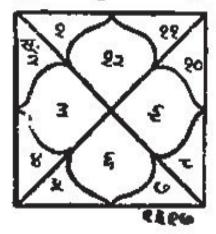


दूसरे भाव में 'मंगल' की राशि पर स्थित उच्च के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के प्रभाव एवं धन में वृद्धि होती है तथा कुदुन्य का सुख भी मिलता है।

सातवीं नीच तथा शतू-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ कमी आती है तथा दैनिक जीवन में भी परेशानियाँ रहती हैं।

'मीन' लात की कुष्डली में 'तृतीयमाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

नीचलग्न : तृतीयभाव : सूर्य

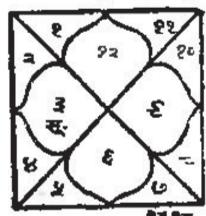


द्वि तीसरे भाव में शत्नु 'शुक' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता रहता है। शत्नु-पक्ष पर विजय मिलती है।

सातवी मिल-दृष्टि से नवमभाव को देखने से शारीरिक स्थम द्वारा भाग्य की उन्नति तो होती है, परन्तु धर्म की उन्नति नहीं हो पाती। जीवन सौमान्य दंग से बीतता है।

'मोन' सप्त की कुष्पली में 'बतुर्यभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्यभाव : सूर्य

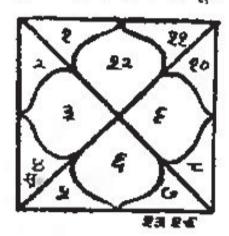


चीये माव में मिस 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के सुख तथा प्रभाव में वृद्धि होती है, परन्तु माता, भूमि एव भवन के सुख में कुछ कमी और परेशानियां भी रहती हैं।

्कार्की मित-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पितः क्षा एव व्यवसाय के सेत में सहयोग, यश प्रतिष्टुर एवं अन्य की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'यंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

भीतवस्त : पंचमभाव : सूर्य

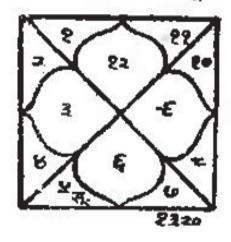


पाँचवें भाव में मिस 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूये' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कुछ कष्ट होता है, परन्तु कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं वाणी की शक्ति में वृद्धि होती है। मस्तिष्क में चिन्ता एवं कोध का निवास मी रहता है।

सातवीं सञ्च-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से लाभ के मार्ग में कुछ कठिनाइयी आती हैं. परन्तु परि-श्रम द्वारा सफलता भी मिलती है।

'मीन' लान की कुण्डली में 'खळशाव' स्पित 'सूर्य' का फलादेश

भीतनग्न : षष्ठभाव : सूर्य

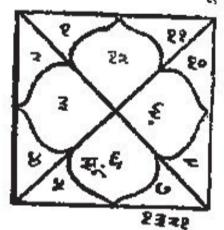


छटे भाव में स्वराशि-स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शक्षुओं पर विजय पाता है तथा अगड़े-झंझटों से साभ उठाता है। उसे रोग आदि भी नहीं होते। वह बड़ा हिम्मती, ग्रैयंवान् पथा परिश्रमी होता है।

सातवीं सञ्जू-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने में खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी भुष्ठ कप्ट होता है। खर्च की अधिकता में मन अशान्त रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमझाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनतग्न : सप्तमभाव : सूर्य

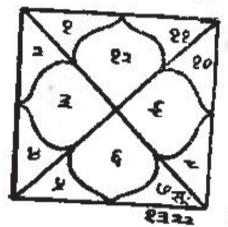


सातनें भान में भिन्न 'नुघ' की राशि पर स्थित 'सूयें' के प्रभाव से जातक का स्त्री-पक्ष से कुछ दै मनस्य रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में अधिक दौड़-धूप करने से हो सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि होती है. परन्तु भारीरिक परेशानियों भी रहती हैं।

'मीन' सन्त की कुष्डली में 'अष्टमभाष' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न: अष्टमभाव: सूर्य

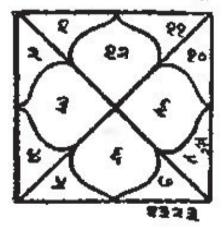


आठवें भाव में सन्नु 'शुक्त' की राशि पर स्थित नीच के 'सूर्य' के अभाव से जातक की आयु पर चोर संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व-शक्ति की भी हानि होती है। सन्नु-पक्ष से भी कष्ट मिलता है। ननसाल-पक्ष दुवंल रहता है। पेट के निम्न भाव में विकार भी होता है।

सातवी मित्र तथा उच्च-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

'मोन' जन्म की कुष्डली में 'सदमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

भीनलग्नः नवमभावः सूर्ये

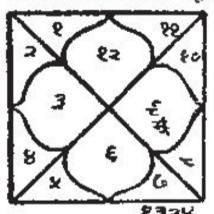


नकें भाव में मित्र 'संगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। शबु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा प्रभाव बढता है।

सात्तवीं शतु-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने ने भाई-वहिनों से कुछ विरोध रहता है तथा कुछ कठि-नाइयों के साथ पराक्रम, प्रभाव तथा पुरुषार्थ की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : नवसभाव : सूर्य

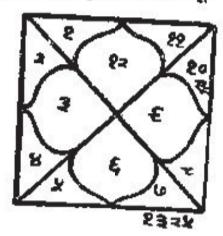


दमनें भाव में मिल 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से ज़ातक का अपने पिता से कुछ वैमनस्य रहता है राज्य के क्षेत्र में प्रमाव तथा सम्मान की वृद्धि होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठि-नाइयों वाती हैं। सन्नु-पक्ष पर विजय मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्यमाय को देखने में भुष्ठ कठिनाइयों के साथ माता, भूमि एवं भवन का मुख मिलता है।

'मीत' लग्न की कुण्डली में 'एकादराभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : एक दशभाव : सूर्य

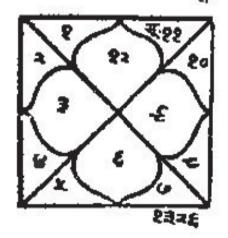


ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम हारा अपनी आमदनी की खूब बढाता है। शब्रु-पक्ष पर भी विजय मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

'मोर्न' लग्न की कुखली में 'हादशमाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न: द्वादशभाव: सूर्य



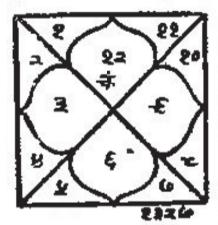
बारहवें भाव में शतु 'क्वनि' की राजि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को खर्ज चलाने में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानी रहती है। शतु-पक्ष भी कठिनाइयाँ उत्पन्न करता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पष्ठभाव को देखने से खर्च के बल पर शक्षुओं पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा ध्यक्ति अहंकारी तथा कोसी भी होता है।

'मीन' लग्न में 'चन्द्रमा'

'मोन' लान की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

भीनलग्न : प्रयमभात्र : चन्द्र

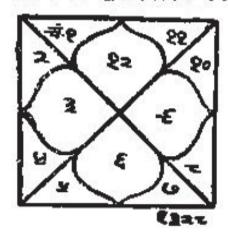


पहले भाव में मिस 'गुर्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, सम्मान तथा यश की वृद्धि होती है। वह मधुरभाषी, सर्वेषिय तथा प्रभावशाली होता है। उसे सन्तान तथा विद्या-युद्धि का भी श्रेष्ठ लाभ होता है।

सातवीं भिन्न-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के सेन में खुढ़ि-बल से अण्डा साथ होता है।

'मोम' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीसभाव : चन्द्र

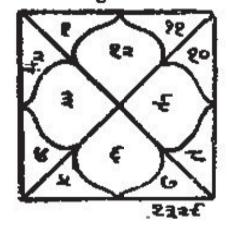


दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब की खेष्ट शक्ति मिलती है। सन्तान-पक्ष से कुछ परेशानी होती है, फिर भी सन्तान तथा विद्या-बुढि का अच्छा लाभ होता है।

सातवीं नामान्य मिल-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति मे वृद्धि होती है लाथ दैनिक जीवन आनन्दमय बना रहता है।

'मीन' लान की कुष्डली में 'तूतीयबाब' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

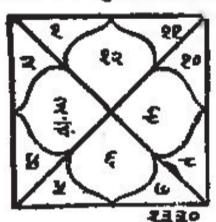


तीसरे भाव में सामान्य मित्र 'शुक्त' की रिश पर स्थित उच्च के 'चन्द्रमा' केप्रभाव से आतक के परा-कम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है तथा विद्या एवं सन्तान-पक्ष का भी पूर्ण सहयोग मिलता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में रकावटें आती हैं। ऐसा व्यक्ति असहिष्णु होता है, अतः उसे यश भी कम मिलता है।

'मोम' लग्न की कुथाली में 'बतुर्यभाव' स्थित 'बन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्थमाव : चन्द्र

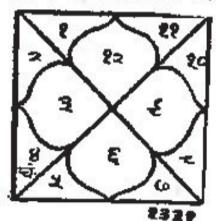


चौषे आव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को माना, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख'प्राप्त होता है। विद्या तथा संतान पक्ष में भी उन्नति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से वृद्धि-वल से व्यवसाय में उन्निति होती है तथा राज्य-पक्ष से सम्मान तथा विद्या के सहयोग प्राप्त होता है। उसकी अनेक प्रकार से उन्निति होती है।

'मोन' लग्न की कुष्पली में 'पंचमचाव' स्थित 'बन्डमा' का फलादेश

मोनल्पन : पंचमभाव : चन्द्र

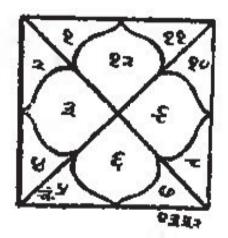


परिवर्षे भाव में स्वराशि में स्थित 'वृन्द्रमा' से प्रभावसे विद्या, यृद्धि एवं सन्तानका यथेष्ट लाभ होता है। वह वाक्षदु तथा मीठे स्वभावका, गंभीर, दूर-दर्शी तथा स्थिर विचारों का व्यक्ति होता है।

सातवी शतु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से वृद्धि-बल द्वारा उसकी आमदनी की वृद्धि होती है, यद्यपि उसे कुछ असन्तोष भी रहता है।

'मोन' लग्न की कुष्यली में 'बळभाव' स्थित 'बज़मा' का फलादेश

भीनलग्न : षष्ठभाव : धन्द्र

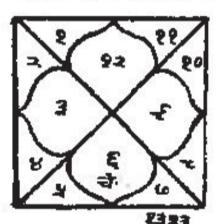


छठे भाव में मिस्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से आतक को शतु-पक्ष से अशान्ति रहती है, तथा बुद्धि-बल से उन पर प्रभाव स्थापित हो पाता है। सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है तथा विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं।

मातवीं शबु-दृष्टि से द्वादसभाव को देखने से खर्च अधिक रहने के कारण कष्ट होता है तथा बाहरी स्थानों से भी असन्तोषजनक लाम होता है।

'मोन' लग्न की कुष्टली में 'सप्तमभाव' स्थित 'श्रन्त्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

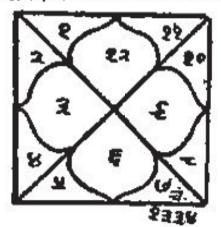


मातवें भाव में भिन्न 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को सुन्दर सथा बुद्धिमती स्त्री मिलती है। व्यवसाय के सेन्न में भी सफलता मिलती है। सन्तान-पक्ष, घरेलू सुख तथा विद्या-बुद्धि की भी उन्नति होती है।

सातवीं मित-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, सम्मान एवं योग्यतां की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुंडली में 'अष्टममाव' स्थित 'बन्तमा' का फलादेश

मीनलग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

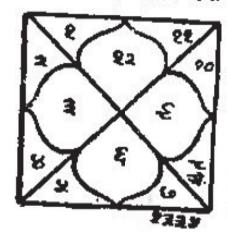


आठवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। विद्या एवं सन्तान-पक्ष में कमी रहती है। धन तथा मस्तिष्क अशान्त रहती है।

सातवीं मित-दृष्टि से द्वितीय भाव के देखने से धन तथा कुटुम्बके सुख की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति मामान्य जीवन विदाता है।

'मीन' सप्त की कुच्छली में 'तवमन्नाव' स्थित 'चन्त्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : नवसभाव : चन्द्र

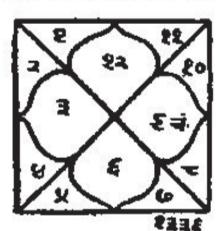


नवें भाव में मिक्ष 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'चन्त्रमा' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति तथा धर्म पालन में रुकावटें आती हैं। सन्तान तथा विद्या का पक्ष भी कमजीर रहता है। मन-मस्तिष्क में परेशानियाँ रहती हैं।

सातवीं उच्च-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में पर्याप्त वृद्धि होती है ।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'बशममाव' स्थित 'बन्द्रभा' का फलादेश

मीन्सग्न : दशमभाव : चन्द्र

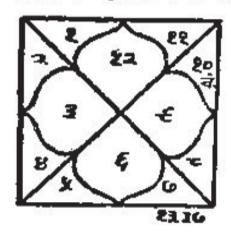


दसमें भाव में मित 'गुरु' की राशि पर स्थित 'वन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में वीधित सफलताएँ प्राप्त होती हैं। वह विद्वान्, नियमों का पालक, बुद्धिमान् तथा संतित-वान भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्य भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा भाग्यशाली होता है।

'मीन' लग्न की कुच्छली में 'श्कादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : एकादशमाव : चन्द्र

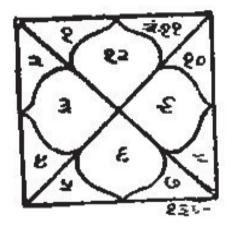


ग्यारहवें भाव में अबु 'शनि' की राशि पर 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि-वल द्वारा आमदनी में पर्याप्त वृद्धि करता है।

सातनीं दृष्टि से स्वराणि में पंचमभाव को देखने से सन्तान एवं विद्या-बृद्धि-पक्ष की उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। वह स्वार्थी तथा अपनी हो उन्नति की कामना करने वाला होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'ढ़ादशमाव' स्थित 'चन्डमा' का फलादेश

मीनलग्नः द्वादशभावः चन्द्र



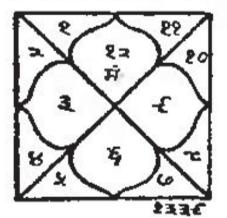
वारहवें भाव में सन्नु 'सनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के अभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ भी मिलता है। सन्तान-पक्ष से कब्ट तथा विद्या के खेन्न में कमी का सामना करना पड़ता है। सन-मस्तिष्क से परेशानी भी रहती है।

सातवीं मित-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से बुद्धि-बल से शतु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है।

'मीन' लग्न में मंगल

'मोन' सग्न की कुण्डली में 'प्रथममाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलम्न : प्रथमभाव : मंगल



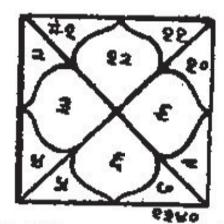
पहले भाव में मित 'गुरु' की राशि पर स्थित
'मंगल' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति एवं
प्रभाव में वृद्धि होती है। धन, कुटुम्ब तथा भाग्य की
भी समृद्धि होती है। चौथी मिल-दृष्टि से चतुवंभाव
को देखने से माता, भूमि एवं भवन का पर्याप्त सुख
मिलता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से सप्तम भाव की देखने से व्यवसाय तथा घरेलू सुख की वृद्धि होती है तथा

स्त्री का पक्ष उत्तम रहता है। आठवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाम होता है।

'मीन' सन्न की कुण्डसी में 'हितीयमाव' स्थित 'मगल' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : मंगल



दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब को वृद्धि होती है। चौथी नीच-दूष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

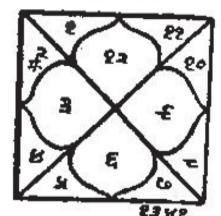
सातवीं सामान्य मित-दृष्टि से अप्टम भाव की देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में दृदि होती है।

आठवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को

देखने से भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन ठाठ-बाट का होता है।

'भीन' लाग की कुष्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : मगल



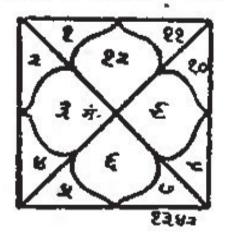
तीसरे भाव में सामान्य मिल 'शुक' को राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के पराकृम की विशेष बृद्धि होती है तथा धन-कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। चौथी मिल-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शतु-पक्ष पर भी प्रभाव स्थापित होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धमें की विशेष उन्नति होती है।

आठवीं मिल्ल-दृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलताएँ

मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्त्री, सुखी, धर्मात्मा सथा शञ्ज्जयी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'बतुर्वमाव' स्थित 'चनामा' का फलादेश

भीतलानः चतुर्यभावः मंगल



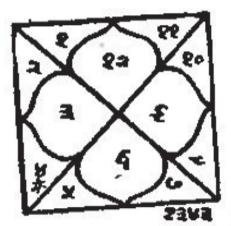
चौथे भाद में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाद से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। चौधी मिल-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री भाग्यशाली मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय एवं घरेलू-सुख को वृद्धि होती होती है।

सातवीं मित-दृष्टि से नवमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। आठवीं भन्नु तथा उच्य-दृष्टि से एक'-

दम भाव को देखने से घर बैठे ही लाभ होता रहता है। ऐसा मक्ति बहुत ही धनी हीना है।

'मोन' लग्न की कुष्वली में 'पंचममाव' स्थित 'मंगल' का फलावेश

मीन लग्न: पंचमभाव: मंगल पाँचवें भाव में मिस्र 'चन्द्रमा' की राशि पर

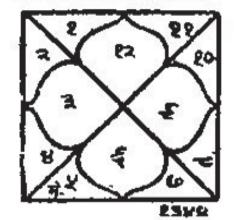


स्थित नीच के 'मंगल' के अभाव से जातक का मन्तान तथा विद्या का पक्ष दुवंल रहता है। धन तथा कुटुम्ब के सुख तथा माग्य एवं धर्म के पक्ष में भी कमी रहती है। चौथी सामान्य मिलदृष्टि से अष्टम भाव की देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में कुछ बृद्धि होती है।

सातवीं उच्चद्ष्टि से एकादश भाव की देखने से अग्मदनी में बृद्धि होती है। बारहवीं शसुद्धि से द्वादशभावकी देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सर्वधों से असतोषपूर्ण लाभ होता है।

'मीन' संग्न की कुष्वली में 'वळमाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

भीत लग्न : **पष्ठभाव :** मनुल



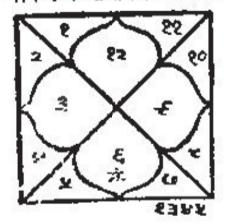
छडे भाव में मित 'सूर्ये' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शतु-पक्ष पर बहुत प्रभाव रखता है। धन की कुछ कमी रहते हुए भी ठाठ से खर्च चलाता है। कुटुम्ब से थोड़ा सुख मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में नदम भाव की देखने भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन होता है।

सातवीं शतुद्धि से द्वादश मान की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्ध भी असंतोषजनक रहते हैं। आठवीं मिलद्धि से प्रथम

भाव को देखने से शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान को बृद्धि होती है।

'मोर' सम्य की कुण्डली के 'सप्तममाव' स्थित 'मंगस' का फलादेश

मीन नग्नः सप्तमभावः मंगल

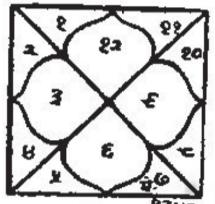


सातवें भाव में मिल्ल 'बुध' की शाशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की माग्यमालिनी स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय में भी लाभ होता है। वह धर्मात्मा तथा भाग्यवान् भी रहता है। चौधी मिलदृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। अश्यदनी खूब बढ़ती है।

सातवीं मिल्लदृष्टि से प्रथम मान को देखने से कारीरिक सौन्दर्थ, यश, प्रतिष्ठा तथा स्वामिमान

को बृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। 'मीन' सन्न की कुण्डली में 'अष्टमधाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : अष्टमभाव : मगस

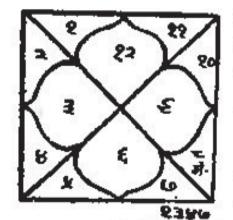


बाठवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर त्यित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातस्व का लाभ होता है, किन्तु भाग्य, धमं तथा यश में कमी खाती है। चौथी शतू तथा उच्चदृष्टि से एकादश भाव को देखने से खामदनी अच्छी रहती है तथा अधिक मुनाफा उठाने की प्रवृत्ति बनती है।

हें अपन् सातवीं दृष्टि से स्वराधि में द्वितीय भाव की देखने से परिश्रम द्वारा छन का संचय होता है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। आठवीं शबुद्धि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु पराक्रम बढ़ता है।

'मीन' लग्न की कुण्डकी के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वीच राग्न : नवमभाव : मंगल



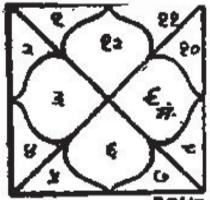
नवें भाव में स्वराधि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। वह भाग्यशाली, धनी तथा यशस्त्री होता है। चौथी सजु-दृष्टि से द्वादश भाव को देंखने से खर्च को कठिनाई रहती है तथा बाहरी संबंधों से भी असन्तोष रहता है।

सातवीं शक्षदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से कुछ कमी के साथ भाई-बहिनों का सुध मिलता है तथा पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है।

आठवीं मिस्रदृष्टि से चतुर्यमाद की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख पर्योप्त मिलता है।

'बीन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाद' स्वत 'बंगल' का फलादेश

मीन लग्न : दशमभाव**ः मं**गल

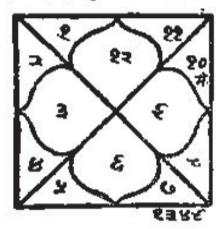


दसवें भावं में मिल 'गुरु' की शाशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य सथा व्यवसाय के केंद्र में अच्छी सफलताएँ मिलती हैं। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। भौथी मिलदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति, प्रभाव, यश, स्वामिमान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

श्वधर सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थं भाव की देखने में माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। पौचवीं नीचदृष्टि से पंचम भाव की देखने से सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कुछ कमी रहती है तथा वाणी में सखापन झलकता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : एकादशभाव : मंगल



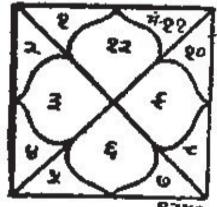
ग्यारहवें भाव में शतु 'शनि' को शाशि पर स्थित 'मगल' के प्रभाव से जातक को आमदनी में अत्यधिक बृद्धि होती है। यह बड़ा माग्यणाली तथा धर्मात्मा भी होता है। चौथों दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के मुख को वृद्धि होती है।

सातवी नीच सया मिलदृष्टि से पन्नम भाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कमी रहती है। आठवीं मिलदृष्टि से पष्ठभाव को देखने

से शबु-पक्ष पर विजय मिलतो है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

'मीन' सन्न की कुण्डली में 'हादशमाव' में स्थित 'मंगल' का फलादेश

भीन लग्नः द्वादशभावः भगल



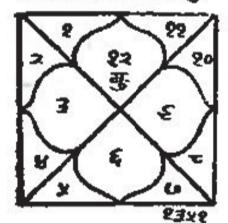
बारहवें भाव में भलू 'शनि' की 'राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा वाहरी संबंधों से लाभ होता है। धन तथा कुटुम्ब के सुख में भी कभी रहती है। भाग्य तथा धमें को उन्नति में कठिनाइयां आती हैं। चौथी भलु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख में कुछ कसी रहती है, परन्तु पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है।

श्रीका सातवीं शक्षुद्धिः से षष्ठ भाव की देखने से भाव-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय से सुख एवं लाभ की प्राप्त होती है।

'मीन' लग्न में 'बुध'

'मोन' लग्न को कुण्डली के 'प्रयममाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : प्रथमभाव : बुध

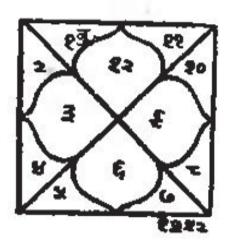


पहले भाव में मिद्र 'गुरु' की शाशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के भारीरिक सीन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। माता, भूमि तथा भवन का सूख भी थोड़ा ही मिलता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से स्वराधि में सप्तम भाव की देखने से स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है तथा व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होती है।

'मीन' लग्न की कुष्वली के 'हितीयबाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : द्वितीयभाव : बुध

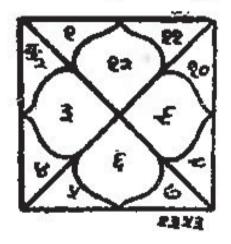


दूसरे भाव में मिल 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। माता तथा स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु भूमि एवं भवन का लाभ होता है।

सातवीं मिस्रदृष्टि से अध्यम भाव की देखने से आयु एवं पुरातत्त्र का साभ होता है। दैनिक जीवन भी उल्लासपूर्ण बना रहता है।

'बीन' लग्न की कुष्वली के 'शुरीधमाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : तृतीयभाव : बुध

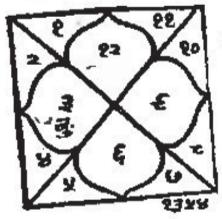


तीसरे भाव में मित्र 'शुक' की राशि पर स्थित 'शुध' के प्रभाव से जातक के पराक्रम को दृढि होती है तथा भाई-बहिनों का अच्छा सुख मिलता है। मासा, भूमि, भवन, स्त्री तथा व्यवसाय के केंद्र में भी सुख-सफलता की प्राप्त होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति यश की प्राप्त करता है।

'मोन' सम्म की कुण्डली के 'बतुर्यकाव' स्थित 'बुख' का फलादेश

मीन सग्न : चतुर्यभाव : बुध

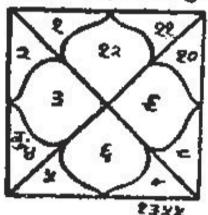


बीये भाव में स्वराशि स्थित 'बुध' के प्रभाव से आतिक की माता, भूमि तथा भवन का विशेष सुख मिलता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष में भी सफलता मिलती है। घरेलू जीवन उल्लासपूर्ण रहसा है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में की सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा भाग्यशासी होता है।

'भीन' सम्न की कुच्छली के 'शंचनमाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन सग्नः प्चमभावः बुध

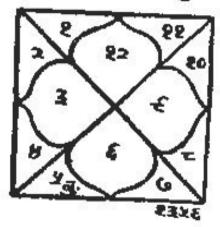


पौचवें भाव में मिद्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में विशेष जन्निति प्राप्त होती है। वह मोठी वाणी बोलने बाला तथा कार्य-कुशल होता है। माता. भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है।

सातवीं मिल्रदृष्टि से एकादश भाव की देखने से आमदनी में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, विवेकी तथा यहस्की होता है।

'मोन' सरन को कुण्डली के 'बच्ठमाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : षष्ठभाव : श्रुष

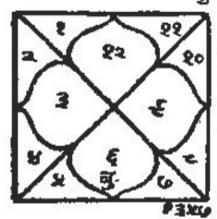


छठे भाव में मित 'सूर्य' की शक्षि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में शान्ति से काम निकालता है। माता तथा स्त्री से कुछ विरोध रहता है। भूमि तथा भवन का मुख भी कम ही मिलता है। व्यवसाय-सेंद्र में बुद्धि-बल से सफलता मिलती है।

सातवीं मिल्रदृष्टि से द्वादश भाव की देखने से आतक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है।

'मोन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमगाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्नः सप्तमभावः श्रुध

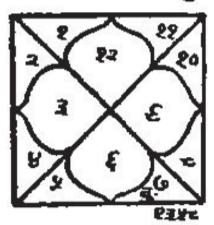


सातवें भाव में स्वराणि स्थित उच्च के 'बूढ' के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है, सथा दैनिक व्यवसाय में सफलता मिलती है घरेलू जीवन अच्छा रहता है। माता, मूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख भी मिलता है।

साववीं नीच तथा मिस्रदृष्टि से प्रथम भाव की देखने से भारीरिक स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है तथा युहस्वी की चलाने में परिश्रम अधिक करना प्रथा है।

'सीन' लान की कुष्वली के 'अध्यमभाव' स्थित 'बुर्ध' का फलादेश

मीन लग्नः अष्टमभावः अध

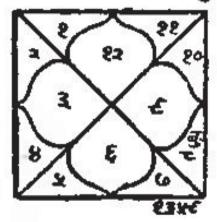


सातवें भाव में मित्र 'शुक' को राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातस्व शक्ति में वृद्धि होती है। दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है। स्त्री के सुख में अधिक तथा माता के सुख में सामान्य कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्यतः सुखी जीवन विताता है।

'मीन' सन्त की कुण्डली में 'नवममाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्नः नवमभावः बुध

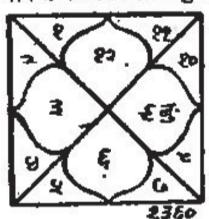


नवें भाव में मिद्र 'मगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। माता, भूमि, भवन, स्त्री तथा व्यवसाय का भी श्रेष्ठ सुख मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, पराक्रमीं तथा यशस्त्री होता है।

'बीम' सन्त की कुण्डली में 'बरामभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : दशमभान : शुध



दसवें भाव में मिद्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के अभाव से खातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के केंद्र में सहयोग, प्रतिब्ठा तथा लाभ की प्राप्ति होती है। स्त्री-पक्ष से भी सुख मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्य भाव को देखने से माता, भूमि, भवत तथा घरेलू सुख को भी यथेष्ट प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

'बोन' सन्न की कुष्वली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुख' का फलावेश

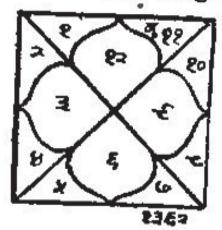
मीनलग्नं : एकादशमाव : श्रुष्ठ

 ग्यारहवें भाव में मिल 'सनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रमाव से जातक की खामदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। माता, भूमि, भवन, स्ली तथा व्यवसाय के क्षेत्र में की सफलताएँ मिनती हैं।

सातवी भित-दृष्टि से पंत्रम भाव की देखने से विद्या-युद्धि एवं सन्तान-पक्ष की विशेष उन्नित होती है। ऐसा व्यक्ति युद्धिमान्, मधुर-भाषी, सनी, सुखी तथा गशस्वी होता है।

'बीन' सम्म की कुण्डली के 'द्वावशमाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीनलम्न : द्वादशभाव:अ्ध



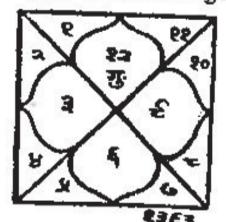
बारहवें माव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्न अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से साम होता है। माता, भूमि, भवन, घरेलू सुख, स्त्री तथा दैनिक व्यवसाव के क्षेत्र में परे-शानियों का सामना करना पड़ता है।

सातवीं भित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शानु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति धैयंवान् तथा हिम्मत बाला होता है।

'मीन' लग्न में 'गुरु'

'भीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमचाव' स्थित 'गुरु' का फलाडेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : गुरु

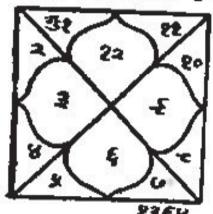


पहले भाव में स्वराशि स्थित 'गुरु' के प्रभाव से आतक के शारीरिक सीन्दर्य सथा प्रभाव में वृद्धि होती है। उसे पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सफलताएँ मिलती हैं। वह बड़ा धनी सथा व्यवसायी होता है। पाँचवीं उच्च दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-शुद्धि तथा सन्तान का यथेष्ट साम होता है।

साववीं मिल-दृष्टि से सम्तम मान की देखने से स्त्री सुन्दर मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय की वृद्धि होती है। नदीं मिल-दृष्टि से न्यम भाग की देखने से भाग्य तथा इसे की विशेष उन्नति होता है।

'मोन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाष' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलम्न : द्वितीयभाव : गुरु



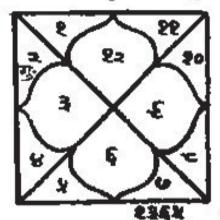
दूसरे भाव में मिल 'मगस' की राशि पर स्थित 'गुर' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौट्रम्बिक सुख की पर्योप्त वृद्धि होती है, परन्तु सारीरिक स्वास्थ्य में कुछ कभी आती है। पाँचनीं मिल-वृष्टि से षष्ठ भाव की देखने से धन की शक्ति से शतु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़े के मामलों में धैर्य से काम सेकर सफलता पाता है।

सातवीं शत्नु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातस्व को शक्ति में वृद्धि होती है। नवीं

दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में यथेष्ट सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा यशस्त्री होता है।

'मीन' लान की कुण्डली के 'तृतीयमाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीनतग्न ःतृतीयभावः गुरु



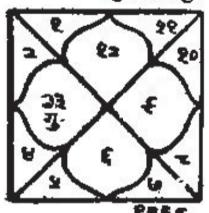
तीसरे भाव में भन्नु 'शुक्र' को शिश पर स्थित
'गुरु' के प्रभाव से जातक की भाई-बहिनों का मुख कुछ
मतभेद के साथ प्राप्त होता है तथा पराक्रम में बृद्धि
होती है। पिता से भी सामान्य मतभेद रहता है, परन्तु
राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नित होती है। पौचवीं
मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख
मिनता है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता मिनती है।

सातवीं मिल्र-दृष्टिसे नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म को उन्नति होतो है। नवीं नीच-दृष्टि से शतु

राशि में एकादश भाव की देखने से आमदनी के मार्ग में दकावटें आती हैं।

'मीन' सार, की कुण्डसी के 'बतुर्वमाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्नः चतुर्थभावः गुह



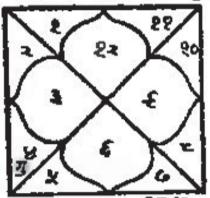
बीये भाव में मिद्र 'बुध' को राशि पर स्थित 'युर' के प्रमान से जातक को माता, मूमि एवं भवन का श्रेष्ठ मुख मिलता है। सारीरिक सौन्दर्य, प्रमान, यश तथा घरेलू मुख को बुढि होती है। पाँचवीं शत्नु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातस्त्र को बुढि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती है। नदीं शज़ु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च के

कारण परेशानी रहती है सथा बाहरी स्थानों से सी असन्तोषजनक सम्बन्ध रहते हैं।

'मोम' लग्न को कुण्डसी के 'वंचमनाव' स्थित 'गुर' का फलादेश

मोनलग्न : पंचमभाव : गुह



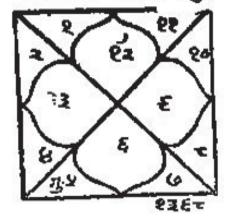
पौचवें भाव में मिस 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित उच्च के 'गुर' के प्रभाव से यातक की सन्तान, विद्या-बुद्धि तथा वाणी का श्रेष्ठ लाम होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष में भी सफलताएँ मिलती हैं। पौचवीं मिस-दृष्टि से नवम भाव की देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवी नीय-दृष्टि से एकादण भाव की देखने से अध्यदनी के भाग में कठिनाइयां आती है। नवीं दृष्टि

से स्वराणि में प्रथमभाव को देखने से जारीरिक सौन्दर्ध, प्रभाव, स्वाभिमान, प्रतिष्ठा तथा स्वास्थ्य को दृद्धि होती है।

'मीन' सन्त की कुण्डलों के 'बच्छमाव' स्थित 'गुरु' का फलावेश

मीनलग्न : यष्ठभाव : गुरु



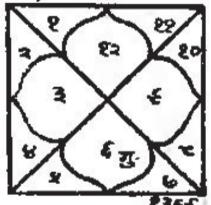
छठे भाव में मिल 'सूर्य' की राशि पर स्थित'
'गुरु' के प्रभाव से जातक शलु-पक्ष पर प्रभावशाली
रहता है, परन्तु शारीरिक मौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी
आती है। पौचवीं दृष्टि से स्वराणि में नवम भाव की
देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफल-ताएँ मिलती हैं। वह अपने शारीरिक परिश्रम के वल पर जन्नति करता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से द्वादश भाव से देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से असंतोष

होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख को वृद्धि होती है।

'मीन' सम्न की कुण्डली के 'सप्तमकाव' स्थित 'गुद' का फलादेश

मीनलग्न : सप्तनभाव : गुरु

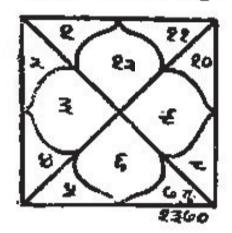


सातवें भाव में मित्र 'बुध' को राशि पर स्थित 'गुर' के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सुख सफलता को प्राप्ति होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्रों की उन्नित होती है। पौचवीं नीख-तथा भन्न-दृष्टि से एकादश भावको देखने से खामदनी कम रहती के।

हेंड्रेट सातवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव की देखने से कारीरिक सौन्दर्थ, स्वास्थ्य, यक्ष, प्रतिष्ठा तथा प्रभाव की वृद्धि होती है। नवीं शब्द-दृष्टि से तृतीय भाव की देखने से पराक्रम में अत्यक्षिक वृद्धि होती है तथा कुछ वसन्तोष के साथ भाई-वहिनों का सुख मिलता है।

'भोन' लग्न को कुष्यली के 'अष्टममाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : अष्टमभाव : गुरु

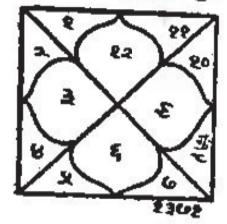


आठवें भाव में शत्नु 'शुक्त' की राशि पर स्थित 'शुव' के प्रभाव से जातक की अख़ु तथा पुरातत्त्व-शक्ति में वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिलाइयाँ आती हैं। शारीरिक मौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में भी कमी रहती है। पौचवीं शत्नु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है।

सातवीं मिस-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुद्म्व की वृद्धि होती है। नदीं मिन्न-दृष्टि से चतुर्यभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है।

'भीन' लम्म को कुण्डलो में 'मवमकाव' स्थित 'शुद्ध' का फलादेश

मीतलग्न : नवमभाव : गुरु



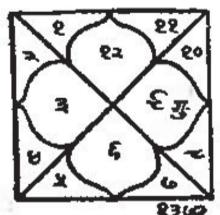
नवें भाव में मिल 'मगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। राज्य, पिता एवं क्यवसाय-पक्ष से भी लाभ होता है। पौचनीं दृष्टि से स्थराणि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, यश तथा स्वाभिमान की वृद्धि होती है।

सातवीं शज़ु-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से पराक्रम की बुद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। नवीं उच्च तथा मिल्न-दृष्टि से पंचम भाव

की देखने से दिया, बृद्धि तथा सन्तान-पक्ष से यथेष्ट सुख का साथ होता है। ऐसा व्यक्ति बाणी का धनी तथा कलात्मक रुचि दाला होता है।

'भीन' लग्न की कुष्डली में 'शरामभाव' स्थित 'गुरु' का फुलादेश

मीनलग्नः दशमभावः गुरु



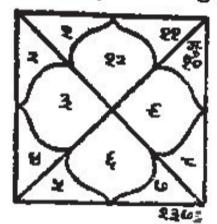
दसमें भाव में स्वराणि-स्थित गुरु के प्रधाव से जातक को पितां, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में ययेष्ट सफलताओं तथा साम को प्राप्ति होती है। पाँचनीं मित्र दृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से छन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से चतुर्य भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। नवीं मिल-दृष्टि से पष्ठभाव को देखने से शक्तु-पक्ष पर अत्यधिक

प्रभाव रहता है सथा झगड़ों में विजय मिलती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी पराक्रमी क्रूप्रकी करने क्राप्त विश्वा यशस्वी होता है।

'भीन' माम की कुण्डली में 'एकांदशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : एकादशमाव : गुरु

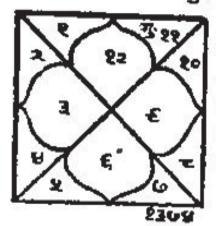


ग्यारहर्षे भाव में शतु 'शिनि' की राशि पर स्थित 'शुर' के प्रभाव से जातक की आमदनी में वहुत कमी आती हैं। पिता, राज्य सथा व्यवसाय के सेन में भी हानि होती हैं। भाग्योन्नित में एकावटें आती हैं। पौचनीं शतु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की अल्प वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से पंचम भाव की देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के सुख में उन्तित होती है।

नवीं मिल-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री सुन्दर मिलती है तथा उससे सुख-सहयोग मिलता है। दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। 'भीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुरु' का फलादेश

मीनलग्नः द्वादशभावः गुरु



बारह्वें भाव में शतु 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता हूं तथा बाहरी सम्बन्धों से भी असन्तोप होता हूं। शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य. पिता, राज्य तथा व्यवसाय के सुख तथा लाभ में भी कमी रहती हूं। पौचवीं मिल्न-दृष्टि से चतुर्थ भाय को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता हूं।

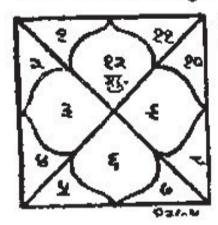
सातवीं मिल-दृष्टि से पष्ठ भाव को देखने से शलु पक्ष में सफलता मिलती हैं। नवीं शल्ल-दृष्टि से अष्टम-

भाव को देखने से आयु सथा पुरातत्त्वका लाभ होता है परन्तु दैनिक खीवन प्रभावपूर्ण बना रहता है।

'मीन' लग्न में 'शुक्र'

'भीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न: प्रथमभाव: शुक

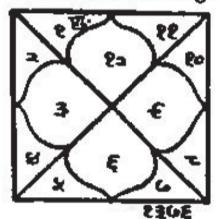


पहले भाव में सामान्य मिन्न 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'शुरु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सीन्दर्य, स्वास्थ्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। आयु भी लम्बी होती है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। दैनिक जीवन आनन्दमय बना रहता है।

सातवीं मित्र सथा भीच-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री के सुख में कमी आती है, गृहस्य जीवन असन्तोषपूर्ण रहता है सथा दैनिक व्यवसाय के होत में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

'भोन' लम्म की कुण्डली के 'ब्रितीयमाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मीनलग्न : दितीयमाव : शुक

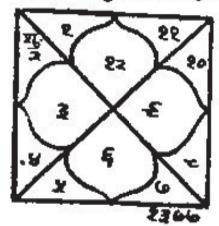


दूसरे भाव में सामान्य मिल 'मंगल' कर राशि पर स्थित 'सुक' के प्रभाव से जातक पुरुषायें द्वारा छन-वृद्धि काप्रयत्न करता है, परतु पूर्ण सफलता नंहीं मिलती। कुटुम्ब के सुख में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अप्टम भाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व-शक्ति का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी समझदारी से रईसी ढंग का जीवन विहाता है।

'भीन' सम्म की कुष्पत्ती के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

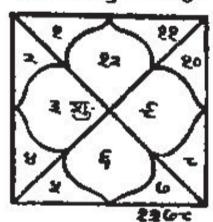


तीसरे भाव में स्वराशि में स्वित 'शुक' के प्रभाव से जातक को भाई-वहिनों की शक्ति तो मिलती है, परन्तु उनसे कुछ परेणानी भी रहती है। पराक्रम की वृद्धि होती है। जातक को आयु सथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

सातवीं शतु-वृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्य तथा धर्म की जन्नति में कुछ इकावटें आती हैं, परन्तु वह अपने परिश्रम के वल पर पर्याप्त सुखी तथा समृद्ध जीवन विसात! है ।

'भीत' लाम की कुरवली में 'बतुर्यशाव' स्थित 'शुक' का फलावेश

मीनलग्न: चतुर्धभाव: शुक्र

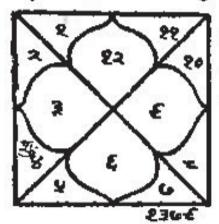


चौथे भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित
'शुक' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन
का क्षुख कुछ कभी के साथ प्राप्त होता है, परन्तु आयु
एवं पुरातस्य की वृद्धि होती है। पराक्रम बढ़ता है तथा
आई-बहिनों का सुख भी मिलता है।

सातवीं सामान्य मिस-दृष्टि से नवम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, सह-योग सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है, परन्तु लाम में कुछ कमी रहती है।

'भीन' लम्म की कुचाली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मीनलप्तः पंचमभावः शुक

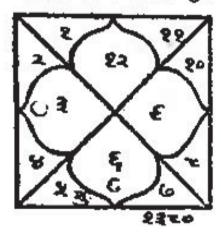


पौचवें भाव में मलु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्त' के प्रभाव से जातक को विद्या-शुद्धि सथा सन्तान-पक्ष का यथेष्ट सुख मिलता है। आई-बहिनों की शक्ति भी मिलती है। आयु तथा पराक्रम की बृद्धि होती है।

सातवीं मिन्न-दृष्टि से एकादश भाव की देखने से आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती रहती है। वह धन के प्रभ पर अपना प्रत्येक कार्य पूरा करता रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'बच्चभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मीनलग्न: षष्ठभाव: शुक

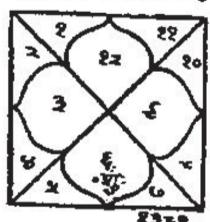


छठे भाव में शत्रु 'सूर्य' की राणि पर स्थित 'शुक' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से कठिनाइयां मिलती है, परन्तु अपनी चतुराई द्वारा वह उन पर विजय पालेता है। भाई-बहिनों से कष्ट होता है सथा पराकम, पुरातत्त्व एवं आयु में कमी आती है।

मातवीं मिल-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से ज्यवं अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से जक्ति प्राप्त होती रहती है।

'मौन' लप्न की कुष्पती के 'सप्तममाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

सीनलग्न: सप्तमभाव: शुक्र

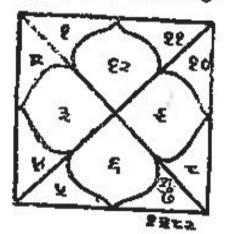


सातवें भाव में मिल 'बुध' की राणि पर स्थित नीप के 'बुक' के प्रधाव से स्त्री तथा व्यवसाय के सेल में परेणानियां आती हैं तथा भाई-बहिनों का सुख एवं पराक्रम भी कमजोर रहता है। आयु एवं प्रशंतत्त्व में भी कमी आती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से प्रथम भाव की देखने से भारीरिक सीन्दर्य, स्वास्थ्य, शक्ति, स्वाभिमान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

'मीन' लान की कृष्यती के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न: अष्टमभाव: शुक्र

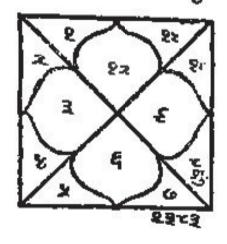


आठवें भाव में स्वराशि-स्थित 'खुक' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी आती है। ऐसा व्यक्ति लागरवाह किस्म का होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से द्वितीय भावको देखने से छन की वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब से परेशानी रहती हैं।

'मीन' लम्म की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सीनलग्नः नवमभावः शुक्र

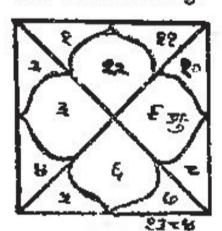


नवें भाव में सामान्य मित्र 'मगल' की राणि पर स्थित अष्टमेश 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के भाग्य सवा धर्म की वृद्धि में क्कायटें आती हैं, परन्तु, जीवन आनन्दमय बना रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ साथ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराणि में तृतीय भाव को देखने से आई-बहिनों का सुख कुछ कमी के लाम मिलता है, परन्तु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है।

'भीन' लम्म को कुष्पती के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न: दशमभाव: शुक

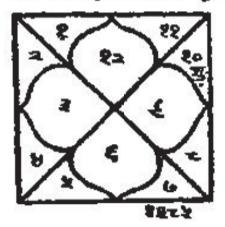


दसर्वे भाव में सामान्य मिल 'गुरे' की राणि पर स्थित अष्टमेश 'शुक' के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कुछ कमी रहती है तथा राज्य एवं व्यवसाय पक्ष में भी सृटिपूणें सफलता मिलती है। आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

सातवीं मिस्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ भाष्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी चतुराई के बल पर उन्नति करता है।

'ओत' लाम की कुन्द्रली के 'एकादशभाव' स्थित 'सुक' का कलादेश

मीनलग्न : एकादशमान : शुक

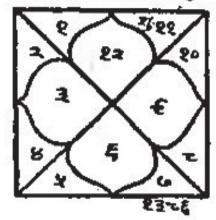


ग्यारहवें भाव में मिल 'शिन' की राशि पर स्थित 'शुक' के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ अपनी आमदनी में अत्यधिक वृद्धि करता है। आयु, पुरातत्त्व शक्ति सथा पराक्रम की भी विशेष वृद्धि होती है। भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है। स्वार्थ-साधन में चतुर होता है।

सातवीं शसु-दृष्टि से पंचय भाव की देखने से विद्या-बुद्धि का तो साथ होता है, पर्न्तु सन्तान पक्ष में प्रयत्नों से ही सफलता मिलती है।

'मीन' सन्त्र की कुष्यली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मीनलग्न : द्वादशभाव : शुक



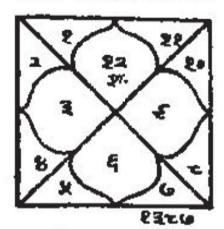
बारहवें भाव में मिल 'शिन' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहताहै तथा बाहरी सम्बन्धों से उसे लाभ होता है। आयु तथा पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराकम में भी कमी आती है।

सातवीं शसु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से चतुराई के बल पर शसु-पक्ष में सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति झगड़ों से बचे रहने का अयल करता है।

'मीन' लग्न में 'शनि'

'भौत' लग्न की कुष्पत्नी के 'प्रयमसाव' स्थित 'शर्मि' का फलादेश

मीनलग्न: प्रथमभाव: शनि



पहले भाव में शतु 'गुढ' की राशि पर स्थित व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कभी आती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। तीसरी मिन्न-दृष्टि से तृतीय भाव की देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में न्यूनाधिकता बनी रहती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से सप्तम भाव की देखने

से स्ती-पक्ष से सुख-दुः तथा व्यवसाय में हानि-लाभ की प्राप्ति होती रहती है। दसवीं शबु-दृष्टि से नवम भाव की देखने के कारण पिता से वीमनस्य रहता है, राज्य से परेशानी होती है सथा व्यवसाय में संघर्षों का सामना करना पडता है।

'मीन' सान की कुष्यली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'शमि' का फलावेश

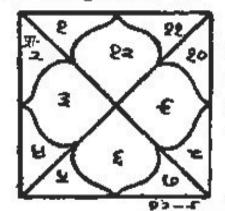
मीनलग्न : द्वितीयभाव : शनि

 दूसरे भाव में शसु 'मंगल' की राशियर स्थित नीप के प्रभाव से जातक को धन-संध्य में कठिनाई आती है तथा हानि भी होती है। कुटुम्ब का अल्प सुख मिलता है। बाहरी सम्बन्ध हानिकारक सिद्ध होते हैं। तीसरी मिल-दृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से भाता, भूमि एवं धवन के सुख में न्यूनाधिकता बनी रहती है।

श्वास्य सातवीं उच्च तथा मिन्न-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की यथेष्ट शक्ति भाष्त होती है। दसवीं दृष्टि से स्वराणि में एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब रहती है, परन्तु धन का संचय पहीं हो पाता।

'मीन' लम्म की कुच्छली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शमि' का फलावेश

मीनलग्न: तृतीयभाव: शनि



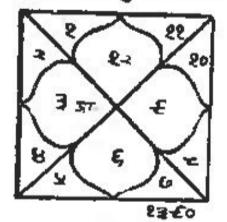
तीसरे भाव में मिल 'शुक्त' की राक्ति पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से भाई-बहिनों द्वारा सुख:-दुः ख वोनों ही प्राप्त होते हैं तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। तीसरी सन्दु-दृष्टि से पंचम भाव की देखने से सन्तान-पक्ष से कठिनाई रहती है तथा विद्या-बुद्धि की कमी रहती है।

सातवीं शतु-दृष्टि से नवम भाव की देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में कुछ कमी रहती है।

दसवीं दृष्टि से स्वराणि में द्वांदक भाव की देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से साथ भी होता है।

'मोन' लम्म की कुण्डली के 'बतुर्वेमाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्नः चतुर्यभावः शनि



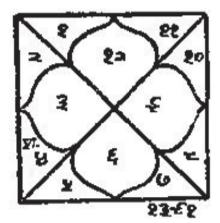
वीथे भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'सिन' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का मुख कुछ कभी के साथ मिलता है। तीसरी शतु-दृष्टि से षष्ठ भाव की देखने से शतु-पक्ष से प्रे-शानी रहती है तथा झगड़े के मामलों में लाभ-हानि दोनों हो होते हैं।

सातवीं शसु-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के झेलमें कुछकठिनाइयाँ आती रहती हैं। दसवीं शसु-दृष्टि से अथम भाव की

देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुष्यलों के 'पंत्रमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न: पंचमभाव: शनि



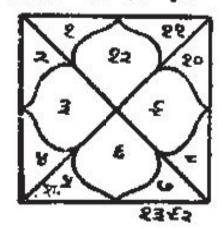
पौचवें भाव में शसू 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को सन्तानपक्ष सिष्टानि-लाभ दोनों की प्रप्ति होती है सभा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के भाव उन्मति होती है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। तीसरी मिल-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्वी-पक्ष से सुख-दुःख तथा व्यवसाय-पक्ष से हानि-लाभ दोनों होते हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादश आव को देखने से बाहरी सम्बन्धों से थामदनी में वृद्धि होती

रहती है। दसवीं नीच-दृष्टि से सृतीय भाव को देखने से धन-संचय की शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब से कलेश मिलता है।

'मीम' लग्न की कुण्डली के 'बच्ठभाव' स्थित 'शर्नि' का फलादेश

मीननग्न: पष्ठभाव: श्रुनि

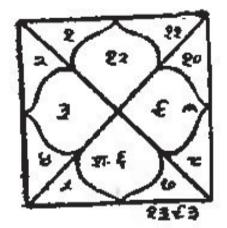


छठे भाव में मत्नु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक मनु-पक्त पर अधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े के मामलों में खर्च करके लाभ उठाता है। दीमारी में भी काफी खर्च होता है।

तीसरी उच्च-दृष्टि से मित्र राशि में अष्टम भाव को देखने से आयु तथा प्रुरातत्त्व की बृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है सथा बाहरी

सम्बन्धों से लाभ होता है। दसवीं मिल दृष्टि से वृतीय भाव को देखने से पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती हैं, परन्तु माई-बहिन के सुख में कुछ कभी रहती है। भीन लग की कुमाली के 'सप्तममाव' स्थित 'शनि' का फलावेश

मीनलग्न: सप्तमभाव: शनि



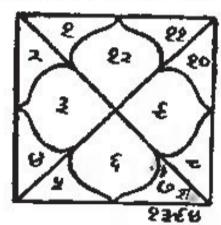
सातवें भाव में मिल 'बुध' को राशि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय में सुख-दु:ख तथा हानि-लाभ दोनों प्राप्त होसे हैं। खर्च की परेशानी रहती है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। तीसरी शत्नु-दृष्टि से नयमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म को उन्नति में उतार-चढ़ाव आते हैं।

सातवीं शजु-वृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में कुछ कमजोरी रहती है। दसवीं मिल-

दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता के सुख में हानि-साम दोनों के योग रहते हैं तथा भूमि-भवन के सुख में कमी आती है।

'मीन' लम्म की कुष्पती के 'अव्दमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : अष्टमभाव : शनि



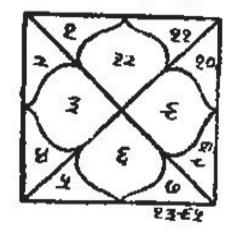
आठवें भाव में मिल 'शुक की राणि पर स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व में वृद्धि होती हैं सथा बाहरी स्थानों से विशेष लाभ होता है। तीसरी शलू-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से असन्तीष तथा राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से सामान्य लाभ होता है।

सातवीं नीप-दृष्टि से शतु-राशि में दितीय भाव को देखने से धनका संचय नहीं हो पाता सथा कुटुम्ब से परेशामी रहती है। दसवीं शतु-दृष्टि से

रंचम नाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है और मस्तिष्क में चिन्ताओं का निवास रहता है।

'भोन' लग्न की कुचाली के 'नवमभाव' स्थित 'शर्नि' का फलादेश

मीनलग्न: नवमभाव: शनि

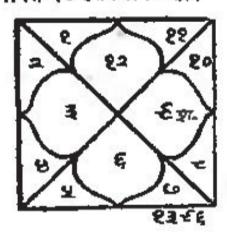


नवेंभाव में शसु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'भानि' के प्रभाव से जातक के भाग्य उन्तरि की कुछ कठिनाइयों के साथ बाहरी सम्बन्धों के कारण होती है। धर्म-पालन में भी कमी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव की देखने से आगदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है।

सातंबीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी खाती है। दसवीं शत्नु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़े-टंटों से लाभ भी होता है।

'भीन' साम की कुचाली के 'बरामधाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न: दशमभाव: शनि



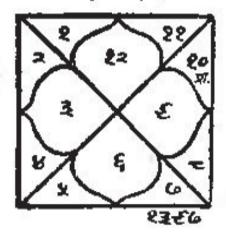
दसवें भाव में शबू 'गुर' की राशि पर स्थित 'सिन' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु आमदनी अच्छी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वरासि में द्वादश भाव को देखने से खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों 'के सम्बन्ध से लाम होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थं भाव को देखने से कुछ कमी के साथ माता, भूमि एवं भवन का

सुख प्राप्त होता है। दसवीं मिल्न-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में हानि-लाभ वोनों पहले हैं।

'भीन' लग्न की कुचाली के 'एकादशमाव' रियत 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : एकादश्माद : मनि

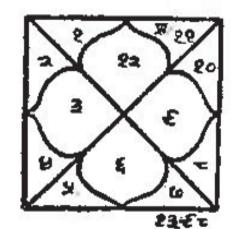


ग्यारहवें भाष में स्वराशि में स्थित 'शिन' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है सथा बाहरी स्थानों से पर्याप्त लाभ होता है। खर्च भी खूब रहता है। तीसरी शक्षु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दये में कुछ कमी आती है तथा धन की प्राप्ति के लिए बहुत दौड़-धूप करनी पड़ती है।

सातवीं शतु-दृष्टि से पंत्रम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कुछ कमी आती है।

स्तवीं शतु-दृष्टि से अष्टम भाष की देखने से आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातस्य का भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी तथा रूखी बोली बोलने वाला होता है। 'भीन' सन्त की कुष्डली के 'द्वादशभाष' स्थित 'सनि' का फलादेश

मीनलग्न: हादशभाव: र्शान



बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से साथ होता है। तीसरी नीच-दृष्टि से द्वितीय भाव की देखने से धन तथा कुटुम्ब की और से चिन्ता रहती है।

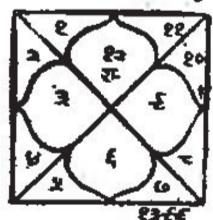
सातवीं शतु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखनेसे शतु-पक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है। दसवीं शतु-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ खाती हैं तथा

यश एवं धर्म की थोड़ी ही उन्नति हो पाती है।

'मीन' लग्न में 'राहु'

'जीन' सम्म को कुष्डली के 'प्रयमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

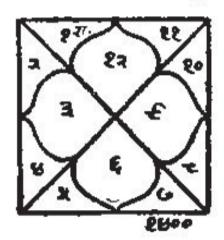
भीनसम्ब : प्रथमभाव : चहु



पहले भावों शबु 'मुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जरतक के शारीरिक सीन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी जाती है, परन्तु वह मुक्ति-बल से जपने प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि करता है तथा सभी कठिनाइयों पर विजय भी पा लेता है। वह जपने परिश्रम से सरक्की भ्राप्त करता है।

'मीन' लम्न की कुन्धली के 'द्वितीयमाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

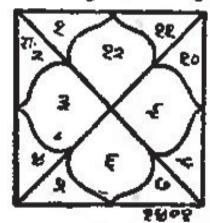
भीनलग्न : द्वितीयभाव: राहु



दूसरे भाव में अतु 'अंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की धन तथा कृदुम्ब का सुख प्राप्त नहीं होता। वह गुप्त युक्तियों के बल पर अपनी उन्नित के लिए प्रयस्न-शील रहता है तथा थे.ड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है, परन्तु कभी-कभी आर्थिक कष्ट उसे बहुत परेशान भी करते हैं।

'भीन लग्द की कुष्डली के 'तृतीयमाव' स्थित 'राहु' का फलादेत

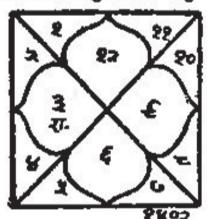
मीनलग्न: तृतीयभाव: राहु



तीसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के मुखं में कमी तथा कष्ट का अनुभव होता है। यह बुद्धि एवं पुरुषार्थ द्वारा सफलता-प्राप्ति के प्रयत्न करता है तथा बहादुर और हिम्मती होता है!

'ओन' सम्म की कुछली के 'वसुर्वेत्राव' स्थित 'राहु' का फलादेत

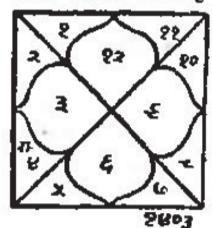
मीनलग्न: चतुर्यमाव: राहु



नौथे भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित उच्च के 'राहु' के प्रभाव से जातक की माता का विशेष सुख मिलता है तथा गुप्त युक्तियों एवं परिश्रम के अन पर भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त हो जाता है। कभी-कभी आकस्मिक रूप में भी सुख के साधन मिलते रहते हैं।

'मीन' सान की कुखलों के 'यंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न: पंचमभाव: राष्ट्र

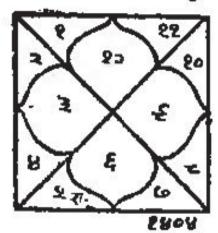


पौचरों भाव में सत् 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाइयां आती हैं तथा सन्तान-पक्ष से भी उसे कष्ट का अनुभव होता है।

ऐसे व्यक्ति की थाणी में रूखापन होता है तथा मस्तिष्क में चिन्ताएँ थिरी रहती हैं। वह स्वार्थ-सिद्धि के लिए उचित-अनुचित एवं सत्यासत्य का विचार भी नहीं रखता।

'ओन' शान की कुष्यती के 'बच्छभाव' स्थित 'राहु' का फलावेत

मीन लग्न : षष्ठभाव : राष्ट्र

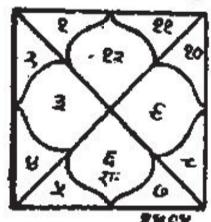


छठे भाव में सबू 'सूर्ये' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक सबू-पक्ष पर भारी प्रभाव रखता है तथा युक्ति-बल से सबुओं की परास्त करता है। फिर भी, सबू-पक्ष उसे बार-बार परेशान करता रहता है।

ननसाल-पक्ष से भी कुछ हानि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, बहादुर, चतुर, धैयैवान् तथा सावधान होता है।

'भीन' सन्त की कुष्पसी के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

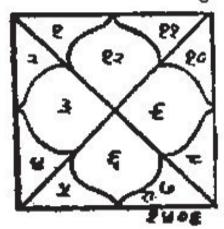
योनसम्बन्धः सप्तमभावः राहु



सातवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से कुछ किट मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता, परन्तु वह अपने युक्ति-बल एवं चातुर्य से उन पर विजय प्राप्त करता रहता है। गृहस्य-जीवन में बार-बार आने वासे संकटों को भी दूर करता रहता है।

'मीन' सान की कुण्डली के 'अष्टमभाष' स्वित 'राहु' का फलावेश

मीन सग्नः अष्टभभाव : राह

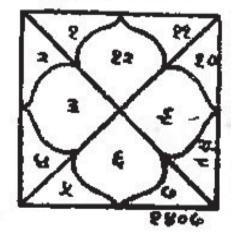


आठवें भाव में मिस 'शुक्त' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के जीवन पर अनेक वार कष्ट आते हैं, परन्तु आयुकी वृद्धि में कभी नहीं आती।

पुरातत्त्व के विषय में भी कठिनाई के योग उपस्थित होते हैं। परन्तु वह अपनी चतुराई से उन सबका निराकरण करके लाभ उठाता है।

'मीन' सन्त की कुण्डलों के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

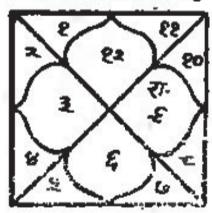
मीन लग्न: नवमभाव: राहु



नवें भाव में सबू 'मंगल' की राशि पर स्थित
'राहु' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की
उन्नित में बाधाएँ आती रहती हैं तथा यश की प्राप्त
भी नहीं होती। परन्तु वह कठिन परिश्रम, गुप्त युक्ति
तथा हिम्मत के साथ भाग्योन्नित के लिए प्रयत्नशील
बना रहता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक लाम भी
होता है और कभी-कभी अस्यधिक कष्ट भी उठाने
पड़ते हैं। सम्बे संघर्ष के बाद ही भाग्योन्नित ही
पाती है।

'बीन' सान की कुण्डलों के 'वशमसाव' स्थित 'राहुं' का फलावेश

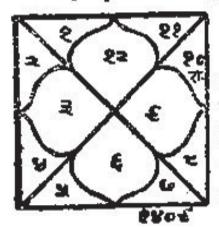
सीन सन्न: दशमभाव: राष्ट्र



दसर्वे भाव में सतु 'गुरु' की राशि पर स्थित मीन के 'राष्ट्र' के प्रभाव से जातक की पिता के पक्ष में महान् कब्द, राज्य से परेशानी तथा व्यवसाय में बार-बार हानि का सामना करना पड़ता है। मान-प्रतिष्ठा में भी कभी रहती है। परन्तु वह अपने गुनित-बल तथा परिश्रम से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहता है और कुछ सफलता भी पर लेता है।

'बीन' सक्त की कुष्यली के 'श्कायराबाब' स्थित 'राहुं' का फलादेत

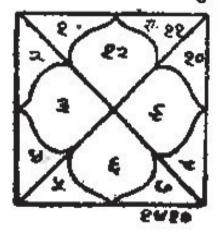
मीन लग्नु: एकादशभाव: राष्ट्र



ग्धारहुवें भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। यह अधिक मुनाफा कमाता है। कई बार धनी-पार्जन के क्षेत्र में कठिनाइयाँ भी आती हैं, परन्तु वह हिम्मत नहीं हारता तथा परिश्रम एवं धैयं के साथ उन पर सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी आकस्मिक लाभ के अवसर भी मिलते हैं।

'मीन' लम्न की कुण्डली के 'ढाइशमाव' स्थित 'राहु' का फलादेत

मीन लग्न : इरदशभाव : राष्ट्र

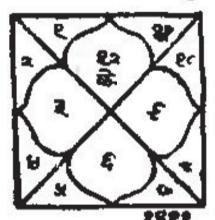


बारहवें भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को अपना खर्च-कलाने में बड़ी कठिनाइयां आती हैं, परन्तु वह अपनी हिम्मत, धर्य, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के द्वारा उन सब पर विजय पाने का प्रयत्न करता है। उसे बाहरी स्थानों के संबंधों से भी कठिनाइयों का अनुभव होता है।

'मीन' लग्न में 'केतु'

'मीन' सन्त की कुण्डली के 'प्रयममाव' स्थित 'केतु' का फलादेत

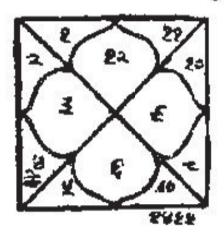
मीन लग्न : अथमधान : केतु'



पहले भाव में भन्नु 'गुरुं की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के मारीर में सांचातिक चोट लग्ती है सवा कभी मृत्यु-तुल्य कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। मारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में भी कभी रहती है किन्तु वह गुप्त मुक्तियों तथा कठिन परि-छम के बस पर अपने व्यक्तित्व का विकास करता है।

'मोन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाख' स्थित 'केंचु' का फलादेश

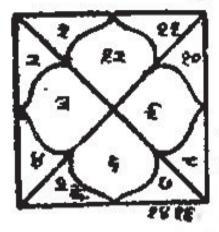
मीन लग्नः पंचमभावः केतु



पांचनें भाव में सत् 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष में बढ़े कृष्ट द्या कमी का सामना करना पड़ता है। मस्तिष्क में चिन्ताएँ घिरी रहती हैं। विद्याध्ययन में भी अनेक कि नाइबां अती हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त मुक्तियों, धैयं तथा परिश्रम के बल पर सब कमियों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

'भीन' लग्न की कुष्डलों के 'षष्ठभाव' स्थित 'केंसु' का फलादेश

मीन लग्न: पष्ठभाव: कें<u>त</u>्

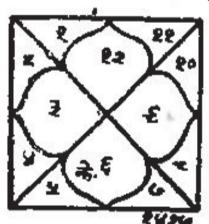


छठे भाव में सबू 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतू' के प्रमाव से जातक सबू-पक्ष पर निरन्तर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़ों के मामलों में सफलता-पाता है।

सतु-पक्ष से परेशानी होने पर भी वह अपने हौसने की बनाए रखता है तथा बहादुरी से काम लेकर उस पर अपना प्रभाव स्थापित करता है।

भी न' सान की कुम्बली के 'सप्तममाव' स्थित 'केंसु' का फलादेश

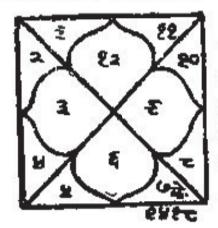
भीन लग्न: सप्तमभाव: केतु



सातवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कूछ अशान्ति एवं कठिनाइयों के लाभ सफलता मिलती है। कभी-कभी स्त्री-पक्ष से भीर कष्ट मिलता है तो कभी सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति साहसपूर्वक अपना उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाष' स्थित 'केतु' का फलादेत

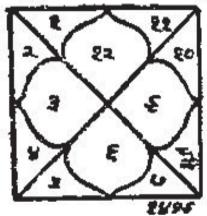
मीन लग्न : अब्टमभाव : केतु



भाठवें भाव में मिन्न 'शुक्त' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आधु पर अनेक बार मृत्यु-तुल्य संकट आते हैं, परन्तु जीवन की रक्षा भी होती रहती है। पुरातत्व भी हानि के थोग भी उप-स्थित होते हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों, चातुर्यं तथा परिश्रम के वल पर लाभ उठा लेता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी तथा धैर्यवान् होता है।

'मीन' लग्न की कुष्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेत

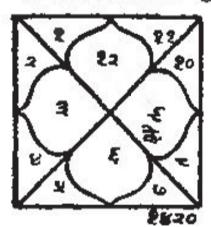
मीनलग्न: नवनभाव:केंतु



नवें भाव पें शत्नु 'संगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जात्क के भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कठिनाइयां आती रहती हैं, परन्तु वह साहस, धैयं, चातुर्य, गुप्त गुक्ति तथा परिश्रम के बल पर उन पर विजय पाता है तथा उन्नति करता है। ऐसा व्यक्ति घोर संकटों के अवसर पर भी विचलित नहीं होता। अन्ततः उसके भाग्य तथा धर्म भी कुछ उन्नति होती है, परन्तु यश में कभी बनी रहती है।

'मीन' सन्त की कुम्हली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

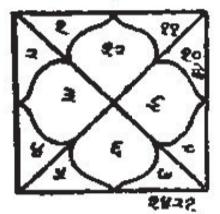
मीन लग्न : दशमभाव : केंतु



दसर्वे भाव में शतु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'केतु' के अभाव से जातक को पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

भीन' सन्त की कुन्डलों के 'एकादसमाव' स्थित 'केंतु' का कलावेश

भीन लग्न : एकादशभाव : केंद्र

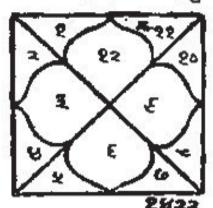


ग्यारहवें भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'केंद्र' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्य-धिक वृद्धि होती है। कभी-कभी कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु वह साहम एवं धैयं के साथ उन पर विजय पा लेता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा बहादुर, धैर्यवान्, हिम्मती तथा स्वार्थी होता है।

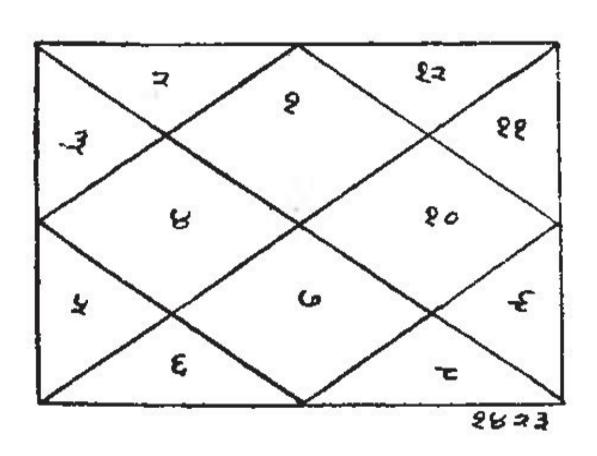
'मोन' सन्त की कुण्डली के 'द्वादशमाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : द्वादशभाव : केंद्र



बारहवें भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को खर्च के कारण कच्टों का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी असन्तोष मिलता है। परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों, धैयं तथा परिश्रम के दल पर कठिनाइयों का साहस के साथ मुकावला करता है। सथा उन पर विजय पाकर उन्नति लाभ करता है।

हस्तलिखित, असली, प्राचीन भृगुसंहिता फलित-प्रकाश



3 तृतीय खण्ड

[ग्रहों की युति, स्त्री-जातक तथा विशिष्ट योग आदि का वर्णन]

ग्रहों की युति

ज़न्मकुण्डली के किसी एक ही भाव में यदि एक से अधिक—दो, तीन, चार, पाँच, छै या सात—यह दैठे हों तो उसे यहों की युति कहा जाता है। विभिन्न भावों में अलग-अलग बैठे हुए यह के सामान्य-फलादेश की अपेक्षा यहों की युति के फलादेश में बहुत अन्तर आ जाता है, अत: यहों की युति के फलादेश की अलग से जानकारी प्राप्त होना अत्यावश्यक है।

प्रस्तुत प्रकरण में सर्वप्रथम 'ग्रहों की युति' के फलादेश का विवरण प्रस्तुत किया आ रहा है। आगे दी गई सभी उदाहरण-कुण्डलियों मेष-लग्न की हैं, जिनमें विभिन्न ग्रहों की युति को प्रदिश्तित किया गया है, साथ ही उनके फलादेश का उल्लेख भी किया गया है। परन्तु विभिन्न व्यक्तियों की कुण्डलियों विभिन्न लग्नों की होती हैं तथा यहों की युति यो विभिन्न भावों में पाई जाती है, अतः इन उदाहरण-कुण्डलियों को केवल आधार के रूप में ही ग्रहण करना चाहिए तथा यहों की युति के सही फलादेश का निर्णय करते समय उनकी उच्च-नीच, मिन्न-शनू एवं स्वराणिगत स्थिति, उन पर पड़ने वाली अन्य यहों की दृष्टि आदि सभी बातों पर विचार करने के बाद ही निष्कर्ष-स्वरूप उचित फलादेश का निर्णय करना चाहिए।

यहों की युति के फलादेश में राहु-केंतु की स्थान न देकर, केंदल मुख्य सात ग्रहों की युति का ही उल्लेख किया गया है। राहु-केंतु मिल भाव में जिल-ग्रह के ग्रा में बैठे होते हैं, उनके प्रभाव को बढ़ाते हैं भीर शत्नु-ग्रह के रूप में- बैठे होते हैं तो उनके प्रभाव को घटाते हैं—यह सामान्य सिद्धान्त है। राहु-केंतु स्वयं सभी एक साथ यहों बैठते—ये छाया-प्रह होने के कारण सदैव एक-दूसरे से सासवें स्थान पर ही रहते हैं।

विशेष-ज्ञातव्य

ग्रहो की ग्रुति के फलादेश के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों की भी विशेष रूप से क्यान में रखना चाहिए—

- (.१) यदि जन्म के समय तीन शुभ यहों की युति ही तो जातक का जीवन सुद्धी रहता है, परन्तु यदि तीन पाप-पहीं की युति ही तो जातक जीवन-भर दु:स्वी तथा भवेत्र निन्दित रहता है।
- (२) <u>पांच अथवा छै ग्रहों की युति के फलस्वरूप जातक प्रायः दरित्र तथा</u> मूर्ख होता है ।
- (३) तीन यहों की युति वाली कुण्डली में यदि चन्द्रमा किसी पाप-ग्रह के साथ हो तो जातक की माता की मृत्यु होने की आशंका रहती है। यदि सूर्य पाप ग्रह

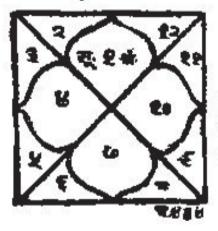
के भाव हो तो पिता की मृत्यु की संभावना रहती है। चन्द्रमा मुभ प्रहों के साथ बैठा ही तो ग्रुभ फल देता है, पाप ग्रह के साथ अगुभ फल देता है। मुभ यह तथा पाप ग्रह—दोनों के साथ बैठा हो तो मिथित फल देता है। यही नियम सूर्य पर भी अग्रु होता है।

(४) जन्मकुण्डली के किसी भाव पर यदि दो-तीन अथवा अधिक ग्रहों की एक साथ दृष्टि पड़ रही ही तो उसका प्रभाव भी उन ग्रहों की युति जैसा ही समझना चाहिए।

अगले पृष्ठों पर विभिन्न ग्रहों की युति वाली उदाहरण-कुण्डलियों को अलग-अलग फनादेश के साथ प्रदिशित किया जा रहा है। इनके आधार पर लग्न, भाव तथा अन्य सब बातों पर गंभीरशापूर्वक विचार करने के उपरान्त ही यथार्थ फलादेश का निर्णय करना चाहिए।

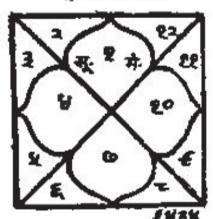
बो ग्रहों की युति का फलादेश

सूर्ये और चन्द्र



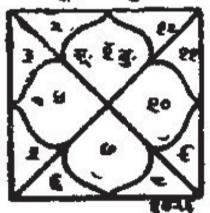
(१) सूर्य और चन्द्रमा की युति हो तो जातक दुष्ट, कपटी, चतुर, अभिमानी, अविनयी, क्षुद्र-हृदय, कार्य-कुशल, पराकमी, विषयासक्त, स्त्री के वणीभूत तथा पत्थरों का व्यवसाय करने वाला होता है।

सूर्य और मंगल



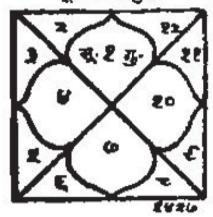
(२) सूर्ये और मंगस की मुित ही तो जातक तेजस्वी, कोशी, मिथ्यादादी, मूर्ख, बलवान्, कलह-प्रिय तथा धर्म-कमें एवं धन से रहित होता है। वह अपने बन्धु-बान्धवों से प्रेम रखता है।

सूर्व और बुध



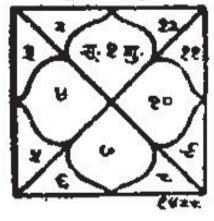
(३) सूर्य और बुध की युति हो तो जातक यशस्वी, प्रियवादी, श्रेष्ठ बुद्धिमान्, विद्वान्, मती, राजा का सेवक, वेदझ, गीत-बाद्य में कुशल, कवि, सेवा-कर्म करने में पटु, स्थिर धनी, यशस्वी तथा राज्य द्वारा सम्मानित होता है।

सूर्व और गुरु



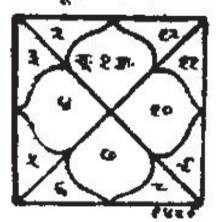
(४) सूर्य और गुरु की युति हो तो जातक शास्त्रक्ष, धर्मात्मा, धनवान्, चतुर. परोपकारी, पौरोहित्य कर्म करने में कुशल, प्रसिद्ध, मितवान्, राज-मान्य तथा लोक-प्रसिद्ध होता है।

सूर्व और मुक



(४) सूर्व और हुक की युति हो तो जातक संगीत. वाद्य एवं सस्त-विद्धा में कुशल, बुद्धिमान, नाट्य-कार, श्रेष्ठ, कार्यक्षम, मिल्लवान्, बलवान्, श्लीण-दृष्टि सया स्त्री द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।

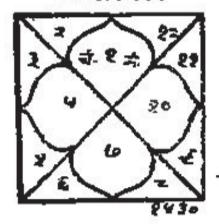
सूर्य और मनि



(६) सूर्य और भनि की युति हो तो जातक विद्वान, गुणवान, शेष्ठ बुद्धि वाला, धर्मात्मा, धातु का काम करने में कुशल तथा वृद्धों के समान आवरण करने वाला होता है।

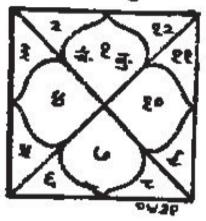
कुछ विद्वानों के यत से ऐसा व्यक्ति स्त्री-पृत के सुख से रहित----शीर कुछ के यत में सुन्त-युक्त---शीता है ।

चन्द और मंगल



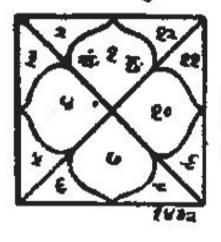
(७) जन्द्रमा और मंगल की युति हो तो जातक युद-कुशल, प्रतापी, व्याचारहीन, कलह-प्रेमी, धातु-शिल्प में कुशल, माता का शबू, रक्त-विकार का रोगी तथा व्यवसाय द्वारा जीविका उपाजन करने वाला होता है।

चन्द्र और बुध



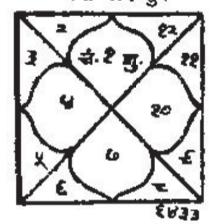
(६) चन्द्रमा और बुध की युति हो तो बातक कि कि सुन्दर, गुणी, प्रियवादी, दमालु, हैंसमुख, अधिक बोलने वाला, विषयासक्त, कुल-धर्म का पालक तथा दुर्वल भरीर वाला होता है।

चन्द्र और गुरु

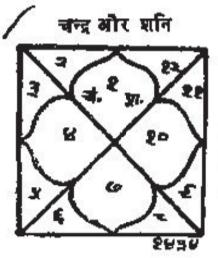


(६) चन्द्रमा और मुख्यी युति हो तो आतक सुशील, विनम्र, धर्मात्मा, परोपकारी, सच्या मिद्र, देव-बाह्मण-मक्स, भाई-वहिनों से स्नेह रखने वाला, धनी तथा गुप्त मन्त्र वाला होता है।

चन्द्र और जुक

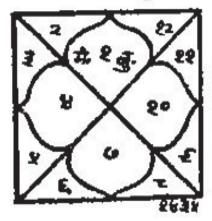


(१०) चन्द्रमा और श्रुक की युति हो तो जातक सगड़ालू, व्यतनी, सुगन्त्र-प्रिय, विकय-कार्य में कुशत, अनेक कार्यी का जाता तथा अस्प वस्त्राभूवणों वाला होता है।



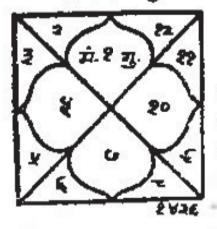
(११) चन्द्रमा और शनि की युति हो तो जातक बाचारहीन, पुरुषायहीन, अस्प सन्ततिवान, प्रस्तीगामी, वृद्धा स्त्री में बासक्त, हाथी-घोड़े रखने वाला, व्यवसायी तथा वेश्या द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।

मंगल और गुरु



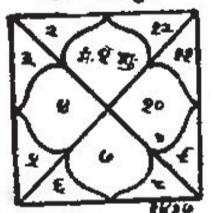
(१२) मंगल और बुझ की युति हो नो जातक कुरूप, कृपण, धन-होन, मल्ल-विद्या में कुशल, सोहे अथवा सोने का व्यवसाय करने वाला, बहुस्त्री-गामी विधवा से विवाह करने वाला तथा अनेक प्रकार की औषधियों का सेवन करने वाला होता है।

मंगल और गुरु



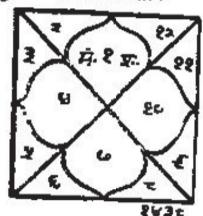
(१३) मंगल और गुरु की युति हो तो मातक मेधावी, शास्त्रज्ञ, शस्त्रज्ञ, मन्त्रज्ञ, वाक्पटु, शिल्प-निपुण, क्षीलवान्, चतुर, धोड़ों का प्रेमी, सेना का अधिकारी, प्रधान अथवा उच्च पट पाने वाला होता है।

मगल और मुक



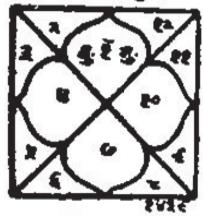
(१४) मगल और शुक्त की युति हो तो जातक गुजी, गजितज्ञ, प्रपंची, मिथ्यावादी, परस्त्रीगामी, अहंकारी, पापी, घठ, सबसे शक्षुता रखने वाला, परन्तु समाज में सम्मान पाने वाला होता है।

भगल और शनि



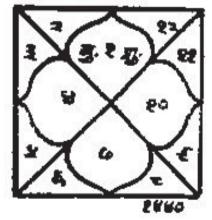
(१५) मंगल और शनि की युति हो तो जातक जादूगर, ऐन्द्रजालिक, कुलह-प्रिय, चोर, मिच्याबादी, संस्त्रज्ञ, शास्त्रज्ञ, मिल्र-होन, सुख-होन, अपयशी, स्वधर्म की स्थाग कर पर-खर्म ग्रहण करने वाला, उचित सात कहने वाला तथा विष अयवा मदिरा का निर्माता एवं विकेता होता है।

बुध और बुह



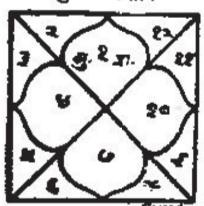
(१६) बुध और गुरु की युति हो तो जातक धैर्यवान्, पण्डित, नीतिज्ञ, विनयी, उदार, गुणी, सुगन्छ-प्रिय तथा नृत्य-बाह्य में कुशल होता है।

बुध और शुक



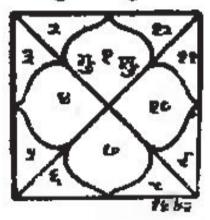
(१७) बुध और मुक्त की युति हो तो जातक वेदक, नीतिक, शास्त्रक, प्रतापी, सुबी, शिल्पक, चतुर, सुन्दर, आनन्दी, धनी तथा अनेक लोगों पर हुकूमत करने वाला होता है।

बुध और शनि



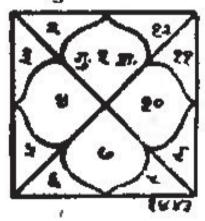
(१८) बुध और शनि की युति हो तो जातक चंचल-चित्त, कलह-प्रिय, उद्योगहीन, उचित बोलने वाला, भ्रमण-शील, संगीत-काल्य आदि में कुत्तस तथा दुवेंश सरीर वाला होता है।

मुरु और मुक



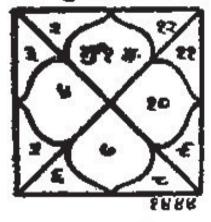
(१६) बुरु और बुक की युति हो तो जासक विद्वान, बुद्धिमान्, गुणवान्, धर्मात्मा, बास्त्रज्ञ, शास्त्रार्थं करने वाला, अत्यन्त सुखी, यशस्त्री, धनी सथा सुन्दरी स्त्री, पुद्ध-मिस आदि के मुख से युक्त होता है।

गुरु और भनि



(२०) गुरु और शनि की युति हो तो जातक सूर-बीर, यशस्त्री, धनी, प्रधान सेनग्रपति, कला-कुशल तथा स्त्री द्वारा इच्छित सुख प्राप्त करने वाला होता है।

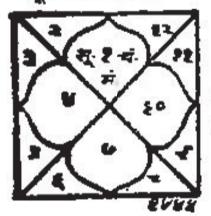
शुक्र ओर शनि



(२१) मुक्त और शनि की युति हो तो जातक खबल-बुद्धि, आनन्दी, लवण तथा अम्सरस का प्रेमी, उन्मस-प्रकृति, शिल्प-अलिखन में प्रवीण तथा दारुण संग्राम करने वाला होता है।

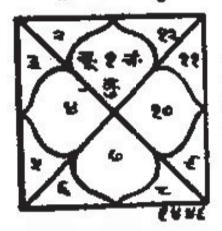
तीन प्रहों की युति का फसावेश

सुर्वे : चन्द्र : मगल



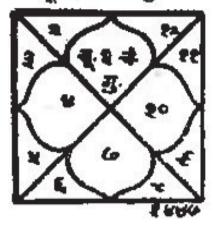
(१) सूर्य, चन्द्र और मंगस की युति हो तो जातक जूरवीर, अवंविद्या में कुभस, रक्त-विकार से भस्त, स्त्री-हीन, दया-हीन तथा यन्त्रादि के निर्माण में कुशस होता है।

सूर्व : चन्द्र : बुध



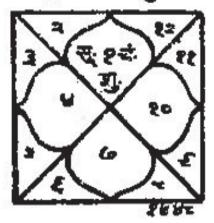
(२) सूर्य, चन्द्र और बुझ की युति हो तो जातक विद्वान्, धनवान्, प्रियवादी, प्रतापी, श्रेष्ठ कवि अववा कवाकार्, वाक्यदू, शास्त्रज्ञ, कलाकार, सभा-प्रिय तथा राजा का सेवक होता है।

सूर्व : चन्द्र : गुरु



(३) सूर्य, चन्द्र और बुह की युति हो तो जातक धर्मातमा; स्थिर-बुद्धि, खंचल, चतुर, धूर्ते, पर्यटन-प्रेमी, बिद्धान्, सेवा-कुशल, देव-बाह्मण का पूजक तथा राजा का मंत्री होता है।

सूर्व : चन्द्र : शुक्र

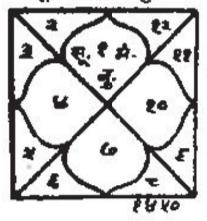


(४) सूर्य, चन्त्र और शुक्र की युति हो तो जातक सुन्दर, परम तेजस्थो, अत्यन्त प्रतापी, भाग्यवान्, व्यसनी, शक्ष-संहर्ता, दौतीं के विकार से युक्त, परधनापहारी तथा धर्म में प्रीति न रखने वाला होता है।

सूर्य : चन्द्र : शनि

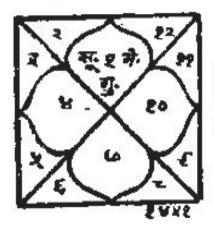


(१) सूर्य, चन्द्र और शनि की युति हो तो जातक अत्यन्त धूर्त, धर्म का पालन करने चाला, शील-रहित, सत्कर्म करने वाला, बेश्या-प्रेमी, बाह्मण तथा देवताओं का यक्त, व्यर्थ परिश्रम करने वाला, हाथी-घोड़ा पालने खाला तथा धातु-कर्म में कुसल होता है। सूर्य : मंगल : बुक्ष



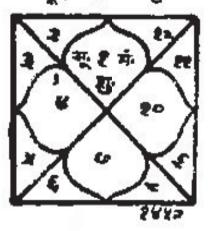
(६) सूर्य, यगन और बुध की युति हो तो जातक साहसी, प्रवस पराक्रमी, निर्लज्ज, कठोर-प्रकृति, सलाह देने में चतुर तथा धन, स्त्री, पुत्र, मिस्र व्यादि से बुध से युक्त होता है।

सूर्व : मंगल : मुरु



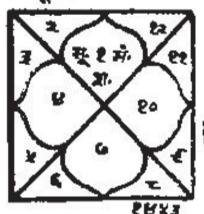
(७) सूर्य, मंगल और गुरु की युति हो तो जातक उदार-हृदय, प्रियवादी, सत्यवादी, उग्र-प्रकृति, सेनापति, नीतिक, श्रेष्ट बक्ता, धनी, राजा का मंत्री तथा सब कार्यों के करने में कुलल होता है।

सूर्य : मंगल : मुक

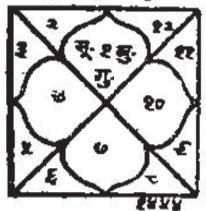


(६) सूर्य, मंगल और शुक्र की युति हो तो कातक सुन्दर, अत्यन्त चतुर, दयानु, गुणी, धनी, विनम्र, बहुत बोलने वाला, सुन्नील अथवा कुन्नील, कार्य-कुशल, नेव-रोगी, विषयासक्त तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होता है।

सूर्य : संबल : शनि

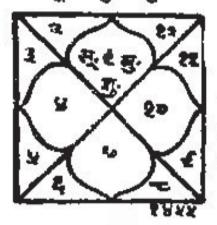


(१) सूर्व, संबल शनि की युति हो तो जातक मूर्ख, निर्धन, स्वजनों से तिरस्कृत, विकल, बन्धु-विहीन, केसह से ज्याकुल, सधन रोमों बाला, रोगी तथा धन एवं पशुबों से रहित होता है। सूर्यः बुधः गुरु



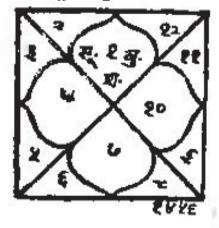
(१०) सूर्य, बुध और गुरुकी युति हो तो जातक शास्त्रज्ञ, शस्त्रज्ञ, लेखक, संग्रही, चतुर, अत्यन्त धनी तथा नेज-रोगी होता है।

सूर्व : गुरु : मुक



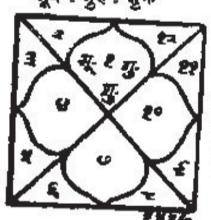
(११) सूर्य, बुध और मुक्त की युति हो तो जातक माता, पिटा तथा युरुजनों से तिरस्कृत, स्त्री के कारण दु:खी, आचार-विहीन, सबसे शतुता रखने वाला, दुर्बुं दिः तथा परदेशवासी होता है।

सूर्व : बुध : शनि

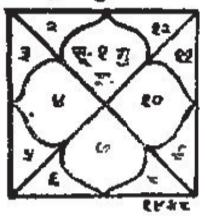


(१२) सूर्य, बुध और शनिकी युति हो तो जातक दुराचारी, परम दुष्ट, नपुंसक-जैसे स्वभाव वाला बन्धु-बान्धवों से परित्यक्त, शङ्गद्वारा पराजित तथा नीच सनुष्यों का संगो होता है।

सूर्ये : गुरु : जुक

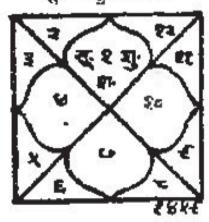


(१३) सूर्य, युरु और शुक्र की युति हो तो आतक पिटत, सूरवीर, परोपकारी, अल्पभाषी, धन-हीन, मेल-रोपी, युष्ट स्वमाव वाला, पराये कामों में अधिक हिस् रखने वाला स्था राजा का आधित होता है। सूर्व : बुह : शनि



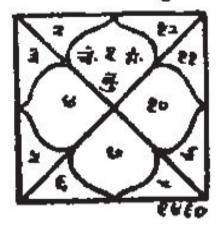
(१४) सूर्य, बुर और कवि की युति हो तो वातक सुन्यर, निर्भय, प्रगल्म, विचारक, बन्धु-हितैषी, बहु मिल-बान्, मितव्ययी तथा राजा का प्रिय- कुछ विद्वानों के मतानुसार, राजा से द्वेष रखनेवाला—शोता है।

भूयं : जुद्ध : शनि



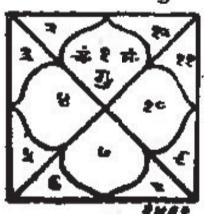
(१४) सूर्य, मुक्त और शनि की युति हो तो जातक दुराश्वारी, बन्धु-रहित, कुष्ठ-रोगी, कला-विहीन, सम्मान-हीन, शबुओं से भयभीत तथा कुकर्मी होता है।

चग्द्र : यंगल : सुध

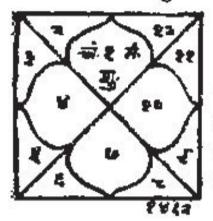


(१६) चन्द्र, मंगल और बुध की युति हो तो जातक पापी, दुराचारी, अपमानित, अत्यन्त दीन, नीचों का साथी, आजीविका-हीन तथा बन्धु-बान्धवों से हीन होता है।

चन्द्र : मंगल : मुरु

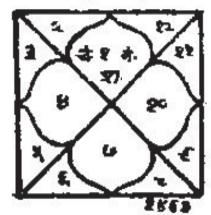


(१७) चन्द्र, मंगल और बुह की युति हो तो जातक मुन्दर, बलवान्, कोधो, स्ती-आसक्त, अपहरणकर्ती, पर-स्त्री-गामी, . स्त्रियों की प्रिय, सर्वेव प्रसन्त रहने वाला तथा फोड़ा-फुंसी आदि के विकारों से ग्रस्त होता है। चन्द्र: मंगल : जुक



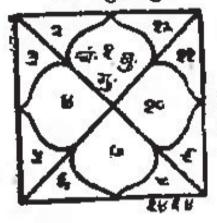
(१८) चन्द्र, भगल और मुक्त की युति हो तो जातक चंचल स्थभाव वाला, निरन्तर भ्रमणशील, कुशील तथा मोत से डरने वाला होता है। उसकी माता तथा पत्नी दुष्ट स्थभाव बाली होती हैं तथा प्रक्र शोलवान होता है।

🗸 चन्द्र, मंगल, शनि



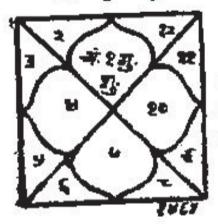
(२६) चन्द्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक कुटिल, सोक-देषी, कलह-प्रिय, खुद स्वभाद दाला तथा मदैन दु:तो रहने दाला होता है। माता का उसकी बास्यावस्था में ही देहावसान हो जाता है।

चन्द्र : बुध : मुख

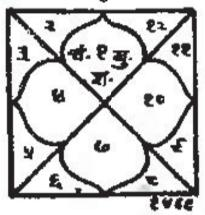


(२०) चन्द्र, बुध और मुरु की युति हो तो जातक कृदिमान्, भाग्यवान्, धनवान्, यशस्वी, तेष्ट्रस्वी, अत्यन्त प्रसिद्ध, कुशल बक्ता, क्षेष्ठ मनोवृत्ति बाला तथा स्त्री, पुत्र-मित्र क्षादि के सुख से युक्त होता है।

चग्द्र : सुध : मुक

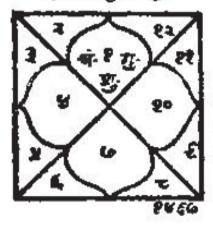


(२१) चन्द्र, बुध और झुक की युति हो तो जातक बड़ा विद्वान्, ईर्घ्यालु, दुराचग्री, धन का लोभी, नीच धर्म द्वारा आख्रीविका उपाजित करने वाला सथा आह के विषय में विश्विक अहालु होता है। चन्द्रः बुधः शनि



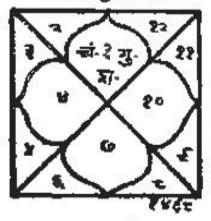
(२२) चन्द्र, बुध और शनि की युति हो तो जातक श्रेष्ठ बुद्धि वाला, कला-कुशल, महाविद्वान्, पण्डित, प्रिय-वादी, विनम्न, विश्व-प्रसिद्ध, सम्बे शरीरवाला, ग्राम का अधिपति तथा राजाओं को प्रिय होता है।

च न्द्रः गुरुः सुक



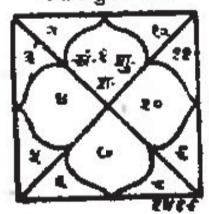
(२३) चन्द्र, गुरु और भुक्त की युति हो तो जातकः विद्वान्, मंत्रज्ञ, चतुर, कला-कुशल, राजाओं को प्रिय तथा सुन्दर शरीर वाला होता है। उसकी माता बत्यन्तः सुनील होती है।

चन्द्रः ग्रुरुः शनि

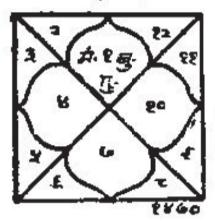


(२४) चन्द्र, गुरु और शनि की युति हो तो जातक अत्यन्त चतुर, व्यवहार-कुशल, स्तियों को प्रिय, शास्त्रज्ञ, राजा द्वारा सम्मानित, उच्च अधिकारी तथा स्वस्य शरीर यासा होता है।

चन्द्र : शुक्र : शनि

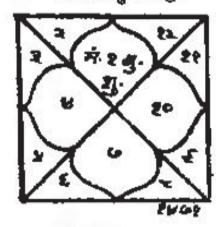


(२५) चन्द्र, मुक और समि की युति हो तो जातक वेदज्ञ, धर्मात्मा, शेष्ठ पुरोहित, चित्रकार, लेखक तथा सुन्दर सरीर वासा होता है.! मंगल : बुध : गुरु



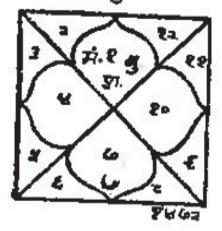
(२६) मंगस, बुध और गुरु को युति हों तो आसक प्रतापी, परोपकारी, संगीतज्ञ, खेळ कवि, स्थियों को प्रिय, परहित-साधक तथा अपने कुल में खेळ होता है।

भगल : बुध : शुक



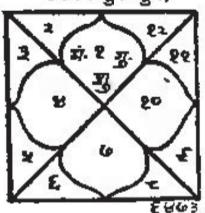
(२७) मंगल, बुध और शुक्र को युति हो तो जातक दुवंस शरीर वाला, बहुत बोलने वाला, होन कुल में उत्पन्न, अंगहोन, अत्यन्त उत्साही, ढीठ, धनी, चचल तथा संतुष्ट स्वमाव का होता है।

मगल : बुध : शनि



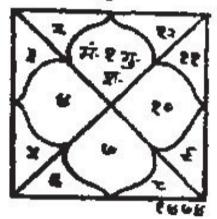
(२६) मगल, बुध और शनि को युति हो तो आहक दुर्बल शरीर वाला, दुरे नेतों वाला, नेत-रोभी, मुख-रोगी, अत्यधिक कष्ट भोगने वाला, डरपोक, सहिष्णु, हास्यप्रिय, वन में रहने को इच्छा रखनेवाला, परदेश में रहने वाला तथा दूत-कर्म करने वाला, होता है।

मंगल : गुरु :शुक्र,



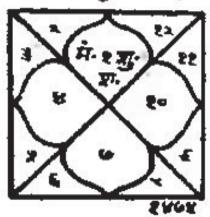
(२६) मंगल, गुर और मुक्त की युक्ति तो जातक सुखी, सब को प्रसन्नता देने दाला, राजा का प्रिय, श्रेष्ठ लोगों द्वारा सम्मानित तथा उसम स्त्री-पुत्रों दाल: होता है।

मंगतः ग्रुरः शनि



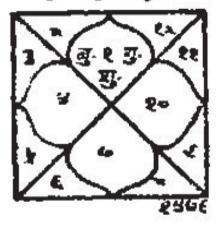
(३०) मंगल, गुरु और मनि की युति हो तो जातक दुराचारी, कृश-शरीर निर्धन, कुकर्मी, मिस्रों द्वारा निन्दित परन्तु राजा का क्रवापाल होता है।

मंगल: मुक: शनि,



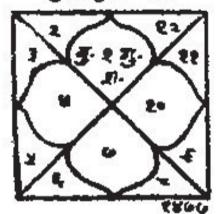
(३१) मंगल, शुक्ष और मनि की युति हो तो जातक अच्छे स्वभाव वाला. परदेश में रहने वाला, सर्दव दुःख भोगने याला तथा स्त्री के सुख से रहित होता है।

बुध: ग्रुरः शुक

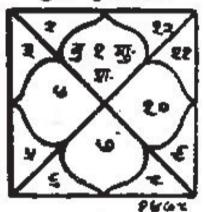


(३२) बुध, गुरु और शुरू की युति हो तो जातक सत्यवादी, परम यशस्वी, सर्वेद प्रसन्त रहने वस्ता, शतु-हत्ता, सुन्वर तथा राजा द्वारा सम्मानित होता है।

बुध:गुरु: मनि

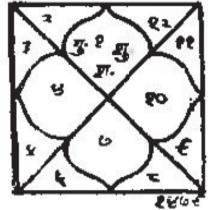


(३३) बुध गुरु और शनिकी युति हो तो जातक अत्यन्त धनी, शीलवान्, भाग्यवान्, धैर्यवान्, पण्डित, सुखी, श्रेष्ठ वस्त्राभूवणी वाला तथा श्रेष्ठ स्त्री का प्रति होता है। बुध: मुक: शनि



(३४) बुध, बुक और शनिको युति हो तो जातक चुनलकोर, पर-स्त्रीगामी, धूर्त, निथ्यावादो, दुरा-चारी, धैगंवान्, स्वदेश-प्रेमी, नीच लोगों के साथ रहने वाला, दूर देशों की याता करने वाला तथा कलाओं का जाता होता है।

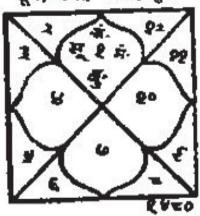
गुरु: **जुक:** शनि



(३१) गुरु, मुक और मनि की युति हो तो जातक नीच कुल में जन्म लेने पर की धनी, यशस्त्री, सुशील कीर्तिवान्, भूस्थामी, राजा-जैसा प्रतापी तथा निर्मल हृदय बाला होता है। वह अत्यन्त यश भी प्राप्त करता है।

चार ग्रहों की युति का फलादेश

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध



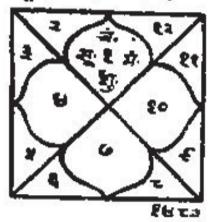
(१) सूर्यं, चन्द्र, मंगल और बुध को युति हो तो जातक मायावी, चुमलकोर बकवादी, लेखक. चित्र-कार, चौर, भाषा पर अधिकार रखनेवाला. सब काम करने में कुशल तथा मुख-रोगी होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु



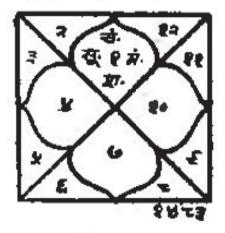
(२) बुधं, चन्द्र, मंगल और गुरु की युति हो तो जातक शिल्पज्ञ, खलवान्, कार्य-कुशल, धनवान्, नीतिज्ञ, तेजस्वी, शोक-रहित, बड़ी अखिं याला तथा स्वर्ण-जैसे कान्तिमान् सरीर वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, भंगल, शुक



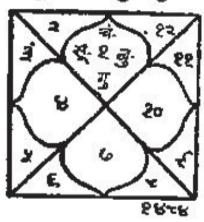
(३) सूर्य, चन्द्र, मंगल और शुक्त को युति हो तो जातक विद्वान्, धनवान् वाक्पटु, शास्त्रज्ञ, नीतिज्ञ, स्त्री-पुत्र के सुख से सम्पन्त तथा वाणी से सम्बन्धित कार्यो (वकालत खादि) से जीविका अजित करने वाला होता है। परन्तु कुल विद्वानों के सतानुसार ऐसा व्यक्ति निर्लज्ज, परस्त्री-शामी, खोटे स्वधाव का, चोर तथा धनहीन होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि



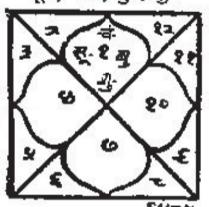
(४) सूर्य, चन्द्र, भंगल और शनि को युति हो तो जातक धनहीन, यूखें, दरिद्र, दुवेंन शरीर दाला, बौना अथवा विषम कद का तथा भिक्षा द्वारा आजीविका उपाजित करने दाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु

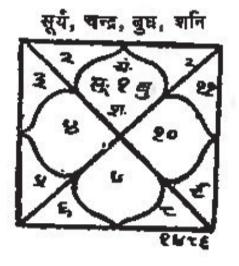


(प्र) सूर्य, चन्द्र, बुध और गुरु को युति हो सो जातक तेजस्वो, नीतिज्ञ, जिल्पज्ञ, शोक-रहित, अत्यन्स धनी, रोग-रहित, गौर-वर्ण तथा सुन्दर नेलों वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, बुघ, शुक

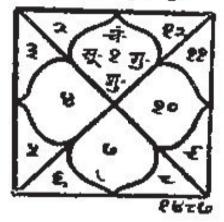


(६) सूर्य, चन्द्र, बुध और शुक्र को युति हो तो जातक सुन्दर, कान्तिमान्, सुवस्ता, राज्य द्वारा सम्मान-प्राप्त, छोटे कद वाला परन्तु मन में व्याकुल रहने वाला होता है।



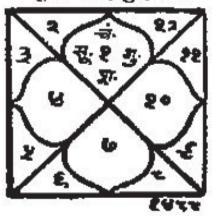
(७) सूर्य, चन्द्र, बुद्द और शनि को युति हो तो जातक निर्धन, दिख, कुटुम्ब-हीन, विकलांग, नेक्र-रोभी, माता-पिता से हीन तथा भिक्षुक होता है।

सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र



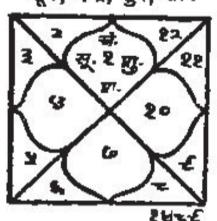
(८) सूर्य, चन्द्र. गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक सुखी, गुणी, राजाओं द्वारा सम्मानित तथा जल, गुरु एवं वन में प्रीति रखने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, गुरु, शनि



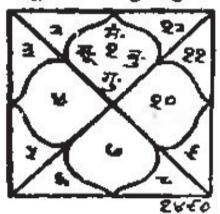
(१) सूर्य, चन्द्र. बुध और धनि को युति हो तो जातक यसस्वी, धनी, प्रतापी, सर्वत्र सम्मानित, सुन्दर नेत्रों वाला, पतले शरीर वाला, स्त्रियों का प्रिय तथा बहुत पुत्रों वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, शुक्र, शनि



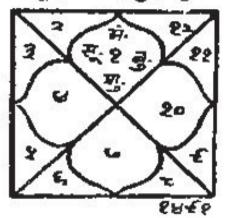
(१०) सूर्य, चन्द्र, शुक्र और मनि की युति हो तो जातक हरपोक, अत्यन्त दुर्वल शरीर वाला. स्त्रियों-जैसा आचरण करने वाला, परन्यु अन्य लोगो का अगुआ (नेता) होता है।

सूर्य, भगल, बुध, बुध



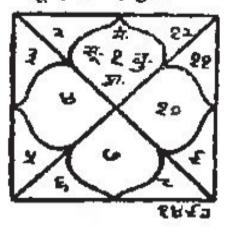
(११) सूर्य, मंगल, मुघ और गुरु को युति हो तो जातक विजयी, शूरवीर, चकक्षारी, देवता-ब्राह्मणों का सेवक, पर-स्त्रीगामी तथा कुशल युघ-निर्माता या गुरु का व्यवसायी होता है।

सूर्य, भंगल, बुध, शुक



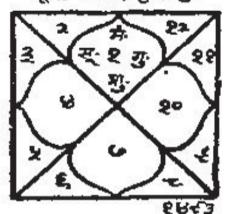
(१२) सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक चोर, दुर्जन, निलंज्ज, पर-स्त्रीगामी, विषय अंगों वाला परन्यु देवता और बाह्यणों का पूजक तथा सर्देव विजय पाने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, श्रनि



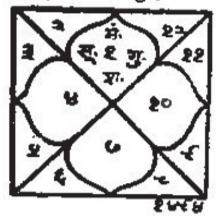
(१३) सूर्य, मंगल, बुध और मिन को युति हो तो जातक प्रतापी, मिन, योद्धा, मन्त्री अथवा राजा, अस्त-शस्त्रों का जाता, नीच पुरुषों को संगति में रहने वाला तथा नीच आचरण करने वाला होता है।

सूर्य, मगल, बुध, शुक



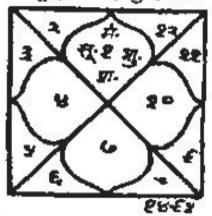
(१४) सूर्य, मंगल, गुरु खौर शुक्र को युति हो तो जातक अत्यन्त धनी, यसस्वी, भीतिक्ष, मनुष्यों का पालक, सुन्दर शरीर वाला तथा राजा हारा सम्मानित होता है।

सूर्य, मंगल, गुरु, शनि



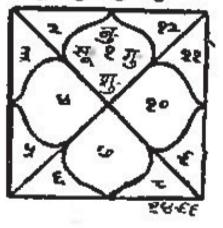
(१५) सूर्य, भंगल, बुध और शिंत की युति हो तो जातक दयालु, धनी, मनुष्यों में श्रेष्ठ, सुप्रसिद्ध सेनापति, मन्त्री, अन्त का संचय करने वाला, राजा द्वारा पूजित तथा सब कामों में सफलता पाने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि



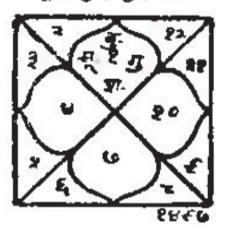
(१६) सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि को युति हो तो जातक दुराचारी, मूर्ब, कटुभाषी, नीच कर्म करनेवाला, जन-डोही, मांसाहारी तथा नीच आति के मनुष्यों तो साथ रखने वाला होता है।

सूर्य, बुध, बुध, शुक्र



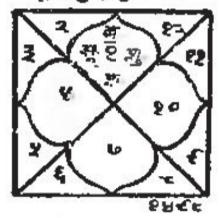
(१७) सूर्य, बुध, गुरु और शुक्र को युति हो तो जातक बुद्धिमान्, धनवान्, सुखी, प्रसन्त, विनयी, मानी, स्त्री-पुत्रादि के सुख से युक्त तथा सब कामों में सफलता पाने वाला होता है।

सूर्य, बुध, गुरु, शनि



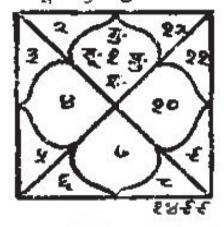
(१८) सूर्य, बुध, गुरु और शनि को युति हो तो जातक झगड़ालू, उद्योगहोन, निन्दित कर्म करने वाला, नपुंसक-जैसा तथा बहुत-से माइयों वाला होता है।

मूय, बुघ, मुक, शनि



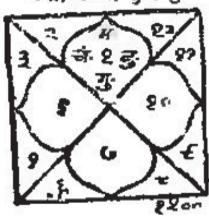
(१६) सूर्य, बुध, शुक्र और शनि को युति हो तो जातक पवित्र हृदय वाला, सुन्दर, विद्वान्, पण्डित, सुवक्ता, उच्च विचारों वाला, भाग्यशाली, सुखी, भाइयों द्वारा सम्मानित, मित्रों वाला तथा स्त्री-पुतादि के सुख से युक्त होता है।

न्यूय, युरु, श्रुक, शनि



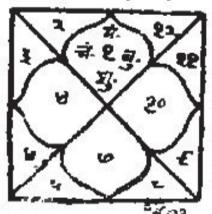
(२०) सूर्य, गुरु, शुक्र और शर्मि को युति हो तो जातक सुखी, कवि, शिल्पज, करणा से पूरित हुदय वाला, राजा का प्रिय, परन्तु लोभी और परम कृपण होता है।

सन्द्र, मंगल, बुध, गुन



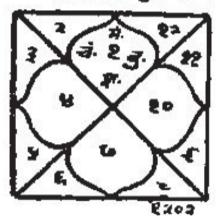
(२१) चन्द्र, मंगल, गुरु और गुरु की युति हो तो जातक परम विद्वान्, युद्धिमान्, मन्यवादी, शास्त्रमा, सोकं से पूजित, सुवी जीवन व्यवीत नरने वाला, मनुष्यों में खेष्ठ तथा राजा का कृपापात होता है।

चन्द्र, संगल, बुध, मुक



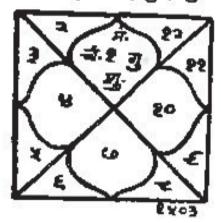
(२२) चन्द्र, मंगल, बुद्द और शुक्र की युति हो तो जातक झगड़ालू, नीच प्रकृति का, बुन्ध-विदेषी, भ्रातृ द्रोही, देद-शास्त्र-निन्दक, नींद में समय विताने वाला तथा नीच मनुष्यों में प्रेम रखने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति की स्त्री कुनदा होनी है।

चन्द्र, संगल, सुख, ऋनि



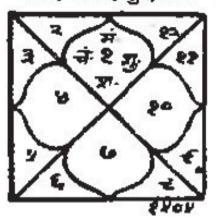
(२३) चन्द्र, मंगल, बुख और सनि की युति हो तो जातक सुखी, साहसी, स्त्री, बुध तया मितादि सें युक्त, की माताओं वाला तया वीर-वंश में जन्म लेने वाला होता है।

चन्त्र, भंगल, गुरु, शुक्र



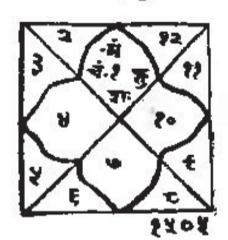
(२४) चन्द्र, संगल, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक घनी, मानी, पण्डित, साहसी, नीतिक, पुत्रवान्, खंगहीन तथा न्याकुल रहने थाला होता है।

चन्द्र, मंगल, गुरु, मनि



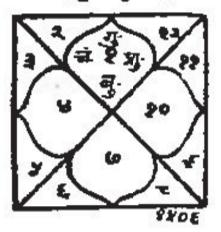
(२४) चन्त्र, मंगल, बुध और मनि की भूति हो तो आतक धनवान्, शूर-वीर, पण्डिस, सत्यवादी, दयालु, उन्मादी, वचन का पालक, राखा द्वारा सम्मानित परन्तु नीच मनुष्यों के साथ रहने बासा होता है।

चन्द्र, मंगल, शुक्र, सनि



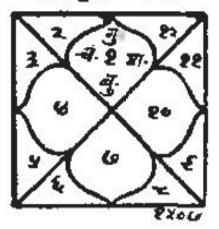
(२६) चन्द्र, मॅमस; मुक्त और सिन की युति हो तो जातक कुस-वंचका, महा ढीठ, सब का मतु, दरिद्री, उद्वेगी, जुआरी, मसिन, सर्प-जैसी अविते वाला, मद्य-मांस आदि का सेवी तथा वीर-वंच में जन्म लेकर भी कायर स्वभाव का होता है। उसकी स्त्री कुसटा होती है।

चन्द्र, गुरु, शुक्र, बुध



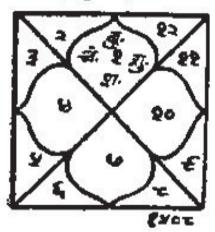
(२७) चन्द्र, ग्रुर, श्रुक और ग्रुर की युति हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला, दमालु, दानी, चतुर, पण्डित, शास्त्रज्ञ, धनी, शतु-विहीन तथा माता-पिता से रहित होता है।

चन्द्र, गुरु, शनि, बुघ



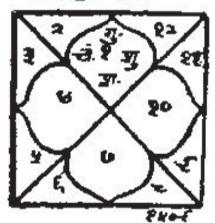
(२८) चन्द्र, गुरु, शनि और बुध की युति हो तो जातक कवि, शानी, यशस्त्री, धर्मात्मा, इन्द्रियजित्, बन्धु-प्रिय, तेजस्वी राज्य-मन्त्री तथा सर्वेप्रिय होता है।

चन्द्र, बुध्र, शुक्र, शनि



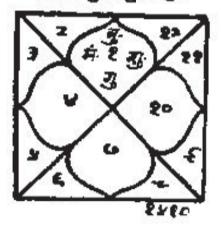
(२६) चन्द्र, बुघ, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धनी, गाँव का स्वामी, राजा हारा सम्मानित, अनेक पत्नियों वाला तथा नेव-रोगी होता है।

धन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि



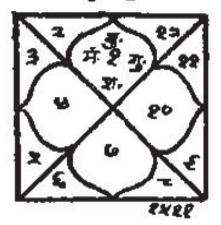
(३०) चन्द्र, बुध, शुक्र और धनि की युति हो तो जातक पण्डित, परोपकारो, पुरुष-श्रेष्ठ, पर-स्त्रीगामी तथा धनहीन होता है। उसकी दानी मोटे शरीर वाली होती है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसा व्यक्तिस्यूल शरीरवाला, धर्मात्मा तथा चतुर होता है।

मंगल, बुध, गुरु, शुक



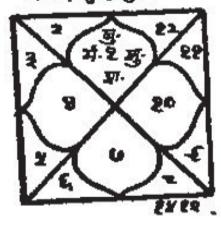
(३१) मंगल, बुघ, गुरु और शुक्रकी युति हो तो जातक सुशील, घनी, दयालु, राज-मान्य, स्वस्थ, लोकप्रिय, परन्तु अपनी स्त्री से कलह करने वाला होता है।

मंगल, बुध, गुरु, शनि



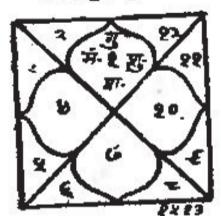
(३२) मंगल, बुष, गुरु और शनि की युति हो तो जातक सत्यवादी, पवित्र-हृदय, विनम्न, धैयंवान्, विद्वान् सुवक्ता, शूर-बीर परन्तु धनहीन होता है।

मंगल, बुध, शुक, शनि



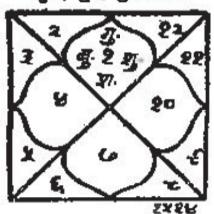
(३३) मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक मधुरभाषी, मल्स-विद्या में निपुण, सोक-प्रसिद्ध, पुष्ट शरीर वाला तथा कुतीं को पालने वाला होता है।

मंगल, गुरु, मुक, शनि



(३४) मंगल, गुरु, शुक्र और धनि की युति हो तो जातक धूर्त, विषयी, मानी, विनम्न, साहसी विद्वान्, धनी, पर-स्त्रीगामी तथा श्रेष्ठ मनुष्यों की प्रिय होता है।

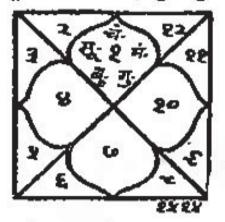
बुध, युर, शुक, शनि



(३४) बुध, गुरु, गुरु और शनि की युति हो तो जातक मेधावी, वेद-वेदांग का जाता, शस्त्र-विद्या का प्रेमी परन्तु विषय-वासना में लीन रहने वाला कामी होता है।

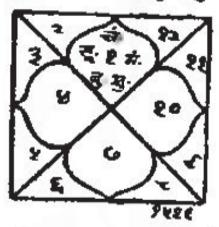
पाँच प्रहों की युति का फलादेश

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बुध



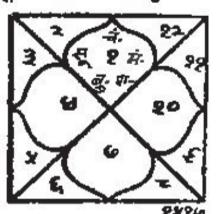
(१) सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और युरु की युति हो तो जातक दुष्ट, कोधी, छली तथा सदैव दुःखी रहने वाला होता है। उसकी पत्नी दुष्ट स्थभाव वाली होती है, जिसके कारण वह सदैव उद्विग्न बना रहता है। ऐसा व्यक्ति स्त्री-होन भी हो सकता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र

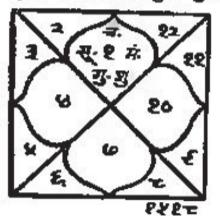


(२) सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक मिध्यावादी, दयालु स्वधाद का, बुग्ध-होन, दूसरों का काम करने वाला तथा हिजड़ों-जैसी आकृति का होता है।

सूर्य, चन्द्र, मगल, बुध, शनि

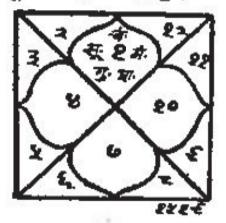


(३) सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक चोर, सर्वेच दु:खी, स्त्री-पुतादि से रहित, बन्धन (जेल या कैंद्र) प्राप्त करने वाला तथा प्रायः अल्पायु होता है। सूर्यं, चन्द्र, मंगल, बुध, गुक



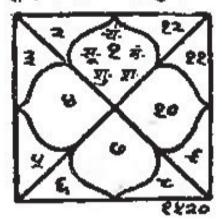
(४) सूर्य, चन्द्र, मंगल गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक दुःखी, नेज-रोगी अथवा जन्मान्छ, माता-पिता के सुख से रहित, संगीतक तथा हाथी से प्रेम रखनेवाला होता है।

सूर्य. चन्द्र, मंगल, गुरु, शनि



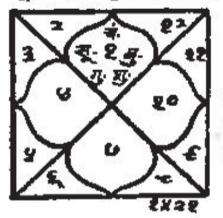
(१) सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक व्यसनी, दुष्ट, सगड़ालू, करपोक, दूसरों की दुःख देनेवाला, परध-नापहारो, सण्जनों का शत्रु तथा बुक्ष-जैसी आकृति वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, संगल, शुक्र, शनि



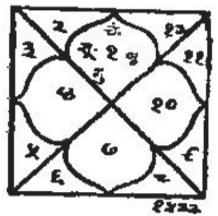
(६) सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धनहीन, अधर्मी, सब का देवी, परस्त्रीगामी तथा आचार-विचार से हीन होता है।

सूर्य, चन्द्र, बुध, मुरु, शुक



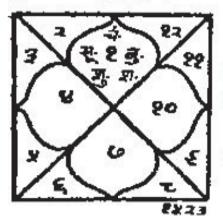
(७) सूर्य, चन्द्र, बुघ, गुर और शुक्र की युति हो तो जातक धनी, मशस्त्री, चतुर, राजा द्वारा सम्मानित, न्यायाधीश, राज्य-मंत्री सथा सर्वेत्र प्रशंसित होता है।

सूर्य, चन्त्र, कुम, गुर, शनि



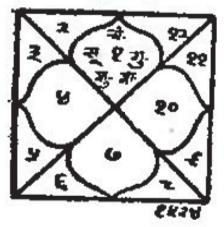
(६) सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक ऋणप्रस्त, कायर, उत्मादी, उप-स्वमादी, वेश्यागामी, दुष्ट कर्म करने वाला, परान्त पर निर्वाह करने वाला, धूर्त तथा अपने भिन्नों से कारण दुःख पाने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि



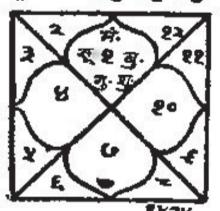
(६) सूर्य, चन्द्र, बुघ, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक उत्साही एवं धन, सन्तान, मित्र एवं सुखों से हीन, रोगी शरीर वाला होता है। उसके शरीर पर रोंये अधिक होते हैं सथा कद सम्बा होता है।

सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक, शनि



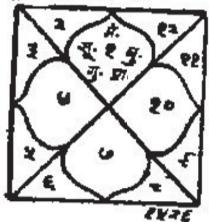
(१०) सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक पण्डित, समर्थ, निर्मय, चंचस, ऐन्द्रजालिक, सुवक्ता, पापी, बाक्छल में प्रयोग, स्टियों का प्रिय तथा शबुओं द्वारा पीड़ित होता है ।

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, गुक



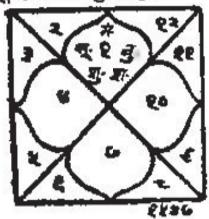
(११) सूर्य, - संगत, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक घोर, समर्थ, सुन्दर, स्वच्छ, यहस्वी, धन-धान्य तथा सेवकों से युक्त, बहुत घोड़े रखने वाला, सेनापति तथा-राजा का प्रिय होता है !

सूर्य, भंगल, बुध, युर, मानि



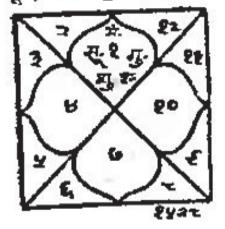
(१२) सूर्य, मंगत, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक भिक्षुक, अल्पधनी, जर्जर, मलिन, रोगी, अड़, पुत्रवान् तथा उद्विग्न वित्त वाला होता है।

सूर्य, संगल, बुध, शुक, शनि



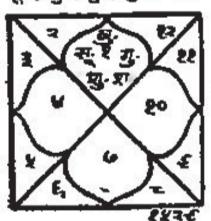
(१३) सूर्य, मगल, बुध, मुक्र और धनि की युति हो तो जातक दुःखी, स्वान-प्रब्ट, बुभुक्तित, दरिद्री, रोगी तथा सबुओं से तस्त होता है।

सूर्य, मंगस, गुर, सुक, शनि

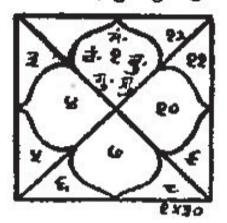


(१४) धूर्यं, मंगल, युरं, शुक्र और धनि की युति हो तो जातक विद्वान्, विचारवान्, तपस्वी, धनी माई-बन्धुओं से युक्त तथा धातु, यंत्र अववा रसायन से काम में प्रवीण होता है। वह प्रसिद्धिं मो प्राप्त करता है।

सूर्य, बुघ, गुरु, गुक, शनि

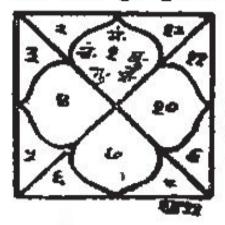


(१४) सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक दयालु, धर्मात्मा, धनी, शास्त्रज्ञ, सुवक्ता, सेनापति, निक्षों का प्रिय तथा माता-पिता और गुरु का भक्त होता है। चन्द्र, मंगल, बुघ, गुरु, गुरू



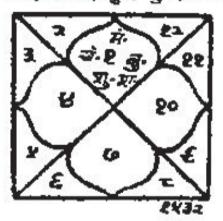
(१६) चन्द्र, संगल, बुध, गुरु और गुक्र की की युति हो तो जातक विद्वान्, धनवान्, सज्जन, निष्पाप, श्रेष्ठ स्वभाव वाला, बहुत पुत्रों वाला, मिल-वान् तथा सुखी जीवन विताने वाला होता है।

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि



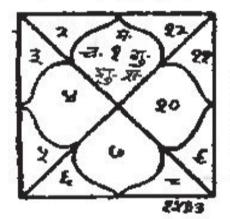
(१७) चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक मलिन, पराई सेवा करने वाला तथा अन्न की याचना करने वाला होता है। उसे रतीं श्री रोग भी होता है।

चन्द्र, मगल, बुध, शुक्र, शनि

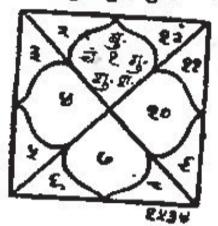


(१८) चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक कुरूप, मलिन, निर्धन, मूखं, दुष्ट कमं करने वाला, पर-निन्दक, कठोर-हृदय, नपुंसक तथा अपने मिलों से ही शनुता रखने वाला होता है।

चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक, शनि

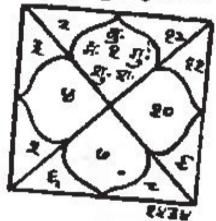


(१६) चन्द्र, मंगल. गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक मिलन, पराई सेवा करने वाला, दूसरों को कष्ट देने वाला, दुष्ट स्थभाव वाला, परन्तु विद्वान् होता है। उसके अनेक मिल्ल तथा अनेक सन् होते हैं। षन्त्र, बुध, गुरु, शुक, शनि



(२०) चन्द्र, बुध, गुरु, गुक्र और धनि की युति हो तो जातक धनी, सुखी, अत्यन्त गुणवान्, विद्वान्, यसस्वी, गणाधीस, लोकपूजिस तथा राजा का मंत्री होसा है।

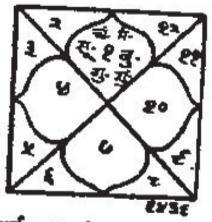
मंगल, बुध गुरु, शुक्र, शनि



(२१) मंगल, हुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक चंचल, आससी, धनी, सुखी, लोकप्रिय, पवित्र चक्ता, बीक्यु, अधिक सोने काला तथा खामसी स्वभाव का होता है।

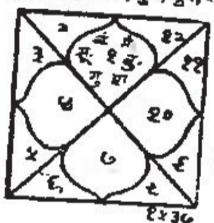
छ: ग्रहों की युति का फलादेश

सूर्य, चन्द्र, मंगल,बुध, गुरु, शुक्र

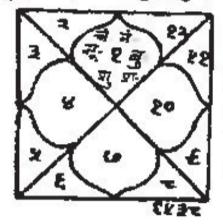


(१) "सूर्यं, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शुरु की युति हो तो जातक यसस्वी, भाग्यवान्, भोगी, धन-घान्य तथा विधा से युक्त, धर्मात्या, अल्पभाषी तथा सुखी जीवन विताने वाला होता है।

सूर्य, चन्त्र, मंगल, बुब, गुह, शनि

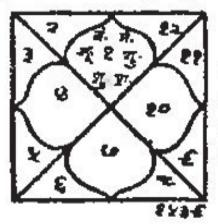


(२) धूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक दयालु, परोपकारी, मंगल जिक्न शुद्ध अन्तःकरण वाला, विवाद में विजय पानेवाला तथा वनों में विचरण करनेवाला होता है। सूर्य, चन्द्र, मंगल बुध, शुक्र, शनि



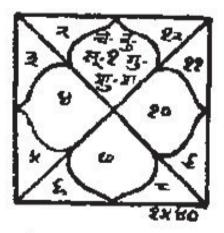
(३) सूर्यं, चन्द्र, मंगल, बुघ, शुक्र और शिन की युति हो तो जातक चिन्तित, प्रत्येक बात में संशय करने वाला, संग्राम अथवा विवाद में विजय पाने वाला, वन-पर्वतों में विचरण करने वाला तथा जातक स्वभाव का होता है।

सूर्य, चन्द्र, भंगल, गुरु, शुक्र, शनि



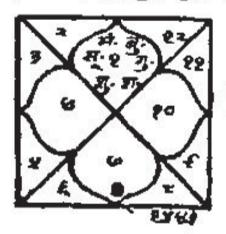
(४) सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, सुक और शनि की युति हो तो जातक कोबी, कृपण, घनी, सुखी, लोभी, सुन्दर, स्त्रियों को प्रिय, भानत-बुद्धि, राजाओं का कृपापाल तथा युद्ध करने के लिए तैयार रहने वाला होता है।

सूर्य. चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि

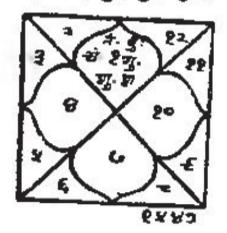


(४) सूर्य, चन्द्र बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धर्मज, घेदज्ञ, दयालु, क्षमाशील, स्ती-विहीन, राज-मंत्री, राजा द्वारा सम्मानित तथा लोक में प्रसिद्ध होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, गुर, शुक, शन



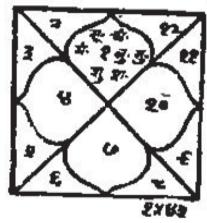
(६) सूर्य, मंगल, बुध, युर, शुक्र और शनि की युति हो तो खातक क्षमाशील, ब्रह्म-विद्या का वेत्ता, भिक्षुक, वनवासी, तीर्थयाबी तथा धन, स्त्री एवं पुत्र से विहोन होता है। चन्द्र, संगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि



(६) चन्द्र, मंगल, बुघ, गुरु, शुक्र और शनि की युत्ति हो तो जातक धनी, गुणी, यशस्त्री, पविद्व हृदय दाला, आससी, अनेक पत्तियों दाला, गुणवान, राजमान्य अथवा राजमंत्री होता है।

सात प्रहों की युति का फलादेश

सूर्य, चन्द्र, मगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि

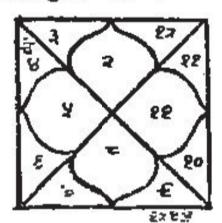


यदि सातों ग्रह-सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि एक हो भाव में बैठे हों तो जातक सूर्य के समान तेजस्वी, धनी, दानी, राजाओं द्वारा सम्मानित तथा शिवजी का परम भक्त होता है।

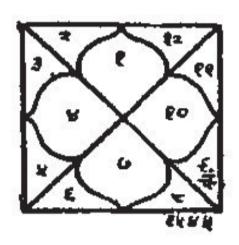
स्त्री-जातक

सामान्यतः पुरुष अथवा स्त्री की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ग्रहों का फलादेश एक-जैसा ही होता है, परन्तु कुछ ग्रहों की विभिन्न भावों में स्थिति से फलस्थरूप स्त्रियों के सम्बन्ध में उनके फलादेश में अन्तर भी का जाता है। ऐसे अन्तर वाले फलादेश के विषय में आगे लिखे अनुसार समझ केना चाहिए।

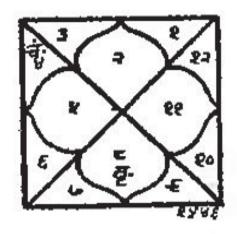
स्त्रियों के सम्बन्ध में विशिष्ट फलादेश की विस्तृत जानकारी के लिए हमारी लिखी पुस्तक 'स्त्री-जातक' का अध्ययन करना चाहिए।



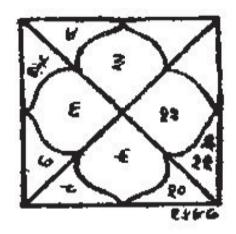
(१) जिस स्त्री के जन्म-काल में सम्त तथा चन्द्रमा सम-राणि पर हो (मित्र १५४४), वह स्त्री स्थाभाविक आकार वाली होती है।



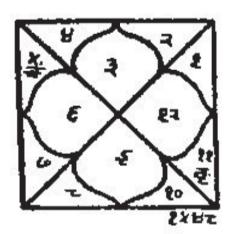
(२) जिस स्त्री के अन्म-काल में अन्न तथा जन्द्रमा विषम राशि पर हों (चित्र १४४४), यह पुरुष-जैसे आकार बाली होती है।



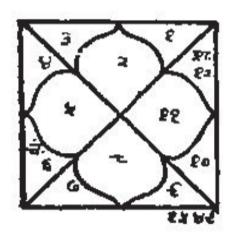
(३) जिस स्त्री के लग्न तथा चन्द्रमा सम-राशि पर हों और उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो (जित १५४६), वह खेष्ठ शोलवतो तथा सुन्दर अस्त्राभूषणों को धारण करने वाली होती है।



(४) जिस स्त्री के लग्न तथा चन्द्रमा विषम-राशि पर हों और उन पर पाप-प्रहों की दृष्टि पड़ रही हो (चित्र १४४७), वह पापिष्य तथा हुरे कर्म करने वाली होती है।

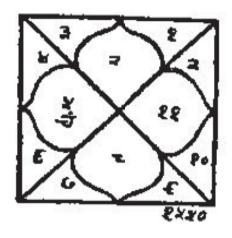


(४) जिस स्त्री के लग्न तथा चन्द्रमा विषम-राशि पर हों और उन पर शुप्त ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो (जिल १४४८), तो उसे मध्यम स्वभाव वाली समझना चाहिए।

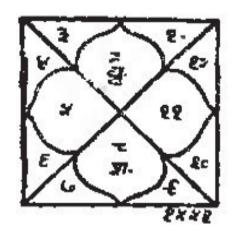


(६) जिस स्त्री के अग्न तथा चन्द्रभा सम-राशि पर हों और उस पर पाप-प्रहों की दृष्टिः पड़ रही हो (चित्र १५४६), तो उसे भी मध्यम स्वभाव वाली समझना चाहिए।

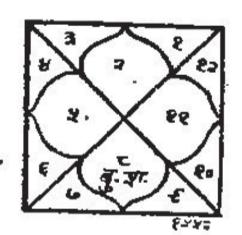
टिप्पको : जो प्रह अधिक बेली हो, उसी के अनुसार स्त्री का स्वभाव समझना चाहिए।



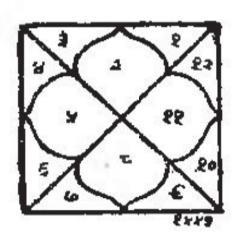
(७) जिस स्त्री की कुष्डलों में जनम-लग्न अयमा चन्द्रमा से सातमें घर में कीई भी ग्रह न बैठा हो, अथवा निबंश ग्रह बैठएही (चित्र १५ (०), उसका पनि निरुद्यमी हीतों हैं।



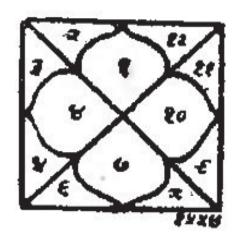
(=) जिस स्त्री की कुण्डली में अन्य-लग्न अथवा सातवें घर पर शवु-ग्रहों की दृष्टि न हो (चित्र १४४१), उसका पति भी निरुद्यमी होता है।



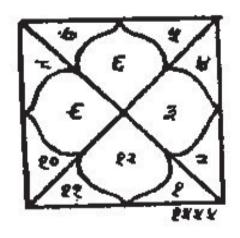
(१) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में बुद्ध तथा शनि बैठे हों (चित्र १४४२), उसका पति नपूंसक होता है।



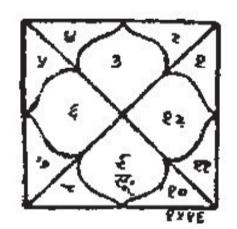
(१०) जिस स्त्री के सातवें घर में स्थिर राशि हो (चित्र १५५३), उसका पति सर्वव घर में रहता है।



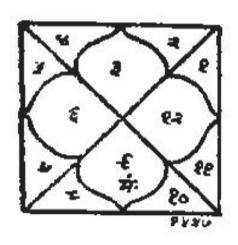
(११) जिस स्त्री के सातवें घर में चर राकि हो (चित्र १४४४), उसका पति सदैव परदेश में रहता है।



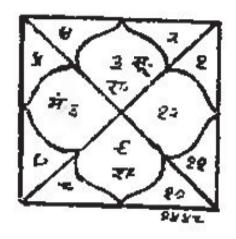
(१२) जिस स्त्री के सातवें घर में दि-म्बभाव राजि हो (चित १५५५), उसका पति घर तथा परदेश में दोनों जगह रहता है।



(१३) जिम स्त्री की अन्म-कुण्डली के सप्तमभाव में 'सूबें' की स्थिति हो (चित्र १४४६), यह अपने पति द्वारा स्थाग दो जाती है।



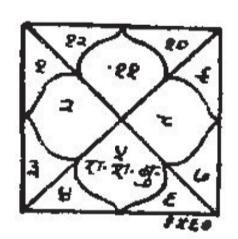
(१४) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सप्तमभाव में 'मंगल' की स्थिति हो (चित्र १४५७), वह बाल-विधवा होती है।



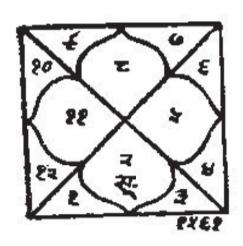
(१५) जिस स्ती की जन्म-कुण्डली के सप्तम भाष में 'शनि' की स्थित हो तथा सभी पाप-प्रहों की उस पर दृष्टि हो (चित्र १६६६), यह अनक्याही ही रह जाती है। पित विवाह हो भी तो उसके पित की मृत्यु शीध हो जाती है।



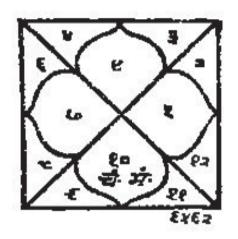
(१६) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सप्तम भाष में सभी पाप-ग्रह एकत्र हो गए हों (जित १४५६), वह अवस्य विश्ववा होती है।



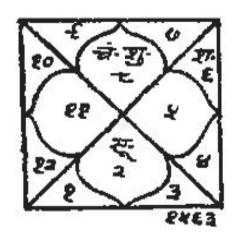
(१७) जिस स्त्री की अन्य-कुण्डली के सप्तमभाव में मुभग्रह बलहीन हों तथा पाप-ग्रह भी हों (चित्र १५६०), यह अपने पति की छोड़कर दूसरा पति करती हैं।



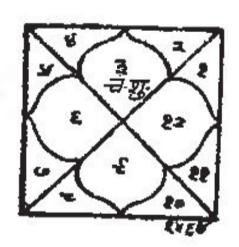
(१६) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सप्तम भाव में एक पाप-ग्रह बलहीन वैठा हो और उसे कोई शुभ बहु देखता न हो (जिस १५६१), उसे उसका पति स्थाग देता है।



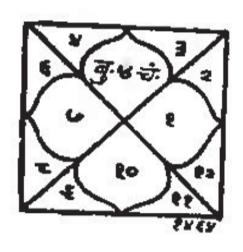
(१६) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में चन्द्रमा के साथ मंगल की युति हो (चित्र १४६२), वह अपने पति की आज्ञा से पर-पुरुष-गमन करती है।



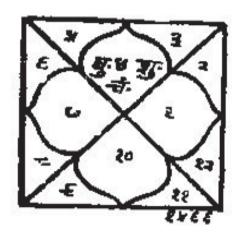
(२०) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में मेष,
बृश्चिक, मकर अथवा कुम्म में से कोई लग्न हो
और उसमे चन्द्रमा तथा खुक दोनों हो बैठे हों
तथा उन पर पाप-प्रहों की दृष्टि पड़ रही हो
(चित्र १५६३), तो ऐसी स्त्री अपनी माता के साथ
पर-पुरुष-गमन करती है।



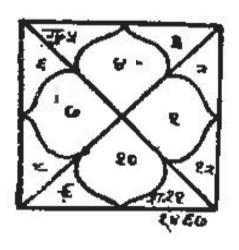
(२१) जिस स्त्री के जन्म-लग्न में चन्द्रमा और झुक दोनों बैंठे हों (जिस १५६४), वह हैंक्यांलु स्वभाव वाली, दूसरों को सन्ताप देने वाली तथा स्वयं सदैव सुखी रहने वाली होती है।



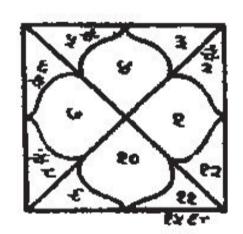
(२२) चित्र स्त्री के जन्म-लग्न में बुध तथा चन्द्रमा दोनों बहु बैठे हों (चित्र १४६४), बहु संगीत-कुमल, सुखी, गुणवती, सुन्दरी तथा सब ती त्रिय होती है।



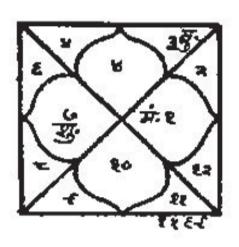
(२३) चित्र स्त्री के जन्म-लग्न में बुध, बुक सथा चन्द्रमा---तीनों हो ग्रह बैठे हुए हों (चित्र १५६६), यह अनेक प्रकार के सुखों से गुक्त, धनी सथा गुणवसी होती है।



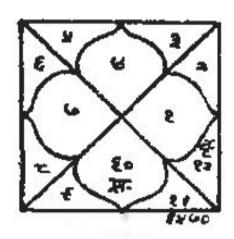
(२४) जिस स्त्री की कुण्डलों में लग्न से आठवें स्थान पर (अष्टम भाव में) कोई पाप-ग्रह वैठा हो तथा दूसरे स्थान में कोई मुभग्रह वैठा हो, (चित्र १४६७), वह अपने लोड में लड़ने राज्ये मृत्यु को प्राप्त होती है।



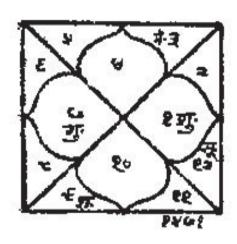
(२४) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली से वृष, वृश्विक, सिंह अयवा कन्या—इनमें से किसी भी राणि पर चन्द्रमा स्थित हो (चित्र १५६८), वह अल्प-पुत्रवती होती है।



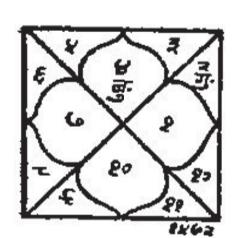
(२६) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में मंगल, शुभ और बुध बलवान हों तथा लग्न समराशि में हो (चित्र १४६६), यह ब्रह्मविद्या में प्रवीण, अनेक शास्त्रों की जानकार नथा ब्रह्म-वादिनों होती है।



(२७) जिस स्ती की जन्मकुण्डली के सप्तम भाव में पाप-ग्रह वैठा हो तथा नवम भाव में कोई अन्य ग्रह बैठा हो (चित्र १४७०), वह स्ती संन्यासिनी हो जाती है। नवें घर में जो ग्रह बैठा हो, उभी की प्रवच्या समझनी चाहिए। सूर्य से सप्तिनी, चन्द्रमा से कपालिनी, मंगल से रक्त-वस्त्र-धारिणी, शुक से चिक्रभी, शनि से नम्ना, बुध से दण्डी तथा गुरु से यति होती है।



(२=) चित्र स्त्री की जन्मकुण्डली में केन्द्र में शुभ ग्रह कैठे हों तथा पाप-ग्रह ६, ६ या १२वें घर में हों तथा सप्तम भाष में पुरुष राशि हो (चित्र १५७१), वह शान्त स्वभाव की, ऐश्वयं-शालिनी, पुत्रवती तथा रानी अथवा रानी-जेसी होती है।



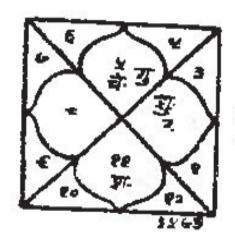
(२६) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में कुछ लग्न में उच्च का होकर वैठा हो तथा गुरु एकादश भाव में हो (चित्र १४७२), बहु ऐक्वर्य-शालिनी, रानी अथवा रानी-जैसी होती है तथा उसकी गणना संसार की प्रसिद्ध स्त्रियों में की जाती है।

विशिष्ट मोग

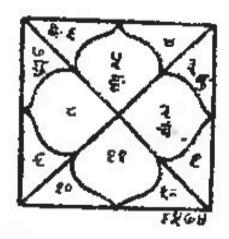
जन्मकुण्डली के विभिन्न भाषों में स्थित विभिन्न ग्रहों की विशिष्ट स्थिति के कारण विभिष्ट दोन भी बनते हैं, जिनका फलादेश सामान्य स्थिति बाले ग्रहों से भिन्न होता है।

अगले पृष्ठों में कुछ ऐसे ही विभिष्ट फलादेशों का वर्णन किया जा रहा है। महस्रों प्रकार के विभिष्ट दोनों के फलादेश की विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारी लिखी पुस्तक 'योग-रत्नाकर' का अध्ययन करना चाहिए।

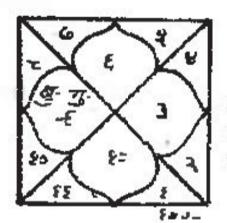
राजयोग



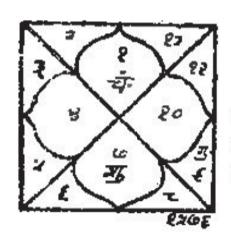
(१) लग्न में चन्द्रमा और गुरु, दसवें भाव में मुक्र एवं तुला, मकर अथवा कुम्म में भनि हो तो जातक राजा के समान अथवा राजमान्य होता है।



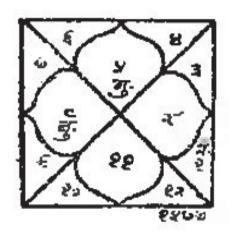
(२) दसवें, स्यारहवें, पहले, दूसरे तथा तीसरे भाव में संपूर्ण शुम ग्रह बैठे हों तो जातक राजा के समान होता है।



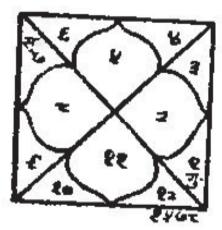
(३) युरु बुध के साथ बैटा हो अथवा बुध के द्वारा दृष्ट हो तथा युरु, भीन अथवा धनुसाण का होकर, केन्द्र में बैठा हो तो ऐसे जातक की आजा को राजागण भी अपने मस्तक पर धारण करते हैं।



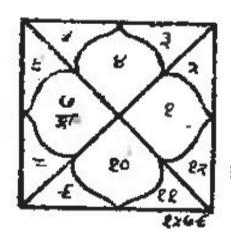
(४) चन्द्रमा केन्द्र में हो तथा गुरु लग्न की छोड़ कर, जनम अथना पंचम दृष्टि से केन्द्र की देख रहा हो, साथ हो बसनान दृष्टि से शुप्त की भी देखता हो तो आहक राजा के समान भाग्यकालो होता है।



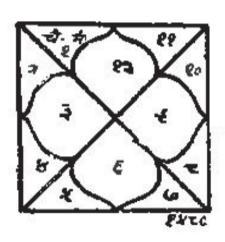
(४) युरु लग्न में तथा बुध केन्द्र में वैठा हो तथा यह नवम भाव के स्वामी द्वारा दृष्ट भी हो तो जातक राजमान्य होता है।



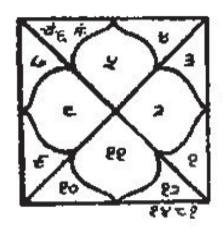
(६) गुरु सातवें, नवें अथवा पौचवें मान मे दैठा हो तथा लग्नेश की उम पर दृष्टि भी हो तो जातक राजमान्य होता है।



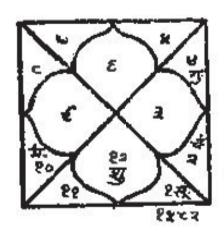
(७) शनि केन्द्र, पचम अथवा अवम भाव में अपनी उच्च राप्ति अथवा मून तिकोज राणि में हो तथा दशम भाव पर उसकी दृष्टि भी हो तो जातक राजमान्य होता है।



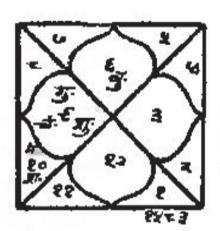
(द) जवम भाव का स्वामी चन्द्रमा के साथ द्वितीय भाव में बैठा हो तो आतक राजमान्य होता है।



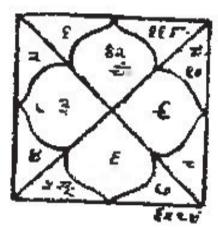
(६) चन्द्रमा मंगल के साथ द्वितीय अथवा तृतीय भाव में दैठा हो अथवा राहु के साथ पंचम भाव में दैठा हो तो जातक राजमान्य होता है।



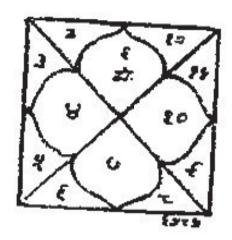
(१०) यदि जन्म-काल में पाँच ग्रह उच्च के हीं, तो आतक चकवर्ती राजा अवदा मंत्री होता है।



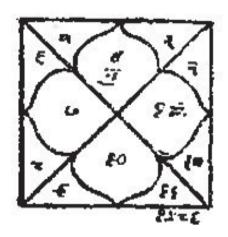
(११) यति जन्म-काल में बुध उच्च रामि का हो, मंगल तथा मनि मकर रामि में हों तथा गुरु, चन्द्रमा तथा शुभ तीनों धनु रामि में बैठे हों तो ऐसा जातक महाराजाबिराज होता है।



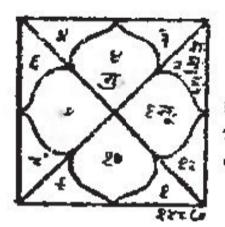
(१२) यदि मूर्य सिंह राशि में, मगल मकर में, शनि कुम्भ में नया चन्द्रमा मीन राशि में हो तथा लग्न भी मीन ही हो तो ऐसा जातक महाराजा होता है।



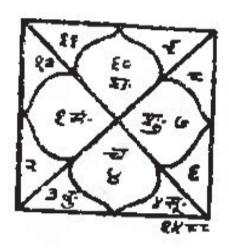
(१३) यदि संगल येष राक्षि का होकर लग्न में बैठा हो तो ऐसा जातक राजा होता है।



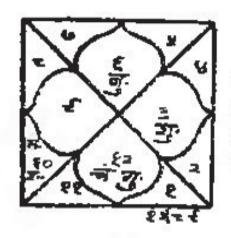
(१४) गुद कर्क सम्म में हो तथा मगल मेच राशि का होकर दशमभाव में बैठा हो तो ऐसा जातक राजनीतिक एवं शतु-जयी राजा होता है।



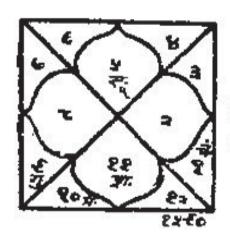
(१५) बृहस्पति उज्ब का होकर लग्न में बैठा हो, दशम भाव में मेच का मूर्य हो सथा एकादश भाव में भनि, शुक्र और बुध तीनों बैठेहों, तो ऐसा जातक अस्पन्त पराक्रमी राजा होता है।



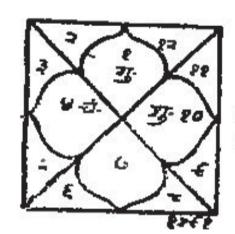
(१६) शनि मकर राशि का होकर लग्न सें वैटा हो, सूर्य सिंह राशि का, बुध मिथून का, मगल मेथ का, भुक तुला का तथा चन्द्रमा कर्क का हो नो ऐसे योग में उत्पन्न जातक समुद्र-पर्यन्त पृथ्वी का अधिपति (राजा) होता है।



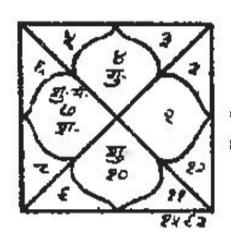
(१७) शुक्र मिथुन का हो, बृक्ष कन्या का होकर जन्म में वैठा हो, संगल तथा शनि-मकर राशि में हीं तथा चन्द्रमा और गुरु मीन राशि में हीं, तो ऐसे योग में उत्पन्त जातक शतुनाशक, परम पराश्रमी तथा ऐक्वयं-माली राजा होता है।



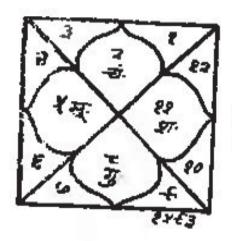
(१८) सिंह का सूर्य लग्न में हो एवं चन्द्रमा मेच में, शनि कुम्म में, गुरु धनु में तथा मंगल मकर में हो वो ऐसे मीन में उत्पन्न व्यक्ति राजाधिराज होता है।



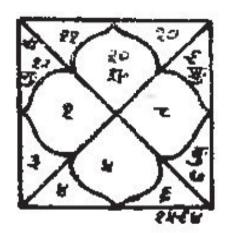
(१६) मेच का गुरु लग्न में हो, चन्द्रमा नतुर्थे तथा शुक्र दशम भाव में हो, तो ऐसा व्यक्ति बहुन दटा राजा होता है।



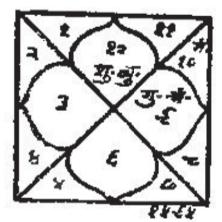
(२०) कर्क का गुरु लग्न में हो तथा सप्तम, चतुर्ष अथवा दशम स्थान में शुक्र, शनि और मंगल हों, तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त प्रतापी राजा होता है।



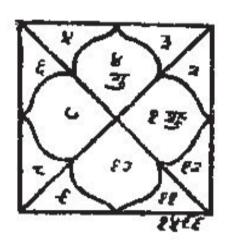
(२१) वृष था चन्द्रमा लग्न में हो तथा चतुर्थ सन्तम एवं दशम भाव में सूर्य, गुरु तथा भनि बैठे हो, तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त प्रतापी एवं यशस्वी राजा होता है।



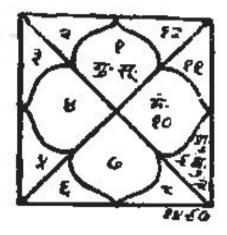
(२२) गुरु, चन्द्र, बुध तथा शुक्र, लग्न, तृतीय, नवम एवं एकादश भाव में बैठे हों, तथा मकर का शनि लग्न में वैठा हो तो ऐसा व्यक्ति राजाधिराज हो ना है।



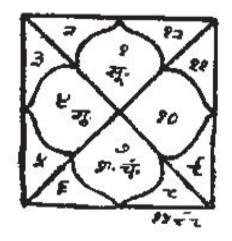
(२३) मीन राशि का शुक्र बुध के साथ लग्न में बैठा हो, सकर का मंगल हो तथा गुरु एवं चन्द्रमा धनुराशि के हों, तो ऐसा जातक चकवर्ती राज़ा होता है।



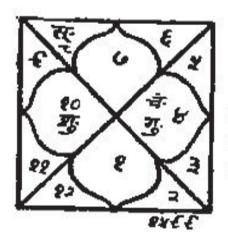
(२४) बुध उच्च का होकर केन्द्र में बैठा हो तथा शुक्र दलम भाव में हो तो ऐसा व्यक्ति परम यशस्वी राजा होता है।



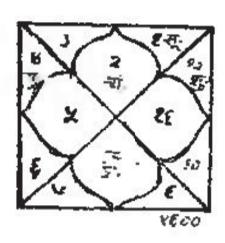
(२४) मेच के बुध तथा सूर्य लग्न में हों, मंगल दशम भाव में तथा भुक्ष, बुध एवं चन्द्रमा नवम भाव में हों तो ऐसा जातक दिग्विजयी राजा होता है।



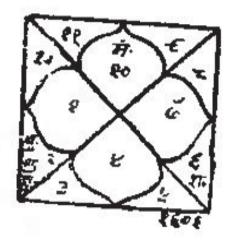
(२६) मेष में सूर्य, कर्क में गुरु और तुला में श्रानि तथा चन्द्रमा हों तो ऐसा व्यक्ति बहुत बड़ा राजा होता है।



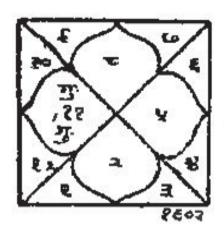
(२७) दितीय भाष में सूर्य हो तथा शुक्र, बुध एवं चन्द्रमा केन्द्र में हों परन्तु वे न तो अस्त हों और स शतु-ग्रहों द्वारा दृष्ट ही हों, तो ऐसा जातक शतुजयी एवं अस्पन्त प्रतापी राजा होता है।



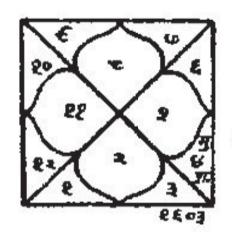
(२०) कर्क में गुरु. मेख में मूर्य, मीन में शुक्र तथा यूप में चन्द्रमा हो और वह शान द्वारा दृष्ट भी हो, तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त प्रतापी राजा होता है।



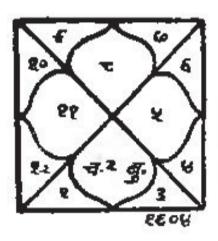
(३६) पंचम भाव में बुध, शुक्र तथा गुरु हों, परन्तु में अस्त न हों, मकर का मगल तुले से रहित हो तथा नवम भाव में शनि बैठा हो, तो ऐसा जातक राजा-धिराज होता है।



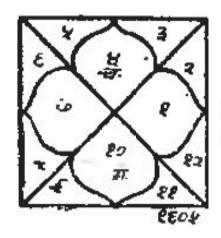
(३०) गुरू तथा शुक चतुर्व भाव में हों तो ऐसा जातक धनी, पराक्रमी एवं पृथ्वीपित होता है।



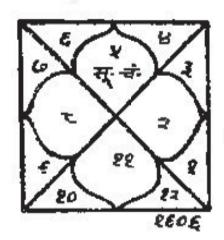
(३१) कर्कराणि में गुरु के नाय चन्द्रमा वैटा हो तो ऐसा जातक कश्मीर देश का राजा होता है।



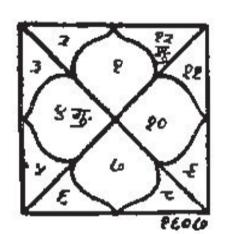
(३२) उच्च राशिस्थ चन्द्रमा बुध के साथ बैठा हो तो जातक मगध देश का राजा होता है। यदि चन्द्रमा बलवान् हो तो जातक किसी भी अन्य स्थान का राजा हो सकता है।



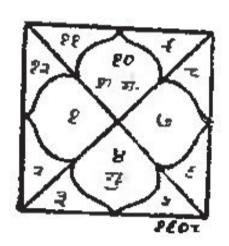
(३३) जैन्म-राशि कास्वामी सम्म में हो तथा सम्मेण बली होकर केन्द्र में बैठा हो तो नीच कुल में उत्पन्त क्यक्ति सो राजा होता है।



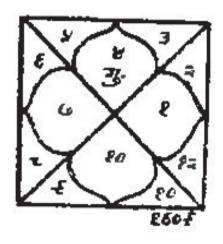
(३४) मेष का मूर्य चन्द्रमा के साथ वैठा हो तो। ऐसा जातक राजा होता है।



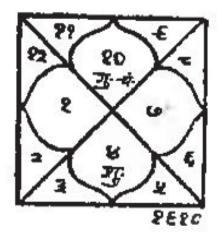
(३५) गुरु तथा शुक्र उच्च राशिस्य होकर केन्द्र अथवा विकोण में बैठे हों, तो ऐसा जातक राजा अथवा राजमंती होता है।



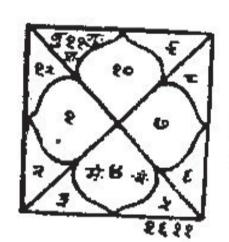
(३६) पापग्रह लग्न में हो और उस पर कर्क के गुरु की दृष्टि पड़ रही हो, सो ऐसा क्यक्ति बड़ा धनी तथा यशस्वी राजा अथवा राजा के समान होता है।



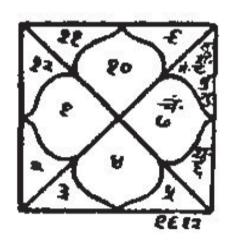
(३७) गुरु मकर राशि के अतिरिक्त किसा और लग्न में वैठा हो अयवा कर्क राशिगत होकर कर्क के नवांश में हो तो जातक राजा होता है।



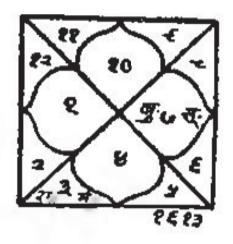
(३८) गुरु चन्द्रमा के साथ केन्द्र में बैठा हो तथा उस पर शुक्र की दृष्टि हो एवं कोई ग्रह नीए का न हो तो ऐसा जातक यशस्वी राजा होता है।



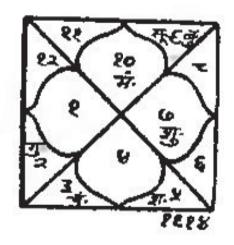
(३६) द्वितीय भाव में मुध, शुक्र और गुरु बैठे हों तथा सप्तम भाव में मंगल और चन्द्रमा हों, तो ऐसा व्यक्ति शतुषयी एवं अत्यन्त प्रतापी राजा होता है।



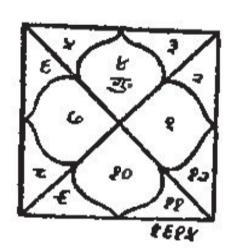
(४०) कुक नवम आव में हो, धन्द्रमा दशम भाव में हो सबा अन्य सभी ग्रह एकादशभाव में हों तो ऐसा जातक राजा होता है।



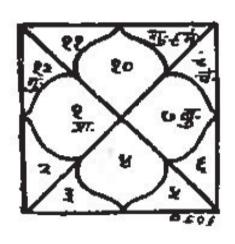
(४१) राहु तथा मगल षष्ठ भाव में हों तथा बुध और सूर्य दशम भाव में हों, तो जातक राजा होता है।



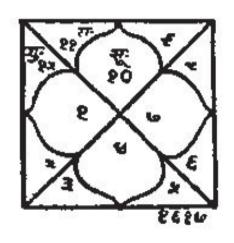
(४२) बृष में बुध, मियुन में चन्द्रमा, मकर में मंगल, सिंह में शनि, कन्या में सूर्य और बुध सवा सुला में शुक्त हो, तो जातक महाराजा होता है।



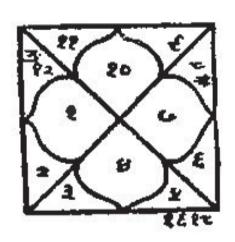
(४३) वृहस्पति उष्ण का होकर लग्न में बैठा हो तथा अन्य सभी गृह बुरे भी हों, तो भी जासक दीर्घायु, सेनापति, धनी, सुखी राजमान्य होता है।



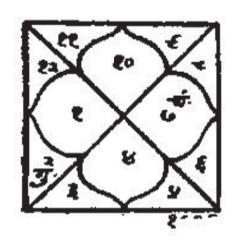
(४४) धनुका संगत और शुक्र, सीन का वृहस्पति, तुला का बूख तथा जीच के चिन और चन्द्रमा हों, तो ऐसा जातक धनहीन राजा होता है।



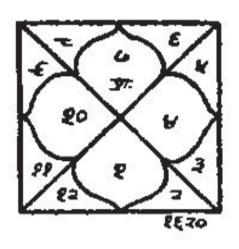
(४५) मीन का शुक्त सथवा शृक्ष हो, द्वितीय भाव में राहुतथा लग्न में सूर्य हो तो जातक भोगो, दानी, यशस्वी, राजमान्य एवं पृथ्वी का स्थामी होता है।



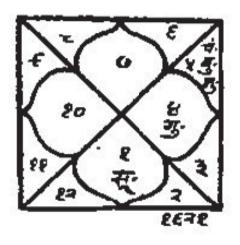
(४६) तृतीय भाव में गुरु तथा एकादश भाव में चन्द्रमा हो, तो आतक सय राजाओं में प्रसिद्ध राजा होता है।



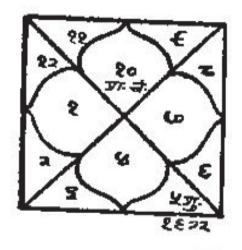
(४७) पंचम साथ में बुध तथा दशमधाव में चन्द्रमा हो, तो जातक अपने बंग का पालन करने वाला, बुदिमान्, जितेन्द्रिय तथा तपस्वी राजा होता है।



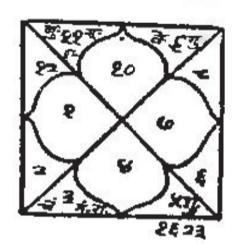
(४८) सुला, धनु अवका मीन राणि का शनि लग्न में स्थित हो, तो ऐसा जातक पृथ्वीपति (राजा) होता है।



(४६) कर्के में 'गुरु', एकादश भाव में चन्द्रमा, बुध और शुक्र तथा मेच राशि में सूर्य हो, तो जातक पृथ्वीपति होता है।

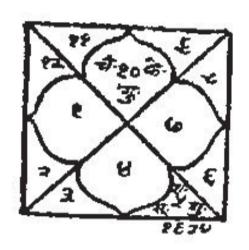


(५०) लग्न में शनि और चन्द्रमा सथा अष्टम भाव में शुक्र हो, तो ऐसा जातक वेश्याप्रेमी मानी राजा होता है।



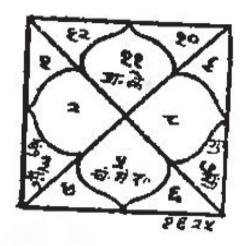
सिंहासन-योग

सच्छ, अष्टम, द्वितीय, तृतीय तथा द्वादश भाव में सभी प्रह विद्यमान हों, तो ऐसा आतक राजसिंहासन पर बैठता है।



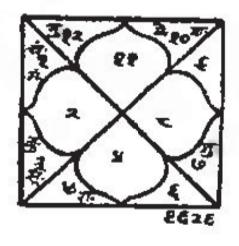
ध्वज-पोग

अष्टम भाव में पाप-गृह तथा लग्न में अन्य शुभ ग्रह हों, तो ऐसा जातक समाज का नेता होता है।



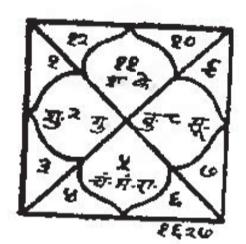
हंस-योप

पंचम, नदम, सप्तम तथा लग्न-इन भावों में सभी ब्रह् हों, तो ऐसा जातक अपने कुल को पालने वाला होता है।



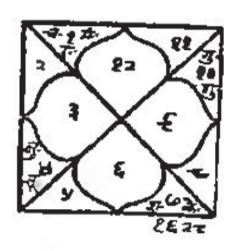
चाप-योग

शुक्र तुला में, मंगल मेष में तथा गुरु स्वराशि पर स्थित हो, सो ऐसा भातक राजा होता है।



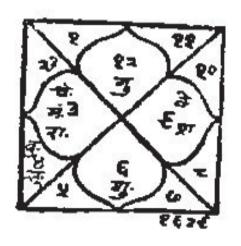
प्रयम चतुःसार योग

यदि सभी ब्रह चारों केन्द्रों में स्थित हों तो ऐसा जातक महाधनी राजा होता है।



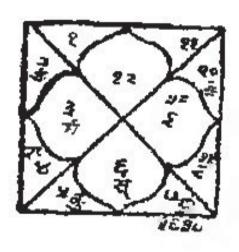
दितीय चतुःसार योग

यदि सभी ग्रह मेच, कर्के, तुला तथा मकर इन घारों राशियों में स्थित हों, तो ऐसा जातक महाधनो राजा होता है।



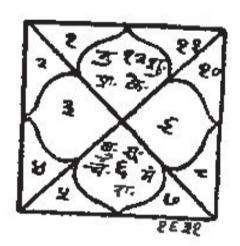
इण्ड-योग

यदि सभी ग्रह कर्क, सिमुन, मीन, कत्या तथा धनु राशि में स्थित हों, तो ऐसा जातक राज्य-सिहासन पर बैठता है।



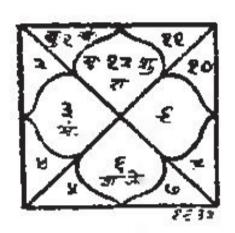
वाणी-योग

यदि प्रथम, द्वितीय तथा द्वादश भाव के अतिरिक्त अन्य सभी भावों में सभी प्रहों की स्थिति हो तो ऐसा जातक अपने कुल का प्रधान, गुणी, धनी, प्रतापी, अस्यन्त धैर्यवान्, सुखी, प्रियवादी तथा ऐश्वयंशाली होता है।



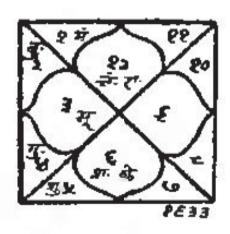
कमी का योग

यदि सूर्यादि सातों ग्रह जन्म-कुण्डली के दशम तथा एकादश भाव में स्थित हों अथवा अन्य और सप्तम भाव में स्थित हों, तो नीच कुल में उत्पन्न जातक भी राजा होता है।



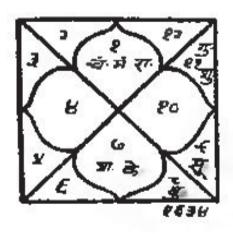
अमर योग

यदि सभी पापप्रह केन्द्र में हों, अथवा सभी
शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो इन दोनों प्रकार से अमर
योन बनता है। पापग्रहों के अमर योग में जन्म
लेने वाला जातक शूर-स्वभावी राजा तथा शुभ
ग्रहों के अमर योग में जन्म लेने वाला जातक
सौम्य-स्वभावी राजा होता है।



एकावली योग

लग्न अयवा किसी भी भाव से आरम्भ करके कमशः सातभावों में सात ग्रह स्थित हों, तो ऐसा जातक महाराजा होता है।

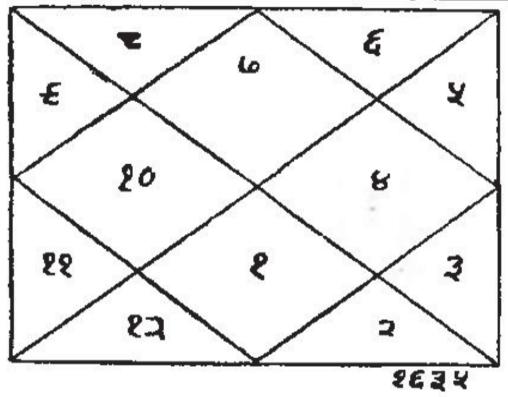


द्वितीय हंस-योग

सभी ग्रह मेथ, कुम्भ, धनु, तुला, मकर तथा वृश्विक राशि में हों, तो ऐसा व्यक्ति राजा अथवा राजपूजित एवं सब प्रकार के ऐश्वमों का स्वामी होता है।

६४७ **पंचधा मे**त्री-चक

	सूर्यं	चन्द्र	मुंगल	सुध	बुध	ধ্যুক	यदि
अधिमित	चन्द्र मुगल	सूर्यं बुध	सूर्यं चन्द्र	शुक चन्द्र		बुध	
मिस्र	गुरु	<u>म</u> ंगल शुक्र	शनि		शनि		गुरु
सम	शुक		गुरु खुध	सूर्ये मंगल	मृक चन्द्र मंगल	सूर्य चन्द्र भनि	बुध मंगल शुक्र
सङ्गु	बुध	छ१ शनि	ह्युक	गुरु स्तनि		र्भगल युव	
अधिशतु	शनि				बुध मुक		सूर्य चन्द्र



सम्पूर्ण 1635 कुण्डलियों से युक्त भृगु-सहिता फलित-दर्पण (फलित-प्रकाश)

Bhrigu-Sanhita Phalit-Darpan (Phalit-Prakash)

